सचित्र
रायपसेणिय (राजप्रश्नीय) सूत्र
(द्वितीय उपांग)

मूल पाठ, हिन्दी-अंग्रेजी अनुवाद, विवेचन तथा रंगीन चित्रों सहित

❖ प्रधान सम्पादक ❖

उत्तर भारतीय प्रवर्त्तक भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी महाराज के सुशिष्य

उपप्रवर्त्तक श्री अमर मुनि

❖ सह-सम्पादक ❖

श्री तरुण मुनि

श्रीचन्द सुराना 'सरस'

❖ अंग्रेजी अनुवाद ❖

राजकुमार जैन

पद्म प्रकाशन

पद्म धाम, नरेला मण्डी, दिल्ली-११० ०४०

सचित्र आगम प्रकाशन माला का तेरहवाँ पुष्प

■ सचित्र रायपसेणिय (राजप्रश्नीय) सूत्र (द्वितीय उपांग)

■ **प्रधान सम्पादक**
उपप्रवर्त्तक श्री अमर मुनि

■ **सह-सम्पादक**
श्री तरुण मुनि
श्रीचन्द सुराना 'सरस

■ **अंग्रेजी अनुवाद**
राजकुमार जैन, दिल्ली

■ **प्रथमावृत्ति**
वि स २०५८
ईस्वी सन् २००२

■ **चित्रांकन**
डा त्रिलोक शर्मा

■ **प्रकाशक एवं प्राप्ति-स्थान**
पद्म प्रकाशन
पद्म धाम, नरेला मण्डी, दिल्ली-११० ०४०

■ **मुद्रण-व्यवस्था**
संजय सुराना
श्री दिवाकर प्रकाशन
ए-७, अवागढ हाउस, एम जी रोड, आगरा-२८२ ००२
दूरभाष (०५६२) ३५११६५

■ **मूल्य**
पांच सौ रुपया मात्र (५००/- रुपये)

ILLUSTRATED

RAI-PASENIYA (RAJ-PRASHNIYA) SUTRA

(THE SECOND UPANGA)

Original Text with Hindi and English Translations, Elaboration and Multicoloured Illustrations

◆ EDITOR-IN-CHIEF ◆

Up-pravartak Shri Amar Muni

(The Disciple of Uttar Bharatiya Pravartak Bhandari Shri Padma Chandra ji M.)

◆ ASSOCIATE-EDITORS ◆

Shri Tarun Muni

Srichand Surana 'Saras'

◆ ENGLISH TRANSLATOR ◆

Raj Kumar Jain

PADMA PRAKASHAN

PADMA DHAM, NARELA MANDI, DELHI-110 040

THE THIRTEENTH NUMBER OF THE ILLUSTRATED AGAM SERIES

- ILLUSTRATED RAI-PASENIYA (RAJ-PRASHNIYA) SUTRA
  (The Second Upanga)

- ***Editor-in-Chief***
  Up-pravartak Shri Amar Muni

- ***Associate-Editors***
  Shri Tarun Muni
  Srichand Surana 'Saras'

- ***English Translator***
  Raj Kumar Jain, Delhi

- ***First Edition***
  2058 V
  2002 A D.

- ***Illustrator***
  Dr Trilok Sharma

- ***Publisher and Distributor***
  Padma Prakashan
  Padma Dham, Narela Mandi, Delhi-110 040

- ***Printer***
  Sanjay Surana
  Shree Diwakar Prakashan
  A-7, Awagarh House, M G Road, Agra-282 002
  Phone (0562) 351165

- ***Price***
  Five Hundred Rupees only (Rs 500/-)



परम सरल आत्मा राष्ट्र सन्त
उत्तर भारतीय प्रवर्तक
पूज्य गुरुदेव

भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी म.

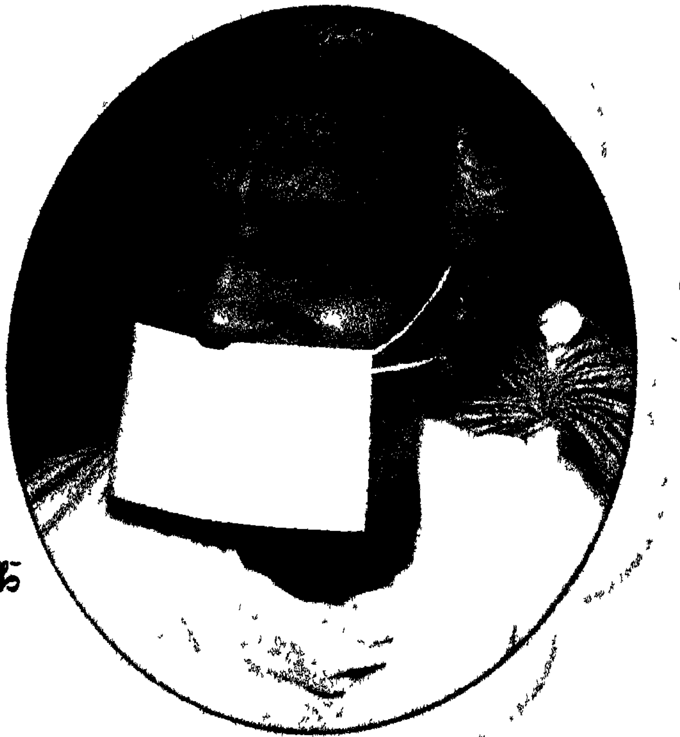
की

पुण्य-स्मृति

में

सादर सविनय

समर्पण

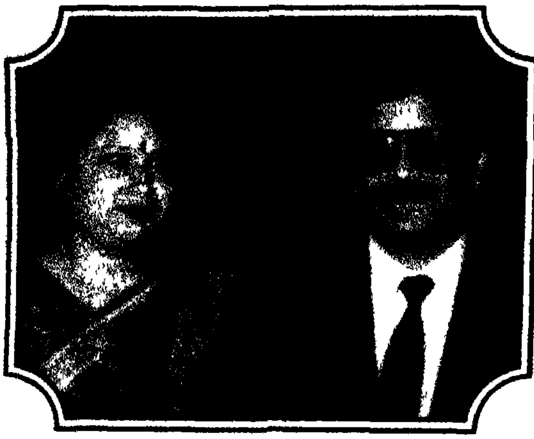


गुरु चरणोपासक

अमर मुनि

(उप प्रवर्तक)

श्रुत सेवा में उदार सहयोग दाता



श्री अभय कुमार रेणु जैन
शास्त्री नगर दिल्ली



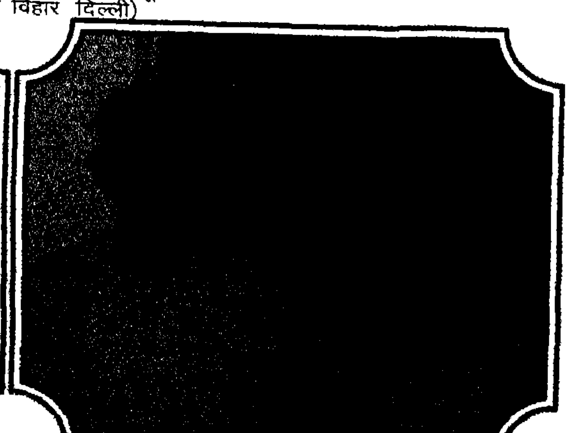
श्री पन्नालाल जैन श्रीमती माला देवी जैन
वैदमुथा (पश्चिम विहार दिल्ली)



माता शकुन्तला देवी जैन
(मातेश्वरी श्री भारतभूषण – स्वदेश भूषण जैन
पश्चिम विहार दिल्ली)



स्व. ला जौहरीमल बालोदेवी जैन
(खेवडे वाले)



श्री प्यारेलाल राम रक्खी जैन
(बनूड वाले)

श्रुत सेवा में उदार सहयोग दाता



समाजरत्न डॉ श्री नागेश जैन
(मैनेजिग डायरेक्टर पैन्टामेड हॉस्पिटल)
डेरावाल नगर, दिल्ली



श्री बाल कृष्ण जैन
त्रिवेणी अपार्टमेंट, दिल्ली



श्री श्रीपाल जैन (कहसून वाले)
(पीतमपुरा दिल्ली)



श्री राजपाल जैन
सोनीपत (हरियाणा)

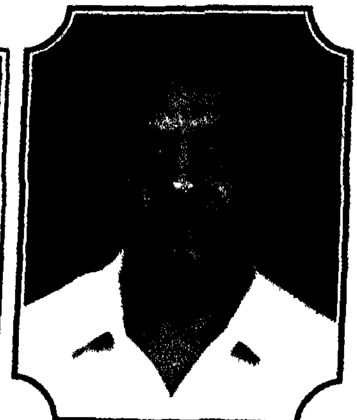


श्री बोधराज जैन
घरौंडा मंडी (हरियाणा)

श्रुत सेवा में उदार सहयोग दाता



श्री राजकुमार जैन
गोविन्द गढ़ मंडी



श्री रामकुमार जैन
(जाटल वाले) रोहिणी दिल्ली



श्री रमेश जैन
पीतमपुरा



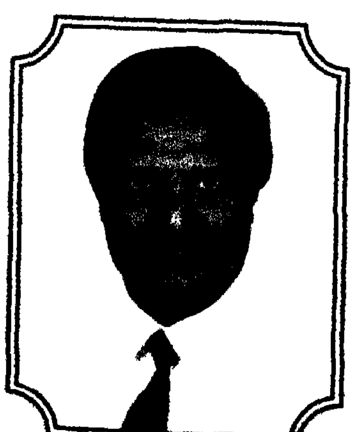
स्व श्री नेमचन्द जैन
रोहिणी दिल्ली



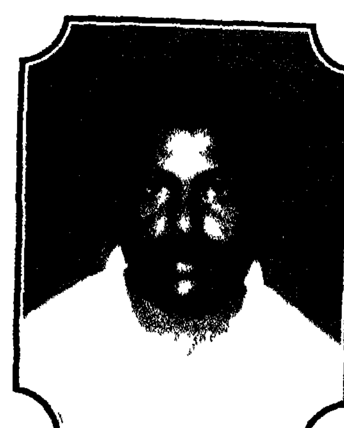
स्व लाला श्री भगतराम जैन
पश्चिम विहार दिल्ली



श्री जय भगवान जैन
कुरुक्षेत्र



श्री अशोक कुमार जैन
कुरुक्षेत्र



श्री सतीश कुमार जैन
कुरुक्षेत्र

प्रकाशकीय

स्व. गुरुदेव राष्ट्रसन्त उत्तर भारतीय प्रवर्तक भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी महाराज ने एक अमर प्रेरणा वाक्य दिया था–"**ज्ञानदान महान् दान है। वीतराग वाणी पर श्रद्धा करना और उसका प्रचार करना किसी भाग्यशाली की पहचान है।**"

हमारी सस्था पूज्य प्रवर्त्तकश्री जी के इसी बोधवाक्य को जीवन-सूत्र मानकर निरन्तर शास्त्र-सेवा के शुभ कार्य में जुटी है। अब तक बारह ग्रन्थों का प्रकाशन हो चुका है और अब हम प्रतिवर्ष दो ग्रन्थो का प्रकाशन करते हुए शास्त्र-सेवा के इस महान् कार्य को आगे बढा रहे है।

गत वर्ष १ मई को अचानक पूज्य प्रवर्त्तकश्री जी का स्वर्गवास हो जाना हम सबके लिए बहुत भारी आघातजनक रहा। उनकी उपस्थिति और आशीर्वाद से ही हमारी सब समस्याओं का समाधान हो जाता था। अब उनकी अनुपस्थिति मे भी उनका आशीर्वाद तो हमारे साथ है ही। उन्हीं के शिष्यरत्न प्रवचनकेसरी उपप्रवर्त्तक श्री अमर मुनि जी महाराज हमारे आधार है। उपप्रवर्त्तकश्री जी का अटूट सकल्प, दृढ निष्ठा और काम करने का साहस, सूझबूझ और सबका सहयोग प्राप्त करने की कला से यह कार्य सदा ही आगे बढता रहेगा ऐसा हमे दृढ विश्वास है।

पाठकों के हाथो में अब **'रायपसेणिय (राजप्रश्नीय) सूत्र'** सम्पूर्ण साज-सज्जा के साथ प्रस्तुत है। इसके सम्पादन-मुद्रण आदि कार्यों में जिन महानुभावो का सहयोग प्राप्त हुआ, हम उन सबके आभारी हैं।

महेन्द्रकुमार जैन
अध्यक्ष
पद्म प्रकाशन

PUBLISHER'S NOTE

Late Gurudev Rashtrasant Uttar Bharatiya Pravartak Bhandari Shri Padma Chandra ji M. gave us an ever inspiring message—"Imparting knowledge to others is the greatest charity. To have faith on the sermon of the Vitarag and to work towards its spread are qualities of a blessed individual."

Accepting this message from revered Pravartak Shri ji as a beacon, our organization is sincerely involved in this project of service to scriptures. Till date we have published eleven books and now we plan to bring out two books every year

The sudden demise of revered Pravartak Shri ji in the month of May (2001) came as a cruel shock to us all. His presence and blessings were panacea for all our problems Now, though he is no more, his blessings continue to be with us. His able disciple Pravachan Kesari Up-pravartak Shri Amar Muni ji M. is the anchor of all our activities. We are confident that this project is destined to progress under the auspices of his unwavering resolve, profound faith, spirit of endeavour and ability to attract co-operation from all.

'Illustrated Rai-paseniya (Raj-prashniya) Sutra' is now being placed before the readers. We are thankful to all those who have extended their co-operation to this project. We wish and hope to get their continued co-operation in future as well.

Mahendra Kumar Jain
PRESIDENT
Padma Prakashan

स्वकथ्य : प्रस्तावना

"जीवन मे सुख-शान्ति और आनन्द की प्राप्ति हो।" यह प्रत्येक मनुष्य चाहता है। चाहे कोई धर्म को, परमात्मा या आत्मा को माने या न माने, किन्तु सुख-शान्ति की कामना सभी आस्तिक-नास्तिक करते हैं। किन्तु इस बात को बहुत कम लोग समझते है कि सुख-शान्ति का मूल अध्यात्म है और अध्यात्म का आधार है आत्मा। अध्यात्म की सरल परिभाषा है-"**अधि आत्मानं-अध्यात्मम्-आत्मानं अधिकृत्य या क्रिया प्रवर्तते तद् अध्यात्मम्।**"-आत्मा को लक्ष्य मे रखकर जो क्रिया/प्रवृत्ति की जाती है, वह अध्यात्म है।

धर्मशास्त्र का उद्देश्य

धर्मशास्त्रो का उद्देश्य है-आत्मा का प्रतिपादन करना। आत्म-सत्ता का विवेचन/विश्लेषण करना और प्रत्येक जिज्ञासु के मन मे आत्मा के प्रति श्रद्धा, आस्था तथा विश्वास उत्पन्न करना। प्राचीनकाल से लेकर आज तक सभी धर्मशास्त्रो का निर्माण और पठन-पाठन इसी उद्देश्य को लेकर होता रहा है।

प्रस्तुत **रायपसेणिय (राजप्रश्नीय)** सूत्र का भी यही मूल उद्देश्य है-आत्म-सत्ता का प्रतिपादन करना, आत्मा के प्रति सबके मन मे आस्था-विश्वास पैदा करना। इस सूत्र की प्रतिपादन शैली अन्य शास्त्रों से कुछ भिन्न है। धर्म व अध्यात्म का विषय बडा नीरस और दुरूह, समझने मे कठिन माना जाता है, इसलिए सामान्य व्यक्ति धर्म की, आत्मा की, अध्यात्म की चर्चा मे उलझने से कतराता है और दूर-दूर ही रहना चाहता है। उन लोगो की रुचि कथा-कहानी वार्त्ता मे अधिक रहती है।

यह सूत्र लोक-रुचि को सतुष्ट और तृप्त करने वाला है। इसकी शैली मे यह अनूठापन है कि आत्मा, धर्म और अध्यात्म जैसे गहन, कठिन और नीरस विषय को इतना सरल, सरस और रुचिकर शैली से प्रस्तुत किया गया है कि पढने वाला और सुनने वाला आगे से आगे पढना/सुनना ही चाहता है।

शास्त्र के मुख्य पात्र

इस शास्त्र के मुख्य पात्र दो है-श्वेताम्बिका नगरी का नास्तिक राजा प्रदेशी और चार ज्ञान के धारक महान् विद्वान् पार्श्वापत्य केशीकुमार श्रमण। दोनों के बीच मे जीव के अस्तित्त्व के सम्बन्ध मे कि "शरीर और जीव भिन्न है या एक ही है ?" इस विषय में प्रश्नोत्तर होते हैं, तर्क-वितर्क होते हैं। प्रदेशी राजा अपने अनुभव और युक्तियाँ प्रस्तुत करके, जीव और शरीर को एक ही सिद्ध करता है और केशीकुमार श्रमण बडे रोचक, युक्तिपूर्ण दृष्टान्त, उदाहरण देकर जीव को शरीर से भिन्न चेतन तत्त्व सिद्ध करते है। उनके तर्क इतने युक्तियुक्त, अनुभवपूर्ण और अकाट्य होते हैं कि अन्त मे परम अधार्मिक-कट्टर नास्तिक प्रदेशी राजा उनके सामने झुक जाता है, स्वीकार करता है-"आपका कथन सत्य है, मैं आज तक भूल करता रहा, गलत मानता रहा।"

धर्म से जीवन-परिवर्तन

इस शास्त्र का यही सबसे मुख्य सार-तत्त्व है, यों देखें तो पूरे इस आगम का प्राण-तत्त्व यही है कि जीव और शरीर की भिन्नता सिद्ध करके जीव को चेतन, शाश्वत सिद्ध करना और शरीर को

जड–पुद्‌गलो का पिण्ड, नाशमान सिद्ध करना। शरीर को जब नश्वर मान लिया, तो फिर उसके प्रति मोह, ममता, आसक्ति का बधन भी ढीला पड जाता है। धन, ऐश्वर्य, सत्ता के सुख–भोग का नशा भी उतर जाता है और व्यक्ति के जीवन मे आमूलचूल परिवर्तन आ जाता है। दृष्टि बदलते ही सृष्टि बदलने जैसी बात हो जाती है। हिंसा और क्रूरता मे विश्वास करने वाला मानव दयालु, करुणाशील बन जाता है। शरीर के सुखो मे आसक्त रहने वाला शरीर के प्रति इतना मोहरहित हो जाता है कि मारने के लिए जहर देने वाली अपनी पत्नी के प्रति भी कोई रोष नही, द्वेष नहीं। भयंकर वेदना मे भी समभावपूर्वक धर्म की आराधना करता है। शरीर मे अत्यन्त तीव्र दाह उत्पन्न होने पर भी शान्ति और समाधिभाव मे लीन रहता है। प्रदेशी राजा के जीवन का यह आश्चर्यजनक परिवर्तन बडा अनूठा है। जिसके हाथ, जिसकी तलवार दूसरो के खून से सनी रहती है। जिसके नाम से ही बडे–बडे चोर, डाकू, हत्यारे, अपराधी काँपते थे, एक दिन वही राजा भोजन मे विष देने वाले के प्रति भी किसी प्रकार का द्वेष–क्रोध नही करके समभाव के साथ मृत्यु का स्वागत करता है।

कितना आमूलचूल परिवर्तन है एक ही व्यक्ति के जीवन मे। महापापी एक दिन परम धार्मिक बन जाता है। इस परिवर्तन का कारण है धर्म मे विश्वास, आत्मा की सत्ता मे आस्था और अध्यात्ममय जीवन !

घोर नरक मे जाने योग्य क्रूर कर्म करने वाला मरकर महान् वैभवशाली, प्रभावशाली देवता बनता है। गहरे गड्ढे से उठकर शिखर पर पहुँच जाता है। ऐसी रोचक चमत्कारी कथा है इस आगम के पात्र प्रदेशी राजा की।

नाम की सार्थकता

'रायपसेणियसूत्र' बारह उपागसूत्रो मे दूसरा उपाग है। यह द्वितीय अग आगम सूत्रकृताग का उपाग है। मै जब–जब इस शास्त्र को पढता हूँ या प्रवचन मे सुनाता हूँ तो मुझे भी बडा आनन्द आता है और श्रोताओ को भी, इसलिए सचित्र आगम प्रकाशन की शृखला मे इस वर्ष इसी आगम को लेने का निश्चय किया।

आगमो के सकलनकर्त्ता देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण और इस शास्त्र के टीकाकार आचार्य मलयगिरि ने इसका नाम **'रायपसेणिय'** मान्य किया है। जिसका सस्कृत रूप **'राजप्रश्नीय'** होता है। टीकाकार मलयगिरि का कथन है–''इसमे राजा के प्रश्न है, इसलिए इसका नाम **'राजप्रश्नीय'** या **'रायपसेणिय'** ही उपयुक्त है।''

वर्ण्य-विषय

जैसा मैने पूर्व मे बताया, इस शास्त्र का मुख्य विषय–आत्मा का स्वतत्र अस्तित्त्व सिद्ध करके उसके प्रति आस्था उत्पन्न करना है। जैसे कुशल पाकशास्त्री (रसोइया) साधारण खाद्य वस्तु को मसाला, व्यजन आदि लगाकर इतना स्वादिष्ट और रुचिकर बना देता है कि भूख नही होने पर भी उसकी भीनी गध और महक से मुग्ध होकर खाने को जीभ ललचाती है, मुँह में लार टपकने लगती है और खाने को हाथ बढ ही जाता है। उसी प्रकार इस शास्त्र में सूर्याभदेव का वर्णन, उसके ऐश्वर्ययुक्त विमानो की अद्‌भुत रचना, स्वर्ग के देव विमानो का वर्णन तथा भगवान महावीर के समवसरण में सूर्याभदेव द्वारा रचित

बत्तीस प्रकार के अद्भुत नाटक, सगीत, वाद्य आदि का वर्णन, उनकी एक-एक क्रियाविधि का रोचक चित्रण इतना मनोहारी है कि श्रोता सुनते-सुनते मुग्ध हो जाते है और इसके साथ ही केशीकुमार श्रमण द्वारा दिये गये रोचक दृष्टान्त भी इतने रसप्रद तथा अर्थपूर्ण है कि सुनकर गम्भीर तत्त्वज्ञान भी सहज ग्राह्य हो जाता है।

स्वर्ग के वैभव, विमान रचना, सूर्याभदेव का अभिषेक और नाटक, संगीत आदि के वर्णन की दृष्टि से यह शास्त्र किसी अनूठी शैली के काव्य से कम नहीं है। प्राचीन कला, सस्कृति, लोक सभ्यता आदि का वर्णन भी इसमे भरपूर है। प्राचीनकाल में प्रचलित सगीत के विभिन्न वाद्य, यंत्र, उपकरण और नाटकों की भिन्न-भिन्न मुद्राएँ व शैलियाँ यह बताती हैं कि प्राचीन भारत मे कला का विकास कितने उच्च-स्तर का रहा है।

इन सब वर्णनो के कारण यह शास्त्र पढ़ने/सुनने मे लोक-रुचि को आकर्षित करता है। उक्त सब वर्णन करने का मुख्य केन्द्र-बिन्दु है-**आत्मा की सिद्धि और धर्माराधना के फलस्वरूप प्रदेशी राजा के जीवन का आमूलचूल परिवर्तन।** क्रोध की जगह करुणा, द्वेष की जगह क्षमा-शान्ति, भोग, तृष्णा व राजसत्ता की लालसा के स्थान पर विषयो से विरक्ति, निरकुश राजसत्ता के स्थान पर विनम्रता और वत्सलता का धर्मशासन, राज्यभोग के प्रति उदासीनता, प्रजा-उत्पीडन के स्थान पर प्रजापालन की भावना, देहासक्ति के स्थान पर दैहिक ममता का त्याग और विदेहभाव की अनुभूति।

यही वर्णन इस शास्त्ररूपी शरीर के प्राण है। इन्हीं सबके कथन के लिए सम्पूर्ण शास्त्र का विस्तार है। यह वर्णन सुनकर/पढकर यह माना जा सकता है कि धर्म केवल परलोक के सुखरूप भौतिक फल ही नही देता, किन्तु धर्म-साधना से मनुष्य का हृदय पवित्र बन जाता है। उसका जीवन तृष्णा और मोहरहित हो जाता है। धर्म का प्रत्यक्ष फल इसी मे मिलता है, प्रत्येक विषम परिस्थिति में भी समता और शान्ति का अनुभव तथा चित्त की प्रसन्नता। मै मानता हूँ **'रायपसेणियसूत्र'** का सम्पूर्ण विस्तार इसी सत्य को प्रभावक रूप मे प्रकट करने के लिए ही है।

पाँच विभाग

इस शास्त्र के मुख्य रूप से दो विभाग है-एक पूर्व भाग, जिसमे सूर्याभदेव का भगवान महावीर के समवसरण मे आगमन दिव्य देवऋद्धि का प्रदर्शन, बत्तीस प्रकार के नाटको का अभिनय, फिर देवलोक प्रस्थान और वहाँ पर उसका अभिषेक महोत्सव, विमानो का रोचक काव्यात्मक वर्णन।

दूसरा उत्तर भाग है। गौतम स्वामी द्वारा यह प्रश्न कि इस सूर्याभदेव ने पूर्वजन्म मे ऐसा क्या धर्म व तपश्चरण किया था, जिसके फलस्वरूप इतनी महान् दिव्य देवऋद्धि प्राप्त हुई। उत्तर मे भगवान महावीर द्वारा उसके पूर्वजन्म, प्रदेशी राजा का वर्णन। मुख्य रूप से इसके पूर्व भाग और उत्तर भाग यो दो विभाग हैं। वर्णन की दृष्टि से इसके पाँच उप-विभाग भी हो जाते हैं-

(१) देव विमानों का वर्णन।

(२) समवसरण मे आगमन।

(३) सूर्याभदेव का प्रकरण।

(४) राजा प्रदेशी और केशीकुमार श्रमण का प्रसग।

(५) सूर्याभदेव के आगामी भव–दृढप्रतिज्ञकुमार का वर्णन।

दृढप्रतिज्ञकुमार का वर्णन यह बताता है कि जिसने पूर्वभव मे धर्म की आराधना की हो, उस व्यक्ति का आगामी भव (उत्तर भव) भी बडा ही धर्ममय, उच्च गुणो से युक्त, प्रभावशाली और सुख–सौभाग्य से सम्पन्न होता है। उसके व्यवहार मे धर्म का प्रत्यक्ष प्रभाव स्पष्ट दिखाई देता है।

प्रस्तुत सम्पादन

'रायपसेणियसूत्र' कथानुयोग का शास्त्र है। इससे लगता था इसका अनुवाद–विवेचन कार्य अनुयोगद्वार की अपेक्षा सरल ही होगा, परन्तु काम प्रारम्भ करने पर पता चला कि यह अनुयोगद्वार से भी क्लिष्ट आगम है। इसकी भाषा और वर्णन–शैली उच्च साहित्यिक तो है ही, साथ ही पारिभाषिक शब्दो से भरी है। देव विमानो के वर्णन मे वहाँ की स्थिति का वर्णन उसी स्तर की भाषा मे किया गया है, जिसे शब्दार्थ व शब्दो की व्याख्या के बिना समझ पाना सरल नही है। इसलिए अनुवाद और विवेचन मे इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि प्राचीनकाल मे प्रचलित या स्वर्ग विमान के वर्णन मे प्रयुक्त उन शब्दो का आज की भाषा मे अर्थ और स्पष्टीकरण भी साथ ही साथ करते जाना चाहिए। सदा आगम स्वाध्याय करने वालो को जो शब्द परिचित लगते है, वे शब्द कभी–कभार आगम पढने वालो को समझ पाने मे कठिनाई हो जाती है। हिन्दी अनुवाद मे तो फिर भी वे शब्द चल जाते है, किन्तु अग्रेजी अनुवाद मे उन शब्दो की व्याख्या किये बिना पाठक कुछ भी नही समझ पायेगा, क्योंकि उस भाषा और सस्कृति मे वे शब्द प्रयुक्त ही नही होते है, तो उनका अर्थ कैसे समझा जायेगा। इसलिए अनुवाद–विवेचन और अग्रेजी अनुवाद मे इस बात का खास ध्यान रखा गया है कि उन अप्रचलित शब्दो का आज के सन्दर्भ मे अर्थ दिया जाय ताकि पाठक को समझने मे कठिनाई न हो। इसलिए पद–पद पर टीकाकार की व्याख्या और शब्दकोष का सहारा लेते हुए इसका अनुवाद किया है, जो अब तक के प्रचलित अनुवादो से सर्वथा भिन्न और विशिष्ट लगेगा।

पुरानी प्रतियो मे ३०–४० लाइनो के दो–दो पृष्ठ के ऐसे सयुक्त पाठ है, जिनका उच्चारण बहुत कठिन होता है, कहॉ विश्राम लेना, कहाँ शब्द तोडना, कहाँ किस पाठ का क्या शब्दार्थ करना, यह वाचक, पाठक और श्रोता के ध्यान मे भी नही रहता। इसलिए हमने लम्बे पाठों के छोटे–छोटे पद व वाक्य बनाकर बीच–बीच मे उनका अर्थ कर दिया है। कई जगह तो एक ही सूत्र के (क), (ख), (ग) आदि लगाकर पाँच–छह उप–विभाग कर दिये है, जिस कारण पाठ का उच्चारण करना तथा अर्थ समझना सरल हो गया है।

जहाँ तक हो सका है, आगम के विषय को पढने–समझने मे सरलता बढाने का पूरा ध्यान रखा है। आशा है यह प्रयत्न पसन्द किया जायेगा।

आधार ग्रन्थ

'रायपसेणियसूत्र' कथानुयोग का शास्त्र होने के कारण इस पर आचार्यों ने निर्युक्ति, भाष्य, वृत्ति आदि भी नही लिखी। आचार्य मलयगिरि ने इस पर सुन्दर, गम्भीर टीका लिखी है और यही टीका इस शास्त्र

का भाव समझने का मूल आधार है। उस टीका के आधार पर श्रद्धेय श्री रतन मुनि जी ने इसका सुन्दर अनुवाद-विवेचन किया है। जिसका प्रकाशन युवाचार्य श्री मधुकर मुनि जी के प्रधान सपादकत्व मे **'राजप्रश्नीयसूत्रम्'** के रूप मे आगम प्रकाशन समिति, ब्यावर ने प्रकाशित किया है। अब तक के प्रकाशित हिन्दी अनुवादों मे वही अनुवाद अधिक उपयोगी कहा जा सकता है। हमारे सम्पादन मे उसी का मूल पाठ रखा है तथा अनुवाद-विवेचन मे भी उसका उपयोग किया गया है। हम सम्पादक-प्रकाशक के आभारी हैं।

शास्त्र-सेवा के इस महान् कार्य मे मेरे स्व. पूज्य गुरुदेव उत्तर भारतीय प्रवर्त्तक राष्ट्रसन्त भण्डारी श्री पद्मचन्द्र जी महाराज की प्रेरणा व आशीर्वाद सदा ही मेरे साथ रहा है। अब उनकी अनुपस्थिति मे भी उनके आशीर्वाद का सबल सम्बल मेरे साथ है और उसी के बल पर मै इस कार्य मे आगे गतिशील रहने का साहस कर रहा हूँ।

इस सम्पादन-विवेचन मे प्रमादवश या अल्पज्ञता के कारण कही कोई अशुद्धि तथा जिनवाणी के विरुद्ध लिखा गया हो तो मै सरल हृदय से **'मिच्छामि दुक्कडं'** लेता हूँ।

चित्रकार बधु ने चित्रो के माध्यम से स्वर्गीय विमानो की रचना दिखाने तथा प्रदेशी राजा एव केशीकुमार श्रमण के दृष्टान्तो को चित्रित करने मे अच्छा परिश्रम किया है। जिससे रोचकता व नवीनता बढ गई है।

इसका हिन्दी अनुवाद व विवेचन करने मे प्रसिद्ध साहित्यकार श्रीचन्द जी सुराना 'सरस' का सहयोग प्राप्त हुआ है तथा अग्रेजी अनुवाद मे सुश्रावक श्री राजकुमार जैन, दिल्ली से सहयोग मिला है। हिन्दी-अग्रेजी अनुवाद को बालयोगी श्री तरुण मुनि जी, उपप्रवर्तिनी विदुषी आज्ञावती जी महाराज, उपप्रवर्तिनी श्रमणीसूर्या डॉ सरिता जी महाराज तथा विदुषी साध्वी स्नेहकुमारी जी महाराज ने भी ध्यानपूर्वक देखा है, उचित परामर्श एव सहयोग दिया है। सदा की भाँति गुरुभक्त दानी श्रावको ने प्रकाशन मे अपना सहयोग दिया है।

सभी के सहयोग से श्रुत-सेवा के इस पुण्य कार्य मे मै आगे बढ रहा हूँ और बढता रहूँगा इसी आत्म-विश्वास के साथ !

—उपप्रवर्त्तक अमर मुनि

FROM THE EDITOR'S PEN

Every human-being wishes that "He is blessed with happiness, peace and bliss in life " Irrespective of his faith in religion, god or soul, everyone desires happiness and peace be he an atheist or a theist However, very few people understand that the fountainhead of happiness and peace is spirituality and that of spirituality is soul The simplest definition of spirituality (adhyatma) is—any activity or indulgence aimed at soul is spirituality

THE PURPOSE OF RELIGIOUS SCRIPTURES

The purpose of religious scriptures is to propagate soul, to analyze and elaborate the existence of soul and to infuse every aspirant with the faith and belief in soul. All the religious texts since ancient times have been written and are studied and taught for this single purpose

This **'Rai-paseniya Sutra'** has also been written for this very purpose, to propagate soul and to inspire faith and belief for soul in every aspirant. This scripture is written in a unique style Religion and philosophy are believed to be drab and dry subjects difficult to understand Therefore, most of the people avoid getting involved in discussion on these subjects These people are more interested in stories and fiction

This Sutra caters to the needs and interest of the masses. The unique style of this Sutra presents the serious, complex and drab topics of soul, religion and spirituality in so simple, interesting and attractive style that the reader or listener gets captivated and wants more

THE CENTRAL CHARACTERS

There are two central characters in this book—the agnostic ruler of Shvetambika city, king Pradeshi and Shraman Keshi Kumar, a follower of Bhagavan Parshvanath and endowed with four kinds of knowledge. There is a discussion between these two regarding the existence of soul—"Body and soul are separate entities or one ?" King Pradeshi presents on the basis of his logic and experience that soul and body are one. Shraman Keshi Kumar, with the help of interesting examples and irrefutable logic, refutes his arguments and establishes the identity of soul as an entity (chetan) independent of the body. Supported by experience, his arguments are so logical and irrefutable that in the end the extremely

dogmatic and agnostic king Pradeshi yields before him and accepts that "All this while he was wrong and had belief in falsehood."

RELIGION TRANSFORMS LIFE

The central theme or the spirit of this Agam is to establish the independent identities of soul and body and proceed towards proving that soul is life-force (chetan) that is indestructible and eternal whereas body is an aggregate of lifeless matter that is ephemeral and destructible. Once accepted that body is ephemeral, the bonds of fondness, love and attachment for it are loosened. The intoxication of wealth, grandeur, pleasures, enjoyments and power is also diluted. The whole life of a person undergoes a sea change. It is like—everything changes with a change in viewpoint. A person with faith in violence and cruelty turns peaceful and compassionate. A person infatuated with mundane pleasures becomes so detached from the body that he has no aversion or animosity for his own wife trying to poison him He continues his spiritual practices with equanimity even while suffering acute pain. He remains calm and serene even when his body runs very high temperature This astonishing change in the life of king Pradeshi is indeed unique. A person whose palms and sword were ever smeared with blood of others—terrible bandits, dacoits, murderers and criminals trembled at the mention of his name—one day welcomes death with equanimity and that too without any anger or hatred for the person who mixed poison in his food

How fundamental a transformation in the same person's attitude. A great sinner one day turns into a highly religious person. The cause of this transformation is belief in religion, faith in the existence of soul and spiritual way of life.

A person deserving a rebirth in hell due to his extremely cruel deeds is reborn as a very powerful and affluent god From a deep ravine he rises to the hilltop. So interesting and occupying is this astonishing tale of king Pradeshi, the central character of this Agam.

THE NAME

'Rai-paseniya Sutra' is the second among the twelve Upanga Sutras (the subsidiary Anga canon). This is the subsidiary of the second Anga Agam Sutrakritanga Whenever I read or include this scripture in my discourse, I enjoy it very much as also does the audience. That is the reason I decided to take up this book this year in the Illustrated Agam project.

Devardhigani Kshamashraman, the compiler of Agams and Acharya Malayagiri, the commentator (Tika) have given its name as **'Rai-paseniya'**. Its Sanskrit transcription is **'Raj-prashniya'**. Malayagiri affirms that "As it contains Prashnas (questions) by a Raja (king) the title **'Raj-prashniya'** or **'Rai-paseniya'** is appropriate."

SUBJECT-MATTER

As mentioned earlier, the central theme of this scripture is to inspire faith in soul by proving its independent existence By supplementing it with condiments and flavours, an expert chef makes a simple dish so tasty and inviting that a person without any appetite is drawn by its aroma and flavour He starts salivating and extends his hand to pick. In the same way the vivid description of Suryabh Dev, the unique configuration of his grand celestial vehicles, the celestial vehicles of other gods, the thirty two types of spellbinding performances including plays, music, musical instruments along with the details of the processes involved is so beautiful and interesting that the listener gets lost in the narrative Besides these, even the examples given by Keshi Kumar Shraman are so meaningful and interesting that the complex philosophical discussion becomes easy to understand

These descriptions of the grandeur of heaven, structure of celestial vehicles, anointing of Suryabh Dev, plays and music make this scripture an epic poem in unique style It contains ample information about ancient art, culture and civilization The information about a variety of musical instruments and range of themes and styles of dramas provide evidence about the highly developed state of performing arts in ancient India

These details are the cause of the popular interest in reading and reciting of this scripture The direction this narrative takes is the total transformation of the life of king Pradeshi as a consequence of indulgence in spiritual and religious practices—compassion replacing anger, peace and forgiveness replacing animosity, detachment from mundane pleasures replacing thirst for enjoyment and craving for territorial power, love, modesty and disciplined governance replacing autocratic rule, apathy for power mongering replacing political ambitions; public welfare replacing public torture, and detachment and renunciation replacing infatuation with body and its pleasures.

These details form the soul of the body that is this scripture. All the elaborations and embellishments are directed at this central theme. This

work emphatically conveys that religion is not just for acquiring worldly happiness in the life after death, it is also for attaining the purity of heart. The life of a religious person becomes free of cravings and fondness. The direct fruit of religion is in the form of the capacity to remain equanimous, peaceful and composed in adverse circumstances. All what is written in this **'Rai-paseniya Sutra'** is for the purpose of revealing this fact in a forceful manner

FIVE SECTIONS

This scripture has two main sections—The first section contains incidents of arrival of Suryabh Dev in the Samavasaran of Bhagavan Mahavir, display of his divine powers, performance of thirty two types of dramas, return to Devlok and his anointing ceremony This also includes interesting and poetic description of celestial vehicles.

The second section contains the story of king Pradeshi, the earlier incarnation of Suryabh Dev This story was narrated by Bhagavan Mahavir in answer to Gautam Swami's question that what spiritual practices and austerities in the earlier birth resulted in this god's acquiring such exceptional divine powers These are the two main sections of this scripture However, on the basis of content of details it can also be divided into five sub-sections—

(1) Description of celestial vehicles

(2) Arrival in the Samavasaran.

(3) The performance of Suryabh Dev

(4) The dialogue between king Pradeshi and Keshi Kumar Shraman

(5) The future incarnation of Suryabh Dev—Dridh Pratijna Kumar.

The story of Dridh Pratijna Kumar informs that a person who indulges in spiritual practices during earlier birth leads a religious life and is blessed with pious qualities, happiness, good luck and prestige. High level of religiosity is clearly evident in his behaviour.

THIS EDITION

'Rai-paseniya Sutra' is a narrative work (Kathanuyoga). Therefore it seems that the translation and elaboration would be easy as compared with Anuyogadvar Sutra. But on commencing the work it was found that it is more complex than Anuyogadvar Sutra. Not only that its language and description are highly ornamental, it also abounds in technical terms In the description of celestial vehicles the divine and celestial

conditions have been described in a language of equally lofty level. This makes it difficult to understand without defining and explaining the technical terms Care should be taken that ancient terms and technical terms used in the description of celestial vehicles have been explained along with the translation. The terms that are easy for those who regularly study Agams are difficult for those who study these occasionally In Hindi translation many of the terms are known to the Hindi reader, but in English translation the reader would be at a loss to understand such terms that are alien to English language Therefore, in the translation and elaboration as well as English translation care has been taken that such uncommon terms are explained in modern idiom to facilitate our readers That is the reason that help has been taken from the commentaries and dictionaries at every step This makes this translation first of its kind among the available translations

In the ancient manuscripts there are very long sentences with compounded words extending to two pages, and these are very difficult to read and recite The reader finds it almost impossible to know where to pause and where to break the compound words, what to say of understanding the meaning Realizing this difficulty we have broken the long passages into small sentences and phrases along with their translation At some places one long sentence has been divided into five-six sections marking (a), (b), (c) etc This will facilitate proper reading and easy understanding

As far as possible attention has been paid to the reader's convenience in reciting and understanding the content of this Agam. I hope that this effort will be appreciated

REFERENCE WORKS

As **'Rai-paseniya Sutra'** is a narrative work, no Niryukti, Bhashya or Vritti has been written on it by Acharyas Only Acharya Malayagiri has written an eloquent and profound Tika Thus the Tika is the only available reference work to help proper understanding of this work. Based on this Tika, respected Shri Ratan Muni ji has written a beautiful translation with elaborations It was published as **'Raj-prashniya Sutram'** by Agam Prakashan Samiti, Beawar under the guidance of Yuvacharya Shri Madhukar Muni ji as Editor-in-Chief. This is the most useful among hitherto published Hindi translations of this work. In this Illustrated edition we have taken original text from this Beawar edition

and also used it liberally while translating and elaborating. We are indebted to the editor and the publisher.

In this ambitious project of publishing Agams my revered Gurudev Uttar Bharatiya Pravartak Rashtrasant Bhandari Shri Padma Chandra ji M., always inspired and directed my activities. Now, in his absence, his blessings provide me a strong support. That is what infuses me with courage to continue the mission.

Still, in case at any place something has been mentioned against the purport of the scripture or not in line with the tradition, I sincerely feel and convey—**'Micchami dukkadam'** (May my misdeeds be undone).

The illustrator of this book has worked hard, especially on presenting the celestial vehicles and the examples narrated in the dialogue between king Pradeshi and Keshi Kumar Shraman. He deserves commendation. This novel scheme makes the work all the more interesting.

In the editing of this Sutra, Srichand Surana 'Saras' has put in admirable efforts and strenuous work For the English translation Shri Raj Kumar Jain, Delhi has made a commendable contribution Balayogi Shri Tarun Muni ji, Up-pravartini Vidushy Agyavati ji M., Up-pravartini Shramanisurya Dr Sarita ji M. and Sadhvishri Sneha Kumri ji M. have carefully checked the translation and provided able advise and their co-operation I express my heartfelt gratitude for them all and also for all those who have once again made financial contributions towards the publication of this work

With a resolve that I will continue to take this mission of Shrut-seva ahead as I have been doing in the past,

—Up-pravartak Amar Muni

अनुक्रमणिका		CONTENTS	
आमुख	१	Introduction	2
(१) सूर्याभ वर्णन		**(1) Description of Suryabh Dev**	
सूर्याभदेव की स्थिति	८	The Location of Suryabh Dev	9
सूर्याभदेव द्वारा भगवान की स्तुति	११	The Appreciation of Bhagavan by Suryabh Dev	12
आभियोगिक देवो को सूर्याभदेव की आज्ञा	१५	Instructions to Subordinate Gods	15
आभियोगिक देवो द्वारा आज्ञापालन	१९	Acceptance of Orders by Serving Gods	21
संवर्तक वायु की विकुर्वणा	२३	Making Hurricane Through Vaikriya Powers	24
बादलो की विकुर्वणा	२५	Creating Clouds Through Vaikriya Power	26
पुष्प-मेघो की रचना	२६	Making Clouds of Flowers	27
आभियोगिक देवो का वापस आगमन	२८	Return of Abhiyogic Gods After Compliance	28
सूर्याभदेव की उद्घोषणा एव आदेश	२८	Direction and Proclamation of Suryabh Dev	29
घोषणा की प्रतिक्रिया	३२	Response to the Proclamation	32
विमान-निर्माण का आदेश	३३	Orders for Setting up Viman	34
अद्भुत विमान रचना (सोपान रचना)	३५	Creation of Viman (Aerial Vehicle)	36
विमान का अन्तर भाग	३८	Inner Area of the Viman (Aerial Vehicle)	39
मणियो का वर्णन (कृष्ण वर्ण मणियाँ)	३९	Description of the Jewels (The Black Colour Jewels)	40
नील वर्ण मणियाँ	४०	The Blue Colour Jewels	41
रक्त वर्ण मणियाँ	४१	The Red Colour Jewels	42
पीह वर्ण मणियाँ	४२	The Yellow Colour Jewels	43
श्वेत वर्ण मणियाँ	४४	The White Colour Jewels	44
मणियो का गध	४५	The Fragrance of the Jewels	45
मणियो का स्पर्श	४६	The Touch of the Jewels	47

(२) केशीकुमार श्रमण और प्रदेशी राजा — (2) Keshi Kumar Shraman and King Pradeshi

(३) दृढ़प्रतिज्ञकुमार | **(3) Dridh Pratijna Kumar**

रायपसेणिय
(राजप्रश्नीय) सूत्र

RAI-PASENIYA
(RAJ-PRASHNIYA) SUTRA

रायपसेणियसूत्र
आमुख

नदीसूत्र मे ग्यारह अग तथा बारह उपाग आगमो का वर्णन है। उसमे द्वितीय अग आगम सूत्रकृतांग के उपाग रूप मे रायपसेणियसूत्र का उल्लेख है। यह दूसरा उपाग है।

सूत्रकृताग के साथ इस आगम का सम्बन्ध जोडते हुए टीकाकार आचार्य मलयगिरि ने बताया है– ''सूत्रकृताग मे क्रियावादी, अक्रियावादी, अज्ञानवादी और विनयवादी आदि तीन सौ तिरेसठ विभिन्न मतों का वर्णन है। उनमे अक्रियावादी (नास्तिक/चार्वाक) मत को आधार मानकर राजा प्रदेशी की मान्यताओ को प्रस्तुत किया है तथा उनका युक्तिपूर्ण समाधान भी किया है केशीकुमार श्रमण ने।'' स्थानागसूत्र (८/२२) मे 'अक्रियावादी' शब्द का प्रयोग दो अर्थों मे मिलता है–(१) अनात्मवादी, तथा (२) एकान्तवादी। अक्रियावादी के आठ भेद इस प्रकार है–एकवादी, अनेकवादी, मितवादी, निमित्तवादी, सातवादी, समुच्छेदवादी, नित्यवादी और असत् परलोकवादी। इनमे प्रथम छह तो एकान्तदृष्टि वाले एकान्तवादी है और समुच्छेदवादी तथा असत् परलोकवादी दो अनात्मवादी हैं। उपाध्याय यशोविजय जी आदि जैन दार्शनिको ने चार्वाक जैसे नास्तिकों को अक्रियावादी कहा है और एकान्तवादियो को भी नास्तिक मत मे सम्मिलित किया है। (नयोपदेश १२३)

इस सूत्र मे मुख्य वर्णन प्रदेशी राजा का है। प्रदेशी राजा अपने समय का कट्टर नास्तिक अर्थात् घोर अनात्मवादी था। वह स्वभाव से भी अत्यन्त क्रूर, कठोर और धर्मद्वेषी था। इसलिए सूत्रकृताग मे वर्णित अक्रियावादी मत के साथ उसका सम्बन्ध स्थापित करके इस रायपसेणियसूत्र को सूत्रकृतांग का उपाग माना गया है।

रायपसेणियसूत्र के प्रथम विभाग मे सूर्याभ देवता का वर्णन है, जो सौधर्म देवलोक मे उत्पन्न होने पर भगवान महावीर की वन्दना करने के लिए अपनी समस्त दिव्य ऋद्धि के साथ उपस्थित होता है और वहाँ अपनी देवऋद्धि का प्रदर्शन करता है।

देवऋद्धि के प्रदर्शन का यह दृश्य देखकर गणधर गौतम स्वामी भगवान से पूछते है–''यह सूर्याभ देवता कौन है ? इसने ऐसा क्या तप, दान व धर्माचरण किया जिसके फलस्वरूप इसे दिव्य देव ऋद्धि की प्राप्ति हुई ?'' तब भगवान महावीर उसके पूर्वभव का वर्णन सुनाते है, जो दूसरे विभाग मे प्रदेशी राजा और केशीकुमार श्रमण के वार्त्तालाप के रूप मे ग्रथित है। यह वर्णन ज्ञातासूत्र (अ १३) वर्णित दर्दुराक देव की तरह उसी शैली में है। पहले देवभव की देवऋद्धि का कथन करके फिर उसकी पृष्ठभूमि मे धर्माराधना का वर्णन किया गया है।

जैसे किसी हरे-भरे फलवान वृक्ष को देखकर उसके बीज के सम्बन्ध मे जिज्ञासा की जाती है, उसी प्रकार धर्माराधना के परिणामस्वरूप प्राप्त दिव्य देवऋद्धि को देखकर उसके कारणभूत साधनों के सम्बन्ध मे जिज्ञासा उत्पन्न होती है। जिज्ञासा जागृत होने पर भगवान महावीर समाधान करते हुए उसकी धर्माराधना का वर्णन करते हैं।

रायपसेणियसूत्र के इस प्रथम भाग मे भगवान महावीर की धर्मसभा मे सूर्याभदेव के आगमन से वर्णन प्रारम्भ होता है।

RAI-PASENIYA SUTRA

INTRODUCTION

Nandi Sutra contains the description of eleven Anga Agams and twelve Upanga Agams. Amongst them, Rai-paseniya Sutra is the Upanga of the second Anga Agam namely Sutrakritanga. It is the second Upanga

Relating this Agam to Sutrakritanga, Acharya Malaygiri, the commentator, has said—"Sutrakritanga mentions three hundred and sixty three different philosophies namely Kriyavadi, Akriyavadi, Ajnanvadi, Vinayvadi etc Based on Akriyavadi (non-believer in soul/Chaarvak) philosophy, the philosophical beliefs of king Pradeshi have been presented and Keshi Kumar Shraman had provided logical refutation of all such beliefs " In Sthananga Sutra (8/22), the word 'Akriyavadi', has been used in two distinct manners—(1) Anatmavadi, and (2) Ekantvadi (sticking to one and only one interpretation) Akriyavadi has eight off-shoots—Ekvadi (single point of view), Anekvadi (many points of view), Mitvadi (limited point of view), Nimittvadi, Saatvadi, Samuchhedvadi, Nityavadi and Asat Parlokvadi The first six of the said eight are Ekantvadi sticking to single interpretation or just one point of view Samuchhedvadi and Asat Parlokvadi (non-believer in life after death) are Anatmavadi (non-believer in soul) Jain philosophers like Upadhyaya Yashovijay has termed non-believer in soul like Chaarvak as Akriyavadi. Even Ekantvadi has been included in Naastik (non-believer in soul). (Nayopadesh 123)

The primary description in this Sutra is that of king Pradeshi The said king was a staunch Naastik of that period In other words he was fanatic non-believer in soul He was extremely cruel, merciless and contemptuous towards religion by temperament As such, associating him with Akriyavadi philosophy mentioned in Sutrakritanga, this Rai-paseniya Sutra has been accepted an Upanga of Sutrakritanga

In the first part of Rai-paseniya Sutra, there is description of Suryabh Dev The said Dev took birth in Saudharma Devlok and came with his entire celestial grandeur to Bhagavan Mahavir in order to greet him. There he presents his angelic grandeur in detail.

After witnessing the scene of celestial performance, Ganadhar Gautam enquires from Bhagavan Mahavir—"Who is this Suryabh Dev ? What ascetic activities charities and piety and have been performed by him that have resulted in providing such grandeur to him ?" In reply to this query, Lord Mahavir mentions in detail the earlier life-span of Suryabh Dev which forms the second part of this Sutra as dialogue between Keshi Kumar Shraman and king Pradeshi This description is in the same style as that of Dardurank Dev in Jnata Sutra (Chapter 13) In the beginning the angelic grandeur has been described and later in that background, his religious practices have been mentioned in detail

Just as an enquiry is made about the seed after seeing a tree fully laden with fruit, a curiosity arose to know the causes after seeing the divine grandeur In reply to it, Bhagavan Mahavir mentions the religious practices that resulted in acquiring such a grandeur

The first part of Rai-paseniya Sutra starts with the description about arrival of Suryabh Dev in the spiritual congregation of Bhagavan Mahavir

(१) सूर्याभ वर्णन
(1) DESCRIPTION OF SURYABH DEV

१. तेणं कालेणं, तेणं समएणं आमलकप्पा नामं नयरी होत्था, रिद्धत्थिमिय-समिद्धा जाव-पासादीया, दरिसणिज्जा, अभिरूवा, पडिरूवा।

१. उस काल (चौथे आरे मे) उस समय में-(जब भगवान महावीर विद्यमान थे) आमलकप्पा नाम की नगरी थी। जो **ऋद्ध**-धन-जन आदि से सम्पन्न परिपूर्ण, **स्तिमित**-स्व-चक्र, पर-चक्र आदि के भय से मुक्त, **समृद्ध**-धन-धान्य, व्यापार आदि से वैभवशालिनी यावत् **प्रासादिक**-चित्त को प्रसन्न करने वाली, **दर्शनीय**-देखने योग्य, **अभिरूप-प्रतिरूप**-मनोहर और आँखों व मन को सुन्दर रमणीय लगती थी।

1. At that time, during that period (the fourth part of the time-cycle, when Bhagavan Mahavir was present), there was a city named Aamal-kappa. It was prosperous populous and free from internal or external disturbances. It was flourishing in trade and commerce. It was grand, worth-seeing and had many attractive features.

२. तीसे णं आमलकप्पाए नयरीए बहिया उत्तर-पुरत्थिमे दिसीभाए अंबसालवणे नाम चेइए होत्था, चिरातीते जाव-पडिरूवे।

२. उस आमलकप्पा नगरी के बाहर उत्तर-पूर्व दिग्भाग-(ईशानकोण) में अबसालवन नामक चैत्य था, जो बहुत प्राचीन यावत् सुन्दर था।

2. At the outskirts of that Aamal-kappa city, in the north-east, there was Ambsalvan Chaitya. It was very ancient and beautiful.

३. असोयवरपायवे-पुढविसिलापट्टय वत्तव्वया उववाइयगमेणं नेया।

३. वहाँ श्रेष्ठ अशोक वृक्ष के पादमूल में (भूमि से लगा हुआ) एक विशाल पृथ्वीशिलापट्ट था, जिसका वर्णन औपपातिकसूत्रगत वर्णन के अनुसार जानना चाहिए।

3. There, at the foot of a grand Ashok tree was a huge slab of stone. Its description may be considered to be similar to the one mentioned in Aupapatik Sutra.

४. सेओ राया।

४. उस नगरी के राजा का नाम सेय था।

4. Seya was the ruler of that city.

५. धारिणीदेवी।

५. राजा की रानी का नाम धारिणी देवी था।

5. His wife was Dharini

६. सामी समोसढे परिसा निग्गया जाव–राया पज्जुवासइ।

६. भगवान महावीर स्वामी पधारे। वन्दना करने और धर्म–श्रवण करने के लिए परिषदा (जनता) निकली, यावत् राजा भी निकला और पर्युपासना–सेवा करने लगा।

6. Once Bhagavan Mahavir came there. People came to greet him and to listen to his spiritual discourse. The king also came there. He greeted the Lord and started serving him.

विवेचन–प्रस्तुत सूत्र मे 'आमलकप्पा' नगरी का उल्लेख है। भगवान महावीर के प्रसिद्ध वर्णकों मे आमलकप्पा नगरी का कोई उल्लेख प्राप्त नही होता है, न ही उनके विहार-क्षेत्रो की सूची मे ही आमलकप्पा का नाम मिलता है। इससे प्रतीत होता है तीर्थ प्रवर्तन के पश्चात् भगवान महावीर वहाँ पधारे है।

वर्तमान मे आमलकप्पा कहाँ है इस विषय मे कोई निश्चित तथ्य तो उपलब्ध नही है, किन्तु इतिहासकारो का अनुमान है–यह नगरी पश्चिम विदेह राज्य मे श्वेताम्बिका नगरी के समीप ही होनी चाहिए। बौद्ध ग्रन्थो मे वुल्लिम राज्य की राजधानी 'अल्लकप्पा' का उल्लेख है। इससे अनुमान होता है, 'अल्लकप्पा' ही आमलकप्पा नाम से प्रसिद्ध रही हो। यह स्थान शाहाबाद जिले के मसार और वैशाली के बीच अवस्थित था। (रायपसेणियसूत्र की प्रस्तावना आचार्य देवेन्द्र मुनि जी)

नगरी के वर्णन मे औपपातिकसूत्र की तरह वर्णन जानने का सकेत है।

औपपातिकसूत्र के वर्णन से पता चलता है, नगर के बाहर चारो ओर खूब कृषि भूमि थी। लाखो हल चलने से जहाँ की मिट्टी भुरभुरी, मुलायम और उपजाऊ हो गई थी। वहाँ के किसान कृषि विद्या मे निपुण थे। नालियो व क्यारियो से भूमि की सिचाई करने मे दक्ष थे। खेत–खलिहानो मे धान के ढेर लगे रहते थे। गाय–भैस, भेडो के टोले के टोले खेतो मे पलते थे।

नगरी के बाहर एक बहुत प्राचीन अम्बसालवन नाम का चैत्य था। 'चैत्य' शब्द से उद्यान और यक्षायतन दोनो ही अर्थ सूचित होते है। अम्बसालवन चैत्य का वर्णन औपपातिकसूत्र मे आता है। उसका सार है–

"यह चैत्य बहुत प्राचीन था। दूर–दूर तक प्रसिद्ध था। वह छत्र, ध्वजा, घंटा और पताकाओ से मण्डित था। उसकी वेदियाँ ऊँची बनी हुई थी। दीवारे सफेद मिट्टी से पुती हुई थीं। उन पर गोरोचन और चन्दन के थापे लगे हुए थे। जगह–जगह चन्दन के बने कलश रखे थे। दरवाजे पर तोरण सुशोभित थे।

धूपदानों में अगर लोबान-धूप जलने से महक फूट रही थी। वहाँ दूर-दूर से लोग आते, यज्ञ होता, आहुतियाँ देते, मनौती करते, सेवा करते, दान-दक्षिणा देते और इस आम्रशालवन चैत्य की जय-जयकार करते थे।''

उक्त वर्णन से प्रतीत होता है, आमो के उद्यान मे ही अशोक वृक्ष के नीचे कोई बहुत प्राचीन और विशाल यक्षायतन-यक्ष का प्राचीन स्थान होगा, जहाँ यह सब पूजा-अर्चा होती थी।

अशोक वृक्ष के नीचे जडो से लगा पृथ्वीशिलापट्टक-शिला जैसा लम्बा-चौडा पत्थर का पट्ट-पाट या चौकी (चबूतरा) बनी हुई थी, जहाँ भक्तजन पूजा-अर्चा, यज्ञ या प्रसाद चढाना आदि क्रियाएँ करते थे। इस उद्यान मे आम, अनार, अर्जुन, कदम्ब, शाल आदि उत्तम जाति के तरह-तरह के वृक्ष थे। जहाँ पक्षीगण क्रीडाएँ करते रहते, कलरव से गुँजाते रहते और बाहर से आने वाले दर्शक मनोरजन, विश्राम और आरोग्य लाभ प्राप्त करते रहते थे।

इस वर्णन से उस समय की नगर सस्कृति का एक सुन्दर चित्र सामने आता है। जहाँ प्रत्येक बडे नगर या राजधानी के बाहर इस प्रकार के विशाल उद्यान होते थे, जहाँ लोगो को धार्मिक आस्था के साथ ही आरोग्य लाभ की प्राप्ति होती थी। इससे नगरो का पर्यावरण शुद्ध रहता और जनता को नि शुल्क मनोरजन व स्वास्थ्य लाभ मिलता था।

नगर के राजा का नाम 'सेय' था। स्थानागसूत्र (अ ८) मे भगवान महावीर के पास आठ राजाओ के दीक्षा लेने का वर्णन है। उनमे एक नाम 'सेय' है। इससे पता चलता है-'सेय' राजा ने भगवान महावीर के पास दीक्षा भी ग्रहण की। आचार्य मलयगिरि ने इसका सस्कृत रूप 'श्वेत' किया है। रानी का मूल नाम क्या था, यह यहाँ स्पष्ट नही है। 'धारिणी' नाम एक सामान्य विशेषण प्रतीत होता है, जो प्रत्येक माता के लिए प्रयुक्त हो सकता है। यह शब्द मातृत्व के प्रति आदरभाव का सूचक है।

औपपातिकसूत्र के अनुसार 'सेय' राजा भगवान का आगमन सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ और हजारो नागरिको के साथ हाथी, घोडे, सेना लेकर दर्शन करने निकला। आम्रशालवन के निकट पहुँचने पर उसने भगवान को समवसरण में विराजमान देखा तो दूर से ही अपने हाथी से नीचे उतरा, उतरकर पाँच राज-चिन्हो को उतारकर रख दिया, जैसे-(१) तलवार, (२) छत्र, (३) मुकुट, (४) जूता, और (५) चामर। इस वर्णन से महापुरुषों, तीर्थंकरो व साधु-सन्तो के निकट जाने की सभ्यता सूचित होती है कि त्यागी पुरुषो के समक्ष बडे से बडा राजा भी अपने अहकार व गौरव के सूचक चिन्हों का त्याग कर नम्रता धारण करके जाता है। धर्मस्थलो में जूता उतारकर जाने की भारत की संस्कृति अत्यन्त प्राचीन है।

इसके अलावा पाँच अभिगम करके तीर्थंकरो की सभा मे प्रवेश किया जाता है। वे अभिगम इस प्रकार है-

(१) सचित्त-पुष्पमाला आदि का त्याग।

(२) अचित्त-वस्त्र आदि को व्यवस्थित धारण करना।

(३) एक शाटिका (दुपट्टा) का उत्तरासग करना-मुख पर रखना।

(४) भगवान को देखते ही दोनो हाथ जोडकर मस्तक झुकाना।

(५) भगवान के चरणो मे मन को एकाग्र करना।

ये पाँच अभिगम करके सेय राजा भगवान के दाहिने आकर तीन बार प्रदक्षिणा करता है। तीन प्रदक्षिणा करके वन्दना करता है, तीन प्रकार की पर्युपासना करता है। तीन प्रकार की पर्युपासना इस प्रकार है–

(१) **कायिक उपासना**–शरीर के अग-प्रत्यगो को सयत करके सभा मे सभ्यतापूर्वक बैठना।

(२) **वाचिक पर्युपासना**–वचन से भगवान की स्तुति करना। उनके वचनो का आदर करना।

(३) **मानसिक उपासना**–भगवान की वाणी को मन मे धारण कर अनुमोदना करते हुए यथा शक्ति स्वीकार करना।

यह तीन प्रकार की उपासना/पर्युपासना करके यथा योग्य स्थान पर बैठता है।

Elaboration—In the present Sutra, there is a mention of Aamal-kappa city. But there is no mention of Aamal-kappa in other important works about Bhagavan Mahavir or in list of areas of his wanderings. It shows that Bhagavan Mahavir came there only after establishing the order

No definite evidence is available to trace the spot where Aamal-kappa existed, but the historians are of the view that this city must have been near Shvetambika town in the kingdom of Western Videh In Buddhist scriptures there is mention of Alla-kappa as capital of Vullim kingdom Thus it is presumed that Alla-kappa might have been famous as Aamal-kappa. This place is located between Masaar and Vaishali in Shahabad district (Introduction of Rai-paseniya Sutra Devendra Muni).

Regarding the description of this city, it is pointed out that it is similar to the one mentioned in Aupapatik Sutra.

From the description in Aupapatik Sutra, it is evident that outside the city there was rich cultivation all around The soil had become soft, porous and fertile due to numerous ploughings. The farmers were expert in agriculture techniques They were adept at irrigating the fields by drains and edge-plantations. There were heaps of paddy in fields and thrashing zones Herds of cows, buffaloes and sheep were reared on these fields

There was a very ancient Chaitya named Ambsalvan outside the city. The word Chaitya has two meanings—garden and abode of Yaksha. Ambsalvan Chaitya has been described in detail in Aupapatik Sutra. In brief it is as follows—

"This Chaitya was very old. It was famous far and wide. It was decorated with canopy, flag, dumble-bell and buntings. Its padestals were high Its walls were white washed. They were bearing prints of Go-rochan and sandal paste. At various points, there were urns of sandal wood. The torana (ornamental entrance) was grand. The incense-pots were spreading fragrance People used to come from distant places. Ceremonial fires were lit and offerings were made. Fulfilment of wishes were asked. Services were performed. Charity was undertaken. They hailed this Aamrashalvan Chaitya "

The above description indicates that here in a mango orchard, under an Ashok tree there must have been a very ancient spacious and grand abode of Yaksha where all such worship and rituals were performed

Under the Ashok tree, touching the roots there was a long and wide stone platform where the worshippers used to perform worship, sacrifice or offering of articles of worship including sweets. There were many types of trees in this garden viz mango, pomegranate, Kadamb, Saal and others Birds used to enjoy there, making noise, fluttering hither and thither, visitors used to take rest there and enjoy the surroundings that were beneficial for their health

This description presents a beautiful account of the culture of that period Such spacious gardens were at the outskirts of every large town or capital city where the visitors could be benefitted with both the moral values and physical health Further, such gardens maintained environment free from pollution Simultaneously they were sources of enjoyment and health for people without any cost.

The ruler of the city was Seya. According to Sthananga Sutra (Ch 8), eight kings had accepted renunciation at the feet of Bhagavan Mahavir One of them was Seya. It shows that king Seya accepted monkhood from Bhagavan Mahavir Acharya Malaygiri has translated Seya as 'Shvet' It is not clear what was the name of the queen. The name Dharini appears to be a qualifying name, that can be attributed to every mother. This word Dharini represents respect for motherhood.

According to Aupapatik Sutra, king Seya felt overjoyed to learn the arrival of Bhagavan Mahavir, he came out of his palace and set out with thousands of citizens, infantry and other army divisions to greet the Lord. When he reached near Aamrashalvan and saw the Lord present in the congregation (Samavasaran), he got down the elephant and placed

aside five symbols of kinghood namely—the sword, the umbrella, the crown, the shoes and the broom This description depicts the sacred practice followed while approaching sages, the Tirthankar and monks. At the feet of the detached saints, even the greatest of all the kings, removes the symbols representing his ego and fame. The Indian practice of removing shoes before entering a religious zone is a fairly ancient one.

In addition, one enters the spiritual congregation of the Tirthankar after following five Abhigam (code of approach). They are as follows—

(1) Removal of garland having Sachitt (fresh) flowers.

(2) Wearing material objects such as clothes in a proper manner.

(3) Covering the mouth with a piece of cloth.

(4) To clasp the hands and bow the head immediately at the sight of the Lord

(5) To concentrate the mind at the feet of the Lord

Adopting the above said code, king Seya circumambulates Bhagavan three times starting from the right He then greets the Lord three times He then follows the three rules of Paryupasana (offer reverence) They are as under—

(1) Kayik Paryupasana (offering reverence physically)—To sit in the congregation in a civilized manner properly restraining movement of limbs of his body

(2) Vaachik Paryupasana (depicting respect verbally)—To praise the Lord. To greet the words of the Lord with respect

(3) Maansik Upasana (offering reverence mentally)—To accept the word of the Lord in the mind, to appreciate it and to adopt it in daily life according to one's capacity

After following the above said rules he takes his place in the congregation

सूर्याभदेव की स्थिति

७. तेणं कालेणं, तेणं समएणं सूरियाभे देवे सोहम्मे कप्पे, सूरियाभे विमाणे, सभाए सुहम्माए, सूरियाभंसि सिंहासणंसि चउहिं सामाणिय-साहस्सीहिं, चउहिं अग्गमहिसीहिं सपरिवाराहिं, तिहिं परिसाहिं, सत्तहिं अणिएहिं, सत्तहिं अणियाहिवईहिं, सोलसहिं आयरक्खदेव-साहस्सीहिं, अन्नेहिं बहूहिं सूरियाभ-विमाण-वासीहिं वैमाणिएहिं देवेहिं

य देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे, महयाऽऽहय–नट्ट गीय–वाइय–तंती–ताल–तुडिय–घण–मुइंग पडुप्पवाइय–रवेणं दिव्वाइं भोग–भोगाइं भुंजमाणे विहरइ।

इमं च णं केवलकप्पं जम्बुद्दीवं दीवं विउलेणं ओहिणा आभोएमाणे आभोएमाणे पासइ।

७. उस काल और उस समय में सौधर्मकल्प के सूर्याभ विमान की सुधर्मा नामक सभा में सूर्याभ सिंहासन पर आसीन सूर्याभदेव चार हजार सामानिक देवों, अपने–अपने परिवार सहित चार अग्रमहिषियों-पटरानियों, तीन परिषदाओ, सात सेनाओं, सात सेनापतियों, सोलह हजार आत्मरक्षक देवो एव और दूसरे भी सूर्याभ विमानवासी देवों एव देवियों से परिवृत दक्षपुरुषों द्वारा जोर–जोर से बजाये जा रहे–किये जा रहे नाट्य, गीत, वाद्य, तन्त्री, तल, ताल त्रुटित, घन मृदंग के स्वरो को सुनते हुए दिव्य भोगों को भोग रहा था।

तब उसने इस केवलकल्प (सम्पूर्ण) जम्बूद्वीप नामक द्वीप को विपुल–विमल अवधिज्ञान से निहारते–निहारते देखा।

THE LOCATION OF SURYABH DEV

7. At that time, during that period, Suryabh Dev was in Sudharma assembly in Suryabh Viman of Saudharm-kalp (the first Devlok). He was seated on Suryabh throne, four thousand Samanik Dev (celestial beings of the same status) along with their families, the four chief queens, the three assemblies, seven armies, their seven chiefs, sixteen thousand angels serving as body guard and other gods and goddesses in Suryabh Viman were also near him. The angels expert in dancing, singing, drumming and playing other musical instruments were exhibiting there skills. Suryabh Dev was thus enjoying the music and theatrical performances of celestial order.

He then with his far-reaching and pure extra-sensory knowledge saw the entire Jambu Dveep.

विवेचन–इस सूत्र में सूर्याभदेव के सभा–वैभव का वर्णन है। जैसे–

सामानिक देव–ये सभी देव विमानाधिपति देव के आज्ञाधीन रहते हुए समान द्युति, वैभव आदि से सम्पन्न होते है, इसलिए सामानिक कहलाते हैं। इनको भाई आदि के तुल्य आदर–सम्मान दिया जाता है।

अग्रमहिषी–राजतिलक–सम्पन्न राजा की पत्नी महिषी और शेष अन्य स्त्रियाँ भोगिनी कहलाती है। अपने परिवार की अन्य सभी पत्नियो में उसकी प्रधानता बताने के लिए महिषी के साथ 'अग्र' विशेषण का प्रयोग किया जाता है।

तीन परिषदा–सभी विमानाधिपति देवो की तीन परिषदाये होती है–आभ्यन्तर, मध्यम और बाह्य।

(१) जिनसे अपने अन्तरग, गुप्त, गूढ रहस्यो के विषय मे विचार किया जाता है, ऐसे परम विश्वसनीय समवयस्क मित्र समुदाय को आभ्यन्तर परिषद्।

(२) आभ्यन्तर परिषद् मे चर्चित एव निर्णीत विचारो के लिए जिसकी सम्मति ली जाती है, उसे मध्यम परिषद्।

(३) आभ्यन्तर तथा मध्यम परिषद् द्वारा विचारित, निर्णीत एव सम्मत कार्य को क्रियान्वित करने का दायित्व जिसे सौपा जाता है, उसे बाह्य परिषद् कहा जाता है।

सात सेनायें–(१) अश्व, (२) गज, (३) रथ, (४) पदाति, (५) वृषभ, (६) गंधर्व (गायक), और (७) नाट्य (नृत्य करने वाले)। ये सेनाओ के सात अग है। इनमे से आदि की पाँच सेना का युद्ध के लिए और अन्तिम दो का आमोद-प्रमोद के लिए उपयोग किया जाता है। ये सभी अपने-अपने अधिपति के नेतृत्व मे कार्य सम्पादित करने मे सक्षम होने के कारण इनके सात सेनापति अनीकाधिपति कहलाते है।

आत्मरक्षकदेव–ये देव अस्त्र-शस्त्रो से सुसज्जित होकर अपने अधिपतिदेव की रक्षा करने मे तत्पर रहते हैं। यद्यपि इन्द्र आदि देवो को किसी का भय नहीं होता कि आत्मरक्षको की आवश्यकता हो, परन्तु यह भी इन्द्र का एक प्रकार का ऐश्वर्य वैभव है।

Elaboration—This Sutra narrates the grandeur of Suryabh Dev and his cabinet

Samanik Dev—All these gods are equal in radiance and grandeur in comparison with their king, so they are called Samanik gods But they obey the order of the head of the Viman They are treated by the chief like brothers

Agra-mahishi (The Head Queen)—The wife of the king decorated with the royal symbol is called Mahishi. All the other wives are called Bhogini In order to indicate the greatest importance of the head queen amongst all the wives of the king in the royal family, the word 'agra' is used as an adjective with Mahishi.

Three Cabinets (Parishad)—All the Vaimanic celestial gods have three assemblies or cabinets They are the inner cabinet, the middle cabinet and the outer cabinet

(1) The inner cabinet comprises of the most trust-worthy friends who are of same age-group. The topics of intricate and secret nature are discussed with them.

(2) The middle cabinet is that assembly whose view-point is considered about the matters discussed and decided in the inner cabinet.

(3) The outer cabinet or assembly is given the responsibility of executing the decision taken by the inner and the middle cabinet.

Seven Armies—(1) Army of horse-men, (2) Army of riding elephants, (3) Army in chariots, (4) Infantry, (5) Army on oxes, (6) Army of musicians, and (7) Army of dancers. These are the seven divisions. The first five divisions are for the battle-field while the last two are for providing entertainment. These divisions execute their duties strictly under the command of their respective heads, so the seven heads of the divisions are called Aneekadhipati.

The Atma-rakshak Dev (The Body-guard—The Security Force)—These gods are always ready for the security of their chief god and are always fully armed Although god Indra and other gods of his status are not afraid of any one and, therefore, they do not need any body-guard, yet it is a type of grandeur depicting their greatness.

सूर्याभदेव द्वारा भगवान की स्तुति

८. तत्थ समणं भगवं महावीरं जंबुद्दीवे भारहे वासे आमलकप्पाए नयरीए बहिया अंबसालवणे चेइए अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणं पासइ। पासित्ता हट्ठ-तुट्ठ-चित्तमाणंदिए पीइमणे परम-सोमणस्सिए हरिसवस-विसप्पमाणहियए विकसिय-वरकमल-णयणे पयलियवरकडग-तुडिय-केऊर-मउड-कुंडलहारविरायंतरइवच्छे, पालंब-पलंबमाण-घोलंत-भूसणधरे-ससंभमं तुरियं चवलं सुरवरे सीहासणाओ अब्भुट्ठेइ।

अब्भुट्ठित्ता पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता पाउयाओ ओमुयइ, ओमुइत्ता एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ, करित्ता तित्थयराभिमुहे सत्तट्ठपयाइं अणुगच्छइ, अणुगच्छित्ता वामं जाणुं अंचेइ, दाहिणं जाणुं धरणि-तलंसि निहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणितलंसि निमेइ, निमित्ता ईसिं पच्चुन्नमइ पच्चुन्नमित्ता कडय-तुडियथंभियभुयाओ साहरइ, साहरित्ता करयलपरिग्गहियं दसणहं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी-

८. उस समय (विपुल अवधिज्ञानोपयोग द्वारा जम्बूद्वीप को देखते समय) सूर्याभदेव ने जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में आमलकल्पा नगरी के बाहर आम्रशालवन चैत्य में यथाप्रतिरूप अवग्रह ग्रहण कर-(साधु के लिए अनुकूल उचित स्थान की याचना करके) संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए श्रमण भगवान महावीर को देखा। देखकर हर्षित और अत्यन्त सन्तुष्ट हुआ, उसका चित्त आनंदित हो उठा। मन में प्रीति उत्पन्न हुई, अतीव प्रसन्नता को प्राप्त हुआ, हर्षातिरेक से उसका हृदय फूल गया, नेत्र और मुख कमल जैसे विकसित

हो गये। अपार हर्ष के कारण पहने हुए कटक (कंगन जैसे कडे), त्रुटित, केयूर (भुजा पर पहनने के गहने–बाजूबंद), मुकुट और कुण्डल चंचल हो उठे, वक्षस्थल हार से चमचमाने लगा, पैरों तक लटकते लम्बे आभूषण झुमके आदि विशेष चंचल हो उठे और उत्सुकता व तीव्र अभिलाषा से प्रेरित हो वह देवो में श्रेष्ठ सूर्याभदेव शीघ्र ही सिहासन से उठा।

उठकर पादपीठ पर पैर रखकर नीचे उतरकर पादुकायें उतारीं। पादुकायें उतारकर एकशाटिक उत्तरासग किया। उत्तरासग करके तीर्थंकर के अभिमुख सात–आठ कदम चला, अभिमुख चलकर बायाँ घुटना ऊँचा रखा और दाहिने घुटने को नीचे भूमि पर टेककर तीन बार मस्तक को पृथ्वी पर नमाया–झुकाया, फिर मस्तक कुछ ऊँचा उठाया। तत्पश्चात् कटक त्रुटित–बाजूबद से स्तम्भित दोनो भुजाओ को मिलाया। मिलाकर दोनों हाथ जोडकर दसों नखो को परस्पर मिलाकर आवर्त्तपूर्वक मस्तक पर अंजलि करके उसने इस प्रकार कहा–

THE APPRECIATION OF BHAGAVAN BY SURYABH DEV

8. At that time, while looking at Jambu Dveep through his abundant transcendental knowledge, Suryabh Dev saw Aamal-kappa city in the Bharat area of Jambu Dveep He further saw, in Aamrashalvan Chaitya at the outskirts of Aamal-kappa city Shraman Bhagavan Mahavir observing restraints and austerities after seeking permission of proper place for use of monks as pre-determined in his mind He felt extremely pleased and fully satisfied at this sight. He felt attracted and in extremely ecstatic state, his heart became completely contented. His eyes kept on staring and his face brightened Due to extreme happiness, the ornaments that he was wearing at his wrist, waist, shoulders, ears and head started moving The garland at his chest gave a dazzling look The long dangling ornaments touching his feet swayed prominently Out of curiosity and burning desire, Suryabh Dev who was best among gods, got up from his celestial seat in a hurry.

The god then placed his feet on a platform and removed his shoes. He then flung his shawl over his left shoulder (Uttarasang). He then moved ahead seven or eight steps. He then touched the ground with his right knee and keeping the left knee high, bowed to the Lord three times. He then raised his head, joined his adorned arms, clasped his hands, all fingers touching, and touching the clasped hands with his forehead, uttered as under—

१. नमोऽत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं आदिगराणं तित्थगराणं सयंसंबुद्धाणं पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवरपुण्डरीयाणं पुरिसवरगंधहत्थीणं लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहिआणं लोगपईवाणं लोगपज्जोयगराणं अभयदयाणं चक्खुदयाणं मग्गदयाणं जीवदयाणं सरणदयाणं दीवो ताणं बोहिदयाणं धम्मदयाणं धम्मदेसयाणं धम्मनायगाणं धम्मसारहीणं धम्मवरचाउरंतचक्कवट्टीणं अप्पडिहयवरनाण दंसणधराणं वियट्टछउमाणं जिणाणं जावयाणं तिण्णाणं तारयाणं बुद्धाणं बोहयाणं मुत्ताणं मोयगाणं सव्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिवं अयलं अरुयं अणंतं अक्खयं अव्वाबाहं अपुणरावत्तियं सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं।

नमोऽत्थु णं समणस्स भगवओ महावीरस्स आदिगरस्स तित्थयरस्स जाव संपाविउकामस्स।

वंदामि णं भगवंतं तत्थगयं इहगए, पासइ मे भगवं तत्थगए इहगये ति कट्टु वंदंति णमंसति, वंदित्ता णमंसित्ता सीहासणवरगए पुव्वाभिमुहं सण्णिसण्णे।

१. अरिहत भगवन्तो को नमस्कार हो, श्रुत-चारित्रधर्म की आदि करने वाले, तीर्थ की स्थापना करने वाले, स्वय ही बोध को प्राप्त, पुरुषो मे उत्तम, कर्मशत्रुओं का विनाश करने मे पराक्रमी होने के कारण पुरुषो में सिह के समान, सौम्य होने से पुरुषों में श्रेष्ठ कमल के समान-(सदा प्रफुल्लित और सुषमा से युक्त), पुरुषों में उत्तम गंधहस्ती के समान (जैसे गधहस्ती की गध से अन्य हाथी भाग जाते है उसी प्रकार जिनके पुण्य प्रभाव से ही ईति, भीति आदि का विनाश हो जाता है, ऐसे) लोक मे उत्तम, लोक के नाथ, लोक का हित करने वाले, लोक में प्रदीप के समान, लोक में विशेष उद्योत करने वाले अथवा लोक स्वरूप को प्रकाशित करने वाले-बताने वाले, सबको अभय देने वाले, श्रद्धा-ज्ञान-रूप नेत्र के दाता, धर्ममार्ग के दाता, धर्म के उपदेशक, धर्म के नायक, धर्म के सारथी, चतुर्गति रूप ससार का अन्त करने वाले धर्म चक्रवर्ती, अव्याघात (अवरोधरहित) केवलज्ञान-दर्शन के धारक, घातिकर्म रूपी छद्‌म के नाशक, रागादि शत्रुओं को जीतने वाले, कर्मशत्रुओं को जीतने के लिए अन्य जीवों को प्रेरित करने वाले, संसार-सागर से स्वयं तिरे हुए और दूसरो को तिरने का उपदेश देने वाले, बोध (केवलज्ञान) को प्राप्त करने वाले और उपदेश द्वारा दूसरों को बोध प्राप्त कराने वाले, स्वय कर्मबधन से मुक्त और उपदेश द्वारा दूसरो को मुक्त कराने वाले, सर्वज्ञ, सर्वदर्शी शिव-उपद्रवरहित, कल्याण रूप, अचल-अचल स्थान (सिद्धिस्थान) को प्राप्त हुए, अरुज-शारीरिक व्याधि वेदना से रहित, अनन्त, अक्षय,

अव्याबाध, अपुनरावृत्ति—जिसको प्राप्त कर लेने पर पुन. संसार में जन्म नहीं होता, ऐसे पुनरागमन से रहित—सिद्धि गति नामक स्थान मे स्थित सिद्ध भगवन्तों को नमस्कार हो।

धर्म की आदि करने वाले, तीर्थंकर—यावत् सिद्ध गति नामक स्थान को प्राप्त करने को तत्पर श्रमण भगवान महावीर को मेरा नमस्कार हो।

'तत्रस्थ' अर्थात् जम्बूद्वीप नामक द्वीप के भरत क्षेत्र मे स्थित आमलकप्पा नगरी के आम्रशालवन चैत्य मे विराजमान भगवान को यहाँ रहा हुआ मै वदना करता हूँ। वहाँ पर रहे हुए वे भगवान यहाँ रहे हुए मुझे देखते है। इस प्रकार स्तुति करके वन्दन—नमस्कार किया। वन्दन—नमस्कार करके फिर पूर्व दिशा की ओर मुख करके सिंहासन पर बैठ गया।

9. I offer my prayers to Arihantas, the super souls who have achieved perfection of knowledge and understanding, who are prime founders of religious order composed of four Tirthas. They are self-enlightened, supreme human-beings, as brave as lions among all human-beings since they have sub-dued mighty Karmas. They are as good as Pundarik lotuses among all human-beings in their tranquility and ecstatic appearance. They are like Gandh-Hasti elephant amongst all human-beings (Just as at the very fragrance of Gandh-Hasti, the other elephants run away, the evil namely famine and other natural calamities disappear as a consequence of their noble appearance) They are supreme in the universe, masters of the universe, beneficent ones to one and all in the universe They are like source of light in the universe, instrument of enlightenment in the universe. They are blessed givers of fearlessness to all, bestowers of right vision and right knowledge, guides to the path of serenity, teachers of Dharma the true knowledge. Charioteer of the Dharma chariot, guides of religious path, the king emperor in subduing the entire birth-cycle in universe wherein living-beings transmigrate in four states of bodily existence. They possess indestructible perfect knowledge and perception. They have overcome all the ignorance that pollutes the soul. They are conquerors of worldly attachment and hatred and they cause others also to do so. They themselves have come out successful in the swim-fete over the ocean of transmigration and they cause others to win the swim-fete. They are self-enlightened ones and are inspirors of the same enlightenment to others. They are self liberated and


भगवान महावीर को वन्दना
वन्दन करता सूर्याभदेव

चित्र परिचय-१

Illustration No. 1

भगवान महावीर को वन्दना

सौधर्मकल्प के सूर्याभ विमान मे उत्पन्न होने के अनन्तर सूर्याभदेव सुधर्मा सभा के सूर्याभ सिहासन पर आसीन होता है। उसके परिपार्श्व मे अग्रमहिषियाँ तथा सामानिक देव आदि बैठे है। नृत्य, गायन आदि उत्सव के रगारग वातावरण मे उसने अवधिज्ञान का उपयोग करके देखा-' भरत क्षेत्र की आमलकप्पा नगरी के उद्यान मे भगवान महावीर का दिव्य समवसरण लगा है।' यह दृश्य देखकर वह अत्यन्त आनन्दित हो उठा। रोम रोम हर्ष से पुलकित हो गया। शीघ्र ही सिहासन स उठा, पादुकाएँ उतारीं, एकशाटिक उत्तरासग करके वन्दना कर पुन सिहासन पर बैठ गया। दोनो हाथ जोडे, विनयपूर्वक बोला-' आमलकप्पा नगरी के उद्यान मे विराजमान श्रमण भगवान महावीर को मै वन्दना करता हूँ। वहाँ स्थित भगवान मुझे यहाँ देख रहे है।'

सूत्र ७ ९ पृष्ठ १३

SALUTATIONS TO BHAGAVAN MAHAVIR

After incarnating in the Suryabh Viman of Saudharm-kalp, Suryabh Dev sits on the Suryabh throne in the Sudharma assembly He is surrounded by his chief-queens, Samanik gods and other gods In the festive atmosphere of music and dance performances he employed his Avadhi Jnana and saw—"The divine Samavasaran of Bhagavan Mahavir is in progress in the garden of Aamal-kappa city in Bharat area " He got extremely pleased to witness this scene Every pore of his body elated with joy He at once got up from his throne removed his slippers, covered his mouth with his scarf, offered salutations and returned to his throne He joined his palms and uttered with modesty—"I bow and offer my salutations to Shraman Bhagavan Mahavir stationed in the garden of Aamal-kappa city Although stationed there, Bhagavan sees me here "

—*Sutras 7-9 p 13*

cause others to liberate so. They are omniscient, possessing perfect wisdom. They have reached the absolute state free from transmigration and are disease free. They are infinite, imperishable and free from all hurdles. Apunaravritti—non-revivability of birth-cycle. They are acquirors of total liberation—the abode of Siddhas. I offer my obeisance to Siddhas—the completely liberated souls.

I offer my salutation to Shraman Bhagavan Mahavir who is destined to reach the abode of liberated souls, the Siddhas (for full text see Illustrated Kalpa Sutra, pp. 24).

I offer salutation to Bhagavan Mahavir who is at present staying in Aamrashalvan Chaitya of Aamal-kappa city located in Bharat area of Jambu Dveep. Bhagavan Mahavir staying there is seeing me. Thus he greeted the Lord, praised him and then occupied the celestial seat facing east.

आभियोगिक देवों को सूर्याभदेव की आज्ञा

१०. तए णं तस्स सूरियाभस्स इमे एयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए मणोगए संकप्पे समुपज्जित्ता।

१०. तत्पश्चात् सूर्याभदेव के मन में इस प्रकार का यह आन्तरिक, चिन्तित, प्रार्थित–प्राप्त करने योग्य, इष्ट और मनोगत–मन में रहा हुआ (मानसिक) संकल्प समुत्पन्न हुआ।

INSTRUCTIONS TO SUBORDINATE GODS

10. Thereafter, Suryabh Dev thought in his mind, brooded and deeply contemplated upon the reflections appearing in his mind.

११. सेयं खलु मे समणे भगवं महावीरे जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे आमलकप्पाए णयरीए बहिया अम्बसालवणे चेइए अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ। तं महाफलं खलु तहारूवाणं भगवन्ताणं णाम–गोयस्स वि सवणयाए किमंग पुण अभिगमणवंदणं णमंसणं–पज्जुवासणाए ?

एगस्स वि आरियस्स धम्मियस्स, सुवयणस्स सवणयाए किमंग पुण विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ?

तं गच्छामि णं समणं भगवं महावीरं वन्दामि णमंसामि सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामि।

एयं मे पेच्चा हियाए सुहाए खमाए णिस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ त्ति कट्टु एवं संपेहेइ, एवं संपेहित्ता, आभिओगे देव सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–

११. जम्बूद्वीप के भारतवर्ष मे स्थित आमलकल्पा नगरी के बाहर आम्रशालवन चैत्य में यथाप्रतिरूप–अवग्रह को लेकर सयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए श्रमण भगवान महावीर विराजमान हैं। मेरे लिए श्रेय रूप है। जब तथारूप भगवन्तो के केवल नाम और गोत्र को श्रवण करने का ही महाफल है तो फिर उनके समक्ष जाने का, उनको वंदना करने का, नमस्कार करने का, उनसे प्रश्न पूछने का और उनकी उपासना करने का प्रसग मिले तो उसके विषय में कहना ही क्या।

आर्य पुरुष के मुख से एक भी धार्मिक सुवचन सुनने का ही जब महाफल होता है तब उनके पास से विपुल अर्थ–उपदेश ग्रहण करने के महान् फल की तो बात ही क्या है।

इसलिए मै जाऊँ और श्रमण भगवान महावीर को वन्दना करूँ, नमस्कार करूँ, उनका सत्कार–सम्मान करूँ और कल्याणकारी होने से कल्याणरूप, सब अनिष्टो का उपशमन करने वाले होने से मगलरूप, त्रैलोक्याधिपति होने से देवरूप और केवलज्ञानी होने से चैत्य स्वरूप उन भगवान की पर्युपासना करूँ।

श्रमण भगवान महावीर की यह पर्युपासना मेरे लिए अनुगामी होने के कारण परलोक मे हितकारी, सुखकारी, क्षेम–शान्ति करने वाली, नि.श्रेयस्कर, कल्याणकारी, मोक्ष प्राप्त कराने वाली होगी, ऐसा उस सूर्याभदेव ने विचार किया। विचार करके अपने आभियोगिक (आज्ञानुसार काम करने वाले) देवो को बुलाया और बुलाकर इस प्रकार कहा–

11. In Jambu Dveep, there is Bharat area. In it there is Aamrashalvan Chaitya at the outskirts of Aamal-kappa city. In the said city Bhagavan Mahavir is staying following his inner self-imposed restraints observing the code and austerities. His presence is a boon for me. To listen the very name and clan of such great men is said to be highly beneficial Therefore, to get a chance to go to them, to greet them, to bow to them, to seek clarifications about inner doubts from them and to serve them must be of extreme benefit.

When even a word of such a great spiritual master if properly listened to results in a great light, the result of spiritual meaningful discourse is indescribable.

So I must go to Shraman Bhagavan Mahavir, greet him, bow to him, welcome and honour him. I should serve him as his service is auspicious and destroys all evils. His service is god like since he is master of all the three worlds. It is resourceful and knowledgeable one since he possesses complete knowledge.

For me it is advantageous, auspicious blessed even in the next life-span (life after death) and is going to lead to the final goal of liberation. Such were the thoughts arising in the mind of Suryabh Dev He then called the celestial angels who were at his command and ordered them as follows—

१२. एवं खलु देवाणुप्पिया ! समणे भगवं महावीरे जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे आमलकप्पाए नगरीए बहिया अंबसालवणे चेइए अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।

तं गच्छह णं तुम्हे देवाणुप्पिया ! जंबुद्दीवं दीवं भारहं वासं आमलकप्पं णयरिं अंबसालवणं चेइयं समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिणं करेह, करेत्ता वंदह णमंसह, वंदित्ता णमंसित्ता साइं साइं नामगोयाइं साहेह, साहित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स सव्वओ समंता जोयणपरिमंडलं जं किंचि तणं वा पत्तं वा कट्ठं वा सक्करं वा असुइं वा अचोक्खं वा पूइअं दुब्भिगन्धं तं सव्वं आहुणिय आहुणिय एगंते एडेह, एडेत्ता–णच्चोदगं णाइमट्टियं पविरल–पप्फुसियं रय–रेणु–विणासणं दिव्वं सुरभिगंधोदयवासं वासह, वासित्ता णिहयरयं णट्ठरयं भट्ठरयं उवसंतरयं पसंतरयं करेह।

करित्ता कुसुमस्स जाणुस्सेह–पमाणमित्तं ओहिं वासं वासह, वासित्ता जलय–थलय–भासुरप्पभूयस्स बिंटट्ठाइस्स दसद्धवण्णस्स।

कालागुरु–पवरकुन्दरुक्क–तुरुक्क–धूव–मघमघंत–गंधुद्धयाभिरामं सुगंधवरगंधियं गंधवट्टिभूयं दिव्वं सुरवराभिगमणजोग्गं करेह कारवेह, करित्ता य कारवेत्ता य खिप्पामेव एयमाणत्तियं पच्चप्पिणह।

१२. हे देवानुप्रियो ! श्रमण भगवान महावीर जम्बूद्वीप नामक द्वीप के भरत क्षेत्रवर्ती आमलकप्पा नगरी के बाहर आम्रशालवन चैत्य में यथाप्रतिरूप अवग्रह को ग्रहण करके संयम और तप से आत्मा को भावित करते हुए विराजमान हैं।

अतएव देवानुप्रियो ! तुम वहाँ जाओ और जम्बूद्वीप नामक द्वीप के भरत क्षेत्र में स्थित आमलकप्पा चैत्य मे विराजमान श्रमण भगवान महावीर की दाये से बाये आवर्त्त करके तीन बार प्रदक्षिणा करो। प्रदक्षिणा करके वदना-नमस्कार करो। वंदना-नमस्कार करके तुम उनको अपने-अपने नाम और गोत्र का परिचय दो। उसके पश्चात् श्रमण भगवान महावीर के विराजने के आसपास चारों ओर एक योजन प्रमाण गोलाकार भूमि मे घास, पत्ते, काष्ठ, ककड-पत्थर, अपवित्र, मलिन, सडी-गली दुर्गन्धित वस्तुओ को अच्छी तरह से साफ कर दूर एकान्त स्थान मे ले जाकर फेक दो। यों उस भूमि को पूरी तरह से साफ-स्वच्छ करके इस प्रकार से दिव्य सुरभि-सुगधित गधोदक की वर्षा करो कि जिसमे जल अधिक न बरसे, कीचड न हो। रिमझिम-रिमझिम विरल रूप मे नन्ही-नन्ही बूँदे बरसें और धूल-मिट्टी जम जाये। इस प्रकार की वर्षा करके उस स्थान को निहितरज, नष्टरज, भ्रष्टरज, उपशातरज, प्रशातरज (धूल-मिट्टी से रहित) बना दो।

जल वर्षा करने के पश्चात् उस स्थान पर सर्वत्र एक हाथ ऊँचाई प्रमाण, भास्वर-चमकीले जल और स्थल मे उत्पन्न हुए पचरगे-रग-बिरगे सुगधित पुष्पो की प्रचुर परिमाण मे इस प्रकार से बरसा करो कि उनके वृन्त (डण्डियाँ) नीचे की ओर और पँखुडियाँ ऊपर की ओर रहे।

पुष्प वर्षा करने के बाद उस भूमि पर अपनी सुगंध से मन को आकृष्ट करने वाले काले अगर, श्रेष्ठ कुन्दरुष्क, तुरुष्क (लोभान) और धूप को जलाओ कि जिसकी सुगंध से सारा वातावरण महक जाये, श्रेष्ठ सुगध-समूह के कारण वह स्थान गधवट्टिका-गध की बत्ती के समान बन जाये, दिव्य सुरवरो-उत्तम देवों के जाने योग्य हो जाये, ऐसा तुम स्वय करो और दूसरो से करवाओ। यह कार्य करके और करवाकर शीघ्र मेरी आज्ञा वापस मुझे लौटाओ अर्थात् आज्ञानुसार कार्य हो जाने की सूचना दो।

12. O the blessed one's ! Shraman Bhagavan Mahavir is present in Aamrashalvan Chaitya at the outskirts of Aamal-kappa city of Bharat area in Jambu Dveep. He is observing his self-imposed restraints and austerities

So, O the blessed ! You go there and greet Shraman Bhagavan three times as specified in the code. You greet him, bow to him and tell him your respective names and gotra (status). Thereafter, you clean an area upto one yojan all around from his seat You remove grass, leaves, wood, stones, shingal, rotten material and throw that matter in a corner at a distance. After properly cleaning that area

you provide fragrant rain at that cleaned area. This rain should be within the limit and should not make the area muddy. The shower should be in the same shape of drizzle so that the dust settles down. By causing rain in this manner you destroy, remove and settle down the dust completely.

Thereafter, you shower bright, fragrant flowers of five different colours grown in land and water in sufficient quantity upto a height of one haath (a measure). The stalks of the flowers should be downwards and petals upwards.

Thereafter, you burn heart-pleasing incense and fill the entire environment with fragrance of black agar, pure kundrushk, lobhan and incense. Due to the fragrance that place should become a treasure of fragrance and worthy of visits by gods. You should do it yourself and also get done from others. After completing this entire assignment you inform me soon

आभियोगिक देवों द्वारा आज्ञापालन

१३. तए णं ते आभिओगिआ देवा सूरियाभेणं देवेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ जाव हियया करयलपरग्गहियं दसनहं सिरसावत्तं मत्थए अञ्जलिं कट्टु 'एवं देवो ! तहत्ति' आणाए विणएणं वयणं पडिसुणंति, 'एवं देवो ! तहत्ति' आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेत्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसिभागं अवक्कमंति।

उत्तरपुरत्थिमं दिसिभागं अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणंति, समोहणित्ता संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं निसिरंति, तं जहा—रयणाणं वयराणं वेरुलियाणं लोहियक्खाणं मसारगल्लाणं हंसगब्भाणं पुलगाणं सोगंधियाणं जोईरसाणं अंजणाणं अंजणपुलगाणं रययाणं जायरूवाणं अंकाणं फलिहाणं रिट्ठाणं अहाबायरे पुग्गले परिसाडंति, परिसाडित्ता अहासुहुमे पुग्गले परियायंति, परियाइत्ता दोच्चं पि वेउव्विय—समुग्घाएणं समोहणंति, समोहणित्ता उत्तरवेउव्वियाइं रूवाइं विउव्वंति।

विउव्वित्ता ताए उक्किट्ठाए तुरियाए चवलाए चंडाए जवणाए सिग्घाए उद्धूयाए दिव्वाए देवगईए तिरियं असंखेज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झंमज्झेणं वीईवयमाणे जेणेव जंबुद्दीवे दीवे, जेणेव भारहे वासे, जेणेव आमलकप्पा णयरी, जेणेव अंबसालवणे चेइए, जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति।

तेणेव उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेंति, वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–

'अम्हे णं भंते ! सूरियाभस्स देवस्स आभियोगा देवा देवाणुप्पियाणं वंदामो णमंसामो सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामो।'

१३. तत्पश्चात् वे आभियोगिक देव सूर्याभदेव की आज्ञा को सुनकर हर्षित हुए, सन्तुष्ट हुए यावत् हृदय विकसित हो गया। दोनो हाथ जोडकर आवर्त्तपूर्वक मस्तक पर अंजलि करके "हे देव-स्वामिन् ! आपने जो कहा वह उचित है।" ऐसा कहकर विनयपूर्वक आज्ञा स्वीकार की। "हे देव ! ऐसा ही करेगे" इस प्रकार से सविनय आज्ञा स्वीकार करके उत्तर-पूर्व दिशा मे गये।

उधर जाकर वैक्रिय समुद्घात किया। वैक्रिय समुद्घात करके सख्यात योजन का रत्नमय दण्ड बनाया। उन रत्नो के नाम इस प्रकार है-(१) कर्केतन रत्न, (२) वज्र रत्न, (३) वैडूर्य रत्न, (४) लोहिताक्ष रत्न, (५) मसारगल्ल रत्न, (६) हसगर्भ रत्न, (७) पुलक रत्न, (८) सौगन्धिक रत्न, (९) ज्योति रत्न, (१०) अजन रत्न, (११) अजन पुलक रत्न, (१२) रजत रत्न, (१३) जातरूप रत्न, (१४) अक रत्न, (१५) स्फटिक रत्न, (१६) रिष्ठ रत्न। इन रत्नों के यथा बादर-(असार-अयोग्य) पुद्गलो को अलग किया और फिर यथा सूक्ष्म (सारभूत) पुद्गलो को ग्रहण किया, ग्रहण करके पुन दूसरी बार वैक्रिय समुद्घात करके उत्तरवैक्रिय रूपो की विकुर्वणा की।

उत्तरवैक्रिय रूपो की विकुर्वणा करके अर्थात् अपना-अपना वैक्रियलब्धिजन्य उत्तरवैक्रिय शरीर बनाकर वे उत्कृष्ट त्वरा वाली, चपल, अत्यन्त तीव्र, चण्ड, जवन, वेगयुक्त आँधी जैसी तेज दिव्य गति से तिरछे-तिरछे असख्यात द्वीप समुद्रो को पार करते हुए जहाँ जम्बूद्वीपवर्ती भारतवर्ष की आमलकप्पा नगरी थी, आम्रशालवन चैत्य था और उसमे जहाँ श्रमण भगवान महावीर विराजमान थे, वहाँ आये।

वहाँ आकर श्रमण भगवान महावीर की तीन बार आदक्षिणा-प्रदक्षिणा की, उनको वंदन-नमस्कार किया और वन्दन-नमस्कार करके इस प्रकार कहा-

"हे भदन्त ! हम सूर्याभदेव के आभियोगिक देव आप देवानुप्रिय को वंदन करते हैं, नमस्कार करते हैं, आप का सत्कार-सम्मान करते है एव कल्याणरूप, मंगलरूप, देवरूप और चैत्यरूप आपकी पर्युपासना करते हैं।"

ACCEPTANCE OF ORDERS BY SERVING GODS

13. At this order from Suryabh Dev the serving gods (Abhiyogic Dev) became happy and cheerful. They clasped their hands and touching their head said—"O the respected master ! Whatever you have ordered is proper " Accepting the order they uttered that "They shall perform the assignment accordingly." They then went away in north-east direction.

They then spread the pradeshas beyond their fluid body (Vaikriya Samudghat) Then they created a jewel-studded thick rod numerable yojans long. The said jewels were—(1) Karketan, (2) Vajra, (3) Vaidurya, (4) Lohitaksh, (5) Masaargalla, (6) Hansgarbh, (7) Pulak, (8) Saugandhik, (9) Jyoti, (10) Anjan, (11) Anjan pullak, (12) Rajat, (13) Jaatroop, (14) Ank, (15) Sphatik, and (16) Rishth jewels. They removed the gross useless atoms of the said jewels and added subtle useful atoms Later, they again spread the pradeshas of soul beyond their fluid body (Vaikriya Samudghat).

After performing the Samudghat of fluid body and thus creating respective fluid bodies of the best type they moved at an extremely high speed like a dreadful storm of a very great velocity. They crossed innumerable continents and oceans and Aamal-kappa city in Bharat area of Jambu Dveep. Then they came to the place in Aamrashalvan where Bhagavan Mahavir was seated.

After arriving there, they went round the Lord three times, greeted him, bowed before him and said—

"O the reverend ! We, the gods in service of our master Suryabh Dev honour you, greet you and bow to you. You are auspicious, godlike and fountain of knowledge we pay our respects to thee."

विवेचन–अपने मूल शरीर मे रहते हुए जीव-प्रदेशो को शरीर से बाहर निकलने की क्रिया को समुद्घात कहते है। सात कारणों से जीव-प्रदेशों के शरीर से बाहर निकलने के कारण समुद्घात के भी सात भेद हैं। उनमे से यहाँ वैक्रिय समुद्घात का उल्लेख है। यह वैक्रियशरीर नामकर्म के कारण होती है। वैक्रियलब्धि वाला जीव विक्रिया करते समय अपने आत्म-प्रदेशो को विस्तार मे शरीर परिमाण और ऊँचाई में सख्यात योजन प्रमाण दडाकार रूप मे शरीर से बाहर निकालता है।

वैक्रियलब्धि से दो प्रकार की विक्रिया होती है–पृथक् विक्रिया और अपृथक् विक्रिया। आभियोगिक देवों ने पहले पृथक् विक्रिया द्वारा दड बनाया और उसके पश्चात् दूसरी बार अपने-अपने उत्तर रूप की विकुर्वणा की। इसीलिए यहाँ दो बार वैक्रिय समुद्घात करने का उल्लेख किया है।

गति की अत्यन्त तीव्रता बताने के लिए यहाँ त्वरा, चपल, तीव्र, चण्ड आदि अनेक समानार्थक शब्दो का प्रयोग किया है।

Elaboration—The process of spreading soul-atoms beyond the original body while still linked to it is called Samudghat. The soul-atoms are spread beyond the original body due to seven reasons. As such Samudghat is also of seven types Here we are concerned with the fluid Samudghat This is done when one possesses fluid body A person possessing skill of fluid blessing (Labdhi) while engaging in this process, spreads his soul-atoms upto his body and then emits them beyond it creating a numerable yojans long rod with his soul-atoms

The fluid process is of two types which is done by those having such skill. They are Prithak kriya and Aprithak kriya. The serving gods performed Prithak kriya first of all and thus created a rod of soul-atoms in this kriya Thereafter each one did fluid process second time in order to transform their body to the maximum

Many words having similar meaning (Synonyms) have been used to show extremely high speed

१४. 'देवा' इ समणे भगवं महावीरे ते देवे एवं वयासी—पोराणमेयं देवा ! जीयमेयं देवा ! किच्चमेयं देवा ! करणिज्जमेयं देवा ! आचिन्नमेयं देवा ! अब्भणुण्णायमेयं देवा ! जं णं भवणवइ–वाणमंतर–जोइसिय–वेमाणिया देवा अरहंते भगवंते वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता तओ साइं साइं णाम–गोयाइं साहिंति, तं पोराणमेयं देव ! जाव अब्भणुण्णायमेयं देवा !

१४. तब उन आभियोगिक देवो को सम्बोधित कर श्रमण भगवान महावीर ने इस प्रकार कहा–"हे देवो ! यह पुरातन है अर्थात् प्राचीनकाल से देवो मे परम्परा से चला आ रहा है। हे देवो ! यह करणीय है अर्थात् देवो को करना ही चाहिए। हे देवो ! यह आचीर्ण है अर्थात् देवो द्वारा पहले भी इसी प्रकार आचरण किया जाता रहा है। हे देवो ! यह अनुज्ञात है अर्थात् पूर्व के सब देवेन्द्रो ने सगत माना है कि भवनवासी, वाणव्यन्तर, ज्योतिष्क और वैमानिक देव अरिहंत भगवन्तो को वन्दन–नमस्कार करते है और वन्दन–नमस्कार करके अपने–अपने नामगोत्र कहते हैं (अपना परिचय देते हैं)। यह पुरातन है यावत् हे देवो ! यह अभ्यनुज्ञात–सर्वसम्मत पद्धति है।"

14. Then Bhagavan Mahavir addressed to the said Abhiyogik gods as follows—"O the celestial ones ! This is an age-old tradition

prevalent among the celestial gods. The gods should observe it. This was followed by the gods earlier also. It is known to celestial beings and they have accepted it. So the residential gods (Bhavanvasi), the peripatetic gods (Vanavyantar), the stellar gods (Jyotishka) and heavenly gods (Vaimanik) follow it and they honour, greet and bow to omniscients (Arihants). They than mention their names and status (gotra). So, O gods ! This is an age-old tradition "

संवर्तक वायु की विकुर्वणा

१५. तए णं ते आभिओगिया देवा समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठ जाव हियया समणं भगवं महावीरं वंदंति णमंसंति, वंदित्ता णमंसित्ता उत्तरपुरित्थमं दिसीभागं अवक्कमंति, अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणंति, समोहणित्ता संखेज्जाइं जोयणाइं दंडं निसिरंति तं जहा—रयणाणं जाव रिट्ठाणं अहाबायरे पोग्गले परिसाडंति, अहाबायरे पोग्गले परिसाडित्ता दोच्चं पि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणंति, समोहणित्ता संवट्टयवाए विउव्वंति।

से जहा नामए भइयदारए सिया तरुणे बलवं जुगवं जुवाणे अप्पायंके थिरग्गहत्थे दढ—पाणि—पायपिट्ठं तरोरु—संघाय—परिणए, घण—निचिय—वट्टवलिय—खंधे, चम्मेट्ठग—दुघण—मुट्ठिसमाहयगत्ते, उरस्स बलसमन्नागए, तल—जमल—जुयल—बाहू लंघण—पवण—जवण—पमद्दणसमत्थे छेए दक्खे पट्ठे कुसले मेधावी णिउणसिप्पोवगए एगं महं सलागाहत्थगं वा दंडसंपुच्छणिं वा वेणुसलागिगं वा गहाय रायं णं वा रायंतेपुरं वा देवकुलं वा सभं वा पवं वा आरामं वा उज्जाणं वा अतुरियं अचवलं असंभतं निरंत सुनिउणं सव्वतो समंता संपमज्जेज्जा।

एवामेव तेऽवि सूरियाभस्स देवस्स आभिओगिया देवा संवट्टयवाए विउव्वंति, विउव्वित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स सव्वतो समंता जोयणपरिमंडलं जं किंचि तणं वा पत्तं वा तहेव सव्वं आहुणिय आहुणिय एगंते एडेंति, एडित्ता खिप्पामेव उवसमंति।

१५. तत्पश्चात् श्रमण भगवान महावीर द्वारा ऐसा कहने पर उन आभियोगिक देवों ने हर्षित यावत् विकसित हृदय होकर श्रमण भगवान महावीर को वन्दन-नमस्कार किया। वन्दन-नमस्कार करके उत्तर-पूर्व दिग्भाग में गये। वहाँ जाकर उन्होंने वैक्रिय समुद्घात किया और वैक्रिय समुद्घात करके संख्यात योजन का दण्ड बनाया जो कर्केतन यावत्

रिष्टरत्नमय था और उन रत्नो के यथा बादर (असारभूत) पुद्गलो को अलग किया। यथा बादर पुद्गलों को हटाकर दुबारा वैक्रिय समुद्घात करके सवर्तक वायु (तूफानी हवा) की रचना की। जैसे–

कोई तरुण, बलवान, युगवान्–(समय–असमय होने वाली शारीरिक पीडा से रहित), युवावस्था वाला, रोगरहित–स्थिर पजे वाला–जिसके हाथ का अग्र भाग काँपता न हो, पूर्ण रूप से दृढ पुष्ट हाथ, पैर, पीठ एवं पसलियो और जघाओ वाला, अतिशय निचित–परिपुष्ट माँसल गोल कधो वाला, चर्मेष्टक (चमडे से वेष्टित पत्थर से बना अस्त्र विशेष), मुद्गर और मुक्को की मार से सघन, पुष्ट सुगठित शरीर वाला, बल, वीर्य और पराक्रम–आत्मशक्ति–सम्पन्न, एक साथ तालवृक्षयुगल (सीध मे खडे दो ताल वृक्ष) के समान सीधी, लम्बी और पुष्ट भुजाओ वाला, लाँघने, कूदने, वेगपूर्वक गमन एव मर्दन करने मे समर्थ, कलाविज्ञ, दक्ष, पटु, कुशल, मेधावी एव कार्यनिपुण सेवक का युवा पुत्र सीको से बनी अथवा मूठ वाली अथवा बाँस की सीको से बनी बुहारी को लेकर राजप्रागण, अन्त.पुर, देवकुल, सभा, प्याऊ, आराम अथवा उद्यान को बिना किसी घबराहट, चपलता, सम्भ्रम और आकुलता के निपुणतापूर्वक चारो तरफ से प्रमार्जित करता है–बुहारता है।

वैसे ही सूर्याभदेव के उन आभियोगिक देवों ने भी सवर्तक वायु की विकुर्वणा करके श्रमण भगवान महावीर के आसपास चारो ओर एक योजन–चार कोस के भू–भाग मे जो कुछ भी घास, पत्ते आदि थे उन सभी को चुन–चुनकर एकान्त स्थान मे ले जाकर फेक दिया और फेककर शीघ्र उस भूमण्डल को स्वच्छ, उपशांत, रजरहित बना दिया।

MAKING HURRICANE THROUGH VAIKRIYA POWERS

15. The Abhiyogic (serving) gods felt pleased at this talk of Bhagavan Mahavir. They honoured him, bowed to him and then went in north-east direction. There they performed Vaikriya Samudghat and created a rod which was numerable yojans long It was studded with sixteen types of jewels namely Karketan upto Risht. Then they separated the gross undesirable atoms of those jewels and after removing them, performed Vaikriya Samudghat second time and created whirl wind.

Consider a young, well-built, healthy (one who is not suffering from any disease or calamity), youthful, non-paralytic person. He has strong hand and feet, ribs and hips. He has fleshy round shoulders His body is proportionate and thick like a weapon made

thick and hard by beating with hammers and blows. He has extreme courage, strength and inner conviction. His arms are long, straight and well-built like a pair of Taal trees (Euclyptus). He is capable of jumping, crossing, running, massaging and pressing hard. He is deft in activities, is quick and intelligent. He is a genius and fully able to perform duties assigned to him. Further consider that a young son of such a person holds a broom made of bamboo-sticks and thoroughly cleans the courtyard of the palace, the drawing room, the abode of celestial beings, the assembly hall, the meeting place, the place to serve water, the gardens and all suchlike quickly and without any lethargy or fear in a discreet manner.

The Abhiyogic gods of Suryabh Dev in the same manner created the whirl wind and cleaned one yojan (eight miles) of area in each of the four directions around Bhagavan Mahavir, removed grass and leaves discreetly and threw them at one place in a distant corner Thus they turned that area completely dust-free, quiet and levelled

बादलो की विकुर्वणा

१६. दोच्चं पि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणंति, समोहणित्ता अब्भवद्दलए विउव्वंति।

से जहाणामए भइगदारगे सिया तरुणे जाव सिप्पोवगए एगं महं दगवारगं वा, दगकुम्भगं वा, दगथालगं वा, दगकलसगं वा गहाय आरामं वा जाव पवं वा अतुरियं जाव सव्वतो समंता आवरिसेज्ञा, एवामेव तेऽवि सूरियाभस्स देवस्स आभियोगिया देवा अब्भवद्दलए विउव्वंति, विउव्वित्ता खिप्पामेव पतणतणायंति, पतणतणाइत्ता खिप्पामेव विज्ञुयायंति, विज्जुयाइत्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स सव्वओ समंता जोयणपरिमंडलं णच्चोदगं णातिमट्टियं तं पविरल–पप्फुसियं रयरेणुविणासणं दिव्वं सुरभिगंधोदगं वासं वासंति, वासेत्ता णिहयरयं, णट्ठरयं, भट्ठरयं, उवसंतरयं, पसंतरयं, करेंति, करित्ता खिप्पामेव उवसामंति।

१६. इसके पश्चात् उन आभियोगिक देवो ने दुबारा वैक्रिय समुद्घात किया और उसके द्वारा जल से भरे बादलों की रचना की।

जैसे कोई तरुण कार्यकुशल भृत्यदारक–जल सींचने वाला भिश्ती, जल से भरे एक बड़े घड़े अथवा जल–कुम्भ अथवा जल–स्थालक अथवा जल–कलश को लेकर बगीचे को, परव

(प्याऊ) को बिना किसी उतावली के चतुरता से सब तरफ से सीचता है, इसी प्रकार से सूर्याभदेव के उन आभियोगिक देवो ने आकाश मे घुमड-घुमडकर गरजने वाले और बिजलियो की चमचमाहट से युक्त मेघो की विक्रिया करके श्रमण भगवान महावीर के विराजने के स्थान के आसपास चारों ओर एक योजन गोलाकार भूमि मे इस प्रकार से सुगन्धित गधोदक बरसाया कि जिससे भूमि न जल-मग्न हुई, न कीचड हुआ किन्तु रिमझिम-रिमझिम विरल रूप से बूँदाबाँदी होने से उडते हुए रजकण दब गये। इस प्रकार की मेघ वर्षा करके उस स्थान को निहितरज, नष्टरज, भ्रष्टरज, उपशान्तरज, प्रशांतरज-(अर्थात् सर्वथा धूलरहित) बना दिया। फिर शीघ्र ही मेघ वर्षा को समेट लिया।

CREATING CLOUDS THROUGH VAIKRIYA POWER

16. Thereafter, the said gods did Vaikriya Samudghat second time and created clouds containing water.

Consider a young, expert water-carrier. He picks up a big pot full of water, a water tank or a water container. He then irrigates an orchard deftly from all sides without any undue haste. In the same manner, the Abhiyogic gods created the thundering, whirling clouds in the sky. They moved around and showered fragrant water (gandhodak) in an area upto one yojan in circular shape all around the seat of Bhagavan Mahavir, the area neither became flooded nor muddy. But the dust settled down with these showers. With this rain they made that area clean, dust-free and levelled. All the dust had settled nicely. Then the rain was stopped.

पुष्प-मेघों की रचना

१७. तच्चं पि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणंति पुप्फ-वद्दलए विउव्वंति, से जहाणामए मालागारदारए सिया तरुणे जाव सिप्पोवगए एगं महं पुप्फ-छज्जियं वा पुप्फ-पडलगं वा पुप्फचंगेरियं वा गहाय रायंगणं वा जाव सव्वतो समंता कयग्गह-गहिय-करयल-पब्भट्ठ-विप्पमुक्केणं दसद्धवन्नेणं कुसुमेणं मुक्क-पुप्फपुंजोवयारकलियं करेज्जा।

एवामेव ते सूरियाभस्स देवस्स आभिओगिया देवा पुप्फवद्दलए विउव्वंति। खिप्पामेव पतणतणायंति जाव जोयणपरिमंडलं जलय-थलय-भासुरप्पभूयस्स बिंटट्ठाइस्स दसद्धवन्नकुसुमस्स जाणुस्सेहपमाणमेत्तिं ओहिं वासंति।

वासित्ता कालागुरु-वर-कुंदरुक्क-तुरुक्क-धूव-मघमघंतगंधुद्धुयाभिरामं सुगंधवरगंधियं गंधवट्टिभूयं दिव्वं सुरवराभिगमणजोग्गं करेंति य कारवेंति य, करेत्ता य कारवेत्ता य खिप्पामेव उवसामंति।

१७. मेघ वर्षा से धूल को शान्त करने के पश्चात् उन आभियोगिक देवों ने तीसरी बार पुनः वैक्रिय समुद्घात करके पुष्प बादलों की रचना की-जैसे कोई तरुण, कार्यकुशल मालाकारपुत्र (माली) एक बडी फूलों से भरी टोकरी पुष्पपटलक-(फूलों की पोटली) अथवा पुष्पचंगेरिका (फूलो से भरी डलिया) के, वैसे फूलों को हाथ मे लेकर पंचरंगे पुष्प-पुँजों को बिखेरकर राज-प्रांगण यावत् प्याऊ को सब तरफ से समलंकृत कर देता है।

उसी प्रकार सूर्याभदेव के आभियोगिक देवो ने पुष्प बादलों की रचना करके योजन प्रमाण गोलाकार भूभाग मे दीप्तिमान जलज और स्थलज पचरंगे पुष्पो को जमीन से ऊपर एक हाथ प्रमाण खचाखच भर दिया।

पुष्प वर्षा करने के पश्चात् मनमोहक सुगन्ध वाले काले अगर, श्रेष्ठ कुन्दरुष्क, तुरुष्क-लोभान की सुगन्धित धूप जलाकर महका दिया। उनकी उडती मनमोहक सुगन्ध से सारा प्रदेश महक उठा। श्रेष्ठ सुगन्ध के कारण सुगन्ध की गुटिका जैसा बन गया। देवो के आगमन योग्य बना दिया। इस प्रकार फिर पुष्प मेघो को शमित कर दिया-समेट लिया।

MAKING CLOUDS OF FLOWERS

17. After settling down the dust by rain bearing clouds, the Abhiyogic gods performed Vaikriya Samudghat for the third time. Now they created flower-bearing clouds, consider a young, expert gardener He holds in his hands a large basket full of flowers (pushp-patalak) or a vase containing flowers (pushp-changerika). He spreads the flowers of five different colours all around in the royal courtyard and thus decorates it.

In the same manner the Abhiyogic gods of Suryabh Dev created flower-bearing clouds and filled a circular area of one yojan upto a height of one haath (eighteen inches) with flowers grown on land and in water.

After the flower-bearing showers, they made the area fragrant by burning incense. The fragrance filled the entire area. Due to this extremely pleasant fragrance, the area became like a vase full of fragrance. It became fit for welcome of the gods. Thereafter, the flower-bearing clouds were removed.

१८. जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो जाव वंदित्ता नमंसित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतियाओ अंबसालवणाओ चेइयाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता ताए उक्किट्ठाए जाव वीइवयमाणा वीइवयमाणा जेणेव सोहम्मे कप्पे जेणेव सूरियाभे विमाणे जेणेव सभा सुहम्मा जेणेव सूरियाभे देवे तेणेव उवागच्छंति। सूरियाभं देवं करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति वद्धावेत्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति।

१८. तत्पश्चात् वे देव श्रमण भगवान महावीर के पास आये। श्रमण भगवान महावीर को तीन बार वदन-नमस्कार करके श्रमण भगवान महावीर के पास से, आम्रशालवन चैत्य से निकले। निकलकर उत्कृष्ट गति से चलते-चलते जहाँ सौधर्म स्वर्ग था, जहाँ सूर्याभ विमान था, जहाँ सुधर्मा सभा थी और उसमें भी जहाॅ सूर्याभदेव था, वहाँ आये। सूर्याभदेव के सामने दोनो हाथ जोड आवर्त्तपूर्वक मस्तक पर अजलि करके जय-विजय घोष से बधाया, बधाकर आज्ञापालन की सूचना दी।

RETURN OF ABHIYOGIC GODS AFTER COMPLIANCE

18. After this, the said gods came to Shraman Bhagavan Mahavir, honoured him and greeted him three times. Then they came out from Aamrashalvan Chaitya. Then at a tremendous speed, they came to Saudharm heaven Thereafter, they came to the place where Suryabh Dev was present in Saudharm assembly of Suryabh Viman. They clasped their hands, bowed to him, honoured him and informed him that his orders have been executed in letter and spirit.

सूर्याभदेव की उद्घोषणा एवं आदेश

१९. तए णं सूरियाभे देवे तेसिं आभियोगियाणं देवाणं अंतिए एयमट्ठं सोचा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हियए पायत्ताणियाहिवइं देवं सद्दावेति, सद्दावेत्ता एवं वयासी-

खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया ! सूरियाभे विमाणे सभाए सुहम्माए मेघोघ-रसिय-गंभीर-महुर-सद्दं जोयणपरिमंडलं सूसरं घंटं तिक्खुत्तो उल्लालेमाणे महया महया सद्देणं उग्घोसेमाणे उग्घोसेमाणे एवं वयाहि-

आणवेति णं भो ! सूरियाभे देवे, गच्छति णं भो ! सूरियाभे देवे जंबुद्दीवे दीवे भारहेवासे आमलकप्पाए णयरीए अंबसालवणे चेइए समणं भगवं महावीरं अभिवंदए,

तुब्भेऽवि णं भो ! देवाणुप्पिया ! सव्विड्ढीए जाव नाइत-रवेण णियग-परिवालसद्धिं संपरिवुडा साइं साइं जाणविमाणाइं दुरूढा समाणा अकालपरिहीणा चेव सूरियाभस्स देवस्स अंतिए पाउब्भवह।

१९. आभियोगिक देवों द्वारा कार्य संपूर्ति की सूचना पाकर सूर्याभदेव ने हर्षित, सन्तुष्ट हर्षातिरेक से प्रफुल्ल-हृदय हो पदाति अनीकाधिपति-स्थल-सेनापति को बुलाया और बुलाकर कहा-

"हे देवानुप्रिय ! तुम शीघ्र ही सूर्याभ विमान की सुधर्मा सभा में स्थित मेघ गर्जना जैसी गम्भीर मधुर झकार करने वाली एक योजन विस्तार वाली सुस्वर घंटा को तीन बार बजा-बजाकर उच्च स्वर में उद्घोषणा करते हुए इस प्रकार कहो-

हे देवो और देवियो ! सुनो ! सूर्याभदेव आज्ञा देता है कि हे देवो ! जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र मे स्थित आमलकप्पा नगरी के आम्रशालवन चैत्य मे विराजमान श्रमण भगवान महावीर की वंदना करने के लिए सूर्याभदेव जा रहे है। इसलिए हे देवानुप्रियो ! आप लोग समस्त ऋद्धि के साथ यावत् समस्त दिव्य वाद्यो को ढोलक पटह (नगाडा) बजाते हुए अपने-अपने परिवार सहित अपने-अपने यान-विमानो मे बैठकर अविलम्ब, समय नष्ट किये बिना सूर्याभदेव के समक्ष उपस्थित हो जाओ।"

DIRECTION AND PROCLAMATION OF SURYABH DEV

19. On hearing that Abhiyogic Devas have executed his orders, Suryabh Dev became happy and satisfied. He felt well-pleased. He then called the army chiefs and said—

"O the blessed ones ! You ring the dumble bell lying in Saudharma assembly of Suryabh Viman that emits upto one yojan a serene sweet thunder like sound. You ring the bell three times and then proclaim loudly as under—

O gods and goddesses ! It is the order of Suryabh Dev that O gods ! Suryabh Dev is going to Aamrashalvan Chaitya in Aamalkappa city of Bharat area in Jambu Dveep, where Shraman Bhagavan Mahavir is present, in order to honour and greet him and bow to him So, O the blessed ones ! You all along with your entire grandeur, playing all musical instruments including drums and with your entire family present yourself in your respective Vimans before Suryabh Dev without any further delay and without losing any time."

२०. तए णं से पायत्ताणियाहिवइ देवे सूरियाभेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ जाव हियए एवं देवा ! तहत्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणेइ पडिसुणित्ता जेणेव सूरियाभे विमाणे जेणेव सभा सुहम्मा, जेणेव मेघोघ–रसियगंभीर–महुरसद्दा जोयणपरिमंडला सुस्सरा घंटा तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता तं मेघोघरसित–गंभीर–महुरसद्दाए–जोयणपरिमंडलाए सुस्सराए घंटाए तिक्खुत्तो उल्लालेइ।

तए णं तीसे मेघोघ–रसित–गंभीर–महुरसद्दाए जोयणपरिमंडलाए सुस्सराए घंटाए तिक्खुत्तो उल्लालियाए समाणीए से सूरियाभे विमाणे पासायविमाणणिक्खुडावडिय–सद्दघंटापडिसुया–सयसहस्ससंकुले जाए याऽवि होत्था।

२०. तदनन्तर सूर्याभदेव की आज्ञा पाकर वह स्थल–सेनाधिपति देव हृष्ट–तुष्ट यावत् प्रसन्न हृदय हुआ और–"हे देव ! ऐसा ही होगा।" कहकर विनयपूर्वक आज्ञावचनो को स्वीकार किया। फिर सूर्याभ विमान मे जहाँ सुधर्मा सभा थी और उसमे भी जहाँ मेघगर्जनावत् गम्भीर मधुर ध्वनि करने वाली एक योजन विस्तार वाली गोल सुस्वर घटा थी, वहाँ आया। आकर मेघगर्जना के समान गम्भीर और मधुर ध्वनि करने वाली उस सुस्वर घटा को तीन बार बजाया।

तब वह गम्भीर मधुर ध्वनि करने वाला सुस्वर घटा तीन बार बजाये जाने पर उसकी ध्वनि से सूर्याभ विमान के प्रासादविमानो का कोना–कोना लाखों प्रतिध्वनियो से गूँज उठा।

20. After hearing the orders of Suryabh Dev, the commanding god of land forces felt pleased and assuring his master that "The work shall be done accordingly", he accepted his orders humbly. He then came to the place in Suryabh Viman where there was the dumble bell whose serene sweet sound could reach upto one yojan He then rang that bell thrice.

At the ringing of the dumble bell thrice, every corner of the palace-like abodes was filled with its echo.

२१. तए णं तेसिं सूरियाभ–विमाणवासीणं बहूणं वेमाणियाणं देवाण य देवीण य एगंतरइ–पसत्त–निच्चप्पमत्ता–विसयसुह–मुच्छियाणं सुस्सरघंटारव–विउलबोल–तुरिय–चवल–पडिबोहणे कए समाणे घोसण–कोउहल–दिन्नकन्न–एगग्गचित्त–उवउत्तमाणसाणं से पायत्ताणीयाहिवई देवे तंसि घंटारवंसि णिसंतपसंतंसि महया महया सद्देणं उग्घोसेमाणे उग्घोसेमाणे एवं वयासी–

हंद ! सुणंतु भवंतो सूरियाभविमाणवासिणो बहवे वेमाणिया देवा य देवीओ य सूरियाभ–विमाणवइणो वयणं हियसुहत्थं–

आणवेइ णं भो ! सूरियाभे देवे, गच्छइ णं भो ! सूरियाभे देवे जंबुद्दीवं दीवं भारहं वासं आमलकप्पं नगरिं अंबसालवणं चेइयं समणं भगवं महावीरं अभिवंदए। तं तुब्भेऽवि णं देवाणुप्पिया ! सव्विड्ढीए अकालपरिहीणा चेव सूरियाभस्स देवस्स अंतियं पाउब्भवह।

२१. तब वे सूर्याभ विमानवासी बहुत से वैमानिक देव और देवियाँ, जो एकान्त रति क्रीडा में लीन थे, सदा प्रमत्त और विषय–सुख में मूर्च्छित रहते थे, उन्होने सुस्वर घटारव सुना तो तुरन्त सावधान हो गये, कान और मन को केन्द्रित करके घंटारव को सुनने में दत्तचित्त हो गये। तब घटारव के विषय में उत्पन्न कुतूहल को शान्त करने के लिए, घंटा की गूँज एकदम शान्त हो जाने पर उस पदातिसेना के अधिपति देव ने जोर–जोर से उद्घोषणा करते हुए इस प्रकार कहा–

"आप सभी सूर्याभ विमानवासी वैमानिक देव और देवियाँ सूर्याभ विमानाधिपति की इस हितकारी सुखप्रद घोषणा को प्रसन्न होकर सुनिए–

हे देवानुप्रियो ! सूर्याभदेव ने आप सबको आज्ञा दी है कि सूर्याभदेव जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र मे स्थित आमलकप्पा नगरी के आम्रशालवन चैत्य मे विराजमान श्रमण भगवान महावीर की वन्दना करने के लिए जा रहे है। इसलिए हे देवानुप्रियो ! आप सभी अपनी समस्त ऋद्धि से सुसज्जित होकर अविलम्ब सूर्याभदेव के समक्ष उपस्थित हो जायें।"

21. Then many gods and goddesses who were residing in Suryabh Viman (abode) and who were engrossed in amorous pleasures and were completely absorbed in sensual enjoyment, heard the sound of the dumble-bell. They at once became alert and attentively listened to the sound of the bell. Then, in order to cool down the curiosity caused by that sound, when the said sound died down, the god controlling the army proclaimed in a loud voice as under—

"All the gods and goddesses of Suryabh abode (Viman) should discretely listen to the message of Suryabh Dev which is beneficial and pleasent. He then said—

O the blessed ! Suryabh Dev has ordered you all that he is going to Aamrashalvan Chaitya in Aamal-kappa city located in Bharat area of Jambu Dveep in order to show his respect and bow to

Bhagavan Mahavir who is present there so, all of you, should properly dress up and present yourself before Suryabh Dev along with your entire grandeur."

घोषणा की प्रतिक्रिया

२२. तए णं ते सूरियाभविमाणवासिणो बहवे वेमाणिया देवा देवीओ य पायत्ताणियाहिवइस्स देवस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हियया।

अप्पेगइया वंदणवत्तियाए, अप्पेगइया पूयणवत्तियाए, अप्पेगइया सक्कारवत्तियाए, अप्पेगइया संमाणवत्तियाए, अप्पेगइया कोऊहल-जिणभत्तिरागेणं, अप्पेगइया सूरियाभस्स देवस्स वयणमणुयत्तेमाणा, अप्पेगइया अस्सुयाइं सुणेस्सामो, अप्पेगइया सुयाइं निस्संकियाइं करिस्सामो, अप्पेगतिया अन्नमन्नमणुयत्तमाणा, अप्पेगइया जिणभत्ति-रागेणं, अप्पेगइया 'धम्मो' त्ति, अप्पेगइया 'जीयमेयं' ति कट्टु सव्विड्ढीए जाव अकालपरिहीणा चेव सूरियाभस्स देवस्स अंतियं पाउब्भवंति।

२२. इसके पश्चात् स्थल-सेनाधिपति देव की इस घोषणा (सूर्याभदेव की आज्ञा) को सुनकर सूर्याभ विमानवासी सभी वैमानिक देव और देवियाँ हर्षित, सन्तुष्ट यावत् प्रफुल्ल हृदय हो गये।

कितने ही देव भगवान की वन्दना करने के विचार से, कितने ही पर्युपासना करने की आकाक्षा से, कितने ही सत्कार करने की भावना से, कितने ही सम्मान करने की इच्छा से, कितने ही जिनेन्द्र भगवान के प्रति कुतूहलजनित भक्ति-अनुराग से, कितने ही सूर्याभदेव की आज्ञापालन करने के लिए, कितने ही अश्रुतपूर्व (जो पहले नही सुना) वह सुनने की उत्सुकता लिए, कितने ही सुने हुए अर्थविषयक शकाओ का समाधान करके निःशक होने के अभिप्राय से, कितने ही एक-दूसरे का अनुसरण करते हुए, कितने ही जिनभक्ति के अनुराग से, कितने ही अपना धर्म (कर्त्तव्य) मानकर और कितने ही अपना परम्परागत आचार-व्यवहार समझकर सर्व ऋद्धि के साथ यावत् बिना किसी विलम्ब के तत्काल सूर्याभदेव के समक्ष उपस्थित हो गये।

RESPONSE TO THE PROCLAMATION

22. At the proclamation of the chief of land forces of gods, the heavenly gods and goddesses residing in Suryabh Viman felt overjoyed and well pleased to the very core of their heart.

Many gods came there to greet the Lord, some came to serve him, some came to honour him, some came to respect him, some

came out of curiosity, some came to obey the command of Suryabh Dev, some came to listen to his spiritual discourse that had not been heard earlier, some came to seek clarifications relating to spiritual discourses heard by them earlier, some came just to follow others, some came as a matter of faith in the Jina, some came as a mark of religious duty, some came considering it to be a family tradition. Then they all presented themselves before Suryabh Dev with their full grandeur immediately and without any undue delay.

विमान-निर्माण का आदेश

२३. तए णं से सूरियाभे देवे ते सूरियाभविमाणवासिणो बहवे वेमाणिया देवा य देवीओ य अकालपरिहीणा चेव अंतियं पाउब्भवमाणे पासति, पासित्ता हट्ठतुट्ठ जाव हियए आभिओगियं देवं सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वयासी–

खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया ! अणेगखंभसयसंनिविट्ठं लीलट्ठियसालभंजियागं, ईहामिय-उसभ-तुरग-नर-मगर-विहग-वालग-किंनर-रुरु-सरभ-चमर-कुञ्जर-वणलय-पउमलय-भत्तिचित्तं खंभुग्गय-वइरवेइयापरिगयाभिरामं विज्जाहर-जमल-जुयलजंतजुत्तं पिव अच्चीसहस्समालणीयं रूवगसहस्सकलियं भिसमाणं भिब्भिसमाणं चक्खुल्लोयणलेसं सुहफासं सस्सिरीयरूवं घंटावलिचलियमहुरमणहरसरं सुहं कंतं दरिसणिज्जं णिउण-उचियभिसिभिसिंतमणिरयण-घण्टियाजालपरिक्खित्तं जोयणसयसहस्सवित्थिण्णं दिव्वं गमणसज्जं सिग्घगमणं णाम जाणविमाणं विउव्वाहि, खिप्पामेव एयमाणत्तियं पच्चप्पिणाहि।

२३. तत्पश्चात् सूर्याभदेव ने उन सभी सूर्याभ विमानवासी देवों और देवियों को शीघ्र अपने सामने उपस्थित देखकर हृष्ट-तुष्ट प्रफुल्ल हृदय हो, अपने आभियोगिक देव को बुलाया और बुलाकर इस प्रकार कहा–

"हे देवानुप्रिय ! तुम शीघ्र ही एक लाख योजन विस्तार वाला, सैकडों स्तम्भों वाला एक विशाल यान तैयार करो, जिसमे स्थान-स्थान पर हावभाव-विलास लीलायुक्त अनेक पुतलियाँ बनी हो। ईहामृग, वृषभ, तुरग, नर, मगर, विहग (पक्षी), सर्प, किन्नर, रुरु (बारहसिगा), सरभ (अष्टापद), चमरी गाय, हाथी, वनलता, पद्मलता आदि के चित्र अंकित हों। जो स्तम्भों पर बनी वज्र रत्नो की वेदिका से युक्त होने के कारण रमणीय दिखलाई दें। जिसमें बने हुए विद्याधरों के युगल यन्त्रचालित-जैसे दिखाई देते हो। अपनी हजारों किरणों से जगमगाहट करते, हजारों रूपकों-चित्रों से युक्त होने से जो देदीप्यमान प्रतीत हो। दर्शकों

के नयनो को आकर्षित करने वाला हो। जिसका स्पर्श सुखप्रद और रूप शोभा-सम्पन्न हो। हिलने-डुलने पर जिसमें लगी हुई घटावलि से मधुर और मनोहर शब्द-ध्वनि हो रही हो। जो वास्तुकला से युक्त होने के कारण शुभ, कान्त-कमनीय और दर्शनीय लगता हो। निपुण शिल्पियो द्वारा निर्मित, देदीप्यमान चमचमाती मणियो और रत्नों की मालाओ से व्याप्त हो, दिव्य तीव्र गति से चलने की शक्ति-सामर्थ्य-सम्पन्न हो। जो एक लाख योजन विस्तार वाला हो। इस प्रकार के यान-विमान की विकुर्वणा-रचना करके मुझे शीघ्र ही सूचित करो।"

[यह वर्णन विमान-निर्माण की एक परम्परागत विशिष्ट शैली का सूचक है। जहाँ-जहाँ भी विमान का वर्णन आता है, इसका अनुसरण किया जाता है-सपादक]

ORDERS FOR SETTING UP VIMAN

23. After seeing the resident gods and goddesses before him, Suryabh Dev felt satisfied and pleased. He then called the Abhiyogic gods and ordered as under—

"O the blessed ! You prepare immediately a spacious plane of one Lakh yojans and having hundreds of pillars. It should have dancing dolls at various points It should be studded with pictures of iha deer, bullock, turag, man, crocodile, bird, snake, kinnar, ruru, sarabh, chamri cow, elephant, forest creeper, lotus creeper and others. It should look grand due to jewel-studded family at the pillars. The machines of Vidyadhars carved on them should appear to be in motion. It should look glamorous as thousands of rays would be emitting from it and because it is embossed with thousands of pictures and paintings. It should be attractive to the eye. Its touch should be pleasant and its appearance should be magnificent. At their movement, sweet and pleasant sound should come out from the chain of bells studded on it As it is according to the architectural design, it should be good beautiful, grand and worth seeing It should be built by expert workers and should have shining rosaries of bright pearls and jewels. It (the Viman) should possess capability of movement at a tremendous speed. It should have a spread of one Lakh yojans. After preparing such a Viman, inform me immediately."

[This account indicates the tradition of preparing such a Viman-editing.]

२४. तए णं से आभिओगिए देवे सूरियाभेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठ जाव हियए करयल-परिग्गहियं जाव पडिसुणेइ जाव पडिसुणेत्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमति, अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणइ, समोहणित्ता संखेज्जाइं जोयणाइं जाव अहाबायरे पोग्गले परिसाडति परिसाडित्ता अहासुहुमे पोग्गले परियाएइ परियाइत्ता दोच्चं पि वेउव्विय समुग्घाएणं समोहणित्ता अणेगखंभसयसन्निविट्ठं जाव दिव्वं जाणविमाणं विउव्विउं पवत्ते यावि होत्था।

२४. तत्पश्चात् उस आभियोगिक देव ने सूर्याभदेव के आदेश को सुनकर हर्ष और प्रसन्नता प्रकट की। प्रफुल्ल हृदय हो दोनों हाथ जोड आज्ञा को स्वीकार करके उत्तर-पूर्व दिशा में आया। वहाँ आकर वैक्रिय समुद्घात किया और समुद्घात करके संख्यात योजन विस्तार वाला ऊपर-नीचे लम्बा दण्ड बनाया यावत् स्थूल बादर (असार) पुद्गलो को अलग हटाकर सारभूत सूक्ष्म पुद्गलो को ग्रहण किया, ग्रहण करके दूसरी बार पुनः वैक्रिय समुद्घात करके अनेक सैकडो स्तम्भो पर सन्निविष्ट आधारित दिव्य यान-विमान की विकुर्वणा करने मे प्रवृत्त हो गया।

24. After hearing the orders of Suryabh Dev, the Abhiyogic Dev felt happy He then clasped his hands indicating that he had accepted the orders in a pleasant manner. He then went in north-east direction He then performed fluid Samudghat and thus created a rod numerous yojans wide and very long He then separated gross undesirable atoms and replaced them with subtle useful atoms. Thereafter he did fluid Samudghat again and engaged himself in preparing exquisite Viman standing on hundreds of pillars.

अद्भुत विमान रचना (सोपान रचना)

२५. तए णं से आभिओगिए देवे तस्स दिव्वस्स जाणविमाणस्स तिदिसिं तिसोवाणपडिरूवए विउव्वति, तं जहा-पुरत्थिमेणं, दाहिणेणं, उत्तरेणं, तेसिं तिसोवाणपडिरूवगाणं इमे एयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तं जहा-

वइरामया णिम्मा, रिट्ठामय पतिट्ठाणा, वेरुलियामया खंभा, सुवण्ण-रुप्पमया फलगा, लोहितक्खमइयाओ सूईओ, वयरामया संधी, णाणामणिमया अवलंबणा, अवलंबणबाहाओ य, पासादीया जाव पडिरूवा।

२५. इसके पश्चात् आभियोगिक देवो ने सर्वप्रथम उस दिव्य यान-विमान की तीन दिशाओं-पूर्व, दक्षिण और उत्तर मे विशिष्ट शोभा-सपन्न तीन सोपानों-(सीढ़ियों) की रचना की। वे रूपशोभा-सम्पन्न सोपान पंक्तियाँ इस प्रकार की थीं-

"इनकी नेम (नींव अथवा भूमि से ऊपर निकला प्रदेश, वेदिका) वज्र रत्नों से बनी हुई थी। इनके प्रतिष्ठान (पगथिया) रिष्ट रत्नमय और स्तम्भ सोने-चाँदी के बने थे। इनमें लोहिताक्ष रत्नमयी सूचियाँ-कीले लगी थी। वज्र रत्नों से इनकी संधियाँ (साँधें) भरी हुई थीं। चढ़ने-उतरने में अवलम्बन के लिए अनेक प्रकार के मणिरत्नों से बनी इनकी अवलम्बनवाहा-कठहरा (रेलिग) थी तथा ये सोपान पंक्तियाँ मन को प्रसन्न करने वाली यावत् असाधारण सुन्दर थीं।"

CREATION OF VIMAN (AERIAL VEHICLE)

25. Thereafter, the Abhiyogic gods, first of all constructed three beautiful stairs of the Viman in the east, the south and the north. Those stair-cases were magnificent and their detailed description is as under—

"Their foundation was of hard jewels. Their steps were of Risht jewels and the pillars were of silver and gold. They were fixed with nails of Lohitaksh jewels. The joints were filled with Vajra jewels. The railing to assist in going up or coming down was of Pearls. Thus these steps were very pleasant and unique."

२६. तेसि णं तिसोवाणपडिरूवगाणं पुरओ पत्तेयं पत्तेयं तोरणं पण्णत्तं, तेसि णं तोरणाणं इमे एयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तं जहा-

तोरणा णाणामणिमया णाणामणिमएसु थंभेसु उवनिविट्ठसंनिविट्ठा विविह-मुत्तन्तरारूवोवचिया विविह-तारारूवोवचिया जाव पासाइया दरिसणिज्जा, अभिरूवा पडिरूवा।

२६. इन दर्शनीय मनमोहक प्रत्येक त्रिसोपान-पंक्तियो के आगे तोरण बँधे हुए थे। उन तोरणो का वर्णन इस प्रकार है-

"वे तोरण अनेक प्रकार की मणियों से बने हुए थे। विविध प्रकार के मणिमय स्तम्भों के ऊपर भलीभाँति निश्चल रूप से बाँधे गये थे कि वे हिल न सकें, निश्चल थे। विविध प्रकार के मोतियों से और सलमा सितारों आदि से भाँति-भाँति के तारा-रूपकों, बेल-बूटों से शोभित हो रहे थे। अतीव मनोहर लगते थे।"

26. There were festoons in front of the said three worth-seeing stair-cases. The said festoons have been described as under—

"Those festoons were studded with gems of various types. They were tightly tied directly on jewelled pillars of several types so that they may not move. They were fixed. They were decorated with different types of pearls, stars and suchlike embroidery. They were looking very attractive."

२७. तेसि णं तोरणाणं उप्पिं अट्ठ मंगलगा पण्णत्ता, तं जहा–सोत्थय–सिरिवच्छ–नन्दियावत्त–वद्धमाणग–भद्दासण–कलस–मच्छ–दप्पणा जाव पडिरूवा।

२७. उन तोरणो के ऊपर ये अष्ट मगल बने हुए थे। जैसे–(१) स्वस्तिक, (२) श्रीवत्स, (३) नन्दिकावर्त, (४) वर्द्धमानक, (५) भद्रासन, (६) कलश, (७) मत्स्ययुगल, और (८) दर्पण। ये सब दर्शनीय, अभिरूप और प्रतिरूप थे।

27. Eight auspicious symbols on those festoons were as under—(1) Swastik, (2) Shrivats, (3) Nandikavart, (4) Vardhmanak, (5) Bhadrasan (beautiful piece of cloth used for sitting), (6) Kalash (pitcher), (7) Matsya-yugal (pair of fish), and (8) Darpan (mirror). All these were beautiful and worth-seeing.

२८. तेसिं च णं तोरणाणं उप्पिं बहवे किण्ह–चामरज्झया जाव सुक्किलचामरज्झया अच्छे जाव पडिरूवे विउव्वइ।

२८. उन तोरणो के ऊपर स्वच्छ, निर्मल, सलौनी, रजतमय पट्ट से शोभित वज्र निर्मित डडियो वाली, कमलों जैसी सुरभिगध से सुगंधित, रमणीय, आह्लादकारी, दर्शनीय मनोहर बहुत–सी कृष्ण चामर ध्वजाएँ यावत् श्वेत चामर ध्वजाएँ लटकाई हुई थी।

28. On the said festoons many broom like flags of black and other different colours including white colour were hanging. They were decorated with pure, clean, beautiful, silvery cloth. They were having attractive strong Vajra like stalks. They were emitting lotus like fragrance. They were grand, heart-pleasing and attractive to the eye.

२९. तेसिं णं तोरणाणं उप्पिं बहवे छत्ताइछत्ते, पडागाइपडागे, घंटाजुगले, उप्पलहत्थए, कुमुद–णलिण–सुभग–सोगंधिय–पोंडरीय–महापोंडरीय–सतपत्त–सहस्सपत्तहत्थए, सव्वरयणामए अच्छे जाव पडिरूवे विउव्वइ।

२९. उन तोरणो के ऊपर निर्मल यावत् अत्यन्त शोभनीय रत्नो से बने हुए अनेक छत्रातिछत्रो (छत्र के ऊपर दूसरा छत्र), पताका पर पताकाएँ, घंटायुगल, श्वेतकमल कुमुद, नलिन, सुभग, सौगन्धिक, पुडरीक, महापुडरीक, शतपत्र, सहस्रपत्र कमलों के झुमके लटकाये गये थे।

29. Up above the festoons, there were clean umbrellas one above the other, flags one above the other, bells, white lotus including kumud, nalin, subhag, saugandhik, white lotus, the giganitic white lotus, the lotus having hundred leaves, the lotus having a thousand leaves. They were made of extremely attractive gems.

विमान का अन्तर भाग

३०. तए णं से आभिओगिए देवे तस्स दिव्वस्स जाणविमाणस्स अंतो बहुसमरमणिज्जं भूमिभागं विउव्वइ। से जहाणामए आलिंगपुक्खरे इ वा, मुइंगपुक्खरे इ वा, परिपुण्णे सरतले इ वा, करतले इ वा, चंदमंडले इ वा, सूरमंडले इ वा, आयंसमंडले इ वा, उरब्भचम्मे इ वा, वसहचम्मे इ वा, वराहचम्मे इ वा, वग्घचम्मे इ वा, छगलचम्मे इ वा, दीवियचम्मे इ वा, अणेगसंकुकीलगसहस्सवितते।

णाणाविह पंचवन्नेहिं मणीहिं उवसोभिए आवड–पच्चावड–सेढि–पसेढि–सोत्थिय–सोवत्थिय–पूसमाणव–वद्धमाणग–मच्छंडग–मगरंडग–जार–मार–फुल्लावलि–पउमपत्त–सागर–तरंग–वसंतलय–पउमलय–भत्तिचित्तेहिं सच्छाएहिं सप्पभेहिं समरीइएहिं सउज्जोएहिं णाणाविह–पंचवण्णेहिं मणीहिं उवसोभिए तं जहा–किण्हेहिं णीलेहिं लोहिएहिं हालिद्देहिं सुक्किल्लेहिं।

३०. सोपानो आदि की बाह्य रचना करने के पश्चात् उस आभियोगिक देव ने उस दिव्य यान–विमान के अन्दर एकदम समतल रमणीय भूमिभाग–स्थान की रचना की। वह भूभाग ऐसा समतल और रमणीय था, जैसे–आलिंगपुष्कर (मुरज या किले का बुरज) के ऊपर का भाग हो अथवा मृदग–पुष्कर (मृदग के ऊपर का भाग) हो, पूर्ण रूप से भरे हुए सरोवर के ऊपर का भाग हो अथवा हथेली का भाग हो, चन्द्रमडल, सूर्यमंडल, दर्पणमडल के ऊपर का अथवा शकु (छोटे कील–स्माल नेल्स) को ठोक और खीचकर चारों ओर से सम किये गये भेड के, बैल के, सूअर के, सिह के, बाघ के, बकरी केऔर भेडिये के चमडे का ऊपरी भाग हो (ऐसा समतल था)।

उस सम भूमिभाग में काली, नीली, लाल, पीली और श्वेत वर्ण की जो मणियाँ जडी हुई थीं उनमें से कितनी ही आवर्त-(चक्राकार) प्रत्यावर्त्त वाली, श्रेणि-प्रश्रेणि (सीधी पंक्तियों जैसी) वाली, स्वस्तिक जैसी, पुष्यमाणव, शरावसंपुट, मछली व मकर के अंडे जैसी आकृति-सी मालूम पडती थीं और उनमें कितनी ही मणियों में पुष्पलताओं, कमल-पत्रों, समुद्र-तरंगों, वसतलताओं, पद्मलताओं आदि के चित्र बने हुए थे तथा वे सभी मणियाँ निर्मल, चमकदार किरणों वाली उद्योत (शीतल प्रभा) और प्रकाश-तेज प्रभायुक्त थीं।

INNER AREA OF THE VIMAN (AERIAL VEHICLE)

30. After constructing the external part namely stairs etc., the Abhiyogic god, prepared a completely levelled beautiful floor in the Viman. That area was made so much levelled and beautiful that it looked like canopy of a fort, the upper surface of a pond completely filled with water, the surface of palm of a hand, the surface of the moon, the sun, a mirror. Further it was levelled like sheep-skin, ox-skin, pig-skin, lion-skin, wolf-skin, goat-skin tightly tied with small nails at all the four corners.

That levelled ground was studded with black, blue, red, yellow and white jewels. Many of them were circular, straight, swastik-shaped or having special characteristics of jewels such as pushya-manav, sharaav-samput, fish-egged, crocodile-egged in shape. Many of those jewels were bearing designs of flowering creepers, lotus-leaves, ocean waves, spring creepers, lotus creepers. All the said jewels had pure, pleasant cool shine and grand light.

मणियों का वर्णन (कृष्ण वर्ण मणियाँ)

३१. तत्थ णं जे ते किण्हा मणी तेसिं णं मणीणं इमे एआरूवे वण्णावासे पण्णत्ते-

से जहा नामए-जीमूतए इ वा, खंजणे इ वा, अंजणे इ वा, कज्जले इ वा, मसी इ वा, मसीगुलिया इ वा, गवले इ वा, गवलगुलिया इ वा, भमरे इ वा, भमरावलिया इ वा, भमरपतंगसारे ति वा, जंबूफले ति वा, अद्दारिट्ठे इ वा, परपुट्ठे इ वा, गए इ वा, गयकलभे इ वा, किण्हसप्पे इ वा, किण्हकेसरे इ वा, आगासथिग्गले इ वा, किण्हासोए इ वा, किण्हकणवीरे इ वा, किण्हबंधुजीवे इ वा, एयारूवे सिया ?

३१. उनमें जो काले रग की मणियाँ थीं उनका रग इस प्रकार का था-

जैसे कि काली मेघ घटाएँ हो, अजन हो, खजन–(गाडी के पहियों पर लगा काला चिकना मैल) हो, काजल हो, भैंसे का सीग हो, भैंस के सींग से बनाई गई गोली हो, भ्रमर हो, भ्रमरपंक्ति हो, भ्रमरपंख का सार भाग हो, जामुन का फल हो, कौए का बच्चा हो, कोयल हो, हाथी हो, हाथी का बच्चा हो, काला साँप हो, काला बकुल वृक्ष हो, शरद ऋतु का मेघ हो, काला अशोक वृक्ष हो, काली कनेर हो, काला बधुजीवक (गुल दुपहरिया का फूल) हो, इस प्रकार उन काली मणियो का रंग था। क्या वे काली मणियाँ यथार्थ में ऐसे ही वर्ण की थीं ?

DESCRIPTION OF THE JEWELS (THE BLACK COLOUR JEWELS)

31. The colour of black jewels was as follows—

Consider dark clouds, the sticky black dirt at the wheels of a cart, the collyrium, the horns of a he-buffalo, a pill made from the horn of a buffalo, a bumble-bee, a chain of bees, the feather of a bee, jamun fruit, off-spring of a crow, a nightingale, an elephant, off-spring of an elephant, a black snake, a black bakul tree, a cloud of winter season, a black Ashok tree, a black kaner, a black bandhu-jeevak flower. Were the said black jewels in reality so black ?

३२. णो इणट्ठे समट्ठे, ओवम्मं समणाउसो ! ते णं किण्हा मणी इत्तो इट्ठतराए चेव, कंततराए चेव, मणुण्णतराए चेव, मणामतराए चेव वण्णेणं पण्णत्ता।

३२. हे आयुष्मान् श्रमणो ! ऐसा नहीं है। ये तो मात्र उपमाएँ हैं। वे मणियाँ तो इन उपमाओ से भी अधिक इष्टतर, काततर, मनोहर और मनोरम कृष्ण वर्ण वाली थी।

32. O the long-lived Shramans ! It is not so. These are only comparative illustrations. But the said jewels were more good-looking, more shining and were more attractive jewels of black colour than the abovementioned comparative examples.

नील वर्ण मणियाँ

३३. तत्थ णं जे ते नीला मणी तेसि णं मणीणं इमे एयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते–

से जहानामए–भिंगे इ वा, भिंगपत्ते इ वा, सुए इ वा, सुयपिच्छे इ वा, चासे इ वा, चासपिच्छे इ वा, णीली इ वा, णीलीभेदे इ वा, णीलीगुलिया इ वा, सामाए इ वा, उच्चन्तगे इ वा, वणराइ इ वा, हलधरवसणे इ वा, मोरग्गीवा इ वा, पारेवयग्गीवा इ वा, अयसिकुसुमे इ वा, बाणकुसुमे इ वा, अंजणकेसियाकुसुमे इ वा, नीलुप्पले इ वा, नीलासोगे इ वा, णीलकणवीरे इ वा, णीलबंधुजीवे इ वा, भवे एयारूवे सिया ?

३३. उनमें जो नील वर्ण की मणियाँ थीं, क्या उनका रंग इस प्रकार का था–

जैसे भृंग (भँवरा) या भृंग के पंख का रंग हो, तोते, तोते के पंख , चातक अथवा चातक की पूँछ, नील या नील के अंदर का भाग हो, नील गुटिका, साँवा (धान्य), उच्चन्तक (दाँतों को नीला रगने का चूर्ण), वनराजि, बलदेव के पहनने के वस्त्र, मोर की गर्दन, कबूतर की गर्दन, अलसी के फूल, बाणपुष्प, अंजनकेशी के फूल, नीलकमल या अशोक का रंग हो, नीले कनेर का और नीले बंधुजीवक (नीला कीडा) का रंग होता है। क्या यह अर्थ उनका यथार्थ वर्णन करने मे समर्थ है ?

THE BLUE COLOUR JEWELS

33. Is it a fact that the colour of blue jewels was—

Like that of a bee, the feather of a bee, a parrot, feather of parrot, chaas bird, chaas-tail, neel, the inner part of neel, blue box, blue plants, blue powder used for colouring teeth, vanarajee, the dress of Baldev, neck of pea-cock, neck of a pigeon, trussed flower, baan-flower, anjan-keshi flower, blue lotus, Ashok flower, blue kaner flower, blue bandhu-jeevak ants. Are these illustration proper in describing the colour of those jewels ?

३४. णो इणट्ठे समट्ठे, ते णं णीला मणी एत्तो इट्ठतराए चेव जाव वण्णेणं पण्णत्ता।

३४. नही, ऐसा नही है। वे नीली मणियाँ तो इन उपमा वाले पदार्थों से भी अधिक चमकदार यावत् अतीव मनोहर नील वर्ण वाली थीं।

34. No It is not true. The blue jewels were brighter, more beautiful and so on than the above articles in comparison.

रक्त वर्ण मणियाँ

३५. तत्थ णं जे ते लोहियगा मणी तेसि णं मणीणं इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते–

से जहाणामए सस–रुहिरे इ वा, उरब्भ–रुहिरे इ वा, वराह–रुहिरे इ वा, मणुस्स–रुहिरे इ वा, महिस–रुहिरे इ वा, बालिंदगोवे इ वा, बालदिवाकरे इ वा, संझब्भरागे इ वा, गुंजद्धरागे इ वा, जासुअणकुसुमे इ वा, किंसुयकुसुमे इ वा, पालियायकुसुमे इ वा, जाइहिंगुलए ति वा, सिलप्पवाले ति वा, पवालअंकुरे इ वा, लोहियक्खमणी इ वा, लक्खारसगे ति वा, किमिरागकंबले ति वा, चीणपिट्ठरासी ति वा, रत्तप्पले इ वा, रत्तासोगे ति वा, रत्तकणवीरे ति वा, रत्तबंधुजीवे ति वा, भवे एयारूवे सिया ?

३५. इन मणियो मे जो लाल वर्ण की मणियाँ थीं उनका लाल वर्ण इस प्रकार था–

जैसा कि भेड के रक्त जैसी, खरगोश के खून जैसी, मनुष्य के रक्त जैसी, सूअर के रक्त जैसी, भैस के रक्त जैसी, बाल इन्द्रगोप (लाल रंग का कीट–इन्द्र बहूटी) जैसी, उदय होते प्रभातकालीन सूर्य जैसी, सध्या के रक्त वर्ण जैसी, गुंजाफल के आधे भाग जैसी, जपा पुष्प जैसी, पलाश पुष्प जैसी, पारिजात पुष्प जैसी, जातिमान श्रेष्ठ हिंगुलुक जैसी, शिलाप्रवाल–मूँगे जैसी, प्रवाल अकुर जैसी, लोहिताक्ष मणि जैसी, लाख के रस जैसी, कृमि के रग से रंगे कबल जैसी, चीण (सिन्दूर अथवा लाल रग का धान्य) के आटे के ढेर जैसी, रक्तकमल जैसी, लाल अशोक वृक्ष जैसी, रक्त कनेर जैसी, रक्त बंधुजीवक (वर्षा ऋतु में पैदा होने वाला लाल रग का कीट) जैसी ? क्या वे लाल मणियाँ पूर्वोक्त पदार्थों के रग जैसी लाल थीं ?

THE RED COLOUR JEWELS

35. In case of the red jewels among them, the red colour was such as that of the following—

Consider the blood of sheep, the blood of a hare, the blood of a human-being, the blood of a pig, the blood of a buffalo, the blood of red insect, the colour of rising sun, the red colour of the setting sun in the evening, part of a gunja-fruit, the colour of japa flower, palaash flower, parijaat flower, vermillion, ruby, lohitaksh gem, lacquer syrup, a blanket turned red with kirmachi colour, the heap of red coloured corn, red lotus, red Ashok tree, red kaner, the red coloured insect appearing in rainy season (bandhu-jeevak). Were those jewels, as red as the said examples ?

३६. णो इणट्ठे समट्ठे, ते णं लोहिया मणी इत्तो इट्ठतराए चेव जाव वण्णेणं पण्णत्ता।

३६. हे आयुष्मान् श्रमणो ! यह अर्थ उन मणियो की लालिमा का वर्णन करने मे समर्थ नहीं है। वे रक्त मणियाँ तो इनसे भी इष्टतर यावत् मनोहर लाल वर्ण वाली थी।

36. O the blessed ! This comparison does not justify their redness. The said red jewels were more attractive and (upto) more beautiful in their redness than the above mentioned illustrations.

पीत वर्ण मणियाँ

३७. तत्थ णं जे ते हालिद्दा मणी तेसि णं मणीणं इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते–

से जहाणामए चंपए ति वा, चंपछल्ली ति वा, चंपगभेए इ वा, हलिद्दा इ वा, हलिद्दाभेदे ति वा, हलिद्दागुलिया ति वा, हरियालिया ति वा, हरियालभेदे ति वा, हरियालगुलिया

ति वा, चिउरे इ वा, चिउरंगराए ति वा, वरकणगनिघसे इ वा, वरपुरिसवसणे इ वा, अल्लकीकुसुमे इ वा, चंपाकुसुमे इ वा, कुहंडियाकुसुमे इ वा, कोरंटकमल्लदामे इ वा, तडवडाकुसुमे इ वा, घोसेडियाकुसुमे इ वा, सुवण्णजूहियाकुसुमे इ वा, सुहिरण्णकुसुमे इ वा, बीययकुसुमे इ वा, पीयासोगे इ वा, पीयकणवीरे इ वा, पीयबंधुजीवे इ वा, भवे एयारूवे सिया ?

३७. इन मणियो मे जो पीली मणि थी क्या उसका वर्ण इस प्रकार का था–

जैसा कि चम्पा का, चम्पा की छाल का, चम्पा वृक्ष के भीतरी भाग का, हल्दी का, हल्दी के अन्दर के भाग का, हल्दी की गोली का, हरताल का, हरताल के भीतरी भाग का, हरतालगुटिका का, चिकुर (गध द्रव्य) का, चिकुर के रग का, उत्तम शुद्ध स्वर्ण का, उत्तम स्वर्ण की रेखा का (सुनहली घास का), वासुदेव के वस्त्रों का, अल्लकी (वृक्ष) पुष्प का, चम्पा पुष्प का, कद्दू के फूल का, आँवले के फूल का, घोषातिकी पुष्प (तोरई के फूल) का, सुनहली जूही के फूल का, पीत अशोक वृक्ष का, पीली कनेर का, पीले बधुजीवक का होता है ? क्या वे पीली मणियॉ पूर्वोक्त पदार्थों के पीले रग जैसी पीत वर्ण की थीं ?

THE YELLOW COLOUR JEWELS

37. Is it a fact that the colour of yellow jewels was as under—

Champa plant, the skin of champa, the inner part of champa tree, turmeric, the inner part of turmeric, turmeric pill, yellow orpiment, the inner part of yellow orpiment, orpiment pill, chikur substance, the colour of chikur, purified gold, golden grass, the dress of Vasudev, flowers of allaki vegetation, champa flowers, flowers of gourd plant, flowers of citrus plant, flowers of ghoshatiki creeper, flowers of golden juhi, yellow Ashok tree, yellow kaner, yellow bandhu-jeevak are all yellow. Is it a fact that the yellow jewels were comparable in their colour to the above said yellow substances ?

३८. णो इणट्ठे समट्ठे, ते णं हालिद्दा मणी एत्तो इट्ठतराए चेव जाव वण्णेणं पण्णत्ता।

३८. आयुष्मान् श्रमणो ! ये उपमाएँ उन मणियो के पीत रंग का वर्णन करने में समर्थ नहीं है, क्योकि वे पीली मणियाँ इनसे भी इष्टतर यावत् मनोहर पीले वर्ण वाली थीं।

38. O the blessed ! These substances are not capable to illustrate the colour of the yellow jewels since the jewels were still deeper shade of yellow and more magnificent.

३९. तत्थं णं जे ते सुक्किल्ला मणी तेसिं णं मणीणं इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते–से जहा नामए–अंके ति वा, संखे ति वा, चंदे ति वा, कुमुद–उदक–दयरय–दहि–घणक्खीर–क्खीरपूरे ति वा, कोंचावली ति वा, हारावली ति वा, हंसावली इ वा, बलागावली ति वा, सारतियबलाहए ति वा, धंतधोयरुप्पपट्टे इ वा, सालीपिट्ठरासी ति वा, कुंदपुप्फरासी ति वा, कुमुदरासी ति वा, सुक्कच्छिवाडी ति वा, पिहुणमिंजिया ति वा, भिसे ति वा, मुणालिया ति वा, गयदंते ति वा, लवंगदलए ति वा, पोंडरियदलए ति वा, सेयासोगे ति वा, सेयकणवीरे ति वा, सेयबंधुजीवे ति वा, भवे एयारूवे सिया ?

३९. इन मणियों मे जो श्वेत वर्ण की मणियाँ थी, उन मणियों का वर्ण इस प्रकार था–जैसा कि अंकरत्न का, शख का, चन्द्र का, कमल के ऊपर के जल का, शुद्ध निर्मल जलबिन्दु का, दही का, कपूर का, गोदुग्ध का, क्रोंच पक्षियों की पंक्ति का, मोतियों के हार का, हसपंक्ति का, बकपंक्ति का, चन्द्रपंक्ति का, जल मे प्रतिबिम्बित चन्द्रपंक्ति का, शरद ऋतु के मेघों का, अग्नि मे तपाकर छाये गये स्वच्छ चाँदी के पतरे का, चावल के आटे के ढेर का, कुन्दपुष्पराशि का, कुमुदराशि का, सेम की सूखी फलियो का, मयूरपिच्छ के अन्दर की सफेद डंडी का, मृणालततु का, मृणाल का, हाथी के दाँत का, लवग फूल के गुच्छे का, पुण्डरीक कमल का, श्वेत अशोक का, श्वेत कनेर का, श्वेत बंधुजीवक का होता है। क्या उन श्वेतमणियो का रग पूर्वोक्त पदार्थों के वर्ण जैसा धवल–श्वेत था ?

THE WHITE COLOUR JEWELS

39. The jewels that were of white colour are compared in colour to the following—

The white gem (Ank-ratna), conch, the moon, water drops on lotus, pure clean water drops, curd, camphor, cow milk, string of cronch birds, garland of pearls, geese, string of ducks, rays of moon, shadow of moon in water, winter clouds, silver plate purified in fire, heap of rice flowers, heap of kund flowers, heap of kumud flowers, dried sem beans, white branch in fan of peacock feathers, mrinaal threads, mrinaal, ivory tusk, bunch of lavang flowers, pundreek lotus, white Ashok, white kaner, white bandhu-jeevak. Is it a fact that the white jewels were comparable in whiteness to the above said substance ?

४०. णो इणट्ठे समट्ठे, ते णं सुक्किल्ला मणी एत्तो इट्ठतराए चेव जाव वन्नेणं पण्णत्ता।

४०. नहीं। यह उपमा उन मणियों के श्वेत रंग का वर्णन करने में समर्थ नहीं है। वे श्वेत मणियाँ तो इनसे भी इष्टतर यावत् श्वेत वर्ण वाली थीं।

40. No. These illustrations are incapable of properly describing the colour of white jewels. The white jewels were more grand and attractive than the said substances.

मणियों का गंध

४१. तेसि णं मणीणं इमेयारूवे गंधे पण्णत्ते।

से जहानामए—कोट्ठपुडाण वा, तगरपुडाण वा, एलापुडाण वा, चोयपुडाण वा, चंपापुडाण वा, दमणापुडाण वा, कुंकुमपुडाण वा, चंदणपुडाण वा, उसीरपुडाण वा, मरुआपुडाण वा, जातिपुडाण वा, जूहियापुडाण वा, मल्लियापुडाण वा, ण्हाणमल्लियापुडाण वा, केतगिपुडाण वा, पाडलिपुडाण वा, णोमालियापुडाण वा, अगुरुपुडाण वा, लवंगपुडाण वा, वासपुडाण वा, कप्पूरपुडाण वा, अणुवायंसि वा, ओभिज्जमाणाण वा, कुट्टिज्जमाणाण वा, भंजिज्जमाणाण वा, उक्किरिज्जमाणाण वा, विक्किरिज्जमाणाण वा, परिभुज्जमाणाण वा, परिभाइज्जमाणाण वा, भण्डाओ वा, भंडं साहरिज्जमाणाण वा, ओराला मणुण्णा मणहरा घाण—मण—निव्वुइकरा सव्वओ समंता गंधा अभिनिस्सरंति, भवे एयारूवे सिया ?

४१. उन मणियो की गंध इस प्रकार की थी–

जैसे कि कोष्ठो (कूट नामक सुगधित वनस्पति) के, तगर के, इलायची के, चोये (एक सुगधित पदार्थ जो चन्दन और देवदार के बुरादे से बनता है) के, चंपा के, दमनक के, कुंकुम के, चन्दन के, उशीर–खश के, मरुआ के, जाई पुष्प, जूही, मल्लिका, स्नानमल्लिका, केतकी, पटल, नवमल्लिका के पुष्प, अगर, लवग, वासकपूर और कपूर के पुड़ों के। अनुकूल बह रही वायु की दिशा मे खोलने, कूटने, तोडने, उत्कीर्ण करने, बिखेरने, उपभोग करने, वितरित करने, एक पात्र से दूसरे पात्र मे रखने पर जैसी उदार, आकर्षक, मनोज्ञ, मनमोहक, घ्राण और मन को तृप्तिदायक गध सभी दिशाओ में फैलती है। क्या वह गंध इस प्रकार की थी ?

THE FRAGRANCE OF THE JEWELS

41. The fragrance of the jewels is compared to the fragrance of the following—

Fragrant koot plant, tagar (a fragrant substance), cardamom, mixture of sandal wood and deodar powder, champa plant, damnak plant, kumkum, sandal wood, andropogon muricatus (usheer), marua (a kind of corn), jaaee flowers, jasmine flowers, mallika creeper, snaan-mallika, ketaki, rose, nav-mallika flowers, agar, cloves, camphor, camphor packets. When such packets are opened in the direction of the wind, such substances are grinded, plucked, scattered, consumed, distributed or transferred from one container to an other, a wide-spread, attractive, pleasant, grand fragrance pleasing to the mind spreads all around. Was the fragrance of the jewels comparable to it ?

४२. णो इणट्ठे समट्ठे, तेणं मणी एत्तो इट्ठतराए चेव गंधेणं पन्नत्ता।

४२. नही। यह अर्थ समर्थ नही है। ये सब तो मात्र उपमाये हैं। वे मणियाँ तो इनसे भी अधिक इष्टतर सुरभिगध वाली बताई गई है।

42. No. This is no comparison. These are just illustrations of lower category. Those jewels were more attractive and fragrant then these substances.

विवेचन—हीरा, पन्ना, माणिक आदि मणिरत्नो मे प्रकाश, चमचमाहट और अमुक प्रकार का रग आदि तो दिखता है परन्तु मणियो मे अमुक प्रकार की उत्कट गध नहीं होती है। किन्तु ये मणियाँ देव-विक्रिया से निर्मित होने के कारण कुछ विशेषता बतलाने के लिए मणियो की गध का वर्णन किया गया है। देव शक्ति से ऐसा कर पाना सम्भव है। इस वर्णन मे रगो और गध की विशेषता बताने के लिए प्रयुक्त उपमाओ का लालित्य दर्शनीय है।

Elaboration—In diamonds their shine, glamour and particular colour is clearly visible but a particular deep fragrance is not present But these were created by gods So in order to tell there special feature, the fragrance is narrated It is possible with the angelic power In this narration, the examples used to specifically identify the colours and fragrance are worthy of deep study.

मणियों का स्पर्श

४३. तेसि णं मणीणं इमेयारूवे फासे पण्णत्ते, से जहानामए—आइणे ति वा रूए इ वा बूरे इ वा णवणीए इ वा हंसगब्भतूलिया इ वा सिरीसकुसुमनिचये इ वा बालकुमुदपत्तरासी ति वा भवे एयारूवे सिया ?

४३. उन मणियो का इस प्रकार का यह स्पर्श कहा गया है–जैसे कि मृगछाला, रुई, बूर (वनस्पति), हंसगर्भ नामक रुई, शिरीष पुष्पों का समूह अथवा नवोत्पन्न कुमुदपत्रराशि का होता है। क्या उनका स्पर्श इस प्रकार कोमल है ?

THE TOUCH OF THE JEWELS

43. The soothing touch of the jewels is compared with deer-skin, cotton, the boor plant, hans-garbh cotton, collection of Shireesh flowers or a heap of newly grown kumud flowers. Was the touch of those jewels as soft as that of these flowers ?

४४. णो इणट्ठे समट्ठे, तेणं मणी एत्तो इट्ठतराए चेव जाव फासेणं पन्नत्ता।

४४. नही। यह उपमा यथार्थ नही है। वे मणियाँ तो इससे भी अधिक इष्टतर प्रिय यावत् कोमल स्पर्श वाली बताई गई है।

44. No These comparisons are not realistic. The jewels were more attractive and softer in touch than the said substances.

प्रेक्षागृह–निर्माण

४५. तए णं से आभियोगिए देवे तस्स दिव्वस्स जाणविमाणस्स बहुमज्झदेसभागे एत्थ णं महं पिच्छाघरमंडवं विउव्वइ।

अणेगखंभसय–संनिविट्ठं अब्भुग्गयसुकय–वरवेइया–तोरणवररइयसालभंजियागं सुसिलिट्ठ–विसिट्ठ–लट्ठसंठिय–पसत्थवेरुलिय–विमलखम्भं णाणामणिखचिय–उज्जल बहुसमसुविभत्तभूमिभागं।

ईहामिय–उसभ–तुरग–नर–मगर–विहग–वालग–किंनर–रुरु–सरभ–चमर–कुंजर–वणलय–पउमलय–भत्तिचित्तं।

खंभुग्गय–वइरवेइया–परिगयाभिरामं विज्जाहर–जमल–जुयल–जंतजुत्तं पि व।

अच्चीसहस्समालणीयं, रूवगसहस्सकलियं, भिसमाणं भिब्भिसमाणं चक्खुल्लोयणलेसं सुहफासं सस्सिरीयरूवं कंचणमणियरण–थूभियागं णाणाविहपंचवण्ण–घंटा–पडागा–परिमंडियग्गसिहरं चवलं मरीइकवयं विणिम्मुयंतं।

लाइय–उल्लोइयमहियं गोसीस–सरस–रत्तचंदणं–दद्दरदिन्नपंचंगुलितलं, उवचियचंदणकलसं, चंदणघड–सुकयतोरण–पडिदुवारदेसभागं।

आसत्तोसत्तविउल–वट्ट–वग्घारिय–मल्लदामकलावं, पंचवण्णसरस–सुरभि–मुक्कपुप्फपुंजोवयारकलियं।

कालागुरु–पवर–कुंदरुक्क–तुरुक्क धूवमघमघंतगंधुद्धुयाभिरामं सुगंधवरगंधियं गंधवट्टिभूयं।

अच्छरगणसंघसंविकिण्णं दिव्वतुडियसद्दसंपणाइयं अच्छं जाव पडिरूवं।

तस्स णं पिच्छाघरमण्डवस्स अंतो बहुसमरमणिज्जभूमिभागं विउव्वति जाव मणीणं फासो।

तस्स णं पेच्छाघरमण्डवस्स उल्लोयं विउव्वति पउमलयभत्ति–चित्तं जाव पडिरूवं।

४५. तदनन्तर आभियोगिक देवों ने उस दिव्य यान–विमान के अन्दर बीचोंबीच एक विशाल प्रेक्षागृह मण्डप (नाट्यशाला) की रचना की।

वह प्रेक्षागृह मडप अनेक सैकडो स्तम्भों पर स्थित था। अभ्युन्नत–ऊँची एव सुरचित वेदिकाओ, तोरणों तथा सुन्दर पुतलियो से सजाया गया था। सुन्दर विशिष्ट रमणीय संस्थान–आकार वाली प्रशस्त और विमल वैडूर्य मणियो से निर्मित स्तम्भो से उपशोभित था। उसका भूमिभाग विविध प्रकार की उज्ज्वल मणियों से खचित (जडा हुआ), सुविभक्त (अच्छी तरह बँटा हुआ) एव अत्यन्त सम था।

उसमें ईहामृग (भेडिया), वृषभ, तुरंग–घोडा, नर, मगर, विहग–पक्षी, सर्प, किन्नर, रुरु (कस्तूरी मृग), सरभ (अष्टापद), चमरी गाय, कुजर (हाथी), वनलता, पद्मलता आदि के चित्र चित्रित थे।

स्तम्भों के शिरो भाग पर वज्र रत्नों से बनी हुई वेदिकाओ से मनोहर दिखता था। यत्रचालित–जैसे विद्याधर युगलो से शोभित था।

सूर्य के सदृश हजारो किरणों से सुशोभित एवं हजारो सुन्दर घटाओ से युक्त था। देदीप्यमान और अतीव देदीप्यमान होने से दर्शको के नेत्रों को आकृष्ट करने वाला, सुखप्रद स्पर्श और रूप–शोभा से सम्पन्न था। उस पर स्वर्ण, मणि एवं रत्नमय स्तूप बने हुए थे। उसके शिखर का अग्र भाग नाना प्रकार की घटियो और पंचरगी पताकाओ से परिमंडित–सुशोभित था और अपनी चमचमाहट एव सभी ओर फैल रही किरणों के कारण चचल–सा दिखता था।

उसका प्रागण गोबर से लिपा था और दीवारें सफेद मिट्टी (चूना) से पुती थीं। स्थान–स्थान पर सरस गोशीर्ष रक्तचंदन के हाथ लगे हुए थे और चंदनचर्चित कलश रखे थे। प्रत्येक द्वार तोरणो और चन्दन–कलशों से शोभित थे।

दीवालो पर ऊपर से लेकर नीचे तक सुगंधित गोल मालाएँ लटक रही थीं। सरस सुगन्धित पंचरंगे पुष्पों के माँडने बने हुए थे।

उत्तम कृष्ण अगर, कुन्दरुष्क, तुरुष्क और धूप की मोहक सुगन्ध से महक रहा था और उस उत्तम सुरभिगध से गंध की वर्तिका (अगरबत्ती, धूपबत्ती) जैसा लगता था।

अप्सराओं के समूह के गमनागमन से भरा था। दिव्य वाद्यो के निनाद में गूँज रहा था। वह स्वच्छ यावत् सलौना, अभिरूप था।

उस प्रेक्षागृह मंडप के अन्दर अतीव सम रमणीय भूभाग की रचना की थी। उस भूमिभाग में जड़े हुए मणियो के रूप, रग, गध आदि का समस्त कथन पूर्ववत् समझना चाहिए।

उस सम और रमणीय प्रेक्षागृह मडप की छत में पद्मलता आदि के चित्रामों से युक्त यावत् अतीव मनोहर चदेवा बाँधा था।

CONSTRUCTION OF SPECTATORS HALL (PREKSHA GRIH)

45. Thereafter, the Abhiyogic gods prepared a spacious theatre right in the middle of that magnificent Viman.

That hall for spectators (Preksha grih) was located on many pillars It was decorated with fine platforms, festoons and attractive dolls. This place was shining due to pillars studded with extremely attractive and beautifully shaped auspicious and pure Vaidurya Mani (gems). Its floor was studded with shining gems and it was properly levelled and divided

In it, there were paintings of leopard, wolf, ox, horse, human-being, crocodile, vihag bird, snake, kinnar, deer, ashtapad, chamari cow, elephant, forest creeper and lotus creeper.

There were platforms made of hard gems at the top of the pillars adding to the grandeur It was decorated with mechanised paintings in motion.

It was shining like thousands of sun-rays. It has thousands of beautiful bells, canopies of gold, pearls and jewels were on it. The front part of the top was decorated with many types of bells and buntings of five colours. It was looking dynamic due to its brightness and the rays spreading in all directions.

Its courtyard was plastered with cow-dung. The walls were white-washed. There were hand prints of red sandal paste at many

places. The sandal coated pitchers (kalash) were also there. Every gate was decorated with festoons and sandal coated pots.

Fragrant, round rosaries were hanging from top to bottom. The decorations of sweet fragrant five coloured flowers were also prepared thereon.

It was abundantly fragrant with smell of black agar (sandal wood), lotus (power), kundrushk (a fragrant substance), benzoin and incense of the best quality and as such was looking like a palace of fragrance.

The place was filled with movement of group of fairies. It was echoing with the music of celestial instruments. It was pure, beautiful and attractive.

At the ceiling of that level and attractive dancing hall there was an extremely grand canopy painted with pictures of padma-lata and others.

रंगमंच आदि की रचना

४६. तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं एगं महं वइरामयं अक्खाडगं विउव्वति।

४६. उस प्रेक्षागृह मडप के अत्यन्त सम रमणीय भूमिभाग के बिलकुल मध्य भाग मे वज्र रत्नो से बने एक विशाल अक्षपाट (अखाडा–क्रीडामच) की रचना की थी।

CONSTRUCTION OF THE STAGE

46. A spacious stage was constructed with vajra ratna in the centre of the level and attractive part of the Preksha grih (the hall for audience).

४७. तस्स णं अक्खाडयस्स बहुमज्झदेसभागे एत्थ णं महेगं मणिपेढियं विउव्वति–अट्ठ जोयणाइं आयाम–विक्खम्भेणं चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं सव्वमणिमयं अच्छं सण्हं जाव पडिरूवं।

४७. उस क्रीडामंच के ठीक बीचोबीच आठ योजन लम्बी–चौडी और चार योजन मोटी पूर्णतया वज्र रत्नो से बनी हुई निर्मल, चिकनी यावत् प्रतिरूप एक विशाल मणिपीठिका की रचना की थी।

47. A grotesque platform studded with gems was constructed exactly in the middle of the stage. It was eight yojans long, eight yojans wide and four yojans thick. It was clean, slippery and worth seeing.

सिंहासन की रचना

४८. तीसे णं मणिपेढियाए उवरि एत्थ णं महेगं सीहासणं विउव्वइ, तस्स णं सीहासणस्स इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते—

तवणिज्जमया चक्कला, रययामया सीहा, सोवण्णिया पाया, णाणामणिमयाइं पायसीसगाइं, जंबूणयमयाइं गत्ताइं।

वइरामया संधी, णाणामणिमये वेच्चे।

से णं सीहासणे ईहामिय—उसभ—तुरग—नर—मगर—विहग—वालग—किन्नर—रुरु—सरभ—चमर—कुञ्जर—वणलय—पउमलयभत्तिचित्तं।

ससारसारोवचियमणिरयणपायपीढे, अत्थरगमिउमसूरग—णवतयकुसंतलिंबकेसर—पच्चत्थुयाभिरामे।

आईणग—रुय—बूर—तूलफासमउए सुविरइय—रयत्ताणे।

उवचिय—खोमदुगुल्लपट्टपडिच्छायणे रत्तंसुअसंवुडे सुरम्मे पासाइए दरिसणिज्जे अभिरूवे पडिरूवे।

४८. उस मणिपीठिका के ऊपर एक महान् सिहासन बनाया। वह सिहासन इस प्रकार का था—

उस सिहासन के चक्कला (पायो के नीचे के गोल भाग) सोने के, सिंहाकृति वाले हत्थे रत्नों के, पाये सोने के, पादशीर्षक (कंगूरे) अनेक प्रकार की मणियो के और बीच के गाते जाम्बूनद (विशिष्ट स्वर्ण) के थे।

उसकी संधियाँ (साँधें) वज्र रत्नों से भरी हुई थी और मध्य भाग की बुनाई का वेंत बाण (निवार) मणिमय था।

उस सिंहासन पर ईहामृग, वृषभ, अश्व, नर, मगर, पक्षी, सर्प, किन्नर, रुरु, सरभ, चमर अथवा चमरी गाय, हाथी, वनलता, पद्मलता आदि के चित्र बने हुए थे।

सिंहासन के सामने स्थापित पादपीठ सर्वश्रेष्ठ मूल्यवान मणियों और रत्नो का बना हुआ था। उस पादपीठ पर पैर रखने के लिए बिछा हुआ मसूरक (गोल आसन) जैसे कोमल और केसर तंतुओं जैसे अत्यन्त सुकोमल सुन्दर आस्तारक से ढका हुआ था।

उसका स्पर्श आजिनक (चर्म का वस्त्र) (मृग छाला), रुई, बूर, मक्खन और आक की रुई जैसा मृदु-कोमल था।

वह सुन्दर, सुरचित रजस्त्राण (वस्त्र) से ढंका था। उस पर कसीदा काढे क्षौम दुकूल (रुई से बने वस्त्र) की चद्दर बिछी हुई थी और अत्यन्त रमणीय लाल वस्त्र से आच्छादित था। जिससे वह सिहासन अत्यन्त रमणीय, मन को प्रसन्न करने वाला, दर्शनीय, अभिरूप और प्रतिरूप-अतीव मनोहर दिखता था।

CONSTRUCTION OF THE THRONE

48. A gigantic throne was constructed on the Mani-peethika (the gemmed) platform. The description of the throne is as under—

The leg-plates of the throne were of gold, hand-rests were lion-shaped and studded with gems and the legs were also of gold. The leg-tops were also studded with jewels. The central limbs were of a special gold

The joints were full of gems The central part was knitted with jewelled cane.

There were pictures of tiger, bullock, horse, man, crocodile, bird, snake, kinnar—the demon-god, deer (ruru), rhinocerous, chamari cow, elephant, wild creeper, lotus and other suchlike things on the throne

The stool in front of the throne was made of unique costly gems and jewels. The cloth for placing the foot spread on the stool was soft and covered with beautiful and extremely delicate cover.

Its touch was as much soothing as that of leather cloth, deer-skin, cotton, husk, butter and cotton made of Akada plant.

It was covered with beautiful, properly prepared cloth. An embroidered cotton bed sheet was spread on it. It was covered with extremely beautiful red cloth. So the throne was looking extremely grand pleasant, worth-seeing, perpetually charming.

४९. तस्स णं सीहासणस्स उवरि एत्थ णं महेगं विजयदूसं विउव्वति। संख–कुंद–दगरय–अमय–महियफेणपुंज–संनिगासं सव्वरयणामयं अच्छं सण्हं पासादीयं दरिसणिज्जं अभिरूवं पडिरूवं।

४९. उस सिंहासन के ऊपरी भाग में स्वच्छ, निर्मल, स्निग्ध प्रासादिक (मन को प्रसन्न करने वाले), दर्शनीय, अभिरूप और प्रतिरूप एक विजयदूष्य (छत्राकार जैसे चंदोवे) बँधा था। वह शंख, कुंदपुष्प (सफेद फूल), जल की बूँद, मथे हुए क्षीर समुद्र के फेनपुँज (झाग) के समान श्वेत प्रभा वाले रत्नों से बना था।

49. A pure, clean, attractive, worth-seeing, perpetually charming, umbrella-like canopy was tied above the throne. It was made of gems that were as white as conch, white kund flowers, dew drops or foam of milky ocean (Ksheer Samudra).

५०. तस्स णं सीहासणस्स उवरिं विजयदूसस्स य बहुमज्झदेसभागे एत्थ णं महं एगं वयरामयं अंकुसं विउव्वति।

५०. उस सिहासन के ऊपर बँधे हुए विजयदूष्य के बीचोंबीच वज्र रत्नमय एक अंकुश (खूँटी) लगा था।

50. A hard-jewelled peg was fixed in the centre of that canopy.

५१. तस्सिं च णं वयरामयंसि अंकुसंमि कुंभिक्कं मुत्तादामं विउव्वति।

से णं कुंभिक्के मुत्तादामे अन्नेहिं चउहिं अद्धकुंभिक्केहिं मुत्तादामेहिं तदद्धुच्चपमाणेहिं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते।

ते णं दामा तवणिज्जलंबूसगा णाणामणिरयणविविह–हारद्धहारउवसोभियसमुदाया ईसिं अण्णमण्णमसंपत्ता वाएहिं पुव्वावरदाहिणुत्तरागएहिं मंदायं मंदायं एज्जमाणाणि एज्जमाणाणि पलंबमाणाणि पलंबमाणाणि वंदमाणाणि वंदमाणाणि उरालेणं मणुन्नेणं मणहरेणं कण्ण–मण–णिव्वुइ–करेणं सद्देणं ते पएसे सव्वओ समंता आपूरेमाणा आपूरेमाणा सिरीए अतीव अतीव उवसोभेमाणा उवसोभेमाणा चिट्ठंति।

५१. उस वज्र रत्नमयी अंकुश (खूँटी) में कुंभ (घड़ा) जितने बड़े आकार के एक बड़े मुक्तादाम (मोतियों के झूमर–फानूस) को लटकाया था।

वह मुक्तादाम भी चारों दिशाओं में आधे कुंभ जितने बडे आकार वाले और दूसरे चार मुक्तादामों फानूसों से घिरा हुआ था।

वे सभी दाम (झूमर) सोने के लंबूसको (गेद जैसे आकार वाले आभूषणों), विविध प्रकार की मणियों, रत्नो अथवा विविध प्रकार के मणिरत्नों से बने हुए हारों, अर्धहारो के समुदायों से शोभित हो रहे थे और पास-पास मे लटके होने से जब पूर्व, पश्चिम, दक्षिण और उत्तर की मन्द-मन्द हवा के झोंको से हिलते-डुलते तो एक-दूसरे से टकराने पर विशेष मनोज्ञ, मनहर, कर्णप्रिय एव मन को शान्ति प्रदान करने वाली रुनझुन शब्द-ध्वनि से समीपवर्ती समस्त प्रदेश को गुँजाते हुए अपनी श्री-शोभा से सबको मोहित कर रहे थे।

51. A big garland of pearls as large as a pitcher in shape was hanging on the peg.

That garland of pearls was also having four other garlands of pearls as large as half a pitcher in shape around it in all the four directions

All the above said garlands were shining due to ball-like gold ornaments, various types of jewelled garlands, rosaries studded with gems and chain of semi-circular garlands. As the garlands were hanging close to each other, they were moving with the slow wind from east, west, south and the north. They were then striking against one another emitting specially pleasant, loveable sound soothing to the ear and causing peace to the mind The echo of that sound was attracting all the persons close by.

सिंहासन की चतुर्दिग्वर्ती भद्रासन-रचना

५२. तए णं से आभिओगिए देवे तस्स सीहासणस्स अवरुत्तरेणं उत्तरेण उत्तरपुरत्थिमेणं एत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं चत्तारि भद्दासणसाहस्सीओ विउव्वइ।

तस्स णं सीहासणस्स पुरत्थिमेणं एत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स चउण्हं अग्गमहिसीणं सपरिवाराणं चत्तारि भद्दासणसाहस्सीओ विउव्वइ।

तस्स णं सीहासणस्स दाहिणपुरत्थिमेणं एत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स अब्भिंतरपरिसाए अट्ठण्हं देवसाहस्सीणं अट्ठ भद्दासण साहस्सीओ विउव्वइ। एवं दाहिणेणं मज्झिमपरिसाए दसण्हं देवसाहस्सीणं दस भद्दासणसाहस्सीओ विउव्वति, दाहिणपच्चत्थिमेणं बाहिरपरिसाए बारसण्हं देवसाहस्सीणं बारस भद्दासणसाहस्सीओ विउव्वति।

पच्चत्थिमेणं सत्तण्हं अणियाहिवतीणं सत्त भद्दासणे विउव्वति।

तस्स णं सीहासणस्स चउदिसिं एत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स सोलसण्हं आयरक्खदेवसाहस्सीणं सोलस भद्दासणसाहस्सीओ विउव्वति, तं जहा—पुरत्थिमेणं चत्तारि साहस्सीओ, दाहिणेणं चत्तारि साहस्सीओ, पच्चत्थिमेणं चत्तारि साहस्सीओ, उत्तरेणं चत्तारि साहस्सीओ।

५२. तत्पश्चात् आभियोगिक देव ने उस सिंहासन के पश्चिमोत्तर (वायव्यकोण), उत्तर और उत्तर-पूर्व (ईशानकोण) में सूर्याभदेव के चार हजार सामानिक देवों के बैठने के लिए चार हजार भद्रासनों की रचना की।

पूर्व दिशा में सूर्याभदेव की परिवार सहित चार अग्रमहिषियों के लिए चार हजार भद्रासनों की रचना की।

दक्षिण-पूर्व दिशा मे सूर्याभदेव की आभ्यन्तर परिषद् के आठ हजार देवों के लिए आठ हजार भद्रासनो की रचना की। दक्षिण दिशा मे मध्यम परिषद् के देवो के लिए दस हजार भद्रासनो की, दक्षिण-पश्चिमी दिग्भाग में बाह्य परिषदा के बारह हजार देवों के लिए बारह हजार भद्रासनो की रचना की।

पश्चिम दिशा मे सात सेनापतियो के सात भद्रासनों की रचना की।

तत्पश्चात् सूर्याभदेव के सोलह हजार आत्मरक्षक देवों के लिए क्रमशः पूर्व दिशा में चार हजार, दक्षिण दिशा मे चार हजार, पश्चिम दिशा में चार हजार और उत्तर दिशा में चार हजार, इस प्रकार कुल सोलह हजार भद्रासनो को स्थापित किया।

CONSTRUCTION OF SEATS IN ALL THE FOUR DIRECTIONS

52. Thereafter the Abhiyogic gods constructed four thousand seats for four thousand Samanık gods (the gods of identical status) of Suryabh Dev in the north-west, north and north-east directions.

In the east, he constructed four thousand seats for the family members of Suryabh Dev including his four chief-queens.

In the south-east he constructed ten thousand seats for the gods belonging to the inner assembly of Suryabh Dev and in the south-west he constructed twelve thousand seats for the gods belonging to the outer assembly of Suryabh Dev.

In the west he constructed seven seats for the seven army chiefs.

Thereafter he constructed four thousand seats in each of the four directions namely east, south, west and north for sixteen thousand gods serving as body-guards to Suryabh Dev.

समग्र यान-विमान का सौन्दर्य-वर्णन

५३. तस्स दिव्वस्स जाणविमाणस्स इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते।

से जहानामए-अइरुग्गयस्स वा, हेमंतिय-बालियसूरियस्स वा, खयरिंगालाण वा रत्तिं पज्जलियाण वा, जवाकुसुमवणस्स वा, किंसुयवणस्स वा, पारियायवणस्स वा, सव्वतो समंता संकुसुमिस्स भवे एयारूवे सिया ?

५३. उस दिव्य यान-विमान का रूप-सौन्दर्य का वर्णन इस प्रकार है-

जैसे कि तत्काल उदित हेमन्त ऋतु के बाल सूर्य के समान अथवा रात्रि में प्रज्वलित खैर की लकडी के अगारो अथवा पूरी तरह से कुसुमित-फूले हुए जवापुष्पवन अथवा पलाशवन अथवा पारिजातवन के समान लाल था। क्या यान-विमान इस प्रकार का सौन्दर्य वाला था ?

DESCRIPTION OF THE GRANDEUR OF CELESTIAL AERIAL VEHICLE

53. The detailed description of the aerial celestial vehicle and its grandeur is as under—

Is it a fact that the vehicle was red like the rising sun of winter or the burning charcoal of khair wood at night or the completely blossomed java flowers, palash garden or parijaat garden ? Was the aerial vehicle of such a grandeur ?

५४. णो इणट्ठे समट्ठे, तस्स णं दिव्वस्स जाणविमाणस्स एत्तो इट्ठतराए चेव जाव वण्णेणं पण्णत्ते। गंधो य फासो य जहा मणीणं।

५४. यह कथन यथार्थ नही है। हे आयुष्मान् श्रमणो ! यह यान-विमान तो इन सभी उपमाओ से भी अधिक इष्टतर रमणीय यावत् रक्त वर्ण वाला था। इसी प्रकार उसका गध और स्पर्श भी पूर्व मे कहे गये मणियों के वर्णन से भी अधिक रमणीय था।

54. No It is not true. O the blessed Saints ! The celestial vehicle was surpassing all the above mentioned comparisons. It was much more in grandeur, in attraction and in redness. Same is the case with its fragrance and touch. In that case it was much more attractive than the jewels mentioned earlier.

आभियोगिक देव द्वारा कार्य-संपूर्ति की सूचना

५५. तए णं से आभिओगिए देवे दिव्वं जाणविमाणं विउव्वइ, विउव्वित्ता जेणेव सूरियाभे देवे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सूरियाभं देवं करयलपरिग्गहियं जाव पच्चप्पिणति।

५५. उस दिव्य यान-विमान की रचना करने के पश्चात् आभियोगिक देव सूर्याभदेव के पास आया। आकर सूर्याभदेव को दोनों हाथ जोड़कर आज्ञापालन होने की अर्थात् यान-विमान बनकर तैयार होने की सूचना दी।

INFORMATION ABOUT COMPLETION OF WORK

55. After completing the celestial aerial vehicle, the Abhiyogic god came to Suryabh Dev. He folded his hands and informed him that his orders regarding preparing the celestial vehicle had been complied with.

विवेचन-सूर्याभदेव के लिए जिस विशाल यान-विमान की रचना का वर्णन प्रस्तुत आगम में है वह वास्तुकला की दृष्टि से अनूठा और आश्चर्यकारक है। विमान-निर्माण की इतनी कलात्मक सौन्दर्ययुक्त और सुविधापूर्ण तकनीक-प्रविधि आज के विकसित यान विज्ञान के लिए भी आश्चर्यकारक है और आज तक अतरिक्ष वैज्ञानिक ऐसे अद्भुत विशाल यान-विमान का निर्माण नही कर पाये हैं। यह वर्णन उनके सामने एक अत्यन्त विकसित यान निर्माण कला की परिकल्पना अवश्य प्रस्तुत करेगा।

Elaboration—The description about the construction of gigantic celestial aerial vehicle for Suryabh Dev in the present scripture is unique and wonderful from the point of view of architecture. The developed technique in construction of celestial vehicle is a challenge to the modern science of architecture in providing all the grandeur and all the comforts. Till today, the space scientists have not been able to prepare a unique gigantic aerial vehicle of such type This description will certainly present to them an image of extremely developed engineering skill of constructing aerial vehicles

विमान मे आरोहण

५६. तए णं से सूरियाभे देवे आभिओगस्स देवस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठ जाव हियए दिव्वं जिणिंदाभिगमणजोग्गं उत्तरवेउव्वियरूवं विउव्वति।

विउव्वित्ता चउहिं अग्गमहिसीहिं सपरिवाराहिं, दोहिं अणीएहिं, तं जहा-गंधव्वाणीएण य णट्टाणीएण य सद्धिं संपरिवुडे. तं दिव्वं जाणविमाणं अणुपयाहिणीकरेमाणे पुरत्थिमिल्लेणं तिसोपाणपडिरूवएणं दुरुहति, दुरूहित्ता जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे।

५६. आभियोगिक देव द्वारा दिव्य यान-विमान के निर्माण के समाचार सुनकर सूर्याभदेव हर्षित, संतुष्ट यावत् प्रफुल्ल हृदय हुआ। उसने जिनेन्द्र भगवान के सम्मुख गमन करने योग्य दिव्य उत्तरवैक्रिय रूप की विकुर्वणा की।

विकुर्वणा करके उनके अपने परिवार सहित चार अग्रमहिषियों एव दो अनीकों–सेनाओं गंधर्वानीक तथा नाट्यानीव को साथ लेकर उस दिव्य यान–विमान की अनुप्रदक्षिणा करके–चारो तरफ घुमकर पूर्व दिशावर्ती अतीव मनोहर त्रिसोपानों से दिव्य यान–विमान पर आरूढ़ हुआ और सिंहासन के समीप आकर पूर्व की ओर मुख करके उस पर बैठ गया।

ASCENDING IN AERIAL VEHICLE (VIMAN)

56. After learning that the celestial aerial vehicle had been constructed, Suryabh Dev felt happy, satisfied and over-joyed. He then performed emanation of soul particles to prepare fluid body suited for visiting the Tırthankar.

Thereafter, he went around the vehıcle along with four chief-queens and two armies, namely the army of musicians and the army of dancers. He then got in form the east through the beautıful steps. He then seated himself on the throne facing east.

५७. तए णं तस्स सूरिआभस्स देवस्स चत्तारि सामाणियसाहस्सीओ तं दिव्वं जाणविमाणं अणुपयाहिणीकरेमाणा उत्तरिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं दुरूहंति, दुरूहित्ता पत्तेयं पत्तेयं पुव्वण्णत्थेहिं भद्दासणेंहि णिसीयंति। अवसेसा देवा य देवीओ य तं दिव्वं जाणविमाणं जाव दाहिणिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएण दुरूहंति, दूरूहित्ता पत्तेयं पत्तयं पुव्वण्णत्थेहिं भद्दासणेहिं निसीयंति।

५७. तत्पश्चात् सूर्याभदेव के चार हजार सामानिक देव उस यान–विमान की प्रदक्षिणा करते हुए उत्तर दिशावर्ती स्थापित त्रिसोपानो–सीढियो द्वारा उस पर चढे और अपने लिए पहले से ही स्थापित भद्रासनों पर बैठे तथा इनसे शेष रहे दूसरे देव एव देवियाँ भी प्रदक्षिणापूर्वक दक्षिण दिशा के सोपानो द्वारा उस दिव्य यान–विमान पर चढकर प्रत्येक अपने–अपने लिए पहले से ही निश्चित भद्रासनों पर बैठ गये।

57. Thereafter, four thousand gods of equal status went round the aerial vehicle, got in through the staırcase ın the north and seated themselves ın the respectıve seats meant for them. The remaining gods and goddesses rode the vehicle from steps in the south and took their seats.

विवेचन–इन दो सूत्रो में सूर्याभदेव तथा उसके आज्ञानुवर्ती अन्य सामानिक देव–देवियो के विमान मे आरोहण का क्रम विशेष ध्यान देने योग्य है। सूर्याभदेव स्वयं विमान मे पूर्व दिशा के सोपानो से चढता है और अपने मुख्य सिहासन पर बैठता है। उसके पश्चात् सामानिक देव–उत्तर दिशा के सोपानो से तथा


दिव्य देव विमान

चित्र परिचय-२	Illustration No. 2

विमान की दिव्य रचना

भगवान महावीर के दर्शन हेतु जाने के लिए सूर्याभदेव एक लाख योजन विस्तार वाले दिव्य विमान मे आरूढ होता है। इस विमान की रचना बडी अद्‌भुत थी। इसमे सैकडो स्तम्भ बने है। उन स्तम्भो पर अनेक प्रकार की पुतलियॉ बनी है। तोरणो पर रत्नमय अष्ट मगल तथा अनेक प्रकार के चित्र आदि बने हुए है। विमान के मध्य की वेदिका तथा पगथिया वज्र रत्नो और अनेक रग-बिरगे दिव्य मणियो आदि से सुशोभित है। विमान के मध्य मे सूर्याभदेव एक दिव्य सिहासन पर बैठा है। उसके परिपार्श्व मे भद्रासनो पर अग्रमहिषियॉ, उनके पीछे सामानिक देव, आत्म-रक्षक देव आदि विशाल देव-परिवार बैठा है। इस अत्यन्त विशाल दिव्य विमान मे परिवार सहित बैठकर सूर्याभदेव भगवान महावीर के दर्शन करने के लिए प्रस्थित हुआ।

–सूत्र २५ ६५ पृष्ठ ३६ ६४

DIVINE DESIGN OF THE VIMAN

To go to behold and offer homage to Bhagavan Mahavir, Suryabh Dev boards a divine Viman of one lac yojans spread The design of this Viman is unique It has hundreds of pillars These pillars are adorned with a variety of dancing dolls The decorative entrances are embellished with numerous illustrations including those of eight auspicious symbols The platform and the steps in the middle of the Viman are studded with diamonds and other colourful and shining gem stones Suryabh Dev sits on a divine throne at the center of the Viman At his flanks are seated his chief queens on comfortable seats At his back are seated Samanik gods, security gods and a large number of other gods of his divine retinue Suryabh Dev along with his family proceeded in this large divine Viman to behold and offer salutations to Bhagavan Mahavir

—Sutras 25-65, p 36-64

अन्य देव-देवियाँ दक्षिण दिशा के सोपानो से चढ़ते है और अपने-अपने पूर्व निश्चित भद्रासनों पर यथाक्रम बैठ जाते है। चढने-उतरने के लिए अलग-अलग मार्गों की व्यवस्था और बैठने के लिए सिहासन व भद्रासनो की पद अनुक्रम से रचना सभा-मर्यादा और सभा-स्थल की व्यवस्था का एक अत्यन्त विकसित उच्च सभ्यता व श्रेष्ठ संस्कृति का परिचय देती है।

Elaboration—In the two aphorisms, the order in which Suryabh Dev and the other gods and goddesses of equal status in his command entered the aerial vehicle is worthy of special consideration. Suryabh Dev enters from the east and accepts the mounted throne, thereafter the gods of identical status follow the steps in the north and other gods and goddesses the steps in the south and occupy their respective seats. The proper arrangement for riding and getting down the vehicle, the ear-marking of separate routes, the location of seats according to status, the proper decorum in the vehicle depicts a fully developed code and presents a picture of culture of highest order

विमान का प्रस्थान वर्णन

५८. तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स तं दिव्वं जाणविमाणं दुरूढस्स समाणस्स अट्ठ-मंगलगा पुरतो अहाणुपुव्वीए संपत्थिता, तं जहा—सोत्थिय-सिरिवच्छ जाव दप्पणा।

५८. उस दिव्य यान-विमान पर सूर्याभदेव आदि देव-देवियों के आरूढ हो जाने के पश्चात् अनुक्रम से आठ मगल उसके सामने चले। अर्थात् सबसे आगे अष्ट मगल रचना थी। जैसे-स्वस्तिक, श्रीवत्स यावत् दर्पण।

DESCRIPTION OF DEPARTURE OF THE AERIAL VEHICLE (VIMAN)

58. When Suryabh Dev and other gods and goddesses occupied their seats in the aerial vehicle the eight auspicious symbols started moving in their respective order. Swastik was the first and mirror was the last among them.

५९. तयणंतरं च णं पुण्णकलसभिंगार दिव्वा य छत्तपडागा स चामरा दंसणरतिया-आलोयदरिसणिज्जा वाउद्धुयविजयवेजयंतीपडागा ऊसिया गगण-तलमणुलिहंती पुरतो अहाणुपुव्वीए संपत्थिया।

५९. आठ मंगल द्रव्यो के अनन्तर पूर्ण कलश, भृंगार-(मांगलिक झारी) चामर सहित दिव्य छत्र, पताका तथा इनके साथ गगन तल का स्पर्श करती हुई अतिशय सुन्दर, आलोकदर्शनीय-(प्रस्थान करते समय मांगलिक होने के कारण दर्शनीय) और वायु से फहराती हुई एक बहुत ऊँची विजय-वैजयंती नामक पताका अनुक्रम से उसके आगे चली।

59. After the eight auspicious symbols the full pitcher, the auspicious jar (bhringar), celestial umbrella with its chamar, the flag and with all these the extremely beautiful, worth seeing and fluttering very high Vijay Vaijayantı flag touching the sky moved ahead in the respective order.

६०. तयणंतरं च णं वेरुलियभिसंतविमलदंडं पलम्बकोरंटमल्लदामोवसोभितं चंदमंडलनिभं समुस्सियं विमलमायवत्तं पवरसीहासणं च मणिरयणभत्तिचित्तं सपायपीढं सपाउयाजोयसमाउत्तं बहुकिंकरामरपरिग्गहियं पुरतो अहाणुपुव्वीए संपत्थियं।

६०. विजय-वैजयती पताका के पीछे वैडूर्यरत्नो से निर्मित दीप्यमान पादुकाद्वय (खड़ाऊँ की जोडी से) युक्त पादपीठ सहित-उत्तम सिहासन जो अनेक सेवक देवों द्वारा वहन किया जा रहा था, वह आगे चला। निर्मल दण्ड वाले कोरंट पुष्पो की मालाएँ लटक रही थीं। वह चन्द्रमडल के समान निर्मल, श्वेत-धवल ऊँचे मणिरत्नो से बने हुए बेलबूटो से शोभित था।

60. After Vijay Vaijayanti flag there was unique throne made of Vaidurya gems having a couple of slippers and the foot-rest. It was being driven by many serving gods. Garlands of korant flowers were hanging, the throne was clean, white and decorated with embroiderd creepers studded with jewels like lunar (constellation) orbit.

६१. तयणंतरं च णं वइरामयवट्टलट्ठसंठियसुसिलिट्ठपरिघट्ठमट्ठसुपतिट्ठए विसिट्ठे अणेगवरपंचवण्ण-कुडभीसहस्सुस्सिए परिमंडियाभिरामे वाउद्धुयविजय-वेजयंती पडागच्छत्तातिच्छत्तकलिते तुंगे गगणतलमणुलिहंतसिहरे जोअणसहस्समूसिए महतिमहालए, महिंदज्झए अहाणुपुव्वीए संपत्थिए।

६१. तत्पश्चात् वज्र रत्नों से निर्मित दीप्यमान गोलाकार कमनीय, मनोज्ञ, गोल दाडे वाला, अन्य ध्वजाओ में विशिष्ट एवं दूसरी बहुत-सी मनोरम छोटी-बडी अनेक प्रकार की रग-बिरंगी पचरंगी ध्वजाओं से विभूषित, वायु वेग से फहराती हई विजय-वैजयती पताकाओं से शोभित, छत्रातिछत्र से युक्त, आकाशमडल को स्पर्श करने वाला हजार योजन ऊँचा एक बहुत बडा इन्द्रध्वज नामक ध्वज अनुक्रम से उसके आगे चला।

61. Thereafter was the excellent flag (Indra Dhvaj). Its pole was made of strong gems and was round in shape and attractive. It was decorated with many beautiful buntings of different colours of

different sizes and was the last among all other flags. It was looking attractive due to fluttering Vijay Vaijayanti flags. It had umbrellas one above the other. It was touching the sky and was a thousand yojans high.

६२. तयणंतरं च णं सुरूवणेवत्थपरिकच्छिया सुसज्जा सव्वालंकारभूसिया महया भडचडग-पहकारेणं पंच अणीयाहिवईओ पुरतो अहाणुपुव्वीए संपत्थिया।

६२. इन्द्रध्वज के साथ सुन्दर वेश-भूषा से सुसज्जित, समस्त आभूषण-अलंकारों से विभूषित और अत्यन्त प्रभावशाली सुभटों के समुदायो को साथ लेकर पाँच सेनापति (अश्व, गज, रथ, पदाति और वृषभ सेनाओं के अधिपति) अनुक्रम से आगे चले।

62. Following the Indra Dhvaj (the excellent flag), there were five commanders of the army (chiefs of horsemen, the elephant ridden, the chariot ridden, the bullock ridden army and infantry) in their respective order. They were well dressed and decorated with all the medals and ornaments and were extremely impressive.

६३. तयणंतरं च णं बहवे आभिओगिया देवा देवीओ य सएहिं सएहिं रूवेहिं, सएहिं सएहिं विसेसेहिं, सएहिं सएहिं विंदेहिं, सएहिं सएहिं णेज्जाएहिं, सएहिं सएहिं णेवत्थेहिं पुरओ अहाणुपुव्वीए संपत्थिया।

६३. तदनन्तर बहुत से आभियोगिक देव और देवियाँ अपनी-अपनी योग्य-विशिष्ट प्रकार की वेश-भूषाओ और विशेषतादर्शक अपने-अपने प्रतीक चिन्हो से सजधजकर अपने-अपने परिवार, अपने-अपने नेजा और अपने-अपने कार्यों के लिए उपयोगी उपकरणो-साधनो को साथ लेकर अनुक्रम से आगे चले।

63. Thereafter were many Abhiyogic gods and goddesses in their proper dress bearing their distinguishing symbols and decorations. They were accompanied by the members of their family and were having various arms necessary in enabling them to perform their duties.

६४. तयणंतरं च णं सूरियाभविमाणवासिणो बहवे वेमाणिया देवा य देवीओ य सव्वड्ढीए जाव रवेणं सूरियाभं देवं पुरतो पासतो य मग्गतो य समणुगच्छंति।

६४. तत्पश्चात् सबसे अन्त में उस सूर्याभ विमान में रहने वाले बहुत से वैमानिक देव और देवियाँ अपनी-अपनी समस्त ऋद्धि के साथ शंख आदि वाद्यों की प्रतिध्वनि करते हुए उस सूर्याभदेव के आगे-पीछे, आजू-बाजू में साथ-साथ चले।

64. In the end, there were many gods and goddesses residing in the celestial heaven with their entire richness making sound with conch and other musical instruments. They were moving in front, at sides and behind Suryabh Dev.

सूर्याभदेव का आमलकप्पा नगरी की ओर प्रस्थान

६५. तए णं से सूरियाभे देवे तेणं पंचाणीयपरिक्खित्तेणं वइरामयवट्टलट्ठसंठिएणं जाव जोयण सहस्समूसिएणं महतिमहालएणं महिंदज्झएणं पुरतो कड्ढिज्जमाणेणं चउहिं सामाणियसहस्सेहिं जाव सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अन्नेहि य बहूहिं सूरियाभविमाणवासिहिं वेमाणिएहिं देवेहिं देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव रवेणं सोधम्मस्स कप्पस्स मज्झंमज्झेणं तं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुतिं दिव्वं देवाणुभावं उवलालेमाणे उवलालेमाणे उवदंसेमाणे उवदंसेमाणे पडिजागरेमाणे पडिजागरेमाणे जेणेव सोहम्मस्स कप्पस्स उत्तरिल्ले णिज्जाणमग्गे तेणेव उवागच्छति।

जोयणसयसाहस्सिएहिं विग्गहेहिं ओवयमाणे वीईवयमाणे ताए उक्किट्ठाए जाव तिरियं असंखिज्जाणं दीवसमुद्दाणं मज्झंमज्झेणं वीइवयमाणे वीइवयमाणे जेणेव नंदीसरवरे दीवे, जेणेव दाहिणपुरत्थिमिल्ले रतिकरपव्वए, तेणेव उवागच्छति।

उवागच्छित्ता तं दिव्वं देविड्ढिं जाव दिव्वं देवाणुभावं पडिसाहरेमाणे पडिसाहरेमाणे पडिसंखेवेमाणे पडिसंखेवेमाणे जेणेव जंबुद्दीवे दीवे जेणेव भारहे वासे जेणेव आमलकप्पा नयरी जेणेव अंबसालवणे चेइए जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छइ।

उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तेणं दिव्वेणं जाणविमाणेणं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, करित्ता समणस्स भगवओ महावीरस्स उत्तरपुरित्थिमे दिसिभागे तं दिव्वं जाणविमाणं ईसिं चउरंगुलमसंपत्तं धरणितलंसि ठवेइ।

ठवित्ता चउहिं अग्गमहिसीहिं सपरिवाराहिं, दोहिं अणीयाहिं, तं जहा—गंधव्वाणिएण य णट्टाणिएण य सद्धिं संपरिवुडे ताओ दिव्वाओ, जाणविमाणाओ पुरत्थिमिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं पच्चोरुहति।

तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स चत्तारि सामाणियसाहस्सीओ ताओ दिव्वाओ जाणविमाणाओ उत्तरिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं पच्चोरुहंति अवसेसा देवा य देवीओ य ताओ दिव्वाओ जाणविमाणाओ दाहिणिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं पच्चोरुहंति।

६५. तत्पश्चात् वह सूर्याभदेव पाँच अनीकाधिपतियों द्वारा परिरक्षित वज्ररत्नमयी गोल मनोज्ञ–आकार वाले यावत् एक हजार योजन लम्बे अत्यन्त ऊँचे महेन्द्रध्वज को आगे करके चार हजार सामानिक देवों यावत् सोलह हजार आत्मरक्षक देवों एवं सूर्याभ विमानवासी और दूसरे वैमानिक देव–देवियो के साथ समस्त ऋद्धि यावत् वाद्यनिनादों सहित दिव्य देवऋद्धि, दिव्य देवद्युति, दिव्य देवानुभाव–प्रभाव का अनुभव, प्रदर्शन और अवलोकन करते हुए सौधर्मकल्प के मध्य भाग में से निकलकर सौधर्मकल्प के उत्तरदिग्वर्ती निर्याण मार्ग–निकलने के मार्ग के पास आया।

वहाँ से एक लाख योजन प्रमाण विस्तार वाली यावत् उत्कृष्ट दिव्य देवगति से नीचे उतरकर गमन करते हुए तिरछे, असख्यात द्वीप समुद्रों के बीचोंबीच से होता हुआ नन्दीश्वर द्वीप और उसकी दक्षिण–पूर्व दिशा (आग्नेयकोण) में स्थित रतिकर पर्वत पर पहुँचा।

वहाँ आकर उस दिव्य देवऋद्धि यावत् दिव्य देवानुभाव आदि को धीरे–धीरे संकुचित और सक्षिप्त करके जहाँ जम्बूद्वीप नामक द्वीप और उसका भरत क्षेत्र था एवं उस भरत क्षेत्र मे भी जहाँ आमलकप्पा नगरी तथा आम्रशालवन चैत्य था और उस चैत्य मे जहाँ श्रमण भगवान महावीर विराजमान थे, वहाँ आया।

वहाँ आकर उस दिव्य यान–विमान के साथ श्रमण भगवान महावीर की तीन बार प्रदक्षिणा करके श्रमण भगवान महावीर के उत्तर–पूर्व दिग्भाग–ईशानकोण में ले जाकर भूमि से चार अगुल ऊपर अधर रखकर उस दिव्य यान–विमान को खडा किया।

उस दिव्य यान–विमान को खडा करके वह सपरिवार चारो अग्रमहिषियों, गंधर्व और नाट्य दोनो प्रकार के अनीको–सेनाओ को साथ लेकर पूर्व दिशावर्ती त्रिसोपान द्वारा उस दिव्य यान–विमान से नीचे उतरा।

तत्पश्चात् सूर्याभदेव के चार हजार सामानिक देव उत्तरदिग्वर्ती त्रिसोपान द्वारा उस दिव्य यान–विमान से नीचे उतरे तथा इनके अतिरिक्त शेष दूसरे देव और देवियाँ दक्षिण दिशा के त्रिसोपान प्रतिरूपक द्वारा उस दिव्य यान–विमान से उतरे।

DEPARTURE OF SURYABH DEV TOWARDS AAMAL-KAPPA

65. Thereafter Suryabh Dev came out from the centre of Saudharma heaven to the exit in the north. He had five commanders of the army for his security. One thousand yojans high gem-studded round-shaped Mahendra Dhvaj (the celestial flag) was moving ahead of him. Four thousand gods of equal status, sixteen thousand gods serving as security guards and many other gods and

goddesses residing in Suryabh vehicle and outside it were accompanying him with their entire splendour. They were playing their musical instruments and exhibiting the celestial richness, glory, excellence and grace.

Thereafter Suryabh Dev's vehicle moved with celestial speed crossing one lakh yojans area, passed through innumerable continents and oceans and arrived at Nandishvar Dveep. It halted at Ratikar mount in the south-east corner of Nandishvar Dveep.

Suryabh Dev, then slowly and gradually folded the celestial grandeur and celestial richness and came to Aamal-kappa town of Bharat area in Jambu Dveep. He then came to Aamrashalvan garden where Bhagavan Mahavir was seated.

He then went round Bhagavan Mahavir three times along with his celestial aerial vehicle. He then took his vehicle in the north-east direction and stationed it there four angul above the ground.

He then got down the aerial vehicle, his family members, four chief-queens, the two armies namely those of musicians and dancers, also came down through the staircases in the east

Thereafter, four thousand gods of equal status got down from the north. The remaining gods and goddesses came down through the staircase in the south.

सूर्याभदेव का समवसरण में आगमन

६६. तए णं से सूरियाभे देवे चउहिं अग्गमहिसीहिं जाव सोलसहिं आयरक्खदेवसाहस्सीहिं अण्णेहि य बहूहिं सूरियाभविमाणवासीहिं वेमाणिएहिं देवेहिं देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव णाइयरवेणं जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता समणं भगवंतं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण-पयाहिणं करेइ करित्ता वंदति नमंसति वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–

'अहं णं भंते ! सूरियाभे देवे देवाणुप्पियाणं वंदामि नमंसामि जाव पज्जुवासामि।'

६६. इसके पश्चात् वह सूर्याभदेव सपरिवार चार अग्रमहिषियों यावत् सोलह हजार आत्मरक्षक देवो तथा अन्यान्य बहुत से सूर्याभ विमानवासी देव-देवियों के साथ समस्त ऋद्धि-वैभव यावत् वाद्य निनादों सहित चलता हुआ श्रमण भगवान महावीर के समीप

आया। आकर श्रमण भगवान की दाहिनी ओर से प्रारम्भ कर तीन बार प्रदक्षिणा की। प्रदक्षिणा करके वन्दन-नमस्कार किया और वन्दन-नमस्कार करके बोला-

"हे भते ! मैं सूर्याभदेव आप देवानुप्रिय को वन्दन करता हूँ, नमन करता हूँ यावत् आपकी पर्युपासना करता हूँ।"

ARRIVAL OF SURYABH DEV IN THE SAMAVASARAN

66. Thereafter, Suryabh Dev accompanied by his entire family, including four chief-queens, sixteen thousand gods meant for his security, other gods and goddesses residing in the celestial abode, the entire paraphernalia and the musicians came near Shraman Bhagavan Mahavir He went round three times starting from the right side of the Lord. He then bowed to the Lord in respect and said—

"Reverend Sir ! I, Suryabh Dev bow to you, honour you, greet you and worship you."

भगवान द्वारा वन्दना की स्वीकृति

६७. 'सूरियाभा' इ समणे भगवं महावीरे सूरियाभं देवं एवं वयासी-

'पोराणमेयं सूरियाभा ! जीयमेयं सूरियाभा ! किच्चमेयं सूरियाभा ! करणिज्जमेयं सूरियाभा ! आइण्णमेयं सूरियाभा ! अब्भणुण्णायमेयं सूरियाभा ! जं णं भवणवइ-वाणमंतर-जोइस-वेमाणिया देवा अरहंते भगवंते वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता तओ पच्छा साइं साइं नाम-गोत्ताइं साहिंति, तं पोराणमेयं सूरियाभा ! जाव अब्भणुण्णायमेयं सूरियाभा !'

६७. श्रमण भगवान महावीर ने 'हे सूर्याभ !' इस प्रकार से सबोधित कर उस सूर्याभदेव से कहा-

"हे सूर्याभ ! यह पुरातन है। हे सूर्याभ ! यह जीत (परम्परागत) व्यववहार है। हे सूर्याभ ! यह कृत्य है। हे सूर्याभ ! यह करणीय है। हे सूर्याभ ! यह पूर्व परम्परा से आचरित है। हे सूर्याभ ! यह अभ्यनुज्ञात-सर्व सम्मत है कि भवनपति, बाणव्यन्तर, ज्योतिष्क और वैमानिक देव अरिहंत भगवन्तो को वन्दन करते हैं, नमन करते है और वन्दन-नमस्कार करने के पश्चात् वे अपने-अपने नाम और गोत्र का उच्चारण करते हैं। अतएव हे सूर्याभ ! तुम्हारी यह सारी प्रवृत्ति पुरातन है यावत् सर्व सम्मत है।"

67. Shraman Bhagavan Mahavir addressed to Suryabh Dev as under—

"O Suryabh ! It is an ancient custom. It is an old tradition. It is worthy of performance. It has been followed in the past as a rule. It is accepted by all that gods of all the four categories namely Bhavanpati, Vanavyantar, Jyotishk and Vaimanik at first bow to Arihants, greet Him, honour Him and thereafter, they mention their name and status So, O Suryabh ! Your action is in accordance with ancient tradition being observed by all "

६८. तए णं से सूरियाभे देवे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठ जाव समणं भगवं महावीरं वंदति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता नच्चासणे नातिदूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे विणएणं पंजलिउडे पज्जुवासति।

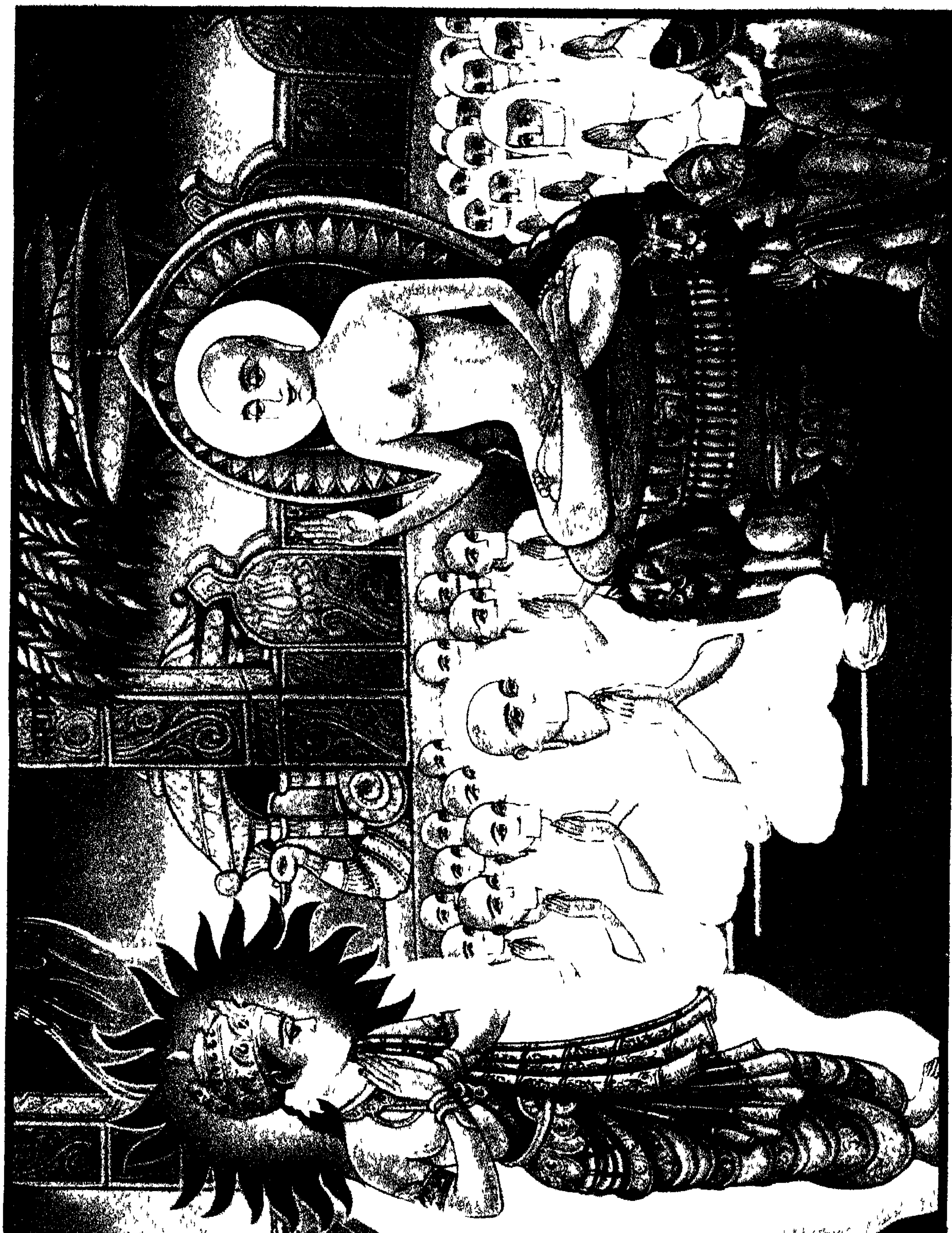
६८. तब वह सूर्याभदेव श्रमण भगवान महावीर के इस कथन को सुनकर अतीव हर्षित हुआ और श्रमण भगवान महावीर को वन्दन-नमस्कार करके न तो उनसे अधिक निकट और न अधिक दूर किन्तु यथोचित स्थान पर स्थित होकर शुश्रूषा करता हुआ, नमस्कार करता हुआ सामने विनयपूर्वक दोनो हाथ जोडकर अजलि करके पर्युपासना करने लगा।

68. Suryabh Dev felt very much pleased at the word of the Lord He bowed to Him in respect and took his seat at proper place—neither very near nor very far from Bhagavan, humbly clasped his hands in his honour and started serving him exhibiting his devotion.

६९. तए णं समणे भगवं महावीरे सूरियाभस्स देवस्स तीसे य महतिमहालिताए परिसाए जाव धम्मं परिकहेइ। परिसा जामेव दिसिं पाउब्भूआ तामेव दिसिं पडिगया।

६९. तत्पश्चात् श्रमण भगवान महावीर ने सूर्याभदेव को और उस उपस्थित विशाल परिषद् को धर्मदेशना सुनाई। देशना सुनकर परिषद् जिस दिशा से आई थी वापस उसी ओर लौट गई।

69. Thereafter Bhagavan Mahavir delivered spiritual discourse to Suryabh Dev and the entire assembly of devotees present. After listening to the discourse, the assembly dispersed.



चित्र परिचय-३

Illustration No. 3

सूर्याभदेव का समवसरण में आगमन

समवसरण मे आकर सूर्याभदेव ने उत्तरासग करके तीन बार प्रदक्षिणा देकर श्रमण भगवान महावीर को वन्दना की–"हे भन्ते ! मै सूर्याभदेव देवानुप्रिय को वन्दन-नमन करके आपकी पर्युपासना करता हूँ।"

प्रभु ने कहा–'हे सूर्याभ ! यह तुम्हारा कर्त्तव्य है, आचार है।'

सूत्र ६६-६७ पृष्ठ ६५

ARRIVAL OF SURYABH DEV IN THE SAMAVASARAN

After arriving in the Samavasaran, Suryabh Dev covered his mouth with his scarf, went around Shraman Bhagavan Mahavir three times, bowed before him and offered him salutations—"Bhante ! I, Suryabh Dev, bow before you, honour you, greet you and worship you."

Bhagavan said—"O Suryabh Dev ! This is part of your duty and conduct."

– Sutras 66-67 p. 65

विवेचन–महतिमहालिताए–यह परिषद् का विशेषण है जिसका अर्थ यह है कि भगवान की देशना सुनने के लिए सूर्याभदेव, सेय राजा, धारिणी आदि रानियो के सिवाय ऋषि परिषदा (अनेक ऋषिगण), मुनि परिषदा, यति परिषदा, देव परिषदा के साथ हजारो नर-नारी, उनके समूह और उन समूहों मे भी बहुत से अपने-अपने सभी पारिवारिक जनो सहित उपस्थित थे।

भगवान के समवसरण मे उपस्थित विशाल परिषदा और धर्मदेशना आदि का औपपातिकसूत्र में विस्तार से वर्णन किया गया है। यह वर्णन बहुत सुन्दर है।

भावपूर्ण तथा सारयुक्त है। जैसे–

"भगवान की दिव्य देशना मे लोक का, जीव-अजीव का स्वरूप बताया गया। फिर धर्म का स्वरूप बताकर धर्म के दो प्रकार–आगारधर्म (श्रावकधर्म) तथा अनगारधर्म (मुनिधर्म) का स्वरूप बताया। यह धर्मदेशना सुनकर अनेक भव्य आत्माओ ने सयम-दीक्षा ग्रहण की तथा अनेक गृहस्थो ने श्रावकधर्म अगीकार किया।"

भगवान की देशना सुनकर परिषदा द्वारा प्रकट किया गया प्रमोद भाव बहुत ही भावपूर्ण है। जैसे–

"हे भते ! आप द्वारा सुआख्यात, सुप्रज्ञप्त, निर्ग्रन्थ प्रवचन अनुत्तर है। धर्म की व्याख्या करते हुए आपने उपशम–क्रोधादि की शान्ति का उपदेश दिया है, उपशम के उपदेश के प्रसंग मे आपने विवेक का व्याख्यान किया है। विवेक की व्याख्या करते हुए आपने प्राणातिपात आदि से विरत होने का निरूपण किया है। पाप-विरमण का उपदेश देने के प्रसग में आपने पापकर्म नही करने का विवेचन किया है। आपसे भिन्न दूसरा कोई श्रमण या ब्राह्मण इस प्रकार का उपदेश नही कर सकता है, तो फिर इससे श्रेष्ठ धर्म के उपदेश की बात कहाँ ?"

Elaboration—Mahtimahalitaye—It is an adjective for the spiritual gathering It means that in order to listen to the Lord, Suryabh Dev, king Seya, queen Dharni, other queens, group of saints, rishis, yatis, gods, thousands of men and women including members of their family were present

A detailed description is available in Aupapatik Sutra about the huge gathering in the congregation and spiritual discourse of Bhagavan in the Samavasaran

The gist of spiritual discourse was as under—

"In the the spiritual discourse, the real picture of universe, soul and matter was explained. Thereafter, the true nature of Spirituality (Dharma) was mentioned. It was told that it is of two types—one for householder and the other for saints. The nature of these two—Anagaar Dharma and Anagaar Dharma was told in detail. After listening to the spiritual discourse, many true devotees accepted monkhood and many accepted vows of the householder."

The ecstatic pleasure exhibited by the listeners after hearing the spiritual discourse is really thought provoking. It is as under—

"O the Reverend ! Your spiritual discourse is detailed, full of deep knowledge, without any attachment and unique. While commenting on Dharma, you have instructed that anger must be pacified In this context you mentioned about discrimination. With reference to discrimination, you advised that one should keep himself away from eighteen types of sins namely violence and others Further you described in detail that sins should not be committed. No other Shraman or Brahmin can deliver such a thought-provoking spiritual discourse So there cannot be any spiritual discourse better than this.

सूर्याभदेव की जिज्ञासा और समाधान

७०. तए णं से सूरियाभे देवे समणस्स भगवओ महावीरस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हयहियए उट्ठाए उट्ठेति उट्ठित्ता समणं भगवंतं वंदइ नमंसइ वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–

'अहं णं भंते ! सूरियाभे देवे किं १. भवसिद्धिए अभवसिद्धिए, २. सम्मदिट्ठी मिच्छादिट्ठी, ३. परित्तसंसारिए अणंतसंसारिए, ४. सुलभबोहिए दुल्लभबोहिए, ५. आराहए विराहए, ६. चरिमे अचरिमे ?'

७०. सूर्याभदेव ने श्रमण भगवान महावीर से धर्म-श्रवण कर हृदय मे धारण किया और हर्षित सतुष्ट एव आह्लादित हुआ। अपने आसन से खडे होकर उसने श्रमण भगवान महावीर को वन्दन-नमस्कार किया और इस प्रकार प्रश्न पूछा–

"भगवन् ! मै सूर्याभदेव (१) भवसिद्धिक-(भव्य) हूँ अथवा अभवसिद्धिक-(अभव्य) हूँ? (२) सम्यग्दृष्टि हूँ या मिथ्यादृष्टि हूँ? (३) परित्त ससारी-(परिमित काल तक ससार मे भ्रमण करने वाला) हूँ अथवा अनन्त संसारी-(अनन्त काल तक ससार मे भ्रमण करने वाला) हूँ? (४) सुलभबोधि-(सरलता से सम्यग्ज्ञान-दर्शन की प्राप्ति करने वाला) हूँ अथवा दुर्लभबोधि हूँ? (५) आराधक-(ज्ञान-दर्शन-चारित्रबोधि की आराधना करने वाला) हूँ अथवा विराधक हूँ? (६) चरमशरीरी हूँ अथवा अचरमशरीरी हूँ?"

QUESTION OF SURYABH DEV AND ITS ANSWER

70. After listening to the spiritual discourse of Bhagavan Mahavir, Suryabh Dev drooled on it, felt pleased, satisfied, overjoyed and accepted it. He then got up from his seat, bowed to Bhagavan Mahavir in respect and asked—

"O Reverend Sir ! (1) Am I, Suryabh Dev, fit for salvation or am I not so ? (2) Am I observer of true belief or of false belief ? (3) Am I going to have specified number of births before attaining liberation or am I going to have unlimited births ? (4) Am I going to have true knowledge easily or with extremely great difficulty ? (5) Am I a true follower of the order or not ? (6) Is the present life-span my last life in this mundane world or am I going to have rebirth in this world ?"

विवेचन—प्रस्तुत प्रश्नो मे भव्य जीवों की चरम लक्ष्य प्राप्त करने की भावना का निदर्शन है। यद्यपि ससारी जीव अनादिकाल से संसार में परिभ्रमण करते आ रहे हैं, परन्तु चाहते यही है कि हम ऐसी स्थिति प्राप्त करे कि जिसके पश्चात् न तो पुनर्जन्म हो और न पुनःमरण हो। किन्तु यह आकांक्षा उसी की सफल होती है जिस जीव में मुक्त होने की योग्यता हो और योग्यता उसी मे पाई जाती है जो भव्य हो अर्थात् कालान्तर मे कभी न कभी जिसे मुक्ति अवश्य प्राप्त होगी।

विपुल ऋद्धि और वैभव प्राप्त करके भी सूर्याभदेव के अन्तर हृदय मे इनसे सतुष्टि नहीं है। वह इन भोगो से विरक्त होकर मुक्ति पाने के लिए उत्सुक था। इसलिए उसने भगवान से अपनी आत्मा के कल्याण से सम्बन्धित छह प्रश्न पूछे है। सूर्याभदेव ने सर्वप्रथम भगवान के समक्ष यही जिज्ञासा व्यक्त की कि "हे भगवन् ! मै मुक्ति प्राप्त करने की योग्यता वाला–भव्य हूँ अथवा नही हूँ ?"

उसकी यह जिज्ञासा ही उसके भव्य होने की सूचक है, क्योंकि अभव्य जीव के मन में तो ससार से मुक्ति पाने की आकाक्षा ही उत्पन्न नही होती है।

योग्यता होने पर भी मुक्ति तभी प्राप्त हो सकती है जब सम्यक् श्रद्धा हो। सम्यक् श्रद्धा के बिना भव्य जीव भी मुक्ति प्राप्त नही कर सकता। इस तथ्य को समझने के लिए सूर्याभदेव ने दूसरा प्रश्न पूछा–"मै सम्यग्दृष्टि हूँ अथवा नही हूँ ?"

सम्यग्दृष्टि जीव भी अनन्त काल तक ससार मे परिभ्रमण करने वाले हो सकते है। इसी तथ्य को जानने के लिए वह पूछता है–"हे भगवन् ! मै परिमित काल तक ससार भ्रमण करने वाला हूँ अथवा अनन्त काल तक मुझे ससार मे भ्रमण करना पडेगा ?"

सुलभबोधि होने पर भी अनेक जीव सम्यग्ज्ञान आदि की यथाविधि आराधना करने में समर्थ नही हो पाते है। वे लोकैषणाओ, परीषह, उपसर्गों आदि के कारण आराधना से विचलित होकर ससार में भटक जाते है। अत सूर्याभदेव ने भगवान से पूछा–"मै धर्म का आराधक ही रहूँगा अथवा धर्ममार्ग से भटक जाऊँगा ?"

और सबसे अन्त मे अपनी समस्त जिज्ञासाओ का निष्कर्ष जानने के लिए उत्सुकता से पूछा है कि "भव्य, सुलभबोधि, आराधक आदि होने पर भी मुझे क्या मुक्ति-प्राप्ति की काल-लब्धि (उपयुक्त समय) प्राप्त हो चुकी है ? ससार में रहने का मेरा इसके बाद का भव अन्तिम है अथवा और दूसरे भी भवान्तर शेष है ?"

ये सभी प्रश्न सूर्याभदेव की धर्म-रुचि और मोक्ष-प्राप्ति की तीव्र अभिलाषा प्रकट करते है।

Elaboration—In the above said questions, the keen desire of the blessed souls to attain their goal of salvation is exhibited Although the mundane souls are passing through the cycle of birth and death in this world since beginning-less period, yet they wish to attain such a state whereafter they should not have rebirth in this world leading again to death. But this desire can be fulfilled only of those who have fitness to obtain liberation. Such fitness can be noticed only in those who are Bhavya. In other words who in the later period, may be after many-many births are certainly going to attain liberation

Suryabh Dev possessed great wealth and a big family Yet he was not satisfied in his mind He was keen to get detached from worldly enjoyments and obtain beatitude So he made six queries to the Lord about his welfare. Suryabh Dev, first of all raised the question—"Whether he is fit to obtain liberation or not ?"

His, this very query, indicates that he is Bhavya—he has requisite fitness The souls that are unfit to obtain liberation (Abhavya) never have any desire to attain liberation from this mundane world

Even if one has requisite fitness, one can attain liberation only if he has right faith Without right faith even Bhavya souls cannot attain salvation In order to seek clarification on this issue, Suryabh Dev put up the second question—"Whether he has right faith or is a victim of false faith ?"

Even the souls having right faith can pass through the cycle of birth and death for unlimited period In order to be clear on this issue, Suryabhdev further asks—"Whether he is going to pass through worldly cycle of birth and death for a limited period or for an unlimited period ?"

All the souls who grasp true spiritual knowledge easily, cannot put it into practice strictly according to the order They become a prey to worldly desires, unforeseen troubles and therefore they go astray from the true path So Suryabh Dev asked—"Whether he shall remain a true follower of Dharma or he shall go astray ?"

In the end, in order to know the final goal of his queries, he curiously asks—"If being fit for liberation (Bhavya), prone to attain true spiritual knowledge easily (Sulabhbodhi) and true follower of spiritual path, he had actually reached the time period wherein he shall certainly attain liberation He asks whether it is his last span of worldly life or whether still he has to undergo several life-spans before attaining salvation ?"

All these questions indicate intense desire of Suryabh Dev for spiritual study and attaining liberation.

७१. 'सूरियाभा' इ समणे भगवं महावीरे सूरियाभं देवं एवं वयासी–

सूरियाभा ! तुमं णं भवसिद्धिए नो अभवसिद्धिए जाव चरिमे णो अचरिमे।

७१. सूर्याभदेव को सम्बोधित कर श्रमण भगवान महावीर ने इस प्रकार उत्तर दिया–

"हे सूर्याभ ! तुम भवसिद्धिक हो, अभवसिद्धिक नही हो यावत् चरमशरीरी हो अर्थात् इस भव के पश्चात् का तुम्हारा मनुष्यभव अन्तिम होगा, अचरमशरीरी नही हो।"

REPLY OF BHAGAVAN MAHAVIR TO THE QUERIES

71. Bhagavan Mahavır addressed Suryabh Dev as under—

"O Suryabh Dev ! You are fit for liberatıon (Bhavsıddhik), you are not unfit for ıt; ultımately you are Charam Shareeri (passing through final celestıal lıfe-span). In other words after this life-span, your human bırth shall be the final one. You are not going to undergo any further mundane worldly lıves "

सूर्याभदेव द्वारा मनोभावना का निवेदन

७२. तए णं से सूरियाभे देवे समणेणं भगवया महावीरेणं एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ चित्तमाणंदिए परमसोणस्सिए समणं भगवंतं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–

तुब्भे णं भंते ! सव्वं जाणह, सव्वं पासह, सव्वं कालं जाणह, सव्वं कालं पासह, सव्वे भावे जाणह, सव्वे भावे पासह।

जाणंति णं देवाणुप्पिया ! मम पुव्विं वा पच्छा वा मम एयारूवं दिव्वं देविड्ढि दिव्वं देवजुइं दिव्वं देवाणुभावं लद्धं पत्तं अभिसमण्णागयं ति। तं इच्छामि णं देवाणुप्पियाणं भत्तिपुव्वगं गोयमाइयाणं समणाणं निग्गंथाणं दिव्वं देविड्ढि दिव्वं देवजुइं दिव्वं देवाणुभावं दिव्वं बत्तीसइबद्धं नट्टविहिं उवदंसित्तए।

७२. श्रमण भगवान महावीर के इस कथन को सुनकर सूर्याभदेव ने हर्षित, सन्तुष्ट चित्त, आनन्दित और परम प्रसन्न होते हुए श्रमण भगवान महावीर को वन्दन-नमस्कार किया और वन्दन-नमस्कार करके इस प्रकार निवेदन किया–

"हे भदन्त ! आप सब जानते है और सब देखते है, सर्वत्र लोक-अलोक में विद्यमान समस्त पदार्थों को जानते हैं और देखते हैं। सर्व काल-भूत, भविष्य, वर्तमान को आप जानते और देखते है; सर्व भावो (पर्यायों) को आप जानते और देखते है।

अतएव हे देवानुप्रिय ! पूर्व के और आगे के भव को आप जानते है तथा मुझे जो यह दिव्य देवऋद्धि आदि प्राप्त एवं अधिगत हुई है, इसको भी जानते और देखते है। अतएव आप देवानुप्रिय की भक्तिवश होकर मै चाहता हूँ कि गौतम आदि निर्ग्रन्थों के समक्ष इस दिव्य देवऋद्धि (ऐश्वर्य-सम्पदा), दिव्य देवद्युति (शरीर व आभूषणो की दीप्ति-काति-चमक), दिव्य देवानुभाव-(तेज और अद्‌भुत-शक्ति-सामर्थ्य) तथा बत्तीस प्रकार की दिव्य नाट्यविधि-नाट्यकला को प्रदर्शित करूँ।"

REQUEST OF SURYABH DEV

72. At this reply of Bhagavan Mahavır Suryabh Dev was pleased, satisfied, overjoyed and in a fit of ecstatic pleasure, he bowed to Bhagavan Mahavır. Thereafter, he requested as under—

"O the Reverend Sır ! You are omnıscient, you know every thıng, you know and see all the substances ın the world (Lok) and the world beyond (Alok). You know and see all the events and state ın the past, present and future. You know all the modes

Therefore, O the beloved of gods (Devanuprıya) ! You know my previous lıfe-span and the future lıfe-span You also know the cause of my present celestıal state and grandeur. So, expressıng my deep devotion towards you, I wish to exhıbit before Gautam and other saints (Nirgranths) of the order, the celestıal wealth, godly brıghtness (of celestial bodies and ornaments) heavenly strength and thırty two types of theatrical performances."

७३. तए णं समणे भगवं महावीरे सूरियाभेणं देवेणं एवं वुत्ते समाणे सूरियाभस्स देवस्स एयमट्ठं णो आढाति, णो पारियाणति, तुसिणीए संचिट्ठति।

७३. सूर्याभदेव के इस प्रकार निवेदन करने पर श्रमण भगवान महावीर ने सूर्याभदेव के इस कथन का आदर नही किया। उसकी अनुमोदना नही की, किन्तु वे मौन रहे।

73. Bhagavan Mahavır dıd not pay any attention to this request of Suryabh Dev He did not support it. He remained silent.

विवेचन—सूर्याभदेव भगवान महावीर के दर्शन करने के लिए अपनी समस्त देवऋद्धि व वैभव के साथ आता है और आकर अपना परिचय देकर भगवान की वन्दना करता है। भगवान इसे उसका परम्परागत आचार, व्यवहार बताकर एक प्रकार से अनुमोदन करते है, परन्तु जब वह भगवान के समक्ष अपनी उमडती भक्ति का प्रदर्शन करने के लिए अपनी ऋद्धि, वैभव, सामर्थ्य बताने के लिए नाट्य संगीत कला का सहारा लेता है और बत्तीस प्रकार के नाटक प्रदर्शित करने की अनुमति माँगता है तो भगवान उसके इस कथन का अनुमोदन या सन्मान नही करके मौन रहते है।

भक्ति के दो रूप हैं—एक **आभ्यन्तर भक्ति**, जो आराध्य के चरित्र का अथवा उसके उपदेशों का अनुसरण करने का मार्ग है। दूसरा **बाह्य भक्ति**। ऐसे भक्त आराध्य के आराधक नही केवल प्रशंसक होते है, वे भक्ति का बाह्य प्रदर्शन करके ही सतोष मानते है।

यदि सूर्याभदेव भक्ति मे डूबकर त्याग प्रत्याख्यान करने को तत्पर होता तो अन्य प्रसगो की तरह भगवान उसका अनुमोदन करते और कहते–"**जहा सुहं देवाणुप्पिया मा पडिबंध करेह!**"–"हे देवानुप्रिय ! जैसा सुख हो वैसा करो, शुभ कार्य मे विलम्ब मत करो!" किन्तु जहाँ त्याग के स्थान पर शक्ति व ऐश्वर्य के प्रदर्शन का प्रसग आता है वहाँ भगवान किसी भी भक्त को उसके प्रदर्शन की अनुमति नही देते, न ही उसकी अनुमोदना करते है, यह तथ्य यहाँ ध्यान देने योग्य है।

Elaboration—Suryabh Dev comes to Bhagavan Mahavir with his entire celestial wealth and encourage in order to see him. He bows to Bhagavan and introduces himself Bhagavan accepts it as his traditioned behaviour and conduct and therefore supports his action. But when, in order to exhibit his deep devotion, he mentions his celestial family, his wealth, his strength and seeks permission to present thirty two types of dramatic arts, Bhagavan Mahavir does not support his conduct and remains silent

Two Facets of Devotion—Inner Devotion—This devotion impels one to follow the conduct and the teaching of his Lord. The second one is **External Devotion.** Such devotees are not true followers. They just praise the Lord They remain contented just by exhibiting their devotion to the public.

In case Suryabh Dev, in his deep devotion, offered himself for any restraints, Bhagavan Mahavir would have supported his conduct as he had done at other occasions. He would have said—"O the Blessed ! You do what pleases you. Do no delay in translating noble words into action." But when instead of restraints, the request is for exhibiting strength or wealth, Bhagavan, does not grant permission for it to any devotee. He does not even support it. This fact is worth consideration.

७४. तए णं से सूरियाभे देवे समणं भगवं महावीरं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी–

तुब्भे णं भंते ! सव्वं जाणह जाव उवदंसित्तए त्ति कट्टु समणं भगवं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, करित्ता वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमति, अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणति, समोहणित्ता संखिज्जाइं जोयणाइं दंडं निस्सिरति, अहाबायरे पुग्गले परिसाडेंति, परिसाडित्ता अहासुहुमे पुग्गले परिययंति, परियाइत्ता दोच्चं पि विउव्वियसमुग्घाएणं जाव बहुसमरमणिज्जं भूमिभागं विउव्वति। से जहानामए आलिंगपुक्खरे इ वा जाव मणीणं फासो।

तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभागे पिच्छाघरमण्डवं विउव्वति अणेगखंभसयसंनिविट्ठं वण्णओ।

अंतो बहुसमरमणिज्जं भूमिभागं उल्लोयं अक्खाडगं च मणिपेढियं च विउव्वति।

तीसे णं मणिपेढियाए उवरि सीहासणं सपरिवारं जाव दामा चिट्ठन्ति।

७४. तत्पश्चात् सूर्याभदेव ने दूसरी और तीसरी बार भी पुन इसी प्रकार से श्रमण भगवान महावीर से निवेदन किया–

"हे भगवन् ! आप सब जानते है आदि (सूत्र ७२ के अनुसार) यावत् नाट्यविधि प्रदर्शित करना चाहता हूँ।" इस प्रकार कहकर उसने दाहिनी ओर से प्रारम्भ कर श्रमण भगवान महावीर की तीन बार प्रदक्षिणा की। प्रदक्षिणा करके वन्दन-नमस्कार किया और वन्दन-नमस्कार करके उत्तर-पूर्व दिशा मे गया। वहाँ जाकर वैक्रिय समुद्घात करके संख्यात योजन लम्बा दण्ड निकाला। यथाबादर (असार) पुद्गलो को दूर करके यथासूक्ष्म (सारभूत) पुद्गलो को ग्रहण किया। इसके बाद पुन· दुबारा वैक्रिय समुद्घात करके यावत् अत्यन्त सम और रमणीय भूमिभाग की रचना की। जो पूर्व वर्णित आलिग पुष्कर आदि के समान सर्व प्रकार से समतल यावत् रूप, रस, गध और स्पर्श वाले मणियो से सुशोभित था। (सूत्र ३१ से ४४ तक के वर्णन के अनुसार)

उस अत्यन्त सम और रमणीय भूमिभाग के मध्य मे एक प्रेक्षागृह मडप–(नाटकशाला) की रचना की। वह अनेक सैकडो स्तम्भों पर स्थित था इत्यादि वर्णन पूर्व के समान जानना चाहिए। (सूत्र ४५-४६ के अनुसार)

उस प्रेक्षागृह मंडप के अन्दर अतीव समतल, रमणीय भूमिभाग, चन्देवा (चाँदनी), रगमच और मणिपीठिका की विकुर्वणा की। उस मणिपीठिका के ऊपर उसने पादपीठ, छत्र आदि से युक्त सिंहासन की रचना की यावत् उसका ऊपरी भाग मुक्तादामो (मोतियों के झुमकों) से शोभित हो रहा था। (सूत्र ४७ से ५२ के अनुसार)

74. Thereafter, Suryabh Dev repeated his request second time and again the third time. He humbly uttered—

"O the Reverend Sir ! You know (as already mentioned in aphorism 72) upto that I want to exhibit my dramatic skill." He then went round three times starting from the right side of Bhagavan, bowed to him, honoured him and then went in north-east direction He then performed emanation of soul-particles in order to create fluid form (Vaikriya Samudghat) in the shape of a stick numerable yojans long. He removed gross molecules and collected subtle molecules He again resorted to Vaikriya Samudghat and created extremely levelled and beautiful piece of land. It was Aaling Pushkar (already mentioned in aphorisms 31 to 44), levelled from all sides and studded with jewels of unique shine, smell, taste and touch.

He created a theatre in the middle of that completely levelled and beautiful land. It was supported on several hundred pillars. Its description may be considered similar to the one earlier mentioned in aphorisms 45-46

He then created a completely levelled attractive space, a canopy, a stage and a platform studded with gems (mani-peethika) at the place for spectators. He further created a seat and umbrella bearing throne on that platform. Its upper part was decorated with pearl garlands (as in aphorisms 47 to 52).

नृत्य–रचना

७५. तए णं से सूरियाभे देवे समणस्स भगवओ महावीरस्स आलोए पणामं करेइ, करित्ता 'अणुजाणइ मे भगवं', ति कट्टु सीहासणवरगए तित्थयराभिमुहे संणिसण्णे।

तए णं से सूरियाभे देवे तप्पढमयाए नाना–मणि–कणग–रयण विमल–महारिह–निउणओविय–मिसि–मिसिंत–विरइय–महाभरण–कडग–तुडियव रभूसणुज्जलं पीवरं पलंबं दाहिणं भुयं पसारेति।

तओ णं सरिसयाणं सरित्तयाणं सरिव्वयाणं सरिसलावण्ण–रूव–जोव्वणगुणोववेयाणं एगाभरण–वसणगहिअ–णिज्जोआणं दुहतो संवेल्लियग्गणियत्थाणं उप्पीलिय–चित्तपट्टपरिय–रसफेणकावत्तरइय–संगयपलंबवत्थंत–चित्तचिल्ललग–नियंसणाणं

एगावलि–कण्ठ–रइय–सोभंतवच्छ–परिहत्थ–भूसणाणं अट्ठसयं णट्टसज्जाणं देवकुमाराणं णिग्गच्छति।

७५. तत्पश्चात् उस सूर्याभदेव ने श्रमण भगवान महावीर की ओर देखकर प्रणाम किया और प्रणाम करके कहा–"हे भगवन् ! मुझे आज्ञा दीजिये।" फिर तीर्थंकर की ओर मुख करके उस श्रेष्ठ सिहासन पर सुखपूर्वक बैठ गया।

इसके पश्चात् नाट्यविधि प्रारम्भ करने के लिए उस सूर्याभदेव ने सर्वप्रथम निपुण शिल्पियों द्वारा बनाये गये अनेक प्रकार की विमल मणियो, स्वर्ण और रत्नो से निर्मित भाग्यशालियो के योग्य, देदीप्यमान, कड़े–बाजूबंद आदि श्रेष्ठ आभूषणों से विभूषित उज्ज्वल पुष्ट दीर्घ दाहिनी भुजा को फैलाया।

उस दाहिनी भुजा से एक सौ आठ देवकुमार निकले। वे समान शरीर–आकार, समान रग–रूप, समान वय, समान लावण्य, युवोचित गुणों वाले, एक जैसे आभरणों, वस्त्रो और नाट्य उपकरणो से सुसज्जित थे। कन्धो के दोनों ओर लटकते पल्लो वाले उत्तरीय वस्त्र (दुपट्टे) ओढे हुए थे और शरीर पर रंग–बिरंगे वस्त्र पहने हुए झालरयुक्त चित्र–विचित्र देदीप्यमान, लटकते अधोवस्त्रो (चोगा) को धारण किये हुए थे, जो हवा का झोका लगने पर फेन जैसा प्रतीत हो रहा था। कण्ठ एव वक्षस्थल एकावली आदि आभूषणो से शोभायमान हो रहे थे। वे नृत्य करने के लिए तत्पर हुए।

DANCE CREATION

75. Thereafter Suryabh Dev turning towards Bhagavan Mahavir, saluted him and said—"O Reverend Sir ! Kindly allow me." He then sat on the throne facing Bhagavan Mahavir.

Thereafter, in order to start the dancing activity, Suryabh Dev first of all spread his shining, well-built right arm It was bearing shining thick bangles (Kare) and other ornaments prepared by expert jewellers. They were studded with gems, gold and jewels and were worthy of being worn by the fortunate ones.

One hundred eight young gods emanated from that right hand. They were identical in physical outlook size, colour, beauty, age and youth pertaining qualities. They were wearing ornaments, clothes and theatrical articles of same type. They were having pieces of cloth hanging down fun both the shoulders. They were wearing clothes of different colours. Their gowns were having marginal lace

and embroidered pictures. At the movement of the wind, the gown was looking like foam. They were ready for dancing performance.

७६. तयणंतरं च णं नानामणि जाव पीवरं पलंबं वामं भुयं पसारेति।

तओ णं सरिसयाणं, सरित्तयाणं, सरिव्वयाणं, सरिसलावण्ण–रूव–जोव्वणगुणोववेयाणं, एगाभरण–वसणगहिअ णिज्जोआणं दुहतो संवेल्लियग्गणियत्थाणं आविद्धतिलयामेलाणं पिणद्धगेवेज्ज–कंचुईणं नानामणि–रयणभूसण विराइयंगमंगाणं चंदद्धसमनिलाडाणं चंदाहियसोमदंसणाणं उक्का इव उज्जोवेमाणीणं सिंगारागारचारुवेसाणं संगयगय–हसिय भणिय–चिट्ठय विलास–ललिय–संलावनिऊण–जुत्तोवयारकुसलाणं, गहियाउज्जाणं अट्ठसयं नट्टसज्जाणं देवकुमारियाणं णिग्गच्छइ।

७६. पश्चात् सूर्याभदेव ने अनेक प्रकार की मणियो आदि के आभूषणो से विभूषित यावत् पीवर–पुष्ट एव लम्बी बायी भुजा को फैलाया।

उस भुजा से समान शरीर वाली, समान रग, समान वय, समान लावण्य–रूप–यौवन गुणो वाली, एक जैसे आभूषणो व दोनों ओर लटकते पल्लेयुक्त उत्तरीय वस्त्रों और नाट्योपकरणो से सुसज्जित, ललाट पर तिलक, मस्तक पर आमेल (फूलों से बने मुकुट जैसे शिरोभूषण), गले मे ग्रैवेयक और कचुकी वस्त्रो को धारण किये हुए अनेक प्रकार के मणि–रत्नो के आभूषणो से शोभित सुन्दर अग–प्रत्यगो वाली चन्द्रमुखी, चन्द्र के समान ललाट वाली, चन्द्रमा से भी अधिक सौम्य दिखाई देने वाली, उल्का के समान चमकती, शृगार के घर के समान चारु–सुन्दर वेश वाली, हँसने–बोलने आदि मे पटु, नृत्य करने के लिए तत्पर एक सौ आठ देवकुमारियाँ निकली।

76. Thereafter Suryabh Dev stretched his left arm which was wearing ornaments studded with many types of gems. It was long and well-built.

He emanated with fluid molecules one hundred eight fairies, who were expert in talking, dancing and creating humour. They were identical in physical outlook, complexion, age, beauty youth-like qualities and were wearing same type of ornaments and dancing apparel. They were having vermillion mark on forehead, the head ornament, the necklace, the bodice and ornaments studded with gems and jewels on various parts of their body. They were having moon-like face and forehead and were looking more

attractive than the moon. They were shining like sparks of fire. They were dressed beautifully like a bride.

वाद्यो और वाद्यवादकों की रचना

७७. तए णं से सूरियाभे देवे अट्ठसयं संखाणं विउव्वति। अट्ठसयं संखवायाणं विउव्वइ; अ. सिंगाणं वि., अ. सिंगवायाणं वि., अ. संखियाणं वि., अ. सखियवायाणं वि., अ. खरमुहीणं वि., अ. खरमुहिवायाणं वि., अ. पेयाणं वि., अ. पेयावायगाणं वि., अ. पीरिपीरियाणं वि., अ. पीरिपीरियावायगाणं विउव्वति।

एवमाइयाइं एगूणपण्णं आउज्जविहाणाइं विउव्वइ।

अ. पद से 'अट्ठसयं' शब्द का संकेत किया है तथा वि. पद 'विउव्वति' शब्द का बोधक है।

७७. तत्पश्चात् उस सूर्याभदेव ने एक सौ आठ शखो की और एक सौ आठ शखवादको की विकुर्वणा की। इसी प्रकार से एक सौ आठ-एक सौ आठ शृंगो-रणसिगो और उनके बजाने वालो की, शंखिकाओ (छोटे शखों) और उनके वादको की, खरमुखियो और उनके वादको की, पेयों (नगाडों) और उनके वादको की, पिरिपिरिकाओ और उनके वादको की विकुर्वणा की। इस तरह कुल मिलाकर उनचास प्रकार के वाद्यों और उनके बजाने वालों की विकुर्वणा की।

CREATION OF MUSICIANS AND MUSICAL INSTRUMENTS

77. Thereafter Suryabh Dev created one hundred eight conches and conch blowers, one hundred eight horns and horn blowers, one hundred eight small conches and their blowers, one hundred eight musical instruments (Kharmuheenam) and their players, the drums and the drummers, one hundred eight special music instruments (Piripirikas) and their players Thus he created forty nine types of musical instruments and the musicians for each of them.

विवेचन-प्रस्तुत सूत्र मे पिरिपिरिका पर्यन्त वाद्यो के नामो का उल्लेख है। शेष के नाम यथास्थान आगे के सूत्रों मे आये हैं वे इस प्रकार है-

(१) शंख, (२) शृग (रणसिगा), (३) शखिका (छोटे शख), (४) खरमुखी, (५) पेया (नगाडा), (६) पिरिपिरिका, (७) पणव-ढोल, (८) पटह-नगाडा, (९) भंभा, (१०) होरम्भ, (११) भेरी, (१२) झालर, (१३) दुन्दुभि, (१४) मुरज, (१५) मृदग, (१६) नन्दीमृदग, (१७) आलिग,

(१८) कुस्तुंबा, (१९) गोमुखी, (२०) मादला, (२१) वीणा, (२२) विपंची, (२३) वल्लकी, (२४) षड्भ्रामरी वीणा, (२५) भ्रामरी वीणा, (२६) वध्वीसा, (२७) परिवादिनी वीणा, (२८) सुघोष घंटा, (२९) नन्दीघोष घटा, (३०) सौ तार की वीणा, (३१) काछवी वीणा, (३२) चित्र वीणा, (३३) आमोट, (३४) झझा, (३५) नकुल, (३६) तूण, (३७) तुंब वीणा–तम्बूरा, (३८) मुकुन्द–मुरज सरीखा एक वाद्य विशेष, (३९) हुडुक्क, (४०) विचिक्की, (४१) करटी, (४२) डिंडिम, (४३) किणिक, (४४) कडब, (४५) दर्दर, (४६) दर्दरिका, (४७) कलशिका, (४८) मडक्क, (४९) तल, (५०) ताल, (५१) कास्य ताल, (५२) रिंगरिसिका, (५३) लत्तिका, (५४) मकरिका, (५५) शिशुमारिका, (५६) वाली, (५७) वेणु, (५८) परिली, (५९) बद्धक।

यद्यपि मूल सूत्र पाठ में वाद्यों की सख्या उनचास बताई है, परन्तु गणना करने पर उनकी संख्या उनसठ होती है। टीकाकार ने इसका समाधान करते हुए लिखा है–"इन वाद्यो के मूल भेद तो उनचास ही है। शेष उनके अवान्तर भेद है।"

ऊपर दिये गये वाद्य नामो मे से कुछ एक के नाम स्पष्ट ज्ञात नही होते है कि वर्तमान मे उनकी क्या संज्ञा है? टीकाकार आचार्य ने भी लोकगम्य कहकर इनकी व्याख्या नही की है।

इन वाद्यो के नामो का उल्लेख आगम साहित्य मे अनेक स्थानो पर मिलता है। जैसे जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति (विजयदेव प्रकरण) सूत्रकृताग आदि तथा शार्गधर के सगीत रत्नाकर व भरत नाट्यम् मे व महाभारत मे भी अनेक प्रकार के वाद्यो का वर्णन मिलता है। कल्याण मासिक के हिन्दू सस्कृति अंक में भी इन वाद्यो के विषय मे अच्छी जानकारी दी गई है। इस वर्णन से पता चलता है कि प्राचीनकाल मे भारत मे सगीत एव नृत्यकला बहुत उच्च्य-स्तर पर विकसित थी और अनेक प्रकार के वाद्य यत्रो का निर्माण करने मे यहाँ के कारीगर सिद्धहस्त थे।

Elaboration—In the present aphorism, the names of musical instruments upto Pirpirika have been mentioned. The names of other musical instruments have been mentioned at their respective places in other aphorism They are as under—

(1) Conch, (2) Horn, (3) Small conch, (4) Kharmukhi, (5) Drum, (6) Bamboo flute, (7) Small drum, (8) Pateh, (9) Dhaphali (Bhambha), (10) Horambh, (11) Drum (Bheri), (12) Jhalar (a musical instrument narrow in the middle but flat and round at the two ends), (13) Dundubhi (a big drum), (14) Muraj, (15) Mridang (drum), (16) Nandi-mridang (a kind of drum), (17) Tabor (Aaling), (18) Kutumb (Harmonium like), (19) Wind instrument (Gomukhi), (20) Maadala, (21) Lute, (22) Vipanchi (stringed musical instrument), (23) Vallaki (lute type), (24) Shat-bhramari, (25) Bhramari, (26) Vadhveesa, (27) Parivadini (lutes), (28) Sughosh, (29) Nandighosh bells, (30) Hundred stringed lute, (31) Kachhavi, (32) Guitar (Chitt), (33) Aamot, (34) Jhanjha, (35) Nakul, (36) Toon, (37) Tamboora, (38) Muraj, (39) Huhukk, (40) Vichikki (drums),

(41) Kartı, (42) Dındım (small drum), (43) Kınık, (44) Kadamb, (45) Dardar, (46) Dardrıka, (47) Kalashıka, (48) Madakk, (49) Tal, (50) Taal (cymbals), (51) Kansya Taal, (52) Rıngrısıka, (53) Lattıka (cymbals). (54), Makrika, (55) Shishumarıka, (56) Valı, (57) Venu, (58) Parili, (59) Vadhhak

In the aphorism the musical ınstruments are mentıoned of forty nine types. But on actual counting theır number ıs fifty nıne. The commentator has resolved thıs dıfference by poıntıng out that "Basıcally they are of forty nıne types and the remaınıng are sub-types "

Out of the above mentıoned names It ıs not known about of some of them what ınstruments represent them at present The commentator ıs also sılent on thıs issue

The names of these musıcal ınstruments appear at several places ın the scrıptures (Agam) for ınstance ın Vıjay Dev chapter of Jambu Dveep Prajnaptı, ın Sutrakrıtanga and others Many types of musıcal ınstruments find mentıon ın Sangeet Ratnakar by Shaar-gandhar, ın Bharat Natyam and ın Mahabharat. A good and valuable ınformation about such musıcal ınstruments ıs avaılable ın the ıssue of Hındu Culture of Kalyan—a monthly magazıne. Thıs descrıptıon ındıcates that the knowledge ın the field of musıc and dance was of a hıgh order and very much developed ın ancıent Indıa Further the experts then were well traıned ın preparıng musical ınstruments of varıous types

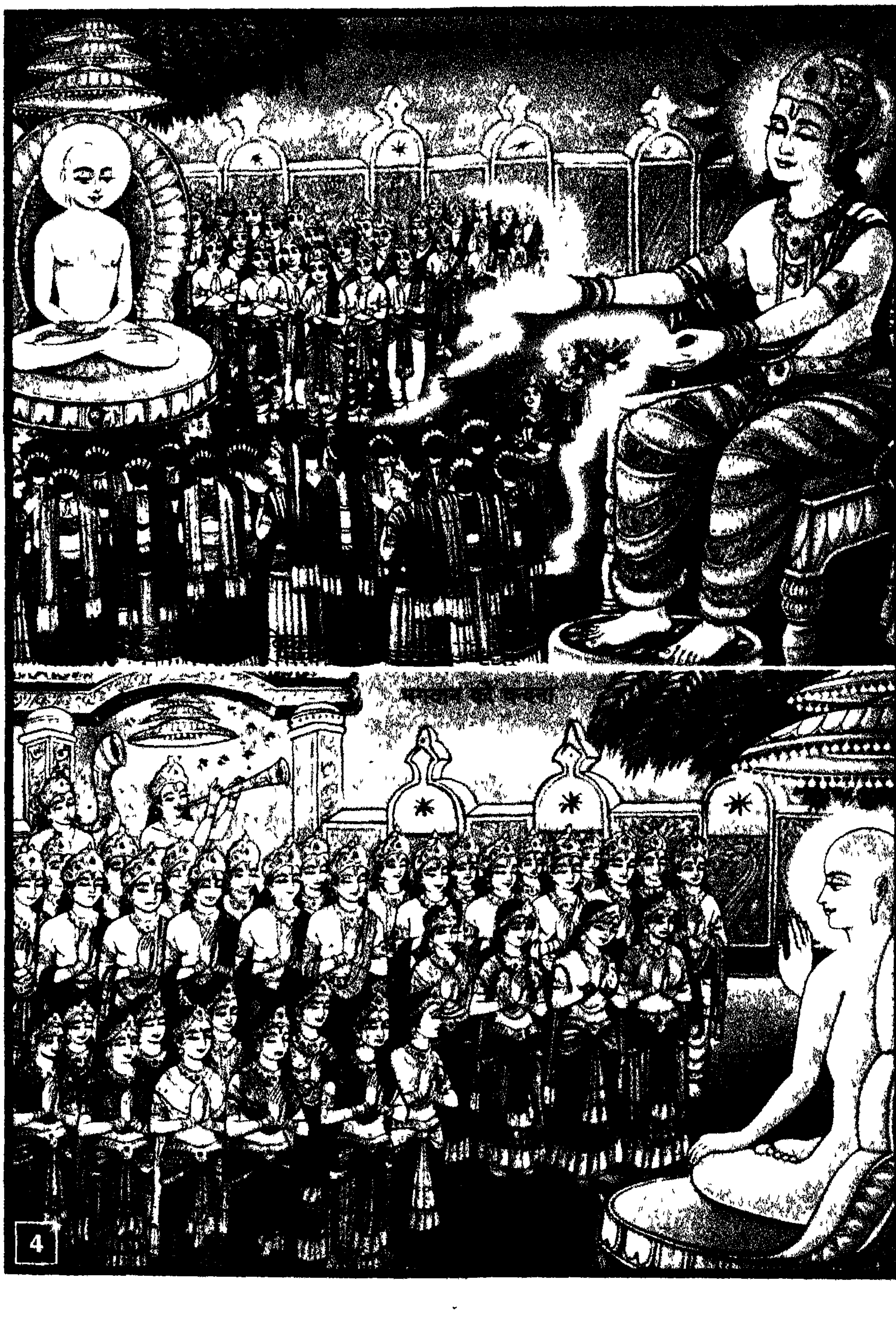
सूर्याभदेव द्वारा नृत्य–गान–वादन का आदेश

७८. तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारियाओ य सद्दावेति।

तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारीओ य सूरियाभेणं देवेणं सद्दाविया समाणा हट्ठ जाव जेणेव सूरियाभे देवे तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छित्ता सूरियाभं देवं करयलपरिग्गहियं जाव वद्धावित्ता एवं वयासी–'संदिसंतु णं देवाणुप्पिया ! जं अम्हेंहि कायव्वं।'

७८. तदुपरान्त सूर्याभदेव ने उन देवकुमारो तथा देवकुमारियों को अपने पास बुलाया।

वे देवकुमार और देवकुमारियाँ हर्षित होकर यावत् सूर्याभदेव के पास आये और दोनो हाथ जोडकर अभिनन्दन कर सूर्याभदेव से विनयपूर्वक बोले–"हे देवानुप्रिय ! हमें जो करना है, उसकी आज्ञा दीजिये।"


4

चित्र परिचय-४

Illustration No. 4

समवसरण में नाट्य-प्रदर्शन

श्रमण भगवान महावीर की धर्मदेशना सुनने के पश्चात् सूर्याभदेव ने निवेदन किया- 'भन्ते ! मैं आपकी भक्तिवश गौतमादि श्रमणो के समक्ष अपनी दिव्य देवऋद्धि तथा बत्तीस प्रकार की नाट्यकला का प्रदर्शन करना चाहता हूँ।'

भगवान मौन रहे। मौन को स्वीकृति मानकर भगवान के सम्मुख एक सिंहासन पर बैठकर अपनी दाहिनी भुजा फैलाकर एक सौ आठ देव कुमार निकाले। फिर बायीं भुजा से एक सौ आठ देव कुमारियाँ निकाली। सभी एक समान रूप-लावण्य शोभायुक्त थीं।

उसके पश्चात् नृत्य गायन वादित्र मे उपयोगी विविध उपकरण आदि की विकुर्वणा करके देव कुमारो व देव कुमारियो को आज्ञा दी 'भगवान महावीर तथा गौतमादि श्रमण निर्ग्रन्थो को तीन प्रदक्षिणायुक्त वन्दना करके बत्तीस प्रकार की नाट्यकला का प्रदर्शन करो।

आज्ञा पाकर सभी देव कुमार एव देव कुमारियाँ तीन बार झुककर फिर सीधे खडे होकर भगवान महावीर तथा श्रमणो को वन्दना करते है।

-सूत्र ७२-८१ पृष्ठ ७१-८१

THEATRICAL PERFORMANCE IN THE SAMAVASARAN

After listening to the discourse of Bhagavan Mahavir, Suryabh Dev said—"Bhante ! I wish to exhibit before Gautam and other saints the celestial wealth and thirty two types of theatrical performances "

Bhagavan remained silent Taking his silence to be his consent, Suryabh Dev sat on a throne facing Bhagavan, extended his right arm and produced one hundred and eight young gods He then extended his left arm and produced one hundred and eight divine damsel's They were all equally beautiful and charming

Thereafter he created a variety of musical instruments and instructed the young gods and damsels—"Pay homage to Bhagavan Mahavir, Gautam and other Shramans after going around them three times and then present thirty two types of performances "

At this command all the young gods and damsels bow and get straight three times and offer salutations to Bhagavan Mahavir and the Shramans

—Sutras 72-81, p 71-81

ORDERS OF SURYABH DEV FOR DANCE, SINGING AND MUSIC

78. Thereafter Suryabh Dev called the young gods and goddesses.

The gods and goddesses came to him cheerfully. They folded their hands humbly in his honour and sought his orders for assigning than their duties.

७९. तए णं से सूरियाभे देवे ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारीओ य एवं वयासी–

गच्छह णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! समणं भगवंतं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण–पयाहिणं करेह, करित्ता वंदह नमंसह, वंदित्ता नमंसित्ता गोयमाइयाणं समणाणं निग्गंथाणं तं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुतिं दिव्वं देवाणुभावं, दिव्वं बत्तीसइबद्धं णट्टविहिं उवदंसेह, उवदंसित्ता खिप्पामेव एयमाणत्तिय।

७९. तब सूर्याभदेव ने उन देवकुमारों और देवकुमारियों से इस प्रकार कहा–

"हे देवानुप्रियो ! तुम सभी श्रमण भगवान महावीर के पास जाओ और उनकी आदक्षिण-प्रदक्षिणा करो। वन्दन-नमस्कार करो। वन्दन–नमस्कार करके गौतमादि श्रमण निर्ग्रन्थो के समक्ष दिव्य देवऋद्धि, दिव्य देवद्युति, दिव्य देवानुभाव वाली बत्तीस प्रकार की दिव्य नाट्यविधि का प्रदर्शन करो। शीघ्र ही मेरी इस आज्ञा का पालन कर मुझे सूचित करो।"

79 Then Suryabh Dev addressed them as under—

"O the blessed ! All of you go to Shraman Bhagavan Mahavir, move around him in his honour, bow to him and thereafter present thirty two types of celestial dances fully exhibiting celestial wealth and grace in the presence of Gautam and other saints (Nirgranths). After executing these orders, you inform me."

८०. तए णं ते बहवे देवकुमारा देवकुमारीओ य सूरियाभेणं देवेणं एवं वुत्ता समाणा हट्ठ जाव करयल जाव पडिसुणंति।

पडिसुणित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता समणं भगवंतं महावीरं जाव नमंसित्ता जेणेव गोयमादिया समणा निग्गंथा तेणेव उवागच्छंति।

८०. तब वे सभी देवकुमार और देवकुमारियाँ सूर्याभदेव की आज्ञा को सुनकर हर्षित हुए। दोनो ने हाथ जोडकर आज्ञा को स्वीकार किया।

स्वीकार करके श्रमण भगवान महावीर के पास आये। आकर श्रमण भगवान महावीर को नमस्कार करके जहाँ गौतम आदि श्रमण निर्ग्रन्थ विराजमान थे, वहाँ आये।

80. All the gods and goddesses felt pleased at this command and accepted the orders with folded hands.

Thereafter they came to Bhagavan Mahavir, bowed to him and arrived at the place where Gautam was seated.

८१. तए णं ते बहबे देवकुमारा देवकुमारीओ य समामेव समोसरणं करेंति, करित्ता समामेव अवणमंति अवणमित्ता समामेव उन्नमंति।

एवं सहियामेव ओनमंति एवं सहियामेव उन्नमंति। सहियामेव उण्णमित्ता संगयामेव ओनमंति संगयामेव उन्नमंति उन्नमित्ता थिमियामेव ओणमंति थिमियामेव उन्नमंति।

समामेव पसरंति पसरित्ता, समामेव आउज्जविहाणाइं गेण्हंति। समामेव पवाएंसु पगाइंसु पणच्चिंसु।

८१. इसके पश्चात् वे सभी देवकुमार और देवकुमारियाँ पंक्तिबद्ध होकर एक साथ मिले। मिलकर सब एक साथ नीचे नमे और एक साथ ही अपना मस्तक ऊपर कर सीधे खडे हुए।

इसी क्रम से पुन सभी एक साथ मिलकर नीचे नमे और फिर मस्तक ऊँचा कर सीधे खडे हुए। इसी प्रकार सीधे खडे होकर (पुनः तीसरी बार) नीचे नमे और फिर सीधे खडे हुए। खडे होकर धीमे से कुछ नमे और फिर सीधे खडे हुए।

फिर खडे होकर एक साथ अलग-अलग फैल गये और फिर यथायोग्य नृत्य-गान आदि के उपकरणो, वाद्यो को लेकर एक साथ ही बजाने लगे, एक साथ ही गाने लगे और एक साथ नृत्य करने लगे।

81. Thereafter all of them stood in a row, bowed collectively in respect and then raised their heads and stood erect.

They repeated this benediction twice.

Thereafter, while standing, they moved apart, took their respective musical instruments and started playing them in symphany. They also started singing and dancing together.

नृत्य-गान आदि का स्वरूप

८२. किं ते ?

उरेणं मंदं सिरेण तारं कंठेण वितारं तिविहं तिसमयरेयग–रइयं।

गुंजाऽवंक–कुहरोवगूढं रत्तं तिठाण–करणसुद्धं सकुहर–गुंजंत वंस–तंती–तल–ताल–लय–गहसुसंपउत्तं महुरं समं सललियं मणोहरं मिउरिभियपयसंचारं सुरइ सुणइ वरचारुरूवं दिव्वं णट्टसज्जं गेयं पगीया वि होत्था।

८२. उनका संगीत किस प्रकार का था ?

(उनका संगीत) हृदयस्थल से निकलते हुए आदि में मन्द–मन्द मूर्धा में आने पर तार–उच्च स्वर वाला और कठ स्थान मे विशेष तार स्वर (उच्चतर ध्वनि) वाला हो गया था। इस तरह त्रिस्थान–समुद्गत (तीन स्थानों से उठने वाला) वह सगीत त्रिसमय रेचक से रचित होने पर त्रिविध रूप था।

संगीत की मधुर प्रतिध्वनि से समस्त प्रेक्षागृह मण्डप गूँजने लगता था। गेय राग–रागिनी के अनुरूप था। त्रिस्थान त्रिकरण से शुद्ध था, अर्थात् उर, सिर एवं कण्ठ में स्वर संचार रूप क्रिया से शुद्ध था। गूँजती हुई बाँसुरी और वीणा के स्वरो से एक रूप मिला हुआ था। एक–दूसरे की बजती हथेली (ताल) के स्वर का अनुसरण करता था। मुरज और कंशिका आदि वाद्यो की झकारो तथा नर्तको के पादक्षेप–ठुमक से बराबर मेल खाता था। वीणा के लय के अनुरूप था। वीणा आदि वाद्य धुनो का अनुकरण करने वाला था। कोयल की कुहू–कुहू जैसा मधुर तथा सर्व प्रकार से सम, सललित, मनोहर, मृदु, रिभित पद–सचार से युक्त, श्रोताओ को रतिकर, सुख देने वाला ऐसा उन नर्तको का नृत्ययुक्त विशिष्ट प्रकार का उत्तमोत्तम सगीत था।

DESCRIPTION OF DANCE AND MUSIC

82 Of what type was that music ?

Their music, starting from the heart was at a very low pitch in the beginning, of high pitch when it reached the head and still higher when it arrived at the throat. Thus the music was arising from three parts in the body. That music was in three steps and so it was three-tier.

The entire hall meant for spectators started echoing with sweet music. The tone was in accordance with the song and the musical instruments. It was purified as it was arising from three places namely heart, head and throat in respective order. It was in harmony with the flute and the sitar (stringed instrument) being

played. It was following the sound of striking palms of the hands. It was in harmony with the music of Muraj and Kanshika—the musical instruments. It was in line with Veena—the stringed musical instrument. It was in line with movement of the feet and their striking sound. It was sweet like the coo-coo sound of a nightingale. It was completely harmonious, sweet, pleasant, soft, systematic, attractive to the listeners. The music was of the excellent grade and was in line with the performance of the dancers.

८३. किं ते ?

उद्धमंताणं संखाणं सिंगाणं संखियाणं खरमुहीणं पेयाणं पिरिपिरियाणं, आहम्मंताणं पणवाणं पडहाणं, अप्फालिज्जमाणाणं भंभाणं होरंभाणं, तालिज्जताणं भेरीणं झल्लरीणं दुंदुहीणं, आलवंताणं मुरयाणं मुइगाणं नंदीमुइंगाणं, उत्तालिज्जंताणं आलिंगाणं कुतुंबाणं गोमुहीणं मद्दलाणं, मुच्छिज्जंताणं वीणाणं विपंचीणं वल्लकीणं।

कुट्टिज्जंताणं महंतीणं कच्छभीणं चित्तवीणाणं, सारिज्जंताणं बद्धीसाणं सुघोसाणं नंदिघोसाणं, फुट्टिज्जंतीणं भामरीणं छब्भामरीणं परिवायणीणं, छिप्पंतीणं तूणाणं तुंबवीणाणं।

आमोडिज्जंताणं आमोताणं झंझाणं नउलाणं, अच्छिज्जंतीणं मुगुंदाणं हुडुक्कीणं विचिक्कीणं, वाइज्जताणं करडाणं डिंडिमाणं किणियाणं कडम्बाणं।

ताडिज्जंताणं दद्दरिगाणं दद्दरगाणं कुतुंबाणं कलसियाणं मड्डयाणं, आताडिज्जंताणं तलाणं तालाणं कंसतालाणं, घट्टिज्जंताणं रिंगिरिसियाणं लत्तियाणं मगरियाणं सुंसुमारियाणं, फूमिज्जंताणं वंसाणं वेलूणं वालीणं परिल्लीणं बद्धगाणं।

८३. वे क्या करते थे ?

(मधुर सगीत–गान के साथ–साथ नृत्य करने वाले उन देवकुमार और कुमारिकाओ में से) शंख, शृग, शखिका, खरमुखी, पेया, पिरिपिरिका के वादक उन्हें उद्धमानित करते–फूँकते; पणव और पटह पर आघात करते, भभा और होरभ पर टकार मारते, भेरी, झल्लरी और दुन्दुभि को ताडित करते (बजाते), मुरज, मृदंग और नन्दीमृदंग का आलाप लेते, आलिग, कुस्तुम्ब, गोमुखी और मादल पर उत्ताडन करते, वीणा, विपची और वल्लकी को मूर्च्छित करते।

महती वीणा (सौ तार की वीणा), कच्छभी वीणा और चित्र वीणा को कूटते; बद्धीस, सुघोष, नन्दीघोष का सारण करते–भामरी–षड् भामरी और परिवादनी वीणा का स्फोटन करते, तूण, तुम्ब वीणा का स्पर्श करते।

आमोट, झांझ, कुम्भ और नकुल को आमोटते–परस्पर टकराते–खनखनाते, मृदंग, हुडुक्क, विचिक्की को धीमे से छूते; करड़, डिंडिम, किणित और कडम्ब को बजाते।

दर्दरक, दर्दरिका, कुतुंबरु, कलशिका, मड्ड को जोर–जोर से ताडित करते; तल, ताल, कांस्य ताल को धीरे से ताडित करते; रिंगिरिसिका, लत्तिका, मकरिका और शिशुमारिका का घट्टन करते (परस्पर भिड़ाते), वशी, वेणु, वाली, परिल्ली तथा बद्धकों को फूँकते थे। इस प्रकार वे सभी अपने–अपने वाद्यों को बजा रहे थे।

83. What were they doing ?

(Out of the gods and goddesses, those who were dancing in tune with the sweet music.) There were those who were blowing conch, horn, small conch, kharmukhi, drum, bamboo flute; some were beating big drums and some were playing drums of buffoon, beating dhafali; some were beating drum (bheri), jhalar (musical instrument) narrow in the middle, dundubhi (a big drum), muraj, mridang, nandi-mridang (a kind of drum); some were playing on tabor, kurumb, wind instruments, maadala; some were attached to lute, stringed instrument (vipanchi), lute like instrument (vallaki).

Some were playing lute of hundred strings (mahati veena), a special type of lute (kachhabhi), a wonderful guitar with six strings (chitt veena); some were being playing special type of musical instrument (baddheesa), emitting the sweet sound (sughosh), the deep sound of various types of lute namely bhamari—shat bhamari, parivadini veena, toon and tumb veena.

Some were twisting a little aamot, jhanjh, pitcher and nakul; some were slightly touching various types of drums namely mridang, huhukk, vichikki; some were playing karad, small drum, kinit and kadamb.

Some were beating dardarak, dardarika, kutumbaru, kalashika and mudd with force; some were playing softly tal, cymbals (taal), bronze cymbals (kansya taal); some were softly striking ringi-risika, cymbals (lattika), magriya, crocodile shaped instrument

(shishumarika); some were blowing flutes of various types namely vansha, venu, valee, parilli. Thus all of them were playing their respective instruments.

८४. तए णं से दिव्वे गीए, दिव्वे वाइए, दिव्वे नट्टे एवं अब्भुए सिंगारे उराले मणुन्ने मणहरे गीए मणहरे नट्टे मणहरे वाइए उप्पिंजलभूए कहकहभूए दिव्वे देवरमणे पवत्ते या वि होत्था।

८४. इस प्रकार वाद्यो के साथ वह दिव्य सगीत, दिव्य वादन और दिव्य नृत्य आश्चर्यकारी–अद्‌भुत, शृंगार रस से परिपूर्ण विशिष्ट गुणयुक्त होने से दर्शकों के मनोनुकूल था। वह मनमोहक गीत, मनोहर नृत्य और मनोहर वाद्य–वादन सभी के चित्त मे स्पर्धा–ईर्ष्या उत्पन्न कर रहा था। दर्शकों के कहकहो–वाह–वाह के कोलाहल से नाट्‌यशाला गूँज रही थी। इस प्रकार वे सभी देवकुमार और कुमारिकाएँ दिव्य देव क्रीडा मे प्रवृत्त हो रहे थे।

84. Thus the grand music, instrumental and vocal and the dance was full of ecstatic dramatic skill and was in accordance with the taste of spectators That unique performance was producing a feeling of competition and even jealousy in the entire audience. The theatre was resounding with the slogans of the audience in applause of the performance. Thus all the dancing gods and goddesses were engaged in celestial unique performance of their skill.

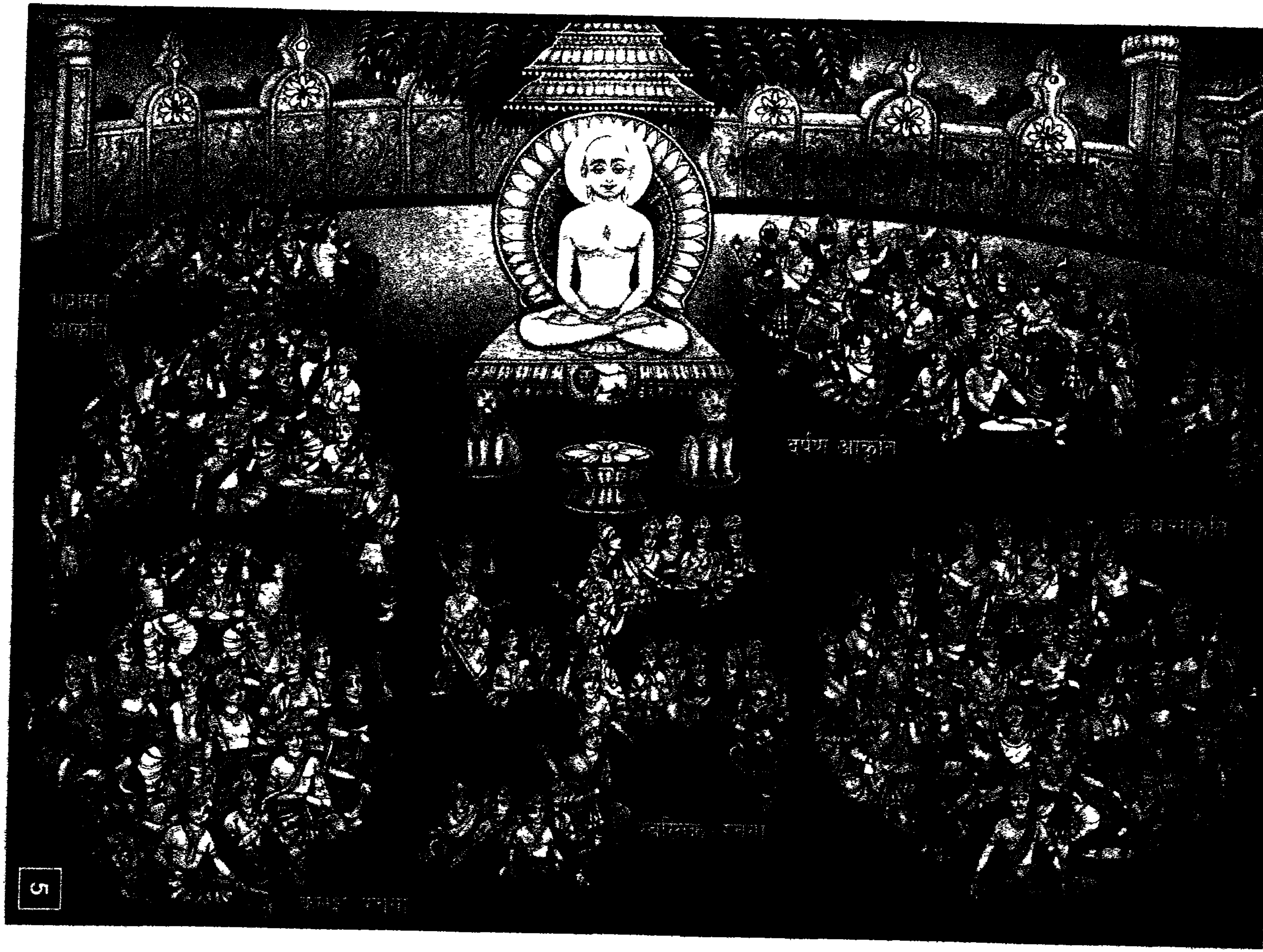
नाट्‌याभिनयो का प्रदर्शन

८५. तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स सोत्थियसिरिवच्छ–नंदियावत्त–वद्धमाणग–भद्दासण–कलस–मच्छ दप्पण मंगल्लभत्तिचित्तं णामं दिव्वं नट्टविधिं उवदंसेंति।

८५. तत्पश्चात् उन देवकुमारो और कुमारिकाओ ने श्रमण भगवान महावीर एव गौतमादि श्रमण निर्ग्रन्थो के समक्ष–(१) स्वस्तिक, (२) श्रीवत्स, (३) नन्दावर्त, (४) वर्धमानक, (५) भद्रासन, (६) कलश, (७) मत्स्य, और (८) दर्पण, इन आठ मंगल द्रव्यों का आकार बनाकर दिव्य अभिनय किया।

PRESENTATION OF DRAMATIC SKILLS

85. Thereafter the gods and goddesses made sketches of eight auspicious things namely—(1) svastik (an angular auspicious sign),



5

चित्र परिचय-५

Illustration No. 5

अष्ट मंगलाकृति में नाट्य-रचना

सूर्याभदेव की आज्ञानुसार देव कुमार एव देव कुमारियाँ हाथो मे विविध प्रकार के वाद्य यत्र लेकर गाते, बजाते, थिरकते हुए अनेक प्रकार के नृत्य नाटिकाएँ रचाते है। फिर अष्ट मगल की आकृति बनाकर अत्यन्त रम्य--मनमोहक दिव्य अभिनय करने लगते है। कुछ भद्रासन की आकृति मे, कुछ कलशाकृति मे, कुछ स्वस्तिकाकृति मे, कुछ श्रीवत्स की आकृति मे तो कुछ दर्पण आदि अन्य आकृतियो मे अद्भुत शरीर लाघव दिखाते हुए अभिनय करते है।

—सूत्र ८१-८५, पृष्ठ ८२-८७

PERFORMANCE IN FORMATION OF EIGHT AUSPICIOUS SYMBOLS

Following the order of Suryabh Dev the young gods and damsels take up musical instruments in their hands and present a variety of dance, dramas, playing the instruments and dancing After this they present spellbinding performance information of eight auspicious symbols Some of them forming into comfortable seat, others into urn, swastika, shrivatsa, mirror and other shapes present theatrical performances with astonishing skill of body movement

—Sutras 81-85, p 82-87

(2) srivats, (3) nandavart (an auspicious mark with nine angles), (4) vardhmanag, (5) bhadrasan (an auspicious seat), (6) kalash (pitcher), (7) matsya (fish), and (8) darpan (mirror) and danced accordingly.

८६. तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारीओ य सममेव समोसरणं करेंति करित्ता तं चेव भाणियव्वं जाव दिव्वे देवरमणे पवत्ते या वि होत्था।

८६. इसके पश्चात् नाट्यविधि दिखाने के लिए वे देवकुमार और देवकुमारियाँ पुनः एकत्रित हुईं और एकत्रित होने से लेकर दिव्य देवरमण में प्रवृत्त होने पर्यन्त का पूर्वोक्त सभी वर्णन सूत्र ८१ के अनुसार जानना चाहिए।

86. Thereafter they again gathered to exhibit their dancing skill (Further description is similar to that in Aphorism 81).

८७. तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स आवड–पच्चावड–सेढि–पसेढि–सोत्थिय–पूसमाणव–वद्धमाणग–मच्छण्ड–मगरंड–जार–मार–फुल्लावलि–पउमपत्त–सागर–तरंग–वसंतलता–पउमलयभत्तिचित्तं णाम दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति।

८७. तदनन्तर उन देवकुमारो और देवकुमारियों ने श्रमण भगवान महावीर एवं गौतमादि श्रमण निर्ग्रन्थों के सामने आवर्त, प्रत्यावर्त, श्रेणि, प्रश्रेणि, स्वस्तिक, सौवस्तिक, पुष्यमाणवक, वर्धमानक, मत्स्याण्डक, मकराण्डक, जार, मार, पुष्पावलि, पद्मपत्र, सागर, तरग, वासन्तीलता और पद्मलता के आकार की रचना करके दिव्य नाट्यविधि का अभिनय किया।

87 Thereafter, the dancing gods and goddesses stood in the shape of a circle, a circle in front of another, a row, a row in front of another row, an angular figure (svastik), srivats, poos-manag, a person lifting another on his shoulders (vaddh-manag), egg of a fish (machhand), egg of a crocodile (makarand), jaar, cupid (maar), a row of blooming flowers (phullavali), a lotus leaf, an ocean, a wave of the ocean, a spring creeper, a lotus creeper. Then they danced accordingly in front of Bhagavan Mahavir, Gautam and other saints.

विशेष शब्दार्थ–आवर्त–(चक्राकार घूमना), **प्रत्यावर्त**–(वापस लौटना), **श्रेणि–प्रश्रेणि**–(सीधी पंक्ति, ऊपर-नीचे अनेक सीधी पंक्तियाँ), **मत्स्याण्डक**–(मछली के अण्डे की आकृति), **मकराण्डक**–(मकर के

अण्डे की आकृति), पुष्यमाणवक–जार–मार–मणि विशेष की आकृति। यों विविध प्रकार की आकृतियाँ बनाकर नृत्य करने लगे।

Meanings of certain words—Aavart—To move in a circle; **Pratyavart—** To return to original position, **Shreni—**A straight row; **Pra-shreni—**Many rows one above the other, **Matsyaandak—**Shape of egg of a fish; **Makaraandak—**Shape of crocodile's egg, **Pushya-maanavak-jaar-maar—** Shapes of certain gems, Thus making different shapes, they danced

८८. एवं च एक्किक्किकयाए णट्टविहीए समोसरणादिया एसा वत्तव्वया जाव दिव्वे देवरमणे पवत्ते या वि होत्था।

८८. इसी प्रकार प्रत्येक नाट्यविधि को दिखाने के पश्चात् दूसरी प्रारम्भ करने के बीच में उन देवकुमारो और कुमारियो के एक साथ मिलने, झुकने आदि दिव्य देवक्रीडा का सम्पूर्ण कथन (सूत्र ८१ के अनुसार) कहना चाहिए।

88. Similarly after every dancing performance and before starting the next performance, the description relating to those gods and goddesses regarding their getting together bowing to Bhagavan and their celestial acrobats be considered similar to the one mentioned in Aphorism 81

८९. तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स ईहामिअ–उसभ–तुरग–नर–मगर–विहग–वालग–किन्नर–रुरु–सरभ–चमर–कुंजर–वणलय–पउमलयभत्तिचित्तं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति।

८९. तदनन्तर उन सभी देवकुमारो और देवकुमारियो ने श्रमण भगवान के समक्ष ईहामृग, वृषभ, तुरग–अश्व, नर–मानव, मगर, विहग–पक्षी, व्याल–सर्प, किन्नर, रुरु, सरभ, चमर, कुजर, वनलता और पद्मलता की आकृति, रचना, रूप दिव्य नाट्यविधि का अभिनय दिखाया।

89. Thereafter all the said gods and goddesses, turned into the shapes of deer, bullock, horse, man, crocodile, bird, snake, kinnar, ruru, deer, rhinoceros, chamar deer (resembling a buffalo), an elephant, a wild creeper and a lotus creeper respectively. They performed their dance in front of Bhagavan Mahavir in that shape, creating that shape and thus exhibited their unique dancing skill.

९०. एगतो वंकं एगओ चक्कवालं। दुहओ चक्कवालं चक्कद्धचक्कवालं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति।

९०. इसके बाद एकतोवक्र-(जिस नाटक में एक ही दिशा में धनुषाकार श्रेणी बनाई जाती है), एकतश्चक्रवाल-(एक ही दिशा मे चक्राकार श्रेणी बने), द्विघातश्चक्रवाल-(परस्पर सम्मुख दो दिशाओ में गोल चक्र बने) ऐसी चक्रार्ध-चक्रवाल नामक दिव्य नाट्यविधि का अभिनय किया।

90. Thereafter they performed dance in which bow-like shape is made on one side, a dance in which circular shape is made in one direction, a dance in which two circles are made in two sides facing each other, a dance in which a semi-circle is formed, a dance in which shape of wheel of a cart is depicted.

९१. चंदावलिपविभत्तिं च सूरावलिपविभत्तिं च वलयावलिपविभत्तिं च हंसावलिप. च एगावलिप. च तारावलिप. च मुत्तावलिप. च कणगावलिप. च रयणावलिप. च णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति। ('प' से 'पविभत्तिं' शब्द समझे)

९१. इसी प्रकार अनुक्रम से उन्होने चन्द्रावलि, सूर्यावलि (चन्द्र-सूर्य मण्डल की आकृति), वलयावलि (गोलाकार), हसावलि (हंसों की पंक्ति), एकावलि (एकावली हार की आकृति), तारावलि (ताराओ की आकृति), मुक्तावलि, कनकावलि और रत्नावलि (इन विशिष्ट प्रकारो के हारो की आकृति) की उत्कृष्ट-विशिष्ट रचनाओ से युक्त दिव्य नाट्यविधि का अभिनय प्रदर्शित किया।

91. Thereafter they created one after the other the shapes in which the particular position of moon, particular position of sun, a circular shape, a row of swans, a garland, a row of stars, a garland of pearls, kanakavali, ratnavali garlands are depicted and danced accordingly.

९२. चंदुग्गमणपविभत्तिं च सूरुग्गमणप. च उग्गमणुग्गमणप. च णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति।

९२. तत्पश्चात् उन देवकुमारों और कुमारियो ने उक्त क्रम से चन्द्रोद्गम प्रविभक्ति, सूर्योद्गम प्रविभक्तियुक्त अर्थात् चन्द्रमा और सूर्य के उदय होने की रचना वाली उद्गमनोद्गमन नामक दिव्य नाट्यविधि का प्रदर्शन किया।

92. Thereafter they exhibited their dancing skill depicting the rising moon, the rising sun.

९३. चंदागमणप. च सूरागमणप. च आगमणागमणप. च णामं.... उवदंसेंति।

९३. इसके पश्चात् चन्द्रागमन, सूर्यागमन की रचना वाली चन्द्र-सूर्य आगमन नामक दिव्य नाट्यविधि का अभिनय किया।

93. Thereafter they danced depicting in a unique way the arrival of moon and later the arrival of sun.

९४. चंदावरणप. च सूरावरणप. च आवरणावरणप. णामं उवदंसेंति।

९४. तत्पश्चात् चन्द्रावरण-सूर्यावरण अर्थात् चन्द्रग्रहण और सूर्यग्रहण होने पर (अथवा सूर्य पर बादल छा जाने पर) जगत् और गगनमण्डल मे होने वाले वातावरण की दर्शक आवरणावरण नामक दिव्य नाट्यविधि को प्रदर्शित किया।

94. Thereafter they danced exhibiting the state of environment at the time of lunar eclipse and subsequently all the environment at the time of solar eclipse when the clouds cover the sun.

९५. चंदत्थमणप. च सूरत्थमणप. च अत्थमणऽत्थमणप. णामं उवदंसेंति।

९५. इसके बाद चन्द्र के अस्त होने, सूर्य के अस्त होने की रचना से युक्त अर्थात् चन्द्र और सूर्य के अस्त होने के समय के दृश्य से युक्त अस्तमयन प्रविभक्ति नामक नाट्यविधि का अभिनय किया।

95. Thereafter they depicted in their dance the scene of setting of the moon and later that of setting of the sun

९६. चंदमंडलप. च सूरमंडलप. च नागमंडलप. च जक्खमंडलप. च भूतमंडलप. च रक्खस-महोरग-गन्धव्वमंडलप. च मंडलमंडलप. नामं उवदंसेंति।

९६. तदनन्तर चन्द्रमण्डल, सूर्यमण्डल, नागमण्डल, यक्षमण्डल, भूतमण्डल, राक्षसमण्डल, महोरगमण्डल और गन्धर्वमण्डल की रचना से युक्त अर्थात् इनके मण्डलों के भावों का प्रदर्शक मण्डल प्रविभक्ति नामक नाट्य अभिनय प्रदर्शित किया।

96. Thereafter they depicted in the dances the central idea underlying the lunar system, solar system, the circles of Naag Kumar gods, the circles of Yaksha—a type of demi-gods, circles of Bhoot demi-gods, circles of Rakshas demi-gods, circles of Mahorag and circles of Gandharv demi-gods.

९७. उसभमंडलप. च सीहमंडलप. च हयविलंबियं गयवि. हयविलसियं गयविलसियं मत्तहयविलसियं मत्तगजविलसियं मत्तहयविलंबियं मत्तगयविलंबियं दुतविलंबियं णामं णट्टविहिं उवदंसेंति।

९७. तत्पश्चात् वृषभमण्डल, सिंहमण्डल की ललित गति, अश्व गति और गज की विलम्बित-धीमी गति, अश्व और हस्ती की विलसित गति (मस्ती भरी चाल), मत्त अश्व और मत्त गज की विलसित गति, मत्त अश्व की विलम्बित गति, मत्त हस्ती की विलम्बित गति (विभिन्न पशुओं की भिन्न-भिन्न प्रकार की गति) की दर्शक रचना से युक्त द्रुतविलम्बित (शीघ्र और धीमी) प्रविभक्ति नामक दिव्य नाट्यविधि का प्रदर्शन किया।

97. Thereafter they exhibiting the dramatic performance depicted the slow and fast gait of different types of animals, namely bullock, lion, horse, elephant—their slow motion, their romantic motion, the unbridled gait of horse and elephant by their dance known as Drut-vilambit pravibhakti dance.

९८. सागरपविभत्तिं च नागरप वि. च सागर-नागरप. च णामं उवदंसेंति।

९८. इसके बाद सागर प्रविभक्ति, नगर प्रविभक्ति अर्थात् समुद्र और नगर सम्बन्धी रचना से युक्त सागर-नागर प्रविभक्ति नामक नाट्यविधि का अभिनय किया।

98. Thereafter they performed the dance depicting ocean, city and their division

९९. णंदाप वि. च चंपाप वि. च नन्दा-चंपाप वि. च णामं उवदंसेंति।

९९. तत्पश्चात् नन्दा प्रविभक्ति-नन्दा पुष्करिणी की सुरचना से युक्त, चम्पा प्रविभक्ति-चम्पक वृक्ष की रचना की भाँति नन्दा-चम्पा प्रविभक्ति नामक दिव्य नाट्य का अभिनय दिखाया।

99. Thereafter they in their dance created Nanda Pushkarni (lake) and Champak tree.

१००. मच्छंडाप वि. च मयरंडाप वि. च जारप वि. च मारप वि. च मच्छडा-मयरंडा-जारा-माराप च णामं उवदंसेंति।

१००. तत्पश्चात् मत्स्याण्डक, मकराण्डक, जार, मार की आकृतियों की सुरचना से युक्त मत्स्याण्ड, मकराण्ड, जार, मार प्रविभक्ति नामक दिव्य नाट्यविधि दिखलाई।

100. Thereafter they performed the dance depicting egg of a fish, egg of crocodile, jaar, maar (cupid).

१०१. 'क' त्ति ककारप वि. च, 'ख' त्ति खकारप च, 'ग' त्ति गकारप च, 'घ' त्ति घकारप च, 'ङ' त्ति ङकारप च, ककार-खकार-गकार-घकार-ङकारप. च णामं उवदंसेंति, एवं चकारवग्गो पि टकारवग्गो वि तकारवग्गो वि पकारवग्गो वि।

१०१. तदनन्तर उन देवकुमारों और देवकुमारियो ने क्रमशः 'क' अक्षर की आकृति-रचना करके ककार प्रविभक्ति, 'ख' अक्षर की आकृति-रचना करके खकार प्रविभक्ति, 'ग' अक्षर की आकृति-रचना द्वारा गकार प्रविभक्ति, 'घ' अक्षर के आकार की रचना घकार प्रविभक्ति और 'ङ' अक्षर के आकार की रचना द्वारा ङकार प्रविभक्ति; इस प्रकार ककार, खकार, गकार, घकार, ङकार प्रविभक्ति नाम की दिव्य नाट्यविधियो का प्रदर्शन किया।

इसी तरह से चकार, छकार, जकार, झकार, ञकार की रचना करके चकार वर्ग प्रविभक्ति नामक दिव्य नाट्यविधि का अभिनय दिखाया।

चकार वर्ग के पश्चात् क्रमश. ट, ठ, ड, ढ, ण के आकार की सुरचना द्वारा टकार वर्ग प्रविभक्ति नामक दिव्य नाट्यविधि का प्रदर्शन किया।

अनन्तर अनुक्रम से तकार, थकार, दकार, धकार, नकार की रचना करके तकार वर्ग प्रविभक्ति नामक नाट्यविधि को दिखलाया।

फिर प, फ, ब, भ, म के आकार की रचना करके पकार वर्ग प्रविभक्ति नाम की दिव्य नाट्यविधि का अभिनय दिखाया।

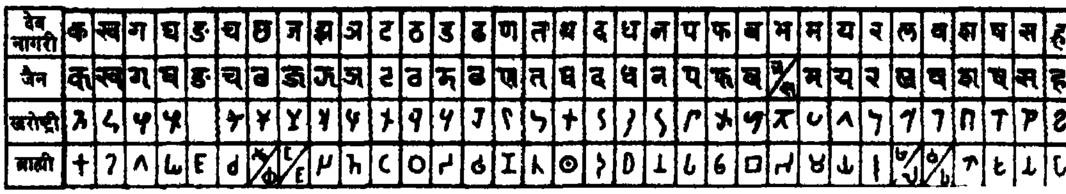
101. Thereafter they danced in the shape of letters of Devanagarı script namely k, kha, ga, gha, anga, then of letters cha, chha, ja, jha, jna; then of letters ta, tha, da, dha, ana; then of letters ta, tha, da, dha, na; then of letters pa, pha, ba, bha, ma.

विवेचन-यहाँ लिपि सम्बन्धी अभिनयो के उल्लेख में ककार से पकार पर्यन्त पाँच वर्गों के २५ अक्षरो के अभिनयों का ही संकेत किया है, उसमे स्वरो तथा य, र, ल, व, श, ष, स, ह, क्ष, त्र, ज्ञ अक्षरो के अभिनयों का उल्लेख नही है। इसका कोई ऐतिहासिक कारण है या अन्य, यह विचारणीय है। अथवा सम्भव है कि देवो की लिपि मे ककार से लेकर पकार तक के अक्षर होते हो जिससे उन्ही का अभिनय प्रदर्शित किया है।

वृत्तिकार का कथन है-इन लिपि सम्बन्धी अभिनयो मे 'क' वगैरह की जो मूल आकृतियाँ ब्राह्मी लिपि में बताई हैं, उन आकृतियों के सदृश अभिनय यहाँ समझना चाहिए। जैसे कि ब्राह्मी लिपि मे 'क' की '+' ऐसी आकृति है, अतएव इस आकृति के अनुरूप स्थित होकर अभिनय करके बताना 'क' की

आकृति का अभिनय कहलायेगा। इसी प्रकार लिपि सम्बन्धी शेष दूसरे सभी अभिनयो के लिए भी समझ लेना चाहिए।

देवनागरी, प्राचीन जैन लिपि तथा ब्राह्मी लिपि के उक्त अक्षरों की आकृति निम्न चित्र मे बताई गई है–



Elaboration—Here there is mention of dances in the shape of 25 consonants only of Devanagari script. There is no mention of vowels and ya, ra, la, va, sha, sha, sa, ha, ksha, tra, jna. Is there any historical background or any other reason for it—it is yet to be found out. It is also possible that in the script used by gods there may be only the said 25 consonants So they exhibited only the said twenty five in their dance.

The commentator has observed that the dances should be understood according to the original shape of these letters in Bhrahmi script. For instance in Brahmi 'k' is written as '+'. So the dance depicting this symbol shall be considered as the dance depicting 'ka'. Same is the case with other letters

The above chart indicates the letters and their counterparts in Devanagari, Jain and Brahmi scripts.

१०२. असोयपल्लवप. च, अंबपल्लवप. च, जंबूपल्लवप. च, कोसंबपल्लवप. च, पल्लवप. च णामं उवदंसेंति।

१०२. तत्पश्चात् अशोकपल्लव (अशोक वृक्ष का पत्ता), आम्रपल्लव, जम्बू (जामुन) पल्लव, कोशाम्रपल्लव इन वृक्षो के पत्तों की आकृति-जैसी रचना करके पल्लव प्रविभक्ति नामक दिव्य नाट्यविधि प्रदर्शित की।

102. Thereafter they performed the dance exhibiting the shapes of leaves of Ashok tree, Mango tree, Jamun tree, Koshamra tree respectively.

१०३. पउमलयाप. जाव सामलयाप. च लयाप. च णामं उवदंसेंति।

१०३. तदनन्तर पद्मलता यावत् नागलता, अशोकलता, चम्पकलता, आम्रलता, वनलता, वासंतीलता, अतिमुक्तकलता और श्यामलता की सुरचना वाला लता प्रविभक्ति नामक नाट्याभिनय प्रदर्शित किया।

103. Thereafter they depicted in their dancing performance creepers of Lotus, Naag, Ashok, Champak, Aamra, Van, Vasanti, Atimuktak and Shyamalata.

१०४. दुयणामं उवदंसेंति। विलंबियं णामं उव.। दुयविलंबियं णामं उव.। अंचियं, रिभियं, अंचियरिभियं, आरभडं, भसोलं आरभड–भसोलं।

उप्पय–निवयपवत्तं, संकुचियं पसारियं रयारइयं भंतं संभंतं णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति।

१०४. इसके पश्चात् अनुक्रम से द्रुत (चचल गति), विलबित (मद गति), द्रुत–विलबित (कभी चपल, कभी मद), अचित (तिरछी गति), रिभित (ध्वनि करते हुए), अंचित–रिभित (तिरछा होकर घोष करते हुए), आरभट (शरीर को मोडते हुए), भसोल और आरभट–भसोल नामक नाट्यविधियो का अभिनय प्रदर्शित किया।

तदनन्तर उत्पात–निपात (ऊपर–नीचे उछलने–कूदने–गिरने), सकुचित–प्रसारित (भय और हर्ष दिखाते हुए शरीर के अंगोपागो को सिकोडना और फैलाना) रयारइय, भ्रान्त और संभ्रान्त सम्बन्धी क्रियाओ विषयक दिव्य नाट्य अभिनयो को दिखाया।

104. Thereafter, in respective order, they performed dances at a fast speed, at slow speed, at fast and slow speed, in slotting direction, dance making sound, dance making sound and turning the body, dance while twisting the body, Bhasol dance, Bhasol dance twisting the body.

Thereafter they performed dances in which there is jumping, falling, exhibiting of fear, of happiness by squeezing and spreading parts of the body and smaller limbs. They also did dance depicting state of doubt and deeper agony pertaining to doubt

विवेचन–सूत्र ९२ से १०४ तक सूर्याभदेव द्वारा प्रस्तुत सगीत, वाद्य और नाट्यविधियो का जो विस्तृत वर्णन है, वह आज वर्तमान में पूर्ण रूप मे समझ पाना कठिन है। बहुत से वाद्यो के नाम तो जीवाभिगमसूत्र, जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति, स्थानागसूत्र आदि की टीकाओ में मिलते है, अनेको नाम रामायण तथा महाभारत में भी हैं तथा भरतनाट्य शास्त्र एव सगीत रत्नाकर नामक ग्रन्थो मे कुछ नाम मिलते है। किन्तु उनकी विशेष जानकारी तथा मुद्राएँ उपलब्ध नहीं है। उन वाद्यों, नाटको की आकृति कैसी होती थी इसका वर्णन नही मिलता है।

तत, वितत, घन और शुषिर, ये वाद्यो के चार मुख्य प्रकार बताये गये हैं। 'तत' के अन्तर्गत आठ प्रकार की वीणा का उल्लेख है। 'वितत' वाद्यों में चमड़े से मढ़े हुए मृदंग, ढोलक, पटल, डिडिम आदि का समावेश किया गया है। तत–वीणा आनन्ददायक मदुर वाद्य है। 'वितत' उत्साहवर्धक वीरोचित जोशीला वाद्य है। 'घन' के अन्तर्गत धातु से बने आपस मे टकराने से ध्वनि करने वाले वाद्यो की गिनती है, जैसे– करताल, झल्लरी, मजीरा आदि। भरतनाट्य शास्त्र के अनुसार–बाँस से बने फूँककर बजाये जाने वाले वाद्य 'शुषिर' कहे जाते हैं। शख आदि इसी मे सम्मिलित हैं। नाट्यविधि मे वर्णित नाटको की रचना कुछ तो उनके नाम से ही स्पष्ट हो जाती है, जैसे–ककार, चकार आदि वर्णों की आकृति की रचना। स्वस्तिक, श्रीवत्स, नन्द्यावर्त आदि की भाँति पात्रो को पंक्ति में खडा करना, झुकाना, हाथों आदि से उनके आकार का प्रदर्शन करना। हस, चक्रवाक आदि पक्षियों की भाँति शरीर को मोडना, झुकाना, सूर्य, चन्द्र, तारामण्डल की भाँति पक्तियाँ बनाकर खडे होना, नृत्य करना तथा सिंह, हाथी, मृग, वृषभ, अश्व आदि की तरह विभिन्न प्रकार की आकृति व गति का प्रदर्शन करना यह अधिकतर नाम से ही पता चलता है। 'आरभटी' नृत्य करने वाले गोलाकार बनकर, कमर पर हाथ रखकर, कमर व ग्रीवा को मटकाते हुए जो नृत्य करते है, जिसे 'रास' भी कहा जाता है। या गुजराती 'डाडिया' नृत्य भी कह सकते है। अचित, रिभित आदि नृत्य की मुद्राएँ है, जिनमें किसी मे तिरछा, किसी मे सीधा, किसी मे उछलते हुए, किसी मे शोकातुर मुद्रा बनाना आदि का प्रदर्शन किया जाता है। टीकाकार आचार्य मलयगिरि ने लिखा है–

"नाट्यविधि प्राभृत नामक पूर्व मे इन नाट्य–वाद्य आदि का वर्णन था, परन्तु पूर्वों का ज्ञान विच्छेद होने से आज इस सम्बन्ध मे अधिक बताना सम्भव नही है।" किन्तु इस वर्णन से इतना तो स्पष्ट ही है कि प्राचीनकाल मे सगीत–वाद्य नाट्य कला व अभिनय कला बहुत ही उत्कृष्ट रूप मे विकसित थी और उसके सैकडो प्रकार व सैकडो प्रकार के यत्र व उपकरण बनाये जाते थे। इनका उल्लेख बौद्ध ग्रन्थों व भरतनाट्य शास्त्र आदि ग्रन्थो मे भी मिलता है।

Elaboration—The detailed description of music, dance and theatrical performances as mentioned in aphorisms 92 to 104 and presented by Suryabh Dev is very difficult to be understood fully in the present age. Many names of these musical instruments are available in commentaries of Jeevabhigam Sutra, Jambu Dveep Prajnapti, Sthanang Sutra. Some names find mention in Ramayana, Mahabharat, Bharat Natyam (Treatise) Shastra and Sangeet Ratnakar. But the detailed process and postures are not mentioned therein The description of style of those dances is not available there.

Four main types of musical sounds are Tat, Vitat, Ghan and Shushir. **'Tat'** includes eight types of flute sound. In **'Vitat'** there are sounds of leather covered drums—mridang, dholak, patal, didam and suchlike. Tat is pleasure-giving music. **'Vitat'** is music to instal courage and heroism. **'Ghan'** includes such substances that create music while striking against each other, for instance kartaal, cymbals, manjeera. According to Bharat Natyam Shastra, the musical instrument made of bamboo. The

instruments that are blown to produce music are called **'Shushir'**. Conch is in this category. Some of the dancing techniques are evident from their very names for instance dances creating shapes of alphabets of a script, to stand in the shape of svastik, shrivats, angular shape of Nandavart, to bend down to make such shapes with movement of their hands, to twist the body like a swan, chakravak, birds and to bend down accordingly, to stand in a circle like sun, moon, constellation of stars and dance accordingly, to exhibit movements of lion, elephant, bullock, deer, horse and to exhibit their shapes in the dances can be known from the very names of these dances. Those who perform Aarbhati dance, form a circle, place their hands on waist, then twist their waist and neck while dancing. It is also called Raas and in Gujarat it is known as Daandia. Anchit, ribhit are such postures in the dance in which sometimes slanting, sometimes straight, sometimes jumping, sometimes sad pose is adopted Commentator Acharya Malayagiri has stated—

"The dancing style were mentioned in the Poorva named Natyavidhi Prabhrit But the knowledge of all the (fourteen) Poorvas has since been lost. So it is not possible to locate more details about these dances " But this description certainly clarifies that in the ancient period, the art of music, dance and theatrical performance was fully developed It was of hundreds of types. Musical instrument of several hundred types were manufactured for this purpose. Such description is also available in Buddhist literature and Bharat Natya Shastra

१०५. तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारीओ य समामेव समोसरणं करेंति जाव दिव्वे देवरमणे पवत्ते यावि होत्था।

१०५. पूर्वोक्त प्रकार की नाट्यविधियों का प्रदर्शन करने के पश्चात् चरित्र से सम्बन्धित अभिनय किया, जैसे वे सभी देवकुमार और देवकुमारियाँ एक साथ एक स्थान पर एकत्रित हुए यावत् दिव्य देवरमण (देव-क्रीडा) करने लगे।

105. After exhibiting the dancing skills, they depicted their art relating to conduct. They collected at one place and played games of gods and goddesses.

भगवान महावीर के जीवन-प्रसंगों का अभिनय

१०६. तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स १. पुव्वभवचरियणिबद्धं, २. चवणचरियणिबद्धं च, ३. संहरणचरियनिबद्धं च, ४. जम्मणचरियनिबद्धं च, ५. अभिसेअचरियनिबद्धं च, ६. बालभावचरियनिबद्धं

च, ७. जोव्वणचरियनिबद्धं च, ८. कामभोगचरियनिबद्धं च, ९. निक्खमण-चरियनिबद्धं च, १०. तवचरणचरियनिबद्धं च, ११. णाणुप्पायचरियनिबद्धं च, १२. तित्थपवत्तणचरियं च, १३. परिनिव्वाणचरियनिबद्धं च, १४. चरिमचरियनिबद्धं च णामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति।

१०६. इसके बाद उन सब देवकुमारों एव देवकुमारियों ने श्रमण भगवान महावीर के (१) पूर्वभवो के चरित्र से जुडे एवं वर्तमान जीवन सम्बन्धी प्रसंग, (२) च्यवनचरित्र (च्यवन से सम्बन्धित), (३) गर्भसहरण से सम्बन्धित, (४) जन्म, (५) जन्माभिषेक, (६) बाल-क्रीड़ा से सम्बन्धित, (७) यौवनचरित्र (विवाह के प्रसग), (८) काम-भोगचरित्र (गृहस्थावस्था से सम्बन्धित विवाह आदि का दृश्य), (९) अभिनिष्क्रमणचरित्र निबद्ध (दीक्षा-महोत्सव से सम्बन्धित), (१०) तपश्चरणचरित्र निबद्ध (साधनाकालीन विविध दृश्य और ध्यान मुद्राएँ), (११) केवलज्ञान उत्पत्ति के दृश्य (कैवल्य महोत्सव का दृश्य), (१२) तीर्थ प्रवर्त्तन सम्बन्धी दृश्य, (१३) परिनिर्वाणचरित्र (मोक्ष प्राप्त होने के समय का दृश्य), तथा (१४) चरमचरित्र निबद्ध (निर्वाण प्राप्त हो जाने के पश्चात् देवो आदि द्वारा किये जाने वाले महोत्सव से सम्बन्धित दृश्य) नामक अन्तिम दिव्य नाट्य-अभिनय का प्रदर्शन किया।

DRAMATIC PRESENTATION FROM LIFE OF BHAGAVAN MAHAVIR

106. Thereafter all the said gods and goddesses presented scenes relating to life of Bhagavan Mahavir—(1) both present and earlier life-spans, (2) the scene relating to his entering the womb (of his earlier mother), (3) the removal of foetus for transfer, (4) the scenes relating to his birth, (5) his birth festivities, (6) his play activities, (7) his marriage, (8) his family life with his wife, (9) his renunciation, (10) his austerities, his various poses, and postures in meditation, (11) his attainment of omniscience (celebrations of his attaining omniscience, (12) his founding the four fold religious ford, (13) his salvation, (14) the festivities arranged by gods to celebrate his salvation.

विवेचन-देवो द्वारा श्रमण भगवान महावीर एवं गौतम आदि श्रमण निर्ग्रन्थो के समक्ष प्रदर्शित बत्तीस प्रकार के नाट्य-अभिनयो मे से अन्तिम (बत्तीसवाँ अभिनय) श्रमण भगवान महावीर की जीवन-घटनाओ के मुख्य-मुख्य प्रसगो से सम्बन्धित है। यह सब पढकर तत्कालीन अभिनय कला की परम प्रकर्षता की कल्पना की जा सकती है।

Elaboration—The last of all the thirty two dramatic presentations by the gods in presence of Shraman Bhagavan Mahavir, Gautam and other Nirgranths was the one relating to major incidents from the life of

Bhagavan Mahavir. After going through this account, one can imagine the excellence of dramatic skills of that period

नृत्य-अभिनय की समाप्ति

१०७. तणं णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारीओ य चउव्विहं वाइत्तं वाएंति, तं जहा–ततं–विततं–घणं–झुसिरं।

१०७. दिव्य नाट्विधियो को प्रदर्शित करने के पश्चात् वे सभी देवकुमार और देवकुमारियाँ **तत**–वीणा आदि, **वितत**–ढोल–नगाडे आदि, **घन**–झाझ आदि और **शुषिर**–शंख, बाँसुरी आदि ये चार प्रकार के वादित्र–बजाने लगे।

THE END OF DRAMATIC PERFORMANCE

107. After exhibiting the various dramatic skills, all the gods and goddesses started playing four types of musical instruments namely—lute and others of **'Tat'** category, drums and others of **'Vitat'** category, cymbals and others of **'Ghan'** category and conch, flute and others of **'Shushir'** category

१०८. तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारियाओ य चउव्विहं गेयं गायंति, तं जहा–उक्खित्तं–पायंतं–मंदायं–रोइयावसाणं च।

१०८. वाद्य बजाने के बाद वे सब देवकुमार और देवकुमारियाँ उत्क्षिप्त, पादान्त (पादवृद्ध), मदक और रोचितावसान नामक चार प्रकार का सगीत गाने लगे।

108. After playing musical instruments, the gods and goddesses started singing four types of vocal music namely—utkshipt (with raised voice), padaant, mandak and rochitavasan.

१०९. तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारियाओ य चउव्विहं णट्टविहिं उवदंसेंति, तं जहा–अंचियं–रिभियं–आरभडं–भसोलं च।

१०९. उसके पश्चात् उन सभी देवकुमार और देवकुमारियो ने अचित, रिभित, आरभट एव भसोल नामक चार प्रकार की नृत्यविधियो का प्रदर्शन किया।

109. Thereafter they presented four types of dramatic skills namely—anchit, ribhit, aarbhat and bhasol.

११०. तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारियाओ च चउव्विहं अभिणयं अभिणएंति, तं जहा–दिट्ठंतियं–पाडियंतियं–सामन्नओविणिवाइयं–अंतोमज्झावसाणियं च।

११०. तत्पश्चात् उन सभी देवकुमारों और देवकुमारियों ने चार प्रकार के अभिनय प्रदर्शित किये, जैसे-दार्ष्टान्तिक, प्रात्यंतिक, सामान्यतोविनिपातनिक और अन्तर्मध्यावसानिक (लोकमध्यावसानिक)।

110. Thereafter they exhibited four types of acting namely—daarshtantik, pratyantic, samanyatovinipatnik and antarmadhyavasanik.

विवेचन—सूत्र सख्या १०७-११० पर्यन्त नाटको का प्रदर्शन करने के पश्चात् उपसहार रूप चार प्रकार के वाद्यो को बजाने, सगीतो को गाने एव नृत्य और अभिनयो को करने का उल्लेख किया है।

वाद्यादि अभिनय पर्यन्त चार-चार प्रकारो का उल्लेख करने का कारण यह है कि ये उन संगीत आदि के मूल स्रोत है। अर्थात् वाद्यो, राग-रागिनियो व अभिनयो आदि के अलग-अलग नाम होने पर भी वे सभी मुख्य-गौण रूप से इन चार प्रकारो के ही विकसित विविध रूप है।

प्रस्तुत मे तत आदि से वाद्यो के भेद, उत्क्षिप्त आदि से सगीत के प्रकार और अंचित आदि से नृत्य के चार-चार प्रकार और उनके सामान्य अर्थ समझ लिए जा सकते है। इसी प्रकार अभिनय के जो चार प्रकार बतलाये है उनमे से शब्दो के अर्थ तो समझे जा सकते है, परन्तु उन अभिनयो की शैली और आकृतियो का रहस्य समझने के लिए सगीत तथा अभिनय विशारदो एवं नाट्यशास्त्र से जानकारी प्राप्त करना चाहिए।

Elaboration—After depicting dramatic performances as in aphorisms 107 to 110, there is mention of playing four types of musical instruments, singing four types of music, dancing of four types and acting of four types

The reason for such performances in the end is that these are the main source of music, dance etc. In other words although there are distinct names for various types of music, music tunes, dances and acting, yet these are in fact developed forms of the four types of each mentioned in the end directly or indirectly

In the present context, Tat and others in this category represent musical sounds, utkshipt and others represent the types of music, anchit etc represent four types of dances. The meaning of words mentioned for four types of acting can be understood but in order to understand the style and postures in such acting and the secret behind it, one has to approach experts in acting and the literature thereof.

१११. तए णं ते बहवे देवकुमारा य देवकुमारियाओ य गोयमादियाणं समणाणं निग्गंथाणं दिव्वं देविड्ढिं दिव्वं देवजुतिं दिव्वं देवाणुभावं दिव्व बत्तीसइबद्धं नाडयं उवदंसित्ता

समणं भगवंतं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणपयाहिणं करेंति, करित्ता वंदंति नमंसंति, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव सूरियाभेदेवे तेणेव उवागच्छंति।

उवागच्छित्ता सूरियाभं देवं करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेंति वद्धावित्ता एवं आणत्तियं पच्चप्पिणंति।

१११. इसके बाद उन सभी देवकुमारों और देवकुमारियो ने गौतम आदि श्रमण निर्ग्रन्थों के समक्ष अपनी दिव्य देवऋद्धि, दिव्य देवद्युति, दिव्य देवानुभाव प्रदर्शक बत्तीस प्रकार की दिव्य नाट्यविधियों का प्रदर्शन कर श्रमण भगवान महावीर को तीन बार आदक्षिण-प्रदक्षिणा की। प्रदक्षिणा करके वन्दन-नमस्कार करने के पश्चात् सूर्याभदेव के समक्ष आये।

वहाँ आकर दोनो हाथ जोडकर सिर पर आवर्त्तपूर्वक मस्तक पर अंजलि करके 'जय विजय हो' शब्द घोषों के साथ सूर्याभदेव को बधाया और बधाकर आज्ञानुसार बत्तीस प्रकार की नाट्यविधि प्रदर्शित करने की सूचना दी।

111. After performing all the thirty two types of theatrical performances their last depicting celestial wealth, celestial brightness, celestial emotions in excellence, the gods and goddesses went round Bhagavan Mahavir three times, paying their respects They then bowed to him and thereafter came to Suryabh Dev

They then folded their hands, placed them at their forehead and praised Suryabh Dev by saying that he may always be successful They then informed him that they had given presentation of thirty two types of dramatic skills

सूर्याभदेव का वापस जाना

११२. तए णं से सूरियाभे देवे तं दिव्वं देविड्ढिं, दिव्वं देवजुइं, दिव्वं देवाणुभावं पडिसाहरइ, पडिसाहरेत्ता खणेणं जाते एगे एगभूए।

तए णं से सूरियाभे देवे समणं भगवंतं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिण पयाहिणं करेइ, वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता नियगपरिवालसद्धिं संपरिवुडे तमेव दिव्वं जाणविमाणं दुरूहति दुरूहित्ता जामेव दिसिं पाब्भूए तामेव दिसिं पडिगए।

११२. तत्पश्चात् सूर्याभदेव ने अपनी सब दिव्य देवऋद्धि, दिव्य देवद्युति और दिव्य देवानुभाव-प्रभाव को समेट लिया (अपने शरीर में प्रविष्ट कर लिया और शरीर में प्रविष्ट करके) क्षणभर में अनेक होने से पूर्व जैसा अकेला था वैसा ही एकाकी बन गया।

इसके बाद सूर्याभदेव ने श्रमण भगवान महावीर को तीन बार प्रदक्षिणा की, वन्दन-नमस्कार किया। वन्दन-नमस्कार करके अपने परिवार सहित जिस यान-विमान से आया था उसी दिव्य यान-विमान पर आरूढ होकर जिस ओर से आया था, उसी ओर लौट गया।

RETURN OF SURYABH DEV

112. Thereafter Suryabh Dev brought back into his body all the celestial wealth, celestial brightness and celestial grandeur that he had emanated earlier. He thus became one again instead of many by this fluid process.

Thereafter Suryabh Dev went round Bhagavan Mahavir three times, bowed to him in respect and went back with his family in the same celestial aerial vehicle in which he had come.

गौतम स्वामी की जिज्ञासा

११३. 'भंते' त्ति भयवं गोयमे समणं भगवंतं महावीरं वंदति नमंसति, वंदित्ता नमंसित्ता एवं वयासी–

सूरियाभस्स णं भंते ! देवस्स एसा दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवज्जुती दिव्वे देवाणुभावे कहिं गते ? कहिं अणुप्पविट्ठे ?

११३. सूर्याभदेव के वापस चले जाने के पश्चात् गौतम स्वामी ने श्रमण भगवान महावीर को वन्दन-नमस्कार करके विनयपूर्वक पूछा–

(प्रश्न) "हे भगवन् ! सूर्याभदेव की वह सब पूर्वोक्त दिव्य देवऋद्धि, दिव्य देवद्युति, दिव्य देवानुभाव-कहाँ चला गया ? कहाँ प्रविष्ट हो गया ? कहाँ समा गया ?"

ENQUIRY OF GAUTAM SWAMI

113. After the departure of Suryabh Dev, Gautam Swami bowed to Bhagavan Mahavir and asked humbly.

"Reverend Sir ! Suryabh Dev had grand celestial wealth, celestial brightness, celestial aura—Where has all that gone ? Where has all that entered ? Where has all that disappeared ?

भगवान महावीर का समाधान

११४. गोयमा ! सरीरं गते सरीरं अणुप्पविट्ठे।

११४. (उत्तर) "हे गौतम ! सूर्याभदेव द्वारा रचित विक्रिया की हुई वह सब दिव्य देवऋद्धि आदि उसके शरीर मे चली गई, शरीर मे प्रविष्ट हो गई–अन्तर्लीन हो गई।"

BHAGAVAN MAHAVIR'S CLARIFICATION

114 "O Gautam ! The celestial wealth and others created by Suryabh Dev from fluid process has all gone into his body. It has absorbed therein."

११५. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ सरीरं गते, सरीरं अणुप्पविट्ठे ?

११५. (प्रश्न) "हे भदन्त ! किस कारण आप ऐसा कहते है कि शरीर में चली गई, शरीर मे अन्तर्लीन हो गई ?"

115. Gautam said—"Sir ! On what basis you state that it has gone into and absorbed in his body ?"

११६. गोयमा ! से जहानामए कूडागारसाला सिया–दुहतो लित्ता गुत्ता गुत्तदुवारा णिवाया णिवायगंभीरा, तीसे णं कूडागारसालाए अदूरसामंते एत्थ णं महेगे जणसमूहे चिट्ठति, तए णं से जणसमूहे एगं महं अब्भबद्दलगं वा वासबद्दलगं वा महावायं वा एज्जमाणं वा पासति, पासित्ता तं कूडागारसालं अंतो अणुप्पविसित्ता णं चिट्ठइ, से तेणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति–'सरीरं अणुप्पविट्ठे।'

११६. "हे गौतम ! (कल्पना करे) जैसे कोई एक गहरी, विशाल कूट आकार–पर्वत के शिखर के आकार वाली शाला हो। वह भीतर-बाहर गोबर आदि से लिपी-पुती, बाहर परकोटे–से घिरी हुई, मजबूत किवाडो से युक्त गुप्त द्वार वाली जिसमे वायु का प्रवेश भी कठिन हो, उस कूटाकारशाला के निकट एक विशाल जनसमूह बैठा हो। उस समय वह जनसमूह आकाश में एक बहुत बडे मेघपटल–सघन बादलो के समूह को अथवा जलवृष्टि करने योग्य बादलो को अथवा प्रचण्ड आँधी को आता हुआ देखे तो जैसे वह उस कूटाकारशाला के भीतर प्रवेश कर जाता है, उसी प्रकार हे गौतम ! सूर्याभदेव की वह सब दिव्य देवऋद्धि (देव माया) आदि उसके शरीर मे प्रविष्ट हो गई–अन्तर्लीन हो गई है, इस कारण मैने कहा कि "वह उसके शरीर मे ही प्रविष्ट हो गई।"

116. "O Gautam ! Imagine a house situated on the summit of a mountain. On both sides, it is plastered with cow-dung. It is surrounded with boundary wall. It has strong door. It has secret enterance and it is difficult even for the air to enter into it. A huge gathering of people is sitting near it. Imagine that the gathering

sees a collection of dark clouds, water bearing dark clouds in the sky; or a dreadful storm is coming in that direction. The gathering then immediately enters that house. Similarly the celestial wealth etc. entered in the body of Suryabh Dev and absorbed therein. So, O Gautam, I have said that it entered in his body."

सूर्याभदेव के विमान का स्थान और स्वरूप

११७. कहि णं भंते ! सूरियाभस्स देवस्स सूरियाभे नामं विमाणे पन्नत्ते ?

११७. "हे भगवन् ! उस सूर्याभदेव का 'सूर्याभ' नामक विमान कहाँ पर बताया है ?"

LOCATION OF THE AERIAL VEHICLE OF SURYABH DEV AND ITS DESCRIPTION

117. (Gautam asked) "Reverend Sir ! Where is 'Suryabh' aerial vehicle of Suryabh Dev located "

११८. गोयमा ! जंबुद्दीवे दीवे मंदरस्स पव्वयस्स दाहिणेणं इमीसे रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिम-सूरिय-गहगण-नक्खत्त-तारारूवाणं बहूइं जोयणसयाइं एवं-सहस्साइं-सयसहस्साइं, बहुईओ जोयणकोडीओ, जोयणसयकोडीओ, जोयणसहस्सकोडीओ, बहुईओ जोयणसयसहस्सकोडीओ बहुईओ जोयण-कोडाकोडीओ उड्ढं दूरं वीईवइत्ता एत्थ णं सोहम्मे नामं कप्पे पन्नत्ते।

पाईण-पडीणायए उदीण-दाहिण-वित्थिण्णे, अद्धचंदसंठाणसंठिए, अच्चिमालि भासरासि वण्णाभे, असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ आयामविक्खंभेणं, असंखेज्जाओ जोयणकोडाकोडीओ परिक्खेवेणं, एत्थ णं सोहम्माणं देवाणं बत्तीसं विमाणावासयसहस्साइं भवंति इति, मक्खायं।

ते णं विमाणा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा। तेसिं णं विमाणाणं बहुमज्झदेसभाए पंच वडिंसया पन्नत्ता, तं जहा-१. असोगवडिंसए, २. सत्तवण्णवडिंसए, ३. चंपगवडिंसए, ४. चूयवडिंसए, ५. मज्झे सोहम्मवडिंसए। ते णं वडिंसगा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा।

तस्स णं सोहम्मवडिंगसगस्स महाविमाणस्स पुरत्थिमेणं तिरियं असंखेज्जाइं जोयणसयसहस्साइं वीइवइत्ता एत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स सूरियाभे विमाणे पण्णत्ते। अद्धतेरस जोयणसयसहस्साइं आयामविक्खंभेणं, अउणयालीसं च सयसहस्साइं बावन्नं च सहस्साइं अट्ठ य अडयाल जोयणसए परिक्खेवेणं।

११८. (भगवान ने उत्तर दिया) "हे गौतम ! इस जम्बूद्वीप नामक द्वीप के मन्दर (सुमेरु) पर्वत से दक्षिण दिशा में इस रत्नप्रभा पृथ्वी के रमणीय समतल भूभाग से ऊपर, ऊर्ध्व दिशा में चन्द्र, सूर्य, ग्रहगण नक्षत्र और तारामण्डल से आगे बहुत ऊँचाई में, बहुत से सैकडों योजनों, हजारों योजनो, लाखो, करोडों योजनों और सैकडों करोड, हजारों करोड़, लाखों करोड योजनों, करोडों करोड योजनो को पार करने के बाद सौधर्मकल्प नाम का कल्प है अर्थात् सौधर्म नामक स्वर्गलोक है।

वह सौधर्मकल्प पूर्व-पश्चिम दिशा मे लम्बा और उत्तर-दक्षिण दिशा मे विस्तृत-चौडा है। अर्धचन्द्र के समान उसका आकार है। सूर्य किरणो की तरह अपनी द्युति-कान्ति से सदैव चमचमाता रहता है। असख्यात कोटाकोटि योजन प्रमाण उसकी लम्बाई-चौडाई तथा असख्यात कोटाकोटि योजन प्रमाण उसकी परिधि है। यहाँ सौधर्म देवो के बत्तीस लाख विमान बताये है। वे सभी विमान सम्पूर्ण रूप मे रत्नों से बने हुए स्फटिक मणि की भाँति स्वच्छ यावत् अतीव मनोहर हैं।

उन विमानो के मध्य भाग मे-ठीक बीचोबीच-पूर्व, दक्षिण, पश्चिम और उत्तर इन चार दिशाओं मे अनुक्रम से (१) अशोक-अवतसक, (२) सप्तपर्ण-अवतसक, (३) चंपक-अवतंसक, (४) आम्र-अवतसक, तथा (५) मध्य मे सौधर्म-अवतसक, ये पाँच अवतंसक (श्रेष्ठ भवन) बने हुए हैं। ये पाँचो अवतसक भी रत्नो से निर्मित, निर्मल यावत् प्रतिरूप-अतीव मनोहर है।

उस सौधर्म-अवतंसक महाविमान की पूर्व दिशा मे तिरछी दिशा मे असख्यात लाख योजन आगे जाने पर सूर्याभदेव का सूर्याभ नामक विमान है। उसका आयाम विष्कभ (लम्बाई-चौडाई) साढे बारह लाख योजन और परिधि उनतालीस लाख बावन हजार आठ सौ अडतालीस योजन की है।"

118. (Bhagavan replied) "O Gautam ! In the southern direction of Sumeru Mountain of this Jambu Dveep, at a high altitude from the roof of this Ratnaprabha earth, there are moon, sun, planets and stars. Further higher and higher, hundreds, thousands, millions, trillions, hundred trillions, thousand trillions, million trillions, trillion trillions yojans higher is Saudharm Devlok.

This Saudharm Devlok is very spacious and is very long in east-west direction and very wide in north-south direction. Its shape is that of semi-circle. It always remains shining due to brightness of its ownself like rays of the sun. Its length and breadth is

innumerable million multiplied by 100 million yojans each and its circumference is innumerable million multiplied by 100 million yojans. Thirty two lakh celestial abodes (Viman) of Saudharm gods are located there. All of them are made of jewels. They are clean like Sphatik gems. They are very attractive.

In the centre of the said thirty two lakh (3.2 million) Vimans, there is (1) Asok-avatansak celestial abode in the east, (2) Saptaparn-avatansak in the south, (3) Champak-avatansak in the west, (4) Aamra-avatansak celestial abode in the north of Saudharm heavenly abode, and (5) in the centre is Saudharm-avatansak celestial abode. These are abodes of unique grandeur. All the five abodes are jewel-studded, clean, shining and worth seeing

At a distance of innumerable yojans towards east of Saudharm-avatansak celestial gigantic abode in the oblique direction is the Suryabh celestial abode of Suryabh Dev. It is 1.25 million yojans long, 1.25 million yojans wide and its circumference is 3.952848 million yojans "

विशेष–प्रस्तुत आगम मे सूर्याभदेव के विमान, वनखण्ड, पद्मवरवेदिका आदि का समस्त वर्णन जीवाभिगमसूत्र प्रतिपत्ति उद्देशक १ मे आये वर्णन से प्राय मिलता-जुलता है। तुलना के लिए देखे गणितानुयोग–तिर्यक्लोक, खण्ड १२५ से २०० तक।

Elaboration—The description of celestial abode, the piece of land (Vanakhand), Padmavarvedika and others in this scripture concerning Suryabh Dev is almost similar to that in first Uddesak of Jeevabhigam Sutra For comparison see Ganitanuyog—Tiryaklok, Part 125 to 200.

११९. से णं एगेणं पागारेणं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते। से णं पागारे तिण्णि जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं मूले एगं जोयणसयं विक्खंभेणं, मज्झे पन्नासं जोयणाइं विक्खंभेणं, उप्पिं पणवीसं जोयणाइं विक्खंभेणं। मूले विच्छिण्णे, मज्झे संखित्ते उप्पिं तणुए, गोपुच्छसंठाणसंठिए सव्वरयणामए अच्छे जाव पडिरूवे।

११९. वह सूर्याभ विमान चारों ओर से एक प्राकार–परकोटे से घिरा हुआ है। यह परकोटा तीन सौ योजन ऊँचा है, मूल में इसका विष्कम्भ (चौडाई) एक सौ योजन, मध्य में पचास योजन और ऊपर पच्चीस योजन है। इस तरह यह प्राकार मूल में चौडा, मध्य में

सँकडा और सबसे ऊपर पतला होने से गोपुच्छ के आकार जैसा बना है। यह परकोटा रत्नों से बना है, स्फटिक मणि के समान निर्मल है यावत् अतिशय मनोहर है।

119. That Suryabh Viman has a boundary wall on all sides which is 300 yojans high. The boundary wall is 100 yojans at the base, 50 yojans in the middle and 25 yojans at the top. So it appears like a cow-tail. It is jewel-studded. It is pure like Sphatik gem and very unique.

१२०. से णं पागारे णाणाविहपंचवण्णेहिं कविसीसएहिं उवसोभिते, तं जहा– कण्हेहि य नीलेहि य लोहितेहिं हालिद्देहिं सुक्किल्लेहिं कविसीसएहिं।

ते णं कविसीसगा एगं जोयणं आयामेणं, अद्धजोयणं विक्खंभेणं, देसूणं जोयणं उड्ढं उच्चत्तेणं सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा।

१२०. वह परकोटा कृष्ण, नील, लोहित–लाल, हारिद्र–पीले और श्वेत इन पाँच वर्णों वाले कपिशीर्षकों (कगूरों) से सुशोभित है।

ये प्रत्येक कपिशीर्षक (कगूरे) एक–एक योजन लम्बे, आधे योजन चौडे और कुछ कम एक योजन ऊँचे हैं तथा ये सब रत्नों से बने हुए, निर्मल यावत् रमणीय है।

120. This boundary wall has black, blue, red, yellow and white holes adding to its beauty.

Every hole resembling the head of a monkey is one yojan long, half yojan wide and a little less than one yojan high. All these are made of jewels, are clean and grand

सूर्याभ विमान के द्वारों की शोभा का वर्णन

१२१. सूरियाभस्स णं विमाणस्स एगमेगाए बाहाए दारसहस्सं दारसहस्सं भवतीति अक्खायं।

ते णं दारा पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं विक्खंभेणं तावइयं चेव पवेसेणं, सेया वरकणगथूभियागा ईहामिय–उसभ–तुरग–णर–मगर–विहग–वालग–किन्नर–रुरु–सरभ–चमर–कुंजर–वणलय–पउमलयभत्ति–चित्ता।

खंभुग्गयवर–वयर–वेइया–परिगयाभिरामा, विज्जाहरजमल–जुयल–जुंतजुत्ता विव, अच्चीसहस्समालणीया रूवगसहस्सकलिया, भिसमाणा भिब्भिसमाणा, चक्खुल्लोयणलेसा, सुहफासा सस्सिरीय रूवा।

वन्नो दाराणं तेसिं होइ—

तं जहा—वइरामया णिम्मा, रिट्ठामया पइट्ठाणा, वेरुलियमया खंभा, जायरूवोवचिय—पवरं पचवन्न—मणिरयण—कोट्टिमतला, हंसब्भमया एलुया, गोमेज्जमया इंदकीला, लोहियक्खमईओ चेडाओ, जोईरसमया उत्तरंगा, लोहियक्खमईओ सूईओ, वयरामया संधी, नाणामणिमया समुग्गया, वयराममया अग्गला—अग्गलपासाया, रययामयाओ आवत्तणपेढियाओ।

अंकुत्तरपासगा, निरंतरियघणकवाडा भित्तीसु चेव भित्तिगुलिया छपन्ना तिण्णि होंति गोमाणसिया तत्तिया णाणामणि—रयणवालरूवगलीलट्ठिओ—सालभंजियागा।

वयरामया कूडा, रययामया उस्सेहा, सव्वतवणिज्जमया उल्लोया, णाणामणिरयणजालपंजर—मणिवंसगलोहियक्खपडिवंसगरययभोमा, अंकामया पक्खा—पक्खबाहाओ, जोईरसामया वंसा—वंसकवेल्लुयाओ, रययामईओ पट्टियाओ, जायरूवमईओ ओहाडणीओ, वइरामईओ उवरिपुंछणीओ, सव्वसेयरययामये छायणे, अंकमयकणगकूडतवणिज्जथूभियागा, सेया संखतलविमलनिम्मलदधिघण—गोखीर—फेणरयणणिगरप्पगासा तिलगरयणद्धचंद चित्ता नाणामणिदामालंकिया, अंतो बहिं च सण्हा तवणिज्जवालुया पत्थडा, सुहफासा, सस्सिरीयरूवा, पासाईया दरिसणिज्जा अभिरूवा पडिरूवा।

१२१. सूर्याभदेव के उस विमान की एक—एक बाजू मे चारों दिशाओ में एक—एक हजार द्वार बताये गये है।

वे द्वार पाँच—पाँच सौ योजन ऊँचे है, अढाई सौ योजन चौडे है और उतने ही (अढाई सौ योजन) इनका प्रवेशन—गमनागमन के लिए प्रवेश करने का स्थान है। द्वार श्वेत वर्ण के है। उत्तम स्वर्णमयी स्तूपिकाओ—शिखरो से शोभित है। उन पर ईहामृग, वृषभ, अश्व, नर, मकर, विहग, सर्प, किन्नर, रुरु, सरभ, अष्टापद, चमर, हाथी, वनलता, पद्मलता आदि के चित्र बने हुए है।

स्तम्भों पर बनी हुई वज्र रत्नों की वेदिका से युक्त होने के कारण (ये द्वार) रमणीय दिखाई पडते हैं। समश्रेणी में स्थित विद्याधरों के युगल यंत्र द्वारा चलते हुए से दीख पड़ते हैं। हजारो किरणों से व्याप्त और हजारों रूपकों—चित्रों से युक्त होने से वे द्वार दीप्यमान और अतीव देदीप्यमान है। देखते ही दर्शकों के नेत्रों को आकृष्ट कर लेते हैं। उनका स्पर्श सुखप्रद है। रूप दर्शनीय है।

उन द्वारों का स्वरूप इस प्रकार है-

उन द्वारो के नेम (भूभाग से ऊपर निकले प्रदेश कुर्सी-प्लिंथ) वज्र रत्नों के हैं। प्रतिष्ठान (मूल पाये या देहली) रिष्ट रत्नों से, स्तम्भ वैडूर्य मणियों से तथा तल भाग (फर्श) पंचरंगे मणि रत्नो से बने हुए हैं। इनकी देहलियों की चौखट हंसगर्भ रत्नों की, इन्द्रकीलियाँ (दरवाजों को बन्द करने वाली कीले) गोमेद रत्नों की, द्वारशाखाएँ (दरवाजे की चौखट) लोहिताक्ष रत्नों की, उत्तरग (ओतरग-द्वार के ऊपर पाटने के लिए तिरछा रखा पाटिया) ज्योतिरस रत्नों के, दो पाटियो को जोड़ने के लिए ठोकी गई कीलियाँ लोहिताक्ष रत्नों की हैं और उनकी साँधें वज्र रत्नों से भरी हुई हैं। समुद्‌गक (कीलियों का ऊपरी हिस्सा-टोपी) विविध मणियों के है। अर्गलायें अर्गलापाशक (कुदा) वज्र रत्नो के है। आवर्तन पीठिकाएँ (इन्द्रकीली का स्थान जिनमें चटकनी लगती है) चाँदी की हैं।

उत्तरपार्श्वक (वेनी किवाडों का पिछला भाग) अंक रत्नों के है। इनमे लगे किवाड इतने सटे हुए सघन हैं कि बन्द करने पर थोडा-सा भी अन्तर नहीं रहता है। प्रत्येक द्वार की दोनों बाजुओं की भीतों मे एक सौ अडसठ-एक सौ अडसठ सब मिलाकर तीन सौ छत्तीस भित्तिगुलिकाएँ-(देखने के लिए गोल-गोल गुप्त झरोखे या खूँटियाँ) हैं और उतनी ही गोमानसिकाएँ (शय्या जैसा लम्बा ओटा) हैं-प्रत्येक द्वार पर अनेक प्रकार के मणि रत्नमयी व्यालरूपों-सर्पों-से क्रीडा करती हुई सालभंजिकाएँ-पुतलियाँ बनी हुई है।

इनके कूट-(माड) वज्र रत्नो के और माड के शिखर चाँदी के है और द्वारो के ऊपरी भाग लाल-स्वर्ण के हैं। द्वारो के जालीदार झरोखे भाँति-भाँति के मणि रत्नो से बने हुए है। मणियों के बाँसो का छप्पर है और बाँसो को बाँधने की खपच्चियाँ लोहिताक्ष रत्नो की है। रजतमयी भूमि है अर्थात् छप्पर पर चाँदी की परत बिछी हुई है। उनकी पाखें और पाखो की बाजुएँ अक रत्नो (श्वेत रत्न) (हीरे जैसा श्वेत रत्न) की है। छप्पर के नीचे सीधी और आडी लगी हुई वल्लियाँ तथा कबेलू ज्योतिरस रत्नमयी है। उनकी पाटियाँ चाँदी की है। अवघाटनियाँ (कबेलुओं के ढक्कन) स्वर्ण की बनी हुई हैं। ऊपर प्रोच्छनियाँ-(टाटियाँ) वज्र रत्नों की हैं। टाटियो के ऊपर और कबेलुओं के नीचे के आच्छादन श्वेत-धवल और रजतमय है। उनके शिखर अंक रत्नों के हैं और उन पर तपे हुए स्वर्ण की स्तूपिकाएँ (प्रासाद के ऊपर का शिखर) बनी हुई हैं। ये द्वार शंख के समान विमल, दही एव दुग्धफेन और चाँदी के ढेर के समान श्वेत प्रभा वाले है। उन द्वारों के ऊपरी भाग में तिलक रत्नों से निर्मित अनेक प्रकार के अर्ध-चन्द्राकार चित्र बने हुए हैं। अनेक प्रकार की मणियो की मालाओ से अलंकृत हैं। वे द्वार अन्दर और बाहर अत्यन्त स्निग्ध और सुकोमल हैं। वहाँ

पर सोने के समान पीली बालुका बिछी हुई है। सुखद स्पर्श वाले रूप-शोभा-सम्पन्न, मन को प्रसन्न करने वाले, देखने योग्य, मनोहर और अतीव रमणीय हैं।

DESCRIPTION OF THE GRANDEUR OF GATES OF SURYABH VIMAN

121. In each of the four wings of that Viman of Suryabh Dev, there are one thousand gates each in all the four directions.

Those gates are 500 yojans high, 250 yojans wide and 250 yojans is the entrance. They are of white colour. They are shining due to golden summits. Many paintings namely those of tiger, bullock, horse, man, crocodile, bird, snake, kinnar, ruru, sarabh, ashtapad, chamar, elephant, vanlata, padmalata on them are adding to their beauty.

Since the pillars are having jewelled summits the gates are looking grand. The pairs of Vidyadhar in a straight line and mechanically propelled are looking as if moving. As the gates are emitting thousands of rays and are having thousands of paintings, they are looking bright and extremely grand. They catch the eye of the spectators at the very first look. Their touch is pleasing. They are worthy to be looked at.

The description of those gates is as under—

The plinth of the gates is made of hard jewels. The foundation is made of Risht jewels, the pillars are of Vaidurya jewels and the floor is studded with gems of five colours. The threshold of the doors is of Hansgarbh jewels, the door-bolls are of Gomed gems. The chaukhat is of Lohitaksh jewels, the hanging bowl at the doors is of Jyotiras gems, the pegs joining the pots are of Lohitaksh jewels, the strong covering upon mattress ceiling is full of Vajra jewels. The tops of pegs are of various types of gems. The place for bolt joint is of silver.

The back side of the doors is of Ank jewels. The doors are of such a fitting that there is not even the slightest space in between when they are closed. On both the sides of the gates there are 168 secret round holes each. In other words there are 336 holes and 336 verandah. Many jewel-studded dolls playing with tigers and snakes are made on the gates.

The sides are of Vajra gems, the summits of the sides are of silver. The upper parts of the gates are red and golden. The ventilators are

of various types of gems and jewels. The poles of the roof (Chhappar) are of gem-studded bamboos. The joints to the bamboos are of Lohitaksh jewels. The roofs is silver-plated. Its sides are of white jewels such as diamonds. The supports for the roof are of Jyotiras gems. Their backs are of silver and covers of gold The roofs are of Vajra gems. The covers are white and silvery. The tops are of Ank gems. The top of palace is of purified gold. The gates are as clean as conch, as white as curd or milky foam and are shining like a pile of silver. Many semi-circular paintings made of Tilakratna are in the upper part of the gates. The gates are extremely plain from inside and outside. It is decorated with garlands of gems of many types. Golden sand is scattered there. They are very pleasing bright, worth seeing, grand and extremely beautiful

१२२. तेसि णं दाराणं उभओ पासे दुहओ निसीहियाए सोलस सोलस चंदणकलसपरिवाडीओ पन्नत्ताओ।

ते णं चंदणकलसा वरकमल-पइट्ठाणा सुरभिवरवारिपडिपुण्णा, चंदणकयचच्चागा, आविद्धकंठे गुणा, पउमुप्पलपिहाणा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवगा महया महया इंदकुंभसमाणा पन्नत्ता समणाउसो !

१२२. उन द्वारों की दोनो बाजुओ की दोनो निशीधिकाओ (बैठको) मे सोलह-सोलह चन्दन-कलशो की पक्तियाँ स्थापित हैं।

ये चन्दन-कलश श्रेष्ठ उत्तम कमलों पर रखे है, उत्तम सुगन्धित जल से भरे हुए है, चन्दन के लेप से चर्चित, विभूषित है, उनके कठों मे लाल सूत कलावा बँधा हुआ है और मुख पद्मकमल के ढक्कनो से ढके हुए है। हे आयुष्मन् श्रमणो ! ये सभी कलश सम्पूर्ण रत्नमय हैं, निर्मल यावत् बृहत् इन्द्रकुभ जैसे विशाल एवं अतिशय रमणीय है।

122. On both sides of the gates, there are rows of sixteen sandal wood pitchers each.

The sandal wood pitchers are kept on lotus of best quality. They are full of fragrant water of best quality. They are covered with sandal paste and are decorated. Red thread is tied at the neck of the pitchers and their mouth is covered with padma lotus. O the Shramans ! All these pictures are completely studded with gems. They are clean and huge and extremely beautiful.

१२३. तेसि णं दाराणं उभओ पासे दुहओ णिसीहियाए सोलस–सोलस णागदंतपरिवाडीओ पन्नत्ताओ।

ते णं णागदंता मुत्ताजालंतरुसियहेमजाल–गवक्खजाल–खिंखिणीघंटाजाल–परिक्खित्ता अब्भुग्गया अभिणिसिट्ठा तिरियं सुसंपरिग्गहिया अहेपन्नगद्धवा, पन्नगद्धसंठाणसंठिया, सव्ववयरामया अच्छा जाव पडिरूवा महया महया गयदंतसमाणा पन्नत्ता समाणाउसो।

१२३. उन द्वारो की दोनो बाजुओ की दोनों निशीधिकाओ मे सोलह–सोलह नागदन्तो (हाथी के दाँत के आकार की खूँटी) की पक्तियाँ है।

"हे आयुष्मन् श्रमणो ! ये नागदन्त (खूँटियाँ) मोतियों और सोने की मालाओं में लटकती हुई गवाक्षाकार (गाय की आँख) जैसी आकृति वाले घुँघरुओं से युक्त, छोटी–छोटी घटिकाओ से परिवेष्टित है। इनका आगे का भाग कुछ ऊपर की ओर उठा और दीवाल से बाहर निकलता हुआ है एव पिछला भाग अन्दर दीवाल में अच्छी तरह से घुसा हुआ है और सर्प के अधोभाग (पिछले भाग) जैसे आकार का है। अग्र भाग का सस्थान सर्पार्ध के समान है। वे वज्र रत्नो से बने हुए है। बडे–बडे गजदन्तों जैसे ये नागदन्त अतीव स्वच्छ, निर्मल यावत् अतिशय शोभाजनक है।"

THE PEGS OF THE GATES

123. In both the seats at the two sides of the gates, there are sixteen tusklike pegs each.

"O the blessed saints ! The rosaries of pearls and gold beads are hanging from those pegs. They are having small bells and small ringing stones. The front part is a little raised and is protruding from the wall. The other portion is tightly stuck into the wall and is serpentine in shape. The front portion is like half-snake. They are made of Vajra jewels. They are like huge tusk. They are exquisitely pure clean and attractive."

१२४. तेसु णं णागदंतएसु बहवे किण्हसुत्तबद्धा वग्घारितमल्लदामकलावा णील–लोहित–हालिद्द–सुक्किलसुत्तबद्धा वग्घारितमल्लदामकलावा। ते णं दामा तवणिज्जलंबूसगा, सुवन्नपयरगमंडिया णाणाविहमणिरयणविविह–हारउवसोभियसमुदया जाव सिरीए अईव अईव उवसोभेमाणा चिट्ठंति।

१२४. उन नागदन्तों पर बहुत से काले सूत से गुँथी हुई तथा इसी प्रकार नीले, लाल, पीले और सफेद डोरे से गुँथी हुई लम्बी-लम्बी मालाएँ लटक रही हैं। वे मालाएँ सोने के झुमकों और सोने के पत्तों से परिमंडित तथा नाना प्रकार के मणि-रत्नो से रचित विविध प्रकार के शोभनीक हारों-अर्धहारों के समुदय से अपनी श्रीशोभा से अतीव-अतीव उपशोभित हैं।

124. Many long garlands knitted with black, blue, red, yellow and white thread are hanging from the pegs. Those garlands are studded with golden rings and golden leaves The pegs are shining due to gems and jewels—studded garlands and semi-circular garlands and rosaries hanging from them adding to their beauty.

१२५. तेसि णं णागदंताणं उवरि अन्नाओ सोलस-सोलस नागदंतपरिवाडीओ पन्नत्ता, ते णं णागदंता तं चेव जाव गयदंतसमाणा पन्नत्ता समाणाउसो।

तेसु णं णागदंतएसु बहवे रययामया सिक्कगा पन्नत्ता, तेसु णं रययामएसु सिक्कएसु बहवे वेरुलियामईओ धूवघडीओ पण्णत्ताओ।

ताओ णं धूवघडीओ कालागुरु-पवरकुंदरुक्क-तुरुक्कधूवमघमघंत-गंधुद्धुयाभिरामाओ सुगंधवरगंधियाओ गंधवट्टिभूयाओ ओरालेणं मणुण्णेणं मणहरेणं घाणमण-णिव्वुइकरेणं गंधेणं ते पदेसे सव्वओ समंता आपूरेमाणा आपूरेमाणा जाव चिट्ठंति।

१२५. इन नागदतो के भी ऊपर अन्य दूसरी सोलह-सोलह नागदन्तो की पक्तियाँ है। हे आयुष्मन् श्रमणो ! पूर्व वर्णित नागदतो की तरह ये नागदत भी रमणीय विशाल गजदतो के समान हैं।

इन नागदन्तों पर बहुत से रजतमय शींके (छीके) लटके है। इन प्रत्येक रजतमय शींको में वैडूर्यमणियों से बनी हुई धूप घटिकाएँ (धूपदानियाँ) रखी है।

ये धूपघटिकाएँ काले अगर, श्रेष्ठ कुन्दरुष्क, तुरुष्क (लोभान) और सुगंधित धूप के जलने से उत्पन्न मघमघाती मनमोहक सुगन्ध के उडने एव उत्तम सुरभिगध की अधिकता से गधवर्तिका (अगरबत्ती) के जैसी प्रतीत होती हैं तथा सर्वोत्तम, मनोज्ञ, मनोहर गध से नासिका और मन को तृप्ति देती हुई उस प्रदेश को सब तरफ से सुवासित कर रही है।

125. Above those pege there are rows of sixteen-sixteen pegs each. These pegs are also shining like pegs described earlier and are looking like huge tusks.

On the pegs are hanging many silvery swings. In every swing there are incense stands made of Vaidurya gems.

The incense vessels are looking like fragrant incense sticks due to attractive fragrance and excellent pleasing smell caused in abundance by burning of black agar, best kundrushk (a fragrant substance used as incense), benzoin and fragrant dhoop. It is pleasant to the mind and nose due to excellent, grand and pleasing small. It is spreading its fragrance in that area.

द्वार पर स्थित पुतलियाँ

१२६. तेसि णं दाराणं उभओ पासे दुहओ णिसीहियाए सोलस सोलस सालभंजिया-परिवाडीओ पन्नत्ताओ।

ताओ णं सालभंजियाओ लीलट्ठियाओ, सुपइट्ठियाओ, सुअलंकियाओ, णाणाविहरागवसणाओ, णाणामल्लपिणद्धाओ, मुट्ठिगिज्झसुमज्झाओ, आमेल-गजमलजुयल-वट्टिय-अब्भुन्नय पीणरइयसंठिय-पीवरपओहराओ, रत्तावंगाओ, असियकेसीओ मिउविसयपसत्थ-लक्खणसंवेल्लियग्गसिरयाओ ईसिं असोगवरपायव-समुट्ठियाओ वामहत्थग्गहियग्गसालाओ ईसिं अद्धच्छिकडक्खचिट्ठएणं लूसमाणीओ विव चक्खुल्लोयणलेसेहि य अन्नमन्नं खिज्जमाणीओ विव पुढविपरिणामाओ, सासयभावमुवगयाओ, चंदाणणाओ चंदद्धसमणिडालओ, चंदाहियसोमदंसणाओ, उक्का विव उज्जोवेमाणाओ, विज्जघणमिरियसूरदिप्पंत-तेयअहिययरसन्निकासाओ सिंगारागार-चारुवेसाओ पासाइयाओ जाव चिट्ठंति।

१२६. उन द्वारों की दोनो बाजुओ की निशीधिकाओं (बैठकों) में सोलह-सोलह पुतलियो (शालभजिका) की पंक्तियाँ बनी हुई हैं।

ये पुतलियाँ विविध प्रकार की लीलाएँ-(क्रीड़ाएँ) करती हुई प्रतीत होती हैं। वे सब प्रकार के आभूषणों-अलंकारो से शृंगारित मनोज्ञ रूप से स्थित हैं। अनेक प्रकार के रंग-बिरगे परिधानों-वस्त्रो एव मालाओं से शोभायमान, मुट्ठी प्रमाण (मुट्ठी मे समा जाने योग्य) कृश-पतले कटि प्रदेश वाली, शिर पर ऊँचा अंबाडा-जूड़ा बाँधे हुए और समश्रेणि में स्थित हैं। वे परिपुष्ट-माँसल, पीवर-स्थूल पुष्ट पयोधरों वाली, कुछ लालिमायुक्त नयनो वाली, सुकोमल, अतीव निर्मल, शोभनीक सघन घुँघराली काली-काली कजरारी केशराशि वाली, उत्तम अशोक वृक्ष का सहारा लेकर खड़ी हुई और बायें हाथ से आगे की शाखा को

पकड़े हुए, अर्ध-निमीलित नेत्रों से किंचित् वक्र कटाक्ष-रूप चेष्टाओ द्वारा देवों के मनों को हरण करती हुई-सी और एक-दूसरे को देखकर परस्पर खेद-खिन्न होती हुई-सी हैं। मिट्टी से बनी होने पर भी शाश्वत-नित्य विद्यमान, अर्ध-चन्द्रतुल्य ललाट वाली, चन्द्र से भी अधिक सौम्य कांति वाली, उल्का-खिरते तारे के प्रकाश-पुँज की तरह उद्योत वाली-चमकीली, विद्युत् (मेघ की बिजली) की चमक एवं सूर्य के देदीप्यमान तेज से भी अधिक प्रकाश वाली, अपनी सुन्दर वेशभूषा से शृगार रस के गृह-जैसी और मन को प्रसन्न करने वाली यावत् अतीव रमणीय हैं।

THE PUPPETS AT THE GATES

126 On both sides of the gates there are rows of sixteen dolls each.

Those puppets are appearing as if they are performing aerobats They are properly decorated with ornaments of many types and are looking pleasant to the mind. They are having multi-coloured dresses and garlands. Their waist is so thin that it could be completely held in a hand. They are having high bunch of hair well tied. They are in a row. They are well-built. They are having thick light breasts. Their eyes are having a little luster. Their hair are soft, very clean, thick, curly and black. They are standing with the support of unique Ashok tree and holding the front branch in their left hand. Their eyes are half-closed and appear to make aromatic look to attract gods. Casting their look at each other they appear to be a bit dejected. They are made of earth. But they are everlasting, having forehead like a semi-circle. They are more bright than the moon. They shine like dropping star. They are brighter than the lightening and the mid-day sun. Due to their beautiful dress they are epitome of beauty, pleasant to the mind and extremely attractive.

१२७. तेसि णं दाराणं उभओ पासे दुहओ णिसीहियाए सोलस सोलस जालकडगपरिवाडीओ पन्नत्ता, ते णं जालकडगा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा।

१२७. इन द्वारों की दोनो बाजुओ की दोनो निषीधिकाओं में सोलह-सोलह जालकटक (जाली झरोखे या यवनिका) हैं, ये झरोखे सर्वरत्नमय, निर्मल यावत् रमणीय हैं।

127. There are jewel-studded and clean sixteen barred windows in the two places for study at the sides of the doors.

१२८. तेसि णं दाराणं उभओ पासे दुहओ निसीहियाए सोलस सोलस घंटापरिवाडीओ पन्नत्ता, तासि णं घंटाणं इमेयारूवे वन्नावासे पन्नत्ते, तं जहा–

जंबूणयामईओ घंटाओ, वयरामयाओ, लालाओ णाणामणिमया घंटापासगा, तवणिज्जामइयाओ संखलाओ, रययामयाओ रज्जूओ।

ताओ णं घंटाओ ओहस्सराओ, मेहस्सराओ, हंसस्सराओ, कोंचस्सराओ, सीहस्सराओ, दुंदुहिस्सराओ, णंदिघोसाओ, मंजुस्सराओ, मंजुघोसाओ, सुस्सराओ, सुस्सरघोसाओ उरालेणं मणुन्नेणं मणहरेणं कन्नमण–निव्वुइकरेणं सद्देणं ते पदेसे सव्वओ समंता आपूरेमाणाओ आपूरेमाणाओ जाव चिट्ठंति।

१२८. इन द्वारो की दोनों बाजु की दोनो निषीधिकाओं में सोलह-सोलह घटाओ की पक्तियॉ बनी है। उन घटाओ का वर्णन इस प्रकार है–

वे प्रत्येक घटे जाम्बूनद स्वर्ण से बने हुए है, उनके लोलक (पेडुलम) वज्र रत्नमय है, भीतर और बाहर दोनो बाजुओ मे विविध प्रकार के मणि जडे है, लटकाने के लिए बँधी हुई साँकले सोने की और रस्सियॉ चाँदी की है।

उन घटाओ का मधुर घोष ऐसा है जैसे मेघ की गडगडाहट, हस के स्वर, क्रौंच के स्वर, सिह की गर्जना, दुन्दुभिनाद, वाद्यसमूहनिनाद और नन्दिघोष हो। उस मजुस्वर, मजुघोष (मनोहर ध्वनि और मनोहर नाद), सुस्वर, सुस्वर घोष जैसी ध्वनि वाले वे घंटे अपनी श्रेष्ठ-सुन्दर मनोज्ञ, मनोहर कान और मन को प्रिय, सुखकारी झनकारो से उस प्रदेश को चारों ओर से व्याप्त करते हुए शोभायमान हो रहे है।

128. In the two places for study of scriptures on both the sides of the gates, their are rows of sixteen bells each. The description of the bells is as under—

Every bell is made of gold. They have Vajra jewelled pendulum. Gems are studded both in the inner and outer side. The pegs are of gold and strings are of silver against which they are hanging.

The sweet sound of the bells is like that of thundering clouds, the voice of the swan or cronch, the roaring of the lion, the sound of the lute, the sound emitted by a collection of musical instruments and the bell of Stanit Kumar god. That pleasant tune, pleasant sound, auspicious voice, auspicious sound produced by those bells is excellent, pleasing loveable to the ears and the mind and is causing

happiness when it rings. It fills that area from all sides. So the bells are graceful.

१२९. तेसि णं दाराणं उभओ पासे दुहओ णिसीहियाए सोलस सोलस वणमालापरिवाडीओ पन्नत्ताओ। ताओ णं वणमालाओ णाणामणिमय–दुमलयकिसलय–पल्लवसमाउलाओ छप्पयपरिभुज्जमाणसोहंत सस्सिरीयाओ पासाईयाओ, दरिसणिज्जाओ अभिरूवाओ पडिरूवाओ।

१२९. उन द्वारो की दोनों बाजुओं की दोनो निषीधिकाओ में सोलह–सोलह वनमालाओ की पक्तियाँ बनी हुई है। ये वनमालाये अनेक प्रकार की मणियो से निर्मित वृक्षों, पौधो, लताओं, किसलयों और पल्लवों–पत्तों से व्याप्त है। मधुपान के लिए बारम्बार–भ्रमरों के द्वारा स्पर्श किये जाने से सुशोभित ये वनलताये मन को प्रसन्न करने वाली, दर्शनीय, अभिरूप एव प्रतिरूप हैं।

129. On both sides of the gates, in Nisheedhikas (the places for study) there are rows of sixteen Van-maala each. They are made of gemmed trees, plants, creepers, leaves. Since been came to them to suck honey. Several times, these Vanlatas are pleasant to the mind worth-seeing and very beautiful

१३०. तेसि णं दाराणं उभओ पासे दुहओ णिसीहियाए सोलस सोलस पगंठगा पन्नत्ता।

ते णं पगंठगा अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं आयामविक्खंभेणं, पणवीसं जोयणसयं बाहल्लेणं, सव्ववयरामया अच्छा जाव पडिरूवा।

१३०. इन द्वारो की उभय पार्श्ववर्ती दोनो निषीधिकाओं मे सोलह–सोलह प्रकठक–(वेदिका रूप पीठ विशेष चबूतरा) बना है।

ये प्रत्येक प्रकठक (चबूतरा) अढाई सौ योजन लम्बे, अढाई सौ योजन चौडे और सवा सौ योजन मोटे हैं तथा सम्पूर्ण रत्नो से बने हुए, निर्मल यावत् अतीव रमणीय है।

130. There is a terrace at the backside of the gates and they are having sixteen small square platforms each.

Every platform is 250 yojans long, 250 yojans wide and 125 yojans thick. All of them are studded with gems. They are dustless and beautiful.

१३१. तेसि णं पगंठगाणं उवरिं पत्तेयं पत्तेयं पासायवडेंसगा पन्नत्ता।

ते णं पासायवडेंसगा अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, पणवीसं जोयणसयं विक्खंभेणं, अब्भुग्गयमूसिअ–पहसिया विव, विविहमणिरयणभत्तिचित्ता।

वाउद्धुयविजय–वेजयंत पडागच्छत्ताइछत्तकलिया, तुंगा, गगणतलमणुलिहंतसिहरा, जालंतररयणपंजरुम्मिलियव्व, मणिकणगथूभियागा, वियसियसयवत्तपोंडरीय–तिलगरयणद्धचंदचित्ता, णाणामणिदामालंकिया।

अंतो बहिं च सण्हा तवणिज्जवालुया–पत्थडा सुहफासा सस्सिरीयरूवा पासादीया दरिसणिज्जा जाव दामा।

१३१. उन प्रकण्ठकों (चबूतरों) के ऊपर एक–एक प्रासादावतंसक (सुन्दर महल) बना है।

ये प्रासादावतसक ऊँचाई में अढाई सौ योजन ऊँचे और सवा सौ योजन चौडे हैं, चारो दिशाओं मे व्याप्त अपनी प्रभा से हँसते हुए से प्रतीत होते है। विविध प्रकार के मणि–रत्नों से इनमे चित्र–विचित्र रचनाएँ बनी हुई है।

वे वायु से फहराती हुई, विजय को सूचित करने वाली वैजयन्ती–पताकाओं एव एक–दूसरे के ऊपर रहे हुए छत्रो से शोभित है। अत्यन्त ऊँचे होने से इनके शिखर मानो आकाशतल को छू रहे हैं। विशिष्ट शोभा के लिए जाली–झरोखों मे रत्न जडे हुए है। वे रत्न ऐसे चमकदार है मानो अभी–अभी पिटारो से निकाले हुए हो। मणियो और स्वर्ण से इनकी स्तूपिकाएँ–शिखर बने है तथा स्थान–स्थान पर विकसित शतपत्र एवं पुडरीक कमलों के चित्र और तिलक रत्नो से रचित अर्ध–चन्द्र के चित्र बने हुए हैं। वे नाना प्रकार की मणिमय मालाओं से अलकृत है।

भीतर और बाहर से चिकने–कमनीय हैं। आँगन मे स्वर्णमयी बालुका बिछी हुई है, इनका स्पर्श सुखप्रद है। रूप शोभा–सम्पन्न है। देखते ही चित्त मे प्रसन्नता होती है। यावत् मुक्तादामो आदि से सुशोभित है।

131. One beautiful palace is on each of those platforms.

These palaces are 250 yojans high and 125 yojans wide. Their brightness is spreading in all the four sides and they appear smiling. Many pictures made of gems are on them.

They are shining due to fluttering Vaijayanti flags and umbrella are one above the other indicating their success. Since they are

extremely high, their top appears to be touching the sky. Barred windows are studded with gems to increase their beauty. The jewels have such a shine as if they have just been taken out from the box. Their summits are made of gems and gold. The paintings of blossoming hundred-leaved lotus and Pundareek lotus, tilak gemmed half-moon are at several places. They are beautified by jewelled garlands of several types.

They are slippery and loveable both from inside and outside. Golden sound is spread in the courtyard whose touch is pleasant. Their shape is grand and attracts the heart at the very first look. This description should be considered upto that of Muktadama (garland of pearls).

विवेचन–'जाव दामा' पद से यह सूचित किया है कि यान विमान के प्रसग मे जिस तरह उसकी अन्तर्भूमि, प्रेक्षागृह मडप, रगमच, सिहासन, विजय-दूष्य, वज्राकुश एव मुक्तादामो का वर्णन पिछले सूत्रो मे किया है, उसी प्रकार समस्त वर्णन यहाँ भी समझ लेना चाहिए।

Elaboration—The words **'Jaav dama'** indicates that the description here should be considered to be similar to the one mentioned in earlier aphorisms about celestial aerial vehicle regarding its ground inside, the space for spectators, the hall, the stage, the throne, the cloth of success, the Vajra rod and garlands of pearls

द्वारों के उभय पार्श्ववर्ती तोरण

१३२. (१) तेसि णं दाराणं उभओ पासे सोलस सोलस तोरणा पन्नत्ता, णाणामणिमया णाणामणिमएसु खंभेसु उवणिविट्ठसन्निविट्ठा जाव पउम-हत्थगा।

१३२. (१) उन द्वारों के दक्षिण और वाम-दोनो बाजुओं मे सोलह-सोलह तोरण है। वे सभी तोरण नाना प्रकार के मणि-रत्नो से बने हुए हैं तथा विविध प्रकार की मणियों से निर्मित स्तम्भो के ऊपर अच्छी तरह बँधे है यावत् पद्म-कमलो के झुमको-गुच्छो से शोभित है।

FESTOONS ON BOTH SIDES OF VIMAN

132. (1) There are sixteen festoons each on both the sides (right and left) of the gates. All those festoons are made of gems and jewels and are tied well on pillars studded with gems. They are shining with bunches of Padma lotus.

(२) तेसि णं तोरणाणं पत्तेयं पुरओ दो-दो सालभंजियाओ पन्नत्ताओ, जहा हेट्ठा तहेव।

तेसि णं तोरणाणं पुरओ नागदंता पन्नत्ता, जहा हेट्ठा जाव दामा।

(२) उन तोरणों में से प्रत्येक के आगे दो-दो पुतलियाँ स्थित हैं। पुतलियों का वर्णन सूत्र ११८ के अनुसार जानना चाहिए।

उन तोरणों के आगे दो-दो नागदंत (खूँटे) हैं। मुक्तादाम पर्यन्त इनका वर्णन पूर्व वर्णित नागदन्तों के समान जानना चाहिए।

(2) There are two puppets in front of each of the said festoons. The description of puppets may be considered similar to that in aphorism 118.

There are two big pegs in front of each of these festoons. The description upto 'Mukta dama' in the present case should be considered similar to the earlier described pegs.

(३) तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो-दो हयसंघाडा, गयसंघाडा, नरसंघाडा, किन्नरसंघाडा, किंपुरिससंघाडा, महोरगसंघाडा, गंधव्वसंघाडा, उसभसंघाडा, सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा, एवं पंतीओ वीही मिहुणाइं।

तेसि णं तोरणाणं दो-दो पउमलयाओ जाव सामलयाओ, णिच्चं कुसुमियाओ सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा।

तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो-दो दिसा-सोवत्थिया पन्नत्ता, सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा।

(३) उन तोरणो के आगे दो-दो अश्व, गज, नर, किन्नर, किंपुरुष, महोरग, गन्धर्व और वृषभ संघाट-(युगल) बने हैं। ये सभी रत्नमय, निर्मल यावत् असाधारण रूप-सौन्दर्य वाले है। इसी प्रकार से इनकी पंक्ति (श्रेणी) वीथि और उनके सामने मिथुन-स्त्री-पुरुषयुगल बने हुए हैं।

उन तोरणों के आगे दो-दो पद्मलतायें यावत् अनेक प्रकार की श्यामलताएँ हैं। ये सभी लतायें पुष्पों से लदी हुई और रत्नमय यावत् मनोहर हैं।

उन तोरणों के अग्र भाग में दो-दो दिशा-स्वस्तिक रखे हैं, जो सर्वात्मना रत्नों से बने हुए, निर्मल यावत् अतीव मनोहर हैं।

(3) In front of those festoons, there are horses, elephants, men, kinnar, kimpurush, mahorag, gandharv (the demon gods) and

bullocks—two each made of gems. They are clean unique and very beautiful. Similarly their row is made and before them are men and women, in sexual activities.

In front of the festoons, there are Padmalatas two each and Shyamlatas of many types. All these creepers are laden with flowers. They are gemmed and grand.

In the front part of the festoons, there are two Swastiks each. They are fully made of gems and are dirtless.

(४) तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो-दो चंदणकलसा पन्नत्ता, ते णं चंदणकलसा वरकमलपइट्ठाणा तहेव।

तेसि णं तोरणाणं पुरओ भिंगारा पन्नत्ता, ते णं भिंगारा वरकमलपइट्ठाणा जाव महया मत्तगयमुहागितिसमाणा पन्नत्ता समणाउसो।

तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो-दो आयंसा पन्नत्ता, तेसि णं आयंसाणं इमेयारूवे वन्नावासे पन्नत्ते, तं जहा-तवणिज्जया पगंठगा, अंकमया मंडला, अणुग्घसितनिम्मलाए छायाए समणुबद्धा, चंदमंडलपडिणिकासा, महया महया अद्धकायसमाणा पन्नत्ता समणाउसो।

तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो-दो वइरनाभथाला पन्नत्ता, अच्छतिच्छडियसालि-तंदुलणहसं-दिट्ठपडिपुन्ना इव चिट्ठंति सव्वजंबूणयमया जाव पडिरूवा महया महया रहचक्कवालसमाणा पन्नत्ता समणाउसो।

(४) उन तोरणो के आगे दो-दो चन्दनकलश हैं। ये चन्दनकलश श्रेष्ठ कमलो पर स्थापित है, इत्यादि वर्णन पूर्ववत् समझ लेना चाहिए।

हे आयुष्मन् श्रमणो ! उन तोरणो के आगे दो-दो भृंगार (झारी) हैं। ये भृगार भी उत्तम कमलों पर रखे हुए हैं यावत् मत्त गजराज की मुखाकृति के समान विशाल आकार वाले हैं।

उन तोरणो के आगे दो-दो आदर्श-दर्पण रखे है। इन दर्पणों का वर्णन इस प्रकार है-हे आयुष्मन् श्रमणो ! इनकी पादपीठ सोने की है, प्रतिबिम्ब मण्डल अंक रत्न के हैं और अनघिसे होने (घिसे नहीं जाने) पर भी ये दर्पण अपनी स्वाभाविक निर्मल प्रभा से युक्त हैं। चन्द्रमण्डल सरीखे ये निर्मल दर्पण ऊँचाई में कायार्ध (आधे शरीर) जितने बडे-बडे हैं।

उन तोरणों के आगे वज्रमय नाभि वाले (जिनका मध्य भाग वज्र रत्नों से निर्मित है) दो-दो थाल रखे हैं। ये सभी थाल मूसल आदि से तीन बार छाँटे गये, शोधे गये, स्वच्छ निर्मल अखण्ड तंदुल-चावलों से परिपूर्ण-भरे हुए से प्रतिभासित होते हैं। ये थाल जम्बूनद स्वर्ण से बने हुए यावत् अतिशय रमणीय और रथ के पहिये जितने विशाल गोल आकार के हैं।

(4) In front of the festoons, there are sandal pitchers two each placed in lotus of best quality. The description may be considered similar to that earlier mentioned.

O blessed Shramans ! In front of those festoons, there are auspicious jars two each. These jars are also placed on lotus flowers of best quality. In shape they are huge like mouth of an intoxicated elephant.

There are two mirrors each in front of those festoons, their description is as under—O blessed saints ! Their back is of gold. The margin is of Ank gems. Although the mirrors are not refined, yet they possess natural clear shine They are as clean as moon circle and as big as half the size of man.

In front of the festoons, there are two plates, each gem-studded in the middle. All the plates have been properly straightened thrice with hammer, purified and appear to be completely filled with rice. They are made of pure gold and are very beautiful. They are as big as wheel of chariot and are circular in shape.

(५) तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो-दो पाईओ, ताओ णं पाईओ सच्छोदगपरिहत्थाओ, णाणाविहस्स फलहरियगस्स बहुपडिपुन्नाओ विव चिट्ठंति, सव्वरयणामईओ अच्छा जाव पडिरूवाओ महया महया गोकलिंजरचक्कसमाणीओ पन्नत्ताओ समणाउसो।

तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो-दो सुपइट्ठा पन्नत्ता णाणाविहभंडविरइया इव चिट्ठंति सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा।

तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो-दो मणोगुलियाओ पन्नत्ताओ, तासु णं मणोगुलियासु बहवे सुवन्न-रुप्पमया फलगा पन्नत्ता, तेसु णं सुवन्नरुप्पमएसु फलगेसु बहवे वयरामया नागदंतया पन्नत्ता, तेसु णं वयरामएसु णागदंतएसु बहवे वयरामया सिक्कगा पन्नत्ता, तेसु

णं वयरामएसु सिक्कगेसु किण्हसुत्तसिक्कगवच्छिया णीलसुत्तसिक्कगवच्छिया, लोहियसुत्तसिक्कगवच्छिया हालिद्दसुत्तसिक्कगवच्छिया, सुक्किल्लसुत्तसिक्कगवच्छिया बहवे वायकरगा पन्नत्ता सव्ववेरुलियमया अच्छा जाव पडिरूवा।

(५) उन तोरणों के आगे दो-दो पात्रियाँ (बर्तन) रखी हैं। ये पात्रियाँ स्वच्छ निर्मल जल से भरी हुई हैं और विविध प्रकार के ताजे हरे फलों से भरी हुई-सी प्रतिभासित होती हैं। ये सभी पात्रियाँ रत्नमयी, निर्मल यावत् अतीव मनोहर हैं और इनका आकार बड़े-बड़े गोकलिंजरों-गाय को घास रखने के टोकरो के समान गोल है।

उन तोरणों के आगे दो-दो सुप्रतिष्ठक पात्र (प्रसाधन-मजूषा या शृंगारदान) रखे हैं। प्रसाधन-शृंगार की साधनभूत औषधियों आदि से भरे हुए भांडों से सुशोभित हैं और सर्वात्मना रत्नो से बने हुए, निर्मल यावत् अतीव मनोहर हैं।

उन तोरणों के आगे दो-दो मनोगुलिकाएँ (बैठने की पीठिका-कुर्सी) हैं। इन मनोहर मनोगुलिकाओं पर अनेक सोने और चाँदी के पाटिये जडे हुए है और उन सोने और चाँदी के पाटियों पर वज्र रत्नमय नागदन्त (खूँटे) लगे है एव उन नागदन्तो के ऊपर वज्र रत्नमय छींके टँगे हैं। उन छीको पर काले, नीले, लाल, पीले और सफेद सूत के जालीदार वस्त्र खण्ड से ढँके हुए वातकरक (जल से रहित, कोरे घडे) रखे है। ये सभी वातकरक वज्र रत्नमय, निर्मल यावत् अतिशय सुन्दर हैं।

(5) Two small vessels each are in front of the festoons. They are full of pure clean water and appear to be filled with fresh green fruit of various types. These vessels are jewel-studded, clean and extremely beautiful. They are as round as big baskets meant for feeding grass to the cow.

There are decoration-boxes—two each in front of the festoons. They are full of small containers having articles for decorating the body. All of them are jewel-studded and upto extremely beautiful.

Two chairs each are in front of the festoons. Many gold and silver plates are studded on those beautiful chairs and silver pegs are fixed on them. Jewelled bunches are hanging from those pegs. Unused pitchers are placed in these bunches and they are covered with meshed cloth made of black, blue, red, yellow and white yarn. All these pitchers are jewel-studded, clean and extremely beautiful.

(६) तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो-दो चित्ता रयणकरंडगा पन्नत्ता, से जहाणामए रन्नो चाउरंतचक्कवट्टिस्स चित्ते रयणकरंडए वेरुलियमणि-फलिहपडलपच्चोयडे साते पहाते ते पदेसे सव्वतो समंता ओभासति उज्जोवेति तवति पभासति एवमेव ते वि चित्ता रयणकरंडगा साते पभाते ते पएसे सव्वओ समंता ओभासंति, उज्जोवेंति, तवंति पभासंति।

तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो-दो हयकंठा, गयकंठा, नरकंठा, किन्नरकंठा, किंपुरिसकंठा, महोरगकंठा, गंधव्वकंठा, उसभकंठा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा।

तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो-दो पुप्फचंगेरीओ, मल्लचंगेरीओ, चुन्नचंगेरीओ, गंधचंगेरीओ, वत्थचंगेरीओ, आभरणचंगेरीओ, सिद्धत्थचंगेरीओ, लोमहत्थचंगेरीओ पन्नत्ताओ सव्वरयणामयाओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ।

(६) उन तोरणो के आगे चित्रामो से युक्त दो-दो (रत्नकरडक-रत्नो के पिटारे) रखे है। जिस तरह चातुरत चक्रवर्ती राजा का वैडूर्य मणि से बना हुआ एव स्फटिक मणि के पटल से ढँका हुआ अद्‌भुत-आश्चर्यजनक रत्नकरडक अपनी प्रभा से उस प्रदेश को पूरी तरह से प्रकाशित, उद्योतित, तापित (गर्मी देता है) और प्रभासित करता (चमकाता) है, उसी प्रकार ये रत्नकरडक भी अपनी प्रभा-काति से अपने निकटवर्ती प्रदेश को आलोकमय बना देते, प्रकाशित, उद्योतित (चमकता), तापित (गर्मी देना) और प्रभासित (दीप्त) करते हैं।

उन तोरणो के आगे दो-दो अश्वकठ (कठ पर्यन्त घोड़े की मुखाकृति, जैसे-रत्न-विशेष), गजकठ, नरकठ, किन्नरकंठ, किपुरुषकठ, महोरगकठ, गंधर्वकठ, वृषभकंठ (इनकी मुखाकृति के रत्न) रखे है। ये सब अश्वकठादिक सर्वथा रत्नमय, स्वच्छ, निर्मल यावत् असाधारण सुन्दर है।

उन तोरणो के आगे दो-दो पुष्प-चंगेरिकाएँ (फूलों से भरी छोटी-छोटी टोकरियाँ-डलियाँ), माल्यचगेरिकाएँ (माला की टोकरियाँ), चूर्ण (सुगन्धित चूर्ण) चगेरिकाएँ, गन्ध चगेरिकाएँ, वस्त्र चंगेरिकाएँ, आभरण (आभूषण) चंगेरिकाएँ, सिद्धार्थ (सरसों) की चगेरिकाएँ एव लोमहस्त (मयूरपिच्छ) चंगेरिकाएँ रखी हैं। ये सभी टोकरियाँ रत्नों से बनी हुई, निर्मल यावत् प्रतिरूप-अतीव मनोहर हैं।

(6) Two jewel boxes each are in front of the festoons. The unique jewel box of Chakravarti (king Emperor) is made of Vaidurya jewels. It is covered with plate studded with crystal gems. It

provides brightness, shine and warmth to the entire area. Similarly these jewel boxes with their luster brighten the entire area and provide warmth and shine to it.

Two horse shaped jewels each are in front of the festoons. There are also two jewels each of the shape of neck of an elephant, a man, of kinnar, of kimpurush, of mahorag, of gandharv and of bullock. All the said jewels are totally studded, pure, clean and unique.

In front of the festoons, there are flower-baskets, garland-basket, fragrant powder-baskets, fragrant-baskets, baskets containing clothes, containing ornaments, containing mustard and baskets containing mops made of peacock feather two each. They are all gem-studded, clean and upto extremely attractive.

(७) तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो-दो पुप्फपडलगाइं जाव लोमहत्थपडलगाइं सव्वरयणामयाइं अच्छाइं जाव पडिरूवाइं।

तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो-दो सीहासणा पण्णत्ता, तेसि णं सीहासणाणं वण्णओ जाव दामा।

तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो-दो रुप्पमया छत्ता पन्नत्ता, ते णं छत्ता वेरुलियविमलदंडा, जंबूणयकन्निया, वइरसंधी, मुत्ताजालपरिगया, अट्ठसहस्सवरकंचणसलागा, दद्दरमलयसुगंधिसव्वोउयसुरभिसीयलच्छाया, मंगलभत्तिचित्ता, चंदागारोवमा।

तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो-दो चामराओ पन्नत्ताओ, ताओ णं चामराओ चंदप्पभवेरुलियवयरनानामणिरयणखचियचित्तदण्डाओ सुहुमरययदीहवालाओ संखंककुंददगरयअमयमहियफेणपुंजसन्निगासाओ, सव्वरयणामयाओ, अच्छाओ जाव पडिरूवाओ।

तेसि णं तोरणाणं पुरओ दो-दो तेल्लसमुग्गा, पत्तसमुग्गा, चोयगसमुग्गा, तगरसमुग्गा, एलासमुग्गा, हरियालसमुग्गा, हिंगुलयसमुग्गा, मणोसिलासमुग्गा, अंजणसमुग्गा, सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा।

(७) उन तोरणों के आगे दो-दो पुष्पपटलक (फूलों के पिटारे) यावत् मयूरपिच्छपटलक रखे हैं। ये सब पटलक (पिटारे) रत्नमय, स्वच्छ, निर्मल यावत् प्रतिरूप हैं।

उन तोरणों के आगे दो-दो सिंहासन हैं। इन सिंहासनों का वर्णन मुक्तादामपर्यन्त सूत्र ४८, ४९, ५० तथा ५१ के समान कहना चाहिए।

उन तोरणों के आगे चाँदी के दो-दो छत्र हैं। इन रजतमय छत्रों के दण्ड वैडूर्य मणियों के हैं, कर्णिकाएँ (बीच का केन्द्र) सोने की हैं, संधियाँ (जोड़) वज्र की हैं, मोती पिरोई हुई आठ हजार सोने की सलाइयाँ (तानें) हैं तथा दद्दर चन्दन (दद्दर नामक पर्वत का चन्दन) और सभी ऋतुओं के पुष्पों की सुरभि से युक्त शीतल कान्ति वाले हैं। इन पर मंगलरूप स्वस्तिक आदि के चित्र बने हैं। इनका आकार चन्द्रमण्डलवत् गोल है।

उन तोरणों के आगे दो-दो चामर हैं। इन चामरो की डंडियाँ चन्द्रकांत वैडूर्य और वज्र रत्नो की हैं और उन पर अनेक प्रकार के मणि-रत्नों द्वारा विविध चित्र-विचित्र रचनाएँ बनी है, शख, अक रत्न, कुद पुष्प, जलकण और क्षीरोदधि के मथे हुए पुँज के समान फेन-पुँज श्वेत-धवल है, पतले लम्बे बाल है। ये सभी चामर सर्वथा रत्नमय, निर्मल यावत् प्रतिरूप-अनुपम शोभाशाली हैं।

उन तोरणो के आगे दो-दो तेलसमुद्गक (सुगन्धित तेल से भरे पात्र-डिब्बे), कोष्ठ (सुगन्धित द्रव्य) समुद्गक, पत्र-(तमाल के पत्ते) के समुद्गक, चोयसमुद्गक-(चन्दन और देवदार के बुरादे से बने सुगधित द्रव्य का पात्र), तगरसमुद्गक (सुगन्धित वृक्षों की छाल से भरे पात्र), एला (इलायची) समुद्गक, हरतालसमुद्गक, हिंगलुकसमुद्गक, मैनसिलरामुद्गक, अंजनसमुद्गक रखे हैं। ये सभी समुद्गक रत्नों से बने हुए, निर्मल यावत् अतीव मनोहर हैं।

(7) In front of the festoons, there are baskets of flowers and upto basket containing mops of peacock feathers two each. All these baskets are jewel-studded, clean, dirtless and very beautıful.

There are two thrones in front of each of the festoons. The description of thrones may be understood similar to that in aphorisms 48, 49, 50 and 51 upto garland of flowers.

There are two silver umbrellas each in front of the festoons. The silvery umbrellas are of Vaidurya gems. The central part is of gold. The joints are of Vajra jewels. It has eight thousand gold rods having pearls. The umbrellas are of strong sandal wood and are having fragrance and quiet beauty of the flowers of all seasons. The auspicious Swastikas are painted on them. They are as round as the moon.

There are two chamaras in front of each of the festoons. They have handles of Vaidurya jewels. Many sketches have been made on them with gems of various types. They are as white as conch, Ank jewels, kund flowers (Lilies), water drops and churned milky ocean. They have thick long hair. All these chamaras are studded with jewels, clean and upto having unique grandeur.

There are two tins each, full of fragrant oil in front of the festocns. There are also two tins each of tamal leaves, sandle wood and deodar wood powder, of busk of fragrant trees of curdaman, of yellow orpiment, of vermilion, of arsenic and of collyrium. All these tins are studded with jewels, clean and upto extremely attractive

द्वारस्थ ध्वजाओ का वर्णन

१३३. सूरियाभे णं विमाणे एगमेगे दारे अट्ठसयं चक्कज्झयाणं, अट्ठसयं मिगज्झयाणं, गरुडज्झयाणं, छत्तज्झयाणं, पिच्छज्झयाणं, सउणिज्झयाणं सीहज्झयाणं, उसभज्झयाणं, अट्ठसयं सेयाणं चउविसाणाणं नागवरकेऊणं। एवमेव सपुव्वावरेणं सूरियाभे विमाणे एगमेगे दारे असीयं असीयं केउसहस्सं भवति इति मक्खायं।

१३३. सूर्याभ विमान के प्रत्येक द्वार के ऊपर चक्र, मृग, गरुड, छत्र, मयूरपिच्छ, पक्षी, सिह, वृषभ, चार दाँत वाले श्वेत हाथी और उत्तम नाग (सर्प) के चिन्हो वाली एक सौ आठ-एक सौ आठ ध्वजाये (प्रत्येक चिह्न की) फहरा रही है। इस तरह सब मिलाकर एक हजार अस्सी-एक हजार अस्सी ध्वजाये उस सूर्याभ विमान के प्रत्येक द्वार पर फहरा रही है।

DESCRIPTION OF FLAGS AT THE GATES

133. One hundred eight flags flutter at each of the gates of Suryabh Viman. These flags bear the Suryabh wheel, deer, eagle, umbrella, mop of peacock feathers, bird, lion, bullock, elephant having four tusks and unique snake. Thus in all one thousand eighty flags are fluttering at each of the gates of Suryabh Viman.

द्वारवर्ती भौमों का वर्णन

१३४. तेसि णं दाराणं एगमेगे दारे पण्णट्ठिं पण्णट्ठिं भोमा पन्नत्ता। तेसि णं भोमाणं भूमिभागा, उल्लोया च भाणियव्वा।

तेसि णं भोमाणं च बहुमज्झदेसभागे पत्तेयं पत्तेयं सीहासणे, सीहासणवन्नओ सपरिवारो, अवसेसेसु भोमेसु पत्तेयं पत्तेयं भद्दासणा पन्नत्ता।

१३४. उन द्वारों के एक-एक द्वार पर पैंसठ-पैंसठ भौम (दरवाजे के ऊपर का भवन-मेडी) बताये हैं। यान विमान की तरह ही इन भौमों के सम रमणीय भूमि भाग और उल्लोक (चन्देवों) का वर्णन करना चाहिए।

इन भौमों के बीचोबीच मे एक-एक सिंहासन रखा है। यान विमानवर्ती सिंहासन की तरह उसका सपरिवार वर्णन समझना चाहिए, अर्थात् उसके परिवार रूप सामानिक आदि देवो के भद्रासनो सहित इन सिहासनों का वर्णन जानना चाहिए। शेष आसपास के भौमों में भद्रासन रखे हैं।

DESCRIPTION OF STORAGE ABOVE THE GATES

134. There are sixty five storeys above each of the gates. The description of the levelled floors and cloth ceilings of these storeys should be considered as that of celestial aerial vehicle.

In the middle of these floors is a throne each. Its description should be considered similar to that of celestial aerial vehicle and its details. In other words, like the seals of gods of equal status and the family, the description of the thrones may be understood. In nearby other pieces of land, Bhadrasans have been placed.

१३५. तेसि णं दाराणं उत्तमागारा सोलसविहेहिं रयणेहिं उवसोभिया, तं जहा-रयणेहिं जाव रिट्ठेहिं।

तेसि णं दाराणं उप्पिं अट्ठट्ठमंगलगा सज्झया जाव छत्तातिछत्ता।

एवमेव सपुव्वावरेणं सूरियाभे विमाणे चत्तारि दारसहस्सा भवंतीति मक्खायं।

१३५. उन द्वारो के ओतरग (ऊपरी भाग पर लगा काष्ट) सोलह प्रकार के रत्नो से शोभित है। उन रत्नों के नाम इस प्रकार हैं-कर्केतन रत्न यावत् वज्र, वैडूर्य, लोहिताक्ष, मसारगल्ल, हसगर्भ, पुलक, सौगन्धिक, ज्योतिरस, अंक, अंजन, रजत, अंजनपुलक, जातरूप, स्फटिक और रिष्ट रत्न।

उन द्वारों के ऊपर स्वस्तिक आदि आठ-आठ मंगल अकित हैं जिन पर ध्वजाएँ और तीन छत्र शोभित हैं।

इस प्रकार सूर्याभ विमान में सब मिलकर चार हजार द्वार सुशोभित हो रहे हैं।

135. The wood of the upper part of these gates is shining with jewels of sixteen types. The names of those jewels are Karket, Vajra,

Lohitaksh, Masargalla, Hansagarbh, Pulak, Saugandhik, Jyotiras, Ank, Anjan, Rajat, Anjan-pulak, Jaatroop, Crystal (Sphatik) and Rist jewels.

Eight auspicious symbols namely Swastık and others are drawn on the gates. Three flags and three umbrellas and adding to their beauty.

Thus in all four thousand gates are beautifying Suryabh Viman.

विमान के वनखंडों का वर्णन

१३६. सूरियाभस्स विमाणस्स चउद्दिसिं पंच जोयणसयाइं अबाहाए चत्तारि वणसंडा पन्नत्ता, तं जहा—असोगवणे, सत्तवण्णवणे, चंपगवणे, चूयगवणे। पुरत्थिमेणं असोगवणे, दाहिणेणं सत्तवन्नवणे, पच्चत्थिमेणं चंपगवणे, उत्तरेणं चूयगवणे।

ते णं वणखंडा साइरेगाइं अद्धतेरस जोयणसयसहस्साइं आयामेणं, पंच जोयणसयाइं विक्खंभेणं, पत्तेयं पत्तेयं पागारपरिक्खित्ता।

किण्हा किण्होभासा, नीला नीलोभासा, हरिया हरियोभासा, सीया सीयोभासा, निद्धा निद्धोभासा, तिव्वा तिव्वोभासा, किण्हा किण्हच्छाया, नीला नीलच्छाया, हरिया हरियच्छाया, सीया सीयच्छाया, निद्धा निद्धच्छाया, घणकडितडियच्छाया, रम्मा महामेहनिकुरुंबभूया।.... ते णं पायवा मूलमंतो वणखंडवन्नओ।

१३६. उस सूर्याभ विमान के चारो ओर पाँच सौ-पाँच सौ योजन की दूरी पर चारो दिशाओ में चार वनखंड है-(१) पूर्व दिशा मे अशोकवन, (२) दक्षिण दिशा मे सप्तपर्णवन, (३) पश्चिम दिशा में चंपकवन, और (४) उत्तर दिशा मे आम्रवन।

ये प्रत्येक वनखंड साढे बारह लाख योजन से कुछ अधिक लम्बे और पाँच सौ योजन चौड़े हैं। प्रत्येक वनखंड एक-एक परकोटे से परिवेष्टित है।

ये सभी वनखंड अत्यन्त घने होने के कारण काले और काली आभा वाले, नीले और नीली आभा वाले, हरे और हरी कांति वाले, शीत स्पर्श और शीत आभा वाले, स्निग्ध-कमनीय और कमनीय कांति दीप्ति-प्रभा वाले, तीव्र प्रभा वाले तथा काले और काली छाया वाले, नीले और नीली छाया वाले, हरे और हरी छाया वाले, शीतल और शीतल छाया वाले, स्निग्ध और स्निग्ध छाया वाले हैं। वृक्षो की शाखा-प्रशाखाएँ आपस में एक-दूसरी से मिली होने के कारण अपनी सघन छाया से बड़े ही रमणीय तथा महामेघों के समूह जैसे सुहावने दिखते हैं।

इन वनखंडों के वृक्ष जमीन के भीतर गहरी फैली हुई जड़ों से युक्त हैं, इत्यादि वृक्षों का समग्र वर्णन औपपातिकसूत्र के अनुसार यहाँ करना चाहिए।

DESCRIPTION OF FOREST-REGIONS OF THE VIMAN

136. At a distance of 500 yojans on each side of Suryabh Viman, there are four forest-regions namely—(1) Ashok forest in the east, (2) Saptaparn forest in the south, (3) Champak forest in the west, and (4) Aamra forest in the north.

Each of these forest-regions is a little more than 1.25 million yojans long and 500 yojans wide. Every forest-region is covered with a boundary wall.

All the forest-regions are extremely thick and therefore appear to be black having black luster, blue having blue luster, green having green luster, of cool touch and cool aura, of smooth pleasing touch and smooth shadow. The branches and sub-branches of the trees are interlinked and therefore, because of thick shadow they appear very pleasant and good looking like cluster of clouds.

The trees of these forest-regions have deep widely spread roots. The description of the trees may be considered similar to that in Aupapatik Sutra

विवेचन—औपपातिकसूत्र मे वनखड के वृक्षो का जो वर्णन किया गया है यह वर्णन—उद्यानविज्ञान और वनस्पतिविज्ञान की दृष्टि से भी महत्त्वपूर्ण है। सक्षेप मे वह वर्णन इस प्रकार है—

"इन वनखडो के वृक्ष जमीन के अन्दर विस्तृत गहरे फैले हुए मूल, कन्द, स्कन्ध, त्वचा, शाखा, प्रशाखा, प्रवाल, पत्र, पुष्प, फल, बीज से युक्त है। छतरी के समान इनका रमणीय गोल आकार है। इनके स्कन्ध ऊपर की ओर उठी हुई अनेक शाखा-प्रशाखाओ से शोभित है और इतने विशाल एव वृत्ताकार (गोल) है कि अनेक पुरुष मिलकर भी अपने फैलाये हुए हाथो से उन्हे घेर नही पाते। पत्ते इतने घने है कि बीच मे जरा भी अन्तर दिखलाई नही देता है। पत्र-पल्लव सदैव नवीन जैसे दिखते है। कोपले अत्यन्त कोमल है और सदैव सर्व ऋतुओ के पुष्पो से व्याप्त है तथा झुके हुए, विशेष झुके हुए, पुष्पित, पल्लवित गुल्मित, गुच्छित (गुच्छे बने हुए), विनमित, प्रणमित झुके हुए होकर मजरी रूप शिरोभूषणों से अलंकृत रहते है। तोता, मयूर, मैना, कोयल, नदीमुख, तीतर, बटेर, चक्रवाल, कलहंस, बतख, सारस आदि अनेक पक्षी-युगलो के मधुर स्वरो से गूँजते रहते है। अनेक प्रकार के गुच्छों और गुल्मों (बेलों) से निर्मित मंडप आदि से सुशोभित हैं। नासिका और मन को तृप्ति देने वाली सुगध से महकते रहते हैं। इस प्रकार ये सभी वृक्ष सुरम्य, प्रासादिक दर्शनीय, मनोहर एव विशिष्ट शोभा-संपन्न है।"

Elaboration—The description of trees of the forest-region in Aupapatik Sutra is very important in the context of science of horticulture and botany. In brief, the description is as follows—

"The trees of these forest-region are very deep having widely spread roots. They are having bulbous, roots, trunk, bark, branches, sub-branches, leaves, flowers, fruit and seeds. They are round in shape like an umbrella. Their trunk is full of branches and sub-branches, projecting upwards Their trunk is so big and round that even men with their joined hands cannot surround it. Leaves are so thick that no space appears to be in existence between them The leaves and buds always look fresh. The buds are extremely soft. They are always having flowers of all seasons. They are bent downwards, specially bent, flowered, budded, bunched and being bent they look like having head-ornaments. They are echoing with the sounds made by parrots, peacocks, maina, nightingale, nandimukh, quails, partridges, charawal, kal swan, duck, cranes and others. Many natural covered spaces have been formed due to bunches and creepers They are fragrant with sweet and healthy smell Thus all the trees are bright pleasant worth-seeing, grand and attractive.

१३७. तेसि णं वणसंडाणं अंतो बहुसमरमणिज्जा भूमिभागा पण्णत्ता, से जहानामए आलिंगपुक्खरे ति वा जाव णाणाविह पंचवण्णेहिं मणीहि च तणेहि य उवसोभिया, तेसि णं गंधो फासो णेयव्वो जहक्कमं।

१३७. उन वनखंडों के मध्य मे अति सम रमणीय भूमिभाग (समतल मैदान) है। वे मैदान आलिग पुष्कर (मृदंग नामक बाजे के मुँह पर मँढे चमडे के समान) समतल यावत् नाना प्रकार के रग-बिरगे पचरगे मणियों और तृणों से उपशोभित है। इन मणियों के गध और स्पर्श यथाक्रम से पूर्व मे किये गये मणियों के गध और स्पर्श के वर्णन के समान जानना चाहिए।

137. In the centre of the forest-regions, there are level grounds. Those grounds are finely levelled like leather on the face of a drum. They are shining with coloured jewels and grass. The fragrance and touch of these gems may be considered as those described earlier.

मणियों और तृणों की ध्वनियाँ

१३८. (प्रश्न) तेसि णं भंते ! तणाण य मणीण य पुव्वावर-दाहिणुत्तरागतेहिं वाएहिं मंदायं मंदायं एइयाणं वेइयाणं कंपियाणं चालियाणं फंदियाणं घट्टियाणं खोभियाणं उदीरियाणं केरिसए सद्दे भवति ?

१३८. "हे भदन्त ! पूर्व, पश्चिम, दक्षिण और उत्तर दिशा से आते वायु के स्पर्श से मंद-मद हिलने-डुलने से कँपने, डगमगाने, फरकने, टकराने, क्षुभित-विचलित और उदीरित-प्रेरित होने पर उन तृणों और मणियों की कैसी शब्द-ध्वनि होती हैं ?"

SOUNDS OF GEMS AND GRASS (TRIN)

138. "Reverend Sir ! What type of sound is emitted by the morning, trembling, fluttering, blowing gems and grass when the wind from east, south, west and north touches it ?"

१३९. (उत्तर) गोयमा ! से जहानामए सीयाए वा, संदमाणीए, वा रहस्स वा सच्छत्तस्स सज्झयस्स, सघंटस्स, सपडागस्स, सतोरणवरस्स सनंदिघोसस्स, सखिंखिणि-हेमजालपरिक्खित्तस्स, हेमवयचित्ततिणिस-कणगणिज्जुत्तदारुयायस्स, सुसंपनिद्धचक्कमंडलधुरागस्स, कालायससुकयणेमिजंतकम्मस्स आइण्णवर-तुरगसुसंपउत्तस्स।

कुसलणरच्छेयसारहि-सुसंपरिग्गहियस्स, सरसबत्तीसतोणपरिमंडियस्स सकंकडावयंगस्स, सचाव-सर-पहरण-आवरणभरिय-जोधजुज्झसज्जस्स।

रायंगंसि वा रायंतेउरंसि वा रम्मंसि नवा मणिकुट्टिमतलंसि अभिक्खणं अभिक्खणं अभिघट्टिज्जमाणस्स वा नियट्टिज्जमाणस्स वा ओराला मणुण्णा मणोहरा कण्णमण-निवुइकरा सद्दा सव्वओ समंता अभिणिस्सवंति।

भवेयारूवे सिया ?

णो इणट्ठे समट्ठे।

१३९. "हे गौतम ! जिस तरह शिविका-(डोली, पालकी) अथवा स्यन्दमानिका (बहली-सुखपूर्वक एक व्यक्ति के बैठने योग्य घोडा जुता यान-विशेष) अथवा वह रथ, जो छत्र, ध्वजा, घटा, पताका और उत्तम तोरणो से सुशोभित हो, मिले हुए बाजों के शब्द-निनाद करने वाले घुँघुरुओं एव स्वर्णमयी मालाओ से परिवेष्टित हो, हिमालय मे उत्पन्न अति निगड-(सघन) उत्तम तिनिश (बैंत) काष्ठ से निर्मित एवं सुव्यवस्थित रीति से लगाये गये आरो से उक्त पहियो और धुरा से सुसज्जित हो, सुदृढ उत्तम लोहे के पट्टों से सुरक्षित पट्टियों वाले, शुभ लक्षणो और गुणों से युक्त कुलीन अश्व जिसमे जुते हो।

रथ-संचालन-विद्या में अति कुशल, दक्ष सारथी द्वारा संचालित हो, एक सौ-एक सौ बाण वाले बत्तीस तूणीरों (तरकसों) से परिमंडित हो, कवच से आच्छादित अग्र-शिखर

भाग वाला हो, धनुष, बाण, प्रहरण, कवच आदि युद्धोपकरणों से भरा हो और युद्ध के लिए तत्पर-सन्नद्ध योद्धाओं के लिए सजाया गया हो।

ऐसा रथ बारंबार मणियों और रत्नो से बनाये गये फर्श वाले राजप्रांगण, अंतःपुर अथवा रमणीय प्रदेश मे आवागमन करे तो सभी दिशा-विदिशा में चारों ओर उत्तम, मनोज्ञ, मनोहर, कान और मन को आनन्दकारक मधुर शब्द-ध्वनि फैलती है।''

''हे भदन्त ! क्या इन रथादिकों की ध्वनि जैसी ही उन तृणो और मणियों की ध्वनि है ?''

''गौतम ! नहीं, यह उपमा सही नही है (उनकी ध्वनि तो इनसे भी विशेष मधुर है)।''

139. "O Gautam ! Just as a palanquin or a horse-ridden cart or a chariot decorated with umbrella, flag, bell, buntings and bright festoons, is decorated with small bells making sweet sound of musical instruments and golden garlands. Its wheel are made of cane of best quality and the wooden pegs are properly fastened upto the centre of the wheels The wheels are covered with strong iron of best quality. The horses driving it are having auspicious marks and quality belonging to a good breed

The charioteer is expert and dext in the mechanics of driving the chariot It is having thirty two quivers each having hundred arrows The front top part is covered with iron dress It is full of arrows, bows, iron coat, shields and other weapons used in war. It is described with warriors ready for the battle

When such a chariot moves again and again on jewelled and gem-studded courtyard of the palace, the royal harems or a picturesque regions, the excellent, pleasant, sweet, lovable, unique sound spreads in all directions "

"Reverend Sir ! Is the sound of these chariots similar to that of the said gems and grass ?"

"Gautam ! No. This illustration is not proper (Their sound is much more sweet than that of the chariot)."

१४०. से जहाणामए वेयालियवीणाए उत्तरमंदा मुच्छियाए अंके सुपइट्ठियाए कुसलनरनारि-सुसंपरिग्गहियाए चंदण सारनिम्मियकोणपरिघट्टियाए पुव्वरत्तावरत्तकालसमयंमि मंदायं मंदायं वेइयाए, पवेइयाए, चलियाए, घट्टिया,

खोभियाए, उदीरियाए ओराला, मणुण्णा, मणहरा, कण्णमण-निव्वुइकरा सद्दा सव्वओ समंता अभिनिस्सवंति।

भवेयारूवे सिया ? णो इणट्ठे समट्ठे।

१४०. "भदन्त ! क्या उन मणियो और तृणों की ध्वनि ऐसी है जैसी कि वादनकुशल नर या नारी मध्य रात्रि अथवा रात्रि के अन्तिम प्रहर मे चदन के सार भाग से रचित कोण (वीणा बजाने का दड, डाडी) के स्पर्श से उत्तर-मद मूर्च्छना वाली वैतालिक वीणा को गोद मे लेकर मद-मद ताड़ित, कम्पित, प्रकपित, चालित, घर्षित, क्षुभित और उदीरित किये जाने पर सभी दिशाओ एव विदिशाओ मे चारो ओर उदार, सुन्दर, मनोज्ञ, मनोहर, कर्णप्रिय एवं मनमोहक ध्वनि गूँजती है ?"

"गौतम ! नही, यह उपमा सही नहीं है। उन मणियो और तृणों की ध्वनि इससे भी अधिक मधुर है।"

140. "Reverend Sir ! Is the sound of gems and grass comparable to the expert musicians at mid night or in the last quarter of the night, who are having Vaitalik lute in their lap, strike against the lute made of best sandal wood that is able to produce soft sound with its touch. When the musician beats the lute softly and plays on it with his perfect skill, touching it properly and skillfully, it produces beautiful, attractive, pleasant, heartening sound in all the directions "

"Gautam ! No. This illustration does not befit here. The sound of jewels and grass is sweeter than that sound of lute."

१४१. से जहानामए किन्नराण वा, किंपुरिसाण वा, महोरगाण वा, गंधव्वाण वा, भद्दसालवणगयाणं वा, नंदणवणगयाणं वा, सोमणसवणगयाणं वा, पंडगवणगयाणं वा, हिमवंतमलयमंदर-गिरिगुहासमन्नागयाणं वा, एगओ सन्निहियाणं समागयाणं सन्निसन्नाणं समुवविट्ठाणं पमुइय-पक्कीलियाणं गीयरइ गंधव्वहसियमणाणं गज्जं पज्जं, कत्थं, गेयं पयबद्धं, पायबद्धं उक्खित्तं पायंतं मंदायं रोइयावसाणं सत्तसरसमन्नायं छद्दोसविप्पमुक्कं एक्कारसालंकारं अट्ठगुणोववेयं, गुंजाऽवंक-कुहरोवगूढं रत्तं तिट्ठाणकरणसुद्धं पगीयाणं, भवेयारूवे ?

१४१. "भगवन् ! तो क्या उनकी ध्वनि इस प्रकार की है, जैसे कि भद्रशालवन, नन्दनवन, सौमनसवन अथवा पांडुकवन या हिमवन, मलय अथवा मदर गिरि की गुफाओं

मे गये हुए एव एक स्थान पर एकत्रित, समागत, बैठे हुए और अपने-अपने समूह के साथ उपस्थित, हर्षोल्लासपूर्वक क्रीडा करने में तत्पर संगीत, नृत्य, नाटक, हास, परिहासप्रिय किन्नरो, किंपुरुषो, महोरगो अथवा गधर्वों के गद्यमय, पद्यमय, कथनीय, गेय, पदबद्ध, पादबद्ध, उत्क्षिप्त, पादान्त, मंद-मंद घोलनात्मक, जिनका अन्त रुचिकर और सुखकर हो ऐसे रोचितावसान-सुखान्त, मनमोहक सप्त स्वरों से समन्वित, षड्दोषों से रहित, ग्यारह अलंकारों और आठ गुणों से युक्त, गुंजारव से दूर-दूर के कोनों को कम्पित करने वाले राग-रागिनी से युक्त त्रि-स्थान-करण शुद्ध गीतों के मधुर बोल होते हैं ?''

141. "O Lord ! When kinnar, kimpurush, mahorag and gandharv—the demon-gods go into the caves of Bhadrashal forest, the Nandan forest, the Saumanas forest or the Panduk forest, the Him forest or in the caves of Malay mount or Mandar mountain, or sit together, join together or come together along with their group, and are ready to play in a spirit of joy or to engage themselves in music, dance, dramatic activities or buffoonery, they create music Their music is prose, poetic, worth-mentioning, worth-singing, harmonious, according to time, raised up and properly concluded and pleasant. It is properly timed with seven musical notes making it attractive. It is devoid of six mistakes. It possess eleven ornamented qualities and eight virtues It echoes from a great distance It contains music and musical notes that are pleasant to the ears. The pure musical notes rise from three places in harmony. Please tell me if the music of gems and grass is of this type ?"

१४२. हंता सिया।

१४२. गौतम ! हाँ। ऐसी ही मधुरातिमधुर ध्वनि उन मणियों और तृणो से निकलती है।

142. "Gautam ! Yes. The musical note produced by gems and grass is sweet like this and sweeter also "

विवेचन-यहाँ सूर्याभदेव के विमान के वनखण्डो मे बिछे रमणीय रत्नो और तृणो की होने वाली ध्वनियों का अत्यन्त अलकारपूर्ण रसमय वर्णन किया है। उपमाओ से बताया है कि उन मणियो व तृणो की मधुर ध्वनि कैसी होती है ? यहाँ तीसरी उपमा किन्नरो, गधर्वों के सगीत से दी गई है। चार देवनिकायो मे किन्नर, किंपुरुष, महोरग और गधर्व व्यतरनिकाय के देव है। ये सभी प्रशस्त गीत, सगीत, नृत्य एव नाट्य-कलाओ के प्रेमी होते है। बालसुलभ क्रीडा और हास-परिहास, कोलाहल करने मे इन्हें आनन्दानुभूति होती है। पुष्पों से बनाये हुए मुकुट, कुडल आदि इनके प्रिय आभूषण हैं। सर्व ऋतुओं के सुन्दर सुगधित पुष्पों द्वारा निर्मित वनमालाओ से इनके वक्षस्थल शोभित रहते है। ये अनेक प्रकार के

चित्र-विचित्र रंग-बिरंगे पंचरंगे परिधान पहनते है। ये सभी प्राय: सुमेरु पर्वत और हिमवंत आदि पर्वतों के रमणीय प्रदेशों में निवास करते हैं।

प्रस्तुत सूत्र मे संगीत के स्वर, दोष और गुणों की संख्या का संकेत करने के लिए **'सत्तसरसमन्नागयं, छद्दोसविप्पमुक्कं अट्ठगुणोववेयं'** पद दिये हैं। स्वरो आदि के नाम अनुयोगद्वारसूत्र के प्रथम भाग मे स्वर मडल सूत्र २६० आये हैं। पाठक वहाँ देखे।

Elaboration—The musical sounds produced by jewels and grass scattered on the forest-region of the Viman of Suryabh Dev has been described in a completely picturesque and beautiful manner. By illustration, it has been stated how sweet is the sound produced by the jewels and grass. The third illustration is of the music of musician gods-kinnars and gandharvas. Out the gods of four types, the kinnar, kimpurush, mahorag and gandharv belong to Vyantar gods category. They are lovers of music, vocal music and dance of good quality They feel ecstatic pleasures in childlike games, in jokes and in making noise Their ornaments are mukut made of flowers, ear-rings and others. They wear garalnds of fragrant beautiful flowers of all seasons at their chest. They are dressed up in multi-coloured clothes of many types-prevalent or newly drawn out Normally all of them reside at beautiful places in Sumeru and Himvant mountains

In the present aphorism, the words **'Sattasar samannagayam, chhaddosavippamukkam atthagunovaveyam'** have been used to point out the number of musical notes, their faults and their qualities. The names of the musical notes can be seen in Anuyogdvar Sutra, Part I in Sutra 260 dealing with musical notes.

वनखंडवर्ती वापिकाओं आदि का वर्णन

१४३. तेसि णं वणसंडाणं तत्थ तत्थ तहिं तहिं देसे देसे बहूईओ खुड्डा खुड्डियाओ वावीयाओ, पुक्खरिणीओ, दीहियाओ, गुंजालियाओ, सरपंतियाओ, सरसरपंतियाओ, बिलपंतिओ।

अच्छाओ सण्हाओ रययामयकूलाओ, समतीराओ वयरामय-पासाणाओ तवणिज्जतलाओ, सुवण्णसुज्झरयय-वालुयाओ वेरुलियमणि-फालियपडलपच्चोयडाओ, सुहोयारसुउत्ताराओ, णाणामणि-तित्सुबद्धाओ।

चउक्कोणाओ, आणुपुव्व-सुजातवप्पगंभीर-सीयलजलाओ, संछन्नपत्तभिसमुणालाओ, बहुउप्पल-कुमुय-नलिण-सुभगसोगंधियपोंडरीयसयवत्तसहस्सपत्त-केसरफुल्लोवचियाओ

छप्पय-परिभुज्जमाणकमलाओ, अच्छविमल-सलिलपुण्णाओ, पडिहत्थभमंतमच्छकच्छभ-अणेग सउण-मिहुणग-पविचरिताओ।

पत्तेयं पत्तेयं पउमवरवेदियापरिक्खित्ताओ, पत्तेयं पत्तेयं वणसंडपरिक्खित्ताओ।

अप्पेगइयाओ आसवोयगाओ, अप्पेगइयाओ वारुणोयगाओ, अप्पेगइयाओ खीरोयगाओ, अप्पेगइयाओ घओयगाओ, अप्पेगइयाओ खोदोयगाओ, अप्पेगइयाओ पगतीए उयगरसेणं पण्णत्ताओ।

पासादीयाओ दरिसण्णिज्जाओ अभिरूवाओ पडिरूवाओ।

१४३. उन वनखडों में जहाँ-तहॉ स्थान-स्थान पर अनेक छोटी-छोटी चौरस वापिकाये-बावडियाँ, गोल पुष्करिणियाँ, दीर्घिकाये (सीधी बहती नदियाँ), गुजालिकाये (टेढी-तिरछी-बाँकी बहती नदियाँ), फूलों से ढँकी हुई सरोवरों की पक्तियाँ, सर-सर पंक्तियाँ (पानी के प्रवाह के लिए नहर द्वारा एक-दूसरे से जुडे हुए तालाबो की पक्तियाँ) एव बिल पक्तियॉ-कुओ की कतारे बनी हुई हैं।

इन सभी वापिकाओ आदि का बाहरी भाग स्फटिक मणि की भाँति अतीव निर्मल, स्निग्ध-कमनीय है। इनके तट रजतमय हैं और तटवर्ती भाग अत्यन्त सम-चौरस है। ये सभी जलाशय वज्ररत्नरूपी पाषाणो स बने हुए हैं। इनके तलभाग (भूतल-दि सरफेस ऑफ दि अर्थ) तपनीय लाल स्वर्ण से निर्मित है तथा उन पर शुद्ध स्वर्ण और चाँदी की बालू बिछी है। तटो के समीपवर्ती ऊँचे प्रदेश (मुँडेर) वैडूर्य और स्फटिक मणि-पटलो के बने है। इनमे उतरने और निकलने के स्थान सुखकारी हैं। घाटो पर अनेक प्रकार की मणियाँ जडी हुई है।

चार कोनो वाली वापिकाओ और कुओं में अनुक्रम से नीचे-नीचे पानी अगाध एव शीतल है तथा कमलपत्र, भिस-(कमलकद) और मृणालो से ढँका हुआ है। ये सभी जलाशय विकसित-खिले हुए उत्पल, कुमुद, नलिन, सुभग, सौगधिक, पुडरीक, शतपत्र तथा सहस्र-पत्र आदि नाना जाति के कमलो से सुशोभित हैं और उन पर पराग-पान के लिए भ्रमरो के समूह गुंजारव कर रहे है। ये स्वच्छ-निर्मल जल से भरे हुए है। कल्लोल करते हुए मगरमच्छ, कछुआ आदि बेरोकटोक इधर-उधर घूम-फिर रहे है और अनेक प्रकार के पक्षिसमूह वहाँ आते-जाते विहार करते रहते है।

ये सभी जलाशय एक-एक पद्मवरवेदिका और एक-एक वनखंड (बगीचों) से परिवेष्टित हैं।

इन जलाशयों में से किसी में आसव (मदिरा) जैसा, किसी में वारुणोदक (वारुण समुद्र के जल) जैसा, किसी में क्षीरोदक (क्षीर समुद्र के जल) जैसा, किसी मे घी जैसा, किसी में इक्षुरस जैसा और किसी-किसी में प्राकृतिक-स्वाभाविक पानी जैसा स्वाद वाला पानी भरा है।

ये सभी जलाशय मन को प्रसन्न करने वाले, दर्शनीय, अभिरूप और प्रतिरूप हैं।

DESCRIPTION OF LAKES IN FOREST-REGIONS

143. Small square-type lakes, round pushkarnies straight flowing canals, oblique, slanting channels of water, the rows of tanks covered with flowers, the rows of tanks joined with one another and to the canal for proper flow of water and the rows of wells are in the forest-region at many places.

All the lakes are crystal clear and exquisitely clean and smooth from outside. Their bank is of silver and the bank portion is levelled and squre-like. All these water closets are made of gem type stones. The surface of the earth is of burnt red gold. The pure silver dust and gold dust is scattered (spread) on it. The raised sides of the banks are of Vaidurya gems. The places for going down and coming out are easy. Many jewels are studded at the bathing places (ghaat).

The water in the four cornered lakes and circular wells is deeper and deeper as one goes down and is also cool. It is covered with lotus leaves, lotus filament and lotus stem. All these water tanks are looking bright due to various types of lotus namely blue lotus, white lotus, ordinary lotus, subhag, fragrant lotus, special type of white lotus, hundred-leaved lotus, thousand-leaved lotus and of other types. The bees move around to taste their fragrant dust. The wells are full of pure clean water. The crocodiles, tortoise and other such animals, freely move hither and other enjoying it. Many flocks of birds come there while flying from distance.

All these lakes are surrounded by platform and orchard one each.

Some of these lakes have wine-like water, some sea water, some sweet milky water, some ghee-like water, some sugar-cane juice type water and some have water of natural taste.

All these lakes and wells are pleasant to the mind, worth-seeing and beautiful.

१४४. तासि णं वावीणं जाव बिलपंतीण पत्तेयं पत्तेयं चउद्दिसिं चत्तारि तिसोपाणपडिरूवगा पण्णत्ता, तेसि णं तिसोपाणपडिरूवगाणं अयमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तं जहा–वइरामया नेमा.... तोरणाणं छत्ताइछत्ता य णेयव्वा।

१४४. उन प्रत्येक वापिकाओं यावत् कूप-पंक्तियों की चारों दिशाओं में तीन-तीन सुन्दर सोपान बने हुए हैं। इन त्रिसोपान प्रतिरूपकों (तीन पगथियों की सुन्दर निसैनी) का वर्णन इस प्रकार है, जैसे–उनकी नेमें (वेदिका का ऊपरी भाग कुर्सी) वज्र रत्नों की हैं इत्यादि तोरणों, ध्वजाओ और छत्रातिछत्रो पर्यन्त इनका वर्णन पूर्ववत् समझना चाहिए।

144. Three stairs each are in all the four sides of the lake. Their description is as follows—Their seats are gem-studded. The description of festoons, flags, umbrellas be considered similar to that mentioned earlier.

१४५. तासि णं खुड्डाखुड्डियाणं वावीणं जाव बिलपंतियाणं तत्थ–तत्थ तहिं–तहिं बहवे उप्पायपव्वयगा, नियइपव्वयगा, जगईपव्वयगा दारुइज्जपव्वयगा, दगमंडवा, दगमंचगा, दगपासायगा, दगमालगा, उसड्डा खुड्डखुड्डगा अंदोलगा पक्खंदोलगा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा।

१४५. उन छोटी-छोटी वापिकाओ यावत् कूप-पंक्तियो के बीच के प्रदेशो में बहुत से उत्पातार्वत, नियतिपर्वत, जगतीपर्वत, दारुपर्वत तथा कितने ही ऊँचे-नीचे, छोटे-बडे दकमडप, दकमच, दकमालक, दकप्रासाद बने हुए हैं तथा कहीं-कही पर झूलने के लिए झूले-हिंडोले पडे है। ये सभी पर्वत आदि सर्वरत्नमय अत्यन्त निर्मल यावत् असाधारण रूप से सम्पन्न हैं।

145. In the area between those several lakes and rows of wells, there are many utpat mountains, niyati mountains, jagati mountains, daru mountains and high and low, small and big, platforms, benches, pleasure-gardens, water-palaces. At some places there are swings also. All these mountains look totally dirt-free, unique and gemmed.

विवेचन–सूत्र में वापिकाओं आदि के अन्तरालवर्ती स्थानो मे आये हुए जिन पर्वतो आदि का वर्णन किया है, उनका स्पष्टीकरण इस प्रकार है–

उत्पातपर्वत–ऐसे पर्वत जहाँ सूर्याभ विमानवासी देव-देवियाँ विविध प्रकार की चित्र-विचित्र क्रीडाओं के निमित्त अपने-अपने उत्तर वैक्रिय शरीरों की रचना करते है।

नियतिपर्वत–इन पर्वतो पर सूर्याभ विमानवासी देव-देवियाँ अपने-अपने भवधारणीय (मूल) वैक्रिय शरीरो से क्रीडा करते हैं।

जगतीपर्वत–इन पर्वतो का आकार कोटे-परकोटे जैसा होता है।

दारुपर्वत–दारु अर्थात् काष्ठ-लकडी। लकडी से बने पर्वत जैसे आकार वाले कृत्रिम पर्वत।

दकमंडप–स्फटिक मणियो से निर्मित मडप अथवा ऐसे मंडप जिनमे फुव्वारों द्वारा कृत्रिम वर्षा की रिमझिम-रिमझिम फुहारें बरसती रहती है।

दकप्रासाद–जल-महल।

दकमालक–स्फटिक मणियो से बने हुए घर के ऊपरी भाग मे बने हुए कमरे–मालिये।

Elaboration—The clarification about the mountains mentioned at the intervening spaces between the lakes is as under—

Utpat Mountains—Such mountains where gods of Suryabh Viman create bodies to participate in various types of sports.

Niyati Parvat—On these mountains the gods of Suryabh Dev sport with their original body

Jagati Parvat—The shape of these mountains is that of a boundary wall

Daru Parvat—These mountains are like artificial mountains made of wood

Dak-Mandap—Ground made of crystal jewels or such areas where fountains create artificial rain and it rains slowly.

Dak-Prasad—Water-palace

Dak-Malak—Rooms in the upper storey of this house made of crystal gems.

उत्पात पर्वतों आदि की शोभा

१४६. तेसु णं उप्पाय-पव्वएसु पक्खंदोलएसु बहूइं हंसासणाइं, कोंचासणाइं, गरुलासणाइं, उण्णयासणाइं, पणयासणाइं, दीहासणाइं, भद्दासणाइं, पक्खासणाइं, मगरासणाइं, उसभासणाइं, सीहासणाइं, पउमासणाइं, दिसासोवत्थियाइं सव्वरयणामयाइं अच्छाइं जाव पडिरूवाइं।

१४६. उन उत्पातपर्वतों व पक्षिहिंडोलों आदि पर सर्वरत्नमय, निर्मल यावत् अतीव मनोहर अनेक हंसासन (हंस जैसी आकृति वाले आसन), क्रौंचासन, गरुडासन, उन्नतासन (ऊपर की ओर उठे हुए आसन), प्रणतासन (नीचे की ओर झुके हुए आसन), दीर्घासन (शय्या जैसे लम्बे आसन), भद्रासन, पक्ष्यासन, मकरासन, वृषभासन, सिंहासन, पद्मासन और दिशास्वस्तिक आसन पक्षी, मगर, वृषभ, सिंह, कमल और स्वस्तिक के चित्रामों से सुशोभित अथवा तदनुरूप आकृति वाले आसन रखे हुए है।

THE GRANDEUR OF UTPAT MOUNTAINS AND OTHERS

146. On the utpat mountains and swings for birds are many swan-shaped, cronch-shaped, eagle-shaped, raised, uplifted, bending down, long bed-like, bhadrasan, seats for birds, for crocodiles, for bullocks, for lions, lotus seats and swastik seats. They are decorated with pictures or sketches of birds, crocodiles, bullocks, lion, lotus and swastik. All of them are studded with gems, are clean and upto very pleasing to the mind.

वनखंडवर्ती गृहों का वर्णन

१४७. तेसु णं वणसंडेसु तत्थ तत्थ तहिं तहिं देसे देसे बहवे आलियघरगा, मालियघरगा, कयलिघरगा, लयाघरगा, अच्छणघरगा, पिच्छणघरगा, मज्जणघरगा, पसाहणघरगा, गब्भघरगा, मोहणघरगा, सालघरगा, जालघरगा, कुसुमघरगा, चित्तघरगा, गंधव्वघरगा, आयंसघरगा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा।

१४७. उन वनखंडो मे यथा योग्य स्थानो पर बहुत से आलिगृह (वनस्पति-विशेष से बने हुए गृह, जैसे-मंडप), मालिगृह (वनस्पति-विशेष से बने हुए गृह), कदलीगृह (केले के मंडप), लतागृह (लता मंडप), आसनगृह (विश्राम करने के लिए बैठने योग्य आसनो से युक्त घर), प्रेक्षागृह (प्राकृतिक शोभा के अवलोकन हेतु बने विश्रामगृह अथवा नाट्यगृह), मज्जनगृह (स्नानघर), प्रसाधनगृह (शृंगार-साधनों से सुसज्जित स्थान), गर्भगृह (भीतर का घर), मोहनगृह (रतिक्रीडा करने योग्य स्थान), शालागृह, जाली वाले गृह, कुसुमगृह, चित्रगृह-(चित्रो से सज्जित स्थान), गंधर्वगृह (संगीत-नृत्यशाला), आदर्शगृह (दर्पणो से बने हुए भवन) सुशोभित हो रहे है। ये सभी गृह रत्नों से बने हुए अधिकाधिक निर्मल यावत् असाधारण मनोहर हैं।

DESCRIPTION OF HOUSES IN FOREST-REGIONS

147. At proper places in the forest-regions, there are many houses made of vegetation (Aaligrih), many houses made of special

vegetation, many made of plantain trees, many made of creepers, many made of proper platforms for rest, many to see the scenery or theatrical performances, many for taking bath, many for decorating the body, many underground, many for amorous activities, many made of pine trees, many houses with barred windows, many flower-houses, many houses decorated with paintings, many houses for dances and music, many houses made of glass. All these houses are made of gems are very clean and upto extra-ordinarily attractive.

१४८. तेसु णं आलियघरगेसु जाव आयंसघरगेसु तहिं तहिं घरएसु हंसासणाइं जाव दिसासोवत्थिआसणाइं सव्वरयणामयाइं जाव पडिरूवाइं।

१४८. उन आलिगृहो यावत् आदर्शगृहों मे सर्वरत्नमय यावत् अतीव मनोहर हंसासन यावत् दिशा-स्वस्तिक आसन रखे है।

148. In all the said houses made of vegetation upto glass-houses, there are very nice seats having signs of swan upto signs of swastik.

वनखंडवर्ती मंडपों का वर्णन

१४९. तेसु णं वणसंडेसु तत्थ तत्थ देसे तहिं तहिं बहवे जातिमंडवगा, जूहियामंडवगा, मल्लियामंडवगा, णवमालियामंडवगा, वासंतिमंडवगा, दहिवासुयमंडवगा, सूरिल्लियमंडवगा, तंबोलिमंडवगा, मुद्दियामंडवगा, णागलयामंडवगा, अतिमुत्तयलयामंडवगा, अप्फोयामंडवगा, मालुयामंडवगा, अच्छा सव्वरयणामया जाव पडिरूवा।

१४९. उन वनखंडो मे विभिन्न स्थानो पर बहुत से जातिमडप (जाई के कुँज), यूथिकामडप (जूही की बेल के मडप), मल्लिकामडप, नवमल्लिकामडप, वासतीमंडप, दधिवासुकामडप (वनस्पति-विशेष), सूरिल्लिमडप (सूरजमुखी के मडप), नागरबेलमडप, मृद्वीकामंडप (अंगूर की बेल के मंडप), नागलतामडप (पानो की बेल के मडप), अतिमुक्तक लतामंडप (माधवीलता के मडप), अप्फोयामंडप (सुगन्धित फूलों वाली लताकुंज) और मालुकामंडप बने हुए हैं। ये सभी मंडप अत्यन्त निर्मल, सर्वरत्नमय यावत् अतीव मनोहर हैं।

DESCRIPTION OF PAVILIONS IN FOREST-REGIONS

149. At many places in the forest-regions, there are many pavilions of jati creepers, of jasmine creepers, mallika creepers, navmallika creepers, vasanti creepers, dadhivasuka creepers, sun-

flower plantation, betel-leave creepers, creepers of grapes, naglata, madhavi creepers, fragrant aphoya flower creepers and of maluka creepers. All these pavilions are very clean, gem-studded and extremely attractive.

१५०. तेसु णं जातिमंडवएसु जाव मालुयामंडवएसु बहवे पुढविसिलापट्टगा हंसासणसंठिया जाव दिसासोवत्थियासणसंठिया, अण्णे य बहवे वरसयणासणविसिट्ठसंठाणसंठिया पुढविसिलापट्टगा पण्णत्ता समाणाउसो ! आईणग-रूय-बूर-णवणीय-तूलफासा, सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा।

१५०. हे आयुष्मन् श्रमणो ! उन जातिमंडपों (जूही के कुँज) यावत् मालुकामडपों (सघन वृक्षों के कुँज) में कितने ही हंसासन सदृश आकार वाले यावत् कितने ही क्रोंचासन, कितने ही गरुडासन, कितने ही उन्नतासन, कितने ही प्रणतासन, कितने ही दीर्घासन, कितने ही भद्रासन, कितने ही पक्ष्यासन, कितने ही मकरासन, कितने ही वृषभासन, कितने ही सिंहासन, कितने ही पद्मासन, कितने ही दिशा स्वस्तिकासन जैसे आकार वाले पृथ्वीशिलापट्टक (पृथ्वीशिला रूप लम्बा पट्ट) तथा दूसरे भी बहुत से श्रेष्ठ शयनासन (शय्या, पलँग) सदृश विशिष्ट आकार वाले पृथ्वीशिलापट्टक रखे हुए है। ये सभी पृथ्वीशिलापट्टक चर्म-निर्मित वस्त्र अथवा मृगछाला, रुई, बूर, नवनीत, तूल, सेमल या आक की रुई के स्पर्श जैसे सुकोमल, कमनीय, सर्वरत्नमय, निर्मल यावत् अतीव रमणीय है।

150. O the blessed saints ! Out of the said jasmine pavilions and upto pavilions of maluka creepers (of thick trees), many seats are swan-shaped, and upto cronch-shaped and eagle-shaped, many seats are rasied, many seats are lowered, many have long bed-like seat, many have bhadrasan, many seats have sketches of yaksha, many of crocodile, many of bullocks, many of lions, many of lotus, many of disha swastika Many stone slabs and other bed-like stone platforms are lying there. They are all as soft as leather clothes or deer-skin or cotton, boor, vegetation, butter simble cotton. All of them are attractive, grand and very clean.

१५१. तत्थ णं बहवे वेमाणिया देवा य देवीओ य आसयंति, सयंति, चिट्ठंति, निसीयंति, तुयट्टंति, रमंति, ललंति, कीलंति, किट्टंति, मोहेंति, पुरा पोराणाणं सुचिण्णाण सुपरिक्कंताण सुभाण कडाण कम्माण कल्लाणाणं कल्लाणं फलविवागं पच्चणुब्भवमाणा विहरंति।

१५१. उन हंसासनों आदि पर बहुत से सूर्याभ विमानवासी देव और देवियाँ सुखपूर्वक बैठते हैं, सोते हैं, शरीर को लम्बा कर लेटते हैं, विश्राम करते हैं, ठहरते हैं, करवट लेते हैं, रमण करते हैं, केलिक्रीड़ा करते हैं, इच्छानुसार भोग-विलास भोगते हैं, मनोविनोद करते हैं, रासलीला करते हैं और रतिक्रीड़ा करते हैं। इस प्रकार वे अपने-अपने पुरुषार्थ से पूर्वोपार्जित शुभ, कल्याणमय, शुभफलप्रद, मंगलरूप पुण्य कर्मों के कल्याणरूप फलविपाक का अनुभव करते हुए समय बिताते हैं।

151. Many gods and goddesses of Suryabh Viman sit comfortably on those swan pictured seats, they sleep there, they stretch their body, they take rest, they move to one side while lying, they enjoy, they sport, they humour, they dance, they do amorous activities and sex on those seats. Thus they enjoy the fruit of their auspicious, pleasure giving karmas (actions) performed earlier.

वनखंडवर्ती प्रासादावतंसक

१५२. तेसि णं वणसंडाणं बहुमज्झदेसभाए पत्तेयं पत्तेयं पासायवडेंसगा पण्णत्ता।

तेणं पासायवडेंसगा पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं विक्खंभेणं, अब्भुग्गयामूसियपहसिया इव तहेव बहुसमरमणिज्जभूमिभागो, उल्लोओ, सीहासणं सपरिवारं।

तत्थ णं चत्तारि देवा महिड्ढिया जाव पलिओवमट्ठिइया परिवसंति, तं जहा—असोए सत्तपण्णे चंपए चूए।

१५२. उन वनखंडों के मध्यातिमध्य भाग (बीचोंबीच) में प्रत्येक एक-एक प्रासादावतंसक (प्रासादों में मुकुट मणि की तरह श्रेष्ठ प्रासाद) कहे हैं।

ये प्रासादावतसक पाँच सौ योजन ऊँचे और अढाई सौ योजन चौड़े हैं और अपनी उज्ज्वल प्रभा से हँसते हुए से प्रतीत होते हैं। इनका भूमिभाग अतिसम एवं रमणीय है। इनके चदेवा, सामानिक आदि देवों के भद्रासनों सहित सिंहासन का वर्णन पूर्ववत् समझना चाहिए।

इन प्रासादावतसको में महान् ऋद्धिशाली यावत् अतीव सुख-सम्पन्न एक पल्योपम की स्थिति वाले चार देव निवास करते है। उनके नाम इस प्रकार हैं—अशोकदेव, सप्तपर्णदेव, चंपकदेव और आम्रदेव।

THE GRAND PALACES IN FOREST-REGIONS

152. A grand palace exists in the centre of each forest-region.

These palaces are 500 yojans high, 250 yojans wide and appear to the smiling due to their great lustre. Their earth-region is levelled and good looking. The description of their cloth-ceiling, seats of gods of equal status and suchlike may be considered as described earlier.

In these grand palaces, four gods who are very prosperous and upto who enjoy a happy life and whose life-span is one palyopam reside. The names of those gods are Ashok, Saptaparn, Champak and Aamra god.

विवेचन–सूत्र मे मात्र सूर्याभ विमान के चतुर्दिग्वर्ती वनखण्डो मे निवास करने वाले देवो के नाम और उनकी आयु का उल्लेख किया है। इनके विषय मे विशेष ज्ञातव्य यह है–

ये चारो देव अपने-अपने नाम वाले वनखड के स्वामी है तथा सूर्याभदेव के सदृश महान् ऋद्धि-सम्पन्न है एव अपने-अपने सामानिक देवो, सपरिवार अग्रमहिषियो, तीन परिषदाओ, सप्त अनीको–सेनाओं और सेनापतियो, आत्मरक्षक देवो का आधिपत्य, स्वामित्व आदि करते हुए नृत्य, गीत, नाटक और वाद्यघोषो के साथ विपुल भोगोपभोगो का भोग करते हुए अपना समय बिताते है।

इन वनखडाधिपति देवो की आयु की स्थिति बतलाने के लिए 'पल्योपम' शब्द का प्रयोग किया है। पल्योपम का विस्तृत वर्णन अनुयोगद्वारसूत्र, भाग २ मे दिया गया है।

Elaboration—In the aphorism, only the names and life-span of four gods residing in four forest-regions of Suryabh Viman has been mentioned. Further details about them are as under—

All the four gods are the masters of their respective regions named after them They are as prosperous as Suryabh Dev They administer their gods of equal status, their families, their chief wives (queens), the three assemblies, seven armies and their army chiefs and the gods performing the duty of body-guards. While controlling them, they dance, sing, perform dramatic activities, play on musical instruments and thus spend their time in enjoining life to their fill

The word 'palyopam' is used to describe the life-span of these gods The detailed description about it can be seen in Part II of Anuyogdvar Sutra.

उपकारिकालयन का वर्णन

१५३. सूरियाभस्स णं देवविमाणस्स अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते, तं जहा–वणसंड–विहूणे जाव बहवे वेमाणिया देवा देवीओ य आसयंति जाव विहरंति।

तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसे एत्थ णं महेगे उवगारियालयणे पण्णत्ते, एगं जोयणसहयसहस्सं आयामविक्खंभेणं, तिण्णि जोयणसयसहस्साइं सोलस सहस्साइं दोण्णि य सत्तावीसं जोयणसए तिन्नि य कोसे अट्ठावीसं च धणुसयं तेरस य अंगुलाइं अद्धंगुलं च किंचिविसेसूणं परिक्खेवेणं, जोयण बाहल्लेणं सव्वजंबूणयामए अच्छे जाव पडिरूवे।

१५३. सूर्याभ नामक देवविमान के अन्दर अत्यन्त समतल एव अतीव रमणीय भूमिभाग है। शेष बहुत से वैमानिक देव और देवियों के बैठने से लेकर विचरण करने तक का वर्णन पूर्ववत् समझना चाहिए। किन्तु यहाँ वनखंड का वर्णन छोड देना चाहिए।

उस अतीव सम रमणीय भूमिभाग के बीचोबीच एक उपकारिकालयन (प्रासाद में ऊपर जाने के लिए चढने की पीठिका-चबूतरा) बना हुआ है। जो एक लाख योजन लम्बा-चौड़ा है और उसकी परिधि (कुल क्षेत्र का घेराव) तीन लाख सोलह हजार दो सौ सत्ताईस योजन तीन कोस एक सौ अट्ठाईस धनुष और कुछ अधिक साढे तेरह अगुल है। इसकी एक योजन मोटाई है। यह विशाल लयन पूरा का पूरा स्वर्ण का बना हुआ, निर्मल यावत् अतीव रमणीय है।

DESCRIPTION OF SMALL PLATFORM TO ASCEND THE PALACE

153. There is an extremely levelled and very beautiful earth-region in Suryabh celestial Viman. The detailed account of sitting and upto moving about of most of the remaining Vaimanik gods and goddesses may be understood similar to that mentioned earlier. But here the account of forest-region may be ignored.

In the middle of that perfectly levelled earth-region, there is a small platform to ascend the palace. It is 0.1 million yojan long, 0.1 million yojan wide and its circumference is 0.316227 million yojan 3 kos 128 dhanush 13.5 anguls Its thickness is one yojan. This entire platform is made of gold, is clean and very attractive.

१५४. से णं एगाए पउमवरवेइयाए एगेण य वणसंडेण य सव्वतो समंता संपरिक्खित्ते।

१५४. वह उपकारिकालयन सभी दिशा-विदिशाओं मे-सब ओर से एक पद्मवरवेदिका (वनखंडों की सीमा पर स्थित एक स्तम्भ जिस पर कमल आदि खुदे हुए हैं अथवा कमलाकृति मे बनी वेदिका) और एक वनखड (उद्यान) से घिरा हुआ है। (हेम. अभि. ४/५९)

154. That platform (it is used to see the administrative activities) is surrounded by padmavarvedika (a pillar at the boundary line of the forest-region which is in the shape of a lotus and on which lotus etc. are carved) and is surrounded with a garden

पद्मवरवेदिका का वर्णन

१५५. सा णं पउमवरवेइया अद्धजोयणं उड्ढं उच्चत्तेणं, पंच धणुसयाइं विक्खंभेणं उवकारियलेणसभा परिक्खेवेणं।

तीसे णं पउमवरवेइयाए इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तं जहा—वयरामया णिम्मारिट्ठामया पतिट्ठाणा वेरुलियामया खंभा, सुवण्ण—रुप्पमया फलया, णाणामणिमया कलेवरसंघाडगा णाणामणिमया रूवा णाणामणिमया रूवसंघाडगा अंकामया पक्खा, पक्खबाहाओ, जोईरसामया वंसा वंसकवेल्लुयाओ, रययामईओ पट्टियाओ जायरूवमईओ ओहाडणीओ वइरामईओ उवरिपुच्छणी, सव्वरयणामए अच्छायणे।

सा णं पउमवरवेइया एगमेगेणं हेमजालेणं, एग. गवक्खजालेणं, एग. खिंखिणीजालेणं, एग. घंटाजालेणं, एग. मुत्ताजालेणं, एग. मणिजालेणं, एग. कणगजालेणं, एग. पउमजालेणं सव्वतो समंता संपरिक्खित्ता, तेणं जाला तवणिज्जलंबूसगा जाव चिट्ठंति।

तीसे णं पउमवरवेइयाए तत्थ तत्थ देसे तहिं तहिं बहवे हयसंघाडा जाव उसभसंघाडा सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा पासादीया जाव वीहीओ पंतीयो मिहुणाणि लयाओ।

१५५. वह पद्मवरवेदिका आधे योजन ऊँची, पाँच सौ धनुष चौडी और उपकारिकालयन जितनी परिधि वाली है।

उस पद्मवरवेदिका का वर्णन इस प्रकार है, जैसे कि वज्ररत्नमय नेमा—(नीव का ऊपर का भाग) है। रिष्टरत्नमय इसके प्रतिष्ठान—मूल पाये है। वैडूर्यरत्नमय स्तम्भ हैं। स्वर्ण और रजतमय इसके फलक—पाटिये है। लोहिताक्ष (लाल) रत्नों से बनी सूचियाँ—कीले हैं। इसका कलेवर—ढाँचा विविध मणि—रत्नमय (चन्द्रकान्त आदि मणि तथा हीरे, माणिक) आदि रत्न है तथा इसका कलेवर संघात—भीतरी—बाहरी ढाँचा विविध प्रकार की मणियों से बना हुआ है। अनेक प्रकार के मणि—रत्नों से इस पर चित्र बने हुए हैं। नाना मणि—रत्नो से इसमें रूपक संघात, बेल—बूटों, चित्रो आदि के समूह बने है। अकरत्नमय इसके पक्ष—सभी हिस्से है और अकरत्नमय ही इसके पक्षबाहा—(घर की बाजू मे बरामदे का बाहर निकला भाग—छज्जली)।

प्रोजक्सन ज्योतिरसरत्नमय इसके वंश–बाँस, वला और वंशकवेल्लुक (सीधे रखे बाँसों के दोनों ओर रखे तिरछे बाँस एवं कवेलू) हैं। रजतमय इनकी पट्टियाँ (बाँसों को लपेटने के लिए ऊपर–नीचे लगी पट्टियाँ–लागें) हैं। स्वर्णमयी अवघाटनियाँ (दरवाजा बन्द करने की ढँकनी) और वज्ररत्नमयी उपरिप्रोंछनी (नरियाँ) है। सर्वरत्नमय आच्छादन (तिरपाल) हैं।

वह पद्मवरवेदिका सभी दिशा–विदिशाओं में चारो ओर से एक–एक हेमजाल (सुनहली मालाओ का जाल) से, आवासजाल (गाय के आँख की आकृति वाले रत्न–विशेष के मालासमूह) से, किकणी (घुँघरू), घटिका, मोती, मणि, कनक, रत्न और पद्म (कमल) की लम्बी–लम्बी मालाओं से परिवेष्टित है अर्थात् उस पर लम्बी–लम्बी मालायें लटक रही है। ये सभी मालाएँ सोने के लंबूसको (गेद की आकृति, जैसे–आभूषणो, मनकों) आदि से अलकृत है।

उस पद्मवरवेदिका के यथायोग्य उन–उन स्थानो पर अश्वसघात (एक समान आकृति वाले अश्वयुगल) यावत् वृषभयुगल सुशोभित हो रहे हैं। ये सभी रत्नों से बने हुए, निर्मल यावत् प्रतिरूप, मन को प्रफुल्लित करने वाले हैं यावत् इसी प्रकार इनकी वीथियाँ (छोटी गलियाँ), पक्तियाॅ, मिथुन (युगल) एवं लताएँ हैं।

DESCRIPTION OF PADMAVARVEDIKA

155. That padmavarvedika (pillar at the boundary line) is half yojan high, quarter yojan wide and its circumference is the same as that of upkarikalayan (the platform to ascend the palace).

The boundary pillar is described as under—The uppar part of its foundation (Nema) is of Vajra jewels. Its foundation at the base is of Risht gems. Its pillars are of Vaidurya jewels. Its planks are of silver and gold. Its pegs are of red gemes (Lohitaksh). Its structure is studded with many types of gems and jewels (Chandrakant gem, diamonds, rubies). Its inner and outer structure is made of many types of gems. Many paintings studded with gems and jewels are on this pillar. Many scenes, creepers, plants, pictures are carved on it. All the parts of this pillar are white gem-studded. The terrace projection is also of Ank ratna (white gems). The bamboos fixed in straight and slanting position in its roof are of Jyotiras jewels. The joints on the bamboos are of silver. The door-closers are of gold (Its contrivances to close the doors are of gold). Its strong covering on mattresses is of Vajra jewels. Its roof covering is all of gems.

That padmavarvedika (boundary pillar) is covered from all sides with golden garlands (Hemjal) garlands of cow-eye shaped gems (Aavasjal), small bells and long garlands of pearls, gems, gold, jewels and lotus. All those rosaries (garlands) are having ball-like gold beads.

At proper places on that boundary pillar there are pair of identical horses and upto bullock pairs. All of them are made of jewels, they are clean upto attractive and pleasant to the mind. Their lames, rows, coupling and creepers are also of the same type.

१५६. से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चति पउमवरवेइया पउमवरवेइया ?

१५६. गौतम स्वामी ने श्रमण भगवान महावीर से पूछा–"हे भदन्त ! ऐसा क्यों कहा जाता है कि यह पद्मवरवेदिका है ? अर्थात् इस वेदिका को पद्मवरवेदिका कहने का क्या कारण है ?"

156. Gautam Swamı asked Bhagavan Mahavir—"Reverend Sir ! Why is it called padmavarvedıka ?"

१५७. गोयमा ! पउमवरवेइयाए णं तत्थ तत्थ देसे तहिं तहिं वेइयासु, वेइयाबाहसु य वेइयफलएसु व वेइयपुडंतरेसु य खंभेसु, खंभबाहासु, खंभसीसेसु, खंभपुडंतरेसु, सूईसु, सूईमुखेसु, सूईफलएसु, सूईपुडंतरेसु, पक्खेसु, पक्खबाहासु, पक्खपेरंतेसु, पक्खपुडंतरेसु बहुयाइं उप्पलाइं–पउमाइं–कुमुयाइं–णलिणाइं–सुभगाइं सोगंधियाइं–पुंडरीयाइं–महापुंडरीयाणि–सयवत्ताइं–सहस्सवत्ताइं सव्वरयणामयाइं अच्छाइं पडिरूवाइं महया वासिक्कछत्तसमाणाइं पण्णत्ताइं समणाउसो।

से एएणं अट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चइ पउमवरवेइया 'पउमवरवेइया'।

१५७. भगवान ने उत्तर दिया–"हे गौतम ! पद्मवरवेदिका के आसपास की भूमि मे, वेदिका–पाटियो में, वेदिकायुगल के अन्तरालो मे, स्तम्भो, स्तम्भों के बाजुओ, स्तम्भो के शिखरो, स्तम्भयुगल के अन्तरालों, कीलियो, कीलियो के ऊपरी भागो, कीलियो से जुडे हुए फलको, कीलियों के अन्तरालों, पक्षों, पक्षो के प्रान्त भागो (किनारो) और उनके अन्तरालो आदि–आदि मे वर्षाकाल के बरसते मेघो से बचाव करने के लिए छत्र के समान ऐसे अनेक प्रकार के बड़े–बड़े विकसित, सर्वरत्नमय सुन्दर, निर्मल अतीव सुन्दर, उत्पल, पद्म, कुमुद, नलिन, सुभग, सौगंधिक, पुडरीक, महापुडरीक, शतपत्र और सहस्रपत्र आदि विविध जातियों के कमल पद्म) शोभित हो रहे है।

इसीलिए हे आयुष्मान् ! इस पद्मवरवेदिका को पद्मवरवेदिका कहते है।"

157. Bhagavan replied—"O Gautam ! In the land adjoining padmavarvedika there are small rooms, spaces between two rooms, pillars, sides of the pillars, tops of pillars, spaces between two pillars, pegs, peg-tops, planks attached to the pegs, spaces between two pegs, roofs, edges of the roofs and spaces in between. In order to provide protection from raining clouds during rainy season, many fully developed all jewelled, beautiful, pure and extremely charming blue lotus, lotus, white lotus, special lotus, subhag, fragrant lotus, pundreek, mahapundreek, hundred leaved lotus, thousand leaved lotus and lotuses serving as umbrella like cover are decorating all the earlier mentioned places and spaces in between.

So, O the blessed ! This padmavarvedika has been so called."

१५८. पउमवरवेइया णं भंते ! किं सासया, असासया ?

गोयमा ! सिय सासया, सिय असासया।

से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ सिय सासया, सिय असासया ?

गोयमा ! दव्वट्ठयाए सासया, वन्नपज्जवेहिं, गंधपज्जवेहिं, रसपज्जवेहिं, फासपज्जवेहिं असासया, से एएणट्ठेणं गोयमा ! एवं वुच्चति सिय सासया, सिय असासया।

पउमवरवेइया णं भंते ! कालओ केवचिरं होइ ?

गोयमा ! ण कयावि णासि, ण कयावि णत्थि, ण कयावि न भविस्सइ, भुविं च हवइ य, भविस्सइ य, धुवा णियया सासया अक्खया अव्वय अवट्ठिया णिच्चा पउमवरवेइया।

१५८. "हे भते ! वह पद्मवरवेदिका शाश्वत है अथवा अशाश्वत है ?"

"हे गौतम ! (किसी अपेक्षा) शाश्वत-नित्य भी है और (किसी अपेक्षा) अशाश्वत भी है।"

"भगवन् ! किस कारण आप ऐसा कहते है कि किसी अपेक्षा वह शाश्वत भी है और किसी अपेक्षा अशाश्वत भी है ?"

"हे गौतम ! द्रव्यार्थिकनय की अपेक्षा वह (पुद्गल द्रव्य रूप में) शाश्वत है, परन्तु वर्ण, गंध, रस और स्पर्श पर्यायों की अपेक्षा अशाश्वत है। इसी कारण हे गौतम ! यह कहा है कि वह पद्मवरवेदिका शाश्वत भी है और अशाश्वत भी है।"

"हे भंते ! काल की अपेक्षा वह पद्मवरवेदिका कितने काल पर्यन्त-कब तक रहेगी ?"

"हे गौतम ! वह पद्मवरवेदिका भूतकाल में कभी नहीं थी, ऐसा नहीं है; अभी वर्तमान में नहीं है, ऐसा भी नहीं है और भविष्य में नहीं रहेगी, ऐसा भी नहीं है; किन्तु पहले भी थी, अब भी है और आगे भी रहेगी। इस प्रकार तीनों काल में रहने के कारण वह पद्मवरवेदिका ध्रुव, नियत, शाश्वत, अक्षय, अव्यय, अवस्थित और नित्य है।"

158. (Gautum said) "Bhante ! Is that padmavarvedika permanent or is it not permanent ?"

(Bhagavan said) "O Gautam ! (From certain point of view) it is permanent and (from another point of view) it is not permanent."

(Gautam said) "Bhagavan Sir ! On what basis do you say that it is permanent from a certain point of view and not permanent from another point of view ?"

(Bhagavan replied) "O Gautam ! From (Dravya) basic point of view it is permanent But from the point of view of its colour fragrance, taste and touch it is not permanent. So O Gautam ! It is said that the said padmavarvedika is permanent and is also not permanent."

(Gautam asked) "Reverend Sir ! In respect of time period, for how long the padmavarvedika shall exist ?"

(Bhagavan replied) "O Gautam ! It is not true that padmavarvedika never existed in the past, that it does not exist at present and that it shall not exist in future. The fact is that it existed earlier, it exists now and it shall remain in future also Since it exists in all the three time-periods it is permanent always existing, undestroyable undiminishable."

१५९. सा णं पउमवरवेइया एगेणं वणसंडेणं सव्वओ संपरिक्खित्ता।

से णं वणसंडे देसूणाइं दो जोयणाइं चक्कवालविक्खंभेणं उवयारियालेणसमे परिक्खेवेणं, वणसंडवण्णओ भाणियव्वो जाव विहरंति।

१५९. वह पद्मवरवेदिका चारों ओर–सभी दिशा–विदिशाओं मे–एक वनखड से परिवेष्टित है।

उस वनखंड का चक्रवालविष्कम्भ (गोलाकार–चौडाई) कुछ कम दो योजन प्रमाण है तथा उपकारिकालयन की परिधि जितनी उसकी परिधि है। वहाँ देव–देवियाँ विचरण करती हैं, यहाँ तक वनखड का वर्णन पूर्ववत् जानना चाहिए।

159. That padmavarvedika has forest-region all around in all the four directions.

The width of the forest-region is a bit less than two yojans. Its circumference is equal to that of upkarikalayan (platform for ascending). Gods and goddesses more about there. The description till now is as mentioned earlier.

विवेचन—सूत्र सख्या १३६-१५१ मे वनखड का विस्तार से वर्णन किया है। उसी वर्णन को यहाँ पुन· करने का सकेत '**वणसंडवण्णओ भाणियव्वो जाव विहरंति**' पद से किया है। संक्षेप मे उक्त वर्णन का सारांश इस प्रकार है–

"यह वनखड चारो ओर से एक परकोटे से घिरा हुआ है तथा वृक्षो की सघनता से हरा-भरा, अत्यन्त शीतल और दर्शको के मन को सुखप्रद है। वनखड का भूभाग अत्यन्त सम तथा अनेक प्रकार की मणियो और तृणो से उपशोभित है।

इस वनखड मे स्थान-स्थान पर अनेक छोटी-बडी बावडियाँ, पुष्करणियाँ, गुँजालिकायें आदि बनी है। इन सबके तट रजतमय है और तल भाग मे स्वर्ण-रजतमय बालुका बिछी हुई है। कुमुद, नलिन, सुभग, सौगधिक, पुडरीक आदि विविध जाति के कमलो से इनका जल आच्छादित है।

इन वापिकाओ आदि के बीच के स्थानो मे झूलने के लिए झूले-हिंडोले लगे है और बहुत से उत्पातपर्वत, नियतिपर्वत, दारुपर्वत, दकमडप (पानी के फव्वारे), दकमालक, दकमच (पानी के बीच मे बैठने के स्थान) बने हुए है।

इन वनखण्डो मे कही-कही कदलीगृह, लतागृह, मडप आदि बने है और विश्राम करने के लिए जिनमे हसासन आदि अनेक प्रकार के आसन तथा शिलापट्टक रखे है और जहाँ बहुत से देव-देवियाँ आ-आकर विविध प्रकार की क्रीडाएँ करते हुए पूर्वोपार्जित पुण्यकर्मों के फलविपाक को भोगते हुए आनन्दपूर्वक विचरण करते है।"

इस वर्णन को पढकर लगता है आज के आधुनिकतम विकसित और समृद्ध देशो मे भी इस प्रकार का मनोरम, सुन्दर और सर्व सुविधा-सम्पन्न उपवन, सरोवर कही नही होगा। वर्णन की मनोहर शैली से अनुमान किया जा सकता है कि वर्णन करने मे भी शास्त्रकार ने कितना यथार्थ सटीक शब्द-शिल्प प्रस्तुत किया है।

Elaboration—Detailed description of forest-region is in aphorisms 136 to 151. The same description should be considered here is the purport of **'Vansand vannao bhaniyavvo jaav viharanti.'** In brief the said description is as under—

"The forest has a boundary wall all around. It is green because of thickly grown trees. It is very cool and pleasant to the visitors. The forest-region is perfectly levelled and is shining bright due to jewels and grass of various types.

At many place in the forest-regions there are small lakes, pushkarni and gunjalikas. Their banks are of silver. Silvery and golden sand is spread at their bottom. Their water is covered with lotus of various types namely kumud, nalin, subhag, fragrant lotus, pundreek and others.

There are swings here and there in the middle of lakes Many rising grounds, niyati mounts, wood mounts, fountains, platforms are made there.

Here and there in the forest-regions there are plantain pavilions, creeper pavilions and others. There are seats bearing sketches of swans and others and stone platforms in the pavilions for taking rest Many gods and goddesses come there to sport and enjoy the fruit of their good karmas (activities) of the past. They take pleasure in such sports "

After going through this description one feels that there is no such lake and garden even in prosperous and fully developed countries of the present world. It surpasses in grandeur, beauty and comforts From the style of description, it can be estimated that the writer has really used proper words to describe details.

१६०. तस्स णं उवयारियालेणस्स चत्तारि तिसोवाणपडिरूवगा पण्णत्ता, वण्णओ, तोरणा, झया, छत्ताइच्छत्ता।

तस्स णं उवयारियालयणस्स उवरिं, बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव मणीणं फासो।

१६०. उस उपकारिकालयन की चारों दिशाओ मे चार त्रिसोपानप्रतिरूपक (तीन-तीन सीढियों की पक्तियाँ) बने हैं। यान-विमान के सोपानों के समान इन त्रिसोपान-प्रतिरूपको का वर्णन भी तोरणों, ध्वजाओ, छत्रातिछत्रो आदि पर्यन्त यहाँ करना चाहिए।

उस उपकारिकालयन के ऊपर अतिसम, रमणीय भूमिभाग है। यान-विमानवत् मणियों के स्पर्श-पर्यन्त इस भूमिभाग का वर्णन यहाँ करना चाहिए।

160. In all the four sides of upkarikalayan (platforms to ascend), there is a row of three staircases. Like the staircase of aerial Viman (vehicle), the description of staircases, festoons, flags, umbrellas, and umbrellas above others is identical to the earlier one.

There is very much levelled and attractive earth-region above the upakarikalyan. Its description is like that of aerial vehicle upto touch of gems.

१६१. तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महेगे मूलपासायवडेंसए पण्णत्ते।

से णं मूलपासायवडेंसए पंच जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं विक्खंभेण, अब्भुग्गयमूसिय–वण्णओ। भूमिभागो उल्लोओ सीहासणं सपरिवारं भाणियव्वं, अट्ठट्ठमंगलगा झया छत्ताइच्छत्ता।

१६१. उस अत्यन्त समतल रमणीय भूमिभाग के ठीक मध्य में एक विशाल मुख्य प्रासादावतंसक है।

वह प्रासादावतंसक पाँच सौ योजन ऊँचा और अढाई सौ योजन चौडा है तथा अपनी चारो तरफ फैल रही प्रभा से हँसता हुआ प्रतीत होता है। इसी वर्णन के साथ उस प्रासाद के भीतर के भूमिभाग, उल्लोक–चंदेवा, परिवार रूप अन्य भद्रासनों आदि सहित सिहासन, आठ मगल, ध्वजाओ और छत्रातिछत्रो का कथन यहाँ समझना चाहिए।

DESCRIPTION OF THE MAIN PALACE

161. In the centre of that levelled attractive earth-region, there is a spacious main palace of god.

That palace is 500 yojans high, 250 yojans wide and due to its spreading area, it appears to be laughing. The description of the inner part of the palace its cloth ceiling, the main seats and other seats, auspicious eight symbols, flags and umbrellas one above the other may be considered as mentioned earlier.

१६२. (क) से णं मूलपासायवडेंसगे अण्णेहिं चउहिं पासायवडेंसएहिं तयद्धुच्चत्तप्पमाणमेत्तेहिं सव्वतो समंता संपरिक्खित्ते, ते णं पासायवडेंसगा अड्ढाइज्जाइं जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, पणवीसं जोयणसयं विक्खभेणं जाव वण्णओ।

(ख) ते णं पासायवडिंसया अण्णेहिं चउहिं पासायवडिंसएहिं तयद्धुच्चत्तप्पमाणमेत्तेहिं सव्वओ समंता संपरिक्खित्ता।

ते णं पासायवडेंसया पणवीसं जोयणसयं उड्ढं उच्चत्तेणं बासट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयणं च विक्खंभेणं अब्भुग्गयमूसिय वण्णओ। भूमिभागो उल्लोओ सीहासणं सपरिवारं भाणियव्वं अट्ठट्ठ मंगलगा झया छत्तातिच्छत्ता।

(ग) ते णं पासायवडेंसगा अण्णेहिं चउहिं पासायवडेंसएहिं तदुच्चत्तपमाणमेत्तेहिं सव्वतो समंता संपरिक्खित्ता। ते णं पासायवडेंसगा बासट्ठिं जोयणाइं अद्धजोयणं च उड्ढं उच्चत्तेणं एक्कतीसं जोयणाइं कोसं च विक्खंभेणं, वण्णओ, उल्लोओ सीहासणं सपरिवारं पासाय उवरिं अट्ठट्ठ मंगलगा झया छत्तातिछत्ता।

१६२. (क) उस मुख्य प्रासादावतसक के चारो दिशाओं में चार अन्य प्रासादावतसक है, जो उससे आधे ऊँचे है। अर्थात् ये चारों प्रासादावतंसक ढाई सौ योजन ऊँचे और चौडाई मे सवा सौ योजन चौडे हैं, इत्यादि वर्णन पहले की भाँति करना चाहिए।

(ख) ये चारों प्रासादावतसक भी पुन. चारो दिशाओं मे अपनी ऊँचाई से आधी ऊँचाई वाले अन्य चार प्रासादावतंसकों से घिरे है। अर्थात् ये प्रासादावतसक एक सौ पच्चीस योजन ऊँचे और साढे बासठ योजन चौडे हैं तथा ये चारो ओर फैल रही प्रभा से हँसते हुए से दिखते हैं, यहाँ से लेकर भूमिभाग, चंदेवा, सपरिवार सिहासन, आठ-आठ मगल, ध्वजाओं, छत्रातिछत्रों से सुशोभित है।

(ग) ये प्रासादावतंसक भी चारों दिशाओ में अपनी ऊँचाई से आधी ऊँचाई वाले अन्य चार प्रासादावतसकों से परिवेष्टित है। ये प्रासादावतंसक साढे बासठ योजन ऊँचे और इकतीस योजन एक कोस चौडे हैं। इन प्रासादो के भूमिभाग, चंदेवा, सपरिवार सिहासन, ऊपर आठ मंगल, ध्वजाओ, छत्रातिछत्रो आदि का वर्णन भी पूर्ववत् यहाँ करना चाहिए।

162. (a) There are four other palaces in the four sides of the main palace. They are half in height as that of the main palace. In other words they are 250 yojans high and 125 yojans wide. The remaining description be considered as mentioned earlier.

(b) All the four palaces are again surrounded by another four palaces on their four sides and half of their height. In other words these palaces are 125 yojans high, 62.5 yojans wide and appear to be laughing due to their lustre all around. Here onwards, the earth-region, the cloth ceiling, the seats for the family, eight auspicious symbols, flags, umbrellas one above the other add to their beauty.

(c) These four palaces are again surrounded by another four palaces in their four sides and of half of their height. In other words, these palaces are 62.5 yojans high and 31.25 yojans wide. The description of their earth-region, cloth ceiling seats for family, raised eight auspicious symbols, flags, umbrellas and covering umbrellas may be considered same as mentioned earlier.

१६३. तस्स णं मूलपासायवडेंसयस्स उत्तरपुरत्थिमेणं एत्थ णं सभा सुहम्मा पण्णत्ता, एगं जोयणसयं आयामेणं, पण्णासं जोयणाइं विक्खम्भेणं, बावत्तरिं जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, अणेगखम्भ.... जाव अच्छरगण.... पासादीया।

१६३. उस प्रधान प्रासाद के ईशानकोण मे एक सुधर्मा सभा है, जो सौ योजन लम्बी, पचास योजन चौडी और बहत्तर योजन ऊँची है। यह सभा अनेक सैकड़ो खम्भों पर संस्थित यावत् अप्सराओं से व्याप्त अतीव मनोहर है।

DESCRIPTION OF SUDHARMA ASSEMBLY-HALL

163. In the north-east corner of that main palace is Sudharma assembly building. It is 100 yojans long, 50 yojans wide and 72 yojans high. It is on hundreds of pillars upto having many fairies and extremely grand.

१६४. सभाए णं सुहम्माए तिदिसिं तओ दारा पण्णत्ता, तं जहा–पुरत्थिमेणं, दाहिणेणं, उत्तरेणं।

ते णं दारा सोलस जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, अट्ठ जोयणाइं विक्खम्भेणं, तावतियं चेव पवेसेणं, सेया वरकणगथूभियागा जाव वणमालाओ।

तेसि णं दाराणं पुरओ पत्तेयं पत्तेयं मुहमण्डवे पण्णत्ते, ते णं मुहमण्डवा एगं जोयणसयं आयामेणं, पण्णासं जोयणाइं विक्खंभेणं, साइरेगाइं सोलस जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, वण्णओ सभाए सरिसो।

तेसि णं मुहमण्डवाणं तिदिसिं तओ दारा पण्णत्ता, तं जहा–पुरत्थिमेणं, दाहिणेणं, उत्तरेणं। ते णं दारा सोलस जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, अट्ठ जोयणाइं विक्खंभेणं, तावइयं चेव पवेसेणं, सेया वरकणगथूभियागा जाव वणमालाओ।

तेसि णं मुहमंडवाणं पुरतो पत्तेयं पत्तेयं पेच्छाघरमंडवे पण्णत्ते, मुहमंडववत्तव्वया जाव दारा, भूमिभागा, उल्लोया।

१६४. इस सुधर्मा सभा की तीन दिशाओं मे तीन द्वार हैं–पूर्व दिशा में, दक्षिण दिशा में और उत्तर दिशा में।

वे द्वार ऊँचाई मे सोलह योजन ऊँचे, आठ योजन चौडे और उतना ही चौड़ा उनका प्रवेश मार्ग है। वे द्वार श्वेत वर्ण के हैं। श्रेष्ठ स्वर्ण से निर्मित शिखरों एवं वनमालाओं से शोभित हैं। आदि वर्णन पूर्ववत् करना चाहिए।

उन द्वारों के सामने एक-एक मुखमंडप (आँगन या चौक) है। ये मंडप सौ योजन लम्बे, पचास योजन चौड़े और ऊँचाई मे कुछ अधिक सोलह योजन ऊँचे है। सुधर्मा सभा के समान इनका शेष वर्णन कहना चाहिए।

इन मंडपों की तीन दिशाओ में तीन द्वार हैं, यथा-एक पूर्व दिशा में, एक दक्षिण दिशा में और एक उत्तर दिशा में। ये द्वार ऊँचाई मे सोलह योजन ऊँचे हैं, आठ योजन चौड़े और उतना ही चौडा उनका प्रवेश मार्ग है। ये द्वार श्वेत धवलवर्ण और श्रेष्ठ स्वर्ण से बने शिखरों, वनमालाओं से अलकृत हैं। समस्त वर्णन पूर्ववत् यहाँ करना चाहिए।

इन मुखमंडपों मे से प्रत्येक के आगे प्रेक्षागृहमडप (दर्शको को बैठने का स्थान) बना है। इन मंडपो के द्वार, भूमिभाग, चाँदनी आदि का वर्णन मुखमडपों के समान जानना चाहिए।

164. There are three gates at the sides namely east, south and north of this Sudharma Sabha.

Those gates are 16 yojans high and 8 yojans wide The enterance is also 8 yojans wide. The gates are white. They are decorated with garlands hanging upto ankles. They are made of pure gold The remaining description is same as earlier

In front of each gate, there is a courtyard It is 100 yojans long, 50 yojans wide and a little more than 16 yojans high. Its description be considered similar to that of Sudharma Sabha.

In the three sides namely east, south and north of these gates there are three gates They are 16 yojans high, 8 yojans wide and same is the passage for entrance. These gates are decorated with pure white gold summits and garlands reaching the ankles. The remaining description is as before.

In front of each of the platforms before the building, there is a pavilion for spectators. The description of gates of these pavilions, the earth-region and cloth ceiling may be considered similar to that of platforms in front of the building.

१६५. तेसि णं बहुसमरमणिज्जाणं भूमिभागाणं बहुमज्झदेसभाए पत्तेयं पत्तेयं वइरामए अक्खाडए पण्णत्ते।

तेसि णं वयरामयाणं अक्खाडगाणं बहुमज्झदेसभागे पत्तेयं पत्तेयं मणिपेढिया पण्णत्ता, ताओ णं मणिपेढियाओ अट्ठ जोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं, चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं, सव्वमणिमईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ।

तासि णं मणिपेढियाणं उवरिं पत्तेयं पत्तेयं सीहासणे पण्णत्ते, सीहासणवण्णओ सपरिवारो।

तेसि णं पेच्छाघरमंडवाणं उवरिं अट्ठट्ठ मंगलगा झया छत्तातिछत्ता।

१६५. उन प्रेक्षागृह मडपो के रमणीय समचौरस भूमिभाग के ठीक मध्य में एक-एक वज्र रत्नमय अक्षपाटक (मच-अखाड़ा) बना है।

उन वज्र रत्नमय अक्षपाटको के भी बीचोंबीच आठ योजन लम्बी-चौडी, चार योजन मोटी और विविध प्रकार के मणि-रत्नो से निर्मित, निर्मल यावत् असाधारण सुन्दर एक-एक मणिपीठिकाएँ (मणिजडित चौकियाँ) बनी हुई है।

उन मणिपीठिकाओ के ऊपर एक-एक सिहासन है। भद्रासनो आदि आसनों रूपी परिवार सहित उन सिहासनो का वर्णन करना चाहिए।

उन प्रेक्षागृह मडपों के ऊपर आठ-आठ मगल, ध्वजाये, छत्रातिछत्र सुशोभित हो रहे हैं।

165. Exactly in the beautiful square mid-portion of the pavilion of the house for spectators there is a jewelled verandah (gymnasium) for spectators.

A jewelled platform beautiful and unique is in the midst of each Vajra jewelled verandah and it is 8 yojans long, 8 yojans wide and 4 yojans thick. They are made of gems of various types and clean.

A seat is constructed on each of the jewelled platform. The description of the seats (simhasan) may be understood similar to that of Bhadrasen and others.

Eight auspicious symbols, flags and umbrella one above the other meant for spectators are increasing their grandeur of the pavilion.

स्तूप-वर्णन

१६६. तेसिं णं पेच्छाघरमंडवाणं पुरओ पत्तेयं पत्तेयं मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ। ताओ णं मणिपेढियाओ सोलस सोलस जोयणाइं आयामविक्खंभेणं, अट्ठ जोयणाइं बाहल्लेणं, सव्वमणिमईओ अच्छाओ पडिरूवाओ।

तासि णं उवरिं पत्तेयं पत्तेयं थूभे पण्णत्ते। ते णं थूभा सोलस सोलस जोयणाइं आयाम विक्खंभेणं, साइरेगाइं सोलस सोलस जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, सेया संखंक सव्वरयणामया अच्छा जाव पडिरूवा।

तेसि णं थूभाणं उवरिं अट्ठट्ठ मंगलगा, झया छत्तातिछत्ता जाव सहस्सपत्तहत्थया।

तेसि णं थूभाणं पत्तेयं पत्तेयं चउद्दिसिं मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ। ताओ णं मणिपेढियाओ अट्ठ जोयणाइं आयामविक्खंभेणं, चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं, सव्वमणिमईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ।

तासि णं मणिपेढियाणं उवरिं चत्तारि जिणपडिमाओ जिणुस्सेहपमाणमेत्ताओ संपलियंकनिसन्नाओ, थूभाभिमुहीओ सन्निक्खित्ताओ चिट्ठंति, तं जहा—उसभा, वद्धमाणा, चंदाणणा, वारिसेणा।

१६६. उन प्रेक्षागृह मडपो के आगे एक-एक मणिपीठिका (रत्नमय चौकी) है। ये मणिपीठिकाएँ सोलह-सोलह योजन लम्बी-चौडी, आठ योजन मोटी है। ये सभी सम्पूर्ण मणि-रत्नमय, स्फटिक मणि के समान निर्मल और प्रतिरूप है।

उन प्रत्येक मणिपीठों के ऊपर असाधारण रमणीय स्तूप बने है। वे सोलह-सोलह योजन लम्बे-चौडे, समचौरस और ऊँचाई मे कुछ अधिक सोलह योजन ऊँचे है। शख व अक रत्न के समान श्वेत, सर्वात्मना रत्नो से बने हुए स्वच्छ यावत् देखने योग्य है।

उन स्तूपो के ऊपर आठ-आठ मगल, ध्वजाये, छत्र पर छत्र यावत् सहस्रपत्र कमलों के झुमके सुशोभित हो रहे है।

उन स्तूपो की चारो दिशाओ मे एक-एक मणिपीठिका है। ये प्रत्येक मणिपीठिकाएँ आठ योजन लम्बी-चौडी, चार योजन मोटी और अनेक प्रकार के मणि-रत्नों से निर्मित, निर्मल यावत् प्रतिरूप हैं।

प्रत्येक मणिपीठिका के ऊपर, स्तूपो के सामने मुख वाली ऐसी जिनोत्सेध प्रमाण वाली (ऊँचाई मे जिन-भगवान के शरीर प्रमाण) चार जिन-प्रतिमाएँ पर्यंकासन से विराजमान है, यथा-(१) ऋषभ (भरत क्षेत्र के प्रथम तीर्थकर), (२) वर्धमान (भरत क्षेत्र के अन्तिम तीर्थंकर), (३) चन्द्रानन (इस अवसर्पिणी काल मे जम्बूद्वीप के ऐरवत क्षेत्र के प्रथम तीर्थंकर), तथा (४) वारिषेण (जम्बूद्वीप के ऐरवत क्षेत्र में इसी अवसर्पिणी काल में हुए चौबीसवें तीर्थंकर)।

166. A jewelled raised platform (small table) is in front of each of the pavilions of the house for spectators. These platforms are 16 yojans long, 16 yojans wide and 8 yojans thick. All of them are completely jewelled and clean like crystal. They are grand.

On every platform there is unique worth looking mound (Stupa). The mounds are 16 yojans long, 16 yojans wide squire type and their height is a little more than 16 yojans. They are white like a conch or white jewel (Ank jewel). They are all studded with jewels clean upto worth seeing.

On each of the Stupa (mound), there are eight auspicious symbols, flags, umbrella one above the other, and upto lotus ear-rings making them to look.

On every side of the Stupa, there is a jewelled platform. These platforms are 8 yojans square, 4 yojans thick, made of gems, neat and upto attractive

On each platform there is a statue of Tirthankar, equal to his size, facing the Stupa with legs crossed and hands on them. They are of—(1) Rishabh (The first Tirthankar of Bharat area), (2) Vardhman (The last Tirthankar of Bharat area), (3) Chandranan (The first Tirthankar of Airavat area of Jambu Dveep belonging to this 'Avasarpani time-cycle), and (4) Varishen (The twenty fourth Tirthankar of Airavat area of Jambu Dveep belonging to this Avasarpani period).

चैत्य वृक्ष

१६७. तेसि णं थूभाणं पुरतो पत्तेयं पत्तेयं मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ। ताओ णं मणिपेढियाओ सोलस जोयणाइं आयामविक्खंभेणं, अट्ठ जोयणाइं बाहल्लेणं, सव्वमणिमईओ जाव पडिरूवाओ।

तासि णं मणिपेढियाणं उवरिं पत्तेयं पत्तेयं चेइयरुक्खे पण्णत्ते, ते णं चेइयरुक्खा अट्ठ जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं अद्धजोयणं उव्वेहेणं, दो जोयणाइं खंधा, अद्धजोयणं विक्खंभेणं, छ जोयणाइं विडिमा, बहुमज्झदेसभाए अट्ठ जोयणाइं आयामविक्खंभेणं, साइरेगाइं अट्ठ जोयणाइं सव्वग्गेणं पण्णत्ता।

तेसि णं चेइयरुक्खाणं इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तं जहा–

वयरामयमूल–रययसुपइट्ठियविडिमा, रिट्ठामयविउल कंदवेरुलियरुइलखंधा, सुजायवरजायरूवपढमग विसालसाला, णाणामणिमय रयणविविहसाहप्पसाह–वेरुलियपत्त–तवणिज्जपत्तबिंटा, जंबूणय–रत्तमउयसुकुमालपवाल पल्लववरंकुरधरा, विचित्तमणिरयण–सुरभिकुसुमफलभरनमियसाला, सच्छाया, सप्पभा, सस्सिरीया, सउज्जोया, अहियं नयण–मण–णिव्वुइकरा, अमयरससमरसफला, पासाईया....।

तेसि णं चेइयरुक्खाणं उवरिं अट्ठट्ठ मंगलगा झया छत्ताइछत्ता।

१६७. उन प्रत्येक स्तूपो के सामने मणिमयी पीठिकायें बनी हुई हैं। ये मणिपीठिकाये सोलह योजन लम्बी–चौडी, आठ योजन मोटी और सर्वात्मना मणि–रत्नों से निर्मित, निर्मल यावत् अतीव मनोहर हैं।

उन मणिपीठिकाओं के ऊपर एक–एक चैत्य वृक्ष है। ये सभी चैत्य वृक्ष ऊँचाई में आठ योजन ऊँचे, जमीन के भीतर आधे योजन गहरे है। इनका स्कन्ध भाग दो योजन का और आधा योजन चौडा है। स्कन्ध से निकलकर ऊपर की ओर फैली हुई शाखाएँ छह योजन ऊँची और लम्बाई–चौड़ाई में आठ योजन की हैं। कुल मिलाकर इनका सर्वपरिमाण कुछ अधिक आठ योजन है।

इन चैत्य वृक्षों का वर्णन इस प्रकार किया गया है–

इन वृक्षो के मूल (जडें) वज्र रत्नो के है, शाखाएँ रजत की, कद रिष्ट रत्नो के, मनोरम स्कन्ध वैडूर्य मणि के, मूलभूत प्रथम विशाल शाखाएँ शोभनीक श्रेष्ठ स्वर्ण की, विविध शाखा–प्रशाखाएँ नाना प्रकार के मणि–रत्नो की, पत्ते बैडूर्य रत्न के, पत्तों के वृन्त (डडियाँ) स्वर्ण के, प्रवाल अरुण, मृदु, सुकोमल हैं, पल्लव एव अकुर जाम्बूनद (लाल सोना) के है और विचित्र मणि–रत्नों एवं सुरभिगंधयुक्त पुष्प–फलो के भार से नमित शाखाएँ हैं एव अमृत के समान मधुर रसयुक्त फल वाले ये वृक्ष सुन्दर, मनोरम छाया, प्रभा, कान्ति, शोभा, उद्योत से सम्पन्न नयन–मन को शान्तिदायक एव प्रासादिक है।

उन चैत्य वृक्षों के ऊपर आठ–आठ मंगल, ध्वजायें और छत्रातिछत्र सुशोभित हो रहे हैं।

THE CHAITYA TREE

167. In front of every Stupa, there is a platform. These platforms are 16 yojans long square and 8 yojans thick. They are made of gems. They are clean and attractive

On each of the platforms there is a memorial tree. All these trees are 8 yojans high, half a yojan deep. Their trunk is of 2 yojans and width is half a yojan. The branches bursting out from the trunk and spreading upwards are 6 yojans high and 8 yojans long, 8 yojans wide. In brief all of them are a little more than 8 yojans in size.

The description of these memorial trees is as under—

The roots of these tree are of Vajra jewels, the branches are of silver, the bulbous roots are of Right gems, the beautiful trunk is of Vaidurya jewels, first big branches are of pure gold, the other branches and their off-shooting branches are of various types of gems and jewels, the leaves are of Vaidurya gems, the stalks of the leaves are of gold, the sprouts are red, soft and tender and the buds are of red gold, the branches are bending downwards due to fragrant flowers and fruits of strange jewels and gems, the fruit of these trees have nectar like sweet juice, the trees provide beautiful pleasant shade, shine, brightness, aura and light which renders pleasure to the eyes and the mind, they also provide mental peace and pleasure.

There are eight auspicious symbols, flags, umbrellas one above the other on those memorial trees.

विवेचन—शब्द कोष के अनुसार चैत्य वृक्ष के तीन अर्थ होते है–(१) जिस वृक्ष के नीचे तीर्थंकर देव को केवलज्ञान प्राप्त होता है, वह वृक्ष। इसे 'बोधि वृक्ष' भी कहा जाता है। जैन ग्रन्थो मे २४ तीर्थंकरों के २४ चैत्य वृक्ष प्रसिद्ध है। (२) देवताओ की सभा के प्रत्येक द्वार के सामने महा ध्वजा और चैत्य स्तम्भ के मध्यम मे स्थित वृक्ष चैत्य वृक्ष कहा जाता है। अलग-अलग देवो के अलग-अलग चैत्य वृक्ष होते है। (३) किसी विशेष पवित्र माने जाने वाले वृक्ष को भी चैत्य वृक्ष कहते है, जिसे देखकर चित्त प्रसन्न होता हो। (सचित्र अर्धमागधी कोष, भाग २, पृ ७३९, शतावधानी श्री रतनचन्द जी महाराज)

Elaboration—According to dictionary, Chaitya has three meanings—(1) The tree under which the Tirthankar attains complete knowledge (Kewal-jnan) and becomes omniscient. It is also known as tree of knowledge (Bodhi Tree) In Jain literature the twenty four such trees of twenty four Tirthankars are well known (2) In front of each gate of council-hall of gods, there is a tree between the great flag and Chaitya pillar. This is called Chaitya tree. Every god has a separate Chaitya tree. (3) A special holy tree is also called Chaitya tree. The mind becomes pleased at its sight (Illustrated Ardhamagadhi Dictionary, Part II, page 739, Shatavadhani Shri Ratna Chand ji M.).

१६८. तेसि णं चेइयरुक्खाणं पुरतो पत्तेयं पत्तेयं मणिपेढियाओ पण्णत्ताओ। ताओ णं मणिपेढियाओ अट्ठ जोयणाइं आयामविक्खंभेणं चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं सव्वमणिमईओ अच्छाओ जाव पडिरूवाओ।

१६८. उन प्रत्येक चैत्य वृक्षो के आगे एक-एक मणिपीठिका है। ये मणिपीठिकायें आठ योजन लम्बी-चौडी, चार योजन मोटी, सर्वात्मना मणिमय निर्मल अतिशय मनोरम हैं।

168. In front of every Chaıtya tree, there is a platform. These platforms are 8 yojans long square, 4 yojans thick, all gem-studded clean and very attractıve.

माहेन्द्र ध्वज

१६९. तासि णं मणिपेढियाणं उवरिं पत्तेयं पत्तेयं महिंदज्झए पण्णत्ते।

ते णं महिंदज्झया सट्ठिं जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, अद्धकोसं उव्वेहेणं, अद्धकोसं विक्खंभेणं, वइरामय-वट्ट-लट्ठ-संठिय-सुसिलिट्ठ-परिघट्ठ-मट्ठ-सुपतिट्ठिए-विसिट्ठे-अणेगवर-पंचवण्णकुडभी-सहस्सुस्सिए-परिमंडियाभिरामे-वाउद्धुयविजयवेजयंती-पडागच्छत्तातिच्छत्तकलिते, तुंगे गगणतल-मणुलिहंतसिहरा पासादीया।

तेसि णं महिंदज्झयाणं उवरिं अट्ठट्ठ मंगलया झया छत्तातिछत्ता।

१६९. उन मणिपीठिकाओ के ऊपर एक-एक माहेन्द्रध्वज (इन्द्र के ध्वज के समान विशाल ध्वज) फहरा रहा है। वह माहेन्द्र ध्वज साठ योजन ऊँचे, आधा कोस जमीन के भीतर ऊँडे-गहरे, आधा कोस चौडे, वज्र रत्नो से निर्मित, दीप्तिमान, चिकने, कमनीय, मनोज्ञ वर्तुलाकार-गोल डंडे वाले अन्य ध्वजाओ से विशिष्ट है। हजारो छोटी-बडी अनेक प्रकार की मनोरम रग-बिरगी, पचरगी पताकाओ से परिमडित वायु वेग से फहराती हुई विजय-वैजयंती पताका, छत्रातिछत्र से युक्त आकाशमडल को स्पर्श करने वाले ऐसे ऊँचे उपरिभागो से अलकृत मन को प्रसन्न करने वाले है।

इन माहेन्द्र ध्वजो के ऊपर आठ-आठ मगल, ध्वजाये और छत्रातिछत्र सुशोभित हो रहे हैं।

MAHENDRA DHVAJ

169. On each of those platforms, there ıs fluttering a great flag (Mahendra Dhvaȷ) It is 68 yojans high, one-eighth yoȷan deep, one-eight yojan wide It is best of all other flags having round long shining smooth, beautıful poles made of Vaȷra jewels. The upper

part of the flag is decorated with thousands of buntings of different sizes and different colours that surround the vijay-vaijyanti flag. The flags are having umbrella one above the other touching the sky with their upper portion and provide pleasure to the mind.

Above each of the Mahendra Dhvaj (the great flag) there are eight auspicious symbols, other flags and umbrellas one above the other adding to their beauty.

१७०. तेसि णं महिंदज्झयाणं पुरतो पत्तेयं पत्तेयं नंदा पुक्खरिणीओ पण्णत्ताओ।

ताओ णं पुक्खरिणीओ एगं जोयणसयं आयामेणं, पण्णासं जोयणाइं विक्खंभेणं, दस जोयणाइं उव्वेहेणं, अच्छाओ जाव वण्णओ, एगइयाओ उदगरसेणं पण्णत्ताओ।

पत्तेयं पत्तेयं पउमवरवेइयापरिक्खित्ताओ, पत्तेयं पत्तेयं वणसंडपरिक्खित्ताओ।

तासि णं णंदाणं पुक्खरिणीणं तिंदिसिं तिसोवाणपडिरूवगा पण्णत्ता। तिसोवाणपडिरूवगाणं वण्णओ, तोरणा, झया, छत्तातिछत्ता।

१७०. उन प्रत्येक माहेन्द्र ध्वजाओ के आगे एक-एक नन्दा पुष्करिणी (बावडी) बनी हुई है।

ये पुष्करिणियाँ सौ योजन लम्बी, पचास योजन चौडी, दस योजन ऊँची-गहरी हैं और स्वच्छ-निर्मल जल से भरी है। इनमे से कितनेक का पानी स्वाभाविक पानी जैसा मधुर रस वाला है।

ये प्रत्येक नन्दा पुष्करिणियाँ एक-एक पद्मवरवेदिका और वनखडों से घिरी हुई हैं।

इन नन्दा पुष्करिणियो की तीन दिशाओ में अतीव मनोहर त्रिसोपान-पंक्तियाँ (तीन-तीन पगथियाँ-पायदान) हैं। इन त्रिसोपान-पक्तियो के ऊपर तोरण, ध्वजायें, छत्रातिछत्र सुशोभित है।

170. There is a lake in front of each of the Mahendra Dhvaj (the great flag).

These lakes are 100 yojans long, 50 yojans wide and 10 yojans deep. They are full of pure clean water. The water of many of them is as sweet as natural water.

On each of these Nanda Pushkarnis surrounded with a padmavarvedika and a forest-region.

On three sides of every lake (Nanda Pushkarni), there are three very attractive rows of steps (foot mats). They are decorated with festoons, flags and umbrellas one above the other.

१७१. सभाए णं सुहम्माए अडयालीसं मणोगुलियासाहस्सीओ पण्णत्ताओ, तं जहा–पुरत्थिमेणं सोलससाहस्सीओ, पच्चत्थिमेणं सोलससाहस्सीओ, दाहिणेणं अट्ठसाहस्सीओ, उत्तरेणं अट्ठसाहस्सीओ।

तासु णं मणोगुलियासु बहवे सुवण्णरूप्पमया फलगा पण्णत्ता। तेसु णं सुवन्नरूप्पमएसु फलगेसु बहवे वइरामया णागदंता पण्णत्ता। तेसु णं वइरामएसु णागदंतएसु किण्हसुत्त वट्टवग्घारियमल्लदामकलावा चिट्ठंति।

१७१. सुधर्मा सभा के पूर्व दिशा मे सोलह हजार, पश्चिम दिशा मे सोलह हजार, दक्षिण दिशा में आठ हजार और उत्तर दिशा मे आठ हजार, यो सुधर्मा सभा मे कुल अड़तालीस हजार मनोगुलिकाएँ (छोटे–छोटे चबूतरे) है।

उन मनोगुलिकाओं के ऊपर अनेक स्वर्ण एव रजतमय फलक–पाटिये और उन स्वर्ण–रजतमय पाटियो पर अनेक वज्र रत्नमय नागदत (खूँटियाँ) लगे है। उन वज्रमय नागदतो पर काले सूत से बनी हुई गोल लम्बी–लम्बी मालाये लटक रही है।

THE SEATS OF SUDHARMA COUNCIL-HALL

171. There are in all forty eight thousand seats in the Sudharma council-hall sixteen thousand each in east and west and eight thousand each in south and north

Many gold, silver and gemmed boards are on those seats fixed with many Vajra gemmed pegs Round long rosaries of black thread are hanging from those pegs.

१७२. सभाए णं सुहम्माए अडयालीसं गोमाणसियासाहस्सीओ पन्नत्ताओ। जह मणोगुलिया जाव णागदंतगा।

तेसु णं णागदंतएसु बहवे रययामया सिक्कगा पण्णत्ता। तेसु णं रययामएसु सिक्कगेसु बहवे वेरुलियामइओ धूवघडियाओ पण्णत्ताओ। ताओ णं धूवघडियाओ कालागुरुपवर जाव चिट्ठंति।

१७२. सुधर्मा सभा में अडतालीस हजार गोमानसिकाये (शय्या या पलँग) रखी हुई हैं। नागदंतों तक इनका वर्णन मनोगुलिकाओं के समान समझ लेना चाहिए।

उन नागदतो के ऊपर बहुत से रजतमय सींके (छीके) लटके है। उन रजतमय सींकों में बहुत-सी वैडूर्य रत्नों से बनी हुई धूपघटिकाएँ (धूप रखने का पात्र-धूपदानियाँ) रखी है। वे धूपघटिकाएँ काले अगर, श्रेष्ठ कुन्दरुष्क आदि की सुगन्ध से मन को मोहित कर रही हैं।

172. Forty eight thousand beds are in Sudhama council-hall. Their description upto pegs is similar to that of seats.

Many silvery loops (swings) are hanging from those pegs. Many incense-pots made of Vaidurya-gems are in those silvery swings. Those incense-pots are giving pleasure to the mind by the fragrance of black substance used as incense (kala guru) and Kundrushk (an incense).

माणवक चैत्य-स्तम्भ

१७३. सभाए णं सुहम्माए अंतो बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे पण्णत्ते जाव मणीहिं उवसोभिए मणिफासो य उल्लोओ य।

तस्स णं बहुसमरमणिज्जस्स भूमिभागस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महेगा मणिपेढिया पण्णत्ता, सोलस, जोयणाइं आयामविक्खंभेणं अट्ठ जोयणाइं बाहल्लेणं सव्वमणिमयो जाव पडिरूवा।

१७३. उस सुधर्मा सभा के भीतर मणियो से जडा हुआ अत्यन्त रमणीय सम भूभाग (फर्श) है। मणियो के स्पर्श एव चदेवा तक का सब वर्णन पूर्ववत् जानना चाहिए।

उस सम रमणीय भूमिभाग के मध्यदेश (बीच) मे एक विशाल मणिपीठिका बनी है। यह सोलह योजन लम्बी-चौडी और आठ योजन मोटी तथा रत्नो से जटित अतीव मनोरम है।

DIVINE MEMORIAL POST (MANAVAK CHAITYA)

173. There is a gem-studded extremely attractive level earth-region in the Sudharma council-hall. The description of touch of the jewels upto cloth-ceiling may be understood as described earlier.

In centre of that level attractive earth-region there is a big platform studded with gems. It is 16 yojans long square and 8 yojans thick. It is studded with jewels and very grand.

१७४. तीसे णं मणिपेढियाए उवरिं एत्थ णं माणवए चेइएखंभे पण्णत्ते, सट्ठिं जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, जोयणं उव्वेहेणं, जोयणं विक्खंभेणं, अडयालीसंसिए, अडयालीसइ कोडीए, अडयालीसइ विग्गहिए सेसं जहा महिंदज्झयस्स।

माणवगस्स णं चेइयखंभस्स उवरिं बारस जोयणाइं ओगाहेत्ता, हेट्ठा वि बारस जोयणाइं वज्जेत्ता, मज्झे छत्तीसाए जोयणेसु एत्थ णं बहवे सुवण्णरूप्पमया फलगा पण्णत्ता। तेसु णं सुवण्णरूप्पाएसु फलएसु बहवे वइरामया णागदंता पण्णत्ता। तेसु णं वइरामएसु नागदंतेसु बहवे रययामया सिक्कगा पण्णत्ता। तेसु णं रययामएसु सिक्कएसु बहवे वइरामया गोलवट्टसमुग्गया पण्णत्ता। तेसु णं वयरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु बहवे जिणसकहाओ संनिक्खित्ताओ चिट्ठंति।

ताओ णं सूरियाभस्स देवस्स अन्नेसिं च बहूणं देवाण य देवीण य अच्चणिज्जाओ जाव पज्जुवासणिज्जाओ।

माणवगस्स चेइयखंभस्स उवरिं अट्ठट्ठ मंगलगा, झया, छत्ताइच्छत्ता।

१७४. उस मणिपीठिका के ऊपर एक माणवक नामक चैत्य-स्तम्भ (चित्त को आनन्ददायी स्तम्भ) है। वह ऊँचाई मे साठ योजन ऊँचा, एक योजन जमीन के अदर गहरा, एक योजन चौडा और अडतालीस कोनो, अडतालीस धारो और अडतालीस आयामो-पहलुओ वाला है। इसके अतिरिक्त शेष वर्णन माहेन्द्र ध्वज जैसा जानना चाहिए।

उस माणवक चैत्य-स्तम्भ के ऊपर बारह योजन और नीचे बारह योजन छोडकर मध्य के शेष छत्तीस योजन प्रमाण भाग मे अनेक स्वर्ण और रजतमय फलक-पाटिये लगे हुए हैं। उन स्वर्ण-रजतमय फलको पर अनेक वज्रमय नागदत है। उन वज्रमय नागदतो पर बहुत से रजतमय सींके लटक रहे है। उन रजतमय सीको मे वज्रमय गोल-गोल समुद्गक (मजूषा-डिब्बा) रखे है। उन गोल-गोल वज्र रत्नमय समुद्गको मे बहुत-सी जिन-अस्थियाँ सुरक्षित रखी हुई है।

वे अस्थियाँ सूर्याभदेव एव अन्य देव-देवियों के लिए अर्चनीय यावत् पर्युपासनीय है।

उस माणवक चैत्य के ऊपर आठ-आठ मगल, ध्वजाएँ और छत्रातिछत्र सुशोभित हो रहे है।

174. On that platform, there is a divine memorial post (Manavak Chaitya Stambh). It is 60 yojans high, one yojan deep in the ground and one yojan wide It has 48 corners, 48 edges and 48 sides. The remaining description may be considered similar to that of Mahendra Dhvaj.

Many gold and silver boards are fixed in the central 36 yojans of that part, ignoring 12 yojans at the top and 12 yojans in the bottom.

On that board, there are many Vajra pegs; many silver swings are hanging on those pegs. Vajra round boxes are in those swings. The bones of Tirthankaras are safely preserved in those boxes.

Those boxes are worthy of worship for Suryabh Dev and other gods and goddesses and also fit to be adored.

On that post, there are eight auspicious symbols, flags and umbrellas one above the other.

विवेचन—सूत्र १६६ मे मणिपीठिका पर जिनेश्वरदेव की चार जिन-प्रतिमाएँ पर्यंकासन से विराजमान होने का उल्लेख है। सूत्र १६७ मे चैत्य वृक्ष का, सूत्र १७४ मे माणवक नामक चैत्य-स्तम्भ का और उस चैत्य-स्तम्भ पर लटकते हुए रत्नमय गोल डिब्बो मे जिन-अस्थियाँ रखी होने का वर्णन है। इसी प्रकार सूत्र १७७-१७८ मे सिद्धायतन का वर्णन है।

चैत्य वृक्ष का अर्थ हम सूत्र १६७ के विवेचन मे कर चुके है। विद्वानो ने 'चैत्य' शब्द के अर्थ अपनी-अपनी परम्परागत धारणाओ के अनुसार भिन्न-भिन्न किये है। किसी ने चैत्य का अर्थ पूजनीय-वदनीय किया है तो किसी ने चित्त को प्रसन्न करने वाला अथवा 'किसी चिता से सम्बन्धित' अर्थ भी किया है। जिन-प्रतिमा और जिन-अस्थियो के सम्बन्ध मे शाब्दिक भेद नहीं है। किन्तु मूर्तिपूजक परम्परा के अनुसार वे वन्दनीय-पूजनीय मानी जाती है जबकि अमूर्तिपूजक परम्परा स्वर्ग के देवताओ का एक जीताचार, परम्परागत व्यवहार मात्र मानती है। स्वर्ग मे उत्पन्न होने वाला देवता अपनी परम्परा व मर्यादा का गौरव रखने तथा अपने वीतरागदेव के प्रति श्रद्धा और आदरभाव प्रगट करने के लिए इस परम्परा का पालन करते है। अमूर्तिपूजक मान्यता है कि स्वर्ग मे ये शाश्वत प्रतिमाएँ तो है परन्तु उनका वर्णन विमान के अन्य अगो की तरह वर्णन-शैली का एक अग मात्र है। इसका अर्थ यह नही है कि उनकी पूजा-अर्चना करने से देवताओ का कल्याण होता होगा। इसलिए मूर्तिपूजा-समर्थक और मूर्तिपूजा-विरोधी दोनो ही इनका अपनी-अपनी परम्परा के अनुसार भिन्न-भिन्न अर्थ करते हैं।

Elaboration—In aphorism 166, there is description of existence of four statues of Tirthankaras in cross-legged posture on the platforms studded with gems In aphorism 167, there is description of memorial tree, in aphorism 174 that of memorial post and the round boxes containing remains of the Tirthankaras in the swings hanging from that post. Similarly in aphorism 177-178, there is description of Siddhayatan.

We have explained the meaning of memorial tree (Chaitya Vriksh) in the elaboration of aphorism 167 The scholars have interpreted the words 'Chaitya' differently according to their traditional approach Some have interpreted it as worthy of worship, some have interpreted it as pleasant to the heart while some have related it to the burning pyre. There is no confusion in interpretive of the words Jin-pratima (the statue of Tirthankar) are Jin-asthies (the remains of Tirthankar). But according to

the sect believing in statue worship, they are worthy of severence and worthy of worship while the opposite sect (sect not believing in statue-worship), it is simply a traditional conduct of gods, their instructive habit. The gods who take birth in heaven pay due regard to their tradition and restricted behaviour. Further, in order to exhibit their faith in and respect for omniscient (Veetarag) they follow this tradition. The sect not believing in statue-worship believe that there are permanent statues in the heaven but their description is simply like the description of other parts of Viman So the two sects interprets according to their tradition

देव-शय्या

१७५. तस्स माणवगस्स चेइयखंभस्स पुरत्थिमेणं एत्थ णं महेगा मणिपेढिया पण्णत्ता, अट्ठ जोयणाइं आयाम-विक्खंभेणं, चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं सव्वमणिमई अच्छा जाव पडिरूवा। तीसे णं मणिपेढियाए उवरिं एत्थ णं महेगे सीहासणे पण्णत्ते, सीहासणवण्णओ सपरिवारो।

तस्स णं माणवगस्स चेइयखंभस्स पच्चत्थिमेणं एत्थ णं महेगा मणिपेढिया पण्णत्ता, अट्ठ जोयणाइं आयामविक्खंभेणं, चत्तारि जोयणाइं बाहल्लेणं, सव्वमणिमया अच्छा जाव पडिरूवा। तीसे णं मणिपेढियाए उवरिं एत्थ णं महेगे देवसयणिज्जे पण्णत्ते।

तस्स णं देवसयणिज्जस्स इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तं जहा—णाणामणिमया पडिपाया, सोवन्निया पाया, णाणामणिमयाइं पायसीसगाइं, जंबूणयामयाइं गत्तगाइं, वइरामया संधी, णाणामणिमए विच्चे, रययामई तूली, लोहियक्खमया बिब्बोयणा, तवणिज्जमया गंडोवट्टाणया।

से णं सयणिज्जे सालिंगणवट्टिए उभओ बिब्बोयणं दुहओ उण्णते, मज्झे णयगंभीरे गंगापुलिण-वालुया-उद्दालसालिसए, सुविरइयरयत्ताणे, उवचियखोमदुगुल्लपट्ट-पडिच्छायणे आईणग-रूय-बूर-णवणीय-तूलफासमउए, रत्तंसुयसंवुए सुरम्मे पासादीए पडिरूवे।

१७५. उस माणवक चैत्य-स्तम्भ के पूर्व दिग्भाग मे विशाल मणिपीठिका बनी हुई है, जो आठ योजन लम्बी-चौडी तथा चार योजन मोटी है। उस मणिपीठिका के ऊपर एक विशाल सिहासन रखा है। भद्रासन आदि सिंहासनों का वर्णन पूर्ववत् जानना चाहिए।

उस माणवक चैत्य-स्तम्भ की पश्चिम दिशा में आठ योजन लम्बी-चौडी, चार योजन मोटी, सर्वमणिमय, स्वच्छ-निर्मल एक बड़ी मणिपीठिका है। उस मणिपीठिका के ऊपर एक श्रेष्ठ रमणीय देव-शय्या रखी हुई है।

उस देव-शय्या का वर्णन इस प्रकार है, जैसे-इसके प्रतिपाद (पाँव रखने का स्थान-पायदान) अनेक प्रकार की मणियों से बने हुए हैं। स्वर्ण के पाये हैं। पादशीर्षक (पायों के ऊपरी भाग) अनेक प्रकार की मणियो के हैं। गाते (ईसाएँ, पाटियाँ) सोने की हैं। साँधें वज्र रत्नो से भरी हुई है। बाण (निवार) विविध रत्नमयी है। तूली (बिछौना-गादला), बिब्बोयण (बडा तकिया) लोहिताक्ष रत्न का है। गडोपधानिका (सिरहाने लेने का छोटा तकिया) सोने का है।

उस शय्या पर शरीर प्रमाण गद्दा बिछा है। उसके शिरोभाग और चरणभाग (सिरहाने और पाँयते) दोनो ओर तकिये लगे हैं। वह दोनों ओर से ऊँची और मध्य में नत-झुकी हुई, गभीर गहरी है। जैसे-गंगा किनारे की बालू में पाँव रखने से पाँव धँस जाता है, उसी प्रकार बैठते ही नीचे की ओर धँस जाते है। उस पर रजस्त्राण (मसहरी) लगी हुई है। कसीदा वाला क्षौमदुकूल (रुई की बनी चादर-बैडसीट) बिछी है। उसका स्पर्श आजिनक-मृगछाला, रुई, बूर नामक वनस्पति, मक्खन और आक की रुई के समान कोमल है। वह रक्तांशुक-लाल तूस से ढका रहता है। वह अत्यन्त रमणीय, सुन्दर है।

BED OF GODS

175. In the east of that memorial post, there is a great gem-studded platform. It is 8 yojans long square and 4 yojans thick. The description of seats and thrones be understood as described earlier

In the west of that post there is an 8 yojans long square and 4 yojans thick gem-studded platform It is fully covered with gems and is neat and clean A grand and attractive bed for gods is on that platform.

The description of that bed is as under—Its foot mats are made many types of gems. Its legs are of gold. The upper part of the legs are studded with various types of jewels. The paatees are of gold. The joints are of Vajra gems. The knitting is of various jewels. The mattress and the pillow are of red jewels. The small pillow for side rest is of gold.

A mattress body-size is spread on that bed. The pillars are both at the head and tail of the bed. The bed is higher on both sides and is deep and bent downwards in the middle. Just as the foot goes in when one walks on Gangetic sand, the mattress pushes downwards when one sits on it. A well arranged mesh to protect it from dust was fixed on it. An embroidered, cotton bed sheet was spread on it. Its touch was as soft as deer skin cotton, boor vegetation, butter and cotton of Akad plant. It is covered with red toos It is extremely attractive and beautiful.

आयुधगृह–शस्त्रागार

१७६. तस्स णं देवसयणिज्ञस्स उत्तरपुरत्थिमेणं महेगा मणिपेढिया पण्णत्ता–अट्ठ जोयणाइं आयाम–विक्खंभेणं, चत्तारि जोअणाइं बाहल्लेणं, सव्वमणिमयी जाव पडिरूवा।

तीसे णं मणिपेढियाए उवरिं एत्थ णं महेगे खुड्डए महिंदज्झए पण्णत्ते, सट्ठि जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, जोयणं विक्खंभेणं वइरामया वट्टलट्ठसंठियसुसिलिट्ठ जाव पडिरूवा। उवरिं अट्ठट्ठ मंगलगा, झया, छत्तातिछत्ता।

तस्स णं खुड्डागमहिंदज्झयस्स पच्चत्थिमेणं एत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स चोप्पाले नाम पहरणकोसे पन्नत्ते, सव्ववइरामए अच्छे जाव पडिरूवे।

तत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स फलिहरयण–खग्ग–गया–धणुप्पमुहा बहवे पहरणरयणा संनिक्खित्ता चिट्ठंति, उज्जला निसिया सुतिक्खधारा पासादीया····।

सभाए णं सुहम्माए उवरिं अट्ठट्ठ मंगलगा, झया, छत्तातिछत्ता।

१७६. उस देव-शय्या के उत्तर-पूर्व दिशा मे आठ योजन लम्बी-चौडी, चार योजन मोटी, सर्वमणिमय एक बडी मणिपीठिका है।

उस मणिपीठिका के ऊपर साठ योजन ऊँचा, एक योजन चौडा, वज्र रत्नमय, सुन्दर, गोल आकार वाला, छोटा माहेन्द्र ध्वज फहरा रहा है। वह स्वस्तिक आदि आठ मगलों, ध्वजाओ और छत्रातिछत्रो से शोभित है।

उस छोटे माहेन्द्र ध्वज की पश्चिम दिशा मे सूर्याभदेव का 'चोप्पाल' नामक प्रहरणकोश (आयुधगृह-शस्त्रागार) है। यह आयुधगृह सम्पूर्ण चाँदी का बना है।

उस शस्त्रागार मे सूर्याभदेव के परिघ रत्न (मूसल, लोहे का मुद्गर), तलवार, गदा, धनुष आदि बहुत से श्रेष्ठ अस्त्र-शस्त्र सुरक्षित रखे हैं। वे सभी शस्त्र अत्यन्त उज्ज्वल, चमकीले, तीक्ष्ण धार वाले और मन को चमत्कृत करने वाले हैं।

सुधर्मा सभा का ऊपरी भाग आठ-आठ मगलों, ध्वजाओं और छत्रातिछत्रों से सुशोभित हो रहा है।

ARMOURY

176. In the north of that bed there is 8 yojans long square and 4 yojans thick, totally jewelled big platform.

On that platform, a 60 yojans high, one yojan wide, Vajra-gemmed, beautiful, round, small Mahendra Dhvaj is fluttering. It is decorated with eight auspicious symbols namely swastik and others, flags and umbrellas one over the other.

In the west of that small Mahendra Dhvaj, there is armoury (treasure of weapons) called 'Choppaal' of Suryabh Dev. This is all made of silver

Many crystalline swords, thunder-bolts, bows and other important weapons of Suryabh Dev are stored there and well-protected in that Choppaal. All those weapons are bright, shining, sharp-edged and providing satisfaction to the mind

The upper part of the armoury is decorated with eight auspicious symbols, flags and umbrellas one above the other.

सिद्धायतन

१७७. सभाए णं सुहम्माए उत्तरपुरत्थिमेणं एत्थ णं महेगे सिद्धायतणे पण्णत्ते, एगं जोयणसयं आयामेणं, पन्नासं जोयणाइं विक्खंभेणं, बावत्तरिं जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, सभागमएणं जाव गोमाणसियाओ, भूमिभागा, उल्लोया तहेव।

१७७. उस सुधर्मा सभा के उत्तर-पूर्व दिग्भाग (ईशानकोण) मे एक विशाल सिद्धायतन (देवालय) है। वह सौ योजन लम्बा, पचास योजन चौडा और बहत्तर योजन ऊँचा है तथा इस सिद्धायतन का गोमानसिकाओ पर्यन्त एव भूमिभाग तथा चदेवा का वर्णन सुधर्मा सभा के समान (सूत्र १७१ के अनुसार) जानना चाहिए।

AN ETERNAL TEMPLE (SIDDHAYATAN)

177. In the north-east direction of Sudharma council-hall, there is a great eternal temple. It is 100 yojans long, 50 yojans wide and 72 yojans high. The description of this temple upto long verandahs, earth-region and cloth-ceiling may be considered similar to that of Sudhama council-hall in aphorism 171.

१७८. तस्स णं सिद्धायतणस्स बहुमज्झदेसभाए एत्थ णं महेगा मणिपेढिया पण्णत्ता–सोलस जोयणाइं आयामविक्खंभेणं, अट्ठ जोयणाइं बाहल्लेणं। तीसे णं मणिपेढियाए उवरिं एत्थ णं महेगे देवच्छंदए पण्णत्ते सोलस जोयणाइं आयामविक्खंभेणं, साइरेगाइं सोलस जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, सव्वरयणामए जाव पडिरूवे। एत्थ णं अट्ठसयं जिणपडिमाणं जिणुस्सेहप्पमाणमित्ताणं संनिक्खित्तं संचिट्ठति।

तासि णं जिणपडिमाणं इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तं जहा–

तवणिज्जमया हत्थतलपायतला, अंकामयाइं नक्खाइं अंतोलोहियक्खपडिसेगाइं, कणगामईओ जंघाओ, कणगामया जाणू, कणगामया उरू, कणगामईओ गायलट्ठीओ, तवणिज्जमयाओ नाभीओ, रिट्ठामईओ रोमराईओ, तवणिज्जमया चुचुया, तवणिज्जमया सिरिवच्छा, सिलप्पवालमया ओट्ठा, फालियामया दंता, तवणिज्जमईओ जीहाओ, तवणिज्जमया तालुया, कणगामईओ नासिगाओ अंतोलोहियक्खपडिसेगाओ, अंकामयाणि अच्छीणि अंतोलोहियक्खपडिसेगाणि, रिट्ठामईओ ताराओ रिट्ठामयाणि अच्छिपत्ताणि, रिट्ठामईओ भमुहाओ, कणगामया कवोला, कणगामया सवणा, कणगामईओ णिडालपट्टियाओ, वइरामईओ सीसघडीओ, तवणिज्जमईओ केसंतकेसभूमीओ, रिट्ठामया उवरिं मुद्धया।

१७८. उस सिद्धायतन के ठीक मध्य मे सोलह योजन लम्बी–चौडी, आठ योजन मोटी एक विशाल मणिपीठिका बनी है। उस मणिपीठिका के ऊपर सोलह योजन लम्बा–चौडा और कुछ अधिक सोलह योजन ऊँचा मणियो से बना हुआ एक विशाल देवच्छन्दक स्थापित है और उस पर जिन–शरीर प्रमाण पर तीर्थकरो की ऊँचाई के बराबर वाली एक सौ आठ जिन–प्रतिमाएँ विराजमान है।

उन जिन–प्रतिमाओ का वर्णन इस प्रकार है, जैसे कि–

उन प्रतिमाओं की हथेलियाँ और पगथलियाँ तपनीय (तपे हुए) स्वर्ण की हैं। मध्य में खचित लोहिताक्ष रत्न से युक्त अक रत्न के नख (श्वेत मे लाल आभा वाले) है। जघाएँ, जानुएँ, घुटने, पिंडलियाँ और देहलता–शरीर कनकमय है। नाभियाँ तपनीय (स्वर्ण–लाल आभा) मय हैं। रोमराजि रिष्ट रत्नमय (कृष्ण आभा वाली) है। चूचक (स्तन का अग्र भाग) और श्रीवत्स (वक्षस्थल पर बना हुआ चिह्न–विशेष) तपनीयमय है। होठ प्रवाल (मूँगा) के बने हुए है, दत–पंक्ति स्फटिक मणियो और जिह्वा एवं तालु तपनीय स्वर्ण (लालिमायुक्त

स्वर्ण) के है। नासिकाएँ बीच में लोहिताक्ष रत्न खचित कनकमय (पीली-लाल आभा) हैं और नेत्रों की तारिकाएँ (कनीनिकाएँ-आँख के बीच का काला भाग), अक्षिपत्र-पलकें तथा भौहे रिष्ट रत्नमय है। कपोल, कान और ललाट कनकमय है। शीर्षघटी (खोपड़ी) वज्र रत्नमय है। केशान्त की केशभूमि-शेर की चमडी तपनीय स्वर्णमय है और केश रिष्ट रत्नमय हैं।

178. In the middle of that eternal temple, there is a large platform. It is 16 yojans long square and 8 yojans thick. On that platform there is a big altar (to place idol) which is 16 yojans long square and a little more than 16 yojans high. It is gem- studded. On it are 108 idols of full size of Tirthankaras.

The description of those idols is as under—

The palms and foot-palms of those idols are of pure gold. In the middle there are white nails spreading red lustre. The thighs, the knees, the knees and the body-structure of the idols is of gold. The naval is of gold emitting red lustre. Their lines of hair are emitting black lustre. The upper part of the teats and the symbol on the chest (Shrivats) is of heated gold. The lips are of coral. The teeth are of crystalline gems The tongue and palate (upper part of the mouth) is of heated gold The nasals are of yellow-red lustre. The pupil of eyes, the eye-lids and eye-brows are of Risht jewels. The cheeks, the ears and the forehead are of gold. The head is of Vajra gems. The skin of the head is of heated gold and the hair are of Risht jewels

विवेचन-**'सिद्धायतन'** का अर्थ है एक शाश्वत देवालय या जिन-मन्दिर। **'जिनोत्सेध'** से अभिप्राय है-जिन-भगवान के शरीर प्रमाण जितना। जिन-भगवान के शरीर की अधिकतम ऊँचाई ५०० धनुष और जघन्य सात हाथ प्रमाण युगानुसार बताई है। **'देवच्छन्दक'** का एक अर्थ है धर्मदेशना के पश्चात् जहाँ पर तीर्थंकर विश्राम करते है। वह स्थान, किन्तु यहाँ पर इसका अभिप्राय है-भूमि से दो-तीन हाथ ऊँची देवमूर्ति रखने की वेदी या विशेष चौकी।

Elaboration—'Siddhayatan' means an eternal temple. **'Jinotsedh'** means equal in size of the Tirthankar The maximum size of a Tirthankar is 500 dhanush and the minimum is seven haath (6 measure). **'Devachhandak'** is the place where Tirthankar takes rest after spiritual discourse. But here it means the altar about two to three haath higher from the ground on which the idol is placed

१७९. (क) तासि णं जिणपडिमाणं पिट्ठतो पत्तेयं पत्तेयं छत्तधारगपडिमाओ पण्णत्ताओ। ताओ णं छत्तधारगपडिमाओ हिम-रमय-कुंदेंदुप्पगासाइं, सकोरंटमल्लदामधवलाइं आयवत्ताइं सलीलं धारेमाणीओ धारेमाणीओ चिट्ठंति।

(ख) तासि णं जिणपडिमाणं उभओ पासे पत्तेयं पत्तेयं चामरधारग पडिमाओ पण्णत्ताओ। ताओ णं चामर धारगपडिमाओ चंदप्पह वयर वेरुलिय नानामणिरयणखचिय चित्तदंडाओ सुहुमरयत्त-दीहवालाओ संखंककुंद-दगरय-अमतमहिय-फेणपुंजसन्निकासाओ धवलाओ चामराओ सलीलं धारेमाणीओ चिट्ठंति।

(ग) तासि णं जिणपडिमाणं पुरतो दो-दो नागपडिमाओ जक्खपडिमाओ, भूयपडिमाओ, कुंडधारपडिमाओ सव्वरयणामईओ अच्छाओ जाव चिट्ठंति।

(घ) तासि णं जिणपडिमाणं पुरतो अट्ठसयं घंटाणं, अट्ठसयं चंदणकलसाणं, अट्ठसयं भिंगाराणं एवं आयंसाणं, थालाणं पाईणं सुपइट्ठाणं, मणोगुलियाणं वायकरगाणं, चित्तगराणं रयणकरंडगाणं, हयकंठाणं जाव उसभकंठाणं, पुप्फचंगेरीणं जाव लोमहत्थचंगेरीणं, पुप्फपडलगाणं तेल्लसमुग्गाणं जाव अंजणसमुग्गाणं, अट्ठसयं झयाणं, अट्ठसयं धूवकडुच्छयाणं संनिक्खित्तं चिट्ठति।

(ङ) सिद्धायतणस्स णं उवरिं अट्ठट्ठ मंगलगा, झया छत्तातिछत्ता।

१७९. (क) उन जिन-प्रतिमाओं मे से प्रत्येक प्रतिमा के पीछे एक-एक छत्रधारक-छत्र लिए खडी देवियो की प्रतिमाएँ है। वे छत्रधारक प्रतिमाएँ लीला करती हुई-सी भावभगिमापूर्वक हिम, रजत, कुन्दपुष्प और चन्द्रमा के समान प्रभा-काति वाले श्वेत कोरट पुष्पो की मालाओ से युक्त धवल-श्वेत आतपत्रो (छत्रो) को अपने-अपने हाथों मे धारण किए हुए खडी हैं।

(ख) प्रत्येक जिन-प्रतिमा के दोनो बाजुओ में एक-एक चामरधारक प्रतिमाएँ है। वे चामरधारक प्रतिमाएँ अपने-अपने हाथो मे विविध मणि-रत्नो से रचित चित्रामो से युक्त चन्द्रकान्त, वज्र और वैडूर्य मणियो की डडियों वाले, पतले, रजत जैसे श्वेत लम्बे-लम्बे बालों वाले, शंख, अक रत्न, कुन्दपुष्प, जलकण, रजत और मन्थन किए हुए अमृत के फेन समान श्वेत-धवल चामरो को धारण करके लीलापूर्वक बीजती हुई-सी खडी है।

(ग) उन जिन-प्रतिमाओ के आगे दो-दो नाग-प्रतिमाएँ, यक्ष-प्रतिमाएँ, भूत-प्रतिमाएँ, कुड (पात्र-विशेष) धारक प्रतिमाएँ खडी है। ये सभी प्रतिमाएँ रत्नमय अनुपम शोभा से सम्पन्न है।

(घ) उन जिन-प्रतिमाओं के आगे एक सौ आठ-एक सौ आठ घंटा, चन्दनकलश, भृंगार (मांगलिक कलश या झारी), दर्पण, थाल, पात्रियाँ, सुप्रतिष्ठान, मनोगुलिकाएँ (छोटी चौकी), वातकरक (खाली घड़ा), चित्रकारक, रत्नकरडक (रत्न पिटारे), अश्वकंठ यावत् वृषभकंठ जैसी पुष्पचगेरिकाएँ (फूलो की टोकरियाँ) यावत् मयूरपिच्छ चगेरिकाएँ, पुष्पपटलक, तेलसमुद्गक (तेल की शीशी) यावत् अजनसमुद्गक (अंजन की डिब्बी), एक सौ आठ ध्वजाएँ, एक सौ आठ धूपकडुच्छुक (धूपदान) रखे हैं।

(ड) सिद्धायतन का ऊपरी भाग स्वस्तिक आदि आठ-आठ मंगलों, ध्वजाओं और छत्रातिछत्रों से शोभायमान है।

179. (a) Behind each of those idols, there are idols of goddesses in standing posture having an umbrella in their hands Those goddesses are dancing, wearing garlands of white flowers emitting bright lustre like that of snow, silver, kund flowers and moon. They are standing holding white umbrellas in their hands

(b) On each of the two sides of the Tirthankar idols there is a chamar hearing idol They are holding chamars in their hand, moving them in a sporting manner. The chamar has sticks of Vajra and Vaidurya gems hearing pictures made of gems and jewels. These hair of the chmaries are soft, silvery white and long. The chamaries are as white as conch, white jewel, kund flower, water drop and foam arising due to churning.

(c) There are idols of demon gods namely naag, yaksh, bhoot and vessel-holding idols all in standing posture. All these idols are gem-studded and of great grandeur.

(d) In front of the Tirthankar idols, there are 108 bells, sandal pots, auspicious pots, mirrors, plates, small pots, earthen pots, small stools, empty pitchers, designers, gem baskets, horse-shaped and bullock-shaped flower baskets, baskets having mops of peacock feathers, flower buds, oil phials (small bottles) and upto smell box of coryllium, 108 flags and 108 incense pots

(e) The upper part of Siddhayatan is decorated with eight auspicious symbols, flags and umbrellas one above the other.

१८०. तस्स णं सिद्धायतणस्स उत्तरपुरत्थिमेणं एत्थ णं महेगा उववायसभा पण्णत्ता, जहा सभाए सुहम्माए तहेव जाव मणिपेढिया अट्ठ जोयणाइं, देवसयणिज्जं तहेव सयणिज्जवण्णओ, अट्ठट्ठ मंगलगा, झया, छत्तातिछत्ता।

१८०. इस सिद्धायतन के ईशानकोण मे एक विशाल श्रेष्ठ उपपात सभा (देवताओं के उत्पन्न होने का स्थान) बनी हुई है। सुधर्मा सभा के समान ही इस उपपात सभा का वर्णन समझना चाहिए। मणिपीठिका की लम्बाई-चौडाई आठ योजन की है और सुधर्मा सभा में स्थित देव-शय्या के समान यहाँ की शय्या का ऊपरी भाग आठ मंगलो, ध्वजाओ और छत्रातिछत्रों से शोभायान हो रहा है।

PLACE OF BIRTH FOR HEAVENLY-BEINGS

180. In the eastern corner of the eternal temple (Siddhayatan) is a large grand place meant for birth for heavenly-beings (upapat sabha). Its description may be considered similar to that of Sudharma Sabha The length and breadth of its platform is 8 yojans. Like the bed for gods in Sudharma Sabha, the upper part of the bed here is also decorated with eight auspicious symbols, flags and umbrellas one above the other.

१८१. तीसे णं उववायसभाए उत्तरपुरत्थिमेणं एत्थ णं महेगे हरए पण्णत्ते, एगं जोयणसयं आयामेणं, पण्णासं जोयणाइं विक्खंभेणं, दस जोयणाइं उव्वेहेणं, तहेव से णं हरए एगाए पउमवरवेइयाए, एगेण वणसंडेण सव्वओ समंता संपरिक्खित्ते। तस्स णं हरयस्स तिदिसं तिसोवाणपडिरूवगा पन्नत्ता।

१८१. उस उपपात सभा के उत्तर-पूर्व दिग्भाग-ईशानकोण मे एक विशाल जलाशय-सरोवर है। इसकी लम्बाई एक सौ योजन एव चौडाई पचास योजन है तथा गहराई दस योजन है। यह सरोवर सभी दिशाओ मे एक पद्मवरवेदिका एव एक वनखण्ड से घिरा हुआ है तथा इसके तीनो दिशाओं मे अतीव मनोरम तीन सीढियाँ बनी हुई है।

181. In the north-east direction of the place of birth is a large lake It is 100 yojans long, 50 yojans wide and 10 yojans deep. It is surrounded with a padmavarvedika and a forest-region. Beautiful stairs are in its three sides.

अभिषेक सभा

१८२. तस्स णं हरयस्स उत्तरपुरत्थिमे णं एत्थ णं महेगा अभिसेगसभा पण्णत्ता, सुहम्मागमएणं जाव गोमाणसियाओ मणिपेढिया सीहासणं सपरिवारं जाव दामा चिट्ठंति।

तत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स सुबहु अभिसेयभंडे संनिक्खित्ते चिट्ठइ, अट्ठट्ठ मंगलगा तहेव।

१८२. उस सरोवर के ईशानकोण में एक विशाल अभिषेक सभा है। सुधर्मा सभा के अनुरूप ही वहाँ पर गोमानसिकाएँ, मणिपीठिका, सपरिवार सिहासन यावत् मुक्तादाम (मोती के झुमके) इत्यादि है।

वहाँ सूर्याभदेव के अभिषेक योग्य साधन-सामग्री से भरे हुए बहुत-से भाण्ड (पात्र आदि) रखे है तथा इस अभिषेक सभा के ऊपरी भाग मे आठ-आठ मगल आदि सुशोभित हो रहे हैं।

CORONATION-HALL

182. In the north-east side of that lake is a large hall for coronation. The large verandahs, the platforms, the throne and its accessories upto pearl ear-rings are in accordance with the status of Sudharma Sabha.

Many vessels containing the material for coronation of Suryabh Dev have been kept there. The upper part of the coronation-hall is decorated with eight auspicious symbols and other suchlike.

अलंकार सभा

१८३. तीसे णं अभिसेगसभाए उत्तरपुरत्थिमेणं एत्थ णं अलंकारियसभा पण्णत्ता, जहा सभा सुधम्मा मणिपेढिया अट्ठ जोयणाइं, सीहासणं सपरिवारं। तत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स सुबहु अलंकारियभंडे संनिक्खित्ते चिट्ठंति, सेसं तहेव।

१८३. उस अभिषेक सभा के ईशानकोण मे एक अलंकार सभा (शृगार गृह) है। सुधर्मा सभा के समान ही इस अलंकार सभा का तथा आठ योजन की मणिपीठिका एवं सपरिवार सिंहासन आदि का वर्णन समझ लेना चाहिए। अलंकार सभा में सूर्याभदेव के द्वारा धारण किए जाने वाले अलंकारो (आभूषणों) से भरे हुए बहुत-से अलंकार-भांड (पेटियाँ) रखे हैं।

CHAMBER FOR PUTTING ON ORNAMENT

183. In the north-east of coronation-hall, here is a chamber for putting on ornaments. Its description may be considered similar to that of Sudhama Sabha including platform of 8 yojans and throne along with others. Many jewellery boxes full of ornaments for use of Suryabh Dev are in that chamber.

व्यवसाय सभा (पुस्तकालय)

१८४. तीसे णं अलंकारियसभाए उत्तरपुरत्थिमे णं तत्थ णं महेगा ववसायसभा पण्णत्ता, जहा उववायसभा जाव सीहासणं सपरिवारं मणिपेढिया, अट्ठट्ठ मंगलगा।

१८४. उस अलकार सभा के ईशानकोण मे एक विशाल व्यवसाय सभा (पुस्तकालय) बनी है। उपपात सभा के अनुरूप ही यहाँ पर भी सपरिवार सिहासन, मणिपीठिका, आठ-आठ मंगल आदि शोभित हैं।

LIBRARY

184. It north-east direction of the chamber for wearing ornaments, there is a large library. The platform, seats and eight auspicious symbols in it are similar to the place of birth.

पुस्तकरत्न एवं नन्दा पुष्करिणी

१८५. तत्थ णं सूरियाभस्स देवस्स एत्थ महेगे पोत्थयरयणे सन्निक्खित्ते चिट्ठइ, तस्स णं पोत्थयरयणस्स इमेयारूवे वण्णावासे पण्णत्ते, तं जहा–

रिट्ठामईओ कंबिआओ, तवणिज्जमए दोरे; नाणामणिमए गंठी, रयणामयाइं पत्तगाइं, वेरुलियमए लिप्पासणे, रिट्ठामए छंदणे, तवणिज्जमई संकला, रिट्ठामई मसी, वइरामई लेहणी, रिट्ठामयाइं अक्खराइं, धम्मिए लेक्खे।

ववसायसभाए णं उवरिं अट्ठट्ठ मंगलगा।

तीसे णं ववसायसभाए उत्तरपुरत्थिमेणं एत्थ णं नंदा पुक्खरिणी पण्णत्ता हरयसरिसा।

तीसे णं णंदाए पुक्खरिणीए उत्तरपुरत्थिमेणं महेगे बलिपीढे पण्णत्ते सव्वरयणामए अच्छे जाव पडिरूवे।

१८५. उस व्यवसाय सभा मे सूर्याभदेव का विशाल श्रेष्ठतम पुस्तकरत्न रखा है। उस पुस्तकरत्न का वर्णन इस प्रकार है–

इसके पूठे रिष्ट (काले) रत्न के हैं। डोरा स्वर्णमय है। गाँठें विविध मणियों की हैं। पत्र रत्नमय हैं। लिप्यासन-(दवात) वैडूर्यरत्न की है। उसका ढक्कन रिष्ट रत्नों का है। साँकल तपनीय स्वर्ण की बनी हुई है। रिष्ट रत्न से बनी हुई स्याही है। वज्र रत्न की लेखनी-कलम है। रिष्ट रत्नमय अक्षर है और उसमें धार्मिक लेख लिखे है।

व्यवसाय सभा का ऊपरी भाग आठ-आठ मगल आदि से सुशोभित हो रहा है।

उस व्यवसाय सभा में उत्तर-पूर्व दिग्भाग में एक नन्दा पुष्करिणी है। ह्रद के समान इस नन्दा पुष्करिणी का वर्णन जानना चाहिए।

उस नन्दा पुष्करिणी के ईशानकोण मे रत्नमय, निर्मल एक विशाल बलिपीठ (बलि कर्म करने का स्थान-विशेष) बना है।

THE GREAT BOOK AND NANDA PUSHKARNI

185. In the library, there is the great and best book of Suryabh Dev. Its description is as under—

Its cover is of Risht (black) jewels The thread is of gold. The knots are of gems of various types. Its leaves are of jewels. The inkpot is of Vaidurya gems. The cover is of Risht (black) gems. The handle is of heated gold. The ink is of Risht (black) gems. The pen is of Vajra gem. The words are of black gems and writings relating to philosophical types are in it.

The upper part of the library has eight auspicious symbols.

In the north of that library, there is a lake (Nanda Pushkarni). The description of this Nanda Pushkarni is similar to that of lake.

In the north-east of Nanda Pushkarni, there is a jewelled, neat and large seat of Suryabh Dev for offerings.

उपपात के पश्चात् सूर्याभदेव का चिन्तन

१८६. तेणं कालेणं तेणं समएणं सूरियाभे देवे अहुणोववण्णमित्तए चेव समाणे पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तीभावं गच्छइ, तं जहा-आहारपज्जत्तीए, सरीरपज्जत्तीए, इंदियपज्जत्तीए, आणपाणपज्जत्तीए, भासा-मणपज्जत्तीए।

तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स पंचविहाएं पज्जत्तीए पज्जत्तीभावं गयस्स समाणस्स इमेयारूवे अज्झत्थिए चिंतिए पत्थिए, मणोगए संकप्पे समुप्पज्जित्था-किं मे पुव्विं

करणिज्जं ? किं मे पच्छा करणिज्जं ? किं मे पुव्विं सेयं ? किं मे पच्छा सेयं ? किं मे पुव्विं पि पच्छा वि हियाए सुहाए खमाए णिस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ ?

१८६. उस काल और समय मे तत्काल उत्पन्न होकर वह सूर्याभदेव (१) आहार पर्याप्ति, (२) शरीर पर्याप्ति, (३) इन्द्रिय पर्याप्ति, (४) श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति, और (५) भाषा मनःपर्याप्ति–इन पाँच पर्याप्तियों से पर्याप्त अवस्था को प्राप्त हुआ।

पाँच प्रकार की पर्याप्तियो से पर्याप्त भाव को प्राप्त होने के पश्चात् उस सूर्याभदेव को इस प्रकार का विचार, चिन्तन, अभिलाषा, मनोगत एव सकल्प उत्पन्न हुआ कि मुझे पहले क्या करना चाहिए और उसके बाद क्या करना चाहिए, मुझे पहले क्या करना कल्याणकर है और बाद में क्या करना उचित है ? तथा पहले भी और पश्चात् भी क्या करना योग्य है जो मेरे हित के लिए, सुख के लिए, क्षेम के लिए, कल्याण के लिए और अनुगामी रूप से (अगले जन्म के लिए) शुभानुबध का कारण होगा ?

THOUGHTS OF SURYABH DEV AFTER HIS BIRTH

186. In that period at that time, Suryabh Dev in a short span Suryabh Dev completed (1) the process of taking of food, (2) the formation of his body, (3) the formation of sense-organs, (4) the exhaling and inhaling breathing process, and (5) the speaking-cum-thinking characteristic, all the five processes for completion of celestial being

Thereafter, Suryabh Dev started thinking, meditating, brooding, pondering over and deciding what he should do first and what thereafter, performance of which act first is beneficial to him and what should be done later ? He also thought on what is proper for him to do first, what is in his interest, what is beneficial for him, what is for his welfare and what is going to be beneficial for him in the next life ?

विवेचन–इस सूत्र मे सूर्याभदेव के उत्पन्न होते ही अन्तर्मुहूर्त्त मे पर्याप्ति-सम्पन्न होने की चर्चा है। पर्याप्ति क्या है, कितनी है ? इस सम्बन्ध मे सलग्न विवेचन उपयोगी होगा–

'पर्याप्ति' जैनदर्शन का एक पारिभाषिक शब्द है। इसका अर्थ है–आत्मा की विशिष्ट शक्ति की परिपूर्णता। इस विशिष्ट शक्ति के द्वारा जीव आहार-शरीरादि के योग्य पुद्गलो को ग्रहण करके उन्हे आहारादि के रूप मे बदलता है। यह पर्याप्ति शक्ति पुद्गलो के उपचय से मिलती है। जब कोई जीव पुराना शरीर छोडकर नया शरीर धारण करता है तो उसके जीवन यापन के लिए कुछ आवश्यक पौद्गलिक सामग्री की आवश्यकता होती है। इस पौद्गलिक सामग्री का निर्माण जीव जिस विशिष्ट शक्ति के द्वारा

सम्पन्न करता है वह शक्ति-विशेष 'पर्याप्ति' कहलाती है। आत्मा की यह विशिष्ट शक्ति 'पर्याप्ति नामकर्म' के उदय से प्रस्फुटित होती है।

जैनागमो मे पर्याप्ति के छह भेद निरूपित हैं। यथा-

(१) आहार पर्याप्ति,

(२) शरीर पर्याप्ति,

(३) इन्द्रिय पर्याप्ति,

(४) श्वासोच्छ्‌वास पर्याप्ति,

(५) भाषा पर्याप्ति,

(६) मन पर्याप्ति।

जिस शक्ति से जीव आहार के योग्य पुद्‌गलो को ग्रहण कर उनको खल और रस रूप मे परिणत करता है और असार रूप मे छोड देता है वह शक्ति 'आहार पर्याप्ति' कहलाती है। इसी प्रकार जिस शक्ति से जीव रस रूप मे परिणत आहार को रक्त, माँस, मज्जा और वीर्य आदि सात धातुओ मे बदलता है वह 'शरीर पर्याप्ति', जिस शक्ति से जीव सप्त धातुओ को स्पर्शन, रसन आदि इन्द्रियो मे बदलता है वह 'इन्द्रिय पर्याप्ति', जिस शक्ति से जीव श्वास और उच्छ्‌वास योग्य पुद्‌गलो को ग्रहण करता और छोडता है वह 'श्वासोच्छ्‌वास पर्याप्ति', जिस शक्ति से जीव भाषा योग्य भाषावर्गणा के पुद्‌गलो को ग्रहण करके भाषा रूप मे परिणत करके छोडता है वह 'भाषा पर्याप्ति' तथा जिस शक्ति के द्वारा जीव मनोवर्गणा के पुद्‌गलो को ग्रहण कर मन रूप मे बदलता और छोडता है वह 'मन पर्याप्ति' कहलाती है।

आहार पर्याप्ति के पूर्ण होने मे एक समय लगता है जबकि शरीरादि पाँच पर्याप्तियो में से प्रत्येक को कुल मिलाकर अन्तर्मुहूर्त्त मात्र लगता है। इस प्रकार आहार पर्याप्ति के पूर्ण होने मे कम समय लगता है और शेष पर्याप्तियो के पूर्ण होने मे अधिक समय लगता है। यह छह पर्याप्तियाँ अन्तर्मुहूर्त्त मे पूर्ण हो जाती है। इन छह पर्याप्तियो द्वारा गृहीत पुद्‌गल समान नही है। सबकी अलग-अलग वर्गणाएँ है। इस बात की पुष्टि आधुनिक विज्ञान ने भी की है। भाषा की ध्वनि तरगे अलग होती है और शरीर निर्माण के पुद्‌गल अलग प्रकार के होते हैं।

'पर्याप्ति' जीवो का एक विलक्षण लक्षण है जो केवल जीवो मे ही पाया जाता है। पर्याप्तियो के द्वारा जीवों में विभिन्न पुद्‌गलों का ग्रहण, परिणमन और उत्सर्जन होता रहता है। आहार पर्याप्ति के द्वारा जीव आहार के योग्य पुद्‌गलो को लेते है, उन्हे आहार मे परिणत करते है और मल-मूत्र आदि असार पुद्‌गलो को त्याग देते हैं। शरीर पर्याप्ति के द्वारा शरीर के योग्य पुद्‌गलो को लेते है। उन्हें शरीर के रूप मे परिणत करते हैं और असार पुद्‌गलों को छोड देते है। इसी प्रकार इन्द्रिय पर्याप्ति, श्वासोच्छ्‌वास पर्याप्ति, भाषा पर्याप्ति व मनःपर्याप्ति के द्वारा क्रमश इन्द्रिय योग्य, श्वासोच्छ्‌वास के योग्य, भाषा के योग्य व मन के योग्य पुद्‌गलों को ग्रहण करते हुए क्रमश· इन्हें इन्द्रिय के रूप मे, श्वासोच्छ्‌वास के रूप मे, भाषा के रूप में व मानस-विचारों के रूप मे परिणत करते है और असार पुद्‌गलो को त्याग देते हैं। इस प्रकार पर्याप्तियाँ जीवो के लिए अत्यन्त उपयोगी एवं महत्त्वपूर्ण मानी गई है।

सूत्र मे 'भासामणपज्जत्तीए' पद से सूर्याभदेव को पाँच पर्याप्तियों से पर्याप्त भाव को प्राप्त होने का संकेत इसलिए है कि देवो के पाँचवी और छठी भाषा और मन पर्याप्तियाँ एक साथ पूर्ण होती है। इसलिए यहाँ दोनों का एक साथ उल्लेख है और छह के स्थान पर पाँच का कथन है।

Elaboration—In this aphorism, it is discussed that Suryabh Dev completed the necessary five paryapti (stages of completion of angelic body) in less than 45 minutes (antar-muhurat) What is paryapti (completion); what is their number ? In this context the following details shall be useful—

'Paryapti' is a special word in Jain philosophy Its meaning is complete exposition of a particular energy of the soul With this energy the 'jiva' (living-being), takes the atoms suitable for consumption and later for development of the body etc The 'jiva' then transforms those items into food (ahaar). This energy is procured by consumption of those atoms. When the mundane soul (jiva) leaves this body frame and procures new body, it needs certain necessary material atoms to lead his life. The special energy with which he builds up that material is called 'Paryapti' This energy develops in the soul with the fruition of 'Paryapti-naam-karma'.

In Jain Agams, Paryapti is of six types—

(1) Ahaar Paryapti (Consumption of the food),

(2) Sharir Paryapti (Consumption of initial body),

(3) Indriya Paryapti (Consumption of necessary sense-organs),

(4) Shvasoshvas Paryapti (Consumption of initial inhaling and exhaling),

(5) Bhasha Paryapti (Consumption of requested initial speaking energy),

(6) Manah Paryapti (Complete development of initial process of mind formation).

'Ahaar Paryapti' is that energy with which 'jiva' accepts 'physical' atoms suitable for initial food, transfers it into juice and waste and then discharges the waste. Similarly 'Sharir Paryapti' is that energy with which jiva (the mundane soul), changes, that juice into blood, marrow and veerya and others in all seven things 'Indriya Paryapti' is that energy with which jiva transforms the said seven dhatus (things) into sense organs such as of touch, taste and others. The energy with which jiva gains breathing process (inhaling and exhaling) is 'Shvas-uchhvas

Paryapti, The energy with which jiva gains atoms suitable for speech and transforms them into speech is called 'Bhasha Paryapti. The energy with which jiva accepts material particle suitable for transforming into mind and actually concepts them into mind is called 'Manah Paryapti, (completion of mind).

One Samaya (infinitesimal unit of time which can never be further sub-divided) is spent in completing Ahaar Paryapti while the after five Paryaptis are completed in a total span of Antar-muhurat (less than 48 minutes). Thus the least time is only in completing Ahaar Paryapti. These six Paryaptis are completed in Antar-muhurat The atoms accepted in these six Paryaptis are not similar in nature All of them have separate identity This fact has been accepted even by modern science. The sound waves are of different nature as compared with the atoms required for body-formation

'Paryapti' is an unique symptom and it is found only in jiva (mundane soul). With the help of Paryaptis jiva accepts, transforms and discharges different types of atoms With Ahaar Paryaptis, jiva accepts atoms suitable for consumption as food, transforms them nil food and discharges are waste as urine and toilet By Sharir Paryapti, jiva accepts atoms suitable for formation of body, transforms them into body and discharges the waste Similar is the case with Indriya Paryapti, Shvas-uchhvas Paryapti, Bhasha Paryapti and Manah Paryapti wherein jiva accepts the suitable atoms, transforms them into sense-organs, breathy speech and thought process and discharges the waste Thus Paryaptis are extremely useful and important in the development of jiva

In the word **'Bhasa-man-pajjatiye'** in the aphorism, it is pointed out that Suryabh Dev completed five Paryaptis It is because the gods complete speech and mind together (and not one after the other). So both of them have been maintained together Thus in their case instead of six, there are five Paryaptis.

सामानिक देवों द्वारा कृत्य संकेत

१८७. तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स सामाणियपरिसोववन्नगा देवा सूरियाभस्स देवस्स इमेयारूवमज्झत्थियं जाव समुप्पन्नं समभिजाणित्ता जेणेव सूरियाभे देवे तेणेव उवागच्छंति, सूरियाभं देवं करयल-परिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु जएणं विजएणं वद्धाविन्ति, वद्धावित्ता एवं वयासी-

एवं खलु देवाणुप्पियाणं सूरियाभे विमाणे सिद्धायतणंसि जिणपडिमाणं जिणस्सेहपमाणमित्ताणं अट्ठसयं संनिक्खित्तं चिट्ठति, सभाए णं सुहम्माए माणवए चेइयखंभे वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु बहूओ जिणसकहाओ संनिक्खित्ताओ चिट्ठंति, ताओ णं देवाणुप्पियाणं अण्णेसिं च बहूणं वेमाणियाणं देवाणं य देवीण य अच्चणिज्जाओ जाव पज्जुवासणिज्जाओ।

तं एयं णं देवाणुप्पियाणं पुव्विं करणिज्जं, तं एयं णं देवाणुप्पियाणं पच्छा करणिज्जं। तं एयं णं देवाणुप्पियाणं पुव्विं सेयं, तं एयं णं देवाणुप्पियाणं पच्छा सेयं। तं एयं णं देवाणुप्पियाणं पुव्विं पि पच्छा वि हियाए, सुहाए, खमाए, निस्सेयसाए, आणुगामियत्ताए भविस्सति।

१८७. तत्पश्चात् उस सूर्याभदेव की सामानिक परिषद् के देव सूर्याभदेव के इस मनोगत विचार यावत् सकल्प को अच्छी तरह से जानकर सूर्याभदेव के पास आये और दोनो हाथ जोड आवर्त्तपूर्वक मस्तक पर अजलि करके जय-विजय शब्दो से सूर्याभदेव का अभिनन्दन किया, फिर इस प्रकार कहा-

"आप देवानुप्रिय के सूर्याभ विमान स्थित सिद्धायतन मे जिन-शरीर के प्रमाण वाली एक सौ आठ जिन-प्रतिमाएँ विराजमान हैं तथा सुधर्मा सभा के माणवक-चैत्य-स्तम्भ मे वज्र रत्नमय गोल समुद्गकों (डिब्बों) मे बहुत-सी जिन-अस्थियाँ व्यवस्थित रूप से रखी हुई है। वे आप देवानुप्रिय तथा दूसरे भी बहुत से वैमानिक देवो एव देवियों के लिए अर्चनीय यावत् पर्युपासनीय है।

अतएव आप देवानुप्रिय के लिए उनकी पर्युपासना करने रूप कार्य पहले करने योग्य है और यही कार्य पीछे करने योग्य है। आप देवानुप्रिय के लिए यह पहले भी श्रेय रूप है और बाद मे भी यही श्रेय रूप है। यही कार्य आप देवानुप्रिय के लिए पहले और पीछे भी हितकर, सुखप्रद, क्षेमकर, कल्याणकर एवं परम्परा से सुख का साधन रूप होगा।"

POINTING OF NECESSARY DUTY BY GODS OF EQUAL STATUS (SAAMANIK DEV)

187. Thereafter, the gods of equal status belonging to the Saamanik cabinet, knowing the thoughts of Suryabh Dev, fully well, came to him, folded their hands, in respect, went round him, greeted him with words praying for his success and then said—

"O loveable of gods ! There are 108 idols of Thirthankar, each equal in the bright of respective Thirthankar in the external temple existing in Suryabh Viman. Further in the round boxes of the

memorial pillar in Sudharma council-hall. There are many remains (bones) of Thirthankars, properly preserved. They are worthy of worship for you Sir, and other Vaimanik gods and goddesses and are also fit to be adored.

Thereafter, O loveable of gods ! It is the duty to be performed by you first of all and is also to be performed later. It is worthy of your conduct and welfare initially and later also. The performance of this act is going to provide you happiness, grandeur and success and as a traditional custom, it shall be a process for bringing happiness."

१८८. तए णं से सूरियाभे देवे तेसिं सामाणियपरिसोववन्नगाणं देवाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा–निसम्म हट्ठ–तुट्ठ जाव हयहियए सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेति, सयणिज्जाओ अब्भुट्ठेत्ता उववायसभाओ पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं निग्गच्छइ, जेणेव हरए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता हरयं अणुपयाहिणीकरेमाणे अणुपयाहिणीकरेमाणे पुरत्थिमिल्लेणं तोरणेणं अणुपविसइ, अणुपविसत्ता पुरत्थिमिल्लेणं तिसोवाणपडिरूवएणं पच्चोरुहइ, पच्चोरूहित्ता जलावगाहं जहमज्जणं करेइ, करित्ता जलकिड्डं करेइ, करित्ता जलाभिसेयं करेइ, करित्ता आयंते चोक्खे परमसूइभूए हरयाओ पच्चोत्तरइ।

पच्चोत्तरित्ता जेणेव अभिसेयसभा तेणेव उवागच्छति, तेणेव उवागच्छित्ता अभिसेयसभं अणुपयाहिणीकरेमाणे अणुपयाहिणीकरेमाणे पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासण–वरगए पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने।

१८८. तत्पश्चात् वह सूर्याभदेव उन सामानिक परिषद् के देवो से इस बात को सुनकर और हृदय मे मनन कर हर्षित, सतुष्ट, प्रसन्न होता हुआ शय्या से उठा और उठकर उपपात सभा के पूर्व दिग्वर्ती द्वार से निकला, निकलकर ह्रद (जलाशय) पर आया, आकर ह्रद की प्रदक्षिणा करके पूर्व दिशावर्ती तोरण से होकर उसमें प्रविष्ट हुआ। फिर पूर्व दिशावर्ती त्रिसोपान पंक्ति से नीचे उतरा, उतरकर जल में अवगाहन और जलमज्जन (स्नान) किया, जलक्रीडा की, जलक्रीडा करके जलाभिषेक किया, तत्पश्चात् आचमन (कुल्ला आदि) करके स्वच्छ और शुचिभूत–शुद्ध होकर ह्रद से बाहर निकला।

ह्रद से बाहर निकलकर जहाँ अभिषेक सभा थी वहाँ आया, फिर अभिषेक सभा की प्रदक्षिणा करके पूर्व दिशावर्ती द्वार से उसमें प्रविष्ट हुआ, पश्चात् सिंहासन के समीप आया और आकर पूर्व दिशा की ओर मुख करके उस श्रेष्ठ सिहासन पर बैठ गया।

188. After listening to the suggestion of the gods belonging to Samanik council and thinking over it, Suryabh Dev felt happy, satisfied and pleased. He got up from the bed and came out from the eastern door of the place if birth. He then came to the water pool, went round it and after passing through the festoon in the east, he entered there. He came down through three steps in the east, went into the water, took bath and did water sports. Thereafter he bathed with water. He then cleaned his mouth and after becoming spotless, he came out from the water pool.

Thereafter, he came to the coronation-hall. He went round and entered it through the door in the east. He then came to his throne and sat on it facing east.

सूर्याभदेव का अभिषेक महोत्सव

१८९. तए णं सूरियाभस्स देवस्स सामाणियपरिसोववन्नगा देवा आभिओगिए देवे सद्दावेंति, सद्दावित्ता एवं वयासी–

खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सूरियाभस्स देवस्स महत्थं महग्घं महरिहं विउलं इंदाभिसेयं उवट्ठवेह।

१८९. तदनन्तर सूर्याभदेव की सामानिक परिषद् के देवों ने आभियोगिक (आज्ञापालक) देवो को बुलाया और बुलाकर उनसे कहा–

"देवानुप्रियो ! तुम लोग शीघ्र ही सूर्याभदेव का अभिषेक करने हेतु महान् अर्थ वाले (महान् कार्य के लिए उपयोगी) महर्घ–बहुमूल्य एव महापुरुषो के योग्य विपुल इन्द्राभिषेक की सामग्री तैयार करो।"

THE CORONATION OF SURYABH DEV

189. Saamanik gods then called the serving gods and ordered them—

"O loveable of gods ! Please prepare quickly the material required for coronation of important persons which is useful for this great task and is costly."

१९०. (१) तए णं ते आभिओगिआ देवा सामाणियपरिसोववन्नेहिं देवेहिं एवं वुत्ता समाणा हट्ठ जाव हियया करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु 'एवं देवो ! तहʼ त्ति आणाए विणएणं वयणं पडिसुणंति, पडिसुणित्ता उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमंति, उत्तरपुरत्थिमं दिसीभागं अवक्कमित्ता वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणंति।

समोहणित्ता संखेज्जाइं जोयणाइं जाव दोच्चं पि वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहणित्ता अट्ठसहस्सं सोवन्नियाणं कलसाणं, अट्ठसहस्सं रुप्पमयाणं कलसाणं, अट्ठसहस्सं मणिमयाणं कलसाणं, अट्ठसहस्सं सुवण्णरुप्पमयाणं कलसाणं, अट्ठसहस्सं सुवन्नमणिमयाणं कलसाणं, अट्ठसहस्सं रुप्पमणिमयाणं कलसाणं, अट्ठसहस्सं सुवण्णरुप्पमणिमयाणं कलसाणं, अट्ठसहस्सं भोमिज्जाणं कलसाणं एवं भिंगाराणं, आयंसाणं, थालाणं, पाईणं, सुपतिट्ठाणं, वायकरगाणं, रयणकरंडगाणं, पुप्फचंगेरीणं जाव लोमहत्थचंगेरीणं, पुप्फपडलगाणं जाव लोमहत्थपडलगाणं, सीहासणाणं, छत्ताणं, चामराणं, तेल्लसमुग्गाणं जाव अंजणसमुग्गाणं, झयाणं, अट्ठसहस्सं धूवकडुच्छुयाणं विउव्वंति।

१९०. (१) तत्पश्चात् वे आभियोगिक देव सामानिक देवो की इस आज्ञा को सुनकर हर्षित यावत् विकसित हृदय हुए। दोनो हाथ जोड आवर्त्तपूर्वक मस्तक पर अंजलि करके बोले–"देव ! बहुत अच्छा। ऐसा ही करेंगे।" यो विनयपूर्वक आज्ञा-वचनों को स्वीकार किया। स्वीकार करके वे उत्तर-पूर्व दिग्भाग में गये और उस उत्तर-पूर्व दिग्भाग में जाकर उन्होने वैक्रिय समुद्घात किया।

वैक्रिय समुद्घात करके सख्यात योजन का दण्ड बनाया। पुन: दूसरी बार भी वैक्रिय समुद्घात करके एक हजार आठ स्वर्णकलश[१], रुप्यकलश[२], मणिमयकलश[३], स्वर्ण-रजतमयकलश[४], स्वर्ण-मणिमयकलश[५], रजत-मणिमयकलश[६], स्वर्ण-रुप्य-मणिमयकलश[७], भौमेय (मिट्टी के) कलश[८], यों प्रत्येक प्रकार के एक हजार आठ कलशों की रचना की। इसी प्रकार एक हजार आठ–एक हजार आठ भृगारों[१], दर्पणो[२], थालों[३], पात्रियों[४], सुप्रतिष्ठानो[५] (बाजोट), वातकरको[६], रत्नकरंडको[७], पुष्पचगेरिकाओ[८], मयूरपिच्छचंगेरिकाओं[९], पुष्पपटलकों[१०], मयूरपिच्छपटलकों[११], सिंहासनों[१२], छत्रों[१३], चामरों[१४], तेलसमुद्गकों[१५], अंजनसमुद्गकों[१६], ध्वजाओ[१७], धूपकडुच्छकों[१८] (धूपदानों) की भी रचना की। सूत्र १३/७ के अनुसार समस्त वर्णन समझें।

190. (1) The serving gods felt happy and cheerful at these orders of Saamanik gods. They folded their hand, placed them at their foreheads and said—"Respected Sir ! We shall do as directed." They thus accepted the orders humbly. Thereafter they went in north-east direction and performed fluid emanation.

While creating the fluid form, they emanated the soul particles in the form of a stick numerable yojans long by the process of fluid

emanation. Thereafter with fluid emanation process, they created 1008 gold pots, silver pots, jewel pots, silvery gold pots, golden jewelled pots, silvery jewelled pots, silvery golden and jewelled pots, earthen pots—all 1008 each. They then created 1008 auspicious jars, mirrors, plates, small pots, earthen bowls, empty pots, jewel boxes, flower baskets, baskets containing mops of peacock feathers, flower boards, boards having mops of peacock feathers, thrones, umbrellas, chamaries, oil boxes, coryllium boxes, flags, incense pots—1008 each. The entire description may be considered as in aphorism 13/7.

(२) विउव्वित्ता ते साभाविए य वेउव्विए य कलसे य जाव कडुच्छुए य गिण्हंति, गिण्हित्ता सूरियाभाओ विमाणाओ पडिनिक्खमंति, पडिनिक्खमित्ता ताए उक्किट्ठाए चवलाए जाव तिरियमसंखेज्जाणं जाव वीतिवयमाणे वीतिवयमाणे जेणेव खीरोदयसमुद्दे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता खीरोयगं गिण्हंति, जाइ तत्थुप्पलाइं ताइं गेण्हंति जाव सयसहस्सपत्ताइं गिण्हंति।

गिण्हित्ता जेणेव पुक्खरोदए समुद्दे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पुक्खरोदये गेण्हंति, जाइं तत्थुप्पलाइं सयसहस्सपत्ताइं ताइं जाव गिण्हंति।

(२) (कलशो आदि की) विकुर्वणा करके उन स्वाभाविक और विक्रियाजन्य कलशो यावत् धूपकडुच्छको को अपने-अपने हाथों मे लिया और सूर्याभ विमान से बाहर निकले। अपनी उत्कृष्ट चपल, दिव्य, उत्कृष्ट गति से चलते हुए तिर्यक् लोक में असंख्यात योजन प्रमाण क्षेत्र को पार करते हुए क्षीरोदधि समुद्र तट पर आये। वहाँ आकर कलशों मे क्षीरसमुद्र का जल भरा तथा वहाँ के उत्पल, कुमुद, शतपत्र, सहस्रपत्र आदि कमलों का चयन किया।

फिर पुष्करोदक समुद्र के पास आये। पुष्करोदक समुद्र का जल कलशो मे भरा तथा वहाँ के उत्पल, शतपत्र, सहस्रपत्र आदि कमल लिये।

(2) After creating pots with fluid emanation process, they held the natural and fluid process created pots in their hands and came out from Suryabh Viman. Moving at their extremely fast, celestial high speed, they crossed innumerable yojans area in this middle world and arrived at the bank of Ksheer-odadhi ocean (ocean of sweet milky water). They then filled their pots with the water of

that ocean and selected lotus of various types namely utpal, kumud, hundred-leaved, thousand-leaved lotus.

Then they came to Pushkarodak ocean. They took its water in pots and also took lotus of different types of that area as before.

(३) गिण्हित्ता जेणेव पुक्खरोदए समुद्दे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता पुक्खरोदयं गेण्हंति, जाइं तत्थुप्पलाइं सयसहस्सपत्ताइं ताइं जाव गिण्हंति। गिण्हित्ता समयखेत्ते जेणेव भरहेरवयाइं वासाइं जेणेव मागहवरदाम-पभासाइं तित्थाइं तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छित्ता तित्थोदगं गेण्हंति, गेण्हेत्ता तित्थमट्टियं गेण्हंति।

गेण्हित्ता जेणेव गंगा-सिंधु-रत्ता-रत्तवईओ महानईओ तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सलिलोदगं गेण्हंति, सलिलोदगं गेण्हित्ता उभओकूलमट्टियं गेण्हंति।

मट्टियं गेण्हित्ता जेणेव चुल्लहिमवंत-सिहरीवासहरपव्वया तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छित्ता दगं गेण्हंति, सव्वतुयरे सव्वपुप्फे, सव्वगंधे, सव्वमल्ले, सव्वोसहिसिद्धत्थए गिण्हंति, गिण्हित्ता जेणेव पउमपुंडरीयदहे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता दहोदगं गेण्हंति, गेण्हित्ता जाइं तत्थ उप्पलाइं जाव सयसहस्सपत्ताइं ताइं गेण्हंति।

(३) तत्पश्चात् मनुष्य क्षेत्र मे भरत-ऐरवत क्षेत्रवर्ती, मागध (लवणसमुद्रवर्ती) तीर्थ, वरदाम (लवणसमुद्र और गगा महानदी के सगम-स्थान पर स्थित वरदाम देवता का निवास-स्थान। यहाँ चक्रवर्ती अष्टम तप करते है) और प्रभास तीर्थ (प्रभास देवता के निवास-स्थान वाला तीर्थ जो लवणसमुद्र व सिधु नदी के सगम पर है) आये और उन-उन तीर्थो के जल को भरा, वहाँ की मिट्टी ली।

इस प्रकार तीर्थोदक और मृत्तिका लेकर जहाँ गगा, सिन्धु, रक्ता, रक्तवती महानदियाँ थी, वहाँ आये। वहाँ आकर नदियो के जल और उनके दोनों तटो की मिट्टी ली तथा शतपत्र, सहस्रपत्र कमल आदि लिये।

उसके बाद चुल्लहिमवत और शिखरी वर्षधर पर्वत पर आये। वहाँ जल कलशों में भरा तथा सब ऋतुओं के उत्तम पुष्पो, गध-द्रव्यों, पुष्प-समूहो और सर्व प्रकार की औषधियों एवं सिद्धार्थकों (सरसों) को लिया और फिर पद्म द्रह एव पुडरीक द्रह पर आये। यहाँ कलशो में द्रह-जल भरा तथा सुन्दर श्रेष्ठ उत्पल यावत् शतपत्र, सहस्रपत्र कमलो को लिया।

(3) Thereafter, they came to Magadh Teerth (mundane pilgrimage spot in Lavan Samudra or Salt sea). Vardaam Teerth (situated at the conjunction of Lavan Samudra and Ganga

river, where Vardaam god resides. The Chakravarti undertakes three-day fast here). Thereafter, they came to Prabhaas Teerth (situation at conjunction of Lavan Samudra and Indus river where Prabhaas god resides). They took the water and earth from each of those spots.

They then with water and earth of these spots (of mundane pilgrimage), came to rivers Ganges, Indus, Rakta, Raktawati. They took the water of those river and also earth from both the banks.

They then came to Chulla-Hemvant mountain and Shikhari mountain. They took the water of these places in their pots. They also took best flowers of all seasons, the fragrant substances the flower collections and various types of corn and mustard seeds. They then came to Padma lake and Pundreek lake. They took the water of those lakes in their pots and also took beautiful, best utpal, hundred-leaved and thousand-leaved lotuses.

विवेचन—मागध, वरदाम और प्रभास ये तीन शाश्वत तीर्थ हैं। चक्रवर्ती जब अपनी विजय-यात्रा प्रारम्भ करते है तो इन तीर्थों पर आकर वहाँ के अधिष्ठायक देव की सहायता हेतु अष्टम तप करके देवता का आह्वान करते है। भरत क्षेत्र मे तीन, ऐरवत क्षेत्र मे तीन तथा महाविदेह की प्रत्येक विजय मे तीन-तीन तीर्थ होते है। (देखे जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति, वक्षस्कार ३, सूत्र ४४-४९)

Elaboration—Maagadh, Vardaam and Prabhaas are eternal teerth (places of mundane pilgrimage) The Chakravarti while starting for conquests come to these places and observe three-day fast at each of the said spots in order to procure help of the master gods of those spots There are three teerth each in Bharat area, Airavat area and every Vijay (content) of Mahavideh (See Jambu Dveep Prajnapti, Vakshaskaar 3, aphorism 44 to 49)

(४) गेण्हित्ता जेणेव हेमवए एरवयाइं वासाइं जेणेइ रोहिय-रोहियंसा-सुवण्णकूल-रुप्पकूलाओ महाणईओ तेणेव उवागच्छंति, सलिलोदगं गेण्हंति, गेण्हित्ता उभओकूलमट्टियं गिण्हंति, गिण्हित्ता जेणेव सद्दावाति-वियडावाति परियागा वट्टवेयड्ढपव्वया तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सव्वतूयरे तहेव।

जेणेव महाहिमवंत-रुप्पिवासहरपव्वया तेणेव उवागच्छन्ति तहेव, जेणेव महापउम-महापुंडरीयद्दहा तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता दहोदगं गिण्हन्ति तहेव।

जेणेव हरिवास-रम्मगवासाइं जेणेव हरिकंत-नारिकंताओ महाणईओ, तेणेव उवागच्छंति तहेव, जेणेव गंधावाइ-मालवंतपरियाया वट्टवेयड्ढपव्वया तेणेव तहेव।

जेणेव णिसढ-णीलवंतवासधरपव्वया तहेव, जेणेव तिगिच्छ-केसरिद्दहाओ तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता तहेव।

(४) इसके पश्चात् हैमवत और ऐरण्यवत क्षेत्र पर पहुँचे। वहाँ से उन दोनों क्षेत्रों की रोहित, रोहितासा तथा स्वर्णकूला और रुप्यकूला महानदियों का जल भरा तथा नदियो के दोनों तटों की मिट्टी ली। जल और मिट्टी लेने के पश्चात् जहाँ शब्दापाति, विकटापाति वृत्त वैताढ्य पर्वत थे, वहाँ आये। वहाँ से समस्त ऋतुओ के उत्तमोत्तम पुष्प आदि लिये।

वहाँ से वे महाहिमवत और रुक्मि वर्षधर पर्वत पर आये और वहाँ से जल एव पुष्प आदि लिये, फिर जहाँ महापद्म और महापुण्डरीक द्रह थे, वहाँ आये। द्रह का जल एव कमल आदि लिये।

तत्पश्चात् जहाँ हरिवर्ष और रम्यक्वर्ष क्षेत्र थे, हरिकाता और नारिकांता महानदियाँ थी, गधापाति, माल्यवत और वृत्तवैताढ्य पर्वत थे, वहाँ आये और इन सभी स्थानों से जल, मिट्टी, औषधियाँ एवं पुष्प लिये।

इसके बाद जहाँ निषध, नील नामक वर्षधर पर्वत थे, जहाँ तिगिछ और केसरी द्रह थे, वहाँ आये, वहाँ से उसी प्रकार जल आदि लिया।

(4) Thereafter, they came to Haimvant and Airanyavat areas. They took the water of Rohit and Rohitansa rivers and also of Swarnkoola and Rupyakoola rivers and the earth from both the banks of each river. Thereafter, they came to Shabdapati and Vikatapati round Vaitadhya mountains and took flowers and suchlike from there belonging to all the seasons.

They then came to Maha-himvant and Rukmi Varshdhar mountains and took water and flowers from there. They then came to Maha-padma and Maha-pundreek lakes. They took water and lotus from those lakes.

They then came to Harivarsh-Ramyakvarsh areas, Harikanta and Naarikanta rivers, Gandhapati, Malyavant and Vritt-Vaitadhiya mountains. They took water, earth, corn and flowers from all such places.

They then came to Nishadh and Neel Varshdhar mountains, to Tiginchh and Kesari lakes and took water and other suchlike from all these places.

(५) जेणेव महाविदेह वासे जेणेव सीता–सीतोदाओ महाणदीओ तेणेव तहेव।

जेणेव सव्वचक्कवट्टिविजया जेणेव सव्वमागह–वरदाम–पभासाइं तित्थाइं तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छित्ता तित्थोदगं गेण्हंति, गेण्हित्ता सव्वंतरणईओ जेणेव सव्ववक्खारपव्वया तेणेव उवागच्छंति, सव्वतूयरे तहेव।

जेणेव मंदरे पव्वए जेणेव भद्दसालवणे तेणेव उवागच्छंति सव्वतूयरे सव्वपुप्फे सव्वमल्ले सव्वोसहिसिद्धत्थए य गेण्हंति, गेण्हित्ता जेणेव नंदणवणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सव्वतूयरे जाव सव्वोसहिसिद्धत्थए य सरसगोसीसचंदणं गिण्हंति, गिण्हित्ता जेणेव सोमणसवणे तेणेव उवागच्छंति सव्वतूयरे जाव सव्वोसहिसिद्धत्थए य सरसगोसीसचंदणं च दिव्वं च सुमणदामं गिण्हंति, गिण्हित्ता जेणेव पंडगवणे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सव्वतूयरे जाव सव्वोसहिसिद्धत्थए च सरसं च गोसीसचंदणं च दिव्वं च सुमणदामं दद्दरमलयसुगंधियगंधे गिण्हंति।

(५) तत्पश्चात् जहाँ महाविदेह क्षेत्र था जहाँ सीता, सीतोदा महानदियाँ थी वहाँ आये और उसी प्रकार से उनका जल, मिट्टी, पुष्प आदि लिये।

फिर जहाँ सभी चक्रवर्तियो के विजय–स्तम्भ थे, जहाँ मागध, वरदाम और प्रभास आदि तीर्थ थे, वहाँ आये। वहाँ आकर तीर्थो का जल लिया और तीर्थ जल लेकर सभी अन्तरवर्ती नदियो की जल एव मिट्टी ली। फिर वक्षस्कार पर्वत पर आये और वहाँ से सर्व ऋतुओ के पुष्पो आदि का चयन किया।

तत्पश्चात् मन्दर (सुमेरु) पर्वत के ऊपर भद्रशालवन मे आये, वहाँ आकर सर्व ऋतुओं के पुष्पो, समस्त औषधियो और सिद्धार्थको को लिया। वहाँ से नन्दनवन में आये, आकर सर्व ऋतुओं के पुष्पो यावत् सर्व औषधियो, सिद्धार्थको (सरसो) और सरस गोशीर्ष चन्दन को लिया। फिर जहाँ सौमनसवन था, वहाँ आये। वहाँ से सर्व ऋतुओ के पुष्पो यावत् सर्व औषधियो, सिद्धार्थको, सरस गोशीर्ष चन्दन और दिव्य पुष्पमालाओं को लिया। तत्पश्चात् पाडुकवन मे आये और वहाँ आकर सर्व ऋतुओं के पुष्पों यावत् सर्व औषधियों, सिद्धार्थकों, सरस गोशीर्ष चन्दन, दिव्य पुष्पमालाओ, दर्दरमलय चन्दन की सुरभिगध से सुगन्धित गंध–द्रव्यों को लिया।

(5) Later, they came to Sita and Sitoda rivers in Mahavideh area and in the manner described earlier, took water, earth and flowers from there.

Thereafter, they came to those places where there were Victory Posts of the Chakravartis and where there were Vardaam and Prabhaas Teerth (mundane pilgrimage spots). They took water of those places and also of all other rivers including their earth. Then they came to Vakshaskaar mountains (mountains situated like shoulders of a horse) and took flowers of all seasons.

Then they came to Bhadrashalvan, Sumeru mountain and collected flowers of all seasons, all types of corn and mustard seeds. Thereafter, they came to Nandanvan and selected flowers of all seasons, corns, mustard seeds and go-sheersh sandal wood from there. Later they came to Saumanasvan and collected flowers of all seasons, all types of corns and mustard seeds, the fragrant go-sheersh sandal wood and garlands of celestial flowers. Thereafter, they came to Pandukvan and took flowers of all seasons, corns, mustard seeds, go-sheersh sandal wood, garlands of heavenly flowers and fragrant substances affected by the sweet smell of derdarmalaya sandal wood.

(६) गिण्हित्ता एगओ मिलायंति मिलाइत्ता ताए उक्किट्ठाए जाव जेणेव सोहम्मे कप्पे जेणेव सूरियाभे विमाणे जेणेव अभिसेयसभा जेणेव सूरियाभे देवे तेणेव उवागच्छंति, उवागच्छित्ता सूरियाभं देवं करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु जएणं विजएणं वद्धाविंति वद्धावित्ता तं महत्थं महग्घं महरिहं विउलं इंदाभिसेयं उवट्ठवेंति।

(६) इन सब वस्तुओ को लेकर वे सब आभियोगिक देव एक स्थान पर एकत्र मिले और फिर उत्कृष्ट दिव्य गति से चलकर जहाँ सौधर्मकल्प था जहाँ सूर्याभविमान था, उसमें जहाँ अभिषेक सभा थी और उसमे भी जहाँ सिहासन पर सूर्याभदेव स्थित था, वहाँ आये। दोनों हाथ जोड आवर्त्तपूर्वक मस्तक पर अजलि करके सूर्याभदेव को 'जय हो-विजय हो' आदि शब्दों से बधाया और बधाकर उसके आगे महान् अर्थ वाली, महामूल्यवान्, महान् पुरुषों के योग्य विपुल इन्द्राभिषेक की सामग्री उपस्थित की।

(6) After getting all the things mentioned above the Abhiyogic (serving) gods collected at one place and moving at highest heavenly speed came to Suryabh Viman in Saudharm heaven. Then they

came to the throne in coronation-hall of Suryabh Viman where Suryabh Dev was present. They greeted him with folded hand and touching their foreheads, they also prayed for his success. They then placed before him the material that was of great use, that was very costly and that which was fit for coronation of Suryabh Dev.

विवेचन—प्राचीनकाल मे राज्याभिषेक की एक विशेष मागलिक परम्परा थी। इसे केवल उत्सव रूप नही किन्तु मंगल उत्सव मानते थे। जैसे राजाओ के अभिषेक की परम्परा थी लगभग उसी प्रकार का सूर्याभदेव के अभिषेक महोत्सव का वर्णन इस सूत्र मे है। लगभग इसी प्रकार का वर्णन जीवाभिगमसूत्र मे विजयदेव के अभिषेक का है।

सर्वप्रथम सोना, चाँदी, मणि, मिट्टी आदि आठ प्रकार के एक हजार आठ कलशो मे क्षीर समुद्र, पुष्करोदक समुद्र का जल भरा। वहाँ से सुगन्धित कमल आदि लिये। फिर मागध, प्रभास, वरदाम तीर्थो का जल तथा वहाँ की मिट्टी ली। इसके बाद गगा, सिन्धु आदि नदियो का जल तथा वहाँ के दोनो तटो की मिट्टी भी ली। उसके बाद पर्वतो पर जाकर वहाँ के तरह-तरह के फूल, सुगन्धित द्रव्य, औषधियाँ (वनस्पति) तथा सरसो (सिद्धार्थक) ली और पुडरीक-पद्म द्रह का जल व वहाँ उत्पन्न भिन्न-भिन्न जाति के कमल आदि लिये।

इसी प्रकार सभी क्षेत्रो की नदियाँ, पर्वतो के गध द्रव्यो का जल, पुष्प, वनस्पतियाँ, गोशीर्ष चन्दन तथा अन्य सुगन्धित जल और नदी तटो की मिट्टी आदि लेकर आते है।

इस वर्णन से पता चलता है कि मागलिक द्रव्यो मे सरसो की प्रमुख गणना की गई है और उसे सिद्धार्थक (सब कार्य सिद्ध करने वाली) कहा है। समुद्र-नदी जल, नदी तटो की मिट्टी, पर्वतो पर उगी दिव्य औषधियाँ व कमल आदि जल मे उत्पन्न होने वाले पुष्प व वृक्षो पर लगे पुष्प आदि तथा गोशीर्ष चन्दन व अन्य सुगन्धित द्रव्यो का अभिषेक, पूजन आदि क्रियाओ मे आज भी महत्त्वपूर्ण स्थान है।

इस वर्णन मे यह भी महत्त्व की बात है कि स्वर्ग के देवता भी अपने अभिषेक महोत्सवो मे मनुष्य लोक के जल, मिट्टी, पुष्प, वनस्पतियो आदि को सर्वाधिक मागलिक मानकर उनका उपयोग करते है।

Elaboration—In the ancient period, there was an auspicious tradition of coronation It was not simply a festival but it was considered an auspicious festival Just as the coronation of kings was done as a traditional custom, almost in the same fashion, coronation of Suryabh Dev has been described in this aphorism. Also similar account is that of the coronation of Vijay Dev in Jivabhigam Sutra

First of all, the water of Ksheer sea and Pushkarodak sea was filled in eight types of 1008 pots each namely of gold, silver, gems, earth and others. Then they took fragrant lotus flowers from there. Then they took water and earth from Maagadh, Prabhaas and Vardaam—the places of pilgrimage. Then they took water and the earth from the banks of the

river Ganges and river Indus (Sindhu) Thereafter they went to the mountains and collected various types of flowers, fragrant substances, the vegetation and mustard seeds Then they took water and different kinds of lotus flowers, from Pundreek and Padmadreh lakes

In a similar fashion, they collect water, flowers, vegetation, go-sheersh sandal wood and other fragrant waters and earth of the embankment of all rivers and mountains of all the areas and then came with it.

This description indicates that mustard seed was considered to be main item amongst all the auspicious substances It was called Siddharth (the substance that brings success in all functions). Even today, the water of rivers and seas, the earth of river banks, the heavenly vegetation of the mountains, lotus and other flowers that grow in water, the flowers growing on trees, go-sheersh sandal wood and other fragrant substances are considered most suited in performance of coronation ceremony and in doing worship

It is also important to note that even the gods in heaven use the water, earth, flowers, vegetation and others of this world (inhabited by human-beings) in their coronation, considering them of great auspicious value.

१९१. तए णं तं सूरियाभं देवं चत्तारि सामाणियसाहस्सीओ, चत्तारि अग्गमहिसीओ सपरिवाराओ, तिन्नि परिसाओ, सत्त अणियाहिवइणो जाव अन्नेवि बहवे सूरियाभविमाणवासिणो देवा य देवीओ य तेहिं साभाविएहिं य वेउव्विएहिं य वरकमलपइट्ठाणेहि य सुरभिवरवारिपडिपुन्नेहिं चंदणकयचच्चिएहिं आविद्धकंठेगुणेहिं पउमुप्पलपिहाणेहिं सुकुमालकोमलकरपरिग्गहिएहिं अट्ठसहस्सेणं सोवन्नियाणं कलसाणं जाव अट्ठसहस्साणं भोमिज्जाणं कलसाणं सव्वोदएहिं सव्वउट्टियाहिं सव्वतूयरेहिं जाव सव्वोसहिसिद्धत्थएहि य सव्विड्ढीए जाव वाइएणं महया महया इंदाभिसेएणं अभिसिंचंति।

१९१. अभिषेक की सम्पूर्ण सामग्री आ जाने के बाद चार हजार सामानिक देवो तथा परिवार सहित चार अग्रमहिषियो, तीन परिषदाओ, सात अनीकाधिपतियो यावत् अन्य दूसरे बहुत से देवों-देवियो ने उन स्वाभाविक (मनुष्यलोक मे उत्पन्न वस्तुएँ) एव देवो द्वारा विक्रिया शक्ति से बनाये गये श्रेष्ठ कमल-पुष्पों पर संस्थापित, सुगधित, शुद्ध, श्रेष्ठ जल से भरे हुए, चन्दन-लेप से चर्चित, पचरगे सूत कलावे से बँधे-लिपटे हुए कठ वाले, पदूम-(सूर्यविकासी कमलों) एव उत्पल-(चन्द्रविकासी कमलो) के ढक्कनो से ढँके हुए, सुकुमाल

कोमल हाथों से लिए गये और सभी तीर्थ स्थानों के जल से भरे हुए एक हजार आठ स्वर्ण-कलशो यावत् एक हजार आठ मिट्टी के कलशो तथा सब प्रकार की मृत्तिका एव ऋतुओ के पुष्पो, सभी सुगन्धित द्रव्यों यावत् औषधियो और सिद्धार्थकों-सरसों से महान् ऋद्धि यावत् वाद्यघोषो के साथ सूर्याभदेव को अतीव गौरवशाली इन्द्राभिषेक से अभिषिक्त किया।

191. After the receipt of the entire material for coronation, 4,000 Saamanık gods, four agra-mahishı (chief queens) with their family members of the three councils, seven army chiefs, upto other gods and goddesses took 1,008 pots each of eight different types namely gold, silver, earth and others All these pots were made of substances grown ın the human world and placed on lotuses created by gods by emanating their fluid energy They were filled with fragrant pure water They were pasted with sandal paste. Their necks were tied with five-coloured yarn. They were covered with sunflowers and lotuses developing ın moonlight. They were filled with water of all places of pilgrimage. They then held those pots ın their soft hands along with all types of earth, flowers of all seasons, all fragrant substances, vegetation and mustard seeds. Then they performed the coronation ın a proper grand manner

अभिषेक उत्सव · स्वच्छता और सुगंध

१९२. (क) तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स महया महया इंदाभिसेए वट्टमाणे अप्पेगइया देवा सूरियाभं विमाणं नच्चोययं नाइमट्टियं पविरल-फुसियरेणुविणासणं दिव्वं सुरभिगन्धोदगं वासं वासंति।

अप्पेगइया देवा हयरयं नट्ठरयं भट्ठरयं उवसंतरयं पसंतरयं करेंति।

अप्पेगइया देवा सूरियाभं विमाणं आसियसंमज्जिओवलित्तं सुइसमट्ठरत्थंतरावण-वीहियं करेंति।

अप्पेगइया देवा सूरियाभं विमाणं मंचाइमंचकलियं करेंति।

अप्पेगइया देवा सूरियाभं विमाणं णाणाविहरागोसियं झयपडागाइपडागमंडियं करेंति।

अप्पेगइया देवा सूरियाभं विमाणं लाउल्लोइयमहियं गोसीस सरसरत्तचंदण दद्दरदिण्णपंचंगुलितलं करेंति।

अप्पेगइया देवा सूरियाभं विमाणं उवचियचंदणकलसं चंदणघडसुकय तोरणपडिदुवारदेसभागं करेंति।

अप्पेगइया देवा सूरियाभं विमाणं आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारियमल्लदामकलावं करेंति।

अप्पेगइया देवा सूरियाभं विमाणं पंचवण्णसुरभिमुक्कपुप्फपुञ्जोवयारकलियं करेंति।

अप्पेगइया देवा सूरियाभं विमाणं कालागुरुपवरकुंदरुक्कतुरुक्कधूवमघमघंत-गंधुद्धूयाभिरामं करेंति।

अप्पेगइया देवा सूरियाभं विमाणं सुगंधवरगंधियं गंधवट्टिभूयं करेंति।

१९२. **(क)** जब सूर्याभदेव का महिमाशाली अभिषेक महोत्सव हो रहा था, तब कितने ही देवों ने सूर्याभ विमान मे इस प्रकार से झिरमिर-झिरमिर, विरल नन्हीं-नन्ही बूँदो में सुगन्धित गंधोदक की वर्षा की, जिससे वहाँ की सब धूल-मिट्टी दब गयी, किन्तु जमीन पर पानी नहीं फैला और न ही कीचड हुआ।

कितने ही देवो ने सूर्याभ विमान को झाड-बुहारकर हतरज, नष्टरज, भ्रष्टरज, उपशांतरज और प्रशान्तरज वाला (धूल-मिट्टीरहित) बना दिया।

कितने ही देवों ने सूर्याभ विमान की गलियों, बाजारो और राजमार्गों पर पानी छिडककर कचरा वगैरह झाड-बुहारकर और गोबर-मिट्टी से लीप-पोतकर साफ कर दिया।

कितने ही देवो ने मच बनाये और मचो के ऊपर मच बनाकर सूर्याभ विमान को सजाया।

कितने ही देवो ने विविध प्रकार की रग-बिरगी ध्वजाओ, पताकातिपताकाओ से मण्डित किया।

कितने ही देवों ने सूर्याभ विमान को लीप-पोतकर स्थान-स्थान पर सरस गोरोचन और रक्तदर्दर चन्दन हाथों मे लगाकर पाँचों अँगुलियो के छापे मारे।

कितने ही देवो ने सूर्याभ विमान को चर्चित कलशों और चन्दन-कलशो से बने तोरणों से सजाया।

कितने ही देवों ने सूर्याभ विमान को ऊपर से नीचे तक लटकती हुई लम्बी-लम्बी गोल मालाओं से विभूषित किया।

कितने ही देवों ने पंचरंगे सुगंधित पुष्पों को बिखेरकर, माडने मांडकर (रगोली करके) सूर्याभ विमान को सुशोभित किया।

कितने ही देवों ने सूर्याभ विमान को कृष्ण अगर, श्रेष्ठ कुन्दरुष्क, तुरुष्क और धूप की मघमघाती सुगध से मनमोहक बनाया।

कितने ही देवो ने सूर्याभ विमान को सुरभिगध के सुवास से सुगध की गुटिका जैसा बना दिया।

CORONATION CEREMONY : ITS PURITY AND FRAGRANCE

192. (a) When the grand coronation ceremony of Suryabh Dev was in process, many gods rained fragrant gandhodak (sacred fragrant water) in tiny drops in Suryabh Viman, thus the dust settled down but the water neither spread on the ground nor made it muddy

Many gods cleaned the dust with a broom and made the Suryabh Viman dust free and devoid of dust.

Many gods sprinkled water in lanes, bazaars and highways of Suryabh Viman, removed the wastage and plastered them with cowdung and earth

Many gods made stages one above the other and decorated Suryabh Viman

Many gods decorated it with multicoloured flags and beatings.

Many gods after plastering Suryabh Viman, made hand-prints of Saras Go-rochan and Rakt-dardar sandal paste

Many gods decorated it with festoons made of charchit pitchers and sandal wood pots

Many gods decorated Suryabh Viman with long round garlands hanging from top to the bottom

Many gods scattered flowers of five colours, made coloured circles (Maandle) and thus decorated Suryabh Viman

Many gods made the Suryabh Viman fragrant with many types of incense namely black agar, kundrushk, turushk and dhoop.

Many gods converted Suryabh Viman into a big box fragrant with sweet fragrance all around

उपहारों का आदान–प्रदान

(ख) अप्पेगइया देवा हिरण्णवासं वासंति, सुवण्णवासं वासंति, रययवासं वासंति, वइरवासं., पुप्फवासं., फलवासं., मल्लवासं., गंधवासं., चुण्णवासं., आभरणवासं वासंति।

अप्पेगइया देवा हिरण्णविहिं भाएंति, एवं सुवन्नविहिं भाएंति, रयणविहिं., पुप्फविहिं., फलविहिं., मल्लविहिं., चुण्णविहिं., वत्थविहिं., गंधविहिं., तत्थ अप्पेगइया देवा आभरणविहिं भाएंति।

(ख) कितने ही देवों ने चाँदी की वृष्टि की, तो कितनेक ने सुवर्ण की, रजत की, वज्र रत्नों की, पुष्पों की, फलो की, मालाओं की, सुगंधित द्रव्यों की, सुगन्धित चूर्ण की और कितनेक देवों ने आभरणो की वर्षा की।

कितने ही देवों ने आपस में एक-दूसरे को भेट मे चाँदी के उपहार दिये। इसी प्रकार कितने ही देवों ने आपस में एक-दूसरे को स्वर्ण, रत्न, पुष्पमाला, सुगन्धित चूर्ण, वस्त्र, गधद्रव्य आदि भेट मे दिये और कितने ही देवों ने भेट मे आभूषण दिये।

EXCHANGE OF PRESENTS

(b) Many gods made rain of silver, rain of gold, rain of jewels, rain of Vajra gems, rain of flowers, rain of fruits, rain of garlands, rain of fragrant substances, fragrant powder and of ornaments.

Many gods exchanged gifts of silver among themselves. Many gods exchanged gifts of gold, jewels, garlands of flowers, fragrant powder, clothes, fragrant substances and many gods gave ornaments as gifts

नृत्य-संगीत

(ग) अप्पेगइया चउव्विहं वाइत्तं वाइंति, तं जहा—ततं विततं घणं झुसिरं।

अप्पेगइया देवा चउव्विहं गेयं गायंति, तं जहा—उक्खित्तायं पायत्तायं मंदायं रोइयावसाणं।

अप्पेगइया देवा दुयं नट्टविहिं उवदंसेंति। अप्पेगइया विलंबियं णट्टविहिं उवदंसेंति। अप्पेगइया देवा दुयविलंबियं णट्टविहिं उवदंसेंति एवं अप्पेगइया अंचियं नटट्विहिं उवदंसेंतिं, अप्पेगइया देवा आरभडं भसोलं आरभड-भसोलं उप्पायनिवायपवत्तं संकुचियपसारियं रियारियं भंतसंभंतणामं दिव्वं णट्टविहिं उवदंसेंति।

अप्पेगइया देवा चउव्विहं अभिणयं अभिणयंति, तं जहा—दिट्ठंतियं पाडंतियं सामंतोवणिवाइयं लोगअंतोमज्झावसाणियं।

(ग) किन्हीं देवो ने तत, वितत, घन और झुषिर-इन चार प्रकार के वाद्यो को बजाया।

किन्हीं देवो ने उक्षिप्त, पादान्त, मंद और रोचितावसान नामक चार प्रकार के संगीत गाये।

किसी देव ने द्रुत (शीघ्र चपल) नृत्यविधि दिखाई, किसी ने विलम्बित (मंद-मंद) नृत्यविधि का प्रदर्शन किया, किसी ने अचित (तिरछी चाल) नृत्यविधि दिखलाई और कितने ही देवो ने आरभट, भसोल, आरभट-भसोल, उत्पात-निपातप्रवृत्त (उछलना-गिरना), सकुचित-प्रसारित (अग सिकोड़ना-फैलाना), रितारित, भ्रात-सभ्रांत नामक दिव्य नृत्यविधियाँ दिखलाई।

कितने दी देवों ने दार्ष्टान्तिक, प्रात्यान्तिक, सामन्तोपनिपातिक और लोकान्त मध्यावसानिक नामक चार प्रकार के अभिनयो का प्रदर्शन किया।

DANCE AND MUSIC

(c) Some of the gods played four types of musical instruments, namely stringed (tat), non-stringed (vitat), ghan (solid bronze) and jhushir (hollow) instruments.

Many gods sang four types of songs namely—Ucchipt (sung with high pitch), padant, mand (with low pitch) and rochitavasan

One of the gods danced at a fast pace, another danced at a low pace still another danced in slanting (anchit) manner and some of the gods danced in different manner namely aarbhat, bhasol, aarbhat-bhasol, utpaat-nipaat (jumping and falling), spreading and squeezing parts of the body, riyariyam (walking carefully and walking carelessly), bhrant-sambhrant dramatic actions.

Some of the gods performed four types of dramatic activities namely—darshtantic, pratyantic, saamantopanipaatic and lokant madhyavasanik.

हर्ष-ध्वनियाँ

(घ) अप्पेगइया देवा बुक्कारेंति, अप्पेगइया देवा पीणेंति, अप्पेगइया. लासेंति।

अप्पेगइया. हक्कारेंति, अप्पेगइया. विणंति, तंडवेंति, अप्पेगइया वग्गंति अप्फोडेंति, अप्पेगइया. अप्फोडेंति वग्गंति, अप्पेगइया. तिवइं छिंदंति, अप्पेगइया. हयहेसियं करेंति, अप्पेगइया. हत्थिगुलगुलाइयं करेंति, अप्पेगइया. रहघणघणाइयं करेंति, अप्पेगइया. हयहेसिय-हत्थिगुलगुलाइय-रहघणघणाइयं करेंति।

अप्पेगइया. उच्छलेंति, अप्पेगइया. पोच्छलेंति, अप्पेगइया. उक्किट्ठियं करेंति, अप्पेगइया उच्छलेंति–पोच्छलेंति, अप्पेगइया तिन्नि वि। अप्पेगइया. ओवयंति, अप्पेगइया. उप्पयंति, अप्पेगइया. परिवयंति, अप्पेगइया. तिन्नि वि।

अप्पेगइया. सीहनायंति, अप्पेगइया. दद्दरयं करेंति, अप्पेगइया. भूमिचवेडं दलयंति, अप्पेगइया. तिन्नि वि।

अप्पेगइया. गज्जंति, अप्पेगइया. विज्जुयायंति, अप्पेगइया. वासं वासंति, अप्पेगइया. तिन्नि वि।

अप्पेगइया. जलंति, अप्पेगइया. तवंति, अप्पेगइया. पतवेंति, अप्पेगइया. तिन्नि वि।

अप्पेगइया. हक्कारेंति, अप्पेगइया. थुक्कारेंति, अप्पेगइया. धक्कारेंति, अप्पेगइया. साइं साइं नामाइं साहेंति, अप्पेगइया. चत्तारि वि।

(घ) इसके अतिरिक्त कितने ही देव हर्षातिरेक से बकरे जैसी बुकबुकाहट करने लगे, कितने ही देवो ने अपने शरीर को फुलाने का दिखावा किया, कितनेक देव नाचने–गाने लगे।

कितनेक देव हक–हक की आवाजे लगाने लगे, कितनेक गुनगुनाने लगे, कितने ही ताडव नृत्य करने लगे, कितने ही उछलने के साथ ताल ठोंकने लगे और कितने ही ताली बजाकर उछलने लगे, कितने ही तीन पैर की दौड दौडने लगे, कितने ही घोडे की भाँति हिनहिनाहट करने लगे, कितने ही हाथी की तरह गुलगुलाहट करने लगे, कितने ही रथो की घनघनाहट जैसे घन्–घन् की आवाजे निकालने लगे और कितने ही घोडों की हिनहिनाहट, हाथी की गुलगुलाहट और रथो की घनघनाहट जैसी (मिश्रित) आवाजें करने लगे।

कितनेक ने ऊँची छलाँगें लगाईं, कितनेक ने और ऊँची छलाँगें लगाईं और कितनेक ने ही हर्ष–ध्वनि की। कितने ही उछले, कितने ही विशेष ऊँचे उछले, कितने ही तीनों मिश्रित छलाँगे (उछलना, कितने ही विशेष ऊँचे उछलना तथा हर्ष–ध्वनि करना) ही करने लगे। कितने ही ऊपर से नीचे कूदे, कितने ही नीचे से ऊपर कूदे और कितने ही लम्बे कूदे, कितने ही तीनों प्रकार से कूदे।

कितनेक देवो ने सिंहनाद–सिंह जैसी गर्जना की–दहाड लगाई, कितनेक ने एक–दूसरे को रंग–गुलाल से रंग दिया, कितनेक ने भूमि को थपथपाया और कितनेक ने तीनों–सिंहनाद किया, रंग–गुलाल उड़ाई और भूमि को थपथपाया।

कितने ही देवो ने मेघों की गडगडाहट की, कितने ही ने बिजली की चमक जैसा दिखावा किया, कितने ही ने वर्षा बरसाई और कितने ही देवो ने मेघो के गरजने, बिजली चमकने और बरसात होने–जैसे तीनो के दृश्य दिखलाये।

कितने ही देवो ने गर्मी से आकुल–व्याकुल होने का, कितने ही ने तपने का, कुछ एक ने विशेष रूप से तपने का दिखावा (अभिनय) किया और कितने ही ने तीनो का प्रदर्शन किया।

कितने ही दृक्–दृक्, कितने ही थुक्–थुक्, कितने ही धक्–धक् जैसे शब्दो का उच्चारण करने लगे और कितने ही अपने–अपने नामो की आवाजे लगाने लगे और कितने ही देवो ने दृक्–दृक् आदि चारो प्रकार की ध्वनियॉ एक साथ की।

ECSTATIC TUNES

(d) In addition to the above performance, some of the gods started making bleating joyful sound of a he-goat, some exhibited fattening of their body while some gods started dancing and singing

Some of the gods started smattering, some were murmuring, some were dancing fiercely, some were jumping while striking ground in a harmony, some were jumping while clapping, some were running three-legged race, some started neighing like horse, some were trumpeting like elephants, some were making mixed sounds of a moving chariot while some did all the three above said sounds

Some of the gods made high jump, some jumped still higher, some made ecstatic sounds Some jumped, some jumped still higher, some made all the three activities of jumping, high jumping and making ecstatic sounds, some jumped down from higher level, some jumped upwards from lower level, some did long jump. Some did all the three types namely high jump, jumping downwards and long jump.

Some of the gods roared like a lion, some played with colours, some patted the ground while some did all the three above said things

Some of the gods made thundering sound of clouds, some exhibited brightness of lightening, some rained while some did all the three above said activities.



सूर्याभदेव का अभिषेक महोत्सव

चित्र परिचय-६

Illustration No. 6

सूर्याभदेव का अभिषेक महोत्सव

सूर्याभ विमानवासी देवो ने अपने अधिपति सूर्याभदेव के अभिषेक महोत्सव के लिए मागध, प्रभास आदि तीर्थो व गगा, सिन्धु आदि नदियो का जल तथा मिट्टी ली, अनेक प्रकार के सुगन्धित कमल-पुष्प आदि लिये। अभिषेक योग्य विविध प्रकार की सामग्री लेकर देव-देवियाँ, सूर्याभ विमान मे सिहासन पर स्थित सूर्याभदेव के पास आये। झिरमिर झिरमिर सुगन्धित गधोदक की वर्षा की। पचरगे फूलो से मॉडना मॉडे। जलाभिषेक कर अभिषेक किया। चार प्रकार के बाजे बजाये। तरह-तरह के नृत्य किये। कई देव शख बजाते है, कई फूल वर्षाते है, कई हर्ष मे उछलते है, कई अनेक प्रकार के उपहार भेट करते है। इस प्रकार अत्यन्त उत्साहपूर्वक सूर्याभदेव का अभिषेक महोत्सव मनाते है।

-सूत्र १९२ पृष्ठ १९७-२०३

CORONATION CEREMONY OF SURYABH DEV

The gods of the Suryabh Viman collected water and sand from various pilgrimage centers and rivers like Magadh, Prabhas, the Ganges and Indus, and also a variety of fragrant flowers like lotus Taking a variety of things required for anointing, the gods and goddesses approached Suryabh Dev sitting on the throne in the Suryabh Viman They sprinkled perfumed water, decorated the floor with multi-coloured flowers and anointed him by pouring water They played four kinds of musical instruments and performed a variety of dances Some gods blew conch-shells, some showered flowers, some jumped with joy and some presented a variety of gifts Thus they conducted the coronation ceremony of Suryabh Dev with great enthusiasm

—Sutra 192, p 197-203

Some of the gods exhibited scene of anxiety due to hasking in sun, some exhibited the feeling of heat-affectedness while some depicted experience of extreme heat still some exhibited all the three activities.

Some produced drik-drik sound, some produced thuk-thuk sound while some uttered dhak-dhak sound, some of the gods made sound of their names while some gods produced all the four types of sound

(ङ) अप्पेगइया. देवा देवसन्निवायं करेंति, अप्पेगइया. देवुज्जोयं करेंति, अप्पेगइया. देवुक्कलियं करेंति, अप्पेगइया. देवा कहकहगं करेंति, अप्पेगइया देवा दुहदुहगं करेंति, अप्पेगइया. चेलुक्खेवं करेंति, अप्पेगइया. देवसन्निवायं–देवुज्जोयं–देवुक्कलियं–देवकहकहगं–देवदुहदुहगं चेलुक्खेवं करेंति, अप्पेगइया. उप्पलहत्थगया जाव सयसहस्स–पत्तहत्थगया, अप्पेगइया. कलसहत्थगया जाव धूवकडुच्छुयहत्थगया हट्ठतुट्ठ जाव हिययासव्वतो समंता आहावंति परिधावंति।

(ङ) कितने ही देवो ने मिलकर टोलियाँ बनाई, कितनेक ने देवोद्योत प्रकाश किया, कितने ही देवो ने रुक–रुककर बहने वाली वायु तरगो (हवा के झकोरे) का प्रदर्शन किया, कितने ही देवो ने कहकहे लगाये, कितने ही देवो ने 'दुह–दुह' शब्द किया, कितने ही देवो ने वस्त्रो को उछाला और कितने ही देवों ने हाथो मे उत्पल यावत् शतपत्र, सहस्रपत्र कमलो को लेकर, कितने ही देवो ने हाथो में कलश यावत् ध्वजा लेकर हृष्ट–तुष्ट यावत् विकसित हृदय होते हुए इधर–उधर चारो ओर दौड–दौड करने लगे।

(e) Some of the gods joined into groups, some made divine light, some made highly blowing waves of the wind, some made chattering sound, some made 'duh-duh' sound, some gods moved their dress upwards, some of the gods held lotus flowers of different types namely utpal upto hundred leaved and thousand leaved lotus, some of the gods started running around holding pots and upto flags in their hand with a feeling of ecstatic pleasure

मंगल–जयनाद

१९३. तए णं तं सूरियाभं देवं चत्तारि सामाणियसाहस्सीओ जाव सोलस आयरक्खदेवसाहस्सीओ अण्णे य बहवे सूरियाभरायहाणिवत्थव्वा देवा य देवीओ य महया महया इंदाभिसेगेणं अभिसिंचंति अभिसिंचित्ता पत्तेयं पत्तेयं करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी–

"जय जय नंदा ! जय जय भद्दा ! जय जय नंदा ! भद्दं ते, अजियं जिणाहि, जियं च पालेहि, जियमज्झे वसाहि।

इंदो इव देवाणं, चंदो इव ताराणं, चमरो इव असुराणं, धरणो इव नागाणं, भरहो इव मणुयाणं, बहूइं पलिओवमाइं बहूइं सागरोवमाइं बहूइं पलिओवम-सागरोवमाइं चउण्हं सामाणियसाहस्सीणं जाव आयरक्खदेवसाहस्सीणं सूरियाभस्स विमाणस्स अन्नेसिं च बहूणं सूरियाभविमाणवासीणं देवाण य देवीण य आहेवच्चं जाव महया महया कारेमाणे पालेमाणे विहराहि।"

त्ति कट्टु जय जय सद्दं पउंजंति।

१९३. तत्पश्चात् चार हजार सामानिक देवो यावत् सोलह हजार आत्मरक्षक देवों तथा और दूसरे भी बहुत से सूर्याभ राजधानी मे निवास करने वाले देवो और देवियो ने मिलकर इन्द्राभिषेक से सूर्याभदेव का महान् महिमाशाली अभिषेक किया। फिर प्रत्येक देव ने दोनो हाथ जोड आवर्त्तपूर्वक (घुमाकर) मस्तक पर अजलि करके इस प्रकार कहा-

"हे नन्द ! तुम्हारी जय हो, जय हो, हे भद्र ! तुम्हारी जय हो, जय हो, हे जगदानन्दकारक ! तुम्हारी बारम्बार जय-जयकार हो, तुम्हारा कल्याण हो, तुम न जीते हुओं को जीतो और विजितो का पालन करो, जीते हुए शिष्ट आचार-विचार वालो के मध्य में निवास करो।

तुम देवो मे इन्द्र के समान, ताराओ में चन्द्र के समान, असुरो मे चमर के समान, नागो मे धरणेन्द्र के समान, मनुष्यों में भरत चक्रवर्ती के समान, अनेक पल्योपमो तक, अनेक सागरोपमो तक अनेक-अनेक पल्योपमो-सागरोपमो तक चार हजार सामानिक देवो यावत् सोलह हजार आत्मरक्षक देवो एवं सूर्याभ विमान और सूर्याभ विमानवासी अन्य बहुत से देवो तथा देवियो का बहुत-बहुत अतिशय रूप से आधिपत्य करते हुए, उनका पालन करते हुए विचरण करो।"

इस प्रकार कहकर पुन: जय-जयकार किया।

AUSPICIOUS MUSIC OF SUCCESS

193. Thereafter four thousand Saamanık gods upto sixteen thousand society guards and many of the resident gods and goddesses of Suryabh capital jointly performed the coronation ceremony of Suryabh Dev in a grand manner. Then each of the gods clasping his hands and placing them at his forehead in respect said as under—

"O Reverend Sir ! May success bestow on you, O the noble Lord ! May you always bring success, O the honoured of all ! May you win again and again, may you be blessed with welfare, may you conquer those who have not been conquered so far, may you look after the subdued, may you live in the company of persons of good feelings and good conduct.

May you remain the master of four thousand Saamanik gods upto sixteen thousand security guards, Suryabh Viman, resident gods and goddesses of Suryabh Viman effectively and majestically just as Indra among gods, moon among stars, Chamarendra among demon gods (asur), Dharnendra among naag (serpentine gods), Bharat Chakravarti among human-beings. May you look after them for many Palyopam for many Sagaropam and for many many Palyopam and Sagaropam "

Said so may you win again.

१९४. तए णं से सूरियाभे देवे महया महया इंदाभिसेगेणं अभिसित्ते समाणे अभिसेयसभाओ पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं निग्गच्छइ, निग्गच्छित्ता जेणेव अलंकारियसभा तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता अलंकारियसभं अणुप्पयाहिणीकरेमाणे करेमाणे अलंकारियसभं पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसइ, अणुपविसित्ता जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सन्निसन्ने।

१९४. इस प्रकार महिमाशाली इन्द्राभिषेक से अभिषिक्त होने के पश्चात् वह सूर्याभदेव अभिषेक सभा के पूर्व दिशा वाले द्वार से बाहर निकला और निकलकर जहाँ अलकार सभा थी, वहाँ आया। अलकार सभा की बारम्बार अनुप्रदक्षिणा करके पूर्व दिशा के द्वार से अलकार सभा मे प्रविष्ट हुआ। जहाँ सिंहासन था, वहाँ आया और पूर्व की ओर मुख करके उस श्रेष्ठ सिंहासन पर बैठ गया।

194. After the grand coronation ceremony of his coronation, Suryabh Dev came out from the eastern door of the coronation-hall. He then came to chamber reserved for putting on ornaments (Alankar Sabha). He went round and then entered Alankar Sabha through the gate in the east. He came to the throne and then sat on it facing eastwards.

१९५. (क) तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स सामाणियपरिसोववन्नगा अलंकारियभंडे उवट्ठवेंति।

तए णं से सूरियाभे देवे तप्पढमयाए पम्हलसूमालाए सुरभीए गंधकासाईए गायाइं लूहेति, लूहित्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं गायाइं अणुलिंपति, अणुलिंपित्ता नासा-नीसासवायवोज्झं चक्खुहरं वन्नफरिसजुत्तं हयलालापेलवातिरेगं धवलं कणगखचियन्तकम्मं आगासफालियसमप्पभं दिव्वं देवदूसजुयलं नियंसेति।

१९५. (क) तदनन्तर उस सूर्याभदेव की सामानिक परिषद् के देवों ने उसके सामने अलकार-भाड (श्रृगार प्रसाधनो की मंजूषा) उपस्थित किया।

इसके बाद सूर्याभदेव ने सर्वप्रथम रोमयुक्त, सुकोमल, काषायिक, सुरभिगध से सुवासित वस्त्र (गेरुआ रंग का सुगंधित अँगोछा) से शरीर को पोछा। पोंछकर शरीर पर सरस गोशीर्ष चदन का लेप किया, फिर नाक की नि:श्वास से भी उडने वाली पतली, दीखने मे आकर्षक, सुन्दर वर्ण और स्पर्श वाले घोडे की लार से भी अधिक कोमल, धवल, आकाश एव स्फटिक मणि जैसी प्रभा वाले दिव्य देवदूष्य (वस्त्र) युगल को धारण किया। उनके पल्लो और किनारो पर सुनहरे बेलबूटे बने हुए थे।

ORNAMENTS AND DRESS

195. (a) Thereafter, the gods of Saamanık council, placed the box of ornaments before Suryabh Dev.

Then first Suryabh Dev wıped hıs body with porous, soft, fragrant, red colour towel He then put sandal paste of go-sheersh sandal wood on his body. Then he wore heavenly clothes which were so fine that it could move away even wıth human breathıng, which was very attractive to look at, which was of beautiful colour and touch whıch was more soft and whıte than salıva of a horse, which was emıtting brıghtness lıke sky and crystalline gem. It was embroidered ın gold at margins and upper body coverıng.

आभूषण धारण

(ख) नियंसेत्ता हारं पिणद्धेति, पिणद्धित्ता अद्धहारं पिणद्धेइ, एगावलिं पिणद्धेति, पिणद्धित्ता मुत्तावलिं पिणद्धेइ, पिणद्धित्ता रयणावलिं पिणद्धेइ, पिणद्धित्ता एवं अंगयाइं

केयूराइं कडगाइं तुडियाइं कडिसुत्तगं दसमुद्दाणंतगं वच्छसुत्तगं मुरविं कंठमुरविं पालंबं कुंडलाइं चूडामणिं मउडं पिणद्धेइ।

गंथिम—वेढिम—पूरिम—संघाइमेणं चउव्विहेणं मल्लेणं कप्परुक्खगं पिव अप्पाणं अलंकियविभूसियं करेइ, करित्ता दद्दर—मलय—सुगंधगंधिएहिं गायाइं भुखंडेइ दिव्वं च सुमणदामं पिणद्धेइ।

(ख) देवदूष्य युगल धारण करने के पश्चात् गले मे हार पहना, अर्धहार, एकावली, मुक्ताहार, आभूषण रत्नावली, एकावली आदि हार पहने। फिर भुजाओं में अगद, केयूर (बाजूबद), कडा, त्रुटित, करघनी, हाथो की दशो अँगुलियों मे दस अँगूठियाँ, वक्षसूत्र (लाकेट), मुरवि (मादलिया), कंठमुर्रवि (कठी), प्रालब (झुमके), कानो मे कुंडल पहने तथा मस्तक पर चूडामणि (कलगी) और मुकुट पहना।

इन आभूषणो को पहनने के पश्चात् ग्रन्थिम (गूँथी हुई), वेष्टिम (लपेटी हुई), पूरिम (पूरी भरी हुई) और सघातिम (साँधकर बनाई हुई), ये चार प्रकार की मालाएँ धारण की, जिनसे वह कल्पवृक्ष के समान अलकृत—विभूषित लगने लगा। तत्पश्चात् दद्दर मलय चदन की सुगंध से सुगन्धित चूर्ण (पाउडर) शरीर पर भुरका—छिडका और फिर दिव्य पुष्पमालाएँ पहनी।

DECORATING WITH ORNAMENTS

(b) After wearing the godly dress, Suryabh Dev decorated himself with garland, the half-garland, the one-loop garland, the garland of pearls, the ratnawalı ornament. He then put on angad, keyoor, bangle, trutıt and karghanı—the varıous types of ornaments. He put on ten rings ın hıs fingers, an ornament on his waıst a particular ornament muravee, the necklace and ear-rings. He wore a crown (mukut) and crest on his head.

After putting on the ornaments, he wore four types of garland namely—knotted, wrapped, fully beated and well jointed. He then looked like the celestial tree (Kalp Vrıksh) bearıng ornaments. Then he sprinkled fragrant sandal wood powder on his body Thereafter he wore unique garlands of flowers

सूर्याभदेव का व्यवसाय सभा मे प्रवेश

१९६. (क) तए णं से सूरियाभे देवे केसालंकारेणं, मल्लालंकारेणं, आभरणालंकारेणं, वत्थालंकारेणं चउव्विहेणं अलंकारेणं अलंकिय—विभूसिए समाणे

पडिपुण्णालंकारे सीहासणाओ अब्भुट्ठेति, अब्भुट्ठित्ता अलंकारियसभाओ पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं पडिणिक्खमइ पडिणिक्खमित्ता जेणेव ववसायसभा तेणेव उवागच्छति, ववसायसभं अणुपयाहिणीकरेमाणे अणुपयाहिणीकरेमाणे पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसति जेणेव सीहासणवरगए जाव सन्निसन्ने।

१९६. (क) तत्पश्चात् वह सूर्याभदेव केशालंकारों (केशों को सजाने वाले अलकार), पुष्प-मालादि माल्यालकारों, हार आदि आभूषणालकारो एव देवदूष्यादि वस्त्रालकारो-इन चारों प्रकार के अलंकारो से विभूषित होकर सिहासन से उठा। उठकर अलकार सभा के पूर्व दिग्वर्ती द्वार से बाहर निकला। व्यवसाय सभा मे आया एव बारम्बार व्यवसाय सभा की प्रदक्षिणा करके पूर्व दिशा के द्वार से उसमे प्रवेश किया। प्रवेश कर जहाँ सिंहासन था वहाँ आकर सिंहासन पर आसीन हुआ।

ARRIVAL OF SURYABH DEV IN VYAVASAYA SABHA

196. (a) Thereafter, Suryabh Dev got up from his throne after beautifying himself with four types of decorative material namely the hair decoration, the flower garlands, other garlands ornaments and heavenly clothes. He then came out from the gate in the east He then came to the library, went round and entered it from the door in the east. Thereafter he came to his assigned seat and sat there.

पुस्तकरत्न वाचन

(ख) तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स सामाणियपरिसोववन्नगा देवा पोत्थयरयणं उणवेंति, तए णं से सूरियाभे देवे पोत्थयरयणं गिण्हति, गिण्हित्ता पोत्थयरयणं मुयइ, मुइत्ता पोत्थयरयणं विहाडेइ, विहाडित्ता पोत्थयरयणं वाएति, पोत्थयरयणं वाएत्ता धम्मियं ववसायं ववसइ, ववसइत्ता पोत्थयरयणं पडिनिक्खवइ, सीहासणाओ अब्भुट्ठेत्ति, अब्भुट्ठेत्ता ववसायसभाओ पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं पडिनिक्खमित्ता जेणेव नंदापुक्खरिणी तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता णंदापुक्खरिणिं पुरत्थिमिल्लेणं तोरणेणं तिसोवाणपडिरूवएणं पच्चोरुहइ, पच्चोरुहित्ता हत्थपादं पक्खालेति, पक्खालित्ता आयंते चोक्खे परमसुइभूए एगं महं सेयं रययामयं विमलं सलिलपुण्णं मत्तगयमुहागितिकुंभसमाणं भिंगारं पगेण्हित्ता जाइं तत्थ उप्पलाइं जाव सतसहस्सपत्ताइं ताइं गेण्हति गेण्हित्ता णंदाओ पुक्खरिणीओ पच्चुत्तरिति, पच्चुत्तरित्ता जेणेव सिद्धायतणे तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

(ख) तत्पश्चात् सामानिक परिषद् के देवों ने व्यवसाय सभा में रखा पुस्तकरत्न सूर्याभदेव के समक्ष रखा। सूर्याभदेव ने उस पुस्तकरत्न को हाथ में लेकर खोला, खोलकर बाँचा। बाँचकर धर्मानुगत-धार्मिक कार्य करने का निश्चय किया। फिर वापस पुस्तकरत्न को यथास्थान रख दिया। फिर सिंहासन से उठा एवं व्यवसाय सभा के पूर्व दिग्वर्ती द्वार से बाहर निकलकर नन्दा पुष्करिणी के पास आया। आकर पूर्व दिग्वर्ती तौरण और त्रिसोपान पंक्ति-(तीन सीढियों) से नन्दा पुष्करिणी में उतरा। हाथ-पैर धोये। हाथ-पैर धोकर और आचमन-(कुल्ला) कर पूर्ण रूप से स्वच्छ और परम शुद्ध होकर मत्त गजराज की मुखाकृति जैसी एक विशाल श्वेत-धवल रजतमय जल से भरी हुई भृगार (झारी) हाथ में ली। वहाँ के उत्पल यावत् शतपत्र-सहस्रपत्र कमल हाथ मे लिये। फिर नन्दा पुष्करिणी से बाहर निकलकर सिद्धायतन की ओर चलने के लिए कदम बढाया।

STUDY OF PUSTAK RATNA

(b) Thereafter, the gods of Saamanik council placed jewel-like book of Suryabh gods which deals with the ethics of the gods (Pustak Ratna) Suryabh D ev took that book in his hand, opened and went through it Thereafter, he decided to perform religious functions as mentioned therein. He then placed Pustak Ratna at its assigned place. He then got up from his seat, came out from the library through the exit in the east. He then came to Nanda pushkarni (lake) He came down from festoons in the east and three stairs. He washed his hands and feet. He then cleaned his mouth well with water and after he became completely neat and clean, he took a large white silvery jar full of water in his hand. The jar was like face of an elephant. He then took utpal, hundred-leaved and thousand-leaved lotuses, in his hand. He then came out of Nanda lake and started towards the eternal temple (Siddhayatan).

विवेचन-इस वर्णन से पता चलता है कि आभूषणो और परिधानो-पोशाको के डिजायन और कलात्मक निर्माण की आश्चर्यजनक विधि उस युग में प्रचलित थी। शरीर प्रसाधन में फूलो की माला और सुगन्धित चूर्ण (पाउडर) आदि का उपयोग होता था।

व्यवसाय सभा का अर्थ कार्य-सचालन करने का केन्द्र (कार्यालय) भी होता है। परन्तु यहाँ पर प्रसगानुसार इसका अर्थ पुस्तकालय या ग्रन्थागार है। इस पुस्तक मे स्वर्ग में उत्पन्न देवताओं के कर्त्तव्य-मर्यादा आचार विधि का वर्णन रहता है। व्यवसाय सभा मे प्रवेश के समय उसकी परिक्रमा करना, उस स्थान के प्रति आदरभाव प्रकट करना है। इन प्रसगो मे स्वर्गीय देवो का शिष्टाचार व्यवहार विशेष ध्यान देने योग्य है।

जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति के अनुसार स्वर्ग में एक शाश्वत जिनालय सिद्धायतन होता है, जहाँ तीर्थंकरों की प्रतिमाएँ स्थापित की रहती है। वहाँ उत्पन्न होने वाला देव अपनी मर्यादानुसार उन प्रतिमाओ की पूजा-अर्चा करता है। यह उन देवो का जीत आचार-परम्परागत कर्त्तव्य बताया है।

Elaboration—A study of this accounts indicates that wonderful expertise of making ornaments and dresses of different types was prevalent in that period To beautify the body, garlands of flowers and fragrant powder and suchlike were used

Vyavasaya Sabha normally means the centre or office for running business. But here it means library In this book (Pustak Ratna), there is a mention of duties and directions for gods taking birth in heaven To go round the library before entering it is a mark of respect for it At this occasion, the ethical conduct is worth consideration

According to Jambu Dveep Prajnapti, there is an eternal temple (Siddhayatan) in the heaven where there are the idols of Tirthankar The gods taking birth there, worship those idols according to their traditional custom. This is an age—old tradition in those gods according to that book

सिद्धायतन का प्रमार्जन

१९७. तए णं ते सूरियाभं देवं चत्तारि य सामाणियसाहस्सीओ जाव सोलस आयरक्खदेवसाहस्सीओ अन्ने य बहवे सूरियाभविमाणवासिणो जाव देवीओ य अप्पेगतिया देवा उप्पलहत्थगा जाव सय-सहस्सपत्त-हत्थगा सूरियाभं देवं पिट्ठतो समणुगच्छंति। तए णं तं सूरियाभं देवं बहवे आभिओगिया देवा य देवीओ य अप्पेगतिआ कलसहत्तगा जाव अप्पेगतिया धूवकडुच्छुयहत्थगता हट्ठतुट्ठ जाव सूरियाभं देवं पिट्ठतो समणुगच्छंति।

१९७. तब उस सूर्याभदेव के चार हजार सामानिक देव यावत् सोलह हजार आत्मरक्षक देव तथा कितने ही अन्य बहुत से सूर्याभ विमानवासी देव और देवी भी उत्पल, शतपत्र-सहस्रपत्र कमलो को हाथों में लेकर सूर्याभदेव के पीछे-पीछे चले। सूर्याभदेव के बहुत-से आभियोगिक देव और देवियाँ हाथो मे कलश यावत् धूपदानो को लेकर हर्षित होते हुए सूर्याभदेव के पीछे-पीछे चले।

CLEANING OF SIDDHAYATAN (ETERNAL TEMPLE IDOLS)

197. Thereafter 4,000 Saamanik gods upto 16,000 body-guard gods and many other resident gods and goddesses of Suryabh Viman, took utpal, hundred-leaved lotus, thousand-leaved lotus in

their hands and followed Suryabh god. Many abhiyogic (serving) gods and goddesses of Suryabh Dev holding pots and incense stands in their hand followed Suryabh Dev in a happy mood.

१९८. (क) तए णं से सूरियाभे देवे चउहिं सामाणिगसहस्सीहिं जाव अन्नेहि य बहूहि य जाव देवेहि य देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव णातियरवेणं जेणेव सिद्धायतणे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सिद्धायतणं पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसति, अणुपविसित्ता जेणेव देवच्छंदए, जेणेव जिणपडिमाओ तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता जिणपडिमाणं आलोए पणामं करेति, करित्ता लोमहत्थगं गिण्हति, गिण्हित्ता जिणपडिमाणं लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता जिणपडिमाओ सुरभिणा गंधोदएणं ण्हाणेइ, ण्हाणित्ता सरसेणं गोसीसचंदणेणं गायाइं अणुलिंपइ, अणुलिंपइत्ता सुरभिगंधकासाइएणं गायाइं लूहेति, लूहित्ता जिणपडिमाणं अहयाइं देवदूसजुयलाइं नियंसेइ, नियंसित्ता पुप्फारुहणं मल्लारुहणं–गंधारुहणं–चुण्णारुहणं–वन्नारुहणं–आभरणारुहणं करेइ, करित्ता आसत्तोसत्तविउलवट्टवग्घारिय मल्लदामकलावं करेति, मल्लदामकलावं करेत्ता कयग्गहगहियकरयलपब्भट्ठ–विप्पमुक्केणं दसवद्ध–वन्नेणं कुसुमेणं मुक्कपुप्फपुंजोवयारकलियं करेति, करित्ता जिणपडिमाणं पुरतो अच्छेहिं सण्हेहिं रययामएहिं अच्छरसातंदुलेहिं अट्ठट्ठ मंगले आलिहइ, तं जहा–सोत्थियं जाव दप्पणं।

१९८. (क) तत्पश्चात् सूर्याभदेव चार हजार सामानिक देवो यावत् और दूसरे बहुत से देवो और देवियो से घिरा हुआ अपनी समस्त ऋद्धि, वैभव के साथ वाद्यों की तुमुल ध्वनिपूर्वक सिद्धायतन पर पहुँचा। उसमें पूर्व द्वार से प्रवेश करके जहाँ देवच्छदक (सिहासन विशेष) और जिन–प्रतिमाएँ थी वहाँ आया। वहाँ आकर जिन–प्रतिमाओ को देखते ही उसने प्रणाम करके लोममयी प्रमार्जनी (मयूरपिच्छी जैसी पूँजनी) हाथ मे ली और प्रमार्जनी को लेकर जिन–प्रतिमाओ को प्रमार्जित किया। प्रमार्जित करके सुरभिगन्धोदक से उन जिन–प्रतिमाओ का प्रक्षालन किया। प्रक्षालन करके सरस गोशीर्ष चन्दन का लेप किया। सुरभिगन्ध से सुवासित भगवा रग के वस्त्र से उनको पोछा। उन जिन–प्रतिमाओ को अखण्ड देवदूष्य युगल–दिव्य (वस्त्रो का जोडा) पहनाया। फिर पुष्प, माला, गन्ध, चूर्ण, वस्त्र और आभूषण चढाये। इन सबको चढाने के बाद ऊपर से नीचे तक लटकती हुई लम्बी–लम्बी गोल मालाएँ पहनाई। मालाएँ पहनाकर पचरगे फूलो को हाथ मे लेकर उनकी वर्षा की और माँडने माँडकर उस स्थान को सुशोभित किया। फिर उन जिन–प्रतिमाओं के सम्मुख शुभ्र,

सलौने, रजतमय अक्षत तन्दुलों से स्वस्तिक यावत् दर्पण आदि आठ-आठ मंगलों का आलेखन किया।

198. (a) Thereafter in the company of four thousand Saamanik gods upto many other gods and goddesses. Suryabh god arrived at the eternal temple (Siddhayatan) with his entire splendour in the pleasant music of such musical instruments. He entered through the gate in the east, came to the place where there was special seat for him and the idols of Tirthankars. Immediately when he saw the idols, he bowed to them, held the mop of peacock-hair in his hands and cleaned the idols with it. Then he washed the idols with fragrant gandhodak (scented water). He then put fresh go-sheersh sandal paste on the idols. He, then wiped the idols with scented saffron-coloured cloth. He then dressed them in a pair of new divine dress. Thereafter, he offered flowers, garlands, scented powder and ornaments to the idols. Then he put long round garlands on the idols. Thereafter he sprinkled flowers of five colours on them. He then decorated that place with circular sketches. He then drew pictures of eight auspicious symbols namely Swastik upto mirror with pure, shining, white unbroken rice grains in front of the idols.

(ख) तयाणंतरं च णं चंदप्पभवइरवेरुलियविमलदंडं कंचणमणिरयणभत्तिचित्तं कालागुरुपवरकुंदरुक्क-तुरुक्क-धूव-मघमघंतगंधुत्तमाणुविद्धं च धूववट्टिं विणिम्मुयंतं वेरुलियमयं कडुच्छुयं पग्गहिय पयत्तेणं धूवं दाऊण जिणवराणं अट्ठसयविसुद्धगंथजुत्तेहिं अत्थजुत्तेहिं अपुणरुत्तेहिं महावित्तेहिं संथुणइ, संथुणित्ता सत्तट्ठ पयाइं पच्चोसक्कइ, पच्चोसक्कित्ता वामं जाणुं अंचेइ अंचित्ता दाहिणं जाणुं धरणितलंसि निहट्टु तिक्खुत्तो मुद्धाणं धरणितलंसि निवाडेइ निवाडित्ता ईसिं पच्चुण्णमइ, पच्चुण्णमित्ता करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलिं कट्टु एवं वयासी-

(ख) तदनन्तर उन जिन-प्रतिमाओं के सन्मुख श्रेष्ठ कृष्ण अगर, कुन्दरुष्क, तुरुष्क और धूप की सुगन्ध से व्याप्त और धूपबत्ती के समान सुरभिगन्ध को फैलाने वाले धूपदान को लेकर धूप-क्षेप किया। वह धूपदान चन्द्रकान्त मणि, वज्र रत्न और वैडूर्य मणि की दंडी तथा स्वर्ण-मणि-रत्नों से रचित चित्र-विचित्र आलेखनों से युक्त था। उसके पश्चात् महिमाशाली एक सौ आठ छन्दों में स्तुति की, जो शास्त्रानुकूल भावयुक्त अर्थसम्पन्न

अपुनरुक्त पुनरुक्ति दोषरहित स्तुति करके सात-आठ पग पीछे हटा, फिर बायाँ घुटना ऊँचा किया और दायाँ घुटना जमीन पर टिकाकर तीन बार मस्तक को भूमितल पर नमाया, फिर घुटना कुछ ऊँचा उठा तथा मस्तक ऊँचा कर दोनों हाथ जोड़कर आवर्त्तपूर्वक मस्तक पर अजलि करके बोला-

(b) Thereafter, he took an incense-stand giving out scented smell of black agar, kundrushk, turushk and suchlike incense substances and moved the incense-stand around the idols spreading the incense all around. That incense-stand was studded with Chandrakant and Vajra gems, its handle was of Vaidurya gems and it was made of gold, gems and jewels, many pictures were drawn on it. Thereafter, he praised the Tirthankars with a hymn of 108 verses having sentiments and meaning strictly according to scriptures and which were totally devoid of repetition. Then he moved seven-eight steps backwards. He then touched the ground with his right knee, raised the left knee upwards (facing sky) touched the ground three times with his forehead, folded his hands, moved them around in a circle, placed them at his forehead and then said.

अरिहंत-सिद्ध भगवन्तों की स्तुति

१९९. नमोऽत्थु णं अरिहंताणं भगवंताणं, आइगराणं, तित्थगराणं सयंसंबुद्धाणं, पुरिसुत्तमाणं, पुरिससीहाणं, पुरिसवरपुण्डरीआणं, पुरिसवरगंधहत्थीणं, लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिआणं, लोगपईवाणं, लोगपज्जोअगराणं, अभयदयाणं, चक्खुदयाणं, मग्गदयाणं, सरणदयाणं, बोहिदयाणं, धम्मदयाणं, धम्मदेसयाणं, धम्मनायगाणं, धम्मसारहीणं, धम्मवरचाउरंत-चक्कवट्टीणं, अप्पडिहयवर-नाणदंसणधराणं, विअट्टच्छउमाणं, जिणाणं जावयाणं, तिन्नाणं तारयाणं, बुद्धाणं बोहयाणं, मुत्ताणं मोइगाणं, सव्वन्नूणं, सव्वदरिसीणं सिवं, अयलं, अरुअं, अणंतं, अक्खयं, अव्वाबाहं, अपुणरावित्तिसिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपत्ताणं।

१९९. अरिहत भगवन्तों को नमस्कार हो, श्रुतचारित्रधर्म की आदि करने वाले तीर्थंकरों को, स्वयंबुद्धों को-(गुरूपदेश के बिना स्वयं ही बोध को प्राप्त), पुरुषों में उत्तम, कर्मशत्रुओं का विनाश करने में पराक्रमी होने के कारण पुरुषों में सिंह के समान, सौम्य और लावण्यशाली होने से पुरुषों में श्रेष्ठ पुंडरीक-कमल के समान, अपने पुण्य प्रभाव से

ईति-व्याधि, **भीति**-भय आदि को शान्त करने के कारण पुरुषो में श्रेष्ठ गन्धहस्ती के समान, लोक मे उत्तम, लोक के नाथ, लोक का हित करने वाले, संसारी-प्राणियों को सन्मार्ग दिखाने के कारण लोक में दीपक के समान, केवलज्ञान द्वारा लोकालोक को प्रकाशित करने वाले-वस्तुस्वरूप को बताने वाले, अभयदाता, श्रद्धा-ज्ञानरूप नेत्र के दाता, मोक्षमार्ग के दाता, शरणदाता, बोधिदाता, धर्मदाता, देशविरति-सर्वविरतिरूप धर्म के उपदेशक, धर्म के नायक, धर्म के सारथी, सम्यक् धर्म के प्रवर्तक, चातुर्गतिक ससार का अन्त करने वाले श्रेष्ठ धर्म के चक्रवर्ती, ज्ञान-दर्शन के धारक, कर्मावरण या कषायरूप छद्म के नाशक, रागादि शत्रुओ को जीतने वाले तथा अन्य जीवो को भी कर्म-शत्रुओ को जीतने के लिए प्रेरित करने वाले, ससार-सागर से स्वय तिरे हुए तथा दूसरो को भी तिरने का उपदेश देने वाले, बोध को प्राप्त तथा दूसरो को भी उपदेश देने वाले, सर्वज्ञ, सर्वदर्शी तथा **शिव**-उपद्रवरहित, अचल, नीरोग, अनन्त, अक्षय, अव्याबाध, **अपुनरावृत्ति रूप**-(जन्म-मरणरूप ससार से रहित) सिद्धगति नामक स्थान मे विराजमान सिद्ध भगवन्तो को नमस्कार हो।

HYMN PRAISING ARIHANT AND SIDDHA

199. I offer my prayer to Arihant (the completely detached), who are prime founders of religious cult, who are Tirthankar (who exhibited the four-fold religious order); who are self-enlightened (without the guidance of any teacher), who are supreme beings, who are as brave as lions among the human race, who have subdued mighty karmas, who in view of their tranquility and ecstatic appearance are as good as Pundareek lotus among the people, who are like Gandh-Hasti (the great elephant whose very fragrance subdues the other elephants) among human-beings as the evils like **Eeti**—dreams and **Bheeti**—the fear disappear with their appearance, who are supreme in the universe, who are beneficient to one and all in the universe, who are like resourceful light in the universe, who bless fearlessness to all, who are bestowers of right vision and right knowledge, who guide people to the path of serenity, who are teachers of Dharma—the true knowledge, who are charioteer of the Dharma chariot, who are guide of religious path, who are king emperor in subduing the entire birth cycle in the universe wherein the living-beings transmigrate in four states of bodily existence (gati), who possess indestructible perfect knowledge and perfect perception, who have overcome all the

ignorance that pollutes the soul, who have completely subdued worldly attachment and hatred and cause others to do so, who have come out successful in the swim fete over the ocean of transmigration and inspire others to follow suit, who are self-enlightened and guiding star to others, who are self-liberated and cause others to attain liberation, who are omniscient, possessing perfect wisdom, free from calamity ominous to all, who have reached the absolute state free from transmigration, who are disease free, who are infinite, imperishable and free from all hurdles and who have acquired **Apunaravritti** (total liberation—the abode of Siddhas wherefrom one never comes to this mundane world). Thus he bowed to all the Siddhas residing in liberated state at Siddha place called Siddha gati.

सिद्धायतन के देवच्छन्दक आदि की प्रमार्जना

२००. (क) वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता जेणेव देवच्छंदए जेणेव सिद्धायतणस्स बहुमज्झदेसभाए तेणेव उवागच्छइ, लोमहत्थगं परामुसइ, सिद्धायतणस्स बहुमज्झदेसभागं लोमहत्थेणं पमज्जति, दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खेइ, सरसेणं गोसीसचंदणेणं पंचंगुलितलं मंडलगं आलिहइ कयग्गहगहिय जाव पुंजोवयारकलियं करेइ, करित्ता धूवं दलयइ।

जेणेव सिद्धायतणस्स दाहिणिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, लोमहत्थगं परामुसइ, दारचेडीओ य सालभंजियाओ य वालरूवए य लोमहत्थएणं पमज्जइ, दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खेइ, सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चए दलयइ, दलइत्ता पुप्फारुहणं मल्ला. जाव आभरणारुहणं करेइ, करेत्ता आसत्तोसत्त जाव धूवं दलयइ।

२००. **(क)** सिद्ध भगवन्तो को वन्दन-नमस्कार कर सूर्याभदेव देवच्छन्दक (सिहासन) और सिद्धायतन के मध्य भाग मे आया। वहाँ आकर मोरपीछी हाथ मे उठाई और सिद्धायतन को प्रमार्जित किया (पूँजा, झाडा-बुहारा)। फिर दिव्य जलधारा से सीचा, सरस गोशीर्ष चन्दन का लेप करके हाथ के छापे लगाये, माडने माडे यावत् फूल हाथ मे लेकर बिखेरे। पुष्प बिखेरकर धूप किया और फिर सिद्धायतन के दक्षिण द्वार पर आकर मोरपीछी ली। उस मोरपीछी से दरवाजो की चौखटो व उन पर बनी पुतलियों एव रूपो को प्रमार्जित किया, दिव्य जलधारा सींच, सरस गोशीर्ष चन्दन से चर्चित किया। सन्मुख धूप जलाई, पुष्प चढाये, मालायें चढाईं यावत् आभूषण चढ़ाये। यह सब करके फिर ऊपर से नीचे तक लटकती हुई गोल-गोल लम्बी मालाओ से विभूषित किया।

धूप करने के बाद जहाँ दक्षिण द्वार का मुखमण्डप (देवालय का आँगन) था और उसमें भी जहाँ उस दक्षिण दिशा के मुखमण्डप का मध्य भाग था, वहाँ आया और मोरपीछी ली, मोरपीछी लेकर उस मध्य देश भाग को प्रमार्जित किया–बुहारा, दिव्य जलधारा सींची, सरस गोशीर्ष चन्दन से चर्चित किया–हाथ के छापे लगाये, मांडने मांडे तथा पुष्प–पुँजों को हाथ से लेकर बिखेरा यावत् धूप जलाया।

CLEANING OF DEVACHHANDAK OF SIDDHAYATAN (ETERNAL TEMPLE)

200. (a) After bowing to the (idols of) Siddhas, Suryabh Dev came to centre of eternal temple (Siddhayatan) near his seat. He picked up the mop of peacock feathers and properly cleaned the temple. He then washed it with divine water, put fresh sandle paste of go-sheersh sandal wood on his hand and printed the floor with it, made auspicious circles upto scattered flowers. He then made it fragrant with incense stick, he then came to the southern gate of the Siddhayatan, took the mop of peacock feathers and cleaned the door-frames and also the puppets and sketches made on them, he sprinkled divine water, put fresh go-sheersh sandal wood paste on them and burnt the incense before them. He placed flowers, garlands upto ornaments before them. Then he decorated them with long round hanging garlands.

After burning the incense, he came to the southern courtyard of the temple, picked up the mop of peacock feathers and cleaned the middle portion, washed it with divine water, painted hand prints of fresh go-sheersh sandal wood paste on it, made circular sketches, scattered flowers with his hand upto burnt the incense.

(ख) जेणेव दाहिणिल्ले दारे मुहमंडवे जेणेव दाहिणिल्लस्स मुहमंडवस्स बहुमज्झदेसभाए तेणेव उवागच्छइ लोमहत्थगं परामुसइ, बहुमज्झदेसभागं लोमहत्थेणं पमज्जइ दिव्वाए दगधाराए अब्भुक्खेइ, सरसेणं गोसीसचंदणेणं पंचंगुलितलं मंडलगं आलिहइ, कयग्गहगहिय जाव धूवं दलयइ।

जेणेव दाहिणिल्लस्स मुहमंडवस्स पच्चत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, लोमहत्थगं परामुसइ दारचेडीओ य सालभंजियाओ य वालरूवए य लोमहत्थेणं पमज्जइ, दिव्वाए

दगधाराए. सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चए दलयइ, पुप्फारुहणं जाव आभरणारुहणं करेइ आसत्तोसत्त. कयगहग्गहिय जाव धूवं दलयइ।

जेणेव दाहिणिल्लस्स मुहमंडवस्स उत्तरिल्ला खंभपंती तेणेव उवागच्छइ, लोमहत्थगं परामुसइ थंभे य सालभंजियाओ य वालरूवए य लोमहत्थएणं पमज्जइ जहा चेव पच्चत्थिमिल्लस्स दारस्स जाव धूवं दलयइ।

जेणेव दाहिणिल्लस्स मुहमंडवस्स पुरत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ, लोमहत्थगं परामुसति दारचेडीओ तं चेव सव्वं। जेणेव दाहिणिल्लस्स मुहमंडवस्स दाहिणिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ दारचेडीओ तं चेव सव्वं।

(ख) इसके बाद उस दक्षिण दिग्वर्ती मुखमण्डप के पश्चिमी द्वार पर आया। वहाँ आकर मोरपीछी ली, उस मोरपीछी से दरवाजों पर बनी पुतलियाँ एवं व्याल (सर्प) रूपों को पूँजा, दिव्य जलधारा से सीचा, सरस गोशीर्ष चन्दन से चर्चित किया, धूपक्षेप किया, पुष्प चढाये, आभूषण चढाये, मालाएँ लटकाई, पुष्प-पुँजों को हाथ में लेकर बिखेरा और धूप जलाई।

तत्पश्चात् उसी दक्षिण के मुखमण्डप (आँगन) की उत्तर दिशा में स्थित स्तम्भ-पंक्ति के निकट आया। वहाँ आकर मोरपखो से बनी प्रमार्जनी को उठाया, उससे स्तम्भों को, पुतलियों को और व्याल रूपों को प्रमार्जित किया तथा पश्चिमी द्वार के समान दिव्य जलधारा से सीचने आदि सब कार्य करके धूप जलाया।

इसके बाद दक्षिण दिशावर्ती मुखमण्डप (आँगन) के पूर्वी द्वार पर आया। आकर मोरपीछी हाथ मे ली, उससे द्वार-शाखाओ, पुतलियो, सर्परूपो को साफ किया, दिव्य जलधारा सीची आदि धूप जलाने तक सभी कार्य किये।

तत्पश्चात् उस दक्षिण दिशावर्ती मुखमण्डप के दक्षिणी द्वार पर आया और द्वार पर बनी पुतलियों आदि को साफ किया, जलधारा सींची आदि धूप जलाने तक पूर्वोक्त सब कार्य किये।

(b) Thereafter he came to the gate in the west of that southern courtyard of the temple. He wiped the puppets and snake-shaped sketches on its doors, washed it with divine water, pasted go-sheersh sandal wood paste on it, made it fragrant with burnt incense and worshipped with flowers and ornaments. He then hung garlands, scattered flowers petals and burnt the incense.

Thereafter, he came to the row of posts in the northern direction of the southern courtyard. He picked up the mop of peacock feathers and cleaned the posts, the puppets and snake-sketches with it, he then sprinkled divine water and performed other above said activities as he had done at the western gate earlier

Thereafter he came to the eastern gate of the courtyard in the south. He picked up the mop of peacock feathers and cleaned the sides of the doors, the puppets and the snake-sketches, he sprinkled divine water on them upto burnt incense as mentioned earlier.

Thereafter he came to the southern gate of the courtyard in the south and cleaned the puppets and others drawn on the doors, sprinkled divine water on them and did all the activities earlier mentioned upto burning of incense

(ग) जेणेव दाहिणिल्लस्स पेच्छाघरमंडवे, जेणेव दाहिणिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स बहुमज्झदेसभागे, जेमेव वइरामए अक्खाडए, जेणेव मणिपेढिया, जेणेव सीहासणे, तेणेव उवागच्छइ, लोमहत्थगं परामुसइ, अक्खाडगं च मणिपेढियं च सीहासणं च लोमहत्थएणं पमज्जइ, दिव्वाए दगधाराए सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चए दलयइ, पुप्फारुहणं आसत्तोसत्त जाव धूवं दलेइ।

जेणेव दाहिणिल्लस्स पेच्छाघरमंडवस्स पच्चत्थिमिल्ले दारे उत्तरिल्ले दारे तं चेव जं चेव पुरत्थिमिल्ले दारे तं चेव दाहिणे दारे तं चेव।

जेणेव दाहिणिल्लस्स चेइयथूभे तेणेव उवागच्छइ थूभं मणिपेढियं च दिव्वाए दगधाराए सरसेण गोसीसचंदणेणं चच्चए दलेइ पुप्फारु. आसत्तो. जाव धूवं दलेइ।

(ग) तदनन्तर जहाँ दक्षिण दिशावर्ती प्रेक्षागृह मण्डप था, उस दक्षिण दिशावर्ती प्रेक्षागृह मण्डप के मध्य देश भाग मे बना हुआ वज्रमय अक्षपाट (रगमच) तथा उस पर बनी मणिपीठिका (मणिजडित चौकी) एव मणिपीठिका पर स्थापित सिहासन था, वहाँ आया। मोरपीछी लेकर अक्षपाट, मणिपीठिका और सिंहासन को प्रमार्जित किया, दिव्य जलधारा से सिंचित किया, सरस गोशीर्ष चन्दन से चर्चित किया, धूप किया, पुष्प चढाये तथा गोल-गोल मालाओं से विभूषित किया।

अनुक्रम से जहाँ उसी दक्षिण प्रेक्षागृह मण्डप के पश्चिमी द्वार एवं उत्तरी द्वार थे, वहाँ आया और वहाँ आकर पहले की तरह पुष्प बिखेरने व धूपदान आदि करने योग्य सब कार्य

सम्पन्न किये। उसके बाद पूर्वी द्वार पर आया, यहाँ आकर भी सब कार्य पूर्ववत् किये, तत्पश्चात् दक्षिणी द्वार पर आया, वहाँ आकर भी धूपदान आदि सब कार्य पूर्ण किये।

इसके पश्चात् दक्षिण दिशावर्ती चैत्यस्तूप (सिद्धायतन के पास वाला स्तूप) के सन्मुख आया। वहाँ आकर स्तूप और मणिपीठिका को प्रमार्जित किया, दिव्य जलधारा से सिंचित किया, सरस गोशीर्ष चन्दन से चर्चित किया, धूप जलाई, पुष्प चढाये, मालाएँ लटकाई आदि सब कार्य सम्पन्न किये।

(c) Thereafter he came to the hall for spectators located in the south, he then came to the gem-studded table on the Vajra stage (platform) and the seat (Sinhasan) on that table. He took the mop of peacock feathers and cleaned the stage, the gemmed table and the seat, sprinkled divine water on them, pasted fresh go-sheersh sandal paste, burnt the incense and worshipped with flowers. He then decorated them with round-shaped garlands

He then repeated all the above at the western gate of the southern hall for spectator and thereafter at the northern gate of the said hall He then came to the eastern gate and repeated all the above activities and thereafter came to the southern gate and there also repeated all the above activities namely burning of incense and others

Thereafter he came to the southern post near the Siddhayatan. He cleaned the post and the gemmed table (Mani-peethika), sprinkled divine water on it, pasted fresh go-sheersh sandal paste on it, burnt the incense, worshipped with flowers, hung the garlands and thus completed all the above said activities.

(घ) जेणेव पच्चत्थिमिल्ला मणिपेढिया जेणेव पच्चत्थिमिल्ला जिणपडिमा तं चेव, जेणेव उत्तरिल्ला जिणपडिमा तं चेव सव्वं। जेणेव पुरत्थिमिल्ला मणिपेढिया जेणेव पुरत्थिमिल्ला जिणपडिमा तेणेव उवागच्छइ चं चेव, दाहिणिल्ला मणिपेढिया दाहिणिल्ला जिणपडिमा तं चेव।

जेणेव दाहिणिल्ले चेइयरुक्खे तेणेव उवागच्छइ तं चेव, जेणेव महिंदज्झए, जेणेव दाहिणिल्ला नंदापुक्खरिणी तेणेव उवागच्छति, लोमहत्थगं परामुसति, तोरणे य

तिसोवाणपडिरूवए सालभंजियाओ य वालरूवए य लोमहत्थएणं पमज्जइ, दिव्वाए दगधाराए सरसेणं गोसीसचंदणेणं. पुप्फारुहणं आसत्तोसत्त. धूवं दलयति।

सिद्धाययणं अणुपयाहिणीकरेमाणे जेणेव उत्तरिल्ला णंदापुक्खरिणी तेणेव उवागच्छति तं चेव, जेणेव उत्तरिल्ले चेइयरुक्खे तेणेव उवागच्छति, जेणेव उत्तरिल्ले चेइयथूभे तहेव, जेणेव पच्चत्थिमिल्ला पेढिया जेणेव पच्चत्थिमिल्ला जिणपडिमा तं चेव।

(घ) इसके पश्चात् जहाँ पश्चिम दिशा की मणिपीठिका के पास विराजमान जिन-प्रतिमा थी, वहाँ आकर प्रमार्जनादि कार्य किये, धूप आदि सब कार्य सम्पन्न किये। इसके बाद उत्तर दिशावर्ती मणिपीठिका और जिन-प्रतिमा के पास आया। वहाँ भी धूपक्षेप पर्यन्त सब कार्य किये। इसके पश्चात् जहाँ पूर्व दिशावर्ती मणिपीठिका थी तथा पूर्व दिशा में स्थापित जिन-प्रतिमा थी, वहाँ आया। वहाँ आकर पूर्ववत् प्रमार्जन करना आदि धूप जलाने पर्यन्त सब कार्य किये। इसके बाद जहाँ दक्षिण दिशा की मणिपीठिका और दक्षिण दिशावर्ती जिन-प्रतिमा थी, वहाँ आया और पूर्ववत् धूप जलाने तक सब कार्य किये।

इसके पश्चात् दक्षिण दिशावर्ती चैत्यवृक्ष के पास आया। वहाँ आकर भी पूर्ववत् प्रमार्जनादि सब कार्य किये। इसके बाद जहाँ माहेन्द्रध्वज था, दक्षिण दिशा की नदा पुष्करिणी थी, वहाँ आया। आकर मोरपीछी को हाथ में लिया और फिर तोरणो, त्रिसोपानो, काष्ठपुतलियों और सर्परूपकों को मोरपीछी से पोंछा, दिव्य जलधारा सीची, सरस गोशीर्ष चदन का लेप किया, पुष्प चढाये, पुष्पमालाओ से विभूषित किया और धूपक्षेप किया।

फिर सिद्धायतन की प्रदक्षिणा करके उत्तर दिशा की नदा पुष्करिणी पर आया। वहाँ पर भी धूपक्षेप आदि कार्य किये। इसके बाद उत्तर दिशावर्ती चैत्यवृक्ष और चैत्य-स्तम्भ के पास आया। पूर्ववत् प्रमार्जन आदि कार्य किये। इसके पश्चात् जहाँ पश्चिम दिशावर्ती मणिपीठिका पर स्थापित प्रतिमा थी, वहाँ आया। वहाँ आकर भी पूर्ववत् धूपक्षेप आदि करके योग्य कार्य किये।

(d) He then came to the idol of the Tirthankar seated on gemmed-seat in the south, cleaned it, burnt incense and did all such activities as mentioned earlier. Thereafter, he came to gemmed-seat in the north and the idol of Tirthankar thereon. There also he repeated all the above activities including burning of incense. Thereafter he came to the gemmed-table in the east and the idol of Tirthankar thereon. He then cleaned it and repeated all the activities upto burning of incense. Later, he came to the gemmed-

seat in the south and the idol of the Tirthankar thereon and repeated all the activities upto burning of incense.

Thereafter he came to the memorial tree (Chaitya tree) in the south. He repeated all the previous activities there also. He then came to the Mahendra Dhvaj (the great flag) and Nanda Pushkarni (lake) in the south. He picked up mop of peacock feathers and cleaned the festoons, the steps, the wooden puppets and snake-sketches with it, he sprinkled divine water on them, pasted fresh go-sheersh sandal wood paste and worshipped with flowers. He then decorated it with flower garlands and the incense.

He then went round the Siddhayatan and came to the Pushkarni (lake) in the north. There also he repeated all the activities including burning of incense. He then came to the memorial tree in the north and the memorial post. He cleaned there and repeated all previous activities. He then came to the idol of the Tirthankar at the gemmed-stool in the west. There also he repeated all the previous activities including burning of incense.

(ङ) जेणेव उत्तरिल्ले पेच्छाघरमंडवे तेणेव उवागच्छति जा चेव दाहिणिल्लवत्तव्वया सा चेव सव्वा पुरत्थिमिल्ले दारे, दाहिणिल्ला खंभपंती तं चेव सव्वं।

जेणेव उत्तरिल्ले मुहमंडवे जेणेव उत्तरिल्लस्स मुहमंडवस्स बहुमज्झदेसभाए तं चेव सव्वं, पच्चत्थिमिल्ले दारे तेणेव। उत्तरिल्ले दारे दाहिणिल्ला खंभपंती सेसं तं चेव सव्वं। जेणेव सिद्धायतणस्स उत्तरिल्ले दारे तं चेव। जेणेव सिद्धायतणस्स पुरत्थिमिल्ले दारे तेणेव उवागच्छइ तं चेव।

(ङ) तत्पश्चात् वह उत्तर दिशा के प्रेक्षागृह मण्डप में आया और दक्षिण दिशा के प्रेक्षागृह मण्डप जैसा समस्त कार्य यहाँ किया। वही सब कार्य पूर्व दिशावर्ती द्वार के लिए और दक्षिण दिशा की स्तम्भ-पंक्ति के लिए भी किये।

इसके बाद वह उत्तर दिशा में जहाँ मुखमण्डप था, उसके मुखमण्डप के बिलकुल मध्य भाग में आया। यहाँ आकर पूर्ववत् सब कार्य किये। इसके बाद वह पश्चिमी द्वार पर आया, वहाँ पर भी द्वार-शाखाओं आदि के प्रमार्जनादि सब कार्य किये। तत्पश्चात् उत्तरी द्वार और उसकी दक्षिण दिशा में स्थित खम्भो की पंक्ति के पास आया। वहाँ भी पूर्ववत् सब कार्य किये। तदनन्तर सिद्धायतन के उत्तरी द्वार पर आया। यहाँ भी पुतलियों आदि के प्रमार्जन

आदि सब कार्य किये। इसके अनन्तर सिद्धायतन के पूर्व दिशा के द्वार पर आया। यहाँ पर भी पूर्ववत् कार्य किये।

(e) Thereafter he came to the spectators hall in the north and performed all the activities which he had done at hall in the south He repeated all the above activities at the gate in the east and the row of posts in the south.

Thereafter he came to the centre of the courtyard in the north. Here also he repeated all the above narrated activities Then he came to the western gate and there also he cleaned the sides of the doors and repeated all such earlier activities He then came to the northern gate and the row of posts in its south. There also he performed all the earlier mentioned activities. Thereafter, he came to the northern gate of the Siddhayatan. Here also he performed all the above mentioned activities. Thereafter, he came to the eastern gate of the Siddhayatan. Here also he performed all the above mentioned activities.

(च) जेणेव पुरत्थिमिल्ले मुहमंडवे जेणेव पुरत्थिमिल्लस्स मुहमंडवस्स बहुमज्झदेसभाए तेणेव उवागच्छइ तं चेव, पुरत्थिमिल्लस्स मुहमंडवस्स दाहिणिल्ले दारे पच्चत्थिमिल्ला खंभपंती उत्तरिल्ले दारे तं चेव पुरत्थिमिल्ले दारे तं चेव।

जेणेव पुरत्थिमिल्ले पेच्छाघरमंडवे, एवं थूभे, जिणपडिमाओ चेइयरुक्खा, महिंदज्झया णंदापुक्खरिणी तं चेव धूवं दलयइ।

(च) इसके बाद जहाँ पूर्व दिशा का मुखमण्डप था और उस मुखमण्डप का मध्य देश भाग था, वहाँ आया और धूपक्षेप आदि सब कार्य किये। इसके बाद जहाँ पूर्व दिशा के मुखमण्डप का दक्षिणी द्वार था और उसकी पश्चिम दिशा मे स्थित स्तम्भ-पंक्ति थी, वहाँ आया। फिर उत्तर दिशा के द्वार पर आया और पहले के समान इन स्थानो पर भी (स्तम्भो, पुतलियों, व्याल रूपो वगैरह को प्रमार्जित किया, धूपदान आदि सभी कार्य किये)। इसी प्रकार से पूर्व दिशा के द्वार पर आकर भी पूर्ववत् सब कार्य किये।

इसके अनन्तर पूर्व दिशा के प्रेक्षागृह मण्डप मे आया। यहाँ पहले की भाँति क्रमशः उस प्रेक्षागृह मण्डप के पश्चिम, उत्तर, पूर्व एवं दक्षिण दिशावर्ती प्रत्येक द्वार पर जाकर उन-उनकी द्वार-शाखाओ, पुतलियो, व्याल रूपों की प्रर्माजना करने से लेकर धूपक्षेप तक के सब कार्य किये।

(f) Thereafter he came to the centre of the courtyard in the east. He performed all the activities namely burning of incense and others. He then came to the southern gate of the courtyard in the east and the row of post in the west of that gate. He then came to the gate in the north. At these places also he performed all the previous activities (cleaning of posts, puppets, snake-sketches and others). He then came to the gate in the east and there also repeated all the earlier mentioned activities.

Thereafter he came to the spectators hall in the east. From there he went to the gates in the west, north, east and south in respective order performing all the above mentioned activities there namely cleaning of door-sides, puppets, snake-sketches upto burning of incense

जिन-अस्थियो की अर्चना

(छ) जेणेव सभा सुहम्मा तेणेव उवागच्छति, सभं सुहम्मं पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसइ। जेणेव माणवए चेइयखंभे जेणेव वइरामए गोलवट्टसमुग्गे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छइत्ता लोमहत्थगं परामुसइ, वइरामए गोलवट्टसमुग्गए लोमहत्थेणं पमज्जइ, वइरामए गोलवट्टसमुग्गस विहाडेइ, जिणसगहाओ लोमहत्थेणं पमज्जइ, सुरभिणा गंधोदएणं पक्खालेइ, पक्खालित्ता अग्गेहिं वरेहिं गंधेहि य मल्लेहि य अच्चेइ, धूवं दलयइ, जिणसक्कहाओ वइरामएसु गोलवट्टसमुग्गएसु पडिनिक्खवइ।

माणवगं चेइयखंभं लोमहत्थएणं पमज्जइ, दिव्वाए दगधाराए सरसेणं गोसीसचंदणेणं चच्चए दलयइ, पुप्फारुहणं जाव धूवं दलयइ, जेणेव सीहासणे तं चेव, जेणेव देवसयणिज्जे तं चेव।

जेणेव खुड्डागमहिंदज्झए तं चेव।

(छ) इसके पश्चात् जहाँ सुधर्मा सभा थी, वहाँ आया और पूर्व दिग्वर्ती द्वार से उस सुधर्मा सभा मे प्रविष्ट हुआ। प्रविष्ट होकर जहाँ माणवक चैत्य-स्तम्भ था और उस स्तम्भ में जहाँ वज्रमय गोल समुद्गक रखे थे, वहाँ आया। वहाँ आकर मोरपीछी उठाई और उस मोरपीछी से वज्रमय गोल समुद्गकों को प्रमार्जित कर उन्हे खोला। उनमे रखी हुई जिन-अस्थियों को लोमहस्तक से पौंछा, गधोदक से उनका प्रक्षालन करके फिर सर्वोत्तम श्रेष्ठ गन्ध और मालाओं से उनकी अर्चना की, धूपक्षेप किया और उसके बाद उन जिन-अस्थियो को पुन· उन्ही वज्रमय गोल समुद्गको में बन्द कर रख दिया।

इसके बाद मोरपीछी से माणवक चैत्य-स्तम्भ को प्रमार्जित किया, दिव्य जलधारा से सिंचित किया, सरस गोशीर्ष चन्दन से चर्चित किया, उस पर पुष्प चढाये यावत् धूपक्षेप किया। इसके पश्चात् सिंहासन और देव-शय्या के पास आया। वहाँ पर भी प्रमार्जना से लेकर धूपक्षेप तक के सब कार्य किये।

इसके बाद छोटी माहेन्द्रध्वज के पास आया और वहाँ भी पहले की तरह प्रमार्जना से लेकर धूपक्षेप तक के सब कार्य किये।

WORSHIP OF REMAINS (ASTHIS—BONES) OF TIRTHANKAR

(g) Thereafter he came to Sudharma council-hall and entered it from the door in the east. He then came to the gemmed memorial pillar and then to the place where Vajra round boxes were kept. He picked up the mop of peacock feathers, cleaned the Vajra round boxes with it and then opened them. He then wiped the bones of the Tirthankar with it, sprinkled gandhodak (scented water) on them and worshipped them with best incense and garlands. He also burnt incense and thereafter placed the bones again in these round boxes and closed these.

Thereafter he cleaned the gemmed memorial post with it, sprinkled divine water on it, pasted it with fresh go-sheersh sandal wood paste, honoured it with flowers upto incense burning. He then came to Sinhasan (his seat) and the divine bed. There also he did all the earlier activities namely cleaning and upto incense burning.

Thereafter he came near small Mahendra Dhvaj and there also he repeated the above mentioned activities namely cleaning and upto incense burning.

आयुधशाला की अर्चना

(ज) जेणेव पहरणकोसे चोप्पालए तेणेव उवागच्छइ, लोमहत्थगं परामुसइ पहरणकोसं चोप्पालं लोमहत्थएणं पमज्जइ, दिव्वाए दगधाराए सरसेणं गोसीसचंदणेणं दलेइ, पुप्फारुहणं आसत्तोसत्त. धूवं दलयइ।

जेणेव सभाए सुहम्माए बहुमज्झदेसभाए, जेणेव मणिपेढिया जेणेव देवसयणिज्जे तेणेव उवागच्छइ, लोमहत्थगं परामुसइ, देवसयणिज्जं च मणिपेढियं च लोमहत्थएणं पमज्जइ जाव धूवं दलयइ।

जेणेव उववायसभाए दाहिणिल्ले दारे तहेव अभिसेयसभा सरिसं जाव पुरत्थिमिल्ला णंदापुक्खरिणी, जेणेव हरए तेणेव उवागच्छइ, तोरणे य तिसोवाणे य सालभंजियाओ य वालरूवए य तहेव।

(ज) इसके पश्चात् 'चौपाल' नामक अपने प्रहरणकोश-(आयुधशाला) मे आया। मोरपंखो की प्रमार्जनिका-बुहारी हाथ में ली एवं उस प्रमार्जनिका से आयुधशाला चौपाल को प्रमार्जित किया, स्वच्छ किया, दिव्य जलधारा से उसका प्रक्षालन किया, वहाँ सरस गोशीर्ष चन्दन के हाथे लगाये, पुष्प आदि चढाये और लम्बी-लम्बी लटकती मालाओ से उसे सजाया यावत् धूपदान किया।

इसके बाद सुधर्मा सभा के मध्य भाग मे बनी हुई मणिपीठिका एव देव-शय्या के पास आया। मोरपीछी लेकर उस देव-शय्या और मणिपीठिका को प्रमार्जित किया यावत् धूपक्षेप किया।

इसके पश्चात् पूर्व दिशा के द्वार से होकर उपपात सभा के दक्षिणी द्वार पर आया, वहाँ आकर अभिषेक सभा (सुधर्मा सभा) के समान यावत् पूर्व दिशा की नन्दा पुष्करिणी की अर्चना की। इसके बाद ह्रद (सरोवर) पर आया और पहले की तरह तोरणो, त्रिसोपानो, काष्ठ-पुतलियों और व्याल रूपो की मोरपीछी से प्रमार्जना की।

WORSHIP OF STOREHOUSE OF WEAPONS

(h) Thereafter he came to 'Chaupal' the storehouse of weapons. He picked up the mop of peacock hair and cleaned the Chaupal with it He made it dustfree, sprinkled divine water and put hand-prints of go-sheersh sandal wood paste on it. He then decorated it with flowers and long hanging garlands upto making it fragrant with incense.

Thereafter he came to gemmed stool in the centre of Sudharma council-hall and to the divine bed. He cleaned them with mop of peacock hair and performed other earlier mentioned activities upto incense burning.

Thereafter he came to the southern gate passing from the gate in the east and worshipped Nanda Pushkarni (well) in the east like the worship of coronation-hall (Sudharma council-hall). Thereafter he came to the lake and cleaned the festoons, steps, wooden puppets and snake sketches with the mop of peacock hair.

(झ) जेणेव अभिसेयसभा, तेणेव उवागच्छइ तहेव सीहासणं च मणिपेढियं च, सेसं तहेव आययणसरिसं जाव पुरत्थिमिल्ला णंदापुक्खरिणी। जेणेव अलंकारियसभा तेणेव उवागच्छइ जहा अभिसेयसभा तहेव सव्वं।

जेणेव ववसायसभा तेणेव उवागच्छइ तहेव लोमहत्थयं परामुसति, पोत्थयरयणं लोमहत्थएणं पमज्जइ, पमज्जित्ता दिव्वाए दगधाराए अग्गेहिं वरेहि य गंधेहिं मल्लेहि य अच्चेति मणिपेढियं सीहासणं च सेसं तं चेव।

पुरत्थिमिल्ला नंदापुक्खरिणी जेणेव हरए तेणेव उवागच्छइ तोरणे य तिसोवाणे य सालभंजियाओ य वालरूवए य तहेव।

जेणेव बलिपीढं तेणेव उवागच्छइ बलिविसज्जणं करेइ, आभिओगिए देवे सद्दावेइ सद्दावित्ता एवं वयासी–

(झ) इसके पश्चात् अभिषेक सभा मे आया, यहॉ पर भी पहले की तरह सिहासन व मणिपीठिका को मोरपीछी से प्रमार्जित किया, धूप जलाने तक के सब कार्य किये। तत्पश्चात् दक्षिण द्वारादि के क्रम से पूर्व दिशावर्ती–नन्दा पुष्करिणी तक सिद्धायतन की तरह धूपक्षेप आदि कार्य सम्पन्न किये।

इसके बाद व्यवसाय सभा (पुस्तकालय) में आया और मोरपीछी लेकर पुस्तकरत्न को पौंछा, फिर उस पर दिव्य जल छिडका। सर्वोत्तम श्रेष्ठ गन्ध और मालाओ से उसकी अर्चना की। इसके बाद मणिपीठिका की, सिहासन की प्रमार्जना की तथा सर्व कार्य सम्मन्न किये।

तदनन्तर दक्षिण द्वारादि के क्रम से पूर्व नन्दा पुष्करिणी तक सिद्धायतन की तरह प्रमार्जना आदि कार्य किये। इसके बाद वह ह्रद–सरोवर पर आया। वहाँ आकर तोरणो, त्रिसोपानो, पुतलियो और व्याल रूपों की प्रमार्जना आदि धूपक्षेप पर्यन्त कार्य सम्पन्न किये।

इन सबकी अर्चना कर लेने के बाद वह बलिपीठ (देवता आदि के नाम पर दी जाने वाली भेट 'बलि' है, बलि देने का स्थान–बलिपीठ है) के पास आया और बलि–विसर्जन करके अपने आभियोगिक देवो को बुलाकर उनको यह आज्ञा दी–

CLEANING OF CORONATION-HALL

(i) Thereafter he came to the coronation-hall, cleaned the throne and gemmed seat with mop of peacock hair and performed all other earlier mentioned activities upto burning of incense. Thereafter,

starting from the gate in the south and moving systematically upto Nanda lake in the east, he performed all the previous activities including incense burning as earlier performed in Siddhayatan.

Then he came to the library and wiped the book (Pustak Ratna) with the mop of peacock hair, sprinkled divine water on it and worshipped it with best type of incense and garlands. He then cleaned the gemmed stool and the seat (Sinhasan) and performed all the earlier mentioned activities.

Thereafter starting from the door in the south he performed all the earlier activities of cleaning and others for all upto Nanda Pushkarni (well) in the east like those he had done for Siddhayatan. He then came to the lake and cleaned the festoons, the steps, the puppets and snake-sketches and performed all other earlier mentioned activities upto incense burning.

After all this worship, he came to the altar (the place where offering is made to the god) and after making the offering, he called the abhiyogic gods and ordered them as under—

आभियोगिक देवो द्वारा आज्ञापालन

२०१. खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सूरियाभे विमाणे सिंघाडएसु तिएसु चउक्केसु चच्चरेसु चउमुहेसु महापहेसु पागारेसु अट्टालएसु चरियासु दारेसु गोपुरेसु तोरणेसु आरामेसु उज्जाणेसु वणेसु वणराईसु काणणेसु वणसंडेसु अच्चणियं करेह, अच्चणियं करेत्ता एवमाणित्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणह।

२०१. "हे देवानुप्रियो ! तुम लोग जाओ और अतिशीघ्र सूर्याभ विमान के शृंगाटकों (सिघाडे की आकृति जैसे त्रिकोण स्थानों) मे, त्रिको (तिराहो) में, चतुष्कों (चौकों) में, चत्वरों मे, चतुर्मुखो (चारों ओर द्वार वाले स्थानों) में, राजमार्गों में, प्राकारो (परकोटे के भीतर) में, अट्टालिकाओं में, चरिकाओं-(दुर्ग और नगर के बीच आठ हाथ प्रमाण छोटा मार्ग) में, द्वारों मे, गोपुरों में (नगर का मुख्य दरवाजा), तोरणों, आरामों, उद्यानों, वनो, वनराजियों, काननों, वनखण्डों में जा-जाकर अर्चनिका (पुष्प, चन्दन आदि से पूजन-लेपन) करो। अर्चनिका करके शीघ्र ही मुझे आज्ञानुसार कार्य करने की सूचना दो।"

ACCOMPLISHING THE ORDERS BY ABHIYOGIK (SERVING) GODS

201. "O loveable of gods ! You go and quickly perform worship with flower and sandal paste at triangular paths, places where three, four or more roads meet, places that have gates on all the four sides, highways in the forts, at the summits, at the 8-haath wide road between the fort and the town, at the gates, at the main entrance of the town, at the festoons, in gardens, orchards, in forests, in rows of tree, in forest at the outskirts of the town and in forest-regions of Suryabh Viman. Thereafter you intimate me immediately after compliance of my orders."

२०२. तए णं ते आभिओगिआ देवा सूरियाभेणं देवेणं एवं वुत्ता समाणा जाव पडिसुणित्ता सूरियाभे विमाणे सिंघाडएसु–तिएसु–चउक्कएसु–चच्चरेसु–चउम्मुहेसु–महापहेसु–पागारेसु–अट्टालएसु–चरियासु–दारेसु–गोपुरेसु–तोरणेसु–आरामेसु–उज्जाणेसु–वणरातीसु–काणणेसु–वणसंडेसु अच्चणियं करेन्ति, जेणेव सूरियाभे देवे जाव पच्चप्पिणंति।

२०२. उन आभियोगिक देवो ने सूर्याभदेव की आज्ञा को सुनकर स्वीकार की। तदनुसार सूर्याभ विमान के शृंगाटको, त्रिको, चतुष्कों, चत्वरो, चतुर्मुखो, राजमार्गों, प्राकारो, अट्टालिकाओ, चरिकाओ, द्वारो, गोपुरो, तोरणो, आरामो, उद्यानो, वनो, वनराजियो और वनखण्डो की अर्चनिका की और अर्चनिका करके सूर्याभदेव के पास आकर आज्ञानुसार कार्य हो जाने की सूचना दी।

202. The Abhiyogic gods listened properly the orders of Suryabh god and accepted them Accordingly they went to triangular paths, places where three, four or more roads meet, places having gates in all the four sides, national highways in the forts, at the summits, at the eight feet wide lane between the fort and the town, at the festoons, in gardens, orchards, forests in rows of trees, in forest at the outskirts of the town and in forest-regions and worshipped them (as directed). Thereafter they came to Suryabh Dev and intimated to him the full compliance of his orders

२०३. तए णं से सूरियाभे देवे जेणेव णंदा पुक्खरिणी तेणेव उवागच्छइ, नंदापुक्खरिणिं पुरत्थिमिल्लेणं तिसोपाणपडिरूवएणं पच्चोरुहति, हत्थपाए पक्खालेइ, णंदाओ पुक्खरिणीओ पच्चुत्तरेइ, जेणेव सभा सुधम्मा तेणेव पहारित्थ गमणाए ?

२०३. तत्पश्चात् सूर्याभदेव नन्दा पुष्करिणी के पास आया और पूर्व दिशावर्ती त्रिसोपानों से नन्दा पुष्करिणी में उतरा, हाथ-पैरों को धोया और फिर नन्दा पुष्करिणी से बाहर निकला। निकलकर सुधर्मा सभा की ओर चलने के लिए उद्यत हुआ।

203. Thereafter he came to Nanda Pushkarnı (small lake), washed his hands and then came out He then got ready to go to Sudharma council-hall.

२०४. तए णं सूरियाभे देवे चउहिं सामाणियसाहस्सीहिं जाव सोलसहिं आयरक्खदेव-साहस्सीहिं, अन्नेहि य बहूहिं सूरियाभविमाणवासीहिं वेमाणिएहिं देवेहिं देवीहि य सद्धिं संपरिवुडे सव्विड्ढीए जाव नाइयरवेणं जेणेव सभा सुहम्मा तेणेव उवागच्छइ, सभं सुधम्मं पुरत्थिमिल्लेणं दारेणं अणुपविसति, अणुपविसित्ता जेणेव सीहासणे तेणेव उवागच्छइ, सीहासणवरगए पुरत्थाभिमुहे सण्णिसण्णे।

२०४. इसके बाद सूर्याभदेव चार हजार सामानिक देवो यावत् परिवार सहित सोलह हजार आत्म-रक्षक देवो तथा और दूसरे भी बहुत से सूर्याभ विमानवासी देव-देवियो से घिरा हुआ सर्व ऋद्धि के साथ तुमुल वाद्य-ध्वनिपूर्वक सुधर्मा सभा की ओर आया। पूर्व दिशा के द्वार से सुधर्मा सभा मे प्रवेश किया, सिहासन के समीप आकर पूर्व दिशा की ओर मुख करके उस श्रेष्ठ सिंहासन पर आसीन हुआ।

204. Thereafter in the company of four thousand Saamanık gods, sıxteen thousand body-guard gods and theır famıly, other gods and goddesses of Suryabh Vıman, Suryabh god came towards Suryabh councıl-hall with all the splendour and the soft music beıng played. He entered the councıl-hall from the eastern gate, came near hıs throne and seated hımself on ıt facıng eastwards

सूर्याभदेव का सभा में आसन-ग्रहण

२०५ (क) तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स अवरुत्तरेणं उत्तरपुरत्थिमेणं दिसिभाएणं चत्तारि य सामाणियसाहस्सीओ चउसु भद्दासणसाहस्सीसु निसीयंति।

तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स पुरत्थिमिल्लेणं चत्तारि अग्गमहिस्सीओ चउसु भद्दासणेसु निसीयंति।

तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स दाहिणपुरत्थिमेणं अब्भिंतरियपरिसाए अट्ठ देवसाहस्सीओ अट्ठसु भद्दासणसाहस्सीसु निसीयंति।

तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स दाहिणेणं मज्झिमाए परिसाए दस देवसाहस्सीओ, दससु भद्दासणसाहस्सीसु निसीयंति।

तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स दाहिणपच्चत्थिमेणं बाहिरियाए परिसाए बारसदेवसाहस्सीओ बारससु भद्दासणसाहस्सीसु निसीयंति।

तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स पच्चत्थिमेणं सत्त अणियाहिवइणो सत्तहिं भद्दासणेहिं णिसीयंति।

२०५. (क) तदनन्तर उस सूर्याभदेव की पश्चिमोत्तर और उत्तर-पूर्व दिशा मे स्थापित चार हजार भद्रासनो पर अनुक्रम से चार हजार सामानिक देव बैठे।

उसके बाद सूर्याभदेव की पूर्व दिशा मे चार भद्रासनों पर चार अग्रमहिषियाँ बैठीं।

सूर्याभदेव के दक्षिण-पूर्व दिशा मे अभ्यन्तर परिषद् के आठ हजार देव आठ हजार भद्रासनों पर बैठे।

सूर्याभदेव की दक्षिण दिशा मे मध्यम परिषद् के दस हजार देव दस हजार भद्रासनो पर बैठे।

सूर्याभदेव के दक्षिण-पश्चिम दिग्भाग मे बाह्य परिषद् के बारह हजार देव बारह हजार भद्रासनो पर बैठे।

तत्पश्चात् सूर्याभदेव की पश्चिम दिशा मे सात अनीकाधिपति सात भद्रासनों पर बैठे।

SEATING OF SURYABH GOD IN COUNCIL CHAMBER

205. (a) Thereafter four thousand Saamanik gods took their seats at the earmarked places in the north-west and north-east directions

Thereafter four agra-mahishi (four chief-queens) sat on the four Bhadrasans in the east

In the south-east direction of Suryabh god eight thousand gods of the inner council took their respective seats on 8,000 Bhadrasans.

In the south, ten thousand gods of central council took their seat on 10,000 Bhadrasans

In the south-west twelve thousand gods of outer council took their seats on 12,000 Bhadrasans earmarked for them.

Thereafter seven army chiefs sat on seven Bhadrasans in the west.

(ख) तए णं तस्स सूरियाभस्स देवस्स चउद्दिसिं सोलस आयरक्खदेवसाहस्सीओ सोलसहिं भद्दासणसाहस्सीहिं णिसीयंति, तं जहा-पुरत्थिमिल्लेणं चत्तारि साहस्सीओ.।

ते णं आयरक्खा सन्नद्धबद्धवम्मियकवया, उप्पीलियसरासणपट्टिया, पिणद्धगेविज्जा आविद्धविमलवरचिंधपट्टा, गहियाउहपहरणा, तिणयाणि तिसंधियाइं वयरामयकोडीणि धणूइं पगिज्झ पडियाइयकंडकलावा णीलपाणिणो, पीतपाणिणो, रत्तपाणिणो, चावपाणिणो, चारुपाणिणो, चम्मपाणिणो, दंडपाणिणो, खग्गपाणिणो, पासपाणिणो, नील-पीय-रत्त-चाव-चारु-चम्म-दंड-खग्ग-पासधरा, आयरक्खरक्खोवगा, गुत्ता गुत्तपालिया, जुत्ता जुत्तपालिया पत्तेयं पत्तेयं समयओ विणयओ किंकरभूया चिट्ठंति।

(ख) इसके बाद सूर्याभदेव के पूर्व दिशा मे चार हजार, दक्षिण दिशा मे चार हजार, पश्चिम दिशा मे चार हजार और उत्तर दिशा मे चार हजार, इस प्रकार चारो दिशाओ मे सोलह हजार आत्म-रक्षक देव भद्रासनो पर बैठे।

वे सभी आत्म-रक्षक देव बख्तर और कवच को शरीर पर धारण किये हुए थे। बाण एवं प्रत्यंचा से सन्नद्ध धनुष को हाथों मे लिए थे। गले में ग्रैवेयक नामक आभूषण पहने, अपने-अपने श्रेष्ठ चिह्नपट्टको (बिल्ला-साइन मार्क) को धारण किये हुए थे। आयुध और पहरणो से सुसज्जित थे। तीन स्थानो पर नमे हुए और जुडे हुए वज्रमय अग्र भाग वाले धनुष, दंड और बाणों को लिए तैयार खडे थे। उनके बाण नीली, पीली, लाल प्रभा से युक्त थे। धनुष, चारु, चमडे के गोफन, दड, तलवार, पाश-जाल को लेकर एकाग्र मन से रक्षा करने मे तत्पर व स्वामी की आज्ञा का पालन करने मे सावधान, गुप्त आदेश पालन करने मे तत्पर, सेवकोचित गुणो से युक्त, अपने-अपने कर्त्तव्य का पालन करने के लिए उद्यत, विनयपूर्वक अपनी आचार-मर्यादा के अनुसार किंकर-सेवक जैसे होकर खडे थे।

ROW OF BODY-GUARD GODS

(b) Thereafter four thousand body-guard gods of Suryabh Dev in each of the four sides east, south, west and north—thus in all sixteen thousand body-guard gods of Suryabh god took their respective seats.

All the body-guard gods were armoured. They were having bow and arrows in their hands. They were having ornaments on their

neck and the distinguish identification badges. They had taken up arms and weapons They were ready having the bows with a joined Vajra front part and bent from three places along with rod and arrows Their arrows were of blue, yellow and red shine. They were standing humbly like a servant ready to follow their duties, keeping to themselves secret order, possessing all the good qualities of a servant. They were having bows, leather-covered weapons, rods, swords, the net and were ready to protect their master with a concentrated mind

सूर्याभदेव विषयक गणधर गौतम की जिज्ञासा

२०६. (प्र.) सूरियाभस्स णं भंते ! देवस्स केवइयं कालं ठिती पण्णत्ता ?

(उ.) गोयमा ! चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता।

(प्र.) सूरियाभस्स णं भंते ! देवस्स सामाणियपरिसोववण्णगाणं देवाणं केवइयं कालं ठिती पण्णत्ता ?

(उ.) गोयमा ! चत्तारि पलिओवमाइं ठिती पण्णत्ता।

महिड्ढीए महज्जुत्तीए, महब्बले, महायसे, महासोक्खे, महाणुभागे सूरियाभे देवे।

अहो णं भंते ! सूरियाभे देवे महिड्ढीए जाव महाणुभागे।

सूरियाभेणं भंते ! देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी, सा दिव्वा देवज्जुई, से दिव्वे देवाणुभागे, किण्णा लद्धे, किण्णा पत्ते, किण्णा अभिसमन्नागए ? पुव्वभवे के आसी ? किं नामए वा ? को वा गुत्तेणं ?

कयरंसि वा गामंसि वा नगरंसि वा निगमंसि वा रायहाणीए वा खेडंसि वा कब्बडंसि वा मडंबंसि वा पट्टणंसि वा दोणमुहंसि वा आगरंसि वा आसमंसि वा संबाहंसि वा सन्निवेसंसि वा ?

किं वा दच्चा, किं वा भोच्चा, किं वा किच्चा, किं वा समायरित्ता, कस्स वा तहारूवस्स समणस्स वा माहणस्स वा अंतिए एगमवि आरियं धम्मयं सुवयणं सुच्चा निसम्म जं णं सूरियाभेणं देवेणं सा दिव्वा देविड्ढी जाव देवाणुभागे लद्धे पत्ते अभिसमन्नागए ?

२०६. (सूर्याभदेव के समस्त चरित्र को सुनने के पश्चात् गणधर गौतम ने श्रमण भगवान महावीर से प्रश्न पूछा–)

(प्र.) "भदन्त ! सूर्याभदेव की भवस्थिति (देवभव में रहने की स्थिति) कितने काल की है ?"

(उ.) "गौतम ! सूर्याभदेव की भवस्थिति चार पल्योपम की है।"

(प्र.) "भगवन् ! सूर्याभदेव के सामानिक परिषद् के देवो की स्थिति कितने काल की है ?"

(उ.) "गौतम ! उनकी भी चार पल्योपम की स्थिति है।"

"यह सूर्याभदेव महाऋद्धि (वैभव), महाद्युति (तेज), महान् बल, महायश (कीर्ति), महासौख्य और महाप्रभाव वाला है।"

(भगवान के इस कथन को सुनकर गणधर गौतम ने आश्चर्यचकित होकर कहा–) "अहो भते ! वह सूर्याभदेव ऐसा महाऋद्धि यावत् महाप्रभावशाली है ?"

उन्होने पुन प्रश्न किया–"भगवन् ! सूर्याभदेव को इस प्रकार की वह दिव्य देवऋद्धि, दिव्य देवद्युति और दिव्य देवप्रभाव कैसे मिला है ? उसने कैसे प्राप्त किया है ? किस तरह से अधिगत किया है ? किस तरह उसका स्वामी बना ? वह सूर्याभदेव पूर्वभव मे कौन था ? उसका नाम और गोत्र क्या था ?

वह किस ग्राम, नगर, निगम, राजधानी, खेट, कर्बट, मडब, पत्तन, द्रोणमुख, आकर, आश्रम, संबाह, सन्निवेश का निवासी था ?

इसने ऐसा क्या दान मे दिया ? ऐसा क्या अन्त-प्रान्तादि (बचाखुचा) नीरस आहार खाया ? ऐसा क्या कार्य किया ? कैसा आचरण किया ? तथारूप श्रमण-माहण से ऐसा कौन-सा धार्मिक आर्य सुवचन सुना कि जिससे सूर्याभदेव ने वह दिव्य देवर्द्धि यावत् देवप्रभाव उपार्जित किया है, प्राप्त किया है और अधिगत किया है ?"

QUERY OF GANADHAR GAUTAM ABOUT SURYABH GOD

206. (After carefully listening to the entire conduct of Suryabh god, Ganadhar Gautam asked Bhagavan Mahavir—)

(Q.) "Reverend Sir ! What is the life-span of Suryabh Dev as a heavenly being ?"

(Ans.) (Bhagavan replied) "Gautam ! His present life-span is of four palyopam."

(Q.) (Gautam asked) "What is the life-span of the gods belonging to Saamanik council of Suryabh Dev ?"

(Ans.) (Mahavir replied) "Gautam ! Their life-span is also of four palyopam."

"Suryabh Dev is of great prosperity grand brightness, great strength, great honours, ecstatic pleasure and great influence."

(At this narration of Bhagavan Mahavir, Gautam asked out of curiosity—) "Reverend Sir ! Suryabh Dev has such a grand wealth upto influence "

He (Gautam) again asked—"Bhagavan ! How has Suryabh Dev procured such a grand divine wealth, divine brightness and divine influence ? How has he attained all this (wealth) ? How has he conquered it ? How did he become its master ? What was Suryabh god in the immediately preceeding life ? What was his name and sub-caste at that time ?

In which village, town, municipality, state, capital, small town surrounded by wall city encircled by a rampart, city having no habitation in the surrounding, big town, city near a port, mine area, hermitage, village or a mountain or a rest-house was he residing ?

What had been given by him in charity ? What tasteless remaining food had he taken ? What special work had he done ? What conduct had he observed ? What scriptural discourse had he heard firm the saints that he obtained such a grand wealth upto divine influence, possessed it and is master of it ?"

विवेचन–सूर्याभदेव के उपपात, वैभव, सम्पदा, शक्ति, प्रभाव आदि का वर्णन पूर्व मे किया गया है। उसके साथ ही भगवान महावीर के समवसरण में अपार ऐश्वर्य ऋद्धि के साथ आगमन, दिव्य सगीत, नृत्य, अभिनय का प्रदर्शन और उसके पश्चात् देवलोक मे उसके अपने परम्परागत सभी आचार-व्यवहार का अत्यन्त रोचक वर्णन पूर्व सूत्रो मे किया जा चुका है। इस सम्पूर्ण वर्णन के पीछे शास्त्रकार का जो विशेष उद्देश्य है, वह अब इस सूत्र मे गौतम स्वामी की जिज्ञासा के साथ प्रकट हुआ है कि उसे यह इतनी महान् दिव्य देवऋद्धि किस शुभ कर्म या धर्माचरण के फलस्वरूप प्राप्त हुई है ?

प्रश्न के मुख्य चार केन्द्र है–(१) क्या उत्कृष्ट दान किया ? (२) कैसा उत्कृष्ट तप किया–इन्द्रिय-सयम किया ? (३) किस पवित्र आचार-विचार, शील का पालन किया ? (४) श्रमणो आदि गुरुजनो के मुख से किस प्रकार के धर्म का श्रवण किया, जिसके प्रभाव से उसे यहाँ ऐसी दिव्य ऋद्धि प्राप्त हुई ? गौतम स्वामी के इस प्रश्न के उत्तर में भगवान महावीर अब सूर्याभदेव के पूर्व जीवन का वृत्तान्त सुनाते है।

जैन सूत्रों व अन्य ग्रन्थों मे इस प्रकार की वर्णन शैली प्रचलित रही है कि कर्मफल देखकर कर्म के विषय में जिज्ञासा होती है। कर्म अज्ञात रहता है। अत उसके विषय मे सर्वज्ञ ज्ञानी पुरुष ही समाधान दे सकते हैं।

इस सूत्र मे तीन शब्द आये हैं–**देवर्द्धि, देवद्युति** और **देवानुभव**। टीकाकार के अनुसार इनका इस प्रकार अर्थ है–

देवर्द्धि–देवरूप सम्बन्धी ऋद्धि। स्थानागसूत्र में देवऋद्धि तीन प्रकार की बताई है–(१) विमान-ऋद्धि, (२) वैक्रिय-ऋद्धि, (३) परिचारणा (काम) ऋद्धि। इसका भाव है, विमानों का विस्तार व वैभव वैक्रिय शक्ति की विलक्षण सामर्थ्य और देवियो का विशाल परिवार तथा उनके साथ मन इच्छित भोग की सामर्थ्य। ये तीन देवऋद्धि कही जाती है।

देवद्युति का अर्थ है–देवताओ के शरीर का सौन्दर्य और तेज, उस पर पहने वस्त्र, आभूषण आदि की चमक-दीप्ति देवद्युति है।

देवानुभव का अर्थ है–बल, चतुरगिनी सेना, वाहन, यान आदि, कोष-स्वर्ण-रत्न की सम्पदा, दिव्य शस्त्र आदि के कारण देवताओ का प्रभाव तेज विशिष्ट प्रकार का हो जाता है।

Elaboration—The birth, the prosperity, the wealth, the strength, the influence and suchlike of Suryabh god have been earlier mentioned. Further, in the earlier aphorisms, the arrival of Suryabh with his grotesque grandeur, the presentation of divine music and dance in the Samavasaran (the lecture hall) of Bhagavan Mahavir and the traditional conduct and customary activities in the heavenly abode have been described in a picturesque manner. The primary aim of the authors of scriptures in the entire description has now been depiction in the form of a query by Gautam Swami wherein he has asked which previous auspicious karma or good spiritual conduct has resulted in this divine splendour

This question concentrates mainly on four points—(1) What charity of the highest order was undertaken ? (2) What austerity or self-control of extreme type was observed ? (3) What pure conduct and mental outlook was followed ? (4) What scriptural discourse was listened to from saints and teachers (gurus) that fruitified in providing him (Suryabh god) such a divine splendour ? In reply to the question of Gautam Swami, Bhagavan Mahavir narrated detailed account of the earlier life of Suryabh Dev.

In Jain scriptures and other sacred book, the style of narration is such that on seeing the fruit of karma (past actions), query arises about

karma. Karma is an unknown entity. As such only an omniscient can properly describe it.

In this aphorism, three words have been used—**Dev-riddhi, Dev-dyuti** and **Devaanubhav.** According to Commentator, their meaning is as under—

Dev-riddhi—Divine splendour (prosperity)—In Sthanang Sutra Dev-riddhi is stated to be of three types—(1) Viman-riddhi, (2) Vaikriya-riddhi, (3) Paricharana-riddhi. Their central idea is the extent of Viman (aerial abode) and its wealth, the extent of Vaikriya (fluid) energy and the great family of goddesses and the power of enjoying and doing amorous and sex activities with them. These three are known as Dev-riddhi.

Dev-dyuti means the beauty of heavenly body and his aura (lightness) the shine of the dress and ornament he is wearing

Devaanubhav means strength, the four types of defence forces, the vehicles, the aeroplanes and others, the treasure—the gold and silver, gems and jewels; the divine arms and weapons, the prosperity, due to the influence of gods becomes of a very high order

(२) केशीकुमार श्रमण और प्रदेशी राजा
(2) KESHI KUMAR SHRAMAN AND KING PRADESHI

केकय-अर्ध जनपद

२०७. (क) 'गोयमाइ' समणे भगवं महावीरे भगवं गोयमं आमंतेत्ता एवं वयासी-

एवं खलु गोयमा ! तेणं कालेणं तेणं समएणं इहेव जंबुद्दीवे दीवे भारहे वासे केयइअद्धे नामं जणवए होत्था, रिद्धत्थिमियसमिद्धे सव्वोउयफलसमिद्धे रम्मे नंदणवणप्पगासे पासाईए जाव पडिरूवे।

तत्थ णं केयइअद्धे जणवए सेयविया णामं नगरी होत्था, रिद्धत्थिमियसमिद्धा जाव पडिरूवा।

तीसे णं सेयवियाए नयरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभागे एत्थ णं मिगवणे णामं उज्जाणे होत्था-रम्मे नंदणवणप्पगासे, सव्वोउयफलसमिद्धे, सुभसुरभिसीयलाए छायाए सव्वओ चेव समणुबद्धे पासादीए जाव पडिरूवे।

२०७. (क) गौतम स्वामी आदि श्रमणो को सम्बोधित कर श्रमण भगवान महावीर ने कहा-

''हे गौतम ! उस काल और उस समय मे (इस अवसर्पिणी काल के चौथे आरे रूप काल एव केशीकुमार श्रमण के विचरने के समय मे) इसी जबूद्वीप नामक द्वीप के भरत क्षेत्र मे 'केकय-अर्ध' नामक जनपद-देश था, जो भवनादिक वैभव से युक्त, **स्तिमित**-स्वचक्र-परचक्र के भय से रहित, **समृद्ध**-धन-धान्यादि वैभव से सम्पन्न था। सर्व ऋतुओं के फल-फूलो से समृद्ध, रमणीय, नन्दनवन के समान मनोरम, **प्रासादिक**-मन को प्रसन्न करने वाला यावत् अतीव मनोहर था।

उस केकय-अर्ध जनपद मे 'सेयविया' (श्वेताम्बिका) नाम की नगरी थी। यह नगरी भी ऋद्धि-सम्पन्न, स्तमित-शत्रुभय से मुक्त एव समृद्धिशाली थी।

उस 'सेयविया' नगरी के बाहर ईशानकोण मे मृगवन नामक उद्यान था। यह उद्यान रमणीय, नन्दनवन के समान सर्व ऋतुओं के फल-फूलों से समृद्ध और सुखकारी था। उसमें सुगधित पवन बहता था और सर्वत्र शीतल छाया जिसमे व्याप्त थी। मन को प्रसन्नता मिली थी और वह उद्यान असाधारण शोभा-सम्पन्न था।''

KEKAYA-ARDH COUNTRY

207. (a) Addressing Gautam Swami and other saints, Shraman Bhagavan Mahavir said—

"O Gautam ! At that time and during that period (in the fourth part of this Avasarpini period and at the time of wanderings of Keshi Kumar Shraman), there was a state called 'Kekaya-ardh' in Bharat Kshetra (country) of this Jambu Dveep. It was prosperous with palatial buildings. It was free from internal and external disturbances. It was **Samridh**—rich in wealth including agricultural wealth. It had flower and fruit of all seasons. It was worth seeing and beautiful like Nandanvan It was **Prasadik**—fit to provide pleasure to the mind upto extremely charming.

In Kekaya-ardh state there was a town called Seyaviya (Shvetambika) That town was prosperous and free from fear of enemies. It was very splendid

There was Mrigavan garden in the north-east at the outskirts of Seyaviya town. That garden was pleasant, rich with flowers and fruit of all season like Nandan*van and providing happiness Fragrant wind was blowing in it. There was cool shade in it at many places. That garden had unique grandeur

राजा प्रदेशी

(ख) तत्थ णं सेयवियाए णगरीए पएसी णामं राया होत्था, महयाहिमवंत जाव विहरइ।

अधम्मिए अधम्मिट्ठे, अधम्मक्खाई, अधम्माणुए, अधम्मपलोई, अधम्मपजणणे, अधम्मसीलसमुयायारे, अधम्मेण चेव वित्तिं कप्पेमाणे।

'हण'–छिंद–'भिंद'–पवत्तए, लोहियपाणी, पावे, रुद्दे, खुद्दे, साहस्सीए, उक्कंचण–वंचण–माया–नियडि–कूड–कवड–सायिसंजोगबहुले, निस्सीले, निव्वए, निग्गुणे, निम्मेरे, निप्पच्चक्खाणपोसहोववासे, बहूणं दुपय–चउप्पय–मिय–पसु–पक्खी–सिरिसवाण घायाए वहाए उच्छायणयाए अधम्मकेउ, समुट्ठिए, गुरूणं णो अब्भुट्ठेति, णो विणयं पउंजइ, सयस्स वि य णं जणवयस्स णो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेइ।

(ख) उस सेयविया नगरी के राजा का नाम प्रदेशी था। प्रदेशी राजा महाहिमवान्, मलय पर्वत, मन्दर एवं महेन्द्र पर्वत जैसा महान् (अन्य राजाओं में प्रभावशाली) था।

वह प्रदेशी राजा अधार्मिक (धर्म-विरोधी), अधर्मिष्ठ (अधर्म-प्रेमी), अधर्माख्यायी (अधर्म का कथन और प्रचार करने वाला), अधर्मानुगामी (अधर्म का अनुसरण करने वाला), अधर्म-प्रलोकी (सर्वत्र अधर्म को ही देखने वाला), अधर्म-प्रजनक (विशेष रूप से अधार्मिक आचार-विचारो का जनक-प्रचार करने वाला-प्रजा को अधर्माचरण की ओर प्रवृत्त करने वाला), अधर्मशील समुदाचारी-अधर्ममय स्वभाव और आचार वाला तथा अधर्म से ही आजीविका चलाने वाला था।

वह सदैव 'मारो, छेदन करो, भेदन करो' इस प्रकार की आज्ञा देता रहता था। उसके हाथ सदा खून से सने रहते थे। जैसे-साक्षात् पाप का अवतार था। प्रकृति से प्रचण्ड-क्रोधी, रौद्र-भयानक और क्षुद्र-अधम था। वह **साहसिक** (बिना विचारे प्रवृत्ति करने वाला) था। **उत्कंचन**-धूर्त्त, बदमाशो और ठगों को प्रोत्साहन देने वाला, उकसाने वाला था। **लांच**-रिश्वत लेने वाला, **वंचक**-दूसरो को ठगने वाला, धोखा देने वाला, **मायावी**, **कपटी**-बकवृत्ति वाला, कूट-कपट करने मे चतुर और अनेक प्रकार के झगडा-फिसाद रचकर दूसरो को दुःख देने वाला था। **निःशील**-शीलरहित था। **निर्व्रत**-हिंसा, झूठ आदि पापो मे लगा रहता था, क्षमा आदि गुणों से रहित निर्गुण था, परस्त्रीवर्जन आदि रूप मर्यादा से रहित था, कभी भी उसके मन मे प्रत्याख्यान, पौषध, उपवास आदि करने का विचार नहीं आता था। अनेक द्विपद-मनुष्यादि, **चतुष्पद**-मृग, पशु, पक्षी, **सरीसृप**-सर्प आदि की हत्या करने, उन्हे मारने, प्राणरहित करने, विनाश करने मे साक्षात् अधर्म की ध्वजा जैसा था, अथवा अधर्मरूपी केतुग्रह था। गुरुजनो-माता-पिता आदि को देखकर भी उनका आदर करने के लिए आसन से खडा नही होता था, उनका विनय नही करता था और प्रजाजनो से राज-कर लेकर भी उनका सम्यक् प्रकार से पालन और रक्षण नहीं करता था।

KING PRADESHI

(b) King Pradeshi was the ruler of Seyaviya town. He was very great like Maha-himvaan mountain, Malaya mountain, Mandar mountain and Mahendra mountain (He was very influential among other kings).

That king Pradeshi was irreligious, highly sinful, was preaching sin, was following sinful ways, was always preferring sin to piety, was propagating heretical creed amongst people, was of sinful nature and conduct. He was making his living by sinful activities.

He was always issuing orders to kill, pierce or cut into pieces (the guilty). His hands were always besmeared with wood, as if he is an emblem of sin (cruelty). By nature he was notorious, ferocious and of bad mentality. He was in the habit of doing actions without meditating about likely results thereof. He was encouraging the cheats and notorious people. He used to accept illegal gratification. He was deceiving others. He was of crooked nature troubling others by creating disputes. He was without any principles. He always engaged himself in violence, falsehood and suchlike sinful activities. He was devoid of pondering and suchlike qualities. He was not observing restriction of hunting one or one's wife, for sex activities. He was never inclined to observe any spiritual restrictions, fast, paushadh and suchlike. He was like the high flag of sin in killing human-being animals and birds, reptiles like snakes and others in making them lifeless or he was like a satellite of sin. He never got up from seat seeing his parents as a mark of respect. He never greeted them. He never properly attended to his subjects even after collecting the taxes from them.

विवेचन—जैन साहित्य मे साढे पच्चीस आर्य देशो और उन देशो की एक-एक राजधानी के नामो का उल्लेख है। पच्चीस देश तो पूर्ण रूप से आर्य थे किन्तु केकय देश का आधा भाग आर्य था। इसलिए यहाँ केकय-अर्ध जनपद कहा है। बौद्ध ग्रन्थों मे भी केकय देश का उल्लेख है। उस विद्वान् देश का वर्तमान स्थान उत्तर मे पेशावर (पाकिस्तान) के आसपास मानते है। कुछ इतिहासकारो का कथन है—श्रावस्ती और कपिलवस्तु के बीच मे जहाँ नेपालगज है, वहाँ श्वेताम्बिका की स्थिति होनी चाहिए। यह श्रावस्ती के उत्तर-पूर्व मे नेपाल की तराई मे स्थित है।

राजा दशरथ की एक रानी का नाम 'कैकेयी' था। वह इसी केकय देश की थी, जिससे उसका नाम 'कैकेयी' पडा हो, यह भी सम्भव है।

केकय देश की राजधानी के रूप मे 'सेयविया' नगरी का उल्लेख सूत्रो मे किया गया है। आवश्यकनिर्युक्ति मे बताया है कि श्रमण भगवान महावीर छद्मस्थ अवस्था मे विहार करते हुए उत्तर वाचाल की तरफ गये और वहाँ से 'सेयविया' गये। इस नगरी के श्रमणोपासक राजा प्रदेशी ने भगवान की महिमा की और उसके पश्चात् भगवान वहाँ से सुरभिपुर पधारे। परन्तु वर्तमान मे यह नगरी कहाँ है, एतद् विषयक कोई स्पष्ट जानकारी प्राप्त नही है।

दीघनिकाय (बौद्ध ग्रन्थ) के 'पायासि सुत्तंत' मे इस नगरी का नाम 'सेनव्या' बताया है और कौशल देश मे विहार करते हुए कुमार कश्यप इस नगरी मे आये थे। यह सूचित करके इसे कोसल देश का नगर बताया है—

"येन सेतव्या नाम कोसलानं नगरं तद् अवसरि।" —दीघनिकाय, भाग २

जैन दृष्टि से कौशल देश अयोध्या और उसके आसपास का प्रदेश माना गया है।

सेयविया का किसी-किसी ने 'श्वेतंबिका' यह सस्कृत रूपान्तर भी किया है। सूत्र मे उल्लिखित 'पएसी' इस शब्द का टीकाकार आचार्य ने 'प्रदेशी' संस्कृत भाषान्तर किया है और आवश्यकनिर्युक्ति मे 'पदेशी' शब्द का प्रयोग किया है। देववाचक क्षमाश्रमण ने इसे 'रायपसेणिय', टीकाकार मलयगिरि मे 'रायपसेणीय' तथा कुछ आचार्यों ने 'राजप्रश्नीय' या 'राजप्रसेनकीय' नाम का उल्लेख किया है।

इस राजा सम्बन्धी जो वर्णन इस 'रायपसेणियसूत्र' मे आगे किया जाने वाला है, उससे मिलता-जुलता वर्णन दीघनिकाय के 'पायासि सुत्तत' मे भी किया गया है। इसमे मुख्य प्रश्नकार राजा 'पयासी' है और उसका वश राजन्य एव सम्बन्ध कोशल वश के राजा 'पसेनदि' के साथ बताया है। 'रायपसेणिय' के उक्त सूत्र मे उक्त राजा पएसी का जो चरित्र अत्यन्त पापिष्ठ, अधार्मिक और अनीतिवान राजा के रूप मे वर्णित है। वैसा तो दीघनिकाय मे नही कहा है, किन्तु वहाँ इतना उल्लेख अवश्य है कि इस राजा के विचार पापमय थे और यह मानता था कि परलोक नही, औपपातिक सत्ता नही है और सुकृत-दुष्कृत का किसी प्रकार का फलविपाक नही है। —दीघनिकाय, भाग २

प्रदेशी राजा के चरित्र-वर्णन से स्पष्ट होता है कि यह राजा अनात्मवादी और घोर नास्तिक तथा अधार्मिक वृत्ति वाला था। नरक-स्वर्ग आदि परलोक या पुनर्जन्म की सत्ता नही मानता था।

Elaboration—In Jain literature there is a mention of twenty five and a half noble states and their capital Twenty five states were completely noble but only half of Kekaya state was ruled by noble king and inhabited by noble people So here it is mentioned half Kekaya state. In Buddhist literature also, there is a mention of Kekaya. The historians consider Peshawar (now in Pakistan) or a place nearby as its capital while some historians are of the view that Nepalganj—a town between Shravasti and Kapilvastu should be Shvetambika (Saivaya). It is situated at the bottom of Nepal in north-east of Shravasti

'Kaikeyee' was one of the queens of king Dashrath She belonged to Kekaya state and possibly because of it she was named 'Kaikeyee'.

In scriptures, 'Seyaviya' has been mentioned as capital of Kekaya state. In Avashyak Niryukti it is mentioned that Shraman Bhagavan Mahavir during pre-omniscient monkhood had gone towards North Vachaal and from there to Seyaviya. The Shramanopasak king Pradeshi of this town praised Bhagavan Mahavir and thereafter Bhagavan reached Surabhipur. But where this town is located at present is not clearly known.

In Deeghanikaya, a Buddhist scripture, this town is mentioned as 'Setavya' in 'Payaasi Suttantam' while moving in Kaushal state Kumar

Kashyap had come to this town. By this reference, it is indicated that it is a town of Kaushal state—

"Yen Setavya Naam Kosalanam Nagaram Tad Avsari."

—Deeghanikaya, Part 2

From Jain point of view, Kaushal state includes Ayodhya and its surrounding area

Some have interpreted Seyaviya as 'Shvetambika' in Sanskrit. The word 'Payasi' in the Sutra has been interpreted as 'Pradeshi' in Sanskrit by the Acharya in his Commentary and in Avashyak Niryukti the word 'Padeshi' has been used Dev-vachak Kshamashraman has mentioned it as 'Rai-paseniya', Commentator Malaygiri has mentioned it as 'Rai-paseneeya' while some other Acharyas have mentioned it as 'Raj-prashniya' or 'Raj-prasenkiya'.

In 'Payaasi Suttant' of Deeghanikaya there is a description of this king similar to the one in the present 'Rai-paseniya Sutra' Here in Deeghanikaya, the main questioner is king 'Payaasi', his clan is Rajanya and he is related to king 'Pasenadi' of Kaushal The highly despisable and sinful conduct of king Pradeshi (Payesi) that has been narrated in 'Rai-paseniya' Sutra where he has been stated to be extremely sinful, irreligious and irrational king is not so prominent in Deeghanikaya But it is mentioned that the thoughts (reflections) of the king were sinful and he believed that there is no life after death, one does not have the power to get re-birth and there is no fruit of good or bad actions

—Deeghanikaya, Part 2

The description of the conduct of king Pradeshi indicates that he did not believe in soul. He was completely non-believer in Parmatma (State of complete purification of soul) He was irreligious. He had no faith in existence of hell, heaven, life after death or re-birth.

रानी सूर्यकान्ता और युवराज सूर्यकान्त

२०८. तस्स णं पएसिस्स रन्नो सूरियकंता नामं देवी होत्था, सुकुमालपाणिपाया धारिणी वण्णओ। पएसिणा रन्ना सद्धिं अणुरत्ता अविरत्ता इट्ठे सद्दे फरिसे रसे रूवे जाव विहरइ।

तस्स णं पएसिस्स रण्णो जेट्ठे पुत्ते सूरियकंताए देवीए अत्तए सूरियकंते नामं कुमारे होत्था, सुकुमालपाणिपाए जाव पडिरूवे। से णं सूरियकंते कुमारे जुवराया वि होत्था,

पएसिस्स रन्नो रज्जं च रट्ठं च बलं च वाहणं च कोसं च कोट्ठागारं च पुरं च अंतेउरं च सयमेव पच्चुवेक्खमाणे पच्चुवेक्खमाणे विहरइ।

२०८. उस प्रदेशी राजा की रानी का नाम सूर्यकान्ता था। वह सुकुमाल हाथ-पैर आदि अंगोपांग वाली थी, इत्यादि धारिणी रानी के समान इसका वर्णन समझना चाहिए। वह रानी प्रदेशी राजा के प्रति अनुरक्त-अतीव स्नेहशील थी, उससे कभी विरक्त नहीं होती थी और इष्ट-प्रिय शब्द, सुखद स्पर्श, मनोहर रस आदि अनेक प्रकार के मनुष्य सम्बन्धी सुखों का अनुभव करती रहती थी।

प्रदेशी राजा का ज्येष्ठ पुत्र और सूर्यकान्ता रानी का आत्मज सूर्यकान्त नामक राजकुमार था। वह सुकोमल हाथ-पैर वाला था। वह सूर्यकान्तकुमार युवराज भी था। वह प्रदेशी राजा के राज्य (शासन), राष्ट्र (देश), बल (सेना), वाहन (रथ, हाथी, अश्व आदि), कोश, कोष्ठागार (अन्न-भण्डार), पुर और अन्तःपुर की स्वयं देखभाल करता था।

QUEEN SURYAKANTA AND PRINCE SURYAKANT

208. Suryakanta was the queen of king Pradeshi. She was having delicate body. Her description may be considered as that of queen Dharani. She loved king Pradeshi very much and was completely attached to him. She never detached herself from him. She was enjoying words of love, pleasant touch, fine taste and other comforts of human-beings.

The eldest son of king Pradeshi, born of queen Suryakanta was prince Suryakant. He was having beautiful hand and feet. He had been declared as the rightful successor (Yuv-raj). He was himself looking after the administration, the affairs with other countries, the army, vehicles, treasure, the provision, bins and inner affairs of the palace.

चित्त सारथी : मंत्री

२०९. तस्स णं पएसिस्स रन्नो जेट्ठे भाउयवयंसए चित्ते णामं सारही होत्था, अड्ढे जाव बहुजणस्स अपरिभूए। साम-दंड-भेय-उवप्पयाण-अत्थसत्थ-ईहा-मइविसारए, उप्पत्तियाए-वेणतियाए-कम्मयाए-पारिणामियाए चउव्विहाए बुद्धीए उववेए। पएसिस्स रण्णो बहुसु कज्जेसु य कारणेसु य कुडुंबेसु य मंतेसु य गुज्झेसु य रहस्सेसु य निच्छएसु य ववहारेसु य आपुच्छणिज्जे पडिपुच्छणिज्जे, मेढी, पमाणं, आहारे, आलंबणं, चक्खु,

मेढिभूए, पमाणभूए, आहारभूए, चक्खुभूए, सव्वट्ठाणसव्वभूमियासु लद्धपच्चए विदिण्णविचारे रज्जधुराचिंतए आवि होत्था।

२०९. प्रदेशी राजा का चित्त सारथी नामक एक मत्री था, जो उम्र मे बडा (ज्येष्ठ) भाई एव मित्र के समान प्रिय था। वह समृद्धिशाली यावत् अत्यन्त प्रभावशाली था। बुद्धि, चातुर्य आदि गुणो मे कोई उसे पराभूत नही कर सकता था। साम, दण्ड, भेद और उपप्रदान नीति, अर्थशास्त्र एव विचार-विमर्श प्रधान बुद्धि मे विशारद-कुशल था। औत्पत्तिकी, वैनयिकी, कार्मिकी तथा पारिणामिकी इन चार प्रकार की बुद्धियो से युक्त था। प्रदेशी राजा अपने बहुत से कार्यो मे, कार्य मे सफलता मिलने के उपायो में, कौटुम्बिक कार्यों में, गुप्त कार्यों में, रहस्यमय गोपनीय प्रसंगो मे, निर्णय करने मे, राज्य-सम्बन्धी व्यवहार-विधानो में उससे मत्रणा करता रहता था। वह सबके लिए मेढी (खलिहान के केन्द्र मे गाडा हुआ स्तम्भ जिसके चारों ओर घूमकर बैल धान्य कुचलते है) के समान आधारभूत था, उसका कथन प्रामाणिक माना जाता था। पृथ्वी के समान सबके लिए आधार-आश्रय था। रस्सी के समान आलम्बन था। नेत्र के समान मार्गदर्शक था। मेढीभूत, प्रमाणभूत, आधार और अवलम्बनभूत एव चक्षुभूत था। सन्धि-विग्रह आदि सभी कार्यों मे और सभी भूमिकाओ-मत्री आदि पदो मे प्रतिष्ठा-प्राप्त था। सबको विचार देने वाला था अर्थात् सभी का विश्वासपात्र था, सभी उसकी सलाह मानते थे। चक्र की धुरा के समान राज्य का सचालक था-सकल राज्य-कार्यों का प्रेक्षक था। वह राजा और प्रजा दोनो का हितचिन्तक, धर्म, समाज, राष्ट्र आदि सभी के लिए सहयोग करने वाला था।

CHITTA SAARTHI : THE MINISTER

209. Chitta Saarthi was a Minister of king Pradeshi. He was like an elder brother or a loveable friend to the king He was prosperous and influential. Nobody could surpass him in intelligence, cleverness and the good qualities He was expert in all the four skills of administration namely speaking politely, speaking harshly, creating division and fourthly enticing by offering same gifts. He was expert in economic affairs and proper analysis of the situation He was having four types of intelligence namely finding spontaneously solution to the problem, gaining intelligence by experience and wisdom produced in old age. King Pradeshi used to consult him in many activities in deciding methods to gain success, in family matters, in secret matters, in secret intricate situations, in taking decision and in matters relating to administration. He

was the Medhi (pillar) amongst all (Medhi is the thrashing post around which the bullock move and rub the harvested crops). His words were considered final. He was the base for all just as earth is for all beings. He was guide like the eye. He was respected in all matters—treaty of peace on declaration of war He was well treated by all. Everyone consulted him. He was administrator of the state like the centre of a wheel. He looked into all the affairs of the state. He always looked into the welfare, religious affairs, social matters and national matters.

विवेचन—इस वर्णन से यह प्रतीत होता है कि चित्त सारथी अतिनिपुण, राजनीतिज्ञ, राज्य-व्यवस्था करने मे प्रवीण एव अत्यन्त बुद्धिशाली था। उसे औत्पत्तिकी आदि चार प्रकार की बुद्धियो से युक्त बताया है। इन चार प्रकार की बुद्धियों का स्वरूप सचित्र नन्दीसूत्र मे विस्तार से आया है।

Elaboration—This description indicates that Chitta Saarthi was very intelligent in administration and in home affairs He has been shown as he possessing all the four types of intelligence—namely replying immediates to the queries and others The details about four types of intelligence is mentioned comprehensively in Illustrated Nandi Sutra

कुणाला जनपद, श्रावस्ती नगरी, राजा जितशत्रु

२१०. तेणं कालेणं तेणं समएणं कुणाला नामं जणवए होत्था, रिद्धत्थिमियसमिद्धे।

तत्थ णं कुणालाए जणवए सावत्थी नामं नयरी होत्था रिद्धत्थिमियसमिद्धा जाव पडिरूवा।

तीसे णं सावत्थीए णगरीए बहिया उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए कोट्ठए नामं चेइए होत्था, पोराणे जाव पासादीए।

तत्थ णं सावत्थीए नयरीए पएसिस्स रन्नो अंतेवासी जियसत्तू नामं राया होत्था, महयाहिमवंत जाव विहरइ।

२१०. उस काल और उस समय मे कुणाला नामक जनपद था। वह देश वैभव-सम्पन्न, स्व-परचक्र-(शत्रुओ) के भय से मुक्त और धन-धान्य से समृद्ध था।

कुणाला जनपद में श्रावस्ती नाम की नगरी थी, जो ऋद्ध, स्तिमित, समृद्ध यावत् अतीव मनोहर थी।

श्रावस्ती नगरी के बाहर उत्तर-पूर्व दिशा (ईशानकोण) मे कोष्ठक नाम का अत्यन्त प्राचीन यावत् मनोहर चैत्य (उद्यान) था।

उस श्रावस्ती नगरी मे प्रदेशी राजा का अन्तेवासी जैसा (अर्थात् अधीनस्थ–आज्ञापालक) जितशत्रु नामक राजा था, जो महाहिमवन्त पर्वत के समान प्रख्यात था।

KUNALA STATE, SHRAVASTI STATE, KING JITASHATRU

210. At that time during that period, there was a state called Kunala. That was prosperous, free from fear of enemies and rich in wealth and food grains.

Shravasti was a town in Kunala state. It was prosperous, free from fear of any enemy, wealthy and extremely charming.

There was Koshthak garden at the outskirts of Shravasti town in its north-east which was very ancient upto pleasant.

King Jitashatru was the ruler of Shravasti and he was under king Pradeshi. He was famous like Maha-himavant mountain

चित्त सारथी का श्रावस्ती की ओर प्रयाण

२११. (क) तए णं से पएसी राया अन्नया कयाइ महत्थं महग्घं महरिहं विउलं रायारिहं पाहुडं सज्जावेइ, सज्जावित्ता चित्तं सारहिं सद्दावेति, सद्दावित्ता एवं वयासी–

गच्छ णं चित्ता ! तुमं सावत्थिं नगरिं जियसत्तुस्स रण्णो इमं महत्थं जाव पाहुडं उवणेहि, जाइं तत्थ रायकज्जाणि य रायकिच्चाणि य रायनीतिओ य रायववहारा य ताइं जियसत्तुणा सद्धिं सयमेव पच्चुवेक्खमाणे विहराहि त्ति कट्टु विसज्जिए।

तए णं से चित्ते सारही पएसिणा रण्णा एवं वुत्ते समाणे हट्ठ जाव पडिसुणेत्ता तं महत्थं जाव पाहुडं गेण्हइ, पएसिस्स रण्णो जाव पडिणिक्खमइ, सेयवियं नगरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता तं महत्थं जाव पाहुडं ठवेइ, कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावेत्ता एवं वयासी–

खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! सच्छत्तं जाव चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह जाव पच्चप्पिणह।

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा तहेव पडिसुणित्ता खिप्पामेव सच्छत्तं जाव जुद्धसज्जं चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेन्ति, तमाणत्तियं पचप्पिणंति।

२११. (क) किसी एक समय प्रदेशी राजा ने कुछ विशिष्ट प्रयोजन उपस्थित होने पर अपने विश्वासपात्र चित्त सारथी को बुलाया और महान् पुरुषो के योग्य बहुमूल्य राजाओं को देने योग्य विशिष्ट उपहार सजाया। फिर चित्त सारथी से कहा–

"हे चित्त ! तुम श्रावस्ती नगरी जाओ और वहाँ के जितशत्रु राजा को यह (महापुरुषों के अनुरूप और राजा के योग्य मूल्यवान्) भेंट उसे दो तथा जितशत्रु राजा के साथ रहकर स्वयं वहाँ की शासन-व्यवस्था, राजा की दैनिकचर्या, राजनीति और राज-व्यवहार को गहराई से देखो, सुनो और अनुभव करो।"

तब चित्त सारथी प्रदेशी राजा की इस आज्ञा को सुनकर हर्षित हुआ यावत् दोनों हाथ जोड़े-"राजन् ! ऐसा ही होगा।" यों कहकर विनयपूर्वक आज्ञा को स्वीकार किया। आज्ञा स्वीकार करके उस उपहार को साथ लिया और प्रदेशी राजा के पास से निकलकर बाहर आया। सेयविया नगरी में जहाँ उसका अपना घर था, वहाँ आया। आकर उस उपहार को एक तरफ रख दिया और कौटुम्बिक पुरुषों (आज्ञाकारी सेवको) को बुलाकर इस प्रकार कहा-

-"देवानुप्रियो ! शीघ्र ही छत्र लगा हुआ एक शीघ्रगामी चार घटो वाला अश्व-रथ तैयार करो और मुझे वापस सूचना दो।"

उन कौटुम्बिक पुरुषों ने चित्त सारथी की आज्ञा अनुसार शीघ्र ही छत्र सहित सजाये गये अश्व-रथ को जोतकर उपस्थित कर दिया और मत्री को रथ तैयार हो जाने की सूचना दी।

DEPARTURE OF CHITTA SAARTHI TOWARDS SHRAVASTI

211. (a) Once on a special occasion, king Pradeshi called his trusted lieutenant Chitta Saarthi. He (king) prepared a very beautiful costly gift worthy of presentation to the kings and said to Chitta Saarthi—

"O Chitta ! You go to Shravasti town and offer him this gift worthy of presentation to the kings. You stay with king Jitashatru for some time and closely study the administration, the daily routine of the king the political affairs and kings relation with the subjects. You make a deep study, enquire from the people and intimately study it."

Chitta Saarthi felt happy at these orders of king Pradeshi; he folded his hands in respect for the king and said—"Respected Sir ! I shall fully comply your orders." He then accepted the orders humbly, picked up the requisite gift and came out from the side of king Pradeshi. He came to his residence in Seyaviya town. Thereafter he kept the gift aside, called his obedient servants and said—

"O loveable of gods ! Kindly prepare immediately a horse-drawn chariot fitted with canopy and four bells which has the capacity to move at fast speed. After compliance intimate me."

The family servants complying the orders of Chitta Saarthi, presented the horse-drwan chariot after decorating it with umbrella and others They then intimated compliance.

(ख) तए णं से चित्ते सारही कोडुंबियपुरिसाण अंतिए एयमट्ठं जाव हियए। ण्हाए, कयबलिकम्मे, कयकोउय-मंगलपायच्छित्ते, सन्नद्धबद्धवम्मियकवए, उप्पीलिय-सरासणपट्टिए, पिणद्धगेविज्जविमलवर चिंधपट्टे, गहियाउहपहरणे तं महत्थं जाव पाहुडं गेण्हइ, जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, चाउग्घंटं आसरहं दुरूहेति।

बहूहिं पुरिसेहि सन्नद्ध जाव गहियाउहपरहणेहिं सद्धिं संपरिवुडे सकोरंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरेज्जमाणेणं महया भडचडगर-रहपहकरविंदपरिक्खित्ते साओ गिहाओ णिग्गच्छइ, सेयवियं नगरिं मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ, सुहेहिं वासेहिं पायरासेहिं नाइविकिट्ठेहिं अंतरा वासेहिं वसमाणे वसमाणे केइयअद्धस्स जणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव कुणालाजणवए जेणेव सावत्थी नयरी तेणेव उवागच्छइ, सावत्थीए नयरीए मज्झंमज्झेणं अणुपविसइ। जेणेव जियसत्तुस्स रण्णे गिहे, जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, तुरए निगिण्हइ, रहं ठवेति, रहाओ पच्चोरुहइ।

(ख) तब कौटुम्बिक पुरुषों की सूचना पाकर चित्त सारथी प्रसन्न हुआ। उसने स्नान किया, बलिकर्म किया। कौतुक-(ललाट पर तिलक, बिन्दी आदि) मगल प्रायश्चित्त किये और फिर अच्छी तरह से शरीर पर कवच धारण किया। धनुष पर प्रत्यचा चढाई, गले मे ग्रैवेयक और अपने श्रेष्ठ सकेतपट्टक (प्रतीक चिन्ह-सिबल) को धारण किया एव आयुध तथा प्रहरणो-शस्त्रो को साथ लेकर वह महार्थक उपहार लिया और जहाँ चार घटो वाला अश्व-रथ खडा था, वहाँ आया। आकर उस अश्व-रथ पर आरूढ हुआ।

तत्पश्चात् आयुध एव प्रहरणो से सुसज्जित बहुत से पुरुषो को साथ लिए कोरट पुष्प की मालाओ से विभूषित छत्र को धारण किया। सुभटो और रथो के समूह के साथ अपने घर से प्रस्थान किया और सेयविया नगरी के बीचोंबीच से निकलकर सुखपूर्वक रात्रि-विश्राम, प्रातः कलेवा आदि व्यवस्था साथ लिए पास-पास अन्तरावास (पड़ाव) करते और जगह-जगह ठहरते-ठहरते केकय-अर्ध जनपद के बीचोंबीच से होता हुआ जहाँ कुणाला जनपद था, जहाँ श्रावस्ती नगरी थी, वहाँ आ पहुँचा। श्रावस्ती नगरी के मध्य भाग

में प्रवेश करके जहाँ जितशत्रु राजा का भवन और जहाँ राजा की बाह्य उपस्थानशाला थी, वहाँ आकर घोडों को रोका, रथ को खड़ा किया और फिर रथ से नीचे उतरा।

(b) Then, on hearing the compliance of his orders Chitta Saarthi became happy. He took his bath after exercise. He then adorned his forehead with auspicious substances. Then he wore the armour well tightly fastened the piece of cloth to the bow, put on the necklace and his auspicious symbols. He took his arms and weapons and the great grift. He then came to the horse-driven chariot having four bells and got into it.

Thereafter he in the company of many men wearing arms and weapons decorated himself with a big umbrella decorated with garlands of Korant flowers. He started from his house with many soldiers and chariots through Seyaviya town. He then with his men taking rest in between and camping on the way wherever needed, passing through Kekaya-ardh state came to Shravasti town in Kunala district He then entered Shravasti town and came to the palace of king Jitashatru and stopped his horses at the outer royal council-hall He stopped the chariot and stepped down.

(ग) तं महत्थं जाव पाहुडं गिण्हइ जेणेव अब्भिंतरिया उवट्ठाणसाला जेणेव जियसत्तू राया तेणेव उवागच्छइ, जियसत्तुं रायं करयलपरिग्गहियं जाव कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेति, तं महत्थं जाव पाहुडं उवणेइ।

तए णं से जियसत्तू राया चित्तस्स सारहिस्स तं महत्थं जाव पाहुडं पडिच्छइ। चित्तं सारहिं सक्कारेइ सम्माणेइ पडिविसज्जेइ रायमग्गमोगाढं च से आवासं दलयइ।

(ग) तदनन्तर उस बहुमूल्य भेंट को साथ लेकर आभ्यन्तर उपस्थानशाला (भीतरी बैठक) मे जहाँ जितशत्रु राजा बैठा था, वहाँ आया। दोनो हाथ जोडकर जय-विजय शब्दों से जितशत्रु राजा का अभिनन्दन किया और फिर वह बहुमूल्य उपहार भेट किया।

जितशत्रु राजा ने चित्त सारथी द्वारा भेंट किये गये इस उपहार को स्वीकार किया एव चित्त सारथी का सत्कार-सम्मान किया और विश्राम करने के लिए राजमार्ग पर स्थित आवास स्थान पर भेज दिया।

(c) Thereafter with the costly great gift, he came to the inner council-hall where king Jitashatru was seated. He folded his hand

in respect praised the king and then presented the costly gift to him.

King Jitashatru accepted the gift and gave due respect to Chitta Saarthi He then sent him to the guest house on the highway for taking rest.

विवेचन–चित्त सारथी के प्रसग मे आया है कि वह स्नान करके **'कय बलिकम्मे कय–कोउय–मंगल पायच्छित्ते'** और बलिकर्म करता कौतुक–मगल प्रायश्चित्त करता है।

यहाँ इसका अर्थ किया जाता है, स्नान के बाद आँखो मे अजन व सिर पर काली टिकी लगाना, फिर सरसों आदि उवारकर दिशाओ मे फेकना और पशु–पक्षियो व देवो आदि के लिए बलिकर्म–उनके नाम का अन्न ग्रास आदि देना। यहाँ पर विचारणीय है कि यह वर्णन प्राय. सभी जगह मिलता है, चाहे आनन्द आदि श्रावक का प्रसग हो, चित्त सारथी का हो या किसी राजा का हो या सूर्याभदेव का हो (सूत्र २००)। इससे यह पता चलता है कि उस युग मे यह एक सामान्य प्रथा थी और छोटे–बडे सभी इसको निभाते थे। प्रायश्चित्त से कौन–सी क्रिया की जाती थी तथा बलिकर्म क्या, किस प्रकार किया जाता था, क्यो किया जाता था, इसकी विधि क्या थी और यह किस उद्देश्य से किया जाता था, इन क्रियाओ का व्यक्ति के जीवन–व्यवहार पर क्या प्रभाव पडता था, पशु–पक्षी व दिग्पाल–क्षेत्रपाल आदि देवो के साथ इसका क्या सम्बन्ध है ? इस विषय पर आगम विषय के विशेषज्ञ व सास्कृतिक परम्पराओ के विवेचक विद्वानो को प्रकाश डालना चाहिए। हमारे विचार से ये क्रियाएँ मात्र कोई लीक पीटना नही थी, किन्तु इनके साथ विशेष उद्देश्य जुडा होगा। उन क्रियाओ से मनुष्य का अपना व्यवहार तो प्रभावित होता ही होगा, अन्य पशु–पक्षी जगत् व अन्य देव शक्तियो का सम्बन्ध जुडा रहा होगा। बलिकर्म जैसी प्रथा के पीछे भी क्या कोई दान व करुणा की भावना निहित थी ? प्राचीनकाल मे पक्षियो के लिए दाना, पानी, कुत्तो के लिए रोटी, गायो के लिए गौ–ग्रास तथा देवताओ के नाम पर 'बलि' ये सब क्या इसी मे गिने जा सकते है ? क्या सबके लिए सबका भाग वितरण करने की सामाजिक करुणा भावना इसमे छिपी थी ? इस विषय पर अनुसधान व चिन्तन अपेक्षित है।

गहियाउह–पहरणे–'आयुध' और 'प्रहरण' दोनो ही शब्द शस्त्रवाचक है, किन्तु एकार्थक नही है। आयुध से अर्थ किया जाता है जिन शस्त्रो से आत्म–रक्षा की जाती है तथा प्रहरण वे शस्त्र है जिनसे शत्रु पर प्रहार किया जाता है।

अश २११ (क) मे राजा के कृत्य, राजा के कार्य, राजनीति और राज–व्यवहार चारों शब्द भिन्न–भिन्न अर्थ के सूचक है। कृत्य से आचार–व्यवहार, कार्य से उसकी प्रवृत्तियाँ, राजनीति से प्रजा व राष्ट्र के सम्बन्ध मे उसकी नीति तथा व्यवहार से प्रजा के साथ उसका कैसा व्यवहार होता है। इन सब शब्दो से पता चलता है, चित्त को राजा जितशत्रु की सम्पूर्ण गुप्त और प्रकट बातो का पता लगाने के लिए निरीक्षक और गुप्तचर के रूप मे भेजा गया है।

Elaboration—In the narration about Chitta Saarthi it is mentioned that after taking bath, he performs Bali-karm and Kautuk-mangal prayashchit.

Here it means that after taking bath he puts collyrium in his eyes, black mark on his head and then sprinkles mustard seeds in various sides and gives morsel of bread to animals, birds and gods. It is worth consideration that this narration is often found at many places—whether it is a life—account of Anand, of Chitta Saarthi or of any king or of Suryabh god (Aphorism 200). This fact indicates that it was a common practice in those days and all the people—small or big (in status) followed it. In repentance (punishment) what activities were performed, what was Bali-karm and how was it done, why was it done, what was its method, with what purpose was it done, what was its effect on daily behaviour of the person doing it, what was its connection with animals, birds and gods means for security of the area ? The research scholars of Agams and the experts in traditional culture should throw light on these issues Our view is that these practices were not simply a tradition just to be followed, but there must be same special purpose for it Such activities, not only influence the daily conduct of the person but these activities had an inner connection with the animal world, the world of birds and the powers of gods and goddesses Was any thought—reflection of compassion and charity implied in the practice of Bali-karm ? In ancient times, to offer food grains to birds, bows of bread to dogs, morsel of bread to cow and bali (offering) in the name of gods—were all these practices included in Bali-karm ? Was the social outlook of distribution of everything amongst all was at its roots ? A research on this point is very much needed

Gahiyauh—Paharne—'Aayudh' and 'Praharan' both the words refer to weapons but they do not have identical meaning. Aayudh are weapons of self-defence and Praharan are weapons used for attacking the enemy

In 211 (a), king's duties (Kritya), his activities (Karya), political activity (Raajneeti) and his conduct (Vyavahar) indicate different meanings. Kritya denotes conduct, behaviour Karya denotes activities. Rajneeti denotes his policy in respect of the people and the nation Vyavahar denotes his behaviour towards his subjects (people) All these words indicate that Chitta was sent to collect information about all outwardly and secret dealings of king Jitashatru as an examiner and a secret agent (spy).

२१२. तए णं से चित्ते सारही विसज्जिते समाणे जियसत्तुस्स रन्नो अंतियाओ पडिनिक्खमइ, जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ,

चाउग्घंटं आसरहं दुरूहइ, सावत्थिं नगरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छइ। तुरए निगिण्हइ, रहं ठवेइ, रहाओ पच्चोरुहइ।

ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउयमंगलपायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिते अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे जिमियभुत्तुत्तरागए वि य णं समाणे पुव्वावरण्हकालसमयंसि गंधव्वेहि य णाडगेहि य उवनच्चिज्जमाणे उवनच्चिज्जमाणे, उवगाइज्जमाणे उवगाइज्जमाणे, उवलालिज्जमाणे उवलालिज्जमाणे इट्ठे सद्द–फरिस–रस–रूव–गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोए पच्चणुभवमाणे विहरइ।

२१२. चित्त सारथी विदाई लेकर जितशत्रु राजा के पास से निकला और जहाँ बाह्य उपस्थानशाला थी, चार घंटों वाला अश्व–रथ जहाँ खडा किया था, वहाँ आया। आकर उस चातुर्घंट अश्व–रथ पर सवार हुआ। फिर श्रावस्ती नगरी के बीचोबीच से होता हुआ राजमार्ग पर अपने ठहरने के लिए निश्चित किये गये आवास–स्थान पर आया। वहाँ घोडों को रोका, रथ को खडा किया और नीचे उतरा।

उसके पश्चात् (आवास पर ठहरकर) स्नान किया, बलिकर्म किया और कौतुक मंगल (प्रायश्चित्त) करके शुद्ध और राजसभा के योग्य मागलिक वस्त्र पहने एव अल्प भार वाले बहुमूल्य आभूषणो से शरीर को अलंकृत किया। भोजन आदि करके तीसरे प्रहर (मध्यान्होत्तर में) गधर्वों, नर्तको और नाट्यकारों के संगीत, नृत्य और नाट्याभिनयो को सुनते–देखते हुए तथा इष्ट–कमनीय शब्द, स्पर्श, रस, रूप एवं गधमूलक पाँच प्रकार के मनुष्य–सम्बन्धी कामभोग भोगते हुए रहने लगा।

212. Chitta Saarthi after seeking permission to go, passed near the king and came to the outer council-hall where he had stopped the four-belled horses-driven chariot. He got into the chariot and passing through Shravasti town, he reached the rest-house on the highway earmarked for his stay. There he stopped the horse, halted the chariot and got down.

Thereafter, he took some rest and then took bath, and performed (Bali-karm) Kautik mangal (Prayashchit). He then put on the dress suited for royal assembly. He then decorated his body with light-weight costly ornaments. After taking lunch, in the afternoon, he enjoyed music, dance and dramatic activities of the experts in

respective field. He enjoyed the activities pleasing to the five senses namely sense of hearing, sense of touch, sense of taste, sense of smell and sense of sight.

श्रावस्ती में केशीकुमार श्रमण का पदार्पण

२१३. तेणं कालेणं तेणं समएणं पासावच्चिज्जे केसी नाम कुमारसमणे।

जातिसंपण्णे कुलसंपण्णे बलसंपण्णे रूवसंपण्णे विणयसंपण्णे नाणसंपण्णे दंसणसंपन्ने चरित्तसंपण्णे लज्जासंपण्णे लाघवसंपण्णे लज्जा-लाघवसंपण्णे ओयंसी तेयंसी वच्चंसी जसंसी जियकोहे जियमाणे जियमाए जियलोहे जियणिद्दे जितिंदिए जियपरीसहे जीवियास-मरणभयविप्पमुक्के तवप्पहाणे गुणप्पहाणे करणप्पहाणे चरणप्पहाणे निग्गहप्पहाणे निच्छयप्पहाणे अज्जवप्पहाणे मद्दवप्पहाणे लाघवप्पहाणे खंतिप्पहाणे गुत्तिप्पहाणे मुत्तिप्पहाणे विज्जप्पहाणे मंतप्पहाणे बंभप्पहाणे वेयप्पहाणे नयप्पहाणे नियमप्पहाणे सच्चप्पहाणे सोयप्पहाणे नाणप्पहाणे दंसणप्पहाणे चरित्तप्पहाणे ओराले घोरे घोरगुणे घोरतवस्सी घोरबंभचेरवासी उच्छूढसरीरे संखित्तविपुलतेउलेस्से चउद्दसपुव्वी चउणाणोवगए।

पंचहिं अणगारसएहिं सद्धिं संपरिवुडे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे सुहंसुहेणं विहरमाणे जेणेव सावत्थी नयरी, जेणेव कोट्ठए चेइए, तेणेव उवागच्छइ, सावत्थी नयरीए बहिया कोट्ठए चेइए अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हइ, उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।

२१३. उस काल और उस समय मे भगवान पार्श्वनाथ की शिष्य परम्परा के केशी नामक कुमार श्रमण थे (वे ऐसे थे)-

जातिसम्पन्न-उत्तम मातृ-पक्ष वाले, **कुलसम्पन्न**-उत्तम पितृ-पक्ष वाले, आत्मबल से युक्त, **रूपवान**-अनुत्तर विमानवासी देवो से भी अधिक रूपवान (शरीर-सौन्दर्य वाले), विनयवान, सम्यग्ज्ञान, दर्शन, चारित्र के धारक, **लज्जावान्**-पाप कार्यो के प्रति भीरु, **लाघववान्**-(द्रव्य से अल्प उपधि वाले और भाव से ऋद्धि, रस और साता रूप तीन गौरवो से रहित), लज्जा-लाघव-सम्पन्न, **ओजस्वी**-मानसिक बल से सम्पन्न, **तेजस्वी**-शारीरिक कांति से देदीप्यमान, **वर्चस्वी**-सार्थक और प्रभावशाली वचन बोलने वाले, यशस्वी, क्रोध को जीतने वाले, मान को जीतने वाले, माया को जीतने वाले, लोभ को जीतने वाले, जीवित रहने की आकांक्षा एवं मृत्यु के भय से विमुक्त, **तपःप्रधान**-उत्कृष्ट तप करने वाले, **गुणप्रधान**-उत्कृष्ट संयम गुण

के धारक, **करणप्रधान**—पिंडविशुद्धि आदि करणसत्तरी में जागरूक, **चरणप्रधान**—महाव्रत आदि चरणसत्तरी में कुशल, **निग्रहप्रधान**—मन और इन्द्रियों को अनाचार-प्रवृत्ति से रोकने में सदैव सावधान, तत्त्व का निश्चय करने में प्रधान, **आर्जवप्रधान**—माया का निग्रह करने वाले समर्थ, **मार्दवप्रधान**—अभिमानरहित, **लाघवप्रधान**—क्रिया करने में कुशल-दक्ष, **क्षमाप्रधान**—क्रोध का निग्रह करने में कुशल, **गुप्तिप्रधान**—मन, वचन, काय के सयमी, **मुक्तिप्रधान**—निर्लोभता मे श्रेष्ठ, **विद्याप्रधान**—देवता-अधिष्ठित प्रज्ञप्ति आदि विद्याओ के ज्ञाता, **मंत्रप्रधान**—हरिणेगमैषी आदि देवो से अधिष्ठित अथवा साधना से प्राप्त होने वाली विद्याओ के ज्ञाता, ब्रह्मचर्य अथवा समस्त कुशल अनुष्ठानों मे प्रधान, **वेदप्रधान**—लौकिक और लोकोत्तर आगमो मे निष्णात, **नयप्रधान**—नय-निक्षेप प्रधान वचन शैली के मर्मज्ञ, **नियमप्रधान**—विचित्र अभिग्रहो को धारण करने मे कुशल, **सत्यप्रधान**, **शौचप्रधान**—द्रव्य और भाव से ममत्वरहित, ज्ञानप्रधान, दर्शनप्रधान, चारित्रप्रधान, उदार, घोर परीषहों, इन्द्रियो और कषायो आदि आन्तरिक शत्रुओ का निग्रह करने मे कठोर, **घोर व्रती**—अप्रमत्तभाव से महाव्रतों का पालन करने वाले, **घोर तपस्वी**—महातपस्वी, **घोर ब्रह्मचर्यवासी**—उत्कृष्ट अखण्ड ब्रह्मचर्य का पालन करने वाले, शरीर-संस्कार के त्यागी, विपुल तेजोलेश्या को अपने शरीर मे ही गुप्त रखने वाले, चौदह पूर्वों के ज्ञाता, चार ज्ञान—मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यायज्ञान के धारक थे।

केशीकुमार श्रमण पाँच सौ अनगारो के साथ-साथ अनुक्रम से चलते हुए, ग्रामानुग्राम विचरण करते हुए, सुखे-सुखे विहार करते हुए जहाँ श्रावस्ती नगरी थी, जहाँ कोष्ठक चैत्य था, वहाँ पधारे। श्रावस्ती नगरी के बाहर कोष्ठक चैत्य मे यथोचित अवग्रह को ग्रहण किया अर्थात् स्थान की याचना की और फिर स्थान की अवग्रह-मर्यादा कर सयम एव तप से आत्मा को भावित करते हुए विचरने लगे।

ARRIVAL OF KESHI KUMAR SHRAMAN IN SHRAVASTI

213. At that time during that period there was Keshi Kumar Shraman who belonged to the tradition of Bhagavan Parshvanath. He had these qualities—

Jati-sampanna—It means he belonged to high clan from maternal side, **Kul-sampanna**—It means he belonged to high caste from paternal side. He possessed great strength of soul, **Roop-vaan**—He was more handsome them gods of Anuttar Viman, humble and possessed right faith, right knowledge and right conduct, **Lajja-vaan**—He was afraid of doing any sinful act,

Laaghav-vaan—Physically he had minimum required material and from the point of thought—repletion, he was free from any pride for his possessions taste or comfort. He was also humble, **Ojassvi**—He had mental strength, **Tejassvi**—He had physical brightness, **Varchassvi**—He was expert in meaningful and effective talk. He commanded respect. He had conquered four passions namely anger, greed, ego and deceit. He was free from anxiety to live longer and fear of death, **Tapah-pradhan**—He was observer of austerities of highest order, **Gun-pradhan**—He possessed complete self-restraint, **Karan-pradhan**—He was discriminatory (cautions) in observing rules of taking food and seventy other rules, **Charan-pradhan**—He was expert in observing properly five great vows (Maha-vrat) and seventy supporting principles, **Nigrah-pradhan**—He was always cautions in restraining his mind and senses from evil activities. He was expert in determining truth, **Aarjav-pradhan**—He was competent in subduing deceitful thoughts, **Maardav-pradhan**—He was free from pride, **Laaghav-pradhan**—He was competent in performing his duties, **Kshama-pradhan**—He was trained in subduing anger, **Gupti-pradhan**—He had control over mind, speech and action, **Mukti-pradhan**—He was extremely free from greed, **Vidya-pradhan**—He knew many skills including gods-based Prajnapti (knowledge), **Mantra-pradhan**—He had knowledge of all subjects that is possible by certain austerities and that which is obtained by worship of god Harinegameshi, expert in observing celibacy and others, **Ved-pradhan**—He had knowledge of scriptural and non-scriptural Agam, **Naya-pradhan**—He was expert in the style of discussion namely Naya (particular aspect) and Nikshep (point of view based on particular principle), **Niyam-pradhan**—He was expert in observing various unique self-restraints, **Satya-pradhan**—**Shauch-pradhan**—From physical as well as mental point of view, he was free from any attachment He was well trained in faith, knowledge and conduct. He was broad minded. He was strict in facing turbulations (Parishah) of extreme type, in restraining sense-organs and the passions the inner enemies of self-purification, **Ghor-vrati**—He was observing the great vows of the

saint carefully, **Ghor-tapasvi**—He was great in observing austerities, penances, **Ghor-brahmcharyavasi**—He was observing complete celibacy of highest order. He had discarded all decorations of the body. He was keeping the energy derived by Tejoleshya (practice of attaining fiery energy) completely in his control within his body. He had studied all the fourteen Poorvas. He had four types of knowledge—physical, scriptural, transcendental and reading modes of the mind.

Keshi Kumar Shraman and his five hundred disciples, while passing from one village to the other in a solemn quiet manner reached Koshthak temple in Shravasti town. He after seeking permission of the area and then limiting the boundary of the area for use, stayed there observing self-restraints and austerities (for self-purification).

विवेचन—केशीकुमार श्रमण का परिचय—इतिहास लेखको का मत है कि सम्राट् प्रदेशी प्रतिबोधक केशीकुमार श्रमण भगवान पार्श्वनाथ की परम्परा के चतुर्थ पट्टधर थे। प्रथम पट्टधर प्रथम गणधर आचार्य शुभदत्त थे। उनके उत्तराधिकारी आचार्य हरिदत्त सूरि हुए, जिन्होंने वेदान्तदर्शन के प्रसिद्ध आचार्य 'लोहिय' को शास्त्रार्थ मे पराजित कर प्रतिबोध दिया और लोहिय को ५०० शिष्यों के साथ दीक्षित किया। उन नवदीक्षित श्रमणो ने सौराष्ट्र, तैलंग (आन्ध्रा) प्रभृति प्रान्तों मे विचरण कर जैन-शासन की प्रबल प्रभावना की। तृतीय पट्टधर आचार्य समुद्र सूरि थे। उन्ही के समय 'विदेशी' नामक महान् प्रभावशाली आचार्य ने उज्जयिनी नगरी के अधिपति महाराज जयसेन, महारानी अनगसुन्दरी और राजकुमार केशी को प्रतिबोध देकर दीक्षित किया।

आगम साहित्य मे केशी श्रमण का राजप्रश्नीय और उत्तराध्ययन, इन दो आगमो मे उल्लेख हुआ है। इन आगमो मे उल्लिखित केशी एक ही व्यक्ति है या पृथक्-पृथक्? अनेक विद्वानो ने राजा प्रदेशी के प्रतिबोधक केशीकुमार श्रमण को और गणधर गौतम के साथ सवाद करने वाले केशीकुमार श्रमण को एक ही माना है, परन्तु हमारी दृष्टि से दोनो पृथक्-पृथक् व्यक्ति होने चाहिए। क्योंकि सम्राट् प्रदेशी को प्रतिबोध देने वाले चतुर्दशपूर्वी और चार ज्ञान के धारक थे जबकि गणधर गौतम के साथ चर्चा करने वाले केशीकुमार श्रमण तीन ज्ञान के धारक थे। यद्यपि दोनो ही पाश्र्व परम्परा के प्रतिनिधि है और दोनों के नाम भी एक समान है। लगता है केवल नाम-साम्य होने से मनीषियो को भ्रम हो गया है और उन्होने दोनों को एक माना है। केशीकुमार श्रमण के गुणो का जो वर्णन यहाँ किया है उससे स्पष्ट होता है कि वे अत्यन्त प्रभावशाली व्यक्तित्व के धनी थे। जिनका रूप, सौन्दर्य, तेज और वचन-चातुरी देखकर प्रदेशी राजा जैसा धर्मद्वेषी भी आकर्षित हुआ और उनके पास खिंचा चला आया। इस विषय में विद्वानो में भिन्न-भिन्न धारणाएँ हैं।

सूत्र पाठ में 'करणप्पहाणे' एव 'चरणप्पहाणे' पद मे 'करण' और 'चरण' शब्द करणसत्तरी और चरणसत्तरी के बोधक हैं। इन दोनों का तात्पर्य है–करण के सत्तर भेद और चरण के सत्तर भेद के ज्ञाता और पालन करने वाले।

प्रयोजन होने पर साधु जिन नियमो का सेवन करते हैं उन्हें 'करण' अथवा 'करण–गुण' कहते है और जिन नियमो का निरन्तर आचरण किया जाता है, वे 'चरण' अथवा 'चरण–गुण' कहलाते है।

करण के सत्तर भेद इस प्रकार है–

''पिंडविसोही समिइ, भावण पडिमा य इन्दियनिरोहो।
पडिलेहण गुत्तीओ, अभिग्गहा चेव करणं तु॥'' –ओघनिर्युक्ति, गा. ३

(१–४) आहार, वस्त्र, पात्र और शय्या की शुद्ध गवेषणा, (५–९) पाँच समिति, (१०–२१) अनित्य आदि बारह भावनाएँ, (२२–३३) बारह प्रतिमाएँ, (३४–३८) पाँच इन्द्रियो का निग्रह, (३९–६३) पच्चीस प्रकार की प्रतिलेखना, (६४–६६) तीन गुप्ति, एव (६७–७०) चार प्रकार के अभिग्रह पिंड, वस्त्र, पात्र और शय्या से सम्बन्धित, ये करण–गुण के सत्तर भेद है। इसे करणसत्तरी कहते है।

चरण के सत्तर भेद इस प्रकार हैं–

''वय समणधम्म संजम, वेयावच्चं च बम्भगुत्तीओ।
णाणाइ तियं तवं, कोहनिग्गहाई चरणमेयं॥'' –ओघनिर्युक्ति, गा २

(१–५) पाँच महाव्रत, (६–१५) क्षमा आदि दस श्रमणधर्म, (१६–३२) सत्रह प्रकार का सयम, (३३–४२) आचार्य आदि का दस प्रकार का वैयावृत्य, (४३–५१) नौ ब्रह्मचर्य–गुप्तियाँ, (५२–५४) ज्ञान, दर्शन, चारित्र की आराधना, (५५–६६) बारह प्रकार का तप, (६७–७०) क्रोधादि चार कषायो का निग्रह।

Elaboration—Introduction of Keshi Kumar Shraman—According to historians, Keshi Kumar Shraman who gave scriptural knowledge to king Pradeshi was the fourth Acharya in the order of Bhagavan Parshvanath. The first in the order was Acharya Shubh Datt, the first ganadhar. He was succeeded by Haridatt Suri who defeated famous Acharya Lohit, master of Vedant philosophy in scriptural dialogue and then brought him and his five hundred disciples to Parshvanath order. Those saints moved in Saurashtra, Andhra Pradesh (Tailang) and spread Jain thought effectively. The third in the order was Acharya Samudra Suri. In his period, a greet influential preceptor 'Videshi' had given scriptural discourse to king Jaysen, queen Anang Sundari and prince Keshi and converted them into mendicants.

In Agam literature Keshi Shraman is mentioned in two Agams namely Raj-prashneeya and Uttaradhyayan. Is Keshi mentioned in them

the same person or two different persons ? Many scholars are of the view that the same person Keshi is mentioned in the said two Agam, but our view is that they should be two different persons. It is because Keshi who gave scriptural knowledge to king Pradeshi had the knowledge of fourteen Poorvas and he had four types of Jnan while Keshi who had scriptural dialogue with Gautam Swami had three types of Jnan Both of them belonged to the tradition (order) of Parshvanath and name of both of them is the same It appears that the identical name of the two misled the scholars that they were the same person. The description of qualities of Keshi Kumar in this Sutra clearly indicates that he had extremely influential personality. After seeing his shining face (aura) his grandeur and his effective words even a person like king Pradeshi who was totally irreligious felt attracted The scholars have different views on this point

The words 'karan' in **'Karanappahaane'** and "charan' in **'Charanappahaane'** in the aphorism mean seventy modes of karan and charan respectively. So these words in the aphorism stand for practitioners of seventy modes of activity (karan) and seventy modes of ascetic conduct (charan)

The principles which an ascetic follows when it is so required is called 'karan' or 'karan gun' and the principles that an ascetic follows throughout his life are called 'charan' or 'charan gun'

Seventy modes of karan are as under—

(1-4) Seeking food, clothing, pot and plan to stay according to his discriminatory principles, (5-9) five types of carefulness namely in walking, speech, seeking, necessities, in accepting them, and in discarding the things not in accordance with their accepted principles, (10-21) twelve thought-reflections namely ephemeral nature of the world and others, (22-33) twelve speed restraints (pratima—pratimas) of an ascetic, (34-38) restraints of five senses, (39-63) twenty five types of close examination (pratilekhana), (64-66) the control of mind, speech and action, (67-70) special self-restraints about acceptance of food, clothing, pots and place of stay or hatching **—Oagh Niryukti, Aphorism 3**

Seventy modes of charan are as under—

(1-5) Five great vows of an ascetic, (6-15) ten religious modes of conduct of an ascetic, (16-32) seventeen types of ascetic principles (restraints), (33-42) ten types of service of the Acharya (Guru), (43-51) nine types of observation for keeping strict Brahmacharya, (52-54) going

deeper and deeper in gaining knowledge, faith and ascetic conduct, (55-66) twelve types of austerities, (67-70) control of four passions namely anger and others. —Oagh Niryukti, Aphorism 2

जनसमूह का दर्शनार्थ जाना

२१४. (क) तए णं सावत्थीए नयरीए सिंघाडग–तिय–चउक्क–चच्चर–चउमुह–महापहपहेसु महया जणसद्दे इ वा जणबूहे इ वा जणबोले इ वा जणकलकले इ वा जणउम्मी इ वा जणउक्कलिया इ वा जणसन्निवाए इ वा जाव (बहुजणो अण्णमण्णं एवं आइक्खइ एवं भासेइ एवं पण्णवेइ एवं परूवेइ) एवं खलु देवाणुप्पिया ! पासावच्चिज्जे केसी नाम कुमारसमणे जाइसंपन्ने जाव गामाणुगामं दूइज्जमाणे इह मागए, इह संपत्ते, इह समोसढे, इहेव सावत्थीए नयरीए बहिया कोट्ठए चेइए अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।

२१४. (क) उस समय (केशीकुमार श्रमण का पदार्पण होने के पश्चात्) श्रावस्ती नगरी के शृगाटको, त्रिको, चतुष्को, चत्वरों, चतुर्मुखो, राजमार्गो और छोटे मार्गों (गलियों) में लोग आपस मे चर्चा करने लगे, लोगो के झुण्ड इकट्ठे होने लगे, लोगों के बोलने की घोंघाट सुनाई पडने लगी, जन–कोलाहल होने लगा, भीड के कारण रास्ते चलते लोग आपस में टकराने लगे, एक के बाद एक लोगो के टोले आते दिखाई देने लगे (इधर–उधर से आकर लोग एक स्थान पर इकट्ठे होने लगे, बहुत से लोग परस्पर एक–दूसरे से कहने लगे)– "हे देवानुप्रियो ! जाति आदि से सम्पन्न–पार्श्वापत्य केशीकुमार श्रमण विहार करते हुए, विचरते हुए आज यहाँ आये है। नगर मे पधार गये है और इसी श्रावस्ती नगरी के बाहर कोष्ठक चैत्य मे यथारूप–(साधु–मर्यादा के अनुरूप) अवग्रह–आज्ञा लेकर सयम एवं तप से आत्मा को भावित करते हुए विचर रहे है।"

ARRIVAL OF PUBLIC FOR SEEING THE SAINT

214. (a) At that time (when Keshi Kumar Shraman had arrived), the people started collecting and discussing among themselves, at triangular paths, places where three, four or more roads joint, buildings having four gates, highways and streets Their talk was creating an echo. There was a noise at their meeting at such places. Due to their gathering, the passers-by were striking against others. People started coming from hither and thither; and saying—"O loveable of gods ! Keshi Kumar Shraman who belongs to the order of Parshvanath and who has a grand family of disciples

during the course of his wanderings has come here today. He has entered the town and is staying in Chaitya at the outskirts of Shravasti after seeking due permission following self-restraints of his conduct and the austerities."

(ख) तं महप्फलं खलु भो देवाणुप्पिया ! तहारूवाणं समणाणं भगवंताणं णामगोयस्स वि सवणयाए, किमंगपुण अभिगमण-वंदण-णमंसण-पडिपुच्छण-पज्जुवासणयाए ?

एगस्स वि आयरियस्स धम्मियस्स सुवयणस्स सवणयाए, किमंग ! विउलस्स अट्ठस्स गहणयाए ?

तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! समणं भगवं वंदामो णमंसामो सक्कारेमो सम्माणेमो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं विणएणं पज्जुवासामो (एयं णं इहभवे पेच्चभवे य हियाए सुहाए खमाए निस्सेयसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ)।

त्ति कट्टु परिसा निग्गया, केसी नामं कुमारसमणं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेति, वंदइ णमंसइ, वंदित्ता णमंसित्ता णच्चासन्ने णाइदूरे सुस्सूसमाणे नमंसमाणे पंजलियउडे अभिमुहे विणएणं परिसा पज्जुवासइ।

(ख) "हे देवानुप्रियो ! जब तथारूप श्रमण भगवन्तो का नाम-गोत्र सुनने से ही महाफल प्राप्त होता है, तब उनके समीप जाने, उनकी वदना करने, उनसे प्रश्न पूछने और उनकी पर्युपासना-सेवा करने से प्राप्त होने वाले अनुपम फल के विषय मे तो कहना ही क्या है ?

आर्य धर्म का एक सुवचन सुनने से जब महाफल प्राप्त होता है, तब विपुल अर्थों को ग्रहण करने से प्राप्त होने वाले फल के विषय मे तो कहना ही क्या है ?

इसलिए हे देवानुप्रियो ! हम सब उनके पास चले, उनको वंदन-नमस्कार करे, उनका सत्कार करे, भक्तिपूर्वक सम्मान करे एव कल्याणरूप (कल्याणकारी), मगलरूप (उनका दर्शन स्वय ही मगल है), देवरूप (वे देव स्वरूप हैं), चैत्यरूप (स्वय मूर्तिमंत ज्ञान) है। उनकी विनयपूर्वक पर्युपासना करे।"

(इनका वंदन-नमस्कार करना हमे इस भव तथा परभव मे हितकारी है, सुखप्रद है, क्षेम-कुशल एवं परम निःश्रेयस्-कल्याण का साधनरूप होगा। इसी प्रकार जन्म-जन्मान्तर में भी सुख देने का निमित्त बनेगा।)

ऐसा विचार कर परिषदा (जन-समुदाय) नगर से निकली और केशीकुमार श्रमण के पास पहुँचकर तीन बार प्रदक्षिणा की, प्रदक्षिणा करके वंदन-नमस्कार किया।

वंदन-नमस्कार करके न तो अधिक दूर और न अधिक निकट किन्तु उनके सम्मुख यथायोग्य स्थान पर बैठकर शुश्रूषा और नमस्कार करते हुए सविनय अंजलि करके पर्युपासना-सेवा करने लगी।

(b) "O the blessed ! When simply hearing the names and status of Shramans results in great benefit, going to them, bowing to them, seeking spiritual clarifications from them and serving them shall certainly result in extreme advantage that cannot be estimated.

A word from a true saint (Arya) is of great benefit, therefore, learning many facts from them shall be of immense advantage.

So, O the blessed ! Let us all go to them (the Shramans), bow to them, respect them, honour them with full faith. Their sight is auspicious beneficial, godly and knowledge personifier. Let us serve them humbly."

(Bowing to them and greeting them in respect is for our welfare in the present life and the life thereafter. It is pleasure-giving, it is for our welfare and shall be for our welfare in future Similarly it shall be helping in our welfare for many many lives.)

With suchlike thoughts, the people came out in large numbers, they greeted Keshi Kumar Shraman thrice, bowed to him moving their hands in a circle. Thereafter, they sat in front of him (neither very far nor very near) and started exhibiting their devotion.

विवेचन—केशीकुमार श्रमण के श्रावस्ती मे पधारने पर अपार जनसमूह का उनके दर्शनार्थ उमडना और उनकी परस्पर चर्चा व हृदय की भावना का चित्रण यह प्रकट करता है कि उनके प्रति श्रावस्ती निवासियो के मन मे कितनी अपार श्रद्धा, भक्ति और उच्च कोटि की धार्मिक आस्था थी। लोग उनका नाम सुनना ही महान् भाग्योदय का फल मानते है, उनके दर्शन करना और उनकी वाणी सुनना तो लोक-परलोक के कल्याण की निशानी मानते है। इन शब्दो से पता चलता है श्रावस्ती निर्ग्रन्थ धर्म का विशेष केन्द्र रहा है और वहाँ के निवासी श्रमणो के प्रति अतीव श्रद्धा-भक्ति रखते थे। उनका आगमन सुनते ही समुद्र की लहरो की तरह उमडते थे। इस वर्णन से यह भी पता चलता है कि सभी वर्णों के लोग-क्षत्रिय, सेनापति, श्रेष्ठी, सार्थवाह, ग्रामीणजन व सेवा-कार्य करने वाले लोग सब मिल-जुलकर, सज-धजकर श्रमणो के दर्शन करने, उनका प्रवचन सुनने उत्साहपूर्वक जाते थे।

Elaboration—On arrival of Keshi Kumar Shraman in Shravasti, the instantaneous arrival of big gathering for his darshan, the mutual talk of the people about him indicates that the residents of Shravasti had unlimited faith, devotion and spiritual regard for him. The people

consider the listening of his very name as very much fortunate event. To have his darshan and to listen his discourse was considered an auspicious omen of their welfare in the present life-span and the life thereafter. This description shows that Shravasti was a prominent centre of Nirgranth faith and the residents of it had great faith and devotion for Shramans. At just the message of their arrival in the town, they used to came forward like waves of an ocean. This account further shows that the people of all the clans and all the trades namely Kshatriya, the army chief, the elite, the rich, the rural folk and the employees—all in a gathering and in elegant dress used to come humbly to Shramans to have their darshan and to listen to their spiritual discourse.

चित्त सारथी की जिज्ञासा

२१५. तए णं तस्स सारहिस्स तं महाजणसद्दं च जणकलकलं च सुणेत्ता य पासेत्ता य इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।

'किं णं अज्ज सावत्थीए णयरीए[1] इंदमहे इ वा,[2] खंदमहे इ वा,[3] रुद्दमहे इ वा,[4] मउंदमहे इ वा,[5] सिवमहे इ वा,[6] वेसमणमहे इ वा,[7] नागमहे इ वा,[8] जक्खमहे इ वा,[9] भूयमहे इ वा,[10] थूममहे इ वा,[11] चेइयमहे इ वा,[12] रुक्खमहे इ वा,[13] गिरिमहे इ वा,[14] दरिमहे इ वा,[15] अगडमहे इ वा,[16] नईमहे इ वा,[17] सरमहे इ वा,[18] सागरमहे इ वा, जं णं इमे बहवे उग्गा उग्गपुत्ता भोगा राइन्ना इक्खागा णाया कोरव्वा जाव इब्भा इब्भपुत्ता अण्णे य बहवे राया–ईसर–तलवर–माडंबिय–कोडुंबिय–इब्भ–सेट्ठि–सेणावइ–सत्थवाहप्पभितियो ण्हाया कयबलिकम्मा कयकोउयमंगलपायच्छित्ता सिरसाकंठे मालकडा आविद्धमणिसुवण्णा कप्पियहार–अद्धहार–तिसरपालंबपलंबमाण–कडिसुत्तयकयसोहाहरणा चंदणोलित्तगायसरीरा पुरिसवग्गुरापरिखित्ता महया उक्किट्ठसीहणाय–बोल–कलकलरवेणं एगदिसाए जहा उववाइए जाव अप्पेगतिया हयगया गयगया जाव (रहगया सिबियागया संदमाणिया अप्पेगतिया) पायचारविहरेणं महया महया वंदावंदएहिं निग्गच्छंति।

एवं संपेहइ, संपेहित्ता कंचुइज्जपुरिसं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–

किं णं देवाणुप्पिया ! अज्ज सावत्थीए नगरीए इंदमहे इ वा जाव सागरमहे इ वा जेणं इमे बहवे उग्गा भोगा. णिग्गच्छंति ?

२१५. तब लोगो की बातचीत, जनकोलाहल सुनकर तथा जनसमूह को उमड़ता देखकर चित्त सारथी को इस प्रकार का संकल्प-विचार उत्पन्न हुआ-

'कि, क्या आज श्रावस्ती नगरी मे इन्द्रमह अथवा स्कन्दमह का उत्सव है ? या रुद्रमह, मुकुन्दमह, शिवमह, वैश्रमणमह, नागमह, यक्षमह, भूतमह, स्तूपमह, चैत्यमह, वृक्षमह, गिरिमह, दरि (गुफा) मह, कूपमह, नदीमह, सर (तालाब) मह अथवा सागरमह है ? कि जिससे ये बहुत से उग्रवंशीय, उग्रवंशीयकुमार, भोगवंशीय, राजन्यवशीय, इक्ष्वाकुवशीय, ज्ञातवंशीय, कौरववंशीय यावत् इब्भ, इब्भपुत्र तथा दूसरे भी अनेक राजा (मांडलिक राजा), ईश्वर (युवराज), तलवर (जागीरदार), माडबिक, कौटुम्बिक, इभ्य, श्रेष्ठी (महाधनी-हाथी प्रमाण धन से सम्पन्न सेठ), सेनापति, सार्थवाह आदि सभी स्नानकर, बलिकर्मकर, कौतुक-मंगल-प्रायश्चित्तकर, मस्तक और गले मे मालाएँ धारणकर, मणिजटित स्वर्ण के आभूषणों से शरीर को विभूषित कर, गले मे हार (अठारह लड का हार), अर्धहार, तिलडी, झूमका और कमर में लटकते हुए कटिसूत्र (करधनी) पहनकर, शरीर पर चदन का लेपकर, आनदातिरेक से सिहनाद और कलकल ध्वनि से श्रावस्ती नगरी को गुँजाते हुए एक साथ एक ही दिशा में मुख करके जा रहे है। (औपपातिकसूत्र के अनुसार यहाँ सब जानना चाहिए।) उनमे से कितने ही घोडो पर सवार होकर, कई हाथी पर सवार होकर, कोई रथो मे बैठकर या पालखी मे बैठकर, स्यदमानिका (लम्बी पालखी) मे बैठकर और कितने ही अपने-अपने समुदाय बनाकर पैदल ही जा रहे है।'

यह देखकर विचार करके चित्त सारथी ने कचुकी पुरुष (द्वारपाल) को बुलाकर पूछा-

"देवानुप्रिय ! आज क्या श्रावस्ती नगरी मे इन्द्र-महोत्सव है यावत् सागर-यात्रा है कि जिससे ये बहुत से उग्रवशीय, भोगवशीय आदि सभी लोग अपने-अपने घरो से निकलकर एक ही दिशा में जा रहे हैं ?"

QUESTION REVISED BY CHITTA SAARTHI

215. After hearing the talk of the town, and noise of the gathering and seeing the public going in a great procession, Chitta Saarthi thought as under—

'Is there a festival in honour of Indra or a festival in honour of Kartik (eldest son of Siva) today in Shravasti ? Is there a festival in honour of Rudra (Siva), a festival of Mukund, of Shankara, of Vaishraman (god of wealth), of Naag, of Yaksh, of Bhoot—the demon-god, of a memorial post, a ceremony concerning a Chaitya, festival of trees, festival of a mountain, of a cave, of a well, of a

stream, of a tank or festival of a sea ? There must be some such event because many kings belonging to various clans namely Ugra, Bhog, Rajanya, Ikshvaku, Jnat, Kaurav upto Ibha and their princes, many other kings, princes, noblemen, maandavik, heads of the families, the rich, the army chiefs, the traders and suchlike after taking bath, bearing auspicious symbols, wearing necklace, garlands and gemmed gold ornaments, wearing garland of eighteen strings, the semi-garland, necklace of three strings, ear-rings and strings at the mousle and having applied sandal paste on their body are going together in one direction. They are making great rejoicing, are in a happy mood echoing Shravasti town with their ecstatic movement. (The entire description may be considered to be as in Aupapatik Sutra.) Many of them are riding horses, elephants, chariots, palanquins, long palanquin and many are on foot in groups.'

After seeing this and brooding on it, Chitta Saarthi called the gate-keeper and asked—

"O the blessed ! Is there a festivity of Indra upto of sea voyage in Shravasti today that many people of Ugra clan, Bhog clan and others are coming out from their houses and going in one direction ?"

विवेचन–जनता का आवागमन, कोलाहल और एक ही दिशा मे हजारो लोगो का जाना देखकर चित्त सारथी जिन उत्सवो की कल्पना करता है, वे उत्सव उस युग की लोक सस्कृति की झलक प्रस्तुत करते है।

लोगो के चेहरों पर चमकता उल्लास, उत्सुकता और सुन्दर गहने, कपडे पहनकर तरह-तरह के वाहनो मे बैठकर नगर के बाहर जाने की उतावल देखकर चित्त सोचता है–'आज कौन-सा उत्सव है ?' सूत्र मे १८ प्रकार के उत्सवो के नाम गिनाये है। इसके अतिरिक्त भी अनेक लोक-उत्सव होते होगे। उत्सव के दिन लोगो मे कितना उत्साह और उल्लास होता था और वे अपना तथा परिवार का सामूहिक मनोरजन करने के लिए कितना समय निकाल लेते थे। यह आज के भाग-दौड के युग मे एक आश्चर्यजनक किन्तु अनुकरणीय जैसी बात लगती है।

निशीथसूत्र मे वर्णन है, ये महामह (उत्सव) मुख्य रूप में आषाढ, आसोज, कार्तिक और चैत्र मास की पूर्णिमा के दिन मनाये जाते थे। कुछ लोक-उत्सव अन्य तिथियो मे भी मनाये जाते थे। इन उत्सवो मे लोग आपस मे मिलकर मनपसन्द खाते-पीते, नाचते-गाते, आमोद-प्रमोद मनाते, अपने मित्रों, स्वजनो व सम्बन्धियों को इन उत्सवो पर बुलाते थे और दूर-दूर के लोग इन उत्सवो मे सम्मिलित होते थे।

उत्सवो की सूची मे मुख्य उत्सव इस प्रकार हैं-

इन्द्रमह—इन्द्रमह सभी उत्सवो में मुख्य माना जाता था। इस दिन इन्द्र की पूजा की जाती थी। इन्द्रध्वजा की स्थापना की जाती थी।

स्कन्दमह—इन्द्र के बाद दूसरे स्थान पर स्कन्दमह था। वैदिक पुराणो के अनुसार 'स्कन्द' या 'कार्तिकेय' महादेव जी का पुत्र है और देवताओ ने तारक असुर के साथ युद्ध मे कार्तिकेय को अपना सेनापति नियुक्त किया था। कार्तिकेय का वाहन मयूर है, यह उत्सव आसोज की पूनम को मनाया जाता था।

रुद्रमह—रुद्र ग्यारह थे। ये इन्द्र के साथी, शिव और उसके पुत्रो के अनुचर तथा मत्र के रक्षक थे।

मुकुन्दमह—महाभारत के अनुसार लागूल-हलधर, बलदेव का नाम है-मुकुन्द। इसी प्रकार शिव, कुबेर, नाग, यक्ष, भूत आदि की पूजा के अमुक-अमुक उत्सव होते थे। वृक्ष, गिरि, धूप, नदी आदि के उत्सवो पर वृक्षो आदि की पूजा की जाती थी। वृक्ष, कूप, सरोवर आदि प्राकृतिक देव है, जो मानव सृष्टि मे धन-धान्य की समृद्धि और पर्यावरण की शुद्धि के लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। इन प्राकृतिक साधनो की रक्षा, वृद्धि और देखभाल करने से राष्ट्र की समृद्धि और मानव जाति के लिए अन्न, जल, शुद्ध वायु की उपलब्धि बनी रहती है।

इस वर्णन से तथा निर्युक्ति भाष्य आदि के वर्णन से पता चलता है कि इन उत्सवो मे छोटे-बडे, धनी-निर्धन, राजा और प्रजा सभी लोग बिना भेदभाव के, अपनी-अपनी जाति, वर्ण, बिरादरी के साथ सम्मिलित होकर सामूहिक आनन्द मनाते थे। इस प्रकार की सार्वजनिक भीड को देखकर ही चित्त सारथी सोचता है-'आज कौन-सा उत्सव है, जो इतनी भीड एक साथ नगर के बाहर एक ही दिशा मे जा रही है?'

Elaboration—After seeing the arrival of the people, their noise and their movement in thousands in one direction, the festivals which Chitta Saarthi imagine presents a glimpse of cultural festivals of that period.

Chitta finds glamour and eagerness on faces of the people. He finds them dressed in beautiful clothes and wearing ornaments He finds them sitting in vehicles of different types and eager to move out So he thinks—'What festivity possibly could be on that day.' In the aphorism eighteen types of festivities have been mentioned In addition, there must have been many other common festivals. On the day of festivity, how much was the eagerness and happiness in the people and how much time they were able to spare for collective entertainment of themselves along with members of their families is a matter of surprise in the present age of busy routine. But it appears worthy to be adopted.

It is mentioned in Nisheeth Sutra that the festivals were primarily celebrated in the months of Ashadh, Aasoj, Kartik and Chaitra on full-

moon day. Some common festivals were celebrated on days other than full-moon day also On these days of festivity, the people used to eat together, dance together, sing together and enjoy together. People used to invite their friends, family members and relatives on these occasions. People from far and near participated in these festivities

In the list of festivals, the main festivals are as under—

Indramah—The festivity in honour of Indra This festival was considered the top most among all the festivities. On this day god Indra was worshipped. Indra flag was also installed.

The next festival in the list is **Skandmah.** According to Vedic Puranas 'Skand' or 'Kartikeya' is the son of Mahadev (Siva). The gods during their fight against Tarak the demon, had appointed him as their chief. Kartikeya rides a peacock This festival is celebrated on full-moon day of Aasoj

Rudramah—There are eleven rudras They are companions of Indra, servants of Siva and his sons Further they serve as body-guard of the Mantra

Mukundmah—According to Mahabharat name of Langool—Haldhar, Baldev is Mukund. Similarly festivities were held in honour of Siva, Kuber, Naag, Yaksh, Bhoot and others Trees were worshipped in festivities held in honour of trees, mountains, sunshine, streams etc. Tree, well, tank and suchlike are gods of nature. They are very important for abundance in wealth and agriculture production and for purification of environment By protecting, increasing and properly taking care of them the country becomes prosperous and food-stuff, water and clean air is received for mankind

From this account and detailed description in Niryukti Bhashya, it is evident that big and small, rich and poor, king and servants all the people without any distinction of caste, creed or colour participated in such festivities and enjoyed them collectively Thus after seeing public gathering and the rush in the town, Chitta Saarthi thinks—'What festivity is there that such a big rush of people is going out of the town in one direction ?'

२१६. तए णं से कंचुईपुरिसे केसिस्स कुमारसमणस्स आगमण-गहियविणिच्छए चित्तं सारहिं करयलपरिग्गहियं जाव वद्धावेत्ता एवं वयासी—

णो खलु देवाणुप्पिया ! अज्ज सावत्थीए णयरीए इंदमहे इ वा जाव सागरमहे इ वा जे णं इमे बहवे जाव विंदाविंदएहिं निग्गच्छंति, एवं खलु भो देवाणुप्पिया ! पासावच्चिज्जे केसी नामं कुमारसमणे जाइसंपन्ने जाव दूइज्जमाणे इहमागए जाव विहरइ।

तेणं अज्ज सावत्थीए नयरीए बहवे उग्गा जाव इब्भा इब्भपुत्ता अप्पेगतिया वंदणवत्तियाए जाव महया वंदावंदएहि णिग्गच्छंति।

२१६. तब उस कंचुकी पुरुष ने, जिसे केशीकुमार श्रमण के पदार्पण होने के निश्चित समाचार ज्ञात थे, दोनों हाथ जोड जय-विजय शब्दो से वधाकर चित्त सारथी से निवेदन किया-

"देवानुप्रिय ! आज श्रावस्ती नगरी मे इन्द्र-महोत्सव यावत् समुद्र-यात्रा आदि कुछ नही है कि जिससे ये बहुत से उग्रवंशीय आदि लोग अपने-अपने समुदाय बनाकर निकल रहे हैं। परन्तु हे देवानुप्रिय ! बात यह है कि आज ज्ञान आदि से सम्पन्न भगवान पार्श्वनाथ के शिष्य केशीकुमार श्रमण एक ग्राम से दूसरे ग्राम विहार करते हुए यहाँ पधारे है। वे कोष्ठक चैत्य मे विराजमान हैं।

इसी कारण आज श्रावस्ती नगरी के ये अनेक उग्रवंशीय यावत् इब्भ, इब्भपुत्र आदि उनकी वदना करने के विचार से बडे-बडे समुदायो में अपने घरो से निकल रहे है।"

216. Then that attendant who had definite information about the arrival of Keshi Kumar Shraman, folded his hands and honouring him told Chitta Saarthi—

"O the loveable of gods ! There is no such festivity as the one in honour of Indra or upto Sea-voyage in celebration whereof many people of Ugra clan and others are coming out collectively. But respected Sir ! The fact is that Keshi Kumar Shraman—a disciple of Bhagavan Parshvanath, who possesses transmigratory knowledge has arrived here after wandering from one village to another. He is staying in Koshthak garden.

So the people in large groups are coming out of their houses. They are belonging to many clans namely Vjra upto Ibh, Ibhputra in Shravasti. They are coming out in order to bow to him."

चित्त सारथी का दर्शनार्थ गमन

२१७. तए णं से चित्ते सारही कंचुइपुरिसस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हियए कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी-खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह जाव सच्छत्तं उवट्ठवेंति।

२१७. कंचुकी पुरुष से यह बात सुन-समझकर चित्त सारथी ने हृष्ट-तुष्ट यावत् हर्षविभोर हृदय होते हुए कौटुम्बिक पुरुषो को बुलाया। बुलाकर उनसे कहा– "हे देवानुप्रियो ! शीघ्र ही चार घटो वाले अश्व-रथ को जोतकर उपस्थित करो।" कौटुम्बिक पुरुष शीघ्र ही छत्र सहित अश्व-रथ को जोतकर ले आये।

DEPARTURE OF CHITTA SAARTHI FOR DARSHAN

217. After listening the words of the attendant and understanding them properly, Chitta felt satisfied and very happy He, then, with great happiness called the heads of the family and asked them—"O the blessed ! You quickly prepare the four belled horse-driven chariot and bring it here." The heads of the family complied the orders and brought the horse-driven cart along with the umbrella.

२१८. तए णं से चित्ते सारही ण्हाए कयबलिकम्मे कयकोउय-मंगलपायच्छित्ते सुद्धप्पावेसाइं मंगल्लाइं वत्थाइं पवरपरिहिते अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ।

उवागच्छित्ता चाउग्घंटं आसरहं दुरूहइ सकोरिंटमल्लदामेणं छत्तेणं धरिज्जमाणेणं महया भडचडगरेण विंदपरिक्खित्ते सावत्थी नगरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छइ। निग्गच्छित्ता जेणेव कोट्ठए चेइए जेणेव केसिकुमारसमणे तेणेव उवागच्छइ। उवागच्छित्ता केसिकुमारसमणस्स अदूरसामंते तुरए णिगिण्हइ रहं ठवेइ य, ठवित्ता पच्चोरुहति। पच्चोरुहित्ता जेणेव केसिकुमारसमणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता केसिकुमारसमणं तिक्खुत्तो आयाहिणं-पयाहिणं करेइ, करित्ता वंदइ नमंसइ, नमंसित्ता णच्चासण्णे णाति दूरे सुस्सूसमाणे णमंसमाणे अभिमुहे पंजलिउडे विणएणं पज्जुवासइ।

२१८. तब तक चित्त सारथी ने स्नान किया, बलिकर्म किया, कौतुक मंगल प्रायश्चित्त किया और शुद्ध एवं बाहर जाने योग्य मांगलिक वस्त्र पहने, अल्प भार वाले बहुमूल्य आभूषणों से शरीर को अलंकृत किया और उसके बाद वह चार घण्टो वाले अश्व-रथ के पास आया।

रथ के पास आकर उस चातुर्घंट अश्व-रथ पर आरूढ हुआ एव श्वेत-कोरट पुष्पो की मालाओं से सुशोभित छत्र धारण करके सुभटों के विशाल समुदाय के साथ श्रावस्ती नगरी के बीचोंबीच होकर निकला। निकलकर जहाँ कोष्ठक चैत्य था, उसमें जहाँ केशीकुमार श्रमण विराज रहे थे, वहाँ आया। आकर केशीकुमार श्रमण से कुछ दूर घोड़ों को रोका,

रथ खडा किया। रथ खड़ा कर उससे नीचे उतरा। उतरकर जहाँ केशीकुमार श्रमण थे, के पास आया। आकर केशीकुमार श्रमण की तीन बार प्रदक्षिणा की। प्रदक्षिणा करके वंदन-नमस्कार किया। वंदन-नमस्कार करके धर्मोपदेश सुनने की इच्छा से न अधिक दूर न ही अधिक नजदीक, समुचित स्थान पर उनके सम्मुख बैठकर नमस्कार करता हुआ विनयपूर्वक अंजलि करके पर्युपासना करने लगा।

218. In the mean time Chitta Saarthi took a bath, decorated himself with auspicious symbols and put on the worthy dress meant for going out and costly light weight ornaments. He then he came near the four belled horse-driven chariot.

Thereafter he got into the chariot. He had the umbrella decorated with garlands of pure-white Korant flowers. He was in the large company of soldiers. He passed through Shravasti town and to the place in Koshthak garden where Keshi Kumar Shraman was seated He stopped the horses at a distance halted the chariot and then got down the chariot. He then came to Keshi Kumar Shraman, bowed to him moving his hands thrice in a circle. Thereafter in order to carefully listen his spiritual discourse he sat in front of him neither very far nor very close to him, bowing to him with folded hands and showing his regards for him.

केशीकुमार श्रमण की देशना

२१९. तए णं से केसिकुमारसमणे चित्तस्स सारहिस्स तीसे महतिमहालियाए महच्चपरिसाए चाउज्जामं धम्मं परिकहेइ।

तं जहा—सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं, सव्वाओ अदिण्णादाणाओ वेरमणं, सव्वाओ बहिद्धादाणाओ वेरमणं।

तए णं सा महतिमहालिया महच्चपरिसा केसिस्स कुमारसमणस्स अंतिए धम्मं सोच्चा—निसम्म जामेव दिसिं पाउब्भूया तामेव दिसिं पडिगया।

२१९. केशीकुमार श्रमण ने चित्त सारथी और उस अतिविशाल परिषद् को उपस्थित देखकर चार याम धर्म का उपदेश दिया। उन चातुर्यामो के नाम इस प्रकार हैं—

(१) समस्त प्राणातिपात (हिंसा) से विरमण (निवृत्त होना), (२) समस्त मृषावाद (असत्य) से विरत होना, (३) समस्त अदत्तादान से विरत होना, (४) समस्त बहिद्धादान (बहिद्धा—स्त्री, आदान—धन परिग्रह अर्थात् स्त्री और सम्पत्ति का संग्रह) से विरत होना।

इसके बाद वह अतिविशाल परिषद्-जनसमूह केशीकुमार श्रमण से धर्मदेशना सुनकर एवं हृदय में धारण कर-मनन कर अपने-अपने घरों को वापस लौट गया।

SCRIPTURAL DISCOURSE OF KESHI KUMAR SHRAMAN

219. Finding Chitta Saarthi and a huge gathering, present there, Keshi Kumar Shraman explained to them the philosophy underlying four-folded Dharma. The four folds or four vows are as under—

(1) To avoid all types of violence, (2) To avoid all types of falsehood, (3) To avoid all types of stealing tendency, (4) To avoid accumulation of all types of wealth including women

The gigantic gathering carefully heard the spiritual discourse, studied it mentally and then dispersed.

विवेचन—प्रथम तीर्थंकर और अन्तिम तीर्थंकर के समय मे पच महाव्रत धर्म का उपदेश किया जाता है, बाकी मध्य के बावीस तीर्थंकरो के शासन में चार महाव्रत रूप चातुर्याम धर्म का प्रवर्तन होता है। इस युग मे स्त्री और धन-सम्पत्ति को एक ही मानकर चतुर्थ महाव्रत मे ही पाँचवे अपरिग्रह महाव्रत का समावेश मान लिया जाता है। इस प्रकार केवल व्याख्या में अन्तर है, नियमो मे कोई अन्तर नही है। चातुर्याम धर्म मे भी अखण्ड ब्रह्मचर्य और समस्त परिग्रह-त्याग की साधना की जाती है। (विशेष वर्णन के लिए देखे उत्तराध्ययनसूत्र, २३वाँ अध्ययन)

Elaboration—During the period of first and last Tirthankar the five-fold Dharma is propagated while during the period of twenty two Tirthankars of the intervening period, four-fold Dharma is propagated In this period wealth and women are considered one and so the fifth vow merges in the fourth one. Thus the difference is only in elaboration. There is no difference in principles or restraints In four-fold Dharma also strict Brahmacharya (celibacy) and complete non-attachment to material wealth is observed. (For detailed description see Uttaradhyayan Sutra, Ch 23)

२२०. तए णं से चित्ते सारही केसिस्स कुमारसमणस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठ जाव हियए उट्ठाए उट्ठेइ, उट्ठेत्ता केसिं कुमारसमणं तिक्खुत्तो आयाहिणं-पयाहिणं करेइ, वंदइ नमंसइ, नमंसित्ता एवं वयासी—

सद्दहामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं।

पत्तियामि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं।

रोएमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं।

अब्भुट्ठेमि णं भंते ! निग्गंथं पावयणं।

एवमेयं निग्गंथं पावयणं।

तहमेयं भंते ! निग्गंथं पावयणं। अवितहमेयं भंते ! निग्गंथं पावयणं। असंदिद्धमेयं., निग्गंथं पावयणं, इच्छियपडिच्छियमेयं भंते ! जं णं तुब्भे वदह।

त्ति कट्टु वंदइ नमंसइ, नमंसित्ता एवं वयासी–

जहा णं देवाणुप्पियाणं अंतिए बहवे उग्गा जाव इब्भा इब्भपुत्ता चिच्चा हिरण्णं, चिच्चा सुवण्णं एवं धणं–धन्नं–बलं–वाहणं–कोसं कोट्ठागारं पुरं अंतेउरं, चिच्चा विउलं धण–कणग–रयण–मणि–मोत्तिय–संख–सिलप्पवाल संतसारसावएज्जं विच्छड्डित्ता विगोवइत्ता, दाणं दाइयाणं परिभाइत्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वयंति, णो खलु अहं ता संचाएमि चिच्चा हिरण्णं तं चेव जाव पव्वइत्तए।

अहं णं देवाणुप्पियाणं अंतिए पंचाणुव्वइयं सत्तसिक्खावइयं दुवालसविहं गिहिधम्मं पडिवज्जित्तए।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेहि।

२२०. इसके पश्चात् चित्त सारथी केशीकुमार श्रमण से धर्मश्रवण कर एवं उसे हृदय में धारण कर हृष्ट–तुष्ट होता हुआ अपने आसन से उठा। उठकर केशीकुमार श्रमण की तीन बार आदक्षिण–प्रदक्षिणा की, वन्दन–नमस्कार किया। वन्दन–नमस्कार करके इस प्रकार बोला–

''भगवन् ! मुझे निर्ग्रन्थ प्रवचन मे श्रद्धा है।

भगवन् ! मै इस निर्ग्रन्थ प्रवचन पर प्रतीति (विश्वास) करता हूँ।

भगवन् ! मुझे निर्ग्रन्थ प्रवचन रुचिकर लगता है।

भगवन् ! मैं निर्ग्रन्थ प्रवचन को अगीकार करना चाहता हूँ।

भगवन् ! यह निर्ग्रन्थ प्रवचन ऐसा ही है।

भगवन् ! आपका यह कथन तथ्य–यथार्थ है। भगवन् ! यह अवितथ–सत्य है। असंदिग्ध है–शंका–संदेह से रहित है। मैने इसकी इच्छा की है। मुझे इच्छित, प्रतीच्छित है अर्थात् मैं इसकी पुनः–पुनः इच्छा करता हूँ। भगवन् ! यह वैसा ही है जैसा आप निरूपण–कथन करते हैं।''

ऐसा कहकर वन्दन-नमस्कार किया और नमस्कार करके पुनः बोला-

"देवानुप्रिय ! जिस तरह से आपके पास अनेक उग्रवशीय, भोगवंशीय यावत् इभ्य एव इभ्यपुत्र आदि हिरण्य-चाँदी का त्यागकर, स्वर्ण को छोडकर तथा धन, धान्य, बल, वाहन, कोस, कोठार, पुर-नगर, अन्तःपुर का त्याग कर और विपुल धन, कनक, रत्न, मणि, मोती, शख, शिलाप्रवाल (मूँगा) आदि सारभूत द्रव्यों का ममत्व छोडकर, उन सबको दीन-दरिद्रों में वितरित कर, पुत्रादि में बँटवारा कर, मुण्डित होकर (केश लुंचनकर, कषायो को छोडकर), गृहस्थ जीवन का परित्याग कर अनगारधर्म में प्रव्रजित हुए है, उस प्रकार सब कुछ त्यागकर प्रव्रजित होने मे तो मै समर्थ नहीं हूँ।

मैं आप देवानुप्रिय के पास पाँच अणुव्रत, सात शिक्षाव्रत मूलक बारह प्रकार का गृहीधर्म (श्रावकधर्म) अंगीकार करना चाहता हूँ।"

चित्त सारथी की भावना को जानकर केशीकुमार श्रमण ने कहा-"देवानुप्रिय ! जिससे तुम्हें सुख हो, वैसा ही करो, किन्तु धर्मकार्य मे विलम्ब मत करो।"

220. Thereafter Chitta Saarthı heard the religious discourse from Keshi Kumar Shraman, medıtated upon ıt from the very core of his heart and felt happy He then got up from his seat, moved around three times and bowed to Keshi Kumar Shraman. Thereafter he said—

"Bhagavan ! I have faıth in the word of Nirgranth.

Reverend Sir ! I believe that the word of Nirgranth are true.

Reverend Sir ! I like the word of Nırgranth

Reverend Sir ! I accept Nırgranth Pravachan.

Reverend Sir ! This Nirgranth Pravachan is as you have stated.

Reverend Sir ! Your lecture is based on facts. It ıs true **(Avitath).** It is free from any doubt **(Asandigdh).** I have liked it I like to hear it again and again. It ıs in fact as you have mentioned."

Thereafter he agaın bowed and said—

"O loveable of gods ! Many kings, prınces and others belonging to Ugra clan, Bhog clan and others upto wealthy persons discarded their silver and gold treasure, the agriculture wealth, the vehicles, the store-houses, their property, their family, their residential place. They detached themselves from the wealth, gems, jewels, pearls,

conch and other costly things belonging to them. They distributed their material wealth among the poor and needy; they gave due share to their sons and others. Thereafter they got their head cleanly shaved, discarded the householder's life and adopted monkhood. I, however, am not capable of discarding household affairs to such an extent

I want to accept five partial vows and seven supplementary vows of a householder at your feet."

After understanding the mental attitude of Chitta Saarthi Keshi Kumar Shraman said—"O the blessed ! You do whatever brings peace to you and is liked by you. But you should not delay the putting into practice the religious resolve.

विवेचन—इस वर्णन से स्पष्ट होता है कि चित्त सारथी धार्मिक आस्था वाला ससार-भीरु था। वह प्रदेशी राजा के अधर्माचरण और हिंसा आदि कार्यों से मन मे खेदखिन्न रहता था। लेकिन अपनी मानसिक, पारिवारिक और प्रजाजनो की स्थिति को देखकर तथा राज्य की जिम्मेदारी को सँभालते हुए उसे यह सम्भव प्रतीत नही हुआ कि सब कुछ त्यागकर अनगार-प्रव्रज्या अगीकार कर लें। इसीलिए उसने निर्ग्रन्थ प्रवचन के प्रति अतीव भावपूर्ण शब्दो मे अपनी आन्तरिक श्रद्धा अभिव्यक्त की है।

चित्त सारथी की भावना को जानकर केशीकुमार श्रमण ने तटस्थभाव के साथ कहा-"**अहासुहं देवाणुप्पिया !**" और फिर यह जानकर कि इस भव्य आत्मा मे ससार-सागर से पार होने की अभिलाषा है, पात्रता भी है, इसे पथ-प्रदर्शन एव तदनुकूल निमित्तो का बोध कराने की आवश्यकता है। बिना पथ-प्रदर्शन के जिज्ञासु आत्मा भी भटक सकती है तब एक सकेत भी उन्होने कर दिया कि '**मा पडिबंधं करेहि।**'

उपदेशक का कर्त्तव्य भव्य हृदय मे जिज्ञासा जगाना होता है, उसे मार्गदर्शन करना मात्र होता है, आगे का रास्ता स्वयं उसे ही चुनना पडता है।

Elaboration—It is evident from this description that Chitta Saarthi had religious faith and was afraid of mundane life (activities that increase number of births in the mundane world). He was feeling disgusted at the irreligious activities and the actions involving violence committed by king Pradeshi. But keeping in view his mental state and his family state and his family and social responsibility and also his duties towards royal administration, he was not finding it possible that he should discard every thing and adopt monkhood. So he expressed his mental state and his faith in the word of the detached (Nirgranth Pravachan) completely stating his heart-felt attitude

After knowing the inclination of Chitta Saarthi Keshi Kumar Shraman in an impartial attitude, said—"Do as you wish to and what gives you inner pleasure" Thereafter knowing that he (Chitta) has a desire to cross the worldly ocean, he has the capability of doing so and that he has need of guidance and knowledge of implied situations and that without proper knowledge of the true path there is likelihood of going astray, he pointed out casually—**"Ma Padibandham Kareyee"** (which means you should not delay in translating such thoughts into action)

It is the duty of the guide to create a fervent desire in the heart of beings fit for liberation (Bhavya) and to show them the path of liberation Further selection of the path has to be done by the person concerned himself.

२२१. तए णं से चित्ते सारही केसिकुमारसमणस्स अंतिए पंचाणुव्वइयं जाव गिहिधम्मं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ। तए णं से चित्ते सारही केसिकुमारसमणं वंदइ नमंसइ, नमंसित्ता जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव पहारेत्थ गमणाए। चाउग्घंटं आसरहं दुरूहइ, जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए।

२२१. तब चित्त सारथी ने केशीकुमार श्रमण के पास पाँच अणुव्रत यावत् (सात शिक्षाव्रतरूप) श्रावकधर्म को अगीकार किया।

तत्पश्चात् चित्त सारथी ने केशीकुमार श्रमण की वदना की, नमस्कार किया। नमस्कार करके जहाँ चार घटो वाला अश्व-रथ था, उस ओर चलने को तत्पर हुआ। वहाँ जाकर चार घटो वाले अश्व-रथ पर आरूढ हुआ, फिर जिस ओर से आया था, वापस उसी ओर लौट गया।

221. Then Chitta Saarthi accepted five partial vows and seven supporting vows—The vows of the householder from Keshi Kumar Shraman.

Thereafter Chitta Saarthi bowed to Keshi Kumar Shraman, greeted him and then came to the four-belled horse-driven chariot, got ready for the return, rode the chariot and went in the same direction from which he had come.

विवेचन—पाँच अणुव्रत तथा सात शिक्षव्रतो का स्वरूप समझने के लिए सचित्र उपासकदशा, प्रथम अध्ययन का अनुशीलन करना चाहिए।

Elaboration—To understand five minor (or partial) vows and seven supplementary vows one may study Illustrated Upasakdasha Sutra, Chapter First.

२२२. तए णं से चित्ते सारही समणोवासए जाए अहिगयजीवाजीवे, उवलद्ध–पुण्ण–पावे; आसव–संवर–निज्जर–किरियाहिगरण–बंध–मोक्ख–कुसले, असहिज्जे देवासुर–णाग–सुवण्ण–जक्ख–रक्खस–किन्नर–किंपुरिस–गरुल–गंधव्व–महोरगाईहिं देवगणेहिं निग्गंथाओ पावयणाओ अणइक्कमणिज्जे, निग्गंथे पावयणे णिस्संकिए, णिक्कंखिए, णिव्वितिगिच्छे, लद्धट्ठे गहियट्ठे पुच्छियट्ठे अहिगयट्ठे विणिच्छियट्ठे, अट्ठिमिंजपेम्माणुरागरत्ते।

'अयमाउसो ! निग्गंथे पावयणे अट्ठे अयं परमट्ठे सेसे अणट्ठे।

ऊसियफलिहे अवंगुयदुवारे चियत्तंतेउरघरप्पवेसे चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु पडिपुण्णं पोसहं सम्मं अणुपालेमाणे, समणे णिग्गंथे फासुएसणिज्जेणं असण–पाण–खाइम–साइमेणं–पीढ–फलग–सेज्जा–संथारेणं–वत्थ–पडिग्गह–कंबल पायपुंछणेणं ओसह–भेसज्जेणं पडिलाभेमाणे, अहापरिग्गहेहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणं भावेमाणे, जाइं तत्थ रायकज्जाणि य जाव रायववहाराणि य ताइं जियसत्तुणा रण्णा सद्धिं सयमेव पच्चुवेक्खमाणे पच्चुवेक्खमाणे विहरइ।

२२२. तब वह चित्त सारथी श्रमणोपासक हो गया। उसने जीव–अजीव पदार्थों का स्वरूप समझ लिया था। पुण्य–पाप के भेद को जान लिया था। आस्रव, संवर, निर्जरा, क्रिया, अधिकरण (क्रिया का आधार, जिसके आधार से क्रिया की जाये), बध, मोक्ष के स्वरूप को जानने मे कुशल हो गया था, वह दूसरे की सहायता का अनिच्छुक था अर्थात् अपना निर्णय करने व कुतीर्थिको व कुतर्कों के खंडन करने मे सहायता की अपेक्षा वाला नहीं रहा। देव, असुर, नाग, सुपर्ण, यक्ष, राक्षस, किन्नर, किपुरुष, गरुड, गधर्व, महोरग आदि कोई भी देवता उसे निर्ग्रन्थ प्रवचन से विचलित करने मे समर्थ नही थे। निर्ग्रन्थ प्रवचन में शंकारहित था, आत्मोत्थान के सिवाय अन्य किसी प्रकार की आकांक्षा से रहित था।

निर्विचिकित्सा–धर्मक्रिया के फल के प्रति उसके मन में शका नहीं थी।

लब्धार्थ–(गुरुजनो से) यथार्थ तत्त्व का सम्यक् बोध प्राप्त कर लिया था।

ग्रहीतार्थ–गुरुवचनों से ज्ञान ग्रहण कर लिया था।

विनिश्चितार्थ–सत्य तत्त्व का पूर्ण निश्चय कर चुका था। उसकी अस्थि और मज्जा धर्मानुराग में रम चुकी थी अर्थात् उसकी रग–रग में निर्ग्रन्थ प्रवचन के प्रति प्रेम और अनुराग व्याप्त था। वह दूसरों को सम्बोधित करते हुए कहता था कि–

"आयुष्मन् ! यह निर्ग्रन्थ प्रवचन ही अर्थ–सारभूत है, यही परमार्थ है, इसके सिवाय अन्य–अन्यतीर्थिक के कथन अनर्थ अर्थात् सारहीन है।"

असद्‌विचारों से रहित हो जाने के कारण उसका हृदय स्फटिक की तरह निर्मल हो गया था। सुपात्रदान के लिए उसके घर का द्वार सदा खुला रहता था। वह सबका विश्वासपात्र था। सभी के घरो मे यहाँ तक कि राजा के अन्त पुर मे भी उसका प्रवेश शकारहित होने से प्रीतिजनक था। वह चतुर्दशी, अष्टमी, अमावस्या एव पूर्णिमा को परिपूर्ण पौषधव्रत करता था, श्रमण निर्ग्रन्थो को प्रासुक, एषणीय–स्वीकार करने योग्य–निर्दोष अशन, पान, खाद्य, स्वाद्य, आहार, पीठ, फलक, शय्या, सस्तारक, आसन, वस्त्र, पात्र, कबल, पादप्रोछन (रजोहरण), औषध, भैषज से प्रतिलाभित करता रहता था एव यथाविधि ग्रहण किये हुए तप कर्म से आत्मा को भावित–शुद्ध करते हुए जितशत्रु राजा के साथ रहकर स्वयं उस श्रावस्ती नगरी के राज्य–कार्यो यावत् राज्य–व्यवहारो का बार–बार अवलोकन–अनुभव करता रहता था।

THE LIFE-STYLE OF CHITTA SAARTHI

222. Now Chitta Saarthi became a Shramanopasak (householder follower of religious order) He understood discrimination between Jiva (living being) and Ajiva (non-living being) He had understood the difference between action resulting in good fruit (Punya) and action resulting in bad fruit (Paap) He had became expert in understanding Aasrava (inflow of karmic matter), Samvar (stopping of karmic inflow), Nirjara (removal of karmic matter that has settled down in the soul), Kriya (activity), Adhikaran (the basis of action), Bandh (karmic bondage), Moksha (total liberation from karma) and the true nature of these terms. He was not desirous of others help. In other words in taking personal decision and in proving the view of the persons indifferent to the religious order as hollow, he was not in need of any assistance. Nobody, not even gods, Asur, Naag, Suparn, Yaksh, Rakshas, Kinnar, Kimpurush, Mahorag, Gandharv, Garud, Mahorag and other such demon-gods, were capable of discouraging him from his faith in Nirgranth Pravachan. He had absolutely no doubt in Nirgranth Pravachan. He had no other desire except self-realisation.

Nirvichikitsa—He had no doubt in his mind about the fruit of religious activities

Labdharth—He had learnt true meaning of Tatva (basic substances) from the gurus.

Grahitarth—He had got true knowledge (Jnan) from the word of the gurus.

Vinishchitarth—He had made a firm decision about the true nature of the Tattvas. He had become religious to the core of his heart. He had love for Nirgranth Pravachan. While addressing others, he used to say—

"O the blessed ! Only Nirgranth Pravachan is the basic word. It has the most noble meaning. The word of all others who do not have faith in it are without any substance, without any real value."

Since he had become totally free from false notions his heart had become crystal clear. The gate of his house was always open for charity to the deserved. He had earned trust of all. His entry in all the houses, even in the residential palace of the king was never doubted. So he had earned affection of all He used to observe Paushadh (complete fast for 24 hours and staying only at the religious place or secluded place free from routine household activities) on fourth, eighth and fifteenth day of every fortnight according to Vikram calendars. He used to offer proper, worthy of acceptance and in accordance with the principles of discrimination the food, the liquids, the sweets, the fragrant substances, the stool, the board, the bed, the bedding, the cloth, the pots, the blanket, the holy broom, the medicine and drugs to Shramans Further purifying his soul with the accepted restraints and austerities and performing administrative duties with king Jitashatru, he was looking after the regal matters of Shravasti town and government treatment to the public meticulously.

विवेचन—इस सूत्र मे श्रावक के ज्ञान-पक्ष एव आचार-पक्ष का सुन्दर चित्रण है। पहले ज्ञान प्राप्त कर फिर वह धर्माचरण में प्रवृत्त होता है। ज्ञान के बिना श्रद्धा किस पर करे और श्रद्धा के बिना आचरण भी नही किया जाता इसलिए ज्ञान-दर्शन-चारित्र का समन्वय यहाँ बताया है और सूचित किया है कि ज्ञान-क्रिया के समन्वय के कारण उसके जीवन मे कितनी करुणा, उदारता, जागरूकता, दानशीलता, विरक्ति और विश्वसनीयता आ जाती है कि वह सर्वत्र आदर, विश्वास और सम्मान को प्राप्त होता है।

Elaboration—In this aphorism, the knowledge and the conduct of a Shravak (householder devoted to religious order) has been beautifully depicted. First of all knowledge is procured and thereafter the religious

conduct is adhered to accordingly. Without right knowledge, on whom one should have his faith and without right faith, right conduct cannot be practiced. So the composition of right knowledge, right faith and right conduct has been mentioned here. It is further intimated that with right knowledge and right conduct combination, compassion, broad-mindless, true awakening, inclination towards charity, detachment and trustworthiness appear in life. He then commands respect, trust and honour everywhere.

२२३. तए णं से जियसत्तुराया अण्णया कयाइ महत्थं जाव पाहुडं सज्जेइ।

चित्तं सारहिं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–गच्छाहि णं तुमं चित्ता ! सेयवियं नगरिं, पएसिस्स रन्नो इमं महत्थं जाव पाहुडं उवणेहि। मम पाउग्गं च णं जहाभणियं अवितहमसंदिद्धं वयणं विन्नवेहि।

त्ति कट्टु विसज्जिए।

२२३. चित्त सारथी को श्रावस्ती नगरी मे रहते-रहते पर्याप्त समय हो चुका था।

एक बार जितशत्रु राजा ने बहुत मूल्यवान उपहार तैयार किया और चित्त सारथी को बुलाया। बुलाकर कहा-"हे चित्त ! तुम सेयविया नगरी जाओ और यह महाप्रयोजनसाधक-(जिसे देखने से मन प्रसन्न होकर अनुकूल हो जाये ऐसा) उपहार प्रदेशी राजा को भेट करना तथा मेरी ओर से विनयपूर्वक निवेदन करना कि आपने मेरे लिए जो संदेश भिजवाया है, उसे उसी प्रकार अवितथ-पूर्णतः प्रामाणिक एव असदिग्ध रूप से स्वीकार करता हूँ।"

ऐसा कहकर चित्त सारथी को सम्मानपूर्वक विदा किया।

223. Sufficient time had passed since the arrival of Chitta Saarthi in Shravasti.

Once king Jitshatru got prepared a very costly gift and called Chitta Saarthi. He then said—"O Chitta ! You go to Seyaviya town and present this pleasing multi-purpose gift to king Pradeshi and convey him on my behalf respectfully that I accept his message in letter and spirit without any hesitation."

Saying so, he bade farewell to Chitta with full honours.

केशीकुमार श्रमण से सेयविया पधारने की प्रार्थना

२२४. तए णं से चित्ते सारही जियसत्तुणा रन्ना विसज्जिए समाणे तं महत्थं जाव गिण्हइ जाव जियसत्तुस्स रण्णो अंतियाओ पडिनिक्खमइ। सावत्थी नयरीए मज्झंमज्झेणं

णिग्गच्छइ। जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छइ, तं महत्थं जाव ठवइ, ण्हाए जाव सरीरे सकोरंट. महया. पायचारविहारेण महया पुरिसवग्गुरापरिक्खित्ते रायमग्ग मोगाढाओ आवासाओ णिग्गच्छइ, सावत्थीनगरीए मज्झंमज्झेणं निग्गच्छति, जेणेव कोट्ठए चेइए जेणेव केसी कुमारसमणे तेणेव उवागच्छति।

केसी कुमारसमणस्स अन्तिए धम्मं सोच्चा जाव एवं वयासी–

एवं खलु अहं भंते ! जियसत्तुणा रन्ना पएसिस्स रन्नो इमं महत्थं जाव उवणेहि त्ति कट्टु विसज्जिए, तं गच्छामि णं अहं भंते ! सेयवियं नगरिं, पासादीया णं भंते ! सेयविया णगरी, एवं दरिसणिज्जा णं भंते ! सेयविया णगरी, अभिरूवा णं भंते ! सेयविया नगरी, पडिरूवा णं भंते ! सेयविया नगरी, समोसरह णं भंते ! तुब्भे सेयवियं नगरिं।

२२४. जितशत्रु राजा द्वारा सम्मानपूर्वक विदा किये जाने पर चित्त सारथी ने उस महाप्रयोजन-साधक उपहार को ग्रहण किया। जितशत्रु राजा के पास से रवाना होकर श्रावस्ती नगरी के बीचोंबीच से निकला। निकलकर राजमार्ग पर स्थित अपने आवास पर आया और उस महार्थक उपहार को एक ओर रखा। फिर स्नान किया यावत् शरीर को विभूषित किया, कोरंट पुष्प की मालाओ से युक्त छत्र को धारण कर विशाल जनसमुदाय के साथ पैदल ही राजमार्ग स्थित आवासगृह से निकला और श्रावस्ती नगरी के बीचोबीच से चलता हुआ कोष्ठक चैत्य मे जहाँ केशीकुमार श्रमण विराजमान थे, वहाँ आया।

वहाँ आकर केशीकुमार श्रमण से धर्म सुनकर वन्दना करके इस प्रकार निवेदन किया–

"भगवन् ! जितशत्रु राजा ने आज प्रदेशी राजा के लिए मुझे यह महार्थक उपहार देकर विदा किया है। अतएव भंते ! मै सेयविया नगरी लौट रहा हूँ। हे भते ! सेयविया नगरी मन को आनन्द देने वाली है। दर्शनीय–देखने योग्य है। मनोहर है। अतीव मनोहर है। अतएव हे भंते ! आप सेयविया नगरी में पधारने की कृपा करे।"

REQUEST TO KESHI KUMAR SHRAMAN FOR VISITING SEYAVIYA

224. After the honourable farewell by king Jitshatru, Chitta Saarthi held the multi-purpose gift and passing through Shravasti town, he came to the rest-house on the highway where he was staying. He kept the gift aside. Then he took his bath, upto decorated his body. He then having the great umbrella decorated with garlands of Korant flowers came out of the rest-house on foot along with a great collection of his men. He then passing through

Shravasti town came to Koshthak garden and the place where Keshi Kumar Shraman was seated.

After reaching there, he listened his spiritual discourse bowed to him and said—

"Reverend Sir ! King Jitshatru has today allowed me to go to king Pradeshi with this great gift for him (king Pradeshi). So Sir ! I am returning to Seyaviya town. Respected Sir ! Seyaviya town is very pleasant. It is worth-seeing It is grand. Sir ! Kindly favour us with a visit to Seyaviya."

२२५. तए णं से केसी कुमारसमणे चित्तेणं सारहिणा एवं वुत्ते समाणे चित्तस्स सारहिस्स एयमट्ठं णो आढाइ णो परिजाणाइ तुसिणीए संचिट्ठइ।

तए णं से चित्ते सारही केसी कुमारसमणं दोच्चं पि तच्चं पि एवं वयासी-एवं खलु अहं भंते ! जियसत्तुणा रन्ना पएसिस्स रण्णो इमं महत्थं जाव विसज्जिए, तं चेव जाव समोसरह णं भंते ! तुब्भे सेयवियं नगरिं।

२२५. चित्त सारथी द्वारा प्रार्थना किये जाने पर भी केशीकुमार श्रमण ने चित्त सारथी के कथन पर ध्यान नही दिया अर्थात् उसे स्वीकार नही किया। वे मौन रहे।

तब चित्त सारथी ने पुन. दूसरी और तीसरी बार भी निवेदन किया-"हे भते ! प्रदेशी राजा के लिए महाप्रयोजन-साधक उपहार देकर जितशत्रु राजा ने मुझे विदा कर दिया है। अतएव मै लौट रहा हूँ। सेयविया नगरी रमणीय है, आप वहाँ पधारने की अवश्य कृपा करे।"

225. Keshi Kumar Shraman ignored this request of Chitta Saarthi He did not accept the request and remained silent.

Then Chitta Saarthi repeated his request second time and again the third time saying—"Respected Sir ! King Jitshatru has bid farewell to me with the high-valued gift for king Pradeshi. Therefore I am going back to Seyaviya. Seyaviya town is very good. Kindly do visit it."

केशीकुमार श्रमण का उत्तर

२२६. तए णं केसी कुमारसमणे चित्तेण सारहिणा दोच्चं पि तच्चं पि एवं वुत्ते समाणे चित्तं सारहिं एवं वयासी-चित्ता ! से जहानामए वणसंडे सिया-किण्हे किण्होभासे जाव

पडिरूवे, से णूणं चित्ता ! से वणसंडे बहूणं दुपय–चउप्पय–मिय–पसु–पक्खी–सिरीसिवाणं अभिगमणिज्जे ?

हंता अभिगमणिज्जे।

तंसि च णं चित्ता ! वणसंडंसि बहवे भिलुंगा नाम पावसउणा परिवसंति, जे णं तेसिं बहूणं दुपय–चउप्पय–मिय–पसु–पक्खी–सिरीसिवाण ठियाणं चेव मंससोणियं आहारेंति। से णूणं चित्ता ! से वणसंडे तेसि णं बहूणं दुपय जाव सिरीसिवाणं अभिगमणिज्जे ?

णो तिणट्ठे समट्ठे।

कम्हा णं ?

भंते ! सोवसग्गे।

एवामेव चित्ता ! तुब्भं पि सेवियाए णयरीए पएसी नामं राया परिवसइ अधम्मिए जाव णो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तइ, तं कहं णं अहं चित्ता ! सेयवियाए नगरीए समोसरिस्सामि ?

२२६. चित्त सारथी द्वारा दूसरी और तीसरी बार भी इसी प्रकार से विनती किये जाने पर केशीकुमार श्रमण ने चित्त सारथी से कहा–"हे चित्त ! जैसे कोई एक कृष्ण वर्ण एवं कृष्णप्रभा वाला अर्थात् वृक्षो से हरा–भरा यावत् अतीव मनमोहक सघन छाया वाला वनखंड (बगीचा) हो तो वह वनखड अनेक द्विपद (मनुष्य आदि), चतुष्पद, मृग, पशु, पक्षी, सरीसृपो आदि के रहने लायक है अथवा नही है ?"

चित्त ने उत्तर दिया–"हाँ, भदन्त ! वह उनके अभिगमन योग्य–वास करने योग्य होता है।"

केशीकुमार श्रमण ने पुन· पूछा–"हे चित्त ! यदि उसी वनखड मे, उन बहुत–से द्विपद, चतुष्पद, मृग, पशु, पक्षी और सर्प आदि प्राणियो का रक्त–मॉस खाने वाले भीलुगा नामक पापशकुनि–(पशुओं का शिकार करने वाले पापिष्ठ भील) रहते हों तो क्या वह वनखंड उन अनेक मनुष्यों, पशुओं, पक्षियो, सरीसृपों के रहने योग्य हो सकता है ?"

चित्त ने उत्तर दिया–"भंते ! ऐसी स्थिति में वह प्रवेश करने और रहने योग्य नहीं हो सकता है।"

पुनः केशीकुमार श्रमण ने पूछा–''क्यो ? अर्थात् वह उनके प्रवेश करने एवं रहने योग्य क्यों नहीं हो सकता ?''

चित्त सारथी ने उत्तर दिया–''क्योंकि भदन्त ! वह वनखंड उपसर्ग–(त्रास, भय और खतरा) सहित होने से रहने योग्य नही है।''

तब केशीकुमार श्रमण ने चित्त सारथी को समझाने के लिए कहा–''हे चित्त ! इसी प्रकार तुम्हारी सेयविया नगरी कितनी ही अच्छी हो, परन्तु वहाँ भी प्रदेशी नामक राजा रहता है। वह बडा अधार्मिक यावत् प्रजा को अधर्माचरण की ओर प्रेरित करने वाला, अधर्ममय स्वभाव और आचार वाला, अधर्म से ही आजीविका चलाने वाला है। वह साक्षात् पाप का अवतार है, धूर्त्त व तस्करों को उकसाने वाला, लांच–रिश्वत लेने वाला, वंचक–धोखा देने वाला, मायावी, कपटी, बकवृत्ति वाला, किसी–न–किसी उपाय से दूसरो को दुःख देने वाला है। द्विपद, चतुष्पद, मृग, पशु, पक्षी, सर्प आदि सरीसृपो की हत्या करने, उन्हें मारने, प्राणरहित करने, उनका विनाश करने से साक्षात् अधर्मरूप है। प्रजाजनो से राज–कर लेकर भी उनका अच्छी तरह से पालन–पोषण और रक्षण नही करता है। अतएव हे चित्त ! मै उस सेयविया नगरी मे कैसे आ सकता हूँ?''

REPLY OF KESHI KUMAR SHRAMAN

226. At the repeated requests of Chitta Saarthi, Keshi Kumar Shraman said—"O Chitta ! Imagine a forest-region which is dark and emitting dark aura. In other words it has thick growth of trees and is providing thick shade. Is it then fit for stay of men, animals and beasts like deer, birds, snakes and others or not."

Chitta replied—"Reverend Sir ! It is fit for their stay."

Keshi Kumar Shraman again asked—"In case Bheelunga the hunter who eats the flesh and drinks the blood of two legged, four legged animals, deer, cattle, birds and snakes resides in that forest-region, is it still fit for stay of many men, animals, birds and snakes."

Chitta replied—"Sir ! Under the above mentioned circumstances, it is not fit for entry and stay of men, animals and beasts."

Keshi Kumar Shraman again asked—"Why ? In other words why is it not suitable for entry of men and beasts ?"

Chitta Saarthi replied—"Sir ! That forest-region is a danger spot for them, so it is not fit for their entry and stay."


उपसर्ग युक्त उद्यान

चित्र परिचय-७

Illustration No. 7

केशीकुमार श्रमण से श्वेताम्बिका पधारने की विनती

चित्त सारथी रथ से उतरकर केशीकुमार श्रमण के पास पहुँचा। देशना सुनी। आते आते उसने श्वेताम्बिका नगरी मे पधारने की विनती की। तब केशीकुमार श्रमण बोले "किसी सघन वृक्षो वाले सुन्दर फल फूलयुक्त उद्यान मे यदि कोई धूर्त्त शिकारी पक्षियो पर घात लगाये बैठा हो तो क्या उस उपवन मे कोई पक्षी आता है ? इसी प्रकार श्वेताम्बिका नगरी के श्रावक धर्मज्ञ है, धर्मप्रेमी है, किन्तु वहाँ का राजा अत्यन्त धर्मद्वेषी है। श्रमण माहनो का अपमान, अवहेलना, तिरस्कार करने वाला है तो वहाँ कैसे कोई श्रमण जायेगा ?"

सूत्र २२४ २२६ पृष्ठ २८१ २८३

INVITING KESHI KUMAR SHRAMAN TO SHVETAMBIKA

Getting down from the chariot Chitta Sarathi came near Keshi Kumar Shraman and attended his discourse While taking leave, he extended an invitation for a visit to Shvetambika city Keshi Kumar Shraman responded—"Does a bird come to a garden which, although lush green and with abundance of fruits and flowers, has a cunning hunter prepared and ready to kill birds ? In the same way although the citizens of Shvetambika city are devout and religious, the king of that city is extremely anti-religion He insults, abuses and affronts Shramans and Brahmins How can a Shraman visit that city ?"

—*Sutras 224-226, pp 281-283*

Then Keshi Kumar Shraman said to Chitta Saarthi—"O Chitta ! Your Seyaviya city may be extremely grand, but king Predeshi is its ruler. He is very irreligious upto inspires people for irreligious activities. His nature is irreligious. He runs his livelihood with irreligious actions. He is true representative of sin personified. He is cheat. He instigates thieves. He takes illegal gratification. He deceives others. He has crooked mind. He is treacherous. He some how or other creates troubles for others. He kills two-legged and quadruped like deer, animals, birds and snakes. He turns them lifeless destroys them and therefore, he is irreligious. He receives taxes from the people but does not look after them nor does he provide proper security to them. So O Chitta ! How can I came to Seyaviya city ?"

२२७. तए णं से चित्ते सारही केसिं कुमारसमणं एवं वयासी–

किं णं भंते ! तुब्भं पएसिणा रन्ना कायव्वं ?

अत्थि णं भंते ! सेयबियाए नगरीए अन्ने बहवे ईसर–तलवर जाव सत्थवाहपभिइओ जे णं देवाणुप्पियं वंदिस्संति नमंसिस्संति जाव पज्जुवासिस्संति विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं पडिलाभिस्संति, पाडिहारिएण पीढ–फलग–सेज्जा–संथारेणं उवनिमंतिस्संति।

तए णं से केसी कुमारसमणे चित्तं सारहिं एवं वयासी–अवि या इं चित्ता ! जाणिस्सामो।

२२७. यह उत्तर सुनकर चित्त सारथी ने केशीकुमार श्रमण से निवेदन किया–

"हे भदन्त ! आपको प्रदेशी राजा से क्या करना है–क्या लेना-देना है ?"

"भगवन् ! सेयविया नगरी मे दूसरे राजा, ईश्वर, तलवर यावत् सार्थवाह आदि बहुत से जन है, जो आप देवानुप्रिय को वंदन करेंगे, नमस्कार करेगे यावत् आपकी पर्युपासना करेंगे। श्रमणो को विपुल अशन, पान, खाद्य, स्वाद्य आहार से प्रतिलाभित करेंगे तथा प्रातिहारिक पीठ, फलक, शय्या, संस्तारक ग्रहण करने के लिए उपनिमंत्रित करेंगे अर्थात् प्रार्थना करेंगे।"

तब केशीकुमार श्रमण ने चित्त सारथी से कहा–"हे चित्त ! तुम्हारा आमंत्रण ध्यान में रहेगा।"

227. At this reply, Chitta Saarthi pleaded to Keshi Kumar Shraman—"Reverend Sir ! Of what concern is king Pradeshi to you ? You have nothing to do with him."

"Sir ! In Seyaviya city there are many other kings, masters, rich men decorated by the government, upto traders. They shall pay respect and bow to Shramans (saints), greet them and serve them. They shall offer food, drinks, sweets, articles of fragrant taste, board, bed, bedding and others and shall request them humbly to accept the same."

Then Keshi Kumar Shraman said to Chitta—"O Chitta ! I shall keep in mind your invitation."

चित्त का आगमन और उद्यानपालकों को आज्ञा

२२८. तए णं से चित्ते सारही केसि कुमारसमणं वंदइ नमंसइ, केसिस्स कुमारसमणस्स अंतियाओ कोट्ठयाओ चेइयाओ पडिणिक्खमइ, जेणेव सावत्थी णगरी जेणेव रायमग्गमोगाढे आवासे तेणेव उवागच्छइ कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी—

खिप्पामेव भो देवाणुप्पिया ! चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह।

जहा सेयवियाए नगरीए निग्गच्छइ तहेव जाव वसमाणे कुणाला जणवयस्स मज्झंमज्झेणं जेणेव केइयअद्धे, जेणेव सेयविया नगरी, जेणेव मियवणे उज्जाणे, तेणेव उवागच्छइ। उज्जाणपालए सद्दावेइ एवं वयासी—

जया णं देवाणुप्पिया ! पासावच्चिज्जे केसी नाम कुमारसमणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे, गामाणुगामं दूइज्जमाणे इहमागच्छिज्जा तया णं तुब्भे देवाणुप्पिया ! केसि कुमारसमणं वंदिज्जाह, नमंसिज्जाह, वंदित्ता नमंसित्ता अहापडिरूवं उग्गहं अणुजाणेज्जाह, पाडिहारिएणं पीढ—फलग जाव उवनिमंतिज्जाह, एयमाणत्तियं खिप्पामेव पच्चप्पिणेज्जाह।

तए णं ते उज्जाणपालगा चित्तेणं सारहिणा एवं वुत्ता समाणा हट्ठतुट्ठ जाव हियया करयल—परिग्गहियं जाव एवं वयासी—

तहत्ति, आणाए विणएणं वयणं पडिसुणंति।

२२८. (केशीकुमार श्रमण से आश्वासन प्राप्त कर) चित्त सारथी ने केशीकुमार श्रमण को वंदना की, नमस्कार किया और केशीकुमार श्रमण के पास से कोष्ठक चैत्य से बाहर निकला। श्रावस्ती नगरी में राजमार्ग पर स्थित अपने आवास पर आया और कौटुम्बिक पुरुषो को बुलाकर कहा—

"हे देवानुप्रियो ! शीघ्र ही चार घंटों वाला अश्व-रथ जोतकर लाओ।"

इसके बाद जिस प्रकार पहले सेयविया नगरी से प्रस्थान किया था उसी प्रकार श्रावस्ती नगरी से निकलकर बीच-बीच मे विश्राम करता हुआ, कुणाला जनपद के मध्य भाग में से होता हुआ केकय-अर्ध देश में जहाँ सेयविया नगरी थी और जहाँ उस नगरी का मृगवन नामक उद्यान था, वहाँ आ पहुँचा। वहाँ आकर उद्यानपालको (चौकीदारों एवं मालियों) को बुलाकर इस प्रकार कहा-

"हे देवानुप्रियो ! जब पार्श्वापत्य केशीकुमार श्रमण श्रमणचर्यानुसार विचरते हुए, ग्रामानुग्राम विहार करते हुए यहाँ पधारे तब (उनके आने पर) तुम केशीकुमार श्रमण को वन्दना करना, नमस्कार करना। वदना-नमस्कार करके उन्हे यथाप्रतिरूप-साधुकल्प के अनुसार रहने की आज्ञा देना तथा प्रातिहारिक पीठ, फलक आदि के लिए प्रार्थना करना और इसके बाद उनके आगमन की मुझे सूचना देना।"

चित्त सारथी की इस आज्ञा को सुनकर वे उद्यानपालक हर्षित हुए। विकसित हृदय होते हुए दोनो हाथ जोडकर बोले-

"हे स्वामिन् ! आपकी आज्ञा प्रमाण।" यह कहकर उनकी आज्ञा विनयपूर्वक स्वीकार की।

ARRIVAL OF CHITTA AND HIS ORDERS TO GARDENERS

228. (After this assurance from Keshi Kumar Shraman) Chitta Saarthi bowed to Keshi Kumar Shraman, greeted him and then came from him through Koshthak garden. He came to his rest-house on the highway.

He called the heads and said—"O the blessed ! Please bring quickly the four-belled house-driven chariot."

Thereafter, he left Shravasti town in the same manner as he had earlier left Seyaviya town. Halting at places in between, he passed through Kunala district and then entered Kekaya-ardh state. He then came to Mrigavan garden of Seyaviya town. He called the security guards and gardeners of the area and said—

"O the blessed ! When Keshi Kumar Shraman of Parshvanath order, during his wanderings in line with prescribed ascetic conduct reaches here, you (on his arrival) bow to him, honour him, allow him to stay according to the ascetic conduct. Further, you request

him to accept the stool, board and other suchlike as required and inform me about his arrival."

The chowkidars and the gardeners felt happy at these orders. They folded their hands with a joyous mind and said—"Sir ! Your orders are true. We accept them humbly."

२२९. तए णं चित्ते सारही जेणेव सेयविया णगरी तेणेव उवागच्छइ, सेयवियं नगरिं मज्झंमज्झेणं अणुपविसइ, जेणेव पएसिस्स रण्णो गिहे जेणेव बाहिरिया उवट्ठाणसाला तेणेव उवागच्छइ, तुरए णिगिण्हइ, रहं ठवेइ, रहाओ पच्चोरुहइ, तं महत्थं जाव गेण्हइ, जेणे पएसी राया तेणेव उवागच्छइ, पएसिं रायं करयल जाव वद्धावेत्ता तं महत्थं जाव उवणेइ।

तए णं से पएसी राया चित्तस्स सारहिस्स तं महत्थं जाव पडिच्छइ चित्तं सारहिं सक्कारेइ सम्माणेइ।

तए णं से चित्ते सारही पएसिणा रण्णा विसज्जिए समाणे हट्ठ जाव हियए पएसिस्स रन्नो अंतियाओ पडिनिक्खमइ, जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, चाउग्घंटं आसरहं दुरूहइ, सेयवियं नगरिं मज्झंमज्झेणं जेणेव सए गिहे तेणेव उवागच्छइ, तुरए णिगिण्हइ, रहं ठवेइ, रहाओ पच्चोरुहइ ण्हाए जाव उप्पिं पासायवरगए फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं बत्तीसइबद्धएहिं नाडएहिं वरतरुणीसंपउत्तेहिं उवणच्चिज्जमाणे उवगाइज्जमाणे उवलालिज्जमाणे इट्ठे सद्द फरिसे जाव विहरइ।

२२९. तत्पश्चात् चित्त सारथी सेयविया नगरी में आया। सेयविया नगरी के मध्य भाग मे प्रविष्ट होकर जहाँ प्रदेशी राजा का भवन था, जहाँ भवन की बाह्य उपस्थानशाला थी, वहाँ आया। घोडो को रोका, रथ को खडा किया, रथ से नीचे उतरा और उस महार्थक भेट को साथ लेकर प्रदेशी राजा के सन्मुख पहुँचा। पहुँचकर दोनो हाथ जोडे; जय-विजय शब्दों से बधाया और प्रदेशी राजा के सामने उस महार्थक भेट को उपस्थित किया।

इसके बाद प्रदेशी राजा ने चित्त सारथी से वह भेंट स्वीकार की और सत्कार-सन्मान करके चित्त सारथी को विदा किया।

प्रदेशी राजा से विदा लेकर चित्त सारथी प्रसन्न हृदय हो वहाँ से निकला और जहाँ चार घटों वाला अश्व-रथ था, वहाँ आया। अश्व-रथ पर आरूढ़ हुआ तथा सेयविया नगरी के बीचोंबीच से गुजरकर अपने घर आया। घर आकर घोडों को रोका, रथ को खडा किया

और रथ से नीचे उतरा। इसके बाद स्नान आदि करके श्रेष्ठ प्रासाद के ऊपर निवास करने लगा। वहाँ जोर-जोर से बजाये जा रहे मृदंगों की ध्वनि के साथ उत्तम तरुणियो द्वारा किये जा रहे बत्तीस प्रकार के नाटकों आदि के नृत्य, गान और क्रीडा (लीला) को सुनता, देखता और हर्षित होता हुआ मनोज्ञ शब्द, स्पर्श यावत् सुखों का अनुभव करने लगा।

229. Thereafter Chitta Saarthi came to Seyaviya town. He entered it from the middle and came to the palace of king Pradeshi. He then came to royal council-hall outside the palace. He stopped the horses, halted the chariot and got down. He then came to king Pradeshi with the multi-valued gift. He folded his hand, praised the king and presented that gift to him.

Thereafter king Pradeshi accepted that gift from Chitta Saarthi and bid him farewell with great honour.

After seeking leave, Chitta Saarthi came out happily to the chariot He got into the four-belled horse-driven chariot and passing through Seyaviya town came to his house. He stopped the horses, halted the chariot and got down. He then took a bath and started living in the upper storey of his grand building. There was music at high pitch, the young damsels were presenting thirty two types of dramatic performance, dance, vocal and classical music. Hearing their music and seeing their dance, he was feeling happy. He was enjoying the pleasant words, the touch and others and started passing his time in enjoyment.

केशीकुमार श्रमण का सेयविया में पदार्पण

२३०. तए णं केसी कुमारसमणे अण्णया कयाइ पाडिहारियं पीढ-फलग-सेज्जा-संथारगं पच्चप्पिणइ सावत्थीओ नगरीओ कोट्ठगाओ चेइयाओ पडिनिक्खमइ पंचहिं अणगारसएहिं जाव विहरमाणे जेणेव केइयअद्धे जणवए, जेणेव सेयविया नगरी, जेणेव मियवणे उज्जाणे, तेणेव उवागच्छइ, अहापडिरूवं उग्गहं उग्गिण्हित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावमाणे विहरति।

२३०. किसी समय-(चित्त सारथी की विनती को ध्यान में रखकर केशीकुमार श्रमण ने सेयविया जाने का विचार किया) तब अपने उपयोग के लिए लाये हुए प्रातिहारिक (काम में लेकर वापस लौटाने योग्य) पीठ (बैठने का बाजोट), फलक (लकड़ी का पाटिया), शय्या

संस्तारक (सूखे तृण पुलाल) आदि उन-उनके स्वामियों को सौंपकर केशीकुमार श्रमण श्रावस्ती नगरी के कोष्ठक चैत्य से बाहर निकले। अपने पाँच सौ अन्तेवासी अणगारों के साथ विहार करते हुए केकय-अर्ध जनपद की 'सेयविया' नगरी के 'मृगवन' नामक उद्यान में पधारे। यथाप्रतिरूप अवग्रह-(मुनि-मर्यादा के अनुसार ठहरने की आज्ञा-अनुमति) लेकर संयम एवं तप से आत्मा को भावित करते हुए विचरने लगे।

ARRIVAL OF KESHI KUMAR SHRAMAN IN SEYAVIYA

230. Once keeping in mind the request of Chitta Saarthi, Keshi Kumar Shraman thought of going to Seyaviya. Keshi Kumar Shraman returned the stool, the pot, the beds, the bedding of dry straw and other such articles (which could be returned after their use) to their masters. He then came out from Koshthak garden of Shravasti town. He wandering along with his five hundred saints came to Mrigavan garden in Seyaviya town of Kekaya-ardh state. After seeking permission of stay (as is the tradition among saints), he started staying following the principles of ascetic discipline.

२३१. तए णं सेयवियाए नगरीए सिंघाडग महया जणसद्दे वा. परिसा णिग्गच्छइ।

तए णं ते उज्जाणपालगा इमीसे कहाए लद्धट्ठा समाणा हट्ठतुट्ठ जाव हियया जेणेव केसी कुमारसमणे तेणेव उवागच्छन्ति, केसिं कुमारसमणं वंदंति नमंसंति, अहापडिरूवं उग्गहं अणुजाणंति, पाडिहारिएणं जाव संथारएणं उवनिमंतंति, णामं-गोयं पुच्छंति, ओधारेंति, एगंतं अवक्कमंति, अन्नमन्नं एवं वयासी-

जस्स णं देवाणुप्पिया ! चित्ते सारही दंसणं कंखइ, दंसणं पत्थेइ, दंसणं पीहेइ, दंसणं अभिलसइ, जस्स णं णामगोयस्स वि सवणयाए हट्ठतुट्ठ जाव हियए भवति, से णं एस केसी कुमारसमणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे गामाणुगामं दूइज्जमाणे इह मागए, इह संपत्ते, इह समोसढे, इहेव सेयवियाए णगरीए बहिया मियवणे उज्जाणे अहापडिरूवं जाव विहरइ। तं गच्छामो णं देवाणुप्पिया ! चित्तस्स सारहिस्स एयमट्ठं पियं निवेएमो, पियं से भवउ।

अण्णमण्णस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति।

जेणेव सेयविया णगरी जेणेव चित्तस्स सारहिस्स गिहे, जेणेव चित्त सारही तेणेव उवागच्छंति, चित्त सारहिं करयल जाव वद्धावेंति एवं वयासी-जस्स णं देवाणुप्पिया !

दंसणं कंखंति जाव अभिलसंति, जस्स णं णामगोयस्स वि सवणयाए हट्ठ जाव भवह, से णं अयं केसी कुमारसमणे पुव्वाणुपुव्विं चरमाणे समोसढे जाव विहरइ।

२३१. (केशीकुमार श्रमण के आगमन का समाचार सुनकर) सेयविया नगरी के शृंगाटकों आदि स्थानों पर लोगो में परस्पर बातचीत होने लगी, लोगो के झुण्ड वदना करने निकले।

तब वे उद्यानपालक भी केशीकुमार श्रमण के आगमन का सवाद सुनकर और समझकर हर्षित हृदय होते हुए जहाँ केशीकुमार श्रमण थे, वहाँ आये। आकर केशीकुमार श्रमण को वंदना की, नमस्कार किया एवं यथाप्रतिरूप अवग्रह (स्थान पर ठहरने की अमुमति) प्रदान की। प्रातिहारिक पीठ, फलक, संस्तारक आदि ग्रहण करने के लिए प्रार्थना की। इसके बाद उन्होंने (श्रमण का) नाम एवं गोत्र पूछा। चित्त सारथी की आज्ञा का स्मरण करते हुए एकान्त में वे परस्पर एक-दूसरे से इस प्रकार बातचीत करने लगे-

'देवानुप्रियो ! चित्त सारथी जिनके दर्शन की आकांक्षा करते है, जिनके दर्शन की प्रार्थना करते है, जिनके दर्शन की स्पृहा-चाहना करते हैं, जिनके दर्शन की अभिलाषा करते है, जिनका नाम, गोत्र सुनते ही हर्षित, सन्तुष्ट यावत् विकसित हृदय हो जाते है, ये वही केशीकुमार श्रमण अनुक्रम से विहार करते हुए, एक गाँव से दूसरे गाँव मे विहार करते हुए यहाँ आये है, यहाँ पधारे है तथा इसी 'सेयविया' नगरी के बाहर मृगवन उद्यान मे यथाप्रतिरूप अवग्रह ग्रहण करके विराजमान हुए हैं। अतएव हे देवानुप्रियो ! हम चलें और चित्त सारथी के इस प्रिय समाचार को (केशीकुमार श्रमण के आगमन की सूचना) उनसे निवेदन करे। हमारा यह निवेदन उन्हे बहुत ही प्रिय लगेगा।'

उद्यानपालको ने एक-दूसरे से इस प्रकार विचार करके निश्चय किया।

इसके बाद उद्यानपालक जहाँ सेयविया नगरी में चित्त सारथी का घर था, वहाँ आये। आकर दोनों हाथ जोड विनयपूर्वक चित्त सारथी को बधाया और इस प्रकार निवेदन किया- ''देवानुप्रिय ! आपको जिनके दर्शन की इच्छा है यावत् आप अभिलाषा करते हैं और जिनके नाम एव गोत्र को सुनकर आप हर्षित होते है, वे केशीकुमार श्रमण विचरते हुए यहाँ मृगवन उद्यान में पधार गये हैं, आकर वहाँ ठहरे हैं।''

231. After hearing the news about the arrival of Keshi Kumar Shraman, the people at the triangular paths and other crossings and suchlike places started talking about it among themselves. They came out in large number to greet the saints and bow to them.

The chowkidars and gardeners also on hearing about the arrival of Keshi Kumar Shraman, understanding it properly and feeling over-joyed came to the place where Keshi Kumar Shraman was seated. They bowed to him, greeted him and allowed him gracefully to stay there according to their ascetic code. They also requested him to accept stool, bed, board, bedding of straw and other suchlike articles of use. Thereafter, they asked the name and status of the saint (Shraman). They recalled the orders of Chitta Saarthi and started talking among themselves as under—

'O the blessed ! Keshi Kumar Shraman during his wanderings, moving from one village to another, has come here, has graced this place has stayed in Mrigavan garden at the outskirts of Seyaviya town following his ascetic restraints and principles. He is the same saint whom Chitta Saarthi is keen to see, for whose darshan, he had made a request, for whose darshan, he had expressed a deep desire. It is he, whose very reciting of name and status makes Chitta happy, contented and over-joyed. So O the loveable of gods ! Let us go to Chitta Saarthi and convey to him good news of the arrival of Keshi Kumar Shraman. Our this statement shall certainly be liked by him."

Then the chowkidars of the garden thought over it carefully and agreed to it

Thereafter they came to the residence of Chitta Saarthi. They folded their hands and humbly congratulated him (Chitta) and said—"Reverend Sir ! Keshi Kumar Shraman, whom you desire to see, about whose darshan you are very keen, whose very name and status brings to you ecstatic pleasure, has arrived. He is staying in Mrigavan garden."

चित्त का दर्शनार्थ आगमन

२३२. (क) तए णं से चित्ते सारही तेसिं उज्जाणपालगाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ जाव आसणाओ अब्भुट्ठेति, पायपीढाओ पच्चोरुहइ, पाउयाओ ओमुयइ, एगसाडियं उत्तरासंगं करेइ, अंजलिमउलियग्गहत्थे केसिकुमारसमणाभिमुहे सत्तट्ठ पयाइं अणुगच्छइ करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं मत्थए अंजलि कट्टु एवं वयासी—

नमोऽत्थु णं अरहंताणं जाव संपत्ताणं, नमोऽत्थु णं केसिस्स कुमारसमणस्स मम धम्मायरियस्स धम्मोवदेसगस्स। वंदामि णं भगवं तं तत्थगयं इहगए, पासउ मे त्ति कट्टु वंदइ नमंसइ।

२३२. **(क)** उद्यानपालकों से यह सवाद सुनकर एव हृदय में अवधारण कर वह चित्त सारथी हर्षित हुआ। आनन्दित हुआ, मन में प्रीति उत्पन्न हुई। परम सौमनस्य (आनन्द व उल्लास) को प्राप्त हुआ। वह शीघ्र अपने आसन से उठा, पादपीठ से नीचे उतरा, पादुकाएँ उतारी, एकशाटिक उत्तरासग किया और मस्तक पर दोनो हाथ लगाकर अंजलि करके जिस ओर केशीकुमार श्रमण विराजमान थे, उस दिशा मे सात-आठ कदम चला और फिर दोनो हाथ जोड आवर्त्तपूर्वक (हाथ घुमाकर) मस्तक पर अंजलि करके उनकी इस प्रकार स्तुति करने लगा-

"अरिहंत भगवंतो को नमस्कार हो यावत् सिद्धगति को प्राप्त सिद्ध भगवन्तों को नमस्कार हो। मेरे धर्माचार्य, मेरे धर्मोपदेशक केशीकुमार श्रमण को नमस्कार हो। उनकी मै वन्दना करता हूँ। वहाँ विराजमान वे भगवान यहाँ विद्यमान मुझको देखें।" इस प्रकार कहकर वदन-नमस्कार किया।

ARRIVAL OF CHITTA FOR DARSHAN

232. (a) After hearing the message from the watchmen of the garden and brooding upon it, Chitta Saarthi felt happy. He felt pleased and liked it. He got ecstatic pleasure. He got up from his seat quickly, he got down from it, removed his shoes, wrapped the cloth round his face, placed his folded hands at his forehead and then went seven-eight steps in the direction in which Keshi Kumar Shraman was staying. He then moved his folded hands in a circle and placing them near his forehead praised the Shraman as under—

"I pay obeisance to Reverend Arihantas; to Siddhas who have attained liberation, to my religious preceptor, to my religious guide Keshi Kumar Shraman. I bow to them. My respected Bhagavan may see me from there. Saying so he bowed to him, greeted him and praised him."

(ख) ते उज्जाणपालए विउलेणं वत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारेइ सम्माणेइ विउलं जीवियारिहं पीइदाणं दलयइ, पडिविसज्जेइ।

कोडुंबियपुरिसे सद्दावेइ एवं वयासी-खिप्पामेव भो ! देवाणुप्पिया चाउग्घंटं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेह जाव पच्चप्पिणह।

तए णं ते कोडुंबियपुरिसा जाव खिप्पामेव सच्छत्तं सज्झयं जाव उवट्ठवित्ता तमाणत्तियं पच्चप्पिणंति।

तए णं से चित्ते सारही कोडुंबियपुरिसाणं अंतिए एयमट्ठं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठ जाव हियए ण्हाए कयबलिकम्मे जाव जेणेव चाउग्घंटे जाव दुरूहित्ता सकोरंट. महया भडचडगरेणं तं चेव जाव पज्जुवासइ धम्मकहाए जाव।

(ख) इसके पश्चात् चित्त सारथी ने (शुभ सवाद देने की खुशी में) उन उद्यानपालकों को विपुल वस्त्र, गंध, माला, अलंकारों से सत्कार-सन्मान किया तथा जीविका-योग्य विपुल प्रीतिदान (पारितोषिक) देकर विदा किया।

तदनन्तर अपने कौटुम्बिक पुरुषो को बुलाकर आज्ञा दी-"हे देवानुप्रियो ! शीघ्र ही तुम चार घटों वाला अश्व-रथ जोतकर उपस्थित करो और मुझे वापस इसकी सूचना दो।"

कौटुम्बिक पुरुषो ने शीघ्र ही छत्र एव ध्वजा-पताकाओं से सुशोभित रथ को तैयार कर रथ ले आने की सूचना दी।

कौटुम्बिक पुरुषो से रथ लाने की सूचना पाकर हृष्ट-तुष्ट यावत् विकसित हृदय होते हुए चित्त सारथी ने स्नान किया, बलिकर्म किया यावत् आभूषणों से शरीर को अलकृत किया। जहाँ चार घंटो वाला रथ था, वहाँ आया और रथ पर आरूढ होकर कोरट पुष्पो की मालाओ से युक्त छत्र को धारण कर विशाल सुभटो को साथ लेकर रवाना हुआ। उद्यान मे पहुँचकर केशीकुमार श्रमण की पर्युपासना करने लगा। केशीकुमार श्रमण ने धर्मोपदेश दिया।

(b) Thereafter, expressing his happiness at the good news conveyed by watchmen of the garden, he gave them many clothes, garlands, fragrant material, ornaments and honoured them He gave them gifts in sufficient number suitable for their living.

Thereafter he called the heads of the family and ordered them—"O the blessed ! Kindly present quickly the four-belled horse-driven chariot ready to move Please intimate me after compliance."

The servants soon made the chariot ready fitted with umbrella, the flag, the buntings and intimated to Chitta.

After hearing the compliance of his orders, feeling happy and with a joyous heart, Chitta Saarthi took his bath, decorated himself with auspicious symbols and ornaments. He then came to the place where the four-belled chariot was standing. He got into it, spread the umbrella bearing garlands of Korant flowers and started along

with a large company of warriors. After reaching the garden he started expressing his devotion for Keshi Kumar Shraman. Then Keshi Kumar Shraman gave him a religious discourse.

राजा को प्रतिबोध देने की प्रार्थना

२३३. तए णं से चित्ते सारही केसिस्स कुमारसमणस्स अंतिए धम्मं सोच्चा निसम्म हट्ठतुट्ठे तहेव एवं वयासी–

एवं खलु भंते ! अम्हं पएसी राया अधम्मिए जाव सयस्स वि णं जणवयस्स नो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेइ। तं जइ णं देवाणुप्पिया ! पएसिस्स रण्णो धम्ममाइक्खेज्जा बहुगुणतरं खलु होज्जा पएसिस्स रण्णो तेसिं च बहूणं दुपय–चउप्पय–मिय–पसु–पक्खी–सरीसवाणं, तेसिं च बहूणं समणमाहणभिक्खुयाणं।

तं जइ णं देवाणुप्पिया ! पएसिस्स बहुगुणतरं होज्जा सयस्स वि य णं जणवयस्स।

२३३. धर्मश्रवण कर और उसे हृदय मे धारण कर चित्त सारथी हर्षित, सन्तुष्ट एवं चित्त मे आनन्दित हुआ। धर्म के प्रति अनुरागी, परम सौम्यभावयुक्त होकर केशीकुमार श्रमण से निवेदन किया–

"हे भदन्त ! हमारा प्रदेशी राजा अधार्मिक है, यावत् राज–कर लेकर भी समीचीन रूप से अपने जनपद (प्रजा) का पालन एव रक्षण नही करता है। अतएव आप देवानुप्रिय ! यदि प्रदेशी राजा को धर्मोपदेश देगे तो प्रदेशी राजा के लिए, साथ ही अनेक द्विपद (मनुष्यों), चतुष्पद (पशुओ), मृग, पशु, पक्षी, सरीसृपो आदि के लिए तथा बहुत से श्रमणों, माहणों एव भिक्षुओ आदि के लिए बहुत–बहुत गुणकारी–हितकारी, लाभकारी सिद्ध होगा।

हे देवानुप्रिय ! यदि वह धर्मोपदेश प्रदेशी के लिए हितकर हो जाता है तो उससे जनपद–देश को भी बहुत लाभ होगा।"

REQUEST FOR GIVING RELIGIOUS SERMON TO THE KING

233. After listening the religious discourse Chitta Saarthi brooded upon it, accepted it, felt happy and satisfied. He feeling deeply inclined towards Dharma, in a solemn tone requested Keshi Kumar Shraman—

"Reverend Sir ! Our king Pradeshi is irreligious upto the fact that he receives taxes from the public but does not properly look after them. He does not make them secured. So the reverend Sir ! In case you deliver a religious sermon to king Pradeshi it will be

beneficial for him and also for men, quadruped, deer, animals, birds, snakes and others It shall be of great benefit for many saints, brahmins, mendicants and others.

Respected Sir ! In case your religious discourse becomes beneficial for king Pradeshi, it shall be for the welfare of the country also "

केशीकुमार श्रमण का उत्तर

२३४. (क) तए णं केसी कुमारसमणे चित्तं सारहिं एवं वयासी–

एवं खलु चउहिं ठाणेहिं चित्ता ! जीवा केवलिपन्नत्तं धम्मं नो लभेज्जा सवणयाए, तं जहा–

(१) आरामगयं वा उज्जाणगयं वा समणं वा माहणं वा णो अभिगच्छइ, णो वंदइ, णो णमंसइ, णो सक्कारेइ, णो सम्माणेइ, णो कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेइ, नो अट्ठाइं हेऊइं पसिणाइं कारणाइं वागरणाइं पुच्छइ, एएणं ठाणेणं चित्ता ! जीवा केवलिपन्नत्तं धम्मं नो लभंति सवणयाए।

(२) उवस्सयगयं समणं वा तं चेव जाव एतेण वि ठाणेणं चित्ता ! जीवा केवलिपन्नत्तं धम्मे नो लभंतिं सवणयाए।

(३) गोयरग्गगयं समणं वा माहणं वा जाव नो पज्जुवासइ, णो विउलेणं असण–पाण–खाइम–साइमेणं पडिलाभइ, णो अट्ठाइं जाव पुच्छइ, एएणं ठाणेणं चित्ता ! केवलिपन्नत्तं धम्मं नो लभइ सवणयाए।

(४) जत्थ वि य णं समणेण वा माहणेण वा सद्धिं अभिसमागच्छइ, तत्थ वि णं हत्थेण वा वत्थेण वा छत्तेण वा अप्पाणं आवरित्ता चिट्ठइ, नो अट्ठाइं जाव पुच्छइ, एएण वि ठाणेणं चित्ता ! जीवे केवलिपन्नत्तं धम्मं णो लभइ सवणयाए।

एएहिं च णं चित्ता ! चउहिं ठाणेहिं जीवे णो लभइ केवलिपन्नत्तं धम्मं सवणयाए।

२३४. (क) चित्त सारथी की हार्दिक भावना सुनने के पश्चात् केशीकुमार श्रमण ने इस प्रकार कहा–

"हे चित्त ! कोई भी जीव, निश्चय ही इन चार कारणो से केवलिभाषित धर्म को सुनने का लाभ प्राप्त नहीं कर पाता है। वे चार कारण इस प्रकार हैं–



चित्र परिचय-९

Illustration No. 9

धर्म-प्राप्ति की सुलभता-दुर्लभता

केशीकुमार श्रमण ने चित्त सारथी से कहा ''हे चित्त ! निम्न चार कारणो से जीव को धर्म की प्राप्ति सुलभ तथा चार कारणो से दुर्लभ होती है-

(१) जो उद्यान आदि मे स्थित श्रमणो के सम्मुख जाकर उन्हे वन्दना आदि कर पर्युपासना करता है, उसे धर्म की प्राप्ति सुलभ है। जो दूर से ही देखकर अकडकर खडा रह जाता है, उसे धर्म की प्राप्ति सुलभ नही।

(२) जो उपाश्रय मे स्थित मुनियो को वन्दना कर धर्म का श्रवण करता है, उसे धर्म की प्राप्ति सुलभ है। जो उनके निकट ही नही जाता, दूर-दूर रहता है, उसे धर्म की प्राप्ति दुर्लभ है।

(३) गोचरी के लिए आये हुए श्रमणो को जो भक्तिपूर्वक आहारदान करता है, उसे धर्म की प्राप्ति सुलभ है। जो नही देता, उसे दुर्लभ है।

(४) श्रमण आदि मार्ग मे मिलने पर जो उन्हे वन्दना-नमस्कार करता है, उसे धर्म की प्राप्ति सुलभ है। जो दीवार या छत्ता आदि से स्वय को छिपाने की चेष्टा करता है, उसे धर्म की प्राप्ति दुर्लभ है।''

सूत्र २३४, पृष्ठ २९४-२९८

OPPORTUNITIES TO BENEFIT FROM A RELIGIOUS DISCOURSE

Keshi Kumar Shraman said to Chitta Sarathi—"O Chitta ! Following are the four reasons that provide an opportunity of gaining benefit from a religious discourse and four that do not—

(1) A person who bows to and honours Shramans stationed at a garden or other such place gets the opportunity of gaining bebefit from a religious discourse One who egotistically stands at a distance does not

(2) A person who bows to and honours and listens attentively to Shramans stationed at an upashraya gets the opportunity of gaining bebefit from a religious discourse One who remains away and avoids their proximity does not

(3) A person who offers food with devotion to Shramans who have come seeking alms gets the opportunity of gaining bebefit from a religious discourse One who avoids doing so does not

(4) A person who bows to and honours the Shramans he meets on the way gets the opportunity of gaining bebefit from a religious discourse One who hides behind a wall or an umbrella does not"

—Sutra 234 , pp 294-298

(१) जो आराम (बाग) में अथवा उद्यान में ठहरे हुए श्रमण या माहन के सन्मुख नहीं जाता है, मधुर वचनों से उनकी स्तुति नहीं करता है, मस्तक नवाकर उनको नमस्कार नही करता है, सामने देखकर आसन से उठकर उनका सत्कार नहीं करता है, उनका सम्मान नहीं करता है तथा कल्याणस्वरूप, मगलस्वरूप, देवस्वरूप, विशिष्ट ज्ञानस्वरूप मानकर जो उनकी पर्युपासना नहीं करता है। जो **अर्थ**–जीवाजीवादि पदार्थों को, **हेतुओं**–(मुक्ति के उपायों) को जानने की इच्छा से **प्रश्नों** को, **कारणों** (ससारबन्ध के कारणों) को, **व्याख्याओं**–(तत्त्वो का पूर्ण ज्ञान करने के लिए उनके स्वरूप) को नहीं पूछता है, तो हे चित्त ! वह जीव केवलिप्ररूपित धर्म को सुन नहीं पाता है।

(२) उपाश्रय में स्थित श्रमण आदि का वन्दन, नमन, सत्कार, सम्मान आदि करने के निमित्त जो उनके सन्मुख नही जाता यावत् उनसे व्याकरण (तत्त्व का विवेचन) नहीं पूछता तो इस कारण भी हे चित्त ! वह जीव केवलिभाषित धर्म को सुन नहीं पाता है।

(३) गोचरी–भिक्षा के लिए गाँव में आये हुए श्रमण, माहन का सत्कार आदि करने के निमित्त जो उनके समक्ष नही जाता यावत् उनकी पर्युपासना नहीं करता तथा उन्हे विपुल एषणीय अशन, पान, खाद्य, स्वाद्य आहार से प्रतिलाभित नही करता (आहारदान नहीं करता) एवं शास्त्र के अर्थ यावत् व्याख्या को उनसे नही पूछता, तो हे चित्त ! ऐसा जीव भी केवली भगवान द्वारा प्ररूपित धर्म को सुन नहीं पाता है।

(४) कहीं मार्ग मे (अचानक) श्रमण या माहन का सुयोग मिल जाने पर भी वहाँ अपने आप को छिपाने के लिए अथवा 'पहचाना न जाऊँ', इस विचार से हाथ से, वस्त्र से, छत्ते से स्वय को आवृत्त कर लेता है, ढाँक लेता है एव उनसे अर्थ आदि नही पूछता है, तो इस कारण से भी हे चित्त ! वह जीव केवलिभाषित धर्मश्रवण करने का अवसर प्राप्त नहीं कर सकता है।

हे चित्त ! उक्त चार कारणो से जीव केवलिभाषित धर्मश्रवण करने का लाभ नही ले पाता है।"

REPLY OF KESHI KUMAR SHRAMAN

234. (a) After listening to the inner desire of Chitta Saarthi, Keshi Kumar Shraman said—

"O Chitta ! Certainly a Jiva (living being) cannot get the benefit of listening to the philosophy propagated by the omniscient due to four reasons. They are as under—

(1) A person does not go to the Shraman or an ascetic staying in a garden or an orchard. He does not praise them with sweet words.

He does not bow to them, does not honour them by getting up from his seat at their sight. He does not respect them and does not consider them working for welfare. He does not regard auspicious, god-like and treasure of excellent knowledge for all and accepting them as such does not serve them with devotion. He does not ask question to know **Arth**—the interpretation of living being and non-living being; to know **Hetus**—the methods of attaining liberation; to know the **Vyakhyas**—complete knowledge about **Tattvas**—the basic concepts. O Chitta ! Such a person cannot listen the philosophy propounded by omniscient

(2) A person does not go to the Upashreya to bow, to greet, to honour and to show respect to the Shramans (saints) staying there. He does not make detailed enquiry from them about the basic elements (Tattvas). In view of it, O Chitta ! He is not able to hear the philosophy propounded by omniscient

(3) A person does not go before a Shraman or an ascetic who has come to the village in search of food and water. He does not honour them. He does not serve them with devotion He does not offer them food, liquids, sweets and substances that cause fragrance (He does not give food in charity). He does not ask meaning and underlying idea of scriptures the detailed commentary of the aphorism therein. O Chitta ! Such a person cannot listen the philosophy propagated by the omniscient.

(4) A person covers his face with hand, clothes or umbrella when suddenly he sees a Shraman or an ascetic in order to conceal his presence from them so that he may not be recognized by them. He does not ask any question pertaining to religion from them. O Chitta ! Such a person cannot listen religious discourse based on word of omniscient.

O Chitta ! Due to four reasons mentioned above a person cannot get the benefit of listening the religious discourse."

धर्म-प्राप्ति के चार कारण

(ख) चउहिं ठाणेहिं चित्ता ! जीवे केवलिपन्नत्तं धम्मं लभइ सवणयाए, तं जहा–

(१) आरामगयं वा उज्जाणगयं वा समणं वा माहणं वा वंदइ नमंसइ जाव पज्जुवासइ अट्ठाइं जाव पुच्छइ, एएणं वि जाव लभइ सवणयाए एवं,

(२) उवस्सयगयं,

(३) गोयरग्गगयं समणं वा जाव पज्जुवासइ विउलेणं जाव पडिलाभेइ, अट्ठाइं जाव पुच्छइ एएण वि,

(४) जत्थ वि य णं समणेण वा माहणेण वा अभिसमागच्छइ तत्थ वि य णं णो हत्थेण वा जाव आवरेत्ताणं चिट्ठइ, एएण वि ठाणेणं चित्ता ! जीवे केवलिपन्नत्तं धम्मं लभइ सवणयाए।

तुज्झं च णं चित्ता ! पएसी राया आरामगयं वा ते चेव सव्वं भाणियव्वं आइल्लएणं गमएणं जाव अप्पाणं आवरेत्ता चिट्ठइ, तं कहं णं चित्ता ! पएसिस्स रन्नो धम्ममाइक्खिस्सामो ?

(ख) "हे चित्त चार कारणो से जीव केवलिभाषित धर्म को सुनने का अवसर प्राप्त कर सकता है। वे चार कारण इस प्रकार हैं–

(१) आराम मे अथवा उद्यान मे पधारे हुए श्रमण या माहन को देखकर जो वन्दन करता है, नमस्कार करता है यावत् उनकी पर्युपासना करता है, तत्त्वो को पूछता है, तो वह जीव केवलिप्ररूपित धर्म को सुनने का अवसर प्राप्त कर सकता है।

(२) इसी प्रकार जो जीव उपाश्रय मे रहे हुए श्रमण या माहन को वन्दन-नमस्कार करता है यावत् उनकी पर्युपासना करता हुआ तत्त्व आदि धर्म पूछता है तो वह केवलिप्ररूपित धर्म को सुन सकता है।

(३) इसी प्रकार जो जीव गोचरी–भिक्षाचर्या के लिए आये हुए श्रमण या माहन को वन्दन-नमस्कार करता है यावत् उनकी पर्युपासना करता है तथा विपुल आहार आदि से उन्हें प्रतिलाभित करता है, उनसे धर्म के, शास्त्र के तत्त्वों आदि को पूछता है, वह जीव इस निमित्त से भी केवलिभाषित धर्म को सुनने का अवसर प्राप्त कर सकता है।

(४) इसी प्रकार हे चित्त ! जो जीव जहाँ कहीं श्रमण या माहन का सुयोग मिलने पर हाथों, वस्त्रो, छत्ता आदि से स्वय को छिपाता नहीं है, (अपितु उनके सत्संग मे आता है) वह जीव केवलिप्रज्ञप्त धर्म सुनने का लाभ प्राप्त कर सकता है।

लेकिन, हे चित्त ! तुम्हारा प्रदेशी राजा जब उद्यान में आये हुए श्रमण या माहन के सन्मुख ही नहीं आता है यावत् अपने को छिपा लेता है, तो फिर प्रदेशी राजा को मैं कैसे धर्म का उपदेश दे सकूँगा ?"

FOUR CAUSES OF LEARNING DHARMA

(b) "O Chitta ! Due to four reasons, one can get a chance to listen the scriptures. They are as under—

(1) A person bows to and honour the Shraman or an ascetic staying in the garden or an orchard whenever he sees them. He serves with devotion He asks questions to seek clarification. Such a person can listen religious discourse whenever such an occasion arises

(2) Similarly a person bows to the Shraman or ascetic staying in Upashraya He honours him upto serves him with devotion. He asks questions about religious faith and others. Such a person can listen the philosophy propagated by omniscient.

(3) A person bows to the Shraman or ascetic who has come in search of food according to his restraints (Gochari). He honours him upto serves him with devotion He offers him sufficient food and other necessities He makes enquiries about religion and its basic principles. So he can find opportunity to listen the philosophy propagated by omniscient

(4) Further O Chitta ! A person when he sees a Shraman or Mahan (ascetic) per chance, and does not conceal himself with his hands, clothes, umbrella and others but comes near him, he also can get the benefit of listening the philosophy propagated by the omniscient

But O Chitta ! Your king Pradeshi does not come near the Shraman or Mahan staying in the garden and conceals himself. So how can I deliver spiritual discourse to king Pradeshi "

राजा प्रदेशी को लाने हेतु चित्त की युक्ति

२३५. तए णं से चित्ते सारही केसिकुमारसमणं एवं वयासी–एवं खलु भंते ! अण्णया कयाइं कंबोएहिं चत्तारि आसा उवणयं उवणीया, ते मए पएसिस्स रण्णो अन्नया चेव उवणीया, तं एएणं खलु भंते ! कारणेणं अहं पएसिं रायं देवाणुप्पियाणं अंतिए हव्वमाणेस्सामो, तं मा णं देवाणुप्पिया ! तुब्भे पएसिस्स रन्नो धम्ममाइक्खमाणा गिलाएज्जाह, अगिलाए णं भंते ! तुब्भे पएसिस्स रण्णो धम्ममाइक्खेज्जाह, छंदेणं भंते ! तुब्भे पएसिस्स रण्णो धम्ममाइक्खेज्जाह।

तए णं से केसी कुमारसमणे चित्तं सारहिं एवं वयासी—अवि या इं चित्ता ! जाणिस्सामो।

तए णं से चित्ते सारही केसिं कुमारसमणं वंदइ नमंसइ, जेणेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, चाउग्घंटं आसरहं दुरूहइ, जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए।

२३५. केशीकुमार श्रमण के वचन सुनकर चित्त सारथी ने निवेदन किया—"हे भदन्त ! किसी समय कंबोज देशवासियों ने चार सुन्दर घोडे उपहार रूप मे भेट किये थे। मैने उनको प्रदेशी राजा के पास भिजवा दिया था, तो भगवन् ! इन घोडो के बहाने मै शीघ्र ही प्रदेशी राजा को आपके पास लाऊँगा। तब हे देवानुप्रिय ! आप प्रदेशी राजा को धर्मकथा कहते हुए लेशमात्र भी ग्लानि अनुभव मत करना—खेदखिन्न या उदासीन न होना। हे भदन्त ! आप अग्लानभाव से(सहज प्रसन्नभावपूर्वक सकोचरहित होकर) प्रदेशी राजा को धर्मोपदेश देना। हे भगवन् ! आप अपनी इच्छानुसार प्रदेशी राजा को धर्म का कथन करना।"

तब केशीकुमार श्रमण ने चित्त सारथी से कहा—"हे चित्त ! अवसर—प्रसग आने पर देखा जायेगा।"

तत्पश्चात् चित्त सारथी ने केशीकुमार श्रमण को वन्दना की, नमस्कार किया और फिर जहॉ चार घटो वाला अश्व—रथ खडा था, वहाँ आकर उस चार घटो वाले अश्व—रथ पर आरूढ हुआ। जिस दिशा से आया था उसी ओर लौट गया।

THE PROPOSAL OF CHITTA TO BRING KING PRADESHI

235. After hearing this reply of Keshi Kumar Shraman Chitta Saarthi said—"Reverend Sir ! Sometimes the residents of Kamboj had presented four beautiful horses as a gift I had sent them to king Pradeshi. On pretext of testing those horses, I shall soon bring king Pradeshi to you. At that time while giving spiritual discourse to him, kindly do not have even the slightest dejection and do not feel sad. Reverend Sir ! You lecture him in a happy mood without any doubt in your mind. You explain to him the religious philosophy in a normal way."

Then Keshi Kumar Shraman Replied—"O Chitta ! I shall see to as and when the occasion arises."

Thereafter Chitta Saarthi bowed to Keshi Kumar Shraman, praised him and then came to the place where four-belled horse-

driven chariot was standing. He got into it and came back (to his house).

राजा प्रदेशी का उद्यान में आगमन

२३६. (क) तए णं से चित्ते सारही कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए फुल्लुप्पल-कमलकोमलुम्मिलियंमि अहापंडुरे पभाए कयनियमावस्सए सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते साओ गिहाओ णिग्गच्छइ, जेणेव पएसिस्स रन्नो गिहे, जेणेव पएसी राया तेणेव उवागच्छइ, पएसिं रायं करयल जाव त्ति कट्टु जएणं विजएणं वद्धावेइ, एवं वयासी-

एवं खलु देवाणुप्पियाणं कंबोएहिं चत्तारि आसा उवणयं उवणीया, ते य मए देवाणुप्पियाणं अण्णया चेव विणइया। तं एह णं सामी ! ते आसे चिट्ठं पासह।

तए णं से पएसी राया चित्तं सारहिं एवं वयासी-गच्छाहि णं तुमं चित्ता ! तेहिं चेव चउहिं आसेहिं आसरहं जुत्तामेव उवट्ठवेहि जाव पच्चप्पिणाहि।

२३६. (क) तत्पश्चात् कल-(दूसरे दिन) रात्रि बीत जाने और प्रभात हो जाने पर जब सरोवरो मे कोमल उत्पल कमल विकसित हो चुके और धूप भी सुनहरी हो गई, तब नित्य के आवश्यक कार्यों से निवृत्त होकर शरीर चिन्ता से निवृत्त होकर सामायिक-प्रतिक्रमणादि करके तेजयुक्त सहस्ररश्मि दिनकर के चमकने के बाद चित्त सारथी अपने घर से निकला, जहाँ प्रदेशी राजा का भवन था, वहाँ आया, आकर दोनो हाथ जोडकर जय-विजय शब्दो से प्रदेशी राजा का अभिनन्दन किया और इस प्रकार बोला-

"स्वामिन् ! कबोज देशवासियो ने देवानुप्रिय के लिए जो चार घोडे उपहारस्वरूप भेजे थे, उन्हे मैने आप देवानुप्रिय के योग्य प्रशिक्षित कर दिया है। अतएव आज आप पधारिए और उन घोडो की गति आदि चेष्टाओ का निरीक्षण कीजिए।"

तब प्रदेशी राजा ने चित्त सारथी से कहा-"हे चित्त ! तुम जाओ और उन्ही चार घोडो को रथ मे जोतकर अश्व-रथ को यहाँ लाओ, रथ आने की सूचना मुझे दो।"

ARRIVAL OF KING PRADESHI IN THE GARDEN

236. (a) Thereafter, (on the following day) after sunrise while the soft Utpal lotus had blown and it was bright sunshine, he after undergoing his daily routine and going to the toilet, did his Samayik (prayer and meditation) and Pratikraman (the confession) and other such religious duties. He then came out of his house when the sun had fully brightened up. He came to the palace of king Pradeshi. He praised him with folded hands and said—

"Me lord ! Four horses that were given as a gift by the people of Kamboj to your honour, have been trained by me. So you please come and test their gait, their speed and other activities."

Then king Pradeshi told Chitta Saarthi—"O Chitta ! You go and bring here those four horses driving a chariot. After compliance, you inform me."

(ख) तए णं से चित्ते सारही पएसिणा रन्ना एवं वुत्ते समाणे हट्ठतुट्ठ जाव हियए उवट्ठवेइ, एयमाणत्तियं पच्चप्पिणइ।

तए णं से पएसी राया चित्तस्स सारहिस्स अंतिए एयमट्ठं सोच्चा णिसम्म हट्ठतुट्ठ जाव अप्पमहग्घाभरणालंकियसरीरे साओ गिहाओ निग्गच्छइ। जेणामेव चाउग्घंटे आसरहे तेणेव उवागच्छइ, चाउग्घंटं आसरहं दुरूहइ, सेयवियाए नगरीए मज्झंमज्झेणं णिग्गच्छइ।

तए णं से चित्ते सारही तं रहं णेगाइं जोयणाइं उब्भामेइ। तए णं से पएसी राया उण्हेण य तण्हाए य रहवाएणं परिकिलंते समाणे चित्तं सारहिं एवं वयासी–चित्ता ! परिकिलंते मे सरीरे, परावत्तेहि रहं।

तए णं से चित्ते सारही रहं परावत्तेइ। जेणेव मियवणे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, पएसिं रायं एवं वयासी–एस णं सामी ! मियवणे उज्जाणे, एत्थ णं आसाणं समं किलामं सम्मं अवणेमो।

तए णं से पएसी राया चित्तं सारहिं एवं वयासी–एवं होउ चित्ता !

(ख) प्रदेशी राजा का उत्तर सुनकर चित्त सारथी हर्षित एव सन्तुष्ट हुआ। उसने अश्व-रथ उपस्थित किया और रथ ले आने की सूचना राजा को दी।

तत्पश्चात् वह प्रदेशी राजा चित्त सारथी की बात सुनकर हृष्ट-तुष्ट हुआ। स्नानादि क्रियाओ से निवृत्त होकर मूल्यवान् आभूषणो से शरीर को अलकृत करके अपने भवन से निकला और जहाँ चार घटो वाला अश्व-रथ था, वहाँ आया। उस चार घटों वाले अश्व-रथ पर आरूढ होकर सेयविया नगरी के मध्य से बाहर निकला।

चित्त सारथी ने उस रथ को अनेक योजनों तक अर्थात् बहुत दूर तक बड़ी तेज चाल से दौडाया–चलाया। तब गरमी, प्यास और रथ की चाल से लगती धूल भरी हवा से व्याकुल, परेशान, खिन्न होकर प्रदेशी राजा ने चित्त सारथी से कहा–"हे चित्त ! मेरा शरीर बहुत थक गया है। रथ को वापस लौटा लो।"

तब चित्त सारथी ने रथ को लौटाया, जहाँ मृगवन उद्यान था, वहाँ ले आया। वहाँ आकर प्रदेशी राजा से कहा-"हे स्वामिन् ! यह अपना मृगवन उद्यान है, (आप कहें तो) यहाँ रथ को रोककर हम घोडो के श्रम और अपनी थकान को अच्छी तरह दूर कर ले ?"

प्रदेशी राजा ने कहा-"हे चित्त ! ठीक है, ऐसा ही करो।"

(b) Chitta Saarthi felt happy and satisfied at the reply of king Pradeshi He brought the horse-driven chariot and informed the king about it.

King Pradeshi felt happy and satisfied at this information. He took his bath, decorated himself with costly ornaments and then came out from his palace. He came to the place where four-belled horse-driven chariot was parked. He got into the chariot and passing through Seyaviya town, he came out of it.

Chitta Saarthi drove the chariot for many miles at a very fast speed. Then king Pradeshi, feeling dizzy due to heat, thirst and dirty winds, told Chitta Saarthi—"O Chitta ! I am feeling very much tired. So please take back the chariot."

Then Chitta Saarthi brought back the chariot to Mrigavan garden He then told king Pradeshi—"Respected Sir ! Here is Mrigavan garden. If you say so, we may stop the chariot and take rest to remove fatigue We may also allow the horses to take rest after such a great performance"

King Pradeshi told—"O Chitta ! Yes, do as you please"

केशीकुमार श्रमण को देखकर राजा प्रदेशी का चिन्तन

२३७. तए णं से चित्ते सारही जेणेव मियवणे उज्जाणे, जेणेव केसिस्स कुमारसमणस्स अदूर-सामंते तेणेव उवागच्छइ, तुरए णिगिण्हेइ, रहं ठवेइ, रहाओ पच्चोरुहइ, तुरए मोएति, पएसिं रायं एवं वयासी-एह णं सामी ! आसाणं समं किलामं सम्मं अवणेमो।

तए णं से पएसी राया रहाओ पच्चोरुहइ, चित्तेण सारहिणा सद्धिं आसाणं समं किलामं सम्मं अवणेमाणे पासइ जत्थ केसीकुमारसमणं महइमहालियाए महच्चपरिसाए मज्झगए महया सद्देणं धम्ममाइक्खमाणं। पासइत्ता इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था।

जड्डा खलु भो ! जड्डं पज्जुवासंति। मुंडा खलु भो ! मुंडं पज्जुवासंति। मूढा खलु भो ! मूढं पज्जुवासंति। अपंडिया खलु भो ! अपंडियं पज्जुवासंति। निव्विण्णाणा खलु भो ! निव्विण्णाणं पज्जुवासंति।

से केस णं एस पुरिसे जड्डे मुंडे मूढे अपंडिए निव्विण्णाणे, सिरीए हिरीए उवगए उत्तप्पसरीरे। एस णं पुरिसे किमाहारमाहारेइ ? किं परिणामेइ ? किं खाइ, किं पियइ, किं दलइ, किं पयच्छइ ? जं णं एस एमहालियाए मणुस्सपरिसाए मज्झगए महया सद्देणं बूयाए। एवं संपेहेइ चित्तं सारहिं एवं वयासी–

चित्ता ! जड्डा खलु भो ! जड्डं पज्जुवासंति जाव बूयाए, साए वि णं उज्जाणभूमीए नो संचाएमि सम्मं पकामं पवियरित्तए !

२३७. (राजा के 'हाँ' कहने पर) चित्त सारथी ने मृगवन उद्यान की ओर रथ को मोडा और फिर उस स्थान पर आया जो केशीकुमार श्रमण के निवास-स्थान के पास था। वहाँ घोडों को रोका, रथ को खडा किया, रथ से उतरा और फिर घोडो को खोलकर-छोडकर प्रदेशी राजा से कहा-"हे स्वामिन् ! हम यहाँ घोडो के श्रम और अपनी थकान को दूर कर लें।"

चित्त की बात सुनकर प्रदेशी राजा रथ से नीचे उतरा और चित्त सारथी के साथ घोडो की थकावट और अपनी व्याकुलता को मिटाते हुए (छाया मे टहलते हुए) उस ओर देखा जहाँ केशीकुमार श्रमण अतिविशाल परिषद् के बीच बैठकर उच्च गम्भीर घोष से धर्मोपदेश कर रहे थे। यह देखकर उसे मन-ही-मन यह विचार एव सकल्प उत्पन्न हुआ-

'जड (मूर्ख) ही जड की उपासना करते है ! मुड (मद बुद्धि) ही मुड की उपासना करते है ! मूढ (बुद्धिहीन) ही मूढों की उपासना करते हैं ! अपडित (अल्पज्ञानी) ही अपंडित की उपासना करते है ! और अज्ञानी (अनपढ) ही अज्ञानी की उपासना-(उपासना-पास जाना, सगति करना, उनसे वार्त्तालाप करना और उनका सम्मान करना) करते हैं।

परन्तु यह कौन पुरुष है जो जड, मुड, मूढ, अपडित और अज्ञानी होते हुए भी श्री (दिव्यता), ह्री (प्रभाव) से सम्पन्न है, शारीरिक काति (तेज-ओज) से सुशोभित है? यह पुरुष किस प्रकार का आहार करता है? किस रूप मे खाये हुए भोजन को परिणमाता है? यह क्या खाता है, क्या पीता है, लोगो को क्या देता है, विशेष रूप से उन्हें क्या वितरित करता है-बाँटता है-समझाता है? यह पुरुष इतने विशाल मानव-समूह के बीच बैठकर ऐसी गम्भीर ध्वनि में जोर-जोर से क्यों बोल रहा है?' उसने ऐसा विचार किया और चित्त सारथी से पूछा-

"चित्त ! (संसार में) जड पुरुष ही जड की उपासना करते हैं (आदि)। परन्तु यह कौन है जो बहुत प्रभावशाली दीखता है। जो विशाल जनता के समक्ष इतनी ऊँची ध्वनि से बोल रहा है ? यह क्या खाता है, क्या पीता है ? इसके कारण हम अपनी ही उद्यान-भूमि मे भी इच्छानुसार भ्रमण नहीं कर सकते है।"

THOUGHTS OF KING PRADESHI AT THE SIGHT OF KESHI KUMAR SHRAMAN

237. At the affirmative reply of king Pradeshi Chitta Saarthi turned the chariot towards Mrigavan garden and then he came to a place near the place of stay of Keshi Kumar Shraman. He stopped the horses, halted the chariot and then let loose the horses. He then told king Pradeshi—"Me lord ! Let us remove here over fatıgue (by taking rest) and also remove the fatigue of the horses."

Then kıng Pradeshi came down. He strollıng with Chitta Saarthi in the shade ın order to remove his fatigue, saw Keshi Kumar Shrman deliverıng a religious talk to a large gathering in a loud serene voıce. At this sight, he thought and determined as under—

'Only fools attend to fools. The persons with abnormal ıntellect serve those whose ıntellect is at a pretty low level. A person with undeveloped intellect attends to the dunce. A person wıth little knowledge serves a person with little knowledge An illiterate serves an ılliterate—goes to him, gives him company; talks to him and respects hım

Who is thıs person who is a fool, whose level of ıntellect ıs pretty low, who ıs wıthout knowledge, who ıs illiterate, but who still has divinity and commands influence who has beautıful structure of the body. What type of food does he take ? In what form does he absorb the food ? What does he drink, what does he eat, what does he gıve (to the people) ın charıty, what does he distribute amongst the people, what does he explaın to the people ? This person ıs in a large gathering. He is speaking in a loud voice which is solemn ?' Thinking this, he asked Chıtta Saarthi.

Chıtta ! Only the fools serve the fools in this world and suchlıke (above mentioned). But who is this person who appears to be very effectıve (influential). He is addressing a large gathering ın a loud voice. What does he eat and what does he drink ? Because of his presence we cannot stroll in our garden according to our desire."


तेज धूप से थक गया राजा

चित्र परिचय-८

Illustration No. 8

प्रदेशी राजा का उद्यान में आगमन

दृश्य १

प्रदेशी राजा को उद्यान मे ले जाने के लिए चित्त सारथी प्रभात होते ही प्रशिक्षित चार घोडो का रथ सजाकर राजमहल के बाहर पहुँच गया और राजा को सूचना दी- ''नव- प्रशिक्षित अश्वो से सजा रथ तैयार है।'' सूचना पाकर राजा तैयार होकर महलो से नीचे उतर आया।

दृश्य २

सूर्योदय की वेला मे राजा प्रदेशी रथ मे आरूढ हुआ और चित्त सारथी अत्यन्त तीव्र गति से घोडो को दौडता रहा। धूप तेज हो जाने पर राजा थक गया।

दृश्य ३

घूमते -घूमते बहुत थक जाने पर चित्त सारथी विश्राम के लिए राजा को मृगवन उद्यान मे लाकर एक सघन वृक्ष की छाया मे ठहरा देता है। श्रम दूर करने के लिए राजा छाया मे घूमता है। तभी दूर विशाल परिषद् के बीच उच्च आसन पर विराजमान केशीकुमार श्रमण पर उसकी दृष्टि पडती है तथा उनकी गम्भीर ओजस्वी वाणी सुनाई देती है। राजा ने चित्त सारथी से पूछा 'इस विशाल मानव समूह के बीच बैठे हुए अति गम्भीर ध्वनि से जोर जोर से बोलने वाले ये कौन है ?''

सूत्र २३५ २३७ पृष्ठ २९८ ३०२

ARRIVAL OF KING PRADESHI IN THE GARDEN

SCENE 1

At the dawn Chitta Sarathi came outside the palace with a four horse chariot to drive king Pradeshi to the garden He informed the king—"The chariot with four newly trained horses is ready" On getting this information the king got ready and came down from the palace

SCENE 2

It was early morning when king Pradeshi boarded the chariot Chitta Sarathi drove the chariot with great speed As it got hot due to scorching sun rays the king got tired

SCENE 3

After the long drive when the king got tired Chitta Sarathi brought him to a mango garden and stopped in the shade of a dense tree The king walked around in shade to refresh himself Suddenly he saw Keshi Kumar Shraman sitting on a high seat in a large congregation and heard his deep and commanding voice The king asked Chitta Sarathi—"Who is this person sitting in the midst of such a large congregation and speaking in deep and resonant voice ?"

—Sutras 235-237, pp 298-302

२३८. तए णं से चित्ते सारही पएसी रायं एवं वयासी–एस णं सामी ! पासावच्चिज्जे केसी नामं कुमारसमणे जाइसंपण्णे जाव चउनाणोवगए आधोऽवहिए अण्णजीविए।

तए णं से पएसी राया चित्तं सारहिं एवं वयासी–आहोहियं णं वदासि चित्ता ! अण्णजीवियत्तं णं वदासि चित्ता !

हंता, सामी ! आहोहिअं णं वयामि, अण्णजीवियत्तं णं वयामि सामी !

अभिगमणिज्जे णं चित्ता ! एस पुरिसे ?

हंता ! सामी ! अभिगमणिज्जे।

अभिगच्छामो णं चित्ता ! अम्हे एयं पुरिसं ?

हंता सामी ! अभिगच्छामो।

२३८. तब चित्त सारथी ने प्रदेशी राजा से कहा–"स्वामिन् ! ये पार्श्वापत्य–(भगवान पार्श्वनाथ की परम्परा के अनुगामी) केशीकुमार नामक श्रमण है, जो जाति–सम्पन्न–(उच्चकुलीन) यावत् मतिज्ञान आदि चार ज्ञानों के धारक हैं। ये आधोऽवधिज्ञान (परमावधि से कुछ न्यून विशिष्ट अवधिज्ञान) से सम्पन्न एवं अन्नजीवी है।"

तब आश्चर्यचकित हो प्रदेशी राजा ने चित्त सारथी से कहा–"हे चित्त ! यह पुरुष आधोऽवधिज्ञान–सम्पन्न है और अन्नजीवी है ?"

चित्त–"हाँ स्वामिन् ! ये आधोऽवधिज्ञान–सम्पन्न एवं अन्नजीवी है।"

प्रदेशी–"हे चित्त ! तो क्या यह पुरुष अभिगमनीय है अर्थात् इस पुरुष के पास जाकर बैठना चाहिए ?"

चित्त–"हाँ स्वामिन् ! अभिगमनीय है। इनके पास चलना चाहिए।"

प्रदेशी–"तो फिर, चित्त ! क्या हम इस पुरुष के पास चलें ?"

चित्त–"हाँ स्वामिन् ! चले।"

238. Then Chitta Saarthi told king Pradeshi—"Me lord ! He is Keshi Kumar Shraman of Parshvanath tradition. He belongs to a high caste, good family and possesses four types of knowledge (physical, scriptural and others). His transcendental knowledge is just a little less than the highest knowledge. He lives on food."

Then feeling wonder-struck king Pradeshi asked—"O Chitta ! This person has high transmigratory knowledge and he lives on it ?"

Chitta replied—"Yes me lord ! He has such a knowledge and he lives on food."

King Pradeshi asked—"O Chitta ! Is it then proper to go to him and sit near him (Abhigamaneeya) ?"

Chitta repliled—"Yes Sir ! We should go near him."

King Pradeshi then asked—"Chitta ! Should we then go to him ?"

Chitta replied—"Yes Sir ! We should go to him."

विवेचन–चित्त सारथी ने केशीकुमार श्रमण का परिचय देते हुए कहा है–ये **'अण्णजीवी'** है। **अण्णजीवी**–'अन्नजीवी' शब्द का सामान्य अर्थ है–अन्न के आधार पर जीने वाले। साधारण अन्न खाकर भी ये इतने तेजस्वी है। किन्तु प्रदेशी राजा के अगले प्रश्न के सन्दर्भ मे–**'अण्णो जीवो अण्णं सरीरं'** इसका अर्थ विचार करे तो एक दूसरा भी सकेत निकलता है। चित्त सारथी कहता है–ये **'अण्णजीवी'** है, अर्थात् जीव अन्य है, शरीर अन्य है, इस विचारधारा को मानते है। प्रदेशी राजा जीव और शरीर को एक ही मानता है, इसलिए उसे केशीकुमार श्रमण की विचारधारा जानने/समझने की जिज्ञासा और कुतूहल उत्पन्न होता है। वह अपने तर्क भी देता है जिनका वर्णन अगले सूत्रो में है। अत यहाँ **'अण्णजीवी'** शब्द प्रदेशी के मन मे एक जिज्ञासा पैदा करने वाला बनता है कि ये जीव को शरीर से भिन्न मानते है। बहुश्रुत विद्वान् इस अर्थ–सकेत पर चिन्तन करे।

Elaboration—Chitta Saarthi while introducing Keshi Kumar Shraman said that he is 'Ann Jeevi' The common meaning of this word is to live on food Even after taking ordinary food, he is so bright But with reference to the next question of king Pradeshi—'Anno Jeevo Annam Sareeram', if we think a little deeper, it leads to another interpretation also. Chitta Saarthi says that he is 'Ann Jeevi' It means that 'Jeev (soul) is one entity' and 'Sareer (body) is another entity' This is the philosophy of Keshi Kumar Shraman King Pradeshi considers Jeev (soul) and body as one entity, so he mocks at the philosophy of Keshi Kumar Shraman and there is a curiosity in his mind to know and understand this thought. He also presents his arguments which are mentioned in the later aphorisms. So the words 'Ann Jeevi' creates in the mind of king Pradeshi a curiosity that he (Keshi Kumar Shraman) believes that Jeev (soul) is different from Sareer (body) The scholars may study this interpretation further.

२३९. तए णं पएसी राया चित्तेण सारहिणा सद्धिं जेणेव केसीकुमारसमणए तेणेव उवागच्छइ। केसिस्स कुमारसमणस्स अदूरसामंते ठिच्चा एवं वयासी–तुब्भे णं भंते ! आहोहिया अण्णजीविया ?

तए णं केसी कुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी–पएसी ! से जहाणामए अंकवाणिया इ वा, संखवाणिया इ वा, दंतवाणिया इ वा, सुंकं भंसिउंकामा णो सम्मं पंथं पुच्छइ, एवामेव पएसी ! तुब्भे वि विणयं भंसेउकामो नो सम्मं पुच्छसि।

से णूणं तव पएसी ममं पासित्ता अयमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–जड्डा खलु भो ! जड्डं पज्जुवासंति, जाव पवियरित्तए, से णूणं पएसी अट्ठे समत्थे ?

हंता ! अत्थि।

२३९. चित्त सारथी के साथ प्रदेशी राजा, जहाँ केशीकुमार श्रमण विराजमान थे, वहाँ आया और केशीकुमार श्रमण से कुछ दूर खडे होकर बोला–"हे भदन्त ! क्या आप आधोऽवधिज्ञानधारी हैं ? क्या आप अन्नजीवी है ?"

तब केशीकुमार श्रमण ने प्रदेशी राजा से कहा–"हे प्रदेशी ! जैसे कोई अंकवणिक् (अकरत्न का व्यापारी) अथवा शंखवणिक्, दन्तवणिक्, राज-कर (सरकारी टैक्स) न देने के विचार से सीधा मार्ग नही पूछता (सीधे रास्ते से नही आता), इसी प्रकार हे प्रदेशी ! तुम भी विनयप्रतिपत्ति (विनय-शिष्टाचार) नहीं करने की भावना से प्रेरित होकर मुझसे प्रश्न करने की समुचित रीति से नहीं पूछ रहे हो।

हे प्रदेशी ! मुझे देखकर क्या तुम्हें यह विचार नही हुआ था, कि ये जड-जड की पर्युपासना करते है, यावत् मैं अपनी ही भूमि में स्वेच्छापूर्वक घूम-फिर नहीं सकता हूँ ? प्रदेशी ! क्या मेरा यह कथन सत्य है ?"

प्रदेशी–(चौंककर) "हाँ, आपका कहना सत्य है अर्थात् मेरे मन में ऐसा विचार आया था।"

239. King Pradeshi came with Chitta Saarthi to the place where Keshi Kumar Shraman was present. He came there, stopped at a distance and said—"O the blessed ! Are you possessing Avadhi Jnan limited to a particular area ? Are you Ann Jeevi ?"

Then Keshi Kumar Shraman said to king Pradeshi—"O Pradeshi ! Just as a trader in gems (Ank gems) or in conch, in tusks (ivory) does not ask the direct route (does not follow the direct route) in order to avoid tax, similarly O Pradeshi ! You also in order to avoid gratitude, are not asking question from me in the prescribed proper mamer.

O Pradeshi ! After seeing me, didn't you think that a fool is serving a fool upto that I cannot freely move even in my own land ? Pradeshi ! Is my this statement true ?"

Pradeshi replied—"Yes, it is true. I had thought as such."

पाँच ज्ञान सम्बन्धी चर्चा

२४०. तए णं से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी–से केणट्ठेणं भंते ! तुज्झं नाणे वा दंसणे वा जेणं तुज्झे मम एयारूवं अज्झत्थियं जाव संकप्पं समुप्पण्णं जाणह पासह ?

२४०. तत्पश्चात् प्रदेशी राजा ने केशीकुमार श्रमण से कहा–"भदन्त ! आपको ऐसा कौन-सा ज्ञान और दर्शन प्राप्त है कि जिसके द्वारा आपने मेरे इस प्रकार के आन्तरिक मनोगत भावों को जान लिया, देख लिया ?"

DISCUSSION ABOUT FIVE TYPES OF KNOWLEDGE (JNAN)

240. Then king Pradeshi asked Keshi Kumar Shraman—"Reverend Sir ! What is the Jnan (knowledge) and darshan (perception) that you possess which has enabled you to see and know the thoughts in my mind."

२४१. तए णं से केसीकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी–एवं खलु पएसी ! अम्हं समणाणं निग्गंथाणं पंचविहे नाणे पण्णत्ते, तं जहा–आभिणिबोहियणाणे सुयनाणे ओहिणाणे मणपज्जवणाणे केवलणाणे।

से किं तं आभिणिबोहियनाणे ?

आभिणिबोहियनाणे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा–उग्गओ ईहा अवाए धारणा।

से किं तं उग्गहे ?

उग्गहे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा–नंदीए जाव से त्तं धारणा, से त्तं आभिणिबोहियनाणे।

से किं तं सुयनाणे ?

सुयनाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा–अंगपविट्ठं च, अंगबाहिरं च, सव्वं भाणियव्वं जाव दिट्ठिवाओ।

ओहिणाणं भवपच्चइयं, खओवसमियं जहा णंदीए।

मणपज्जवनाणे दुविहे पण्णत्ते, तं जहा–उज्जुमई य, विउलमई य।

तहेव केवलनाणं सव्वं भाणियव्वं।

तत्थ णं जे से आभिणिबोहियनाणे से णं ममं अत्थि, तत्थ णं जे से सुयनाणे से वि य ममं अत्थि, तत्थ णं जे से ओहिणाणे से वि य ममं अत्थि, तत्थ णं जे से मणपज्जवनाणे से वि य ममं अत्थि, तत्थ णं जे से केवलनाणे से णं ममं नत्थि, से णं अरिहंताणं भगवंताणं।

इच्चेएणं पएसी अहं तव चउव्विहेणं छउमत्थेणं णाणेणं इमेयारूवं अज्झत्थियं जाव समुप्पण्णं जाणामि पासामि।

२४१. तब केशीकुमार श्रमण ने प्रदेशी राजा से कहा–"हे प्रदेशी ! हम निर्ग्रन्थ श्रमणों के शास्त्रों में ज्ञान के पाँच प्रकार बतलाये हैं। वे पाँच प्रकार ये हैं–(१) आभिनिबोधिकज्ञान (मतिज्ञान), (२) श्रुतज्ञान, (३) अवधिज्ञान, (४) मनःपर्यवज्ञान, और (५) केवलज्ञान।"

प्रदेशी–"आभिनिबोधिकज्ञान कितने प्रकार का है ?"

केशीकुमार श्रमण–"आभिनिबोधिकज्ञान चार प्रकार का है–अवग्रह, ईहा, अवाय और धारणा।"

प्रदेशी–"अवग्रह कितने प्रकार का है ?"

केशीकुमार श्रमण–"अवग्रह दो प्रकार का है। इत्यादि धारणा पर्यन्त आभिनिबोधिकज्ञान का विवेचन नंदीसूत्र के अनुसार यहाँ समझना चाहिए।"

प्रदेशी–"श्रुतज्ञान कितने प्रकार का है ?"

केशीकुमार श्रमण–"श्रुतज्ञान दो प्रकार का है, यथा–(१) अगप्रविष्ट, और (२) अंगबाह्य। दृष्टिवाद पर्यन्त श्रुतज्ञान के भेदों का समस्त वर्णन नन्दीसूत्र के अनुसार यहाँ समझ लेना चाहिए।

अवधिज्ञान दो प्रकार का है–(१) भवप्रत्ययिक, और (२) क्षायोपशमिक। इनका विवेचन भी नंदीसूत्र के अनुसार यहाँ जान लेना चाहिए।

मनःपर्यवज्ञान दो प्रकार का है, यथा–(१) ऋजुमति, और (२) विपुलमति।

इसी प्रकार केवलज्ञान का भी वर्णन नंदीसूत्र के अनुरूप करना चाहिए।

इन पाँच ज्ञानों में से आभिनिबोधिकज्ञान, श्रुतज्ञान, अवधिज्ञान और मनःपर्यवज्ञान मुझे प्राप्त है, किन्तु केवलज्ञान प्राप्त नहीं है। वह केवलज्ञान अरिहंत भगवन्तों को होता है।

हे प्रदेशी ! छद्मस्थ को होने वाले इन चार प्रकार के ज्ञानों के द्वारा मैंने तुम्हारे इस प्रकार के अभिप्राय और मनोगत संकल्प को जाना और देखा है।''

241. Then Keshi Kumar Shraman said—"O Pradeshi ! In the scriptures of we, the Nirgranth Shramans there are five types of Jnan (knowledge)—(1) Mati Jnan (sensitive knowledge), (2) Shrut Jnan (scriptural knowledge), (3) Avadhi Jnan (visual knowledge), (4) Manah Paryav Jnan (mental knowledge), and (5) Kewal Jnan (perfect knowledge)."

King Pradeshi asks—"Of how many types is Mati Jnan (sensitive knowledge) ?"

Keshi Kumar Shraman said—"It is of four types—Avagrah, Iha, Avaya, Dharana (In other words perception, conception, judgement and retention respectively)."

Pradeshi asked—"Of how many types is Avagrah (perception) ?"

Keshi Kumar Shraman replied—"Perception is of two types. The description upto Dharana (retention). May be considered as in Nandi Sutra."

Pradeshi asked—"Of how many types is Scriptural knowledge ?"

Keshi Kumar Shraman replied—"Scriptural knowledge is of two types namely—(1) Knowledge of Angas, (2) Kknowledge of scriptures other than Angas (Anga Bahya). The description of types of Shrut Jnan upto Drishtivaad may be considered as in Nandi Sutra.

Avadhi Jnan (visual knowledge) is of two types—(1) Visual knowledge since birth (Bhav Pratyayik), and (2) Visual knowledge other than since birth. Further discussion may be considered as in Nandi Sautra.

Mental knowledge is of two types—(1) Simple mental knowledge (Riju-mati), and (2) Mental knowledge of complex things (Vipul-mati).

Similarly the description of Kewal Jnan (perfect knowledge) may be considered as in Nandi Sutra.

Out of the said five types of Jnan (knowledge), I have Abhinibodhik Jnan (sensitive knowledge), Shrut Jnan (scriptural

knowledge), Avadhi Jnan (visual knowledge) and Manah Paryav Jnan (mental knowledge). But I do not have Kewal Jnan (perfect knowledge). The Kewal Jnan is with Arihants.

O Pradeshi ! I have read your mind and mental thoughts with the help of said four types of knowledge that I in this non-perfect state of knowledge have."

विवेचन—सूत्र मे आभिनिबोधिक (मति) ज्ञान आदि पाँच ज्ञानो के नाम और उन ज्ञानो के भिन्न-भिन्न भेदों का नाम उल्लेख करके शेष वर्णन नंदीसूत्र के अनुसार करने का सकेत किया गया है। सचित्र नन्दीसूत्र मे पाँच ज्ञान का विस्तृत वर्णन है। पाठक वहाँ देख ले। सक्षेप मे पाँचो ज्ञान का स्वरूप इस प्रकार है–

(१) **आभिनिबोधिकज्ञान**—जो ज्ञान पाँच इन्द्रियो और मन के द्वारा उत्पन्न हो और सन्मुख आये हुए पदार्थों के स्वरूप को इन्द्रियों के आश्रित होकर जाने, उस बोध को आभिनिबोधिकज्ञान कहते हैं। इसका दूसरा नाम मतिज्ञान भी है।

(२) **श्रुतज्ञान**—शब्द को सुनकर जिससे अर्थ का ज्ञान हो, उसे श्रुतज्ञान कहते है।

(३) **अवधिज्ञान**—इन्द्रिय और मन की अपेक्षा न रखते हुए केवल आत्मा के द्वारा मूर्त्त पदार्थों का साक्षात् बोध करने वाला ज्ञान अवधिज्ञान कहलाता है।

(४) **मनःपर्यवज्ञान**—जिस ज्ञान से मन के परिणामो को प्रत्यक्ष बोध किया जाये, उसे मन पर्यवज्ञान कहते है।

(५) **केवलज्ञान**—जो ज्ञान मन, इन्द्रिय आदि किसी की सहायता के बिना समस्त मूर्त्त-अमूर्त्त (रूपी-अरूपी) ज्ञेय पदार्थों को हाथ की रेखाओ के समान प्रत्यक्ष जानने मे सक्षम हो, वह केवलज्ञान है। यह ज्ञान निरावरण, नित्य और शाश्वत है।

इन पाँच प्रकार के ज्ञानो मे से आदि के दो ज्ञान परोक्ष और अन्तिम तीन ज्ञान प्रत्यक्ष है।

Elaboration—In the aphorism the names of five types of knowledge namely Abhinibodhik Jnan (sensitive knowledge) and others and their sub-types has been mentioned. Further description has been referred to as in Nandi Sutra. In Illustrated Nandi Sutra, the detailed description of five types of knowledge has been given. The reader is advised to see it from there In brief, however, the five types of knowledge is as under—

(1) Abhinibodhik Jnan (Sensitive Knowledge)—This is the knowledge derived by five sense-organs and the mind. Since it knows the things when they appear before the senses-organs, it is called Abhinibodhik Jnan. The other name of this knowledge is Mati Jnan.

(2) Shrut Jnan (Scriptural Knowledge)—This is the knowledge of meaning gained on hearing the word.

(3) Avadhi Jnan (Visual Knowledge)—To know visual things directly through the soul and without any assistance of sense-organs or mind is called Avadhi Jnan.

(4) Manah Paryav Jnan (Mental Knowledge)—The knowledge which helps in reading the modes of the mind directly is called Manah Paryav Jnan

(5) Kewal Jnan (Perfect Knowledge)—The knowledge that helps to know all the visual and non-visual substances, thoughts clearly like the lines on the palms of hand directly and without the assistance of sense-organs or the mind is called Kewal Jnan. This Jnan (knowledge) is without any blockade, is always in existence and is permanent.

Out of the said five types of knowledge the first two are indirect and the last three are direct Jnan.

तज्जीव–तच्छरीरवाद का मंडन–खंडन

२४२. तए णं से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी–अह णं भंते ! इहं उवविसामि ?

पएसी ! एसाए उज्जाणभूमीए तुमंसि चेव जाणए।

तए णं से पएसी राया चित्तेणं सारहिणा सद्धिं केसिस्स कुमारसमणस्स अदूरसामंते उवविसइ। केसिकुमारसमणं एवं वयासी–तुब्भे णं भंते ! समणाणं णिग्गंथाणं एसा सण्णा[१], एसा पइण्णा[२], एसा दिट्ठी[३], एसा रुई[४], एस हेऊ[५], एस उवएसे[६], एस संकप्पे[७], एसा तुला[८], एस माणे[९], एस पमाणे[१०], एस समोसरणे[११] जहा अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, णो तं जीवो तं सरीरं ?

२४२. (पाँच ज्ञान–सम्बन्धी उक्त कथन को खडे–खडे ही सुनने के बाद) प्रदेशी राजा ने केशीकुमार श्रमण से निवेदन किया–"भदन्त ! क्या मैं यहाँ बैठ जाऊँ ?"

केशी–"हे प्रदेशी ! यह उद्यान–भूमि तुम्हारी अपनी है, अतएव बैठने या न बैठने के विषय मे तुम स्वय निर्णय कर सकते हो।"

चित्त सारथी के साथ प्रदेशी केशीकुमार श्रमण के समीप आकर बैठ गया और केशीकुमार श्रमण से इस प्रकार पूछा–"भदन्त ! क्या आप श्रमण निर्ग्रन्थों की ऐसी सज्ञा (ज्ञान) है, प्रतिज्ञा है, दृष्टि है, रुचि है, हेतु है, उपदेश है, संकल्प है, मान्यता है, दृढ धारणा है, प्रत्यक्षादि प्रमाणसंगत मतव्य है और समवसरण है कि जीव अन्य है और शरीर अन्य है ? अर्थात् शरीर और जीव दोनों एक नहीं है ?"

ANALYSIS OF TAJJIV-TACHHAREERVAD (PHILOSOPHY OF ONENESS OF SOUL AND BODY)

242. (After listening the above description about five types of knowledge while standing) King Pradeshi requested—"Reverend Sir ! Can I sit here ?"

Keshi replied—"O Pradeshi ! This garden-land is your own land, so you can yourself decide whether you want to sit or not."

King Pradeshi then sat near Keshi Kumar Shraman along with Chitta Saarthi and said to Keshi Kumar Shraman—"Reverend Sir ! Is it the knowledge (Jnan) of Shraman Nirgranth, their faith, their view-point, their decision, their reasoning, their talk, their definite thought, their belief, their retention, a belief based on direct proof and Samavasaran that Jiva (soul) and Shareer (body) are different and that both are not one."

विवेचन–प्रदेशी राजा केशीकुमार श्रमण से पहले प्रश्न मे सज्ञा आदि ग्यारह शब्दों के द्वारा विविध दृष्टियों से उनकी मान्यता का स्पष्टीकरण पूछता है। इससे प्रतीत होता है, प्रदेशी राजा जिस विचार व दर्शन को मानता था उस विषय का विद्वान् भी था। राजनीति, अर्थशास्त्र के साथ वह दर्शन व न्याय-विषय का भी ज्ञाता था। सक्षेप मे सज्ञा आदि शब्दो का अर्थ इस प्रकार है–

(१) **संज्ञा**–ज्ञान।

(२) **प्रतिज्ञा**–तत्त्व के आधार पर स्थिर पक्ष।

(३) **दृष्टि**–चिन्तन की दिशा।

(४) **रुचि**–श्रद्धायुक्त विचार।

(५) **हेतु**–तत्त्व प्रतिपादन करने की तर्कपूर्ण शैली।

(६) **उपदेश**–लोगों को शिक्षा देने वाले शिक्षात्मक वचन।

(७) **संकल्प**–दृढ धारणा, मान्यता।

(८) **तुला**–निश्चय की कसौटी।

(९-१०) **मान-प्रमाण**–प्रत्यक्ष आदि प्रमाणों से सिद्ध मन्तव्य।

(११) **समवसरण**–स्वीकृत सिद्धान्त।

Elaboration—King Pradeshi in his question by eleven words namely Sanjna and others desires to know the clarification of his belief from different view points This fact indicates that king Pradeshi was a scholar of the thought and philosophy in which he had faith. In addition to

expertise in politicals affairs, economic affairs, he was also expert in philosophical thought and justice.

In brief the meaning of the words Sanjna and others is as under—

(1) **Sanjna**—Jnan (knowledge)

(2) **Pratijna**—Definite approach based on basic element (Tattva)

(3) **Drishti**—The thought direction.

(4) **Ruchi**—Thought based on faith

(5) **Hetu**—Style based on logic in order to prove a basic view point (Tattva).

(6) **Upadesh**—Moral words providing guidance to the people.

(7) **Sankalp**—Belief

(8) **Tula**—Test of their faith

(9-10) **Maan and Praman**—Faith in view point decided on the basis of direct proof and other logic.

(11) **Samavasaran**—Accepted principle.

२४३. तए णं केसी कुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी–पएसी ! अम्हं समणाणं णिग्गंथाणं एसा सण्णा जाव एस समोसरणे, जहा अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, णो तं जीवो तं सरीरं।

२४३. प्रदेशी राजा के प्रत्युत्तर में केशीकुमार श्रमण ने कहा–"हे प्रदेशी ! हम श्रमण निर्ग्रन्थों की ऐसी सज्ञा यावत् समोसरण–सिद्धान्त है कि जीव भिन्न–पृथक् है और शरीर भिन्न है, परन्तु जो जीव है वही शरीर है, ऐसी हमारी धारणा नहीं है।"

243. In reply to king Pradeshi, Keshi Kumar Shraman said—"O Pradeshi ! It is the Sanjna (knowledge) upto Samavasaran (accepted principle) of we, the Nirgranths that Jiva and Shareer (soul and body) are different. It is not our belief that the Jiva (soul) is also the Shareer (body).

विवेचन–इस सूत्र में प्रदेशी राजा अपनी मान्यता बताता है कि मै यह मानता हूँ–'जीव और शरीर एक ही है', ऐसा नही है कि जीव अन्य है, शरीर अन्य है। शरीर समाप्त होते ही जीव भी नष्ट हो जाता है।

प्राचीन दार्शनिक ग्रन्थो में इस मान्यता को 'तज्जीव–तत् शरीर वाद' कहा है। महापडित इन्द्रभूति गौतम भगवान महावीर के समक्ष जब प्रथम बार चर्चा करने के लिए आते है तो उनके मन मे भी यही शका थी कि 'जीव और शरीर दो भिन्न है या एक ही है ?' भगवान तर्क और युक्ति से इसका समाधान

देते हैं। इस मान्यता वाले दर्शन को 'चार्वाक् दर्शन' भी कहा जाता है। सूत्रकृतांग में इस मान्यता का उल्लेख करते हुए बताया है–

"नत्थि पुण्णे व पापं वा, णत्थि लोए इओ परे।
सरीरस्स विणासेणं, विणासो होइ देहिणो॥" –सूत्रकृतांग १/१/१/१२

"न पुण्य है, न ही पाप है। इस लोक से भिन्न दूसरा कोई लोक नही है। शरीर का विनाश होने पर आत्मा–(जीवदेही) का भी विनाश हो जाता है।"

(इसकी विस्तृत चर्चा सूत्रकृताग, श्रुतस्कन्ध २ में है। वहाँ हमने अनेक तर्क व युक्तियो से इस मान्यता का समाधान किया है। पाठक सूत्रकृताग, श्रुतस्कन्ध २ देखे)।

प्रदेशी राजा कहता है–"मेरा दादा भी इसी विचारधारा का था।" इससे यह पता चलता है भारत मे यह नास्तिक विचारधारा बहुत प्राचीनकाल से चली आ रही है। भगवान महावीर के समय मे जिन छह प्रसिद्ध अन्य दार्शनिको का उल्लेख आता है उनमे एक है अजितकेश कम्बल। उसकी मान्यता भी यही थी कि शरीर से भिन्न जीव का अस्तित्त्व नही है। सूत्रकृताग, द्वितीय श्रुतस्कध वृत्ति में अजितकेश कम्बल की इस मान्यता के अनेक तर्क दिये है, उन तर्कों मे कुछ तर्क ऐसे है जिनकी चर्चा यहाँ पर प्रदेशी राजा भी करता है। अजितकेश कम्बल कहता है–"जैसे म्यान से तलवार निकालकर दिखाया जा सकता है कि यह म्यान है, यह तलवार है, उसी प्रकार शरीर से निकालकर आत्मा को अलग दिखाने वाला कोई पुरुष नहीं है।"

जैसे हथेली मे लेकर आँवला दिखाया जा सकता है कि यह हथेली है, यह आँवला है, उसी प्रकार शरीर से भिन्न आत्मा को बताने वाला कोई पुरुष नही है। बौद्ध साहित्य के दीघनिकाय (१/२/४/२२) मे भी अजितकेश कम्बल की इस विचारधारा की चर्चा है। सूत्र २५३-२५४ मे प्रदेशी भी यह तर्क देता है कि तलवार से शरीर के खण्ड-खण्ड करने पर भी मुझे जीव नामक कोई भिन्न तत्त्व दिखाई नही दिया तथा सूत्र २६४ मे आँवले को हथेली पर रखकर दिखाने का भी तर्क उक्त मान्यता के समान है। दीघनिकाय में पायासि और कुमार काश्यप नामक श्रमण की चर्चा भी प्राय' इसी प्रकार के तर्कों पर आधारित है और कुमार काश्यप भी जो समाधान देते है वे कुमार केशी श्रमण के समाधानो से मिलते-जुलते है। इन सबसे यह पता चलता है कि उस युग मे 'जीव' और 'शरीर' एक है या भिन्न है यह काफी चर्चा का विषय रहा था और सभी पक्षो के तर्क-वितर्क प्राय एक समान ही रहते थे। प्रदेशी राजा के प्रश्नों का केशीकुमार श्रमण ने इस प्रसग मे बडा ही तर्कपूर्ण, युक्तिसगत समाधान किया है जिसकी चर्चा अगले सूत्रो में है।

Elaboration—In this aphorism, king Pradeshi expresses his belief. According to his point of view Jiva (soul) and Shareer (body) are same. (they are one entity). It is not true that Jiva and Shareer are different entities. With the extinction of the body (Shareer), the soul (Jiva) also comes to an end.

In ancient philosophical literature, this philosophical thought is known as **'Tajjeev—Tat Shareer Vaad'**. When Gautam (the first

Ganadhar came to Bhagavan Mahavir for the first time for discussion in philosophical aspects, he had a doubt in his mind whether soul and body are different entities or whether they are one and the same substance. Bhagavan Mahavir explains it logically and with his argumentative style. This philosophical belief is known as 'Chaarvaak' In Sutrakritang, this belief has been described in aphorism 1/1/1/12. Therein it is mentioned as under—

"There is no auspicious deed. There is no inauspicious deed. There is no world other than this world With the end of the body, the soul also comes to an end."

(Its detailed discussions is in Sutrakritang, Part 2, i.e second Shrut Skandh.)

King Pradeshi says—"My grandfather was also of this philosophical thought " This description indicates that this school of thought—the non-belief in soul, the Naastik school of thought had been in existence since ancient times. During the presence of Bhagavan Mahavir, there were six other famous schools of thought. One of them was of Ajitkesh Kambal. His belief was also that there is no existence of soul without the body. In the Vritti (commentary) of second Shrut Skandh of Sutrakritang, many arguments in support of this philosophical belief have been mentioned Some of the arguments mentioned therein are those that have been raised by king Pradeshi here Ajitkesh Kambal says that "A sword can be taken out of the sheath and can be shown as two different things—Sword and Sheath But there is no person who can take out soul from the body and show (like the above example) that soul and body are separate entities "

Placing Amla-fruit on the palm of the hand, it can be pointed out that this is palm of the hand and that is the Amla-fruit But there is no person who can in this fashion show that soul is different from the body. In Buddhist literature, in Deeghanikaya (1/2/4/22), this school of thought of Ajitkesh Kambal has been discussed In aphorisms 253-254, king Pradeshi also presents this argument. He says that even by cutting body (of a living person) into pieces, he never found any substance different from it in that process. In aphorism 264, the argument of showing Amla-fruit on hand-palm is also similar to that belief. In Deeghanikaya, the arguments of Payaasi and Kumar Kaashyap Shraman is also based on identical logic. The clarification by Kumar Kaashyap is similar to the arguments of Keshi Kumar Shraman. All these facts indicate that 'soul'

and 'body' are one or that they are two different entities was a topic of hot discussion in that period. The argument of both sides (schools of thought) were almost similar to those mentioned above. Keshi Kumar Shraman gave a befitting reply to the questions of king Pradeshi in this context and that is based on reason and logic. It is further discussed in the aphorism that are to follow.

राजा प्रदेशी का तर्क : पितामह का उदाहरण

२४४. तए णं से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी–

जति णं भंते ! तुब्भं समणाणं णिग्गंथाणं एसा सण्णा जाव समोसरणे जहा अण्णो जीवो अण्णं सरीरं, णो तं जीवो तं सरीरं, एवं खलु ममं अज्जए होत्था, इहेव जंबूदीवे दीवे सेयवियाए णगरीए अधम्मिए जाव सगस्स वि य णं जणवयस्स नो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेति, से णं तुब्भं वत्तव्वयाए सुबहुं पावं कम्मं कलिकलुसं समज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु नरयेसु णेरइयत्ताए उववण्णे।

तस्स णं अज्जगस्स णं अहं णत्तुए होत्था इट्ठे कंते पिए मणुण्णे मणामे थेज्जे वेसासिए संमए बहुमए अणुमए रयणकरंडगसमाणे जीविउस्सविए हिययणंदिजणणे उंबरपुप्फं पिव दुल्लभे सवणयाए, किमंग पुण पासणयाए ? तं जति णं से अज्जए ममं आगंतुं वएज्जा–

एवं खलु नत्तुया ! अहं तव अज्जए होत्था, इहेव सेयवियाए नयरीए अधम्मिए जाव नो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेमि, तए णं अहं सुबहुं पावं कम्मं कलिकलुसं समज्जिणित्ता नरएसु उववण्णे, तं मा णं नत्तुया ! तुमं पि भवाहि अधम्मिए जाव नो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेहि, मा णं तुमं पि एवं चेव सुबहुं पावकम्मं जाव उववज्जिहिसि।

तं जइ णं से अज्जए ममं आगंतुं वएज्जा तो णं अहं सद्दहेज्जा, पत्तिएज्जा, रोएज्जा जहा अन्नो जीवो अन्नं सरीरं, णो तं जीवो तं सरीरं। जम्हा णं से अज्जए ममं आगंतुं नो एवं वयासी। तम्हा सुपइट्ठिया मम पइन्ना समणाउसो ! जहा तज्जीवो तं सरीरं।

२४४. तब केशीकुमार श्रमण से प्रदेशी राजा ने कहा–

"हे भदन्त ! यदि आप श्रमण निर्ग्रन्थों की ऐसी संज्ञा–सिद्धान्त है कि जीव भिन्न है और शरीर भिन्न है, किन्तु ऐसी मान्यता नही है कि जो जीव है वही शरीर है, तो फिर बतायें– मेरे पितामह, जो इसी जम्बूद्वीप नामक द्वीप की सेयविया नगरी में अधार्मिक यावत् राज–कर लेकर भी अपने जनपद का भलीभाँति पालन, रक्षण नहीं करते थे, वे आपके

कथनानुसार तो अत्यन्त पापकर्मों को उपार्जित करके मृत्यु प्राप्त कर किसी एक नरक में नारक रूप से उत्पन्न हुए हैं।

उन पितामह का मैं चहेता, बहुत प्रिय, मनोज्ञ, अतीव प्रिय, विश्वासपात्र, सभी कार्य करने में माना हुआ तथा कार्य करने के बाद भी अनुमत, रत्नकरंडक (आभूषणों की पेटी) के समान प्रिय, जीव के श्वासोच्छ्वास के समान अभिन्न, हृदय में आनन्द उत्पन्न करने वाला, गूलर के फूल के समान, गूलर का नाम सुनना भी दुर्लभ है तो फिर उसके दर्शन की बात ही क्या है ! ऐसा प्रिय पौत्र हूँ। इसलिए यदि मेरे पितामह आकर मुझसे इस प्रकार कह दें कि–

'हे पौत्र ! मै तुम्हारा पितामह था और इसी सेयविया नगरी मे अधार्मिक था यावत् प्रजाजनों से राज–कर लेकर भी यथोचित रूप मे उनका पालन, रक्षण नहीं करता था। इस कारण मैं बहुत घोर कलुषित पापकर्मों का सचय करके नरक मे उत्पन्न हुआ हूँ। किन्तु हे नाती (पौत्र) ! तुम अधार्मिक नही होना, प्रजाजनो से कर लेकर उनके पालन, रक्षण मे प्रमाद मत करना और न बहुत से मलिन पापकर्मों का उपार्जन ही करना।'

तो मैं आपके कथन पर श्रद्धा कर सकता हूँ, प्रतीति–(विश्वास) कर सकता हूँ एव मेरी रुचि का विषय बता सकता है कि जीव भिन्न है और शरीर भिन्न है। जीव और शरीर एकरूप नही हैं। लेकिन जब तक मेरे पितामह आकर मुझसे ऐसा नहीं कहते तब तक हे आयुष्मन् श्रमण ! मेरी यह धारणा–समीचीन है, सत्य है, दृढ है कि जो जीव है वही शरीर है और जो शरीर है वही जीव है।''

ARGUMENT OF KING PRADESHI : EXAMPLE OF HIS GRANDFATHER

244. Then king Pradeshi told Keshi Kumar Shraman—

"Reverend Sir ! In case this is the belief of Shraman Nirgranths that soul is different from the body and that soul and body are not the same entity (substance), please clarify the following—My grandfather was a ruler of Seyaviya town in this Jambu Dveep. He was irreligious upto he was receiving taxes from the public but was not properly looking after them and was not providing suitable security. According to your logic, he collected extremely sinful fruit bearing karmas and as such must have taken birth as a hellish being in one of the hells.

I was the most loveable, liked, trustworthy grandson expert in performing his duties, in executing his orders, humble, devoted and one with him like the life-breath. I was a cause of ecstatic pleasure

to him, I was like gullar flower, rose like gullar to him. Thus I was a good grandson for him. In case my grandfather comes to me and tells me as under—

'O dear grandson ! I was your grandfather. I was in this very Seyaviya town and was irreligious upto receiver of tax but I was not properly looking after the people and was not providing suitable security to them. Due to such mentality, I collected extremely bad fruit of my sins and I have taken birth in hell. But O my dear grandson ! You should not be irreligious. You should not ignore your people after receiving the taxes due. You should provide them proper security. You should never fall a prey to sins that result in bad-fruit.'

Reverend Sir ! In case he comes and gives such a guidance to me then I can have faith in your word. I can believe it. It can be of interest to me that soul is different from the body and that soul and body are not the same. But until my grandfather does not come to me and does not say so, O blessed Shraman ! My belief is firm, it is trustworthy that soul is the body and body is the soul."

नारको के नहीं आने का हेतु

२४५. (क) तए णं केसी कुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी–

अत्थि णं पएसी ! तव सूरियकंता णामं देवी ?

हंता अत्थि।

जइ णं तुमं पएसी ! तं सूरियकंतं देविं ण्हायं कयबलिकम्मं कयकोउयमंगलपायच्छित्तं सव्वालंकारविभूसियं केणइ पुरिसेणं ण्हाएणं जाव सव्वालंकारविभूसिएणं सद्धिं इट्ठे सद्द–फरिस–रस–रूव–गंधे पंचविहे माणुस्सए कामभोगे पच्चणुब्भवमाणिं पासिज्जासि, तस्स णं तुमं पएसी ! पुरिसस्स कं दंडं निव्वत्तेज्जासि ?

अहं णं भंते ! तं पुरिसं हत्थच्छिण्णगं वा, सूलाइगं वा, सूलभिन्नगं वा, पायछिन्नगं वा, एगाहच्चं कूडाहच्चं जीवियाओ ववरोवएज्जा।

अह णं पएसी; से पुरिसे तुमं एवं वदेज्जा–'मा ताव मे सामी ! मुहुत्तगं हत्थछिण्णगं वा जाव जीवियाओ ववरोवेहि जाव ताव अहं मित्त–णाइ–णियग–सयण–

संबंधि-परिजणं एवं वयामि-एवं खलु देवाणुप्पिया ! पावाइं कम्माइं समायरेत्ता इमेयारूवं आवइं पाविज्जामि, तं मा णं देवाणुप्पिया ! तुब्भे वि केइ पावाइं कम्माइं समायरह, मा णं से वि एवं चेव आवइं पाविज्जिहिह जहा णं अहं।'

तस्स णं तुमं पएसी ! पुरिसस्स खणमवि एयमट्ठं पडिसुणेज्जासि ?

णो तिणट्ठे समट्ठे।

कम्हा णं ?

जम्हा णं भंते ! अवराही णं से पुरिसे।

२४५. (क) प्रदेशी राजा की युक्ति सुनकर केशीकुमार श्रमण ने प्रदेशी राजा को उत्तर दिया-

"हे प्रदेशी ! तुम्हारी सूर्यकान्ता नाम की रानी है ?"

प्रदेशी-"हाँ, भदन्त ! है।"

केशीकुमार श्रमण-"तो (कल्पना करो) हे प्रदेशी ! यदि तुम उस सूर्यकान्ता देवी को स्नान, बलिकर्म और कौतुक मंगल-प्रायश्चित्त करके एवं समस्त आभरण-अलकारो से विभूषित होकर किसी ऐसे ही स्नान करके आभरण-अलंकारो से विभूषित हुए पुरुष के साथ मनोनुकूल शब्द, स्पर्श, रस, रूप और गध मूलक पाँच प्रकार के मनुष्य सम्बन्धी कामभोगों को भोगते हुए देख लो तो हे प्रदेशी ! उस पुरुष के लिए तुम क्या दण्ड निश्चित करोगे ?"

प्रदेशी-"भगवन् ! मैं उस पुरुष के हाथ काट दूँगा, उसे शूली पर चढा दूँगा, भालो से छेद डालूँगा, पैर काट दूँगा अथवा एक ही प्रहार से जीवनरहित कर दूँगा-मार डालूँगा।"

प्रदेशी राजा का कथन सुनकर केशीकुमार श्रमण ने कहा-"हे प्रदेशी ! यदि वह पुरुष तुमसे यह कहे कि 'हे स्वामिन् ! आप घडीभर रुक जाओ, तब तक आप मेरे हाथ न काटे, यावत् मुझे प्राणरहित न करें जब तक मैं अपने मित्र, ज्ञातिजन, पुत्र आदि स्वजन सम्बन्धी और परिचितों से यह कह आऊँ कि हे देवानुप्रियो ! इस प्रकार के पापकर्मों का आचरण करने के कारण मै यह दण्ड भोग रहा हूँ, अतएव हे देवानुप्रियो ! तुम कोई ऐसे पापकर्मों में प्रवृत्ति मत करना, जिससे तुमको भी इस प्रकार का दण्ड भोगना पडे, जैसा कि मैं भोग रहा हूँ।'

तो हे प्रदेशी ! क्या तुम क्षणमात्र के लिए उस पुरुष की यह बात मानोगे, उसे छोड़ दोगे ?"

प्रदेशी-"भदन्त ! मैं उसकी यह बात नहीं मानूँगा।"

केशीकुमार श्रमण–"उसकी बात क्यों नहीं मानोगे ?"

प्रदेशी–"क्योंकि हे भदन्त ! वह पुरुष बहुत बड़ा अपराधी है।"

REASON FOR NOT COMING FROM HELL

245. (a) After hearing the arguments of king Pradeshi, Keshi Kumar Shraman replied—

"O Pradeshi ! Is the name of your queen Suryakanta ?"

Pradeshi replied—"Yes Sir !"

Keshi Kumar Shraman said—"O Pradeshi ! Imagine that you see your queen Suryakanta after having taken bath, having decorated herself with auspicious symbols and having worn clothes and ornaments. She is having sex with another person who has taken bath, who has such symbols and who is properly dressed and having ornaments decorating has body. They are enjoying pleasures of all the five senses. O Pradeshi ! What punishment shall you impose for that person ?"

Pradeshi replied—"I shall cut the hands of that person. I shall hang him on their scaffold. I shall pierce him with spears. I shall cut his feet. I shall make him lifeless in one stroke. I shall kill him."

After hearing the reply of king Pradeshi, Keshi Kumar Shraman said—"O Pradeshi ! In case that person requests you—'O Master ! Kindly delay the execution of punishment for one ghari (24 minutes). Please do not cut my hands upto do not make me lifeless. Kindly do not kill me till then, so that I may see my friends, members of my family, my son, my relatives and my known persons and tell them that I am undergoing punishment for my such sinful deeds. I may advise them not to do such sins so that they may also have to undergo such punishment, as I am undergoing.'

At that time—O Pradeshi ! Shall you accept his place for a moment and release him."

Pradeshi replied—"Reverend Sir ! I shall not grant his request."

Keshi Kumar Shraman then said—"Why shall you not grant his request ?"

King Pradeshi replied—"Reverend Sir ! It is because that person has committed an extremely heinous crime."

(ख) एवामेव पएसी ! तव वि अज्जए होत्था, इहेव सेयवियाए णयरीए अधम्मिए जाव णो सम्मं करभरवित्तिं पवत्तेइ, से णं अम्हं वत्तव्वयाए सुबहुं जाव उववन्नो, तस्स णं अज्जगस्स तुमं णत्तुए होत्था, इट्ठे कंते जाव पासणयाए। से णं इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, णो चेव णं संचाएति हव्वमागच्छित्तए।

चउहिं ठाणेहिं पएसी अहुणोववण्णए नरएसु नेरइए इच्छेइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए नो चेव णं संचाएइ—

(१) अहुणोववन्नए नरएसु नेरइए से णं तत्थ महब्भूयं वेयणं वेदेमाणे इच्छेज्जा माणुस्सं लोगं हव्वं आगच्छित्तए णो चेव णं संचाएइ।

(२) अहुणोववन्नए नरएसु नेरइए निरयपालेहिं भुज्जो–भुज्जो समहिट्ठिज्जमाणे इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए, नो चेव णं संचाएइ।

(३) अहुणोववन्नए नरएसु नेरइए निरयवेयणिज्जंसि कम्मंसि अक्खीणंसि अवेइयंसि अनिज्जिन्नंसि इच्छइ माणुसं लोगं (हव्वमागच्छित्तए) नो चेव णं संचाएइ।

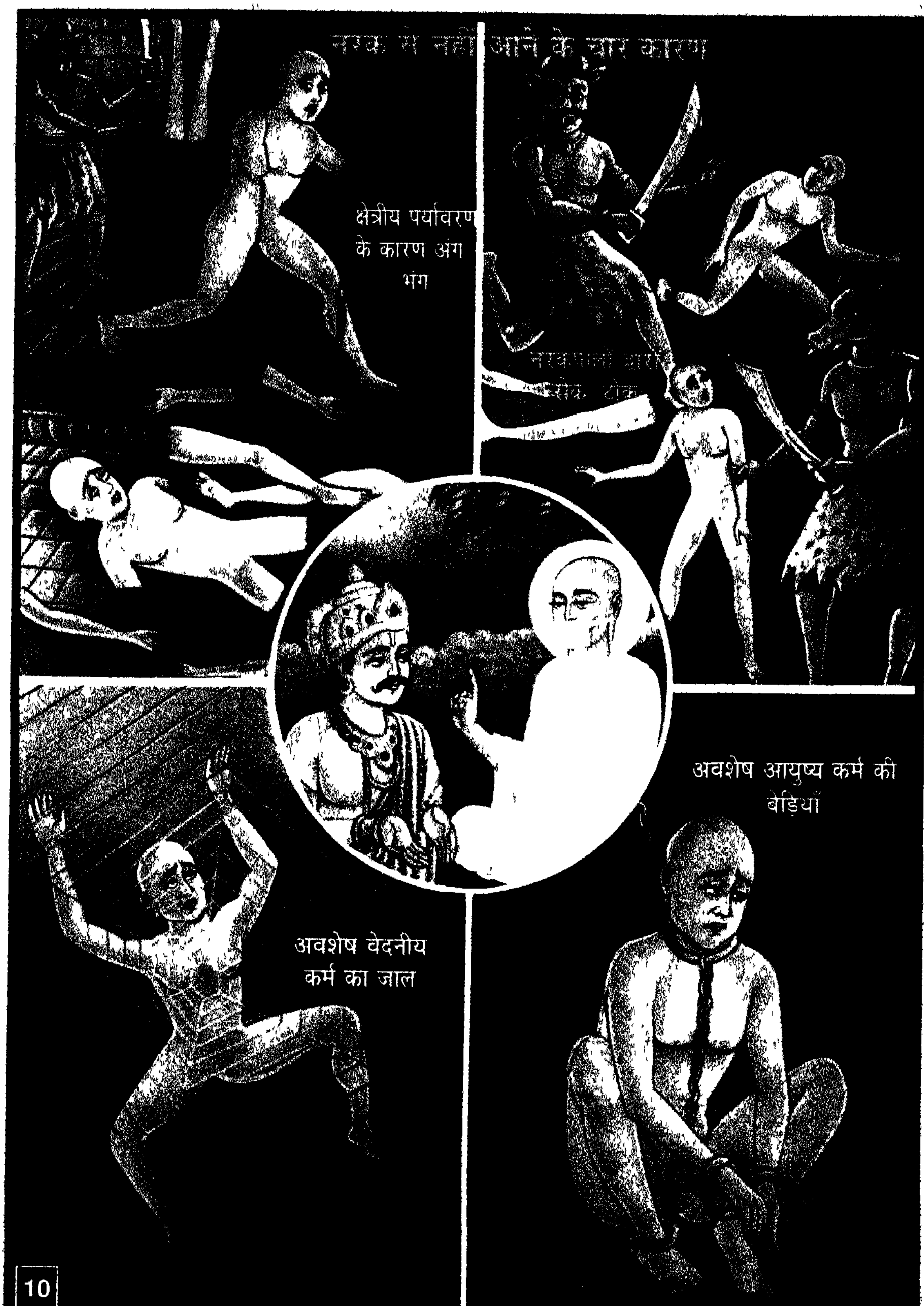
(४) एवं णेरइए निरयाउयंसि कम्मंसि अक्खीणंसि अवेइयंसि अणिज्जिन्नंसि इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए नो चेव णं संचाएइ।

इच्चेएहिं चउहिं ठाणेहिं पएसी ! अहुणोववन्ने नरएसु नेरइए इच्छइ माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाइए।

तं सद्दहाहि णं पएसी ! जहा—अन्नो जीवो अन्नं सरीरं, नो तं जीवो तं सरीरं।

(ख) "हे प्रदेशी ! इसी प्रकार तुम्हारे पितामह के विषय मे भी समझो, जिन्होंने इसी सेयविया नगरी मे अधार्मिक होकर हिंसामय जीवन व्यतीत किया, प्रजाजनों से कर लेकर भी उनका अच्छी तरह से पालन और सरक्षण नही किया। हमारे कथनानुसार वे बहुत से पापकर्मों का उपार्जन करके नरक मे उत्पन्न हुए है। उन्ही पितामह के तुम अत्यन्त प्रिय पौत्र हो। यद्यपि वे शीघ्र ही मनुष्यलोक में आकर तुम्हें वहाँ के विषय मे बताना चाहते हैं किन्तु वहाँ से आ नहीं सकते है।

क्योंकि प्रदेशी ! नरक मे तत्काल नारक रूप से उत्पन्न जीव शीघ्र ही चार कारणों से मनुष्यलोक में आने की इच्छा तो करते है, किन्तु वहाँ से आ नहीं पाते है। वे चार कारण इस प्रकार हैं–


नरक से नहीं आने के चार कारण
क्षेत्रीय पर्यावरण के कारण अंग भंग
नरकपालों द्वारा
अवशेष आयुष्य कर्म की बेड़ियाँ
अवशेष वेदनीय कर्म का जाल

चित्र परिचय-१०

Illustration No. 10

नरक से नहीं आने के चार कारण

केशीकुमार श्रमण राजा प्रदेशी से कहते है ' राजन् ! चार कारणो से नारकी जीव चाहते हुए भी वहाँ से निकलकर आ नही सकते। वे कारण इस प्रकार है-

(१) **क्षेत्र सम्बन्धी वेदना**—वहाँ से निकलने का प्रयत्न करने पर क्षेत्रीय पर्यावरण के प्रभाव से उनके अगोपाग टूट टूटकर बिखर जाते है जिससे वे निकल ही नही सकते।

(२) **नरकपाल**—परमाधार्मिक देव उन्हे वहाँ से निकलने नही दते, रोक लेते है।

(३) **वेदनीय कर्म का भोग**—बँधा हुआ वेदनीय कर्म उन्हे मकडी के जाल मे फँसे कीडे की तरह रोके रखता है, निकलने नही देता।

(४) **आयुस्थिति**—नरक की आयुस्थिति पूर्ण होने से पहले आयुष्य कर्म बेडियो की तरह उनका बन्धन बना रहता है।'

सूत्र २४५ का विवेचन पृष्ठ ३३० ३३५

FOUR REASONS FOR INABILITY TO LEAVE HELL

Keshi Kumar Shraman said to King Pradeshi—"O King ! Following are the four reasons that do not allow the hell beings to leave hell even when they have a desire to do so—

(1) Area-specifc Torments—When trying to leave hell the effect of atmosphere breaks the body into parts making it impossible to leave

(2) The Guards of the Hell—The Paramadharmik gods stop them and do not allow them to leave

(3) The Fruition of Vedniya Karmas—The bondage of acquired Vedniya Karmas traps them like an insect in a spider's web and does not allow them to leave

(4) Life-span—As long as the acquired life-span in the hell does not come to an end the Ayushya-karma acts as the bondage of shackles "

—Elaboration of Sutra 245 pp 330 335

(१) नरक में तुरन्त उत्पन्न नारक वहाँ की अत्यन्त तीव्र वेदना का वेदन करने के कारण (उससे छुटकारा पाने के लिए) मनुष्यलोक में शीघ्र आने की इच्छा करते हैं, किन्तु आने में असमर्थ रहते हैं।

(२) नरक में तत्काल नैरयिक रूप से उत्पन्न जीव परमाधार्मिक नरकपालों द्वारा बारम्बार ताड़ित-प्रताडित किये जाने से घबराकर शीघ्र ही मनुष्यलोक में आने की इच्छा तो करते हैं, किन्तु वैसा नहीं कर पाते हैं (क्योंकि नरकपाल आने नही देते)।

(३) तत्काल उत्पन्न नारक जीव मनुष्यलोक में आने की बार-बार इच्छा तो करते है, किन्तु नरक सम्बन्धी असातावेदनीय कर्म के बंधन में बँधे होने के कारण उन कर्मों का वेदन एवं निर्जरा नहीं होने से वहाँ से निकलने में समर्थ नहीं हो पाते है।

(४) इसी प्रकार नरक सम्बन्धी आयुकर्म के क्षय नही होने से, अर्थात् आयुष्य कर्म का भोग समाप्त नहीं होने के कारण नारक जीव मनुष्यलोक मे आने की अभिलाषा रखते हुए भी वहाँ से आ नही सकते हैं।

अतएव हे प्रदेशी ! तुम इस बात पर विश्वास करो, श्रद्धा रखो कि जीव अन्य-(भिन्न) है और शरीर अन्य है।

किन्तु यह मत मानो कि जो जीव है वही शरीर है और जो शरीर है वही जीव है।''

(b) (Keshi Kumar Shraman said) "O Pradeshi ! You understand about your grandfather in a similar way. He spent a violent extremely cruel way of life, being irreligious. In this very Seyaviya town, he recovered taxes from the people but did not properly look after them. He did not provide them proper security. According to this version, he must have taken birth in hell as a collecting fruit of many sins. You are his most loveable grandson. He wants to come to you in this world inhabited by human-beings and tell you about the tortures in the hell.

But he cannot come out from there because the newly born hellish being cannot come from hell for four reasons. The said four reasons are as under—

(1) The hellish beings (who have just taken birth there) want to come to the human world as they undergo extreme pain and tortures of that area (they are desirous of freeing themselves from there). But they are not capable to do so.

(2) New born hellish beings are tortured repeatedly by demon-gods (Paramadharmik demons), so they keenly desire to come back to the human world, but the demon-gods do not allow them to do so and, therefore, they cannot come.

(3) Newly born hellish beings repeatedly desire to come to the human world, but due to the bondage of inauspicious fruit-hearing karmas, while undergoing pain they are not able to shed that fruit (painful state). As such they are not capable of coming out of hell.

(4) Till the hellish life-span (the determined age of hell) does not come to an end, the hellish beings cannot come out of hell even if they keenly desire to go away.

So, O Pradeshi ! You believe it, have faith in this statement that Jiva (soul) is different from the body.

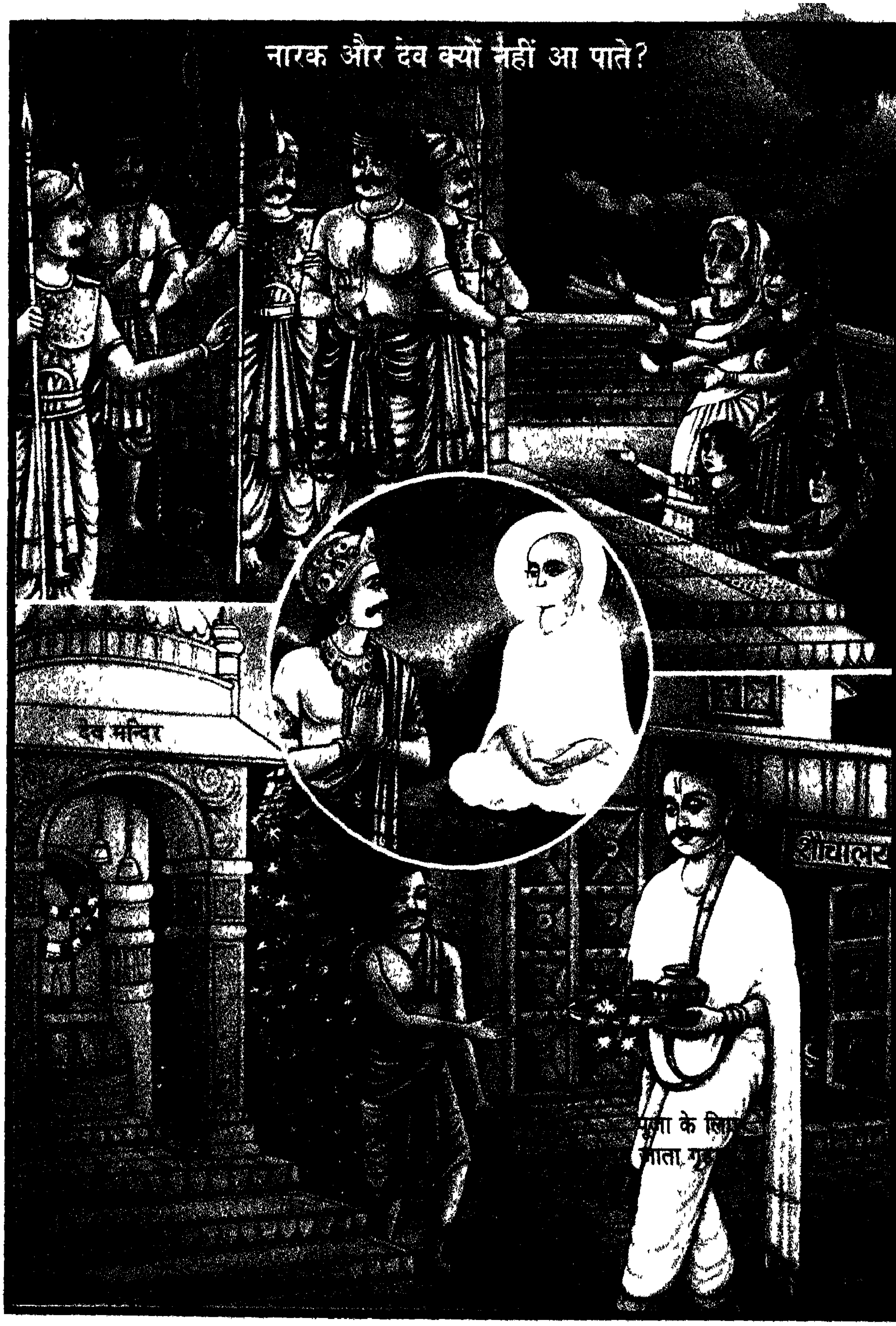
You should not conclude that soul is the body and body is the soul."

देवताओं के नही आने के चार कारण

२४६. तए णं से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी–

अत्थि णं भंते ! एसा पण्णा उवमा, इमेण पुण कारणेण नो उवागच्छइ, एवं खलु भंते ! मम अज्जिया होत्था, इहेव सेयवियाए नगरीए धम्मिया जाव वित्तिं कप्पेमाणी समणोवासिया अभिगयजीवा जीवे सव्वो वण्णओ जाव– अप्पाणं भावेमाणी विहरइ, सा णं तुज्झं वत्तव्वयाए सुबहुं पुन्नोवचयं समज्जिणित्ता कालमासे कालं किच्चा अण्णयरेसु देवलोएसु देवत्ताए उववण्णा, तीसे णं अज्जियाए अहं नत्तुए होत्था इट्ठे कंते जाव पासणयाए, तं जइ णं सा अज्जिया मम आगंतुं एवं वएज्जा–एवं खलु नत्तुया ! अहं तव अज्जिया होत्था, इहेव सेयवियाए नगरीए धम्मिया जाव वित्तिं कप्पेमाणी समणोवासिया जाव विहरामि। तए णं अहं सुबहुं पुण्णोवचयं समज्जिणित्ता जाव देवलोएसु उववण्णा, तं तुमं पि णत्तुया ! भवाहि धम्मिए जाव विहराहि, तए णं तुमं पि एयं चेव सुबहुं पुण्णोवचयं समज्जिणित्ता जाव उववज्जिहिसि।

तं जइ णं अज्जिया मम आगंतुं एवं वएज्जा तो णं अहं सद्दहेज्जा, पत्तिएज्जा, रोइज्जा जहाअण्णो जीवो अण्णं सरीरं णो तं जीवो तं सरीरं। जम्हा सा अज्जिया मम आगंतुं णो एवं वदासी, तम्हा सुपइट्ठिया मे पइण्णा जहा–तं जीवो तं सरीरं, नो अन्नो जीवो अन्नं सरीरं।


नारक और देव क्यों नहीं आ पाते?
देव मन्दिर

चित्र परिचय-११

Illustration No. 11

नारक और देव क्यों नहीं आ पाते ?

प्रदेशी राजा ने कहा-' भन्ते ! मेरे दादा का मै बहुत ही प्रिय पौत्र था। आपके मतानुसार वे नरक मे ही गये होगे, परन्तु आज तक उन्होने आकर कभी भी मुझे नही कहा-'मै अपने पापकर्मो के कारण दु ख भोग रहा हूँ। अत वत्स ! तू ऐसे पापकर्म मत करना।'

समाधान देते हुए केशीकुमार बोले-''राजन् ! सोचो, तुम्हारा एक घोर अपराधी, जिसे तुमने फाँसी की सजा दी हो, उसकी माता, पत्नी, पुत्र आदि तुमसे प्रार्थना करे इसे कुछ समय मिलने के लिए हमारे साथ रहने दो।' तो क्या तुम वैसा करोगे ?'' -सूत्र २४४-२४५ पृष्ठ ३१७-३२४

प्रदेशी ने पुन कहा मेरी स्वर्गीया दादी तो बहुत धार्मिक थी और मुझ पर उनका बहुत स्नेह था। आपके मतानुसार वह स्वर्ग मे गयी होगी वह तो स्वतत्र है, क्यो नही आती ?

केशीकुमार ने उत्तर दिया-''राजन ! कल्पना करो तुम पूजा की सामग्री तैयार कर देव-मन्दिर में पूजा के लिए जा रहे हो, उस समय बीच मे शौचालय की सफाई करने वाला तुम्हे पुकारे स्वामी ! मैने शौचालय साफ कर दिया है, आप जरा यहाँ आकर देख तो लीजिए।' तो क्या तुम मन्दिर छोडकर शौचालय देखने जाओगे ?''

राजन् ! नरक-स्वर्ग की स्थिति वैसी ही समझो। सूत्र २०६-२४७ पृष्ठ ३२४ ३२८

WHY DON'T COME HELLISH AND GODS ?

King Pradeshi said—"Bhante ! I was the most loved grandson of my grandfather In your opinion he must have gone to hell but till date he has never come and told me—'I am suffering pain for my sinful deeds Therefore, Son ! You should not indulge in such sinful deeds' "

Keshi Kumar Shraman explains—"O King ! Imagine that you have a criminal who has committed great crime and you have sentenced him to death If his mother, wife or son requests you—'To allow him spend some time with them ' Would you grant him permission to do so ?" —*Sutras 244 245, pp 317 324*

King Pradeshi asked again—"My deceased grandmother was highly religious and had great affection for me According to you she must have gone to heaven She must be free to come, why doesn't she ?"

Keshi Kumar Shraman explained—"O King ! Imagine you have collected material for worship and are going to the temple to worship a deity At that time if the sweeper cleaning your lavatory calls you—'Sire ! I have cleaned the lavatory please come for a moment and check it ' Would you leave the temple and go to see the lavatory ?"

O King ! Take the situation regarding heaven and hell to be the same

—*Sutras 246-247, pp 324-328*

२४६. अब प्रदेशी राजा ने केशीकुमार श्रमण के समक्ष नया तर्क प्रस्तुत करते हुए कहा–

"हे भदन्त ! आपका यह तर्क व उपमा तो बुद्धि से कल्पित है। किन्तु मेरा कथन सुनिए– मेरी दादी थीं। वह इसी सेयविया नगरी में बहुत धर्मपरायणा थीं। धार्मिक आचार-विचारपूर्वक अपना जीवन व्यतीत करने वाली, जीव-अजीव आदि तत्त्वों की ज्ञाता श्रमणोपासिका यावत् तप से आत्मा को भावित करती हुई रहती थीं। आपके कथनानुसार वे अवश्य ही पुण्य का उपार्जन कर मृत्यु प्राप्त करके किसी देवलोक में देवरूप से उत्पन्न हुई हैं। उन आर्यिका (दादी) का मैं इष्ट, कान्त यावत् बहुत ही प्यारा पौत्र हूँ। अतएव वे आर्यिका यदि यहाँ आकर मुझसे इस प्रकार कहे कि 'हे पौत्र ! मै तुम्हारी दादी थी और इसी सेयविया नगरी में धार्मिक जीवन व्यतीत करती हुई श्रमणोपासिका थी। इसके फलस्वरूप मैं विपुल पुण्य का सचय करके देवलोक में उत्पन्न हुई हूँ। हे पौत्र ! तुम भी धार्मिक आचार-विचारपूर्वक अपना जीवन बिताओ। जिससे तुम भी विपुल पुण्य का उपार्जन करके आगे देवलोक मे देवरूप से उत्पन्न होओगे।'

इस प्रकार से यदि मेरी दादी आकर मुझसे कहे–'जीव अन्य है और शरीर अन्य है अर्थात् जीव और शरीर एक नहीं हैं', तो हे भदन्त ! मै आपके कथन पर विश्वास कर सकता हूँ, प्रतीति कर सकता हूँ और अपनी रुचि का विषय बना सकता हूँ। परन्तु जब तक मेरी दादी आकर मुझसे ऐसा नही कहतीं तब तक मेरी यह धारणा पक्की और सही समझता हूँ कि जो जीव है वही शरीर है। किन्तु जीव और शरीर भिन्न-भिन्न नहीं हैं।"

FOUR REASONS FOR NON-ARRIVAL OF GODS

246. King Pradeshi presenting a new (different) argument before Keshi Kumar Shraman said—

"Reverend Sir ! Your argument (logic) and example is a product of intellect alone (It is a product of imagination). Kindly listen my statement (based on fact)—I had a grandmother. She was a religious lady in this very Seyaviya town. She was spending her life strictly following religious code of conduct. She knew well Jiva (soul), Ajiva (matter) and other such principles (Tattvas) and was following religious conduct of a householder upto observing austerities (Tapa). She was a Shramanopasika (devotee of religious order). According to your view point, she must have accumulated auspicious karmas and so after her life-span would have taken re-

birth in heaven as Deva (a god). I am a beloved, devoted, loveable grandson of that good lady. So, in case she comes to me and tells me as follows—'O my dear grandson ! I was your grandmother. I was spending a religious life in this Seyaviya town. I was a Shramanopasika (devotee of Shramans). As a result of it I had accumulated a lot of auspicious karmas and therefore I have taken re-birth in heaven (Devlok). O my grandson ! You also spend your life following spiritual code of conduct so that you may accumulate a large quantity of auspicious karmas (that bear good fruit). You shall then take re-birth in heaven (Devlok).'

Therefore, in case my grandmother comes to me and tells me that 'Soul and body are different, in other words that soul and body are not the same', then I can have faith in your statement, trust it, acknowledge it and make it a subject of my devotion and my interest. But until my grandmother says so, I have firm conclusion and consider it as correct that soul is body and body is soul and that soul and body are not different (entities)."

२४७. तए णं केसी कुमारसमणे पएसी रायं एवं वयासी–

जति णं तुमं पएसी ! ण्हायं कयबलिकम्मं कयकोउय–मंगलपायच्छित्तं उल्लपडसाडगं भिंगारकडुच्छुयहत्थगयं देवकुलमणुपविसमाणं केइय पुरिसे वच्चघरंसि ठिच्चा एवं वदेज्जा–एह ताव सामी ! इह मुहुत्तगं आसयह वा, चिट्ठह वा, निसीयह वा, तुयट्टह वा, तस्स णं तुमं पएसी ! पुरिसस्स खणमवि एयमट्ठं पडिसुणिज्जासि ?

णो तिणट्ठे समट्ठे।

कम्हा णं ?

भंते ! असुई असुइ सामंतो।

एवामेव पएसी ! तव वि अज्जिया होत्था, इहेव सेयवियाए णयरीए धम्मिया जाव विहरति, सा णं अम्हं वत्तव्वाए सुबहुं जाव उववन्ना, तीसे णं अज्जियाए तुमं णत्तुए होत्था इट्ठे. किमंग पुण पासणयाए ! सा णं इच्छइ माणुसं लोग हव्वमागच्छित्तए, णो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए।

चउहिं ठाणेहिं पएसी ! अहुणोववण्णए देवे देवलोएसु इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाइए—

(१) अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु दिव्वेहिं कामभोगेहिं मुच्छिए—गिद्धे—गढिए—अज्झोववण्णे से णं माणुसे भोगे नो आढाति, नो परिजाणाति, से णं इच्छिज्ज माणुसं लोगं हव्व मागच्छित्तए णो चेव णं संचाएति।

(२) अहुणोववण्णए देवे देवलोएसु दिव्वेहिं कामभोगेहिं मुच्छिए जाव अज्झोववण्णे, तस्स णं माणुस्से पेम्मे वोच्छिन्नए भवति, दिव्वे पिम्मे संकंते भवति, से णं इच्छेज्जा माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएइ।

(३) अहुणोववण्णे देवे दिव्वेहिं कामभोगेहिं मुच्छिए जाव अज्झोववण्णे, तस्स णं एवं भवइ—इयाणिं गच्छं मुहुत्तं जाव इह गच्छं, अप्पाउया णरा कालधम्मुणा संजुत्ता भवंति, से णं इच्छेज्जा माणुस्सं. णो चेव णं संचाएइ।

(४) अहुणोववण्णे देवे दिव्वेहिं जाव अज्झोववण्णे, तस्स माणुस्सए उराले दुग्गंधे पडिकूले पडिलोमे भवइ, उड्ढं पि य णं चत्तारि पंच जोअणसए असुभे माणुस्सए गंधे अभिसमागच्छति, से णं इच्छेज्जा माणुसं. णो चेव णं संचाइज्जा।

इच्चेएहिं ठाणेहिं पएसी ! अहुणोववण्णे देवे देवलोएसु इच्छेज्ज माणुसं लोगं हव्वमागच्छित्तए णो चेव णं संचाएइ हव्वमागच्छित्तए, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी ! जहा—अन्नो जीवो अन्नं सरीरं, नो तं जीवो तं सरीरं।

२४७. तब केशीकुमार श्रमण ने प्रदेशी राजा से कहा—

"हे प्रदेशी ! (कल्पना करो) यदि तुम स्नान, बलिकर्म और कौतुक, मंगल, प्रायश्चित्त करके गीली धोती पहन, झारी और धूपदान हाथ मे लेकर देव-मन्दिर मे प्रवेश कर रहे हो और उस समय कोई पुरुष (शौचालय साफ करके मल उठाने वाला) विष्ठागृह (शौचालय) में खडे होकर तुम्हे कहे कि 'हे स्वामिन् ! आओ और क्षणमात्र के लिए यहाँ बैठो, खडे होओ और लेटो', तो क्या हे प्रदेशी ! एक क्षण के लिए भी तुम उस पुरुष की यह बात स्वीकार कर सकते हो ?"

प्रदेशी—"हे भदन्त ! यह सम्भव नहीं है, मैं उस पुरुष की बात स्वीकार नहीं करूँगा।"

केशीकुमार श्रमण—"ऐसा क्यों ?"

प्रदेशी–"क्योंकि भदन्त ! वह स्थान अपवित्र है और अपवित्र वस्तुओं से भरा हुआ है।"

केशीकुमार श्रमण–"तो इसी प्रकार प्रदेशी ! इसी सेयविया नगरी में तुम्हारी जो दादी धार्मिक थी, धर्मानुरागपूर्वक जीवन व्यतीत करती थीं और हमारी मान्यतानुसार वह बहुत से पुण्य कर्मों का सचय करके देवलोक में उत्पन्न हुई हैं तथा उन्हीं दादी के तुम प्यारे पौत्र हो। तुम्हारी दादी भी शीघ्र ही मनुष्यलोक मे आने की अभिलाषा रखती हैं, किन्तु आ नहीं सकती।

हे प्रदेशी ! तत्काल उत्पन्न देव देवलोक से मनुष्यलोक में आने की आकांक्षा रखते हुए भी इन चार कारणो से नहीं आ पाते हैं। वे चार कारण इस प्रकार हैं–

(१) तत्काल उत्पन्न देव देवलोक के दिव्य कामभोगों में मूर्च्छित, गृद्ध, आसक्त और तल्लीन हो जाने से मनुष्य सम्बन्धी कामभोगों के प्रति आकर्षित नही होते है, न ध्यान देते है और न उनकी इच्छा करते हैं। कामभोग नही छोड पाने के कारण वे मनुष्यलोक मे आने की आकांक्षा रखते हुए भी आ नहीं पाते हैं।

(२) देवलोक सम्बन्धी दिव्य कामभोगों में मूर्च्छित यावत् तल्लीन हो जाने से तत्काल उत्पन्न देव का मनुष्य–जन्म सम्बन्धी प्रेम (आकर्षण) व्युच्छिन्न हो जाता (टूट जाता) है और देवलोक सम्बन्धी अनुराग जागृत हो जाने से मनुष्यलोक मे आने की इच्छा होने पर भी यहाँ आ नहीं पाते है।

(३) तत्काल उत्पन्न देव देवलोक में जब दिव्य कामभोगो में मूर्च्छित और तल्लीन हो जाते हैं तब वे सोचते तो है कि 'अब जाऊँ, अब जाऊँ, कुछ समय बाद जाऊँगा।' किन्तु उतने समय मे तो उनके इस मनुष्यलोक के अल्प आयुष्य वाले सम्बन्धी जन कालधर्म (मरण) को प्राप्त हो चुकते है जिससे मनुष्यलोक मे आने की अभिलाषा रखते हुए भी (प्रमाद के कारण) वे यहाँ नहीं आ पाते है।

(४) वे अधुनोत्पन्न देव देवलोक के दिव्य कामभोगो में इतने तल्लीन हो जाते हैं कि उनको मर्त्यलोक सम्बन्धी तीव्र दुर्गन्ध प्रतिकूल और अप्रिय लगती है। क्योंकि वह मानव लोक की कुत्सित दुर्गन्ध ऊपर आकाश में चार–पाँच सौ योजन तक फैल जाने से मनुष्यलोक में आने की इच्छा रखते हुए भी वे उस दुर्गन्ध के कारण आने मे हिचकिचाने लगते हैं।

हे प्रदेशी ! इसीलिए मनुष्यलोक में आने के इच्छुक होने पर भी अधुनोत्पन्न देव चार कारणो से देवलोक से यहाँ आ नहीं सकते है। इसलिए तुम यह श्रद्धा करो कि जीव अन्य है और शरीर अन्य है। जीव शरीर नहीं है और न शरीर जीव है।"

247. Keshi Kumar Shraman said to king Pradeshi—

"O Pradeshi ! Imagine that after taking bath, applying auspicious symbols, wearing wet dhoti (cloth covering lower half of the body) and holding a pot and incense stand in your hand, you enter a temple. At that time a sweeper (who cleans the toilet and picks up the human waste) standing in the toilet tells you—'O my master ! Please come and sit down, stand up or lie down here for a moment', then O Pradeshi ! Can you accede to the request of that person (the sweeper) for a moment ?"

Pradeshi replied—"Reverend Sir ! It is not possible. I shall not accede to his request."

Keshi Kumar Shraman asked—"Why is it so ?"

Pradeshi replied—"Reverend Sir ! It is because that place is unholy. It is full of dirty things (material)."

Keshi Kumar Shraman then said—"O Pradeshi ! Same applies to the present case. Your grandmother who lived in Seyaviya town was a religious lady; she was devoted to religious order and followed her life according to the religious principles. According to our belief, she accumulated plenty of auspicious karmas and took re-birth in heaven (as a god). You are the affectionate grandson of that lady. Your grandmother desires to visit this human world soon but cannot come.

O Pradeshi ! Due to four reasons, the newly born gods, desiring to visit this world inhabited by human-being, are not able to come here. The said four reasons are as under—

(1) The newly born gods become deeply engrossed, deeply attached and deeply absorbed in the enjoyments and pleasures of heaven (engrossed in sensual desires and objects of the five senses). As such they do not get attracted toward sensual pleasures and enjoyments of the human world; they don't attend to these pleasure, and they do not desire them. Since they cannot discard the sensual pleasures and enjoyments of heaven, they are not able to come to the human world although they have such a desire (to come here).

(2) As a result of deep attachment upto engrossment in heavenly sensual pleasures and enjoyments, the attraction of the newly born god (that he had just at the time of his birth) disappears. His attachment towards heavenly enjoyments becomes prominent (arises deeply), so he is not able to come to the human world even if he had such a desire.

(3) When a newly born god becomes attached and engrossed in heavenly sensual enjoyment and pleasures, he thinks—'I shall go now, I shall go now, I shall go after some time.' But in the mean time his relative whose life-span is very small (as compared to the life-span of god) pass away. So, even if he has a keen desire to come to the human world, he is not able to come due to his lethargy (delay in translating his initial thought into action).

(4) The newly born gods become so much absorbed in sensual enjoyment and pleasures of heaven, that they dislike the dirty smell arising from the human world. They do not like it. The despising, bad smell of the human world spreads upto a height of four hundred to five hundred yojans in the sky (space). They have a keen desire to visit the human world. But due to the foul smell, they hesitate to come down to human world.

O Pradeshi ! Therefore (due to said four reasons) the newly born gods cannot come here from heavenly world even if they have an inner desire to come. So you should have faith that soul and body are different. Soul is not body and body is not soul."

विवेचन–सूत्र २४५ मे बताया है–नारक जीव चाहते हुए भी चार कारणो से मनुष्यलोक में नही आ सकता–

(१) प्रथम कारण है–नरक लोक मे नारक वेदना से नही छूट पाता है। आगम मे बताया है, नरक मे अनेक प्रकार की वेदना है। जैसे–**क्षेत्र सम्बन्धी**, उस स्थान पर घोर अंधकार, घोर गर्मी, घोर दुर्गन्ध, अत्यन्त भूख-प्यास आदि क्षेत्रजन्य वेदना है। वह उस स्थान से निकलकर भागना चाहे तब भी भाग नहीं सकता। जैसे बन्द जेल से बाहर निकलना सम्भव नही होता। कथाओ मे बताया है कि एक बार सीताजी के जीव सीतेन्द्र ने नरक स्थित लक्ष्मण के जीव को वहाँ से मुक्त करने के लिए उठा लिया और ऊपर लाने का प्रयास किया, किन्तु जैसे ही नरक से बाहर निकाला कि वह शरीर बर्फ अथवा पारे की तरह पिघल-पिघलकर छिन्न-विच्छिन्न होकर बिखर गया। यह उस क्षेत्र के पर्यावरण का ही प्रभाव है कि नारक जीव भयंकर वेदना सहते हुए भी उस स्थान को छोडकर अन्यत्र नहीं जा सकते। वहीं रहने पर मजबूर

हैं। दूसरी परस्परोदीरित वेदना–नारक जीव आपसी वैर–विरोध के कारण साँप–नेवले की तरह एक–दूसरे के जन्मजात शत्रु होते हैं। एक–दूसरे को देखते ही लडते है, भिडते हैं, उसे काटते हैं। अगर कोई नारक उनसे छूटकर जाना चाहे तो वे जबर्दस्ती उसे पकडकर उसके साथ युद्ध करने, मारकाट करने लगते हैं। जैसे दो डाकू या घोर शत्रु एक–दूसरे को भागने नही देते, उसे पकड–पकड़कर मारते हैं। इस कारण कोई नारक वहाँ से छूटकर निकलना चाहने पर भी नहीं छूट सकता।

(२) दूसरा कारण है–कोई नारक, अपने–अपने पुराने रिश्तेदारों से मिलने के लिए नरक से जाना चाहे तो नरकपाल–जिन्हे परमाधार्मिक देव कहते हैं, वे उसे जाने नही देते। उसे पकडकर कुंभी में पकाते है, शरीर के टुकड़े–टुकडे कर डालते हैं। परमाधार्मिको द्वारा दी जाने वाली वेदना का लोमहर्षक वर्णन सूत्रकृतांग के 'नरक विभक्ति' अध्ययन तथा उत्तराध्ययन के 'मृगापुत्रीय' १९वे अध्ययन मे है, जिसे पढने से पता चलता है, नरकपाल नारक जीव को वहाँ से भागने नही देते, पकड–पकडकर उसे यातना–यन्त्रणाएँ देते है।

(३) तीसरा कारण है–उसका नरक सम्बन्धी वेदनीयकर्म। जितने काल तक नरक सम्बन्धी वेदना भोगने के कर्म बँधे है उन कर्मों को भोगे बिना वह वहाँ से निकल नही सकता जैसे मकडी जाले से नही निकल सकती।

(४) चौथा कारण है–नरक की आयुस्थिति या कालस्थिति। प्रज्ञापनासूत्र के स्थिति पद तथा अनुयोगद्वारसूत्र के अनुसार नारक जीवो की कम से कम जघन्य स्थिति दस हजार वर्ष की और उत्कृष्ट स्थिति (सातवी नरक की) तेतीस सागरोपम की है और यह स्थिति अपरिवर्तनीय होती है। आयुष्यकर्म क्षय होने से पहले उस शरीर को कोई छोड नही सकता।

इसलिए केशीकुमार श्रमण कहते है कि नारक जीव मनुष्यलोक के अपने मित्र–सम्बन्धियो से मिलने की इच्छा रखते हुए भी वहाँ से छूटकर नही आ सकते। स्थानागसूत्र के प्रथम स्थान मे भी ये चार कारण बताये गये है।

इस सूत्र मे प्रदेशी राजा अपनी दादी का उदाहरण देता है कि 'मेरी दादी बहुत ही धार्मिक आचार–विचार वाली थी। आपके सिद्धान्तानुसार वह अवश्य ही स्वर्ग में गई होगी। यह माना जाये कि नरक मे जीव परतत्र होता है, इसलिए वह आना चाहते हुए भी नही आ सकता, परन्तु स्वर्ग के देवता तो स्वतत्र और स्वाधीन हैं। वे तो आ सकती हैं, फिर मेरी दादी क्यो नही आई ?'

इस प्रश्न का समाधान देते हुए केशीकुमार श्रमण ने पहले देव–कुलिका (मन्दिर) मे जाते समय शौचालय में प्रवेश का उदाहरण दिया है और यह बताया है कि स्वर्ग के सुगधमय–दिव्य वातावरण के समक्ष यह मनुष्यलोक तो एक शौचालय से भी अधिक दुर्गंधमय है। यहाँ पर भी देवताओ के मनुष्यलोक मे नहीं आने के चार कारण बताये हैं–

(१) पहला कारण है, वहाँ उत्पन्न होने वाले देवता का स्वर्गीय काम–सुखो मे आसक्त हो जाना। वे वहाँ के सुखों में इतने लीन हो जाते है कि मनुष्यलोक में आने का मन तो होता है, परन्तु सुखो की आसक्ति नहीं छोड पाने के कारण वहाँ से निकल नहीं सकते।

(२) दूसरा कारण है, स्वर्ग मे जाने के बाद सामान्य रूप मे मनुष्य-जन्म सम्बन्धी मित्रों, सम्बन्धियो से स्नेह का सूत्र टूट जाता है। वह सोचता है, पिछले जन्मो के किन-किन रिश्तेदारों को स्मरण करें और किन-किन की सहायता करे; क्योंकि उसके ज्ञान मे तो पिछले अनेक जन्मो की स्मृति रहती है, यदि उन सब जन्मों के मित्र-सम्बन्धियो को याद करे तो व्यर्थ ही परेशान होकर अपने सुखों को छोड़ना पडेगा। इस कारण उनके स्नेह और प्रेम का सूत्र ढीला पड जाता है या टूट ही जाता है और वे उनको भुला देते हैं। बहुत बार वचन दिया हुआ भी याद नही रखते और उसे भी पूरा नही कर पाते।

(३) तीसरा कारण है, स्वर्ग में उत्पन्न होते ही वहाँ के सुखो मे, वहाँ के दिव्य नृत्य-संगीत आदि मे इतने मस्त हो जाते है कि बीच मे छोड़कर उठ नहीं सकते, सोचते है, यह नाटक खत्म होते ही मै जाऊँगा, परन्तु देवताओं का एक-एक नाटक भी इतने लम्बे समय तक चलता है कि तब तक मनुष्यों की कई पीढियाँ बीत जाती है। जिनको वचन देकर जाते है या जिनको सहायता करने की भावना रखते है, उनके लिए आते है, तब तक तो वे मित्रजन आयुष्य पूर्ण कर कहीं दूसरी योनि मे ही चले जाते है।

(४) चौथा कारण है, मनुष्यलोक की दुर्गंध। मनुष्यलोक औदारिक पुद्‌गलों का समूह है, यहाँ के हाड-माँस, मल-मूत्र आदि की दुर्गंध इतनी भयंकर है कि ऊपर योजनो तक उसकी दूषित हवा जाती है। स्वर्ग में रहने वाले देवों के लिए इस प्रकार की दुर्गंध असह्य होती है। वे आना चाहते है, परन्तु इस दुर्गंध से घबराकर आने का विचार बदल देते है।

इस सूत्र मे मनुष्यलोक सम्बन्धी दुर्गंध ऊपर आकाश मे चार-पाँच सौ योजन तक पहुँचने का उल्लेख किया है, जबकि आगमो की मान्यता यह है कि नौ योजन से अधिक दूर से आते गध वाले पुद्‌गल घ्राणेन्द्रिय के विषय नही हो सकते है। यहाँ विचारणीय है कि उक्त उल्लेख के साथ इस शास्त्रीय उल्लेख से किस प्रकार सगति बैठ सकती है ? क्योंकि नौ योजन से अधिक दूर से जो पुद्‌गल आते है उनकी गंध अत्यन्त मंद हो जाती है, जिससे वे घ्राणेन्द्रिय के विषय नहीं हो सकते हैं।

टीकाकार आचार्य मलयगिरि ने इसका समाधान करते हुए लिखा है कि "यद्यपि नियम तो ऐसा ही है किन्तु जो पुद्‌गल अति उत्कट गध वाले होते है, उनके नौ योजन तक पहुँचने पर जो दूसरे पुद्‌गल उनसे मिलते है, उनमे अपनी गन्ध सक्रान्त कर देते है और फिर वे पुद्‌गल भी आगे जाकर दूसरे पुद्‌गलो को अपनी गध से वासित कर देते है। इस प्रकार ऊपर-ऊपर पुद्‌गल चार-पाँच सौ योजन तक पहुँच जाते हैं। परन्तु यह बात लक्ष्य में रखने योग्य है कि ऊपर-ऊपर वह गंध मद-मद होती जाती है। मनुष्यलोक सम्बन्धी दुर्गन्ध अत्यन्त तीव्र हो तो पाँच सौ योजन तक पहुँचती है, इसीलिए शास्त्र मे चार सौ और पाँच सौ ये दो सख्याये बताई हैं।"

स्थानाग के टीकाकार आचार्य अभयदेव सूरि का इस सम्बन्ध मे मंतव्य है कि "इससे मनुष्य क्षेत्र के दुर्गन्धित स्वरूप को सूचित किया गया है। वस्तुतः देव अथवा दूसरा कोई नौ योजन से अधिक दूर से आगत पुद्‌गलों की गध जान नहीं सकता है। शास्त्र में इन्द्रियो का जो विषय-प्रमाण बतलाया है, वह सम्भव है कि औदारिक शरीर सम्बन्धी इन्द्रियों की अपेक्षा कहा हो।"

स्थानांगसूत्र में भी तत्काल उत्पन्न देव के मनुष्यलोक मे नहीं आने के ये ही चार कारण बताये हैं, साथ ही वहाँ देवता के मनुष्यलोक में आने के भी चार कारण बताये हैं, जैसे-

(१) तत्काल उत्पन्न देवता वहाँ के भोगों से मूर्च्छित नहीं होकर सोचता है कि जिन गुरुजनों के उपदेश व उपकार के प्रभाव से मुझे यह देवऋद्धि प्राप्त हुई है। मैं वहाँ जाकर अपने परम उपकारी गुरुओं को वन्दना-नमस्कार करूँ।

(२) मनुष्यलोक में विचरने वाले, उत्कृष्ट ज्ञानी, उत्कृष्ट तपस्वी श्रमणों को देखकर उनकी वन्दना, सेवा करने का महान् फल समझकर वे भोगो को छोडकर भी आ जाते हैं।

(३) अपने पूर्वभव सम्बन्धी माता, पिता, पुत्र आदि सम्बन्धी जनो को धर्म के प्रति आस्था उत्पन्न कराने या प्रतिबोध देने की इच्छा से कामभोगों की आसक्ति त्यागकर भी आते है।

(४) मनुष्यलोक मे किसी के साथ वचनबद्ध हो चुके हो, प्रतिज्ञा कर चुके हो कि इसमे से जो पहले च्युत हो जाये वह उसे सबोध देने के लिए आयेगा। उस प्रतिज्ञा से बँधा हुआ देव भोगो की आसक्ति छोडकर भी आता है।

विशेषावश्यक भाष्य (गाथा १८७५-१८७७, स्थानाग, स्थान ४) मे देवलोक से नही आने के पाँच कारण बताये है, जिनमे चार कारण तो उक्त ही हैं। पाँचवाँ कारण बताया है-देवता स्वतत्र होते हैं, वे मनुष्यो के किसी कार्य के अधीन या पराधीन नहीं होते।

साथ ही वहाँ देवताओ के मनुष्यलोक मे आने के नौ कारण भी बताये है-

(१) अरिहतो के जन्म, दीक्षा, कैवल्य व निर्वाण महोत्सव पर।

(२) भक्ति के वशीभूत होकर।

(३) मन का सन्देह/शका दूर करने के लिए।

(४) पूर्वजन्म के मित्र, पुत्र आदि के गहरे अनुराग के वश।

(५) पूर्वजन्म मे की गई प्रतिज्ञा या वचन से बँधे होने के कारण प्रतिबोध देने के लिए।

(६) तपस्या आदि उत्कृष्ट गुणो से आकृष्ट होकर।

(७) पूर्वजन्म के वैर-विरोध के कारण उसे पीडा देने के लिए।

(८) पूर्वजन्म के किसी मित्र आदि पर अनुग्रह करने के लिए।

(९) हास्य-कुतूहल आदि वश होकर।

आवश्यकनिर्युक्ति मे आचार्य भद्रबाहु ने बताया है-"देव मोहनीय कर्म तथा सातावेदनीय कर्म के उदय के कारण अधिक कामासक्त होते है। अप्रत्याख्यान मोहनीय के कारण वे कामभोग का त्याग नही कर सकते (उनको नहीं आ पाने का यह भी कारण है)।"

दीघनिकाय में कुमार काश्यप ने भी पयासि राजा के प्रश्न पर इसी प्रकार का उदाहरण दिया है- "जैसे कोई पुरुष दुर्गंधमय कूप मे पडा हो, उसका शरीर मल से लिप्त हो, उस पुरुष को कोई बाहर निकालकर उसे स्नान आदि कराके सुगधित तेल, चन्दन आदि का विलेपन करके फूलो से शृगारित करने के बाद पुनः उसे उसी दुर्गन्धित कूप मे प्रवेश करने के लिए कहे तो क्या वह उस दुर्गन्धमय मल-मूत्र के कूप में वापस घुसेगा?"

"नहीं घुसेगा।"

इसी प्रकार स्वर्ग में उत्पन्न हुए देवता भी वापस मनुष्यलोक में आना नहीं चाहते।

Elaboration—In aphorism 245, it was stated that hellish being cannot come to the human world due to the following four reasons—

(1) The first reason is that he is not able to free himself from hellish pain in the hell In the Agam it is mentioned that hellish troubles are of many types, namely, troubles due to the location. There is a deep darkness, scorching heat, intense foul smell, extreme hunger and thirst and suchlike due to the hellish location. This is kshetra (location) created troubles The hellish being wants to come out and run away from that area but he cannot do so, just as it is not possible to get out from a completely guarded jail. It is mentioned in religious stories that once the Jiva (soul) of Sita in form of Seetendra (in heaven), picked up the Jiva (soul in body covering) of Lakshman staying in hell as a hellish being in order to liberate him from the hellish state and tried to bring him upwards (to heaven). But as soon as that hellish being came out of the hell, that hellish state melted like snow and scattered into tiny molecules. It is the effect of the hellish environment that a hellish being undergoing extreme pain in hell cannot leave that place (the hell) and cannot go to another place They live their under compulsion of that area. The second type of trouble is the in-born enmity The hellish beings are born enemies like snake and mongoose due to inimical nature towards each other. They start fighting, striking against and piercing immediately when they see each other. In case any hellish being wants to run away from that dual, they hold him forcibly and start fighting with him and beating him just as two robbers or two ferocious enemies do not allow each other to run away They catch and beat So it is said that even if a hellish being wants to get released, he cannot do so.

(2) The second reason is that in case any hellish being wants to go out from hell to see their old relatives (of previous life) the Paramadharmik gods (who guard the hell) do not allow them to go. They catch them and cook them in Kumbhi—narrow necked pot. They cut the body into pieces. The heart-renting description of the tortures inflicted by Paramadharmik gods is available in the 'Narak Vibhakti' chapter of Sutrakritang and nineteenth chapter 'Mrigaputriya' of Uttaradhyayan Sutra. A reading of those chapters indicates that the guarding gods of hell do not allow the hellish beings to go out. They catch them and torture them.

(3) The third reason is the Vedniya karma (the pain bearing karma) of the hellishing being of his previous life or lives. The period for which such karmas the fruit of which is to be undergone in hellish state have been performed, he shall have to experience their fruit Without undergoing the fruit of those karmas (actions), he cannot go out from hell, just as a spider cannot get away from her cobweb.

(4) The fourth reason is the life-span or the age of the hellish being. According to Sthiti Pad of Prajnapana Sutra and Anuyogdvar Sutra the minimum life-span of a hellish being is ten thousand years and the maximum life-span (which is of hellish being in seventh hell) is 33 Sagaropam. Their life-span can never be reduced nor increased. They cannot die before completing their life-span.

So Keshi Kumar Shraman says that hellish being cannot come out from the hell even if he desires to see his relatives. These causes have been mentioned in Sthanang Sutra also

In this aphorism, king Pradeshi gives the factual example of his grandmother. He says that 'she was of religious thought and of religious conduct According to the philosophical principles, she must have gone to heaven. It can be admitted that in hell, a living-being is not independent and therefore he cannot come out even if he is keen for it. But in the heaven, the gods are independent and free to execute their plan So the grandmother could come. Why then my grandmother has not come so far ?'

While clarifying this doubt (query) Keshi Kumar Shraman first of all gave the example of entering a toilet while going to the temple It has been clarified that in comparison with the fragrant unique environment of heaven, the human world is more foul-smelling than even a toilet. Here also four reasons have been given for the gods not coming to human world—

(1) The first reason is the engrossment in sensual enjoyment and pleasures of celestial world by a newly born god. They become so much absorbed in the pleasures of that place that even having in their mind that they may visit human world, they are not able to discard the attachment to the enjoyments there. They, therefore, are not able to leave the heavenly world.

(2) The second reason is that ordinarily after going to heavenly abode, the relationship with friends and relatives breaks down; the love for them

disappears. He thinks that the relatives of previous lives are so many that it is not possible to decide whom should he remember and whom should he assist since in his visual knowledge, he has memory of many past lives. In case he remembers friends and relatives of all those previous lives, he will unnecessarily be worried about them and he shall have to discard divine pleasures and enjoyments. So the string of love and attachment (with relatives and friends of previous lives) becomes loose or breaks and he forgets them. Many times the new born god does not even remember the promise he had made in earlier life-span and therefore, he is not able to keep it.

(3) The third reason is that newly born god in celestial abode becomes so much engrossed in the pleasures of that place, in the divine dance and music and suchlike that he is not able to leave it in the middle. He thinks that he shall go immediately when the drama concludes. But even one scene takes a pretty long period. But human-beings go into many successions during that period. When the recently born gods come to see those whom they had promised in earlier life, or they come to assist those whom they so desire to help, those friends had already completed their life-span and had gone to the next world where they are passing through their life-span.

(4) The fourth reason is the foul smell of the human world. The human world is a collection of gross molecules The foul smell of bones, blood, flesh, human waste and urine and others is so ferocious that it affects the environment upto many yojans. Such a foul smell is intolerable for gods living in heaven. They want to come here but feeling worried due to such a bad smell, they change their plan of coming to the human world

In this aphorism, it is mentioned that the foul smell of human world goes upwards upto 400 to 500 yojans in space. But in Agam, it is mentioned that the molecules of smell can be subject of sense of smell only upto nine yojans and not more. It is worth consideration how this description can be in line with the description in Agam. The molecules that come from a distance of more than nine, their smell becomes extremely low and such they cannot affect the sense-organs of smell.

The commentator Acharya Malaygiri, while explaining this complexity has mentioned as under—"Although the principle is as above mentioned but those molecules that are having extreme smell, they meet those molecules who are at a distance of nine yojans. They transfer their smell to those molecules. Similarly molecules to whom smell has been

transferred, transfer their smell to the molecules at a further distance of nine yojans from them. Thus going higher and higher the molecules reach upto four hundred to five hundred yojans. But it is worthy of notice that the smell goes on lighter and lighter as they go up. The smell of human world reaches upto five hundred yojans only if it is of extreme order. So in the scriptures two figures four hundred and five hundred are mentioned."

The view of Abhaydev Suri, commentator of Sthanang Sutra in this context is as under—"This version (400 to 500 yojans) simply refers to the foul nature of human world (and its environment, its atmosphere). In fact no god or any other living-being can know the smell of molecules from a distance of more than nine yojans. The capacity of sense-organs mentioned in the Agam is only with reference to sense-organs of Audarik Shareer (gross physical body)."

In Sthanang Sutra also the same four reasons have been mentioned for gods avoiding to come down to human world Further four reasons have been mentioned for inspiring gods to visit human world. They are—

(1) The newly born gods, not attached to the enjoyments of godly world thinks that he should bow to, greet and honour his worthy gurus (teachers-guides) whose lectures and blessings have helped him in having the divine grandeur (wealth).

(2) Some (newly born) gods, understanding that there is a great benefit of bowing to and serving the omniscient (mendicants possessing immense knowledge, Shramans obscuring austerities of highest order whom when one sees moving about in the human world, one comes to for showing obescience to them leaving the divine pleasures and enjoyments.

(3) Some gods come in order to create faith towards religion or to provide right (scriptural knowledge to their parents, son or other relatives of the previous life-span, leaving the divine pleasures and enjoyments of the heavenly world.

(4) Sometimes a person promises another person in the human world that whosoever, any one out of them, completes his present life-span earlier (dies earlier), he shall come to give true knowledge to the other. Keeping the word (if he becomes) god, he comes to the human world leaving his divine pleasures and enjoyments of the heavenly world (for sometime).

In Visheshavashyak Bhashya (verses 1875-1877, Sthanang, Sthan 4) five reasons have been mentioned for non-coming of gods to the human

world. Four reasons are the same as earlier mentioned. The fifth reason is that gods are independent. They are not under any obligation. They are not subservient to the human world.

Further, in it, nine reasons have been mentioned that motivate the gods to come to human world. They are as under—

(1) On the auspicious occasion (celebrity) of the birth, accepting of monkhood, attainment of perfect knowledge (Kewal Jnan) and liberation (Nirvan) of Arihant.

(2) Inspired by deep devotion.

(3) To remove doubt of others.

(4) As a result of deep attachment with son, a friend or any suchlike of previous life-span.

(5) To fulfil the promise or word made in the previous life-span in order to provide right spiritual knowledge.

(6) Influenced by austerities, penances and other such qualities of highest order.

(7) Agitated by the enmity and opposition of the previous life-span in order to torture and cause pain.

(8) To bless any friend and suchlike of previous life-span.

(9) To provide humour or influenced by such (behaviour) a temprament.

In Avashyak Niryukti Acharya Bhadrabahu has said—"Gods become attached to sensual enjoyments primarily because of function of deluding (Mohaniya) karma and pleasure-bearing (Saata Vedaniya) karma. They cannot discard sensual enjoyments and pleasures because of Apratyakhyan Mohaniya (partial-vow preventing deluding) karma."

In Deeghanikaya, Kumar Kashyap also gave an example on a question by king Payaasi which is as follows—"Imagine a person lying in foul-emitting well. His body is besmeared with dirt. A person takes out that person from the well. He gives him a bath, massages him with fragrant oil, puts sandal wood paste on his body, decorates him with flowers and then again asks him to go into that, foul-smelling well. Will that person again enter that foul-smelling well."

(Payaasi replied) "No. He shall not enter."

Similarly gods born in heaven, do not wish to come back to human world.

२४८. तए णं से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी–

अत्थि णं भंते ! एस पण्णा उवमा, इमेणं पुण कारणेणं णो उवागच्छति, एवं ढालु भंते ! अहं अन्नया कयाइं बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए अणेग गणणायक–दंडणायग–राय–ईसर–तलवर–माडंबिय–कोडुंबिय–इब्भ–सेट्ठि–सेणावइ–सत्थवाह–मंति–महामंति–गणग–दोवारिय–अमच्च–चेड–पीढमद्द–नगर–निगम–दूय–संधिवालेहिं सद्धिं संपरिवुडे विहरामि। तए णं मम णगरगुत्तिया ससक्खं सलोद्दं सगेवेज्जं अवउडबंधणबद्धं चोरं उवणेंति।

तए णं अहं तं पुरिसं जीवंतं चेव अउकुंभीए पक्खिवावेमि, अउमएणं पिहाणएणं पिहावेमि, अएण य तउएण य आयावेमि, आयपच्चइयएहिं पुरिसेहिं रक्खावेमि।

तए णं अहं अण्णया कयाइं जेणामेव सा अउकुंभी तेणामेव उवागच्छामि, उवागच्छित्ता तं अउकुंभिं उग्गलच्छावेमि, उग्गलच्छावित्ता तं पुरिसं सयमेव पासामि, णो चेव णं तीसे अयकुंभीए केइ छिड्डे इ वा विवरे इ वा अंतरे इ वा राई वा जओ णं से जीवे अंतोहिंतो बहिया णिग्गए।

जइ णं भंते ! तीसे अउकुंभीए होज्जा केई छिड्डे वा जाव राई वा जओ णं से जीवे अंतोहिंतो बहिया णिग्गए, तो णं अहं सद्दहेज्जा, पत्तिएज्जा, रोएज्जा, जहा अन्नो जीवो अन्नं सरीरं, नो तं जीवो तं सरीरं, जम्हा णं भंते ! तीसे अउकुंभीए णत्थि केइ छिड्डे वा जाव निग्गए, तम्हा सुपतिट्ठिया मे पइन्ना जहा–तं जीवो तं सरीरं, नो अन्नो जीवो अन्नं सरीरं।

२४८. केशीकुमार श्रमण के उत्तर को सुनकर राजा प्रदेशी ने इस प्रकार कहा–

"हे भदन्त ! जीव और शरीर की भिन्नता प्रदर्शित करने के लिए आपने देवों के नही आने के कारण रूप में जो उपमा दी, वह तो बुद्धि से कल्पित एक दृष्टान्त मात्र है, परन्तु भदन्त ! (मैं अपने प्रत्यक्ष अनुभव की बात बताता हूँ) किसी एक दिन मै अपने अनेक गणनायक, दंडनायक, राजा, ईश्वर, तलवर, मांडविक, कौटुम्बिक, इभ्य, श्रेष्ठी, सेनापति, सार्थवाह, मंत्री, महामंत्री, गणक–(ज्योतिषशास्त्रवेत्ता), दौवारिक (राजसभा का रक्षक), अमात्य, चेट (सेवक), पीठमर्दक–(सदा पास रहने वाला सेवक), नागरिक, व्यापारी, दूत, संधिपाल आदि के साथ अपनी बाह्य उपस्थानशाला–(सभाभवन) में बैठा हुआ था। उसी

समय नगर-रक्षक ने चोर को पकड़कर मेरे सामने उपस्थित किया। उसके गर्दन और दोनों हाथ बँधे थे। उसके साथ चुराई हुई वस्तु और साक्षी-गवाह भी विद्यमान थे।

तब मैंने उस चोर को जीवित ही एक लोहे की कुम्भी में बन्द करवाकर अच्छी तरह लोहे के ढक्कन से उसका मुख ढक दिया। फिर गरम लोहे एवं राँगे से उस पर लेप कराकर उसे हवा बन्द बना दिया और देखरेख के लिए अपने विश्वासपात्र पुरुषो को नियुक्त कर दिया।

किसी दिन मै उस लोहे की कुभी के पास गया। वहाँ जाकर मैंने उस लोहे की कुंभी को खुलवाया। खुलवाकर मैने स्वय उस पुरुष को देखा तो वह मर चुका था। किन्तु उस लोहकुभी मे राई अथवा सुई जितना भी न कोई छेद था, न कोई विवर था, न कोई अन्तर था और न कोई दरार थी कि जिसमे से उस अन्दर में बन्द पुरुष का जीव बाहर निकल जाता।

यदि उस लोहकुभी मे कोई छिद्र यावत् दरार होती तो मैं यह मान लेता कि भीतर बन्द पुरुष का जीव बाहर निकल गया है और तब मैं आपकी बात पर विश्वास कर लेता, प्रतीति कर लेता एव अपनी रुचि का विषय बना लेता-निर्णय कर लेता कि जीव अन्य है और शरीर अन्य है। लेकिन हे भदन्त ! उस लोहकुभी मे जब कोई छिद्र ही नही था, अतः मेरा यह मन्तव्य ठीक है कि जो जीव है वही शरीर है और जो शरीर है वही जीव है। जीव शरीर से भिन्न नही और शरीर जीव से भिन्न नहीं है।

TEST OF INDENTITY OF JIVA AND SHAREER

248. After hearing the reply of Keshi Kumar Shraman, king Pradeshi said thus—

"Reverend Sir ! In order to prove that Jiva (soul) and body are different entities, you have narrated the reasons for gods not coming (to human world) But it is simply an imaginative illustration created by intellect. But Reverend Sir ! (I tell the incident of my personal experience) Once I was in my outer council-hall. Many heads of departments, many incharge of inflicting punishment, king, gods, masters, maandvik, family members, chiefs, nobles, army chief, traders, ministers, prime ministers, astrologers, security incharge of the council-hall, servants, whole time servants, citizens, businessmen, spies, officers responsible for guarding border were also with me. At that time the city guard

brought a thief to me. His hands and neck were tied. The stolen things and the witnesses to the incident were also present.

I got that thief placed in an iron pot with a narrow neck. I placed the iron cover at its mouth. I then with heated iron and ranga got it pasted and thus made it air tight. I appointed my trusted men to guard it.

One day, I went near that narrow-necked pot. I got that pot opened. I then myself examined that man. I found him dead. But there was no hole in that pot, not even a small hole like needle point. There was no hair-line gap nor any other gap. So there was no possibility for his Jiva (soul) to go out.

In case there had been any hole or infintecimal gap. I could admit that the soul of the person shut down in the long-necked pot had gone out. Then I would have accepted your view point, would have liked it and would have taken interest in it. I would have then concluded that soul is different from body. But, Reverend Sir ! When there was no hole in that pot, my this conclusion is correct that soul is body and body is soul. Soul is not different from the body and body is not different from the soul.

कूटाकारशाला का दृष्टान्त

२४९. तए णं केसी कुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी–

पएसी ! से जहा नामए कूडागारसाला सिया दुहओ लित्ता–गुत्ता–गुत्तदुवारा–णिवायगंभीरा। अह णं केइ पुरिसे भेरिं च दंडं च गहाय कूडागारसालाए अंतो अंतो अणुप्पविसति, तीसे कूडागारसालाए सव्वतो समंता घण–निचिय–निरंतर–णिच्छिड्डाइं दुवारवयणाइं पिहेइ, तीसे कूडागारसालाए बहुमज्झदेसभाए ठिच्चा तं भेरिं दंडएणं महया महया सद्देणं तालेज्जा, से णूणं पएसी ! से सद्दे णं अंतोहिंतो बहिया निग्गच्छइ ?

हंत णिग्गच्छइ।

अत्थि णं पएसी ! तीसे कूडागारसालाए केइ छिड्डे वा जाव राई वा जओ णं से सद्दे अंतोहिंतो बहिया णिग्गए ?

नो तिणट्ठे समट्ठे।

एवामेव पएसी ! जीवे वि अप्पडिहयगई पुढविं भिच्चा, सिलं भिच्चा, पव्वयं भिच्चा अंतोहिंतो बहिया णिग्गच्छइ, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी ! अण्णो जीवो तं चेव।

२४९. प्रदेशी राजा के इस तर्क को सुनकर केशीकुमार श्रमण ने कहा–

"हे प्रदेशी ! (उदाहरण के रूप में) जैसे कोई एक कूटाकारशाला हो और वह भीतर–बाहर चारों ओर लिपी हुई हो, अच्छी तरह से आच्छादित हो, उसका द्वार भी गुप्त हो और हवा का प्रवेश भी जिसमें नहीं हो सके, ऐसी गहरी हो। यदि उस कूटाकारशाला के भीतर कोई पुरुष भेरी (नगाडा) और बजाने के लिए डंडा हाथ में लेकर घुस जाये और घुसकर उस कूटाकारशाला के द्वार आदि को इस प्रकार चारो ओर से बन्द कर दे कि जिससे कहीं पर भी थोडा–सा अन्तर नही रहे (हवा निकलने को भी छेद न रहे) और उसके बाद उस कूटाकारशाला के बीचोबीच खडे होकर डडे से भेरी को जोर–जोर से बजाये तो तुम्ही बताओ कि वह भीतर की आवाज बाहर निकलती है अथवा नहीं ? अर्थात् भीतर की ध्वनि बाहर सुनाई पडती है या नहीं ?"

प्रदेशी–"हाँ, भदन्त ! निकलती है।"

केशीकुमार श्रमण–"हे प्रदेशी ! क्या उस कूटाकारशाला में कोई छिद्र अथवा दरार हुई है कि जिसमें से वह शब्द बाहर निकला हो ?"

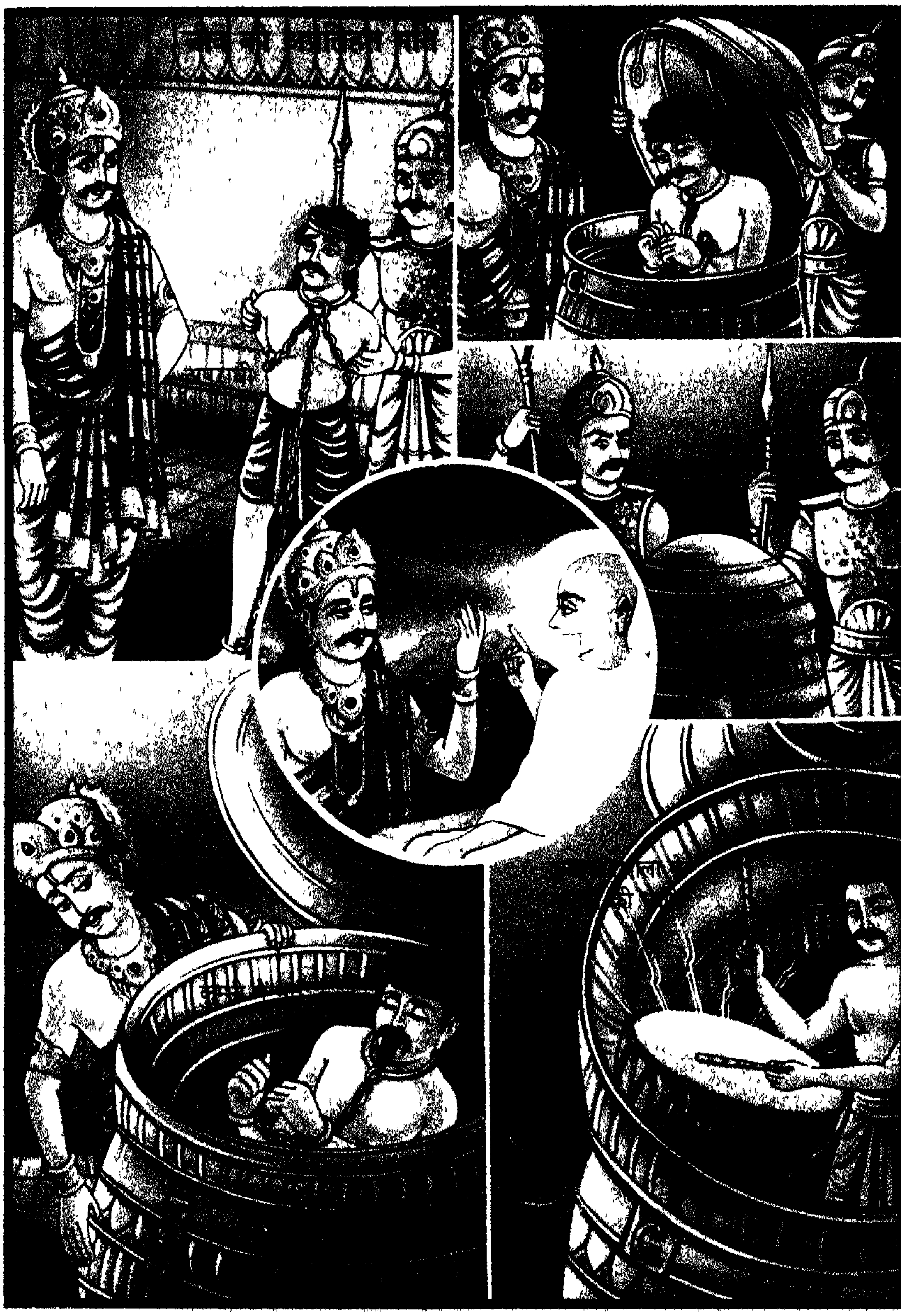
प्रदेशी–"हे भदन्त ! वहाँ पर कोई छिद्रादि नही होता कि जिससे शब्द बाहर निकल सके।"

केशीकुमार श्रमण–"तो हे प्रदेशी ! इसी प्रकार जीव भी अप्रतिहत गति वाला है; उसकी गति कही नहीं रुकती। वह पृथ्वी का भेदन कर, शिला का भेदन कर, पर्वत का भेदन कर भीतर से बाहर निकल जाता है। इसीलिए तुम यह श्रद्धा–प्रतीति करो कि जीव और शरीर पृथक्–पृथक् है, जीव शरीर नही है और शरीर जीव नहीं है।"

ILLUSTRATION OF KOOTAKARSHALA
(A TEMPLE ON SUMMIT OF A HILL)

249. After hearing this argument of king Pradeshi Keshi Kumar Shraman said—

"O Pradeshi ! Imagine a temple on summit of a hill and that it is pasted on all sides from both inside and outside. It is well covered. Its entrance is also secret. It is so deep that even air cannot enter it. Imagine that a person enters it with a stick and a drum and then he closes the door in such a way that there is no space even for the air



चित्र परिचय-१२

Illustration No. 12

जीव की अप्रतिहत गति

राजा प्रदेशी पूछता है–"आपके मतानुसार शरीर से जीव भिन्न है। मै यह नही मानता। क्योकि मैने एक अपराधी को पकडकर जीवित ही एक छिद्ररहित लौह कुम्भी मे डालकर कुम्भी को बन्द करके उस पर लेप लगाकर ताला डाल दिया था। कुछ दिन बाद देखा तो वह अपराधी मर चुका था। किन्तु कुम्भी मे जीव निकलने का कही भी कोई छेद या निशान नहीं मिला।'

समाधान देते हुए केशीकुमार श्रमण बोले -' राजन् ! जैसे कोई पुरुष एक कूटाकारशाला मे प्रविष्ट होकर उसे चारो तरफ से हवा बन्द करके भीतर नगाडा पीटे तो उस नगाडे की आवाज बाहर सुनाई देती है या नही ?

राजा प्रदेशी–"देती है।"

केशीकुमार श्रमण "उस शाला मे आवाज निकलने का कोई छिद्र नही होने पर भी आवाज बाहर आती है, उसी प्रकार जीव अप्रतिहत गति वाला है। उसकी गति कही रुकती नही।'

-सूत्र २४८ २४९ पृष्ठ ३४० ३४३

UNRESTRAINED MOVEMENT OF SOUL

King Pradeshi asks—"According to you body and soul are separate I don't accept this This is because once I caught a criminal and put him in an iron vessel with no hole Then the vessel was locked and sealed with a sealing paste When I checked the vessel a few days later I found the criminal dead and there was no hole or other sign of the soul escaping "

Keshi Kumar Shraman explained—"O King ! Imagine a person entering a concealed clandestine room, hermetically sealing it and then beating a drum inside Is the sound of the drum-beat audible outside or not ?"

King Pradeshi—"Yes, it is "

Keshi Kumar Shraman—"Although there is no hole through which the sound can escape, it still comes out In the same way soul has unrestrained movement Nothing stops its movement "

—Sutras 248 249, pp 340-343

to come out. Thereafter with the stick he beats the drum with great force, standing at the centre of that building. Please tell me whether the sound (of beating of the drum) will come out or not. In other words from outside can one hear the beating of the drum or not."

Pradeshi replied—"Reverend Sir ! It comes out."

Keshi Kumar Shraman said—"O Pradeshi ! Has any hole or hair-line appeared through which the sound has come out ?"

King Pradeshi said—"Sir ! There is no hole through which the sound has come out."

Keshi Kumar Shraman said—"O Pradeshi ! Similarly Jiva (soul) also has a movement that cannot be stopped by any substance. It does not stop any where. It passes through the earth, the heavy stone (shila), the hills, the mountains. So you should have firm belief that soul and body are separate entities. Soul is not body and body is not soul."

लोहकुंभी का उदाहरण

२५०. तए णं पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी–

अत्थि णं भंते ! एस पण्णा उवमा, इमेणं पुण कारणेणं णो उवागच्छइ, एवं खलु भंते ! अहं अन्नया कयाइ बाहिरियाए उवट्ठाणसालाए जाव विहरामि, तए णं ममं णगरगुत्तिया ससक्खं जाव उवणेंति, तए णं अहं (तं) पुरिसं जीवियाओ ववरोवेमि, जीवियाओ ववरोवेत्ता अयोकुंभीए पक्खिवावेमि, अउमएणं पिहावेमि जाव पच्चइएहिं पुरिसेहिं रक्खावेमि।

तए णं अहं अन्नया कयाइं जेणेव सा कुंभी तेणेव उवागच्छामि, तं अउकुंभिं उग्गलच्छावेमि, तं अउकुंभिं किमिकुंभिं पिव पासामि। णो चेव णं तीसे अउकुंभीए केइ छिड्डे इ वा जाव राई वा जहा णं ते जीवा बहियाहिंतो अणुपविट्ठा, जति णं तीसे अउकुंभीए होज्ज केइ छिड्डे इ वा जाव अणुपविट्ठा, तेणं अहं सद्दहेज्जा जहा–अन्नो जीवो तं चेव, जम्हा णं तीसे अउकुंभीए नत्थि केइ छिड्डे इ वा जाव अणुपविट्ठा तम्हा सुपतिट्ठिआ मे पइण्णा जहा–तं जीवो तं सरीरं तं चेव।

२५०. केशीकुमार श्रमण का उत्तर सुनकर प्रदेशी राजा ने पुनः इस प्रकार तर्क उपस्थित किया–

"भदन्त ! आप द्वारा दी गई यह उपमा तो बुद्धि की चतुरता है, इससे मेरे मन में जीव और शरीर की भिन्नता का विचार युक्तियुक्त प्रतीत नहीं होता है। क्योंकि मैंने ऐसा अनुभव किया है किसी समय मैं अपनी बाहरी उपस्थानशाला में गणनायक आदि के साथ बैठा था। तब मेरे नगर-रक्षकों ने चोरी के प्रमाणों के साथ एक चोर पुरुष को उपस्थित किया। मैंने तुरन्त उस पुरुष को प्राणरहित कर दिया, मार डाला और मारकर एक लोहकुंभी मे डलवा दिया, मजबूत ढक्कन से ढाँक दिया और अपने विश्वासपात्र पुरुषो को रक्षा के लिए नियुक्त कर दिया।

इसके बाद किसी दिन मैं उस कुभी के पास गया। उस लोहकुभी को उघाडकर देखा, तो वह कृमियो (कीडों) से भरी हुई थी। लेकिन उस लोहकुभी मे न तो कोई छेद हुआ था, न कोई दरार पड़ी थी कि जिसमे से वे जीव बाहर से उसमें प्रवेश कर सकें। यदि उस लोहकुंभी मे कोई छेद होता, दरार होती तो मैं यह मान लेता कि वे जीव उसमे से होकर कुंभी में प्रविष्ट हुए हैं और तब मैं श्रद्धा कर लेता कि जीव अन्य है और शरीर अन्य है। लेकिन जब उस लोहकुभी मे कोई छेद आदि नही हुआ, फिर भी उसमें जीव प्रविष्ट हो गये। अत मेरा यह विश्वास है कि जीव और शरीर एक ही है। अर्थात् इस शरीर से भिन्न जीव नामक कोई तत्त्व नही है।"

EXAMPLE OF NARROW NECKED IRON POT

250. At this reply of Keshi Kumar Shraman, king Pradeshi put up another argument in this manner—

"Reverend Sir ! The illustration given by you is a product of developed intellect. This illustration does not give rise to the belief in my mind that soul and body are different. It is because I have experienced, that once I was sitting in my outer council-hall with my staff and others. Then my security guards of the town presented before me a thief with evidence of his guilt. I made him lifeless at once. I killed him and thereafter put him in a narrow necked big iron pot. I covered it with a strong lid and appointed my trusted men to guard it.

Thereafter, one day I came near that pot. I then found it full of ants. There was no hole nor any hair-line gap in it through which those insects could go inside. In case there had been any hole or hair-line gap in the pot, I could believe that the insects (Jiva) have entered through that gap. I could then believe that soul and body

are different entities. But since the insects entered the pot even without a hole or gap, I have firm belief that soul and body are one or in other words that soul is not different from the body."

तप्त लोह का उदाहरण

२५१. तए णं केसी कुमारसमणे पएसीं रायं एवं वयासी–

अत्थि णं तुमे पएसी ! कयाइ अए धंतपुव्वे वा धम्मवियपुव्वे वा ?

हंता अत्थि।

से णूणं पएसी ! अए धंते समाणे सव्वे अगणिपरिणए भवति ?

हंता भवति।

अत्थि णं पएसी ! तस्स अयस्स केई छिड्डी इ वा जेणं से जोई बहियाहिंतो अंतो अणुपविट्ठे ?

नो इणमट्ठे समट्ठे।

एवामेव पएसी ! जीवो वि अप्पडिहयगई पुढविं भिच्चा, सिलं भिच्चा बहियाहिंतो अणुपविसइ, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी ! तहेव।

२५१. तब प्रदेशी राजा के तर्क का उत्तर देते हुए केशीकुमार श्रमण ने कहा–

"हे प्रदेशी ! क्या तुमने पहले कभी अग्नि से तपाया हुआ लोहा देखा है अथवा स्वय लोहे को तपवाया है ?"

प्रदेशी–"हाँ, भदन्त !"

केशीकुमार श्रमण–"हे प्रदेशी ! यह बताओ, तपाने पर वह लोहा पूर्णतया अग्निरूप में हो जाता है या नहीं ?"

प्रदेशी–"हाँ, भदन्त ! हो जाता है।"

केशीकुमार श्रमण–"हे प्रदेशी ! तब उस लोहे में कोई छिद्र आदि होता है या हुआ क्या, जिससे वह अग्नि बाहर से उसके भीतर प्रविष्ट हो गई ?"

प्रदेशी–"भदन्त ! ऐसा नहीं होता है। अर्थात् उस लोहे में कोई छिद्र आदि नहीं होता।"

केशीकुमार श्रमण–"तो इसी प्रकार जीव भी अप्रतिहत गति वाला होता है, वह पृथ्वी, शिला आदि का भेदन करके बाहर से भीतर प्रविष्ट हो जाता है। इसीलिए तुम इस बात की श्रद्धा-प्रतीति करो कि जीव भिन्न है और शरीर भिन्न है।"

251. Replying to the argument of king Pradeshi, Keshi Kumar Shraman said—

"O Pradeshi ! Have you ever seen the red-hot iron or have you ever heated iron yourself in the fire ?"

Pradeshi replied—"Yes Sir."

Then Keshi Kumar Shraman said—"O Pradeshi ! Does the iron become completely fire-like when heated or does it not become so ?"

Pradeshi replied—"Sir ! It becomes."

Keshi Kumar Shraman asked—"O Pradeshi ! At that time does any hole or suchlike appear in the iron through which the fire entered the iron."

Pradeshi replied—"Sir ! There is no suchlike thing. No hole appears in the iron."

Keshi Kumar Shraman then said—"Similarly Jiva (soul) is also of uncontrollable movement. It enters through the earth, the heavy stone and suchlike from outside. So you have the belief that soul and body are different."

२५२. **तए णं पएसी राया केसीकुमारसमणं एवं वयासी–**

अत्थि णं भंते ! एस पण्णा उवमा, इमेण पुण मे कारणेणं नो उवागच्छइ–

अत्थि णं भंते ! से जहानामए केइ पुरिसे तरुणे जाव सिप्पोवगए पभू पंचकंडगं निसिरित्तए ?

हंता, पभू।

जति णं भंते ! सो च्चेव पुरिसे बाले जाव मंदविन्नाणे पभू होज्जा पंचकंडगं निसिरित्तए, तो णं अहं सद्दहेज्जा जहा–अन्नो जीवो तं चेव, जम्हा णं भंते ! स चेव से पुरिसे जा मंदविन्नाणे णो पभू पंचकंडगं निसिरित्तए, तम्हा सुपइट्ठिया मे पइण्णा जहा–तं जीवो तं चेव।

२५२. इन युक्तियों को सुनकर केशीकुमार श्रमण से प्रदेशी राजा ने कहा–

"आपकी उपमा वास्तविक नहीं है। बुद्धि से कल्पित है, इसलिए मैं इन्हें नहीं मानता। किन्तु जो कारण मैं बता रहा हूँ, उससे जीव और शरीर की भिन्नता सिद्ध नहीं होती है। वह कारण इस प्रकार है–

हे भदंत ! जैसे कोई एक तरुण, बलशाली, निरोग, स्थिर संहनन वाला, कुशल, बुद्धिमान और अपना कार्य सिद्ध करने में निपुण पुरुष क्या एक साथ अपने शरीर में लगे पाँच बाणों को निकालने में समर्थ है ?"

केशीकुमार श्रमण–"हाँ, वह समर्थ है।"

प्रदेशी–"लेकिन वही पुरुष यदि बालक तथा मंद ज्ञान वाला होता तो भी क्या पाँच बाणों को एक साथ निकालने में समर्थ होता ? यदि होता तो हे भदन्त ! मैं यह श्रद्धा कर सकता था कि जीव भिन्न है और शरीर भिन्न है, लेकिन वही बाल, मंद ज्ञान वाला पुरुष पाँच बाणो को एक साथ निकालने में समर्थ नही होता है, इसलिए मेरी यह धारणा सही है कि जीव और शरीर एक ही हैं। जो जीव है वही शरीर है और जो शरीर है वही जीव है।"

252. After hearing these arguments, king Pradeshi said—

"Your illustrations are not actual events. They are product of intellect, so I do not believe them. But the reasons which I put forward do not prove that soul and body are different entities. My reasoning is as under—

Reverend Sir ! There is a young, strong, healthy, well-built, clever, intelligent person who is expert in performing his duties. Can he simultaneously take out five arrows that have struck him ?"

Keshi Kumar Shraman replied—"Yes. He can."

Pradeshi said—"In case that man had yet been a child and of low intellect, could he then also take out five arrows from his body simultaneously. In case he could do, I could believe that soul is different from the body. But that child with low intellect is not able to take out five arrows simultaneously. So I have the firm belief that soul and body are one. Soul is body and body is soul."

टूटे धनुष का दृष्टान्त

२५३. तए णं केसी कुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी–

से जहानामए केइ पुरिसे तरुणे जाव सिप्पोवगए णवएणं धणुणा नवियाए जीवाए नवएणं इसुणा पभू पंचकंडगं निसिरित्तए ?

हंता, पभू।

सो चेव णं पुरिसे तरुणे जाव निउणसिप्पोवगए कोरिल्लिएणं धणुणा कोरिल्लियाए जीवाए कोरिल्लिएणं इसुणा पभू पंचकंडगं निसिरित्तए ?

णो तिणमट्ठे समट्ठे।

कम्हा णं ?

भंते ! तस्स पुरिसस्स अपज्जत्ताइं उवगरणाइं हवंति।

एवामेव पएसी ! सो चेव पुरिसे बाले जाव मंदविन्नाणे अपज्जत्तोवगरणे, णो पभू पंचकंडयं निसिरित्तए, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी ! जहा अन्नो जीवो तं चेव।

२५३. प्रदेशी राजा के प्रत्युत्तर मे केशीकुमार श्रमण ने कहा–

"राजन् ! कोई एक तरुण पुरुष, जो कार्य करने में निपुण हो, नवीन धनुष, नई प्रत्यचा (डोरी) और नवीन बाण से एक साथ पाँच बाण छोडने में समर्थ होता है अथवा नही ?"

प्रदेशी–"हाँ, समर्थ होता है।"

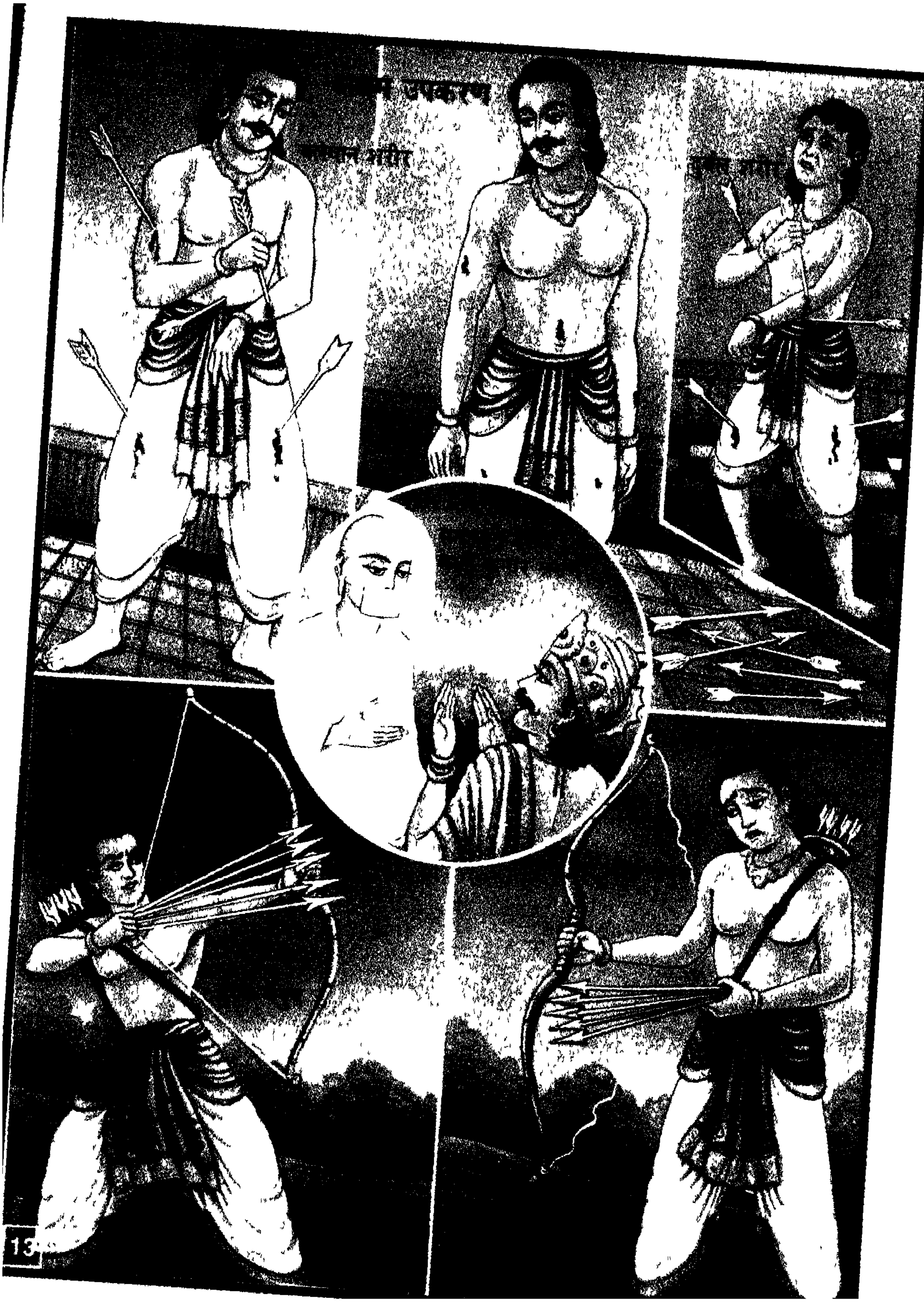
केशीकुमार श्रमण–"लेकिन वही तरुण और कुशल पुरुष जीर्ण–शीर्ण, पुराने धनुष, जीर्ण प्रत्यंचा और वैसे ही जीर्ण बाण से क्या एक साथ पाँच बाणों को छोडने मे समर्थ हो सकता है ?"

प्रदेशी–"भदन्त ! ऐसा नहीं होता। अर्थात् पुराने धनुष आदि से वह एक साथ पाँच बाण छोडने मे समर्थ नहीं हो सकता।"

केशीकुमार श्रमण–"प्रदेशी ! इसका क्या कारण है कि वह एक साथ पाँच बाण छोडने मे समर्थ नहीं होता ?"

प्रदेशी–"भदन्त ! उस पुरुष के पास उपकरण–साधन पर्याप्त नही हैं।"

केशीकुमार श्रमण ने कहा–"प्रदेशी ! इसी प्रकार वह बाल मंद विज्ञानी पुरुष योग्यता रूप उपकरण की अपर्याप्तता के कारण एक साथ पाँच बाणों को छोडने में समर्थ नहीं हो पाता है। अर्थात् उसमें जीव की क्षमता तो समान ही है किन्तु शरीर रूप साधन की अक्षमता है। अत प्रदेशी ! तुम यह श्रद्धा–प्रतीति करो कि जीव और शरीर पृथक्–पृथक् है। जीव शरीर नहीं और शरीर जीव नहीं है।"



चित्र परिचय-१३

Illustration No. 13

अक्षम उपकरण

राजा प्रदेशी ने प्रश्न किया- ''क्या कोई बलवान पुरुष अपने शरीर मे लगे पॉच बाणो को एक साथ निकाल सकता है ?''

केशीकुमार श्रमण-''हॉ, निकाल सकता है।

राजा प्रदेशी-''कोई बालक या दुर्बल व्यक्ति अपने शरीर पर लगे पॉच बाणो को एक साथ निकालने मे समर्थ क्यो नही होता ?''

प्रश्न का समाधान करते हुए केशीकुमार श्रमण बाले - एक सुदृढ शरीर वाला समर्थ धनुर्धारी एक सधे हुए धनुष से क्या एक साथ पॉच बाण छोड सकता है ?''

राजा प्रदेशी ''हॉ, छोड सकता है।''

केशीकुमार श्रमण ''यदि उस धनुर्धारी का धनुष, प्रत्यचा आदि साधन जीर्ण शीर्ण, कमजोर हो तो क्या उससे एक साथ पांच बाण छोडे जा सकते है ?''

राजा प्रदेशी ''नही, वह नही छोड सकता।'

केशीकुमार श्रमण - ''यही बात तुम्हारे प्रश्न के सम्बन्ध मे समझो। शरीररूपी उपकरण की दुर्बलना से आत्मा के पौरुष मे अन्तर पडता है।'

सूत्र २५२ २५३, पृष्ट ३४६ ३४९

WEAK EQUIPMENT

King Pradeshi asked—"Can a strong person remove five arrows embedded in his body at once ?"

Keshi Kumar Shraman—"Yes, he can "

King Pradeshi—"Why a child or a weak person is unable to remove five arrows embedded in his body at once ?"

Keshi Kumar Shraman explains—"Can a strong and accomplished archer launch five arrows together with a well balanced bow ?"

King Pradeshi—"Yes, he can "

Keshi Kumar Shraman—"If the archer's bow, bow-string and other equipments are old and wasted, can he still launch five arrows together ?"

King Pradeshi—"No, he can't "

Keshi Kumar Shraman—"That answers your question The weakness of the equipment that is the body effects the potency of the soul "

—Sutras 252-253, pp 346-349

253. In reply to the argument of king Pradeshi, Keshi Kumar Shraman said—

"O king ! Is a young man who is expert in performing all duties, capable of throwing five arrows simultaneously with a new bow and a new string."

Pradeshi replied—"Yes. He is capable."

Keshi Kumar Shraman said—"Can the same young expert person throw five arrows simultaneously with an old bow, weak string and weak arrow."

Predeshi said—"Sir ! It is not possible. He cannot do so with an old bow."

Keshi Kumar Shraman asked—"Why is it so that he is not capable of throwing five arrows simultaneously ?"

Pradeshi replied—"Sir ! That man does not have proper instrument."

Keshi Kumar Shraman then said—"O Pradeshi ! Same is the case with a person of low intellect; he has not the instrument of proper skill and, therefore, he is not able to throw five arrows simultaneously. In other words, the capability in the soul is the same but due to weak body, he is not able to do so. O Pradeshi ! You have the belief that soul and body are different. Soul is not the body and body is not the soul."

२५४. तए णं पएसी राया केसीकुमारसमणं एवं वयासी–

अत्थि णं भंते ! एस पण्णा उवमा, इमेण पुण कारणेणं नो उवागच्छइ, भंते ! से जहानामए केइ पुरिसे तरुणे जाव सिप्पोवगए पभू एगं महं अयभारगं वा तउयभारगं वा सीसगभारगं वा परिवहित्तए ?

हंता, पभू !

सो चेव णं भंते ! पुरिसे जुन्ने जराजज्जरियदेहे सिढिलवलितयाविणट्ठगत्ते दंडपरिग्गहियग्गहत्थे पविरलपरिसडियदंतसेढी आउरे किसिए पिवासिए दुब्बले किलंते नो पभू एगं महं अयभारगं वा जाव परिवहित्तए।

जइ णं भंते ! सच्चेव पुरिसे जुन्ने जराजज्जरियदेहे जाव परिकिलंते पभू एगं महं अयभारं वा जाव परिवहित्तए तो णं सद्दहेज्जा तहेव, जम्हा णं भंते ! से चेव पुरिसे जुन्ने जाव किलंते नो पभू एगं महं अयभारं वा जाव परिवहित्तए, तम्हा सुपतिट्ठिता मे पइण्णा तहेव।

२५४. तब प्रदेशी राजा ने पुनः केशीकुमार श्रमण से कहा–

"हे भदन्त ! यह आपकी बुद्धि से कल्पित उपमा पर्याप्त नहीं है। किन्तु मेरे द्वारा प्रस्तुत तर्क से यह सिद्ध होता है कि जीव और शरीर में भेद नहीं है। वह तर्क इस प्रकार है–भदन्त ! कोई एक तरुण बलवान पुरुष एक विशाल बहुत बडे लोहे के भार को, सीसे के भार को या राँगे के भार को उठाने में समर्थ होता है अथवा नही ?"

केशीकुमार श्रमण–"हाँ, समर्थ होता है।"

प्रदेशी–"भदन्त ! किन्तु जब वही पुरुष वृद्ध हो जाता है तब वृद्धावस्था के कारण शरीर जर्जरित, शिथिल, झुर्रियों वाला एवं अशक्त हो जाता है, चलते समय सहारे के लिए हाथ में लकडी ले लेता है। दंत-पंक्ति मे से बहुत से दाँत गिर चुके होते है, खाँसी, श्वास आदि रोगों से पीडित होने के कारण कमजोर हो जाता है। भूख-प्यास से व्याकुल रहता है, दुर्बल और थका-माँदा हो जाता है तब उस वजनदार लोहे के भार को, राँगे के भार को अथवा सीसे के भार को उठाने मे समर्थ नहीं हो पाता है।

हे भदन्त ! यदि वही पुरुष वृद्ध, जरा-जर्जरित शरीर होने पर भी उस विशाल लोहे के भार आदि को उठाने मे समर्थ होता तो मैं यह विश्वास कर सकता था कि जीव शरीर से भिन्न है और शरीर जीव से भिन्न है। लेकिन वह पुरुष वृद्ध हो जाने से एक विशाल लोहे के भार आदि को उठाने में समर्थ नहीं होता है। अतः मेरी यह धारणा सुसगत-समीचीन है कि जीव और शरीर दोनों एक ही है। किन्तु जीव और शरीर भिन्न-भिन्न नहीं हैं।"

254. Then king Pradeshi again said—

"Reverend Sir ! The illustration which is a creation of your intellect is not sufficient. From my logical argument it is crystal clear that there is no difference between soul and body. That argument is as under—Sir ! Can a young well-built person be capable of lifting a heavy load of iron, of glass or of another metal ?"

Keshi Kumar Shraman said—"Yes, he can ?"

Pradeshi said—"But when the same person becomes old, he because of old age becomes weak, feeble and wrinkles appear on his

body. He walks with the help of a stick. Many of his teeth have fallen. He becomes a prey to cough, breathing trouble and suchlike diseases and therefore, becomes very weak. He remains restless due to hunger and thirst. He feels weak and tired. At that time he is not capable to lift that load of iron, glass or other suchlike.

Sir ! In can that person could lift such load even at the old age and with the weak, frail body, I could believe that soul and body are different. But that person because of his old age, is not capable of lifting the iron load, so my belief that soul and body are the same is correct. It is thus a fact that soul is not different from the body."

२५५. तए णं केसी कुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी–

से जहाणामए केइ पुरिसे तरुणे जाव सिप्पोवगए णवियाए विहंगियाए, णवएहिं सिक्कएहिं, णवएहिं पच्छियपिंडएहिं पहू एगं महं अयभारं जाव परिवहित्तए ?

हंता, पभू।

पएसी ! से चेव णं पुरिसे तरुणे जाव सिप्पोवगए जुन्नियाए दुब्बलियाए घुणक्खइयाए विहंगियाए जुण्णएहिं दुब्बलएहिं घुणक्खइएहिं सिढिलतयापिणद्धएहिं सिक्कएहिं, जुण्णएहिं दुब्बलिएहिं घुणखइएहिं पच्छिपिंडएहिं पभू एगं महं अयभारं वा जाव परिवहित्तए ?

णो तिणट्ठे समट्ठे।

कम्हा णं ?

भंते ! तस्स पुरिसस्स जुन्नाइं उवगरणाइं भवंति।

पएसी ! से चेव से पुरिसे जुन्ने जाव किलंते जुत्तोवगरणे नो पभू एगं महं अयभारं वा जाव परिवहित्तए, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी ! जहा–अन्नो जीवो अन्नं सरीरं।

२५५. तब केशीकुमार श्रमण ने उत्तर दिया–

"जैसे कोई एक तरुण यावत् कार्य-निपुण पुरुष नवीन कावड से, रस्सी से बने नवीन सींके से और नवीन टोकरी से एक बहुत बड़े वजनदार लोहे के भार को उठाने, ढोने में समर्थ होता है या नहीं ?"

प्रदेशी–"हाँ, समर्थ होता है।"

केशीकुमार श्रमण-(अब मैं पुनः तुमसे पूछता हूँ कि) "हे प्रदेशी ! वही तरुण यावत् कार्यकुशल पुरुष क्या सडी-गली, पुरानी, कमजोर, घुन से खाई हुई कावड से, जीर्ण-शीर्ण, दुर्बल, दीमक के खाये एवं ढीलेढाले सींके से और पुराने, कमजोर तथा दीमक लगी टोकरी से एक बडे वजनदार लोहे के भार आदि को ढोने में समर्थ होता है ?"

प्रदेशी-"हे भदन्त ! ऐसा नही हो सकता है। जीर्ण-शीर्ण कावड आदि से भार ले जाने में वह समर्थ नहीं होता है।"

केशीकुमार श्रमण-"क्यों नहीं समर्थ है ?"

प्रदेशी-"क्योंकि भदन्त ! उस पुरुष के पास भारवहन करने के उपकरण-साधन जीर्ण-शीर्ण हैं इस कारण।"

केशीकुमार श्रमण-"हे प्रदेशी ! इसी प्रकार वह पुरुष जीर्ण यावत् थके हुए शरीर आदि उपकरणो वाला होने से एक भारी वजनदार लोहे के भार को वहन करने में समर्थ नही है। इसीलिए प्रदेशी ! तुम यह श्रद्धा और विश्वास करो कि जीव अन्य है और शरीर अन्य है। जीव शरीर नही है और शरीर जीव नही है।"

255. Then Keshi Kumar Shraman replied—

"O Pradeshi ! Imagine a young, expert person. Is he capable or not, of lifting a big heavy iron load with a new big basket, in a new swing made of string or a new bamboo basket ?"

Pradeshi replied—"Yes, he is capable."

Keshi Kumar Shraman again said—"O Pradeshi ! Can the same young expert person lift the heavy load with a rotten, old, weak and insect-eaten basket, very weak, insect-eaten loose swing or old, weak and insect-eaten bamboo basket ?"

Pradeshi replies—"Sir ! It is not possible. He can't carry the load is with very weak basket and suchlike others."

Keshi Kumar Shraman asked—"Why is he not capable ?"

Pradeshi replied—"Sir ! The instruments with him to carry the load are very weak and old."

Keshi Kumar Shraman said—"O Pradeshi ! Similarly that man has old upto tired body as his instruments. So he is not able to carry a heavy load. So O Pradeshi ! You have faith, you believe that soul and body are different. Soul is not body and body is not soul."

विवेचन—यहाँ प्रदेशी राजा का तर्क है कि दोनों पुरुषों मे शारीरिक क्षमता का अन्तर क्यों है ? यदि शरीर से आत्मा भिन्न होता तो आपके कथनानुसार आत्मा तो दोनो मे ही समान है, फिर यह अन्तर क्यों पड़ा ? इससे यह सिद्ध होता है कि शरीर ही मुख्य है, शरीर के कारण ही वह शक्ति-सम्पन्न है। आत्मा या चेतना नाम की भिन्न शक्ति नही है। इसके समाधान मे केशीकुमार श्रमण ने पुराने धनुष का उदाहरण दिया है, बाण फेकने वाला साधक और धनुष व डोरी आदि बाण फेकने के साधन-दोनो ही जब समर्थ/सक्षम होते हैं तभी कार्य सम्पन्न होता है। इसी प्रकार जीव साधक है, शरीर साधन है। यदि शरीर दुर्बल या रोगी है तो शक्ति-सम्पन्न जीव भी अपना कार्य सिद्ध नही कर सकता। दूसरा कावड का उदाहरण भी साधनो की अपर्याप्तता को ही शरीर की अक्षमता का कारण सिद्ध करता है। पर्याप्त उपकरणो के अभाव मे समर्थ सुदक्ष सेना भी हार जाती है, इससे यही सिद्ध होता है कि उपकरण भिन्न है और उपकरणो से कार्य करने वाला भिन्न है, दोनों एक नही है।

Elaboration—Here the argument of king Pradeshi why is there the difference in physical capability of the two persons ? In case soul is different from the body, soul being identical in the two, why is the difference (in strength) This fact proves that body is the main organ. The strength is because of the body. There is no other power such as soul or consciousness In reply Keshi Kumar Shraman gave the example of an old bow A work is completed if the person throwing, the arrow, the bow and its string are all strong and capable. Similarly Jiva (soul) is the person, body is the instrument. If the body is weak and disease-ridden, even a strong person cannot complete his task The second example of Kavar (the big basket) also indicates the unsufficiency in strength of the means as the body is weak. Absence of proper needed instruments leads to the defeat of even a strong army This fact proves that the means (the instruments) and the person using the instruments are different. Both are not the same entities

२५६. तए णं से पएसी केसिकुमारसमणं एवं वयासी—

अत्थि णं भंते ! जाव (एस पण्णा उवमा इमेण पुण कारणेणं) नो उवागच्छइ, एवं खलु भंते ! जाव विहरामि। तए णं मम णगरगुत्तिया चोरं उवणेंति। तए णं अहं तं पुरिसं जीवंतगं चेव तुलेमि, तुलेत्ता छविच्छेयं अकुव्वमाणे जीवियाओ ववरोवेमि, मयं तुलेमि, णो चेव णं तस्स पुरिसस्स जीवंतस्स वा तुलियस्स वा मुयस्स वा तुलियस्स केइ आणत्ते वा, नाणत्ते वा, ओमत्ते वा, तुच्छत्ते वा, गुरुयत्ते वा, लहुयत्ते वा, जति णं भंते ! तस्स पुरिसस्स जीवंतस्स वा तुलियस्स मुयस्स वा तुलियस्स केइ अन्नत्ते वा जाव लहुयत्ते वा तो णं अहं सद्दहेज्जा तं चेव।

जम्हा णं भंते ! तस्स पुरिसस्स जीवंतस्स वा तुलियस्स मुयस्स वा तुलियस्स नत्थि केइ अन्नत्ते वा लहुयत्ते वा तम्हा सुपतिट्ठिया मे पइन्ना जहा–तं जीवो तं चेव।

२५६. इसके उत्तर में प्रदेशी राजा ने केशीकुमार श्रमण से कहा–

"हे भदन्त ! आपकी यह उपमा वास्तविक नही है, इससे जीव और शरीर की भिन्नता नहीं मानी जा सकती है। लेकिन जो प्रत्यक्ष कारण मैं बताता हूँ, उससे यही सिद्ध होता है कि जीव और शरीर एक ही है। वह कारण इस प्रकार है–हे भदन्त ! किसी एक दिन मैं गणनायक, दंडनायक आदि के साथ बाहरी उपस्थानशाला मे बैठा था। उसी समय मेरे नगर-रक्षक कोतवाल चोर को पकडकर लाये। तब मैंने उस पुरुष को जीवित अवस्था में तोला। तोलकर फिर मैंने उसके अग-भग किये बिना ही उसको जीवनरहित कर दिया–मार डाला और मारकर फिर मैंने उसे तोला। उस पुरुष का जीवित रहते जो तोल था उतना ही मरने के बाद था। जीवित रहते और मरने के बाद के तोल मे मुझे किसी भी प्रकार का अन्तर–न्यूनाधिकता दिखाई नही दी, न उसका भार बढा और न कम हुआ, न वह भारी हुआ और न हल्का हुआ। इसलिए हे भदन्त ! यदि उस पुरुष के जीवितावस्था के वजन से मृतावस्था के वजन में किसी प्रकार की न्यूनाधिकता हो जाती, यदि हल्कापन आ जाता तो मै इस बात पर श्रद्धा कर लेता कि जीव अन्य है और शरीर अन्य है; जीव और शरीर एक नही है।

लेकिन मैने उस पुरुष के जीवित और मृत अवस्था मे किये गये तोल मे किसी प्रकार की भिन्नता, न्यूनाधिकता यावत् लघुता नही देखी। इस कारण मेरा यह मानना युक्तिसंगत है कि जो जीव है वही शरीर है और जो शरीर है वही जीव है किन्तु जीव और शरीर भिन्न-भिन्न नही है।"

256. In reply king Pradeshi said—

"Sir ! Your this example is not factual. From it, it cannot be concluded that soul and body are different. But I tell you the distinct cause of it that proves, that soul and body are one and the same. That reason is as under—Once I was sitting in the outer council-hall when my guard of the town brought a thief to me. Then I weighed him when he was alive Thereafter I killed him, made him lifeless without breaking the parts of his body. I weighed him again. Air weight was the same as earlier when he was alive. I did not find any difference in the two—weight before death and weight after death. Neither his weight increased nor his weight reduced. Neither he became heavier nor he became lighter than before. So,

Reverend Sir ! In case there had been any difference in the weight in two states namely in the living state and in the dead state; in case the body had become lighter after death, I could believe that soul and body are different entities—that soul and body are not same entity.

But I did not find any difference in weight in the living state of that person and weight when he was dead nor I found him lighter then. So it is my logical deduction that soul is the body and body is the same and that soul and body are not different entities."

हवा भरी वस्ति (मसक) का उदाहरण

२५७. तए णं केसी कुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी–

अत्थि णं पएसी ! तुमे कयाइ वत्थी धंतपुव्वे वा धमावियपुव्वे वा ?

हंता अत्थि।

अत्थि णं पएसी ! तस्स वत्थिस्स पुण्णस्स वा तुलियस्स अपुण्णस्स वा तुलियस्स केइ अण्णत्ते वा जाव लहुयत्ते वा ?

णो तिणट्ठे समट्ठे।

एवामेव पएसी ! जीवस्स अगुरुलहुयत्तं पडुच्च जीवंतस्स वा तुलियस्स मुयस्स वा तुलियस्स नत्थि केइ आणत्ते वा जाव लहुयत्ते वा, तं सद्दाहि णं तुमं पएसी ! तं चेव।

२५७. तब केशीकुमार श्रमण ने समाधान देते हुए कहा–

"प्रदेशी ! तुमने कभी धौंकनी (वस्ति–मसक) मे हवा भरी है अथवा किसी से भरवाई है ?"

प्रदेशी–"हाँ, भदन्त ! भरी है और भरवाई भी है।"

केशीकुमार श्रमण–"हे प्रदेशी ! जब वायु से भरकर उस मसक को तोला तब, और वायु को निकालकर तोला तब तुमको उसके वजन में कुछ न्यूनाधिकता (हल्का–भारीपन) मालूम हुई ?"

प्रदेशी–"भदन्त ! ऐसा तो नहीं है, यानी न्यूनाधिकता–लघुता कुछ भी मालूम नहीं हुई।"

केशीकुमार श्रमण–"हे प्रदेशी ! इसी प्रकार जीव के अगुरु–लघुत्व स्वभाव को समझकर उस चोर के शरीर के जीवितावस्था में किये गये तोल में और मृतावस्था में किये

गये तोल में कुछ भी अन्तर यानी हल्का-भारीपन नहीं होता है। इसीलिए तुम यह श्रद्धा करो कि जीव अन्य है और शरीर अन्य है, किन्तु जीव और शरीर एक नहीं हैं।''

EXAMPLE OF A LEATHER WATER-BAG WITH AIR

257. Then, Keshi Kumar Shraman further illustrating his view point said—

"Pradeshi ! Have you ever filled a leather water-bag with air or got it filled ?"

Pradeshi replied—"Yes Sir ! I have filled it and also got it filled."

Keshi Kumar Shraman then said—"O Pradeshi ! When you weighed the water-bag filled with air and later weighed it after all the air was removed, did the weight increase or reduce; did it appear heavier or lighter ?"

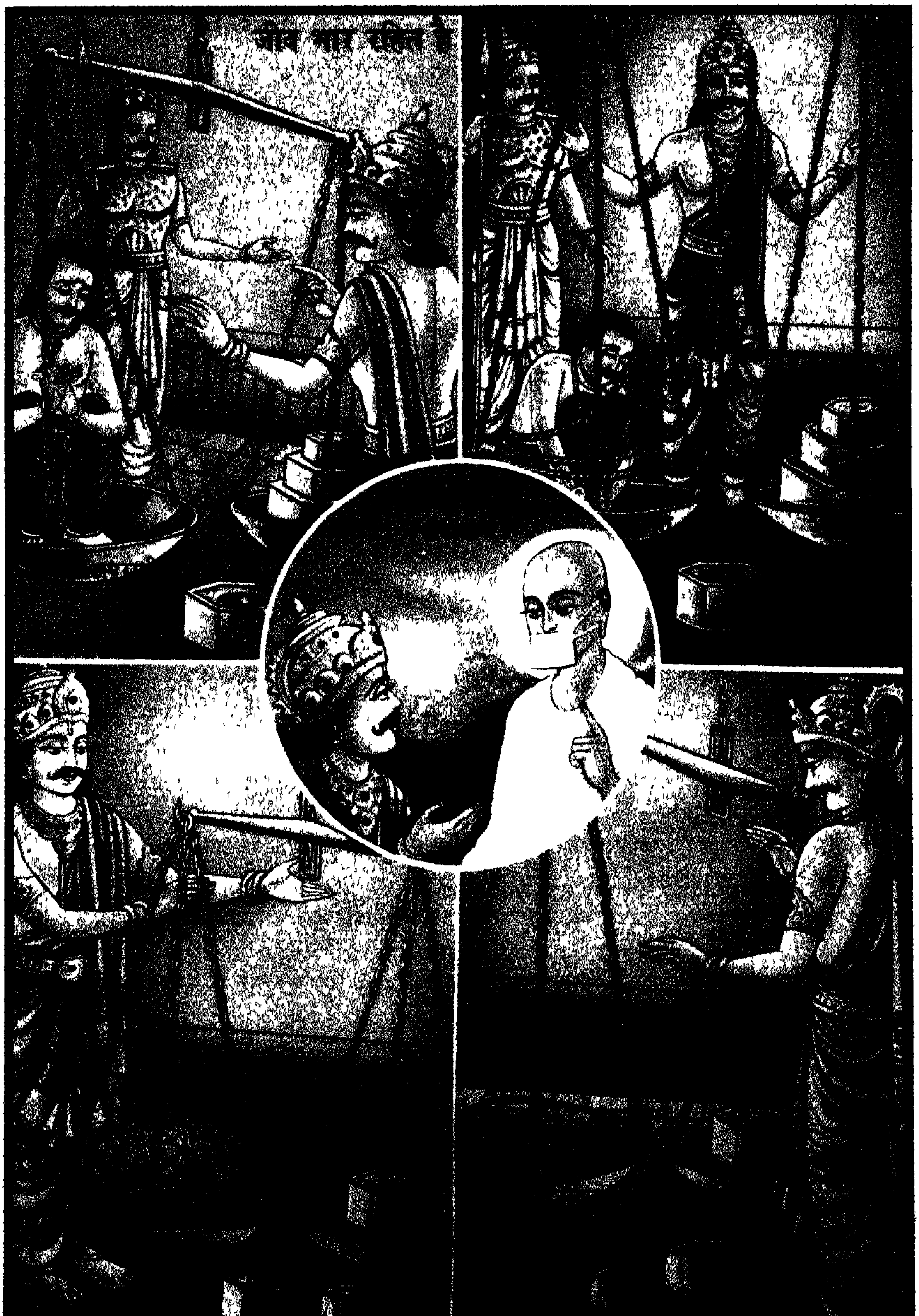
Pradeshi replied—"Sir ! It is no so. In other words, neither there was change in weight nor it became lighter or heavier."

Keshi Kumar Shraman then said—"O Pradeshi ! Same is the nature of soul, its aguru-laghutva—its very nature of not being heavy nor being light. As such there was no change in weight of the thief in two states—namely living state and dead state. So you should believe that soul and body are different entities. They are not the same"

२५८. तए णं पएसी राया केसिकुमारसमणं एवं वयासी-

अत्थि णं भंते ! एसा जाव. नो उवागच्छइ, एवं खलु भंते ! अहं अन्नया जाव चोरं उवणेति। तए णं अहं तं पुरिसं सव्वतो समंता समभिलोएमि, नो चेव णं तत्थ जीवं पासामि, तए णं अहं तं पुरिसं दुहा फालियं करेमि, करित्ता सव्वतो समंता समभिलोएमि, नो चेव णं तत्थ जीवं पासामि, एवं तिहा चउहा संखेज्जफालियं करेमि, णो चेव णं तत्थ जीवं पासामि।

जइ णं भंते ! अहं तं पुरिसं दुहा वा, तिहा वा, चउहा वा, संखेज्जहा वा फालियंमि वा जीवं पासंतो तो णं अहं सद्दहेज्जा नो तं चेव, जम्हा णं भंते ! अहं तंसि दुहा वा तिहा वा चउहा वा संखिज्जहा वा फालियंमि वा जीवं न पासामि तम्हा सुपतिट्ठिया मे पइण्णा जहा-तं जीवो तं सरीरं तं चेव।



चित्र परिचय-१४

Illustration No. 14

जीव भाररहित है

राजा प्रदेशी कहता है--"मैने एक अपराधी चोर को तराजू मे तोलकर उसका वजन किया, फिर उसको शस्त्र से मारकर पुन वजन किया तो उसके वजन मे कुछ भी अन्तर नही पडा। इस कारण मै मानता हूँ कि जीव शरीर से भिन्न नही है। जीव और शरीर एक ही है।"

समाधान देते हुए केशीकुमार श्रमण कहते है-' राजन् ! जैसे शुद्ध हवा से पूरी भरी हुई मशक (धौकनी) को तोलने पर जितना वजन होता है, हवा निकालकर तोलने पर उसके भार मे क्या कोई कमी आती है ?"

राजा प्रदेशी-' नही, दोनो ही अवस्था मे वजन समान रहता है।"

केशीकुमार श्रमण-- 'इसी उदाहरण से जीव सहित शरीर व जीवरहित शरीर के भार मे कोई अन्तर नही पडता।"

सूत्र २५६ २५७ पृष्ठ ३५३ ३५६

SOUL IS WEIGHTLESS

King Pradeshi states—"I weighed a thief in a balance Then I killed him with a weapon and weighed again There was no change in the weight Therefore I believe that soul is not separate from the body Body and soul are one "

Keshi Kumar Shraman explains—"O King ! Have you weighed a leather water-bag filled with air and then after emptying it ? Did you find any change in weight ?"

King Pradeshi—"No, I have done so and found that there is no difference in weight "

Keshi Kumar Shraman—"In the same way there is no difference in weight of a body with and without soul "

—Sutras 256-257, pp 353-356

२५८. केशीकुमार श्रमण की युक्ति सुनकर प्रदेशी राजा ने पुनः इस प्रकार कहा-

"हे भदन्त ! आपकी यह उपमा बुद्धि-कल्पित होने से मैं नहीं मानता। इससे यह सिद्ध नहीं होता है कि जीव और शरीर पृथक्-पृथक् हैं। किन्तु भदन्त ! मैंने प्रयोग करके देखा है कि एक बार मैं अपने गणनायकों आदि के साथ बाह्य उपस्थानशाला में बैठा था। तब नगर-रक्षक एक चोर को पकडकर लाये। मैंने उस पुरुष को सभी ओर से (सिर से पैर तक) अच्छी तरह देखा-भाला, परन्तु उसमें मुझे कहीं भी जीव दिखाई नहीं दिया। इसके बाद मैंने उस पुरुष के दो टुकडे कर दिये। टुकडे करके फिर मैंने अच्छी तरह सभी ओर से देखा। तब भी मुझे जीव नही दिखा। इसके बाद मैंने उसके तीन, चार यावत् अनेकानेक टुकडे किये, परन्तु उनमें भी मुझे कहीं पर जीव दिखाई नहीं दिया।

यदि भदन्त ! उस पुरुष के दो, तीन, चार अथवा अनेकानेक टुकडे करने पर भी मुझे कही जीव दिखता तो मै यह श्रद्धा-विश्वास कर लेता कि जीव अन्य है और शरीर अन्य है, जीव और शरीर एक नहीं हैं। लेकिन भदन्त ! जब मैंने उस पुरुष के दो, तीन, चार अथवा अनेक टुकड़ो मे भी जीव नहीं देखा है तो मेरी यह धारणा सुसगत-सुस्थिर बन गई कि जीव ही शरीर है और शरीर ही जीव है। जीव और शरीर भिन्न-भिन्न नही है।"

258. After this argument of Keshi Kumar Shraman, king Pradeshi again said as under—

"Reverend Sir ! I do not accept this argument as it is creation of the mind. It does not prove that soul and body are separate entities. But I had tried an experiment. Once I was sitting with my staff in the outer council chamber. The guard of the town brought a thief. I saw that thief closely and carefully from head to foot, I did not find the Jiva (soul) anywhere. I then cut him into two. I again saw the two pieces carefully from all sides Even then I did not find the soul anywhere. I then again cut him into three, four upto many pieces. But I did not find soul anywhere.

Sir ! In case I had seen soul anytime while cutting him into two, three, four or many pieces, I could believe that soul and body are different and that they are not one. But, Sir ! When I could not see soul when he was cut into two, three, four and many pieces, I logically concluded that soul and body are the same. Soul is body and body is soul. Soul and body are not different entities."

२५९. (क) तए णं केसिकुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी–

मूढतराए णं तुमं पएसी ! ताओ तुच्छतराओ।

के णं भंते ! तुच्छतराए ?

पएसी ! से जहाणामए केइ पुरिसे वणत्थी वणोवजीवी वणगवेसणयाए जोइं च जोइभायणं च गहाय कट्ठाणं अडविं अणुपविट्ठा, तए णं ते पुरिसा तीसे अगामियाए जाव किंचिदेसं अणुप्पत्ता समाणा एगं पुरिसं एवं वयासी–अम्हे णं देवाणुप्पिया ! कट्ठाणं अडविं पविसामो, एत्तो णं तुमं जोइभायणाओ जोइं गहाय अम्हं असणं साहेज्जासि। अह तं जोइभायणे जोई विज्झवेज्जा एत्तो णं तुमं कट्ठाओ जोइं गहाय अम्हं असणं साहेज्जासि, त्ति कट्टु कट्ठाणं अडविं अणुपविट्ठा।

२५९. (क) प्रदेशी राजा की बात सुनकर केशीकुमार श्रमण ने कहा–

"हे प्रदेशी ! तुम तो मुझे उस मूर्ख कठियारे से भी अधिक मूढ–अज्ञानी प्रतीत होते हो।"

प्रदेशी–(चौंककर) "हे भदन्त ! कौन-सा मूढ–अज्ञानी कठियारा ?"

केशीकुमार श्रमण–(कठियारे का उदाहरण देते हैं) "हे प्रदेशी ! एक बार वन में रहने वाले और वन से आजीविका चलाने वाले कुछ पुरुष वन में उत्पन्न वस्तुओं की खोज करने के लिए आग और जलती अँगीठी साथ लेकर लकडियो के वन मे चले गये। दुर्गम वन के किसी प्रदेश मे पहुँचने पर उन पुरुषों ने अपने एक साथी से कहा–'देवानुप्रिय ! हम इस लकडियों के जगल मे जाते है। तुम यहाँ अँगीठी से आग लेकर हमारे लिए भोजन तैयार करना। यदि अँगीठी की आग बुझ जाये तो तुम इस लकडी (अरणि–काष्ठ) से आग पैदा करके हमारे लिए भोजन बनाकर तैयार रखना।' इस प्रकार कहकर वे सब उस काष्ठ–वन मे प्रविष्ट हो गये।

EXAMPLE OF ARANI

259. (a) After listening the argument of king Pradeshi, Keshi Kumar Shraman said—

"O Pradeshi ! You appear to me a greater fool than that foolish wood-cutter."

Pradeshi (feeling perturbed) said—"Sir ! Which foolish, ignorant wood-cutter ?"

Keshi Kumar Shraman then said—"O Pradeshi ! Once some persons who were residents of the forest, whose livelihood was based on forest (products), entered a forest of wood in search of things that grow in the forest. They had fire with them. After arriving at a place in that thick forest, they told one of their companions—'O the blessed ! We go into this forest of wood. You take fire from the said vessel and prepare food for us. In case the fire extinguishes, you light the fire with this wooden stick (arani—a type of wood that produces fire when rubbed) and keep the cooked food ready for us.' Thereafter all the remaining persons entered the forest."

(ख) तए णं से पुरिसे तओ मुहुत्तंतरस्स तेसिं पुरिसाणं असणं साहेमि त्ति कट्टु जेणेव जोइभायणे तेणेव उवागच्छइ। जोइभायणे जोइं विज्झायमेव पासति। तए णं से पुरिसे जेणेव से कट्टे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता तं कट्ठं सव्वओ समंता समभिलोएति, नो चेव णं तत्थ जोइं पासति। तए णं से पुरिसे परियरं बंधइ, फरसुं गिण्हइ, तं कट्ठं दुहा फालियं करेइ, सव्वओ समंता समभिलोएइ, णो चेव णं तत्थ जोइं पासइ। एवं जाव संखेज्जफालियं करेइ, सव्वओ समंता समभिलोएइ, नो चेव णं तत्थ जोइं पासइ।

(ख) उनके चले जाने पर कुछ समय सुस्ताने के पश्चात् उस पुरुष ने विचार किया–'चलो, उन लोगो के लिए जल्दी से भोजन बना लूँ।' ऐसा विचारकर वह अँगीठी के पास आया। अँगीठी में आग को बुझा हुआ देखा। तब वह जहाँ (लकडियाँ) पडीं वहाँ आया और चारो ओर से लकडियों को अच्छी तरह देखा। किन्तु कहीं भी उसे आग दिखाई नहीं दी। तब उस व्यक्ति ने कमर कसी और कुल्हाडी लेकर उस काष्ठ के दो टुकडे कर दिये। फिर उन टुकडों को भी सभी ओर से अच्छी तरह देखा, किन्तु कही भी आग दिखाई नहीं दी। तब उसने तीन, चार यावत् अनेक टुकड़े किये परन्तु खूब देखने पर भी उनमें कही आग दिखाई नहीं दी।

(b) After their departure and after taking rest for time that person thought—'Let me prepare food for them quickly.' Then he came to the fire-vessel. He found the fire already extinguished. He then came to the place where sticks were lying. He carefully saw those sticks from all sides. But he did not find fire anywhere. Then he took courage and cut that stick into two. He again saw the two pieces carefully from all sides but he did not see fire anywhere.

Then he cut it into three, four upto many pieces but in spite of carefully seeing them, he could not see fire there.

(ग) तए णं से पुरिसे तंसि कट्ठंसि दुहाफालिए वा जाव संखेज्जफालिए वा जोइं अपासमाणे संते तंते परिसंते निव्विण्णे समाणे परसुं एगंते एडेइ, परियरं मुयइ एवं वयासी–अहो ! मए तेसिं पुरिसाणं असणे नो साहिए त्ति कट्टु ओहयमणसंकप्पे चिंतासोगसागरसंपविट्ठे करयलपल्हत्थमुहे अट्टज्झाणोवगए भूमिगयदिट्ठिए झियाइ।

(ग) जब उस पुरुष को काष्ठ के दो से लेकर अनेक टुकडे करने पर भी कही आग दिखाई नहीं दी तो वह श्रम से थक गया। क्लान्त, खिन्न और दु:खित हो गया, कुल्हाडी को एक ओर रखा। कमर को खोलकर मन ही मन इस प्रकार बोला–'अरे ! मै उन लोगो के लिए भोजन नही बना सका। अब क्या करूँ?' इस विचार से अत्यन्त निराश, दु:खी, चिन्तित, शोकातुर हो हथेली पर मुँह को टिकाकर आर्त्तध्यानपूर्वक नीचे जमीन मे आँखें गडाकर चिन्ता मे डूब गया।

(c) When that person did not find even after cutting the wooden stick into two, three, four and many pieces, he felt tired due to hard work He felt tired, dejected and morose. He kept the axe on one side After loosening the waist-cloth, he spoke to himself—'O, I have not been able to prepare food for my men What should I do now ?' With these thoughts, he felt extremely dejected, sad, worrily brooding and then placing his hand palm on his face, he absorbed himself in miserable thinking posture keeping his eyes downwards deep in the earth

(घ) तए णं ते पुरिसा कट्ठाइं छिंदंति, जेणेव से पुरिसे तेणेव उवागच्छंति। तं पुरिसं ओहयमणसंकप्पं जाव झियायमाणं पासंति एवं वयासी–किं णं तुमं देवाणुप्पिया ! ओहयमणसंकप्पे जाव झियायसि ?

तए णं से पुरिसे एवं वयासी–तुज्झे णं देवाणुप्पिया ! कट्ठाणं अडविं अणुपविसमाणा ममं एवं वयासी–अम्हे णं देवाणुप्पिया ! कट्ठाणं अडविं जाव पविट्ठा, तए णं अहं तत्तो मुहुत्तंतरस्स तुज्झं असणं साहेमि त्ति कट्टु जेणेव जोइभायणे जाव झियामि।

(घ) वन मे लकडियो को काटने के पश्चात् वे लोग जहाँ अपना साथी था, वहाँ आये और उसको निराश, दु:खी यावत् चिन्ता मे डूबा देखकर पूछा–"देवानुप्रिय ! तुम निराश, दु:खी यावत् चिन्ता मे डूबे हुए क्यों बैठो हो?"

तब उस पुरुष ने बताया कि "देवानुप्रियो ! आप लोगों ने लकडी काटने के लिए वन में जाते समय मुझसे कहा था-देवानुप्रिय ! हम लोग लकड़ी लाने जंगल में जाते हैं, तुम भोजन बनाकर रखना। कुछ समय बाद मैंने विचार किया कि आप लोगों के लिए भोजन बना लूँ, ऐसा विचार कर जहाँ अँगीठी थी, वहाँ आया। मैने अच्छी तरह सभी ओर से उस काष्ठ को देखा, किन्तु कहीं भी मुझे आग दिखाई नहीं दी। (तब मैने कुल्हाड़ी लेकर उस काष्ठ के दो टुकडे कर दिये और उन्हें भी इधर-उधर से अच्छी तरह देखा। परन्तु वहाँ भी मुझे आग दिखाई नही दी। इसके बाद मैंने उसके तीन, चार यावत् अनेक टुकड़े किये। उनको भी अच्छी तरह देखा, परन्तु उनमे भी कही आग दिखाई नहीं दी। तब थककर, खिन्न और दुःखित होकर कुल्हाड़ी को एकओर रखकर विचार किया कि मै आप लोगो के लिए भोजन नहीं बना सका।) इस विचार से मैं अत्यन्त निराश, दुःखी हो शोक और चिन्तारूपी समुद्र मे डूबकर हथेली पर मुँह को टिकाये आर्त्तध्यान कर रहा हूँ।"

(d) After cutting the wood, his companions came to the place where they had left him and finding him dejected, sad and morose asked—"O the blessed ! Why are you feeling dejected, sad and morose ?"

Then that person replied—"O the blessed ! While going to the forest for cutting wood, you had told me that you were going to the jungle for bringing wood and that I should prepare food. After some time I thought of preparing food for you; so I came to the fire-vessel. I saw the wooden stick carefully from all sides, but I did not notice fire anywhere. (Then I cut the piece into two, saw the pieces carefully, but could not find fire. Later I cut it into three, four and many pieces. I examined the pieces carefully but I did not notice fire anywhere. Then feeling dejected, I kept the axe aside and thought that I could not prepare food for you.) Due to these thoughts, I am feeling extremely dejected, sad and morose and so having my hand—palm on my face, I am in a deep shock."

(ङ) तए णं तेसिं पुरिसाणं एगे पुरिसे छेए, दक्खे, पत्तट्ठे जाव उवए, सलद्धे, ते पुरिसे एवं वयासी-गच्छह णं तुज्झे देवाणुप्पिया ! ण्हाया कयबलिकम्मा जाव हव्वमागच्छेह, जा णं अहं असणं साहेमि त्ति कट्टु परियरं बंधइ, परसुं गिण्हइ सरं करेइ, सरेण अरणिं महेइ जोइं पाडेइ। जोइं संधुक्खेइ, तेसिं पुरिसाणं असणं साहेइ।

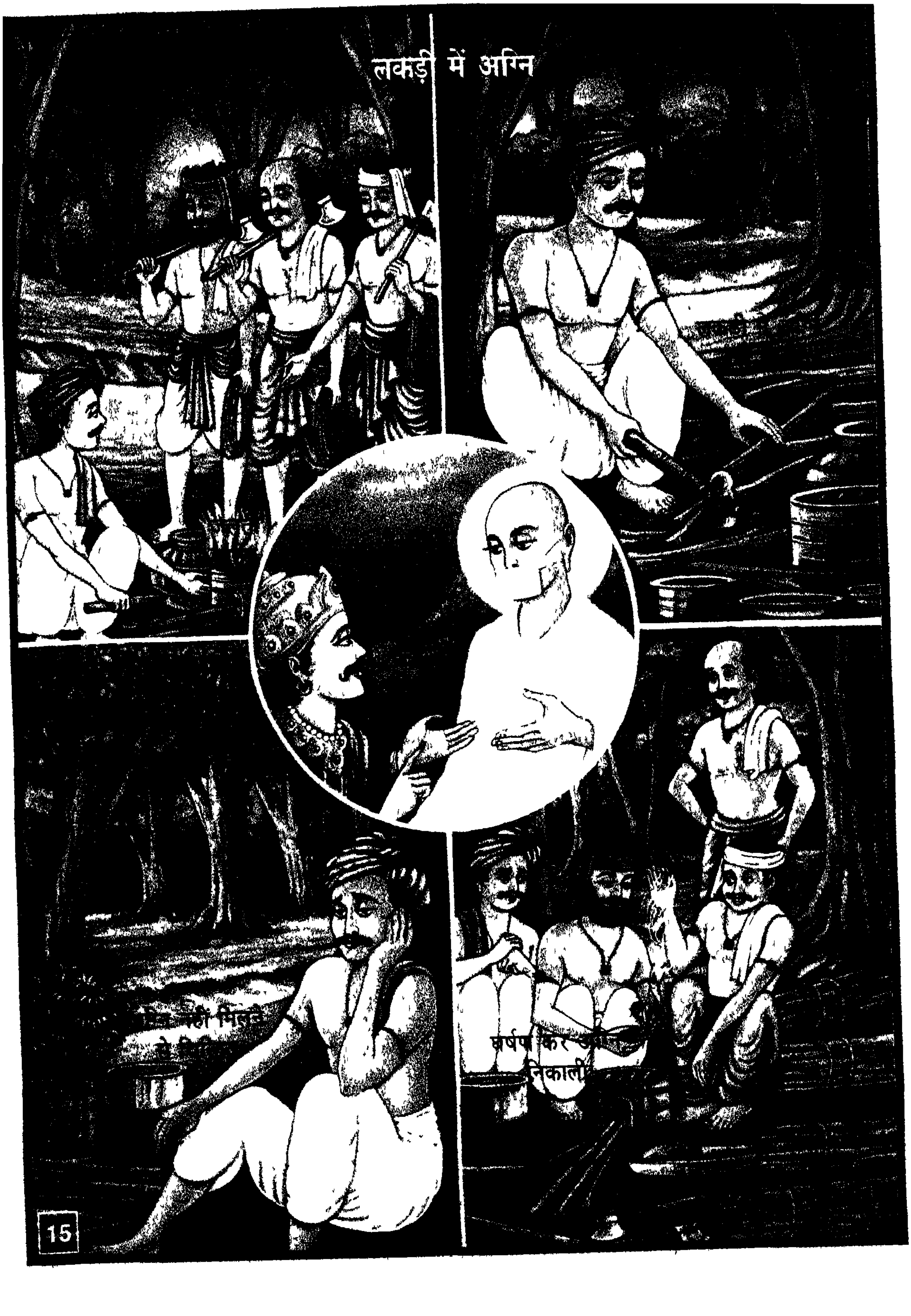
(ड) उस पुरुष की बात सुनकर उन मनुष्यों में कोई एक पुरुष, जो छेक–अवसर को जानने वाला, दक्ष–चतुर, कुशलता से अपने इच्छित अर्थ को प्राप्त करने वाला, बुद्धिमान् और उपदेश लब्ध–गुरुजनो से ज्ञान प्राप्त किया हुआ था, उस पुरुष ने अपने दूसरे साथी लोगों से कहा–"हे देवानुप्रियो ! आप जाओ और स्नान, बलिकर्म आदि करके शीघ्र आ जाओ। तब तक मैं आप लोगों के लिए भोजन तैयार करता हूँ।" ऐसा कहकर उसने अपनी कमर कसी और कुल्हाडी लेकर सर (बाण जैसा नुकीला) बनाया, सर से अरणि–काष्ठ को रगडकर आग की चिनगारी प्रगट की। फिर उसे धौककर सुलगाया और अपने साथियों के लिए भोजन बनाकर तैयार किया।

(e) Then one of them who could realise the situation **(Chhek),** who was clever, well-versed in finding the result and intelligent **(Daksh),** who had received proper knowledge from the teachers **(Upadest Labdh),** told his other companions—"O the blessed ! You go and take your bath, adopt auspicious symbols and come soon. In the mean time, I shall prepare food for you." He then wrapped his waist with a cloth, and with the axe prepared a sharp-pointed stick (like an arrow). He then rubbed the Arani wood with the sharp-pointed stick. The fire appeared He blew it (with his mouth) and then with the fire, he prepared food for his companions.

(च) तए णं ते पुरिसा ण्हाया कयबलिकम्मा जाव पायच्छित्ता जेणेव से पुरिसे तेणेव उवागच्छंति। तए णं से पुरिसे तेसिं पुरिसाणं सुहासणवरगयाणं तं विउलं असणं–पाणं–खाइमं–साइमं उवणेइ। तए णं ते पुरिसा तं विउलं असणं ४ (पाणं–खाइमं–साइमं) आसाएमाणा वीसाएमाणा जाव विहरंति। जिमियभुत्तुतरागया वि य णं समाणा आयंता चोक्खा परमसुइभूया तं पुरिसं एवं वयासी–अहो ! णं तुमं देवाणुप्पिया ! जड्डे–मूढे–अपंडिए–णिव्विण्णाणे–अणुवएसलद्धे, जे णं तुमं इच्छसि कट्ठंसि दुहाफालियंसि वा जोतिं पासित्तए।

से एएणट्ठेणं पएसी ! एवं वुच्चइ मूढतराए णं तुमं पएसी ! ताओ तुच्छतराओ।

(च) इतने में वे स्नान आदि करने गये सभी साथी स्नान करके वापस उस भोजन बनाने वाले पुरुष के पास आ गये। सुखपूर्वक अपने–अपने आसनों पर बैठे। उन लोगों के सामने उस पुरुष ने विपुल अशन, पान आदि चार प्रकार का भोजन परोसा। चारों प्रकार के भोजन का स्वाद लेते हुए खाया। भोजन के बाद आचमन–कुल्ला आदि करके स्वच्छ, शुद्ध होकर


लकड़ी में अग्नि
घर्षण कर
निकाली

चित्र परिचय-१५

Illustration No. 15

लकड़ी में अग्नि, शरीर में आत्मा

(१) केशीकुमार श्रमण अरणि-लकडी मे छिपी अग्नि का उदाहरण देते हुए कहते है-"जैसे लकडहारो ने जलती अँगीठी और अरणि की लकडी देकर अपने साथी से कहा-'तुम भोजन बनाकर तैयार रखना, हम लकडियाँ लेकर आते है'।"

(२) कुछ देर विश्राम करके उसने देखा कि अग्नि तो बुझ गई है। उसने पुन अग्नि प्रज्वलित करने के लिए अरणि की लकडियो के टुकडे-टुकडे कर लिये परन्तु कही अग्नि दिखाई नही दी।

(३) हार-थककर वह यो ही चिन्तित हुआ बैठा रहा।

(४) अन्य साथी लौटकर आये, पूछने पर उसने कहा 'मुझे तो इस लकडी मे कही अग्नि नही मिली, खाना कैसे पकाता ?"

तब एक साथी ने दो लकडियो को आपस मे घिसकर उससे अग्नि प्रज्वलित कर दी। वह साथी चकित होकर देखता ही रहा।

सूत्र २५९ पृष्ठ ३५८-३६२

FIRE IN WOOD AND SOUL IN BODY

(1) Giving the example of fire hidden in Arani-wood Keshi Kumar Shraman says—"Some wood-cutters gave a burning stove and stick of Arni-wood to a companion and said—'You keep the food cooked and ready while we go and fetch wood'"

(2) While this companion rested for some time the stove got extinguished In order to make fire he broke the stick of Arni-wood to pieces but failed to find any fire in it

(3) Tired and disappointed, he brooded and waited

(4) When the other wood-cutters returned and asked about food, he said—"I did not find any fire in this stick, how could I cook the food ?"

One of his companions took two pieces of Arani-wood and produced fire by rubbing them together The ignorant companion looked agape

—*Sutra 259, pp 358-362*

अपने पहले साथी से बोले–"हे देवानुप्रिय ! तुम जड़–अनभिज्ञ, मूढ़, प्रतिभारहित, निपुणतारहित और अशिक्षित हो, जो तुमने काष्ठ के टुकडों में आग ढूँढ़ने का प्रयास किया।"

हे प्रदेशी ! तुम्हारी भी इस प्रकार की प्रवृत्ति देखकर मैंने यह कहा–"तुम तुच्छ कठियारे से भी अधिक मूढ़ प्रतीत होते हो कि शरीर के टुकडे–टुकडे करके जीव को देखना चाहते हो।"

(f) In the mean time, all the persons came to him after taking bath. They took their seats. That person served cooked food and others in plenty. They took the four types of food—namely cooked food, liquids, fragrant types and sweets to their fill. Thereafter they cleaned their mouth with water and then told their first companions—"O, you are fool, ignorant, unintelligent, unskilled and uneducated that you tried to find fire in pieces of wood."

O Pradeshi ! After seeing your behaviour similar to that person, I stated that "You appear to be more foolish than that wood-cutter. You want to see soul by cutting body into pieces."

विवेचन–केशीकुमार श्रमण ने अरणि काष्ठ का उदाहरण देकर बताया है–अरणि मे अग्नि विद्यमान है, परन्तु उसे पाने के लिए उसके टुकडे–टुकडे करने की जरूरत नहीं होती, जरूरत है मन्थन की। इसी पक्ष पर दर्शनशास्त्र मे अन्य उदाहरण भी दिये जाते है। जैसे दूध मे घी रहता है, तिलो मे तेल रहता है, माचिस की नोक पर अग्नि रहती है, बिजली के तारों मे विद्युत् प्रवाह तरगित रहता है किन्तु कभी दिखाई नही देता। उसी प्रकार शरीर मे चेतना या आत्मा विद्यमान है। अरणि से अग्नि भिन्न है, दूध से घृत भिन्न है, तिल से तेल भिन्न है, माचिस से अग्नि अलग है, तारों से या पानी से विद्युत् भिन्न है। किन्तु उसे पाने के लिए मन्थन की, सघर्षण की व संयोजन की जरूरत है। उसी प्रकार शरीर में विद्यमान चैतन्य के दर्शन करने के लिए चिन्तन, ध्यान, मनन, तप आदि क्रियाओ की जरूरत है। जिसे इन क्रियाओं की विधि का ज्ञान प्राप्त है वही देह मे स्थित चैतन्य सत्ता का अनुभव–दर्शन कर सकता है। मूर्ख कठियारे की तरह उसके टुकडे करने से आत्मा का दर्शन नही हो सकता।

केशीकुमार श्रमण ने इस दृष्टान्त में राजा प्रदेशी के पिछले सभी प्रश्नों का उत्तर दे दिया है कि तुम शरीर के टुकडे करके या उसे कुंभी आदि में बन्द करके जीव को, चैतन्य को देखना चाहते हो यह तुम्हारी मूर्खता या अज्ञान है। शरीर में स्थित चैतन्य को देखा नहीं जा सकता, अनुभव किया जा सकता है और संकेत भी किया है कि उसके लिए तप, ध्यान, चिन्तन आदि विधियों का आश्रय लो। तभी उस चैतन्य सत्ता का दर्शन हो सकेगा।

Elaboration—By the example of Arani wood, Keshi Kumar Shraman clarified that Arani (fire-producing wooden stick) has fire capability, but

in order to get fire from it, it need not he cut into pieces, but it has to be rubbed. In the philosophical literature, many other examples are also given. For instance ghee is present in milk, oil is present in the seed, fire is at the pointed edge of match-stick, electric current is in electric wires but these things are not visible in them. Similarly soul is present in a living body. Arani is different from fire, milk is different from ghee, til is different from its oil, match-stick is different from fire, electricity is different from wires or water But in order it procure required things from them, they are to the churned, rubbed or connected (as the case may be). Similarly in order to see soul in the living body (Jiva), what is needed is thinking, meditating, mentally concentrating or observing austerities. One who knows the method of these activities, he can experience existence of soul (consciousness) in the body. Soul cannot be seen by cutting the body into pieces like a foolish wood-cutter.

Keshi Kumar Shraman, through this example, gave reply to all the questions earlier raised by king Pradeshi He clearly told him that his curiosity to see the soul, the consciousness by cutting body into pieces; by shutting it tightly in a pot and suchlike was just his foolishness, his ignorance. The existence of soul in the body cannot be seen, it can be experienced He also pointed out that for that purpose, one has to observe austerities, do meditation and apply suchlike methods Only then one can see the soul

२६०. तए णं पएसी राया केसिकुमारसमणं एवं वयासी–

जुत्तए णं भंते ! तुब्भं इय छेयाणं दक्खाणं बुद्धाणं कुसलाणं महामईणं विणीयाणं विण्णाणपत्ताणं उवएसलद्धाणं अहं इमीसाए महालियाए महच्च परिसाए मज्झे उच्चावएहिं आउसेहिं आउसित्तए ? उच्चावयाहि उद्धंसणाहिं उद्धंसित्तए ? एवं निब्भंछणाहिं निब्भंछणित्तए ? निच्छोडणाहिं निच्छोडणत्तए ?

२६०. केशीकुमार श्रमण की उक्त बात (उदाहरण) को सुनकर प्रदेशी राजा ने गम्भीर होकर कहा–

"भंते ! आप जैसे छेक–(अवसरज्ञ), दक्ष–(चतुर), बुद्ध–(तत्त्वज्ञ), कुशल–(कर्त्तव्याकर्त्तव्य के निर्णायक), बुद्धिमान्, विनीत–विनयशील, विशिष्ट ज्ञानी, सत्–असत् के विवेक से सम्पन्न, उपदेशलब्ध–गुरु से शिक्षा प्राप्त पुरुष द्वारा इस अति विशाल परिषद् के बीच मेरे लिए इस प्रकार के निष्ठुर–आक्रोशपूर्ण शब्दों का प्रयोग करना, अनादरसूचक

शब्दों से मेरी भर्त्सना करना, अनेक प्रकार के अवहेलना भरे शब्दों से मुझे प्रताडित करना, धमकाना क्या उचित है ?"

260. After hearing this example narrated by Keshi Kumar Shraman, king Pradeshi said—

"Reverend Sir ! You are well trained in knowing the situation. You are intelligent. You know the philosophical principles well. You can very well distinguish between do's and do nots. You are wise. You are humble. You possess supermost knowledge. You can distinguish between right and wrong. You have got education from a real master. Is it then proper for you to use such a harsh, impalatable, contemptuous language for me, insulting me in such a large gatherıng, threaten me in such a manner ?"

चार प्रकार की परिषद् और दण्डनीति

२६१. तए णं केसी कुमारसमणे पएसिं रायं एव वयासी–

जाणासि णं तुमं पएसी ! कति परिसाओ पण्णत्ताओ ?

जाणामि, चत्तारि परिसाओ पण्णत्ताओ, तं जहा–१. खत्तियपरिसा, २. गाहावइपरिसा, ३. माहणपरिसा, ४. इसिपरिसा।

जाणासि णं तुमं पएसी राया ! एयासिं चउण्हं परिसाणं कस्स का दंडणीई पण्णत्ता ?

हंता ! जाणामि। (१) जे णं खत्तियपरिसाए अवरज्झइ से णं हत्थच्छिण्णए वा, पायच्छिण्णए वा, सीसच्छिण्णए वा, सूलाइए वा एगाहच्चे कूडाहच्चे जीवियाओ ववरोविज्जइ।

(२) जे णं गाहावइपरिसाए अवरज्झइ से णं तएण वा, वेढेण वा, पलालेण वा, वेढित्ता अगणिकाएणं झामिज्जइ।

(३) जे णं माहणपरिसाए अवरज्झइ से णं अणिट्ठाहिं अकंताहिं जाव अमणामाहिं वग्गूहिं उवालंभित्ता कुंडियालंछणए वा सूणगलंछणए वा कीरइ, निव्विसए वा आणविज्जइ।

(४) जे णं इसिपरिसाए अवरज्झइ से णं णाइअणिट्ठाहिं जाव णाइअमणामाहिं वग्गूहिं उवालब्भइ।

एवं च ताव पएसी ! तुमं जाणासि तहा वि णं तुमं ममं वामं वामेणं, दंडं दंडेणं, पडिकूलं पडिकूलेणं, पडिलोमं पडिलोमेणं, विविच्चासं विविच्चासेणं वट्टसि।

२६१. प्रदेशी राजा के इस उपालभ को सुनकर केशीकुमार श्रमण ने समाधान दिया–

"हे प्रदेशी ! तुम जानते हो कितनी परिषदाएँ कही हैं ?"

प्रदेशी–"जी हाँ, जानता हूँ। चार परिषदाएँ कही हैं–(१) क्षत्रिय परिषदा, (२) गाथापति परिषदा, (३) ब्राह्मण परिषदा, और (४) ऋषि परिषदा।"

केशीकुमार श्रमण ने कहा–"प्रदेशी ! तुम यह भी जानते हो कि इन चार परिषदाओं के अपराधियो के लिए क्या दंडनीति बताई गई है ?"

प्रदेशी–"हाँ, जानता हूँ। (१) जो क्षत्रिय परिषद् का (सदस्य) अपराध–अपमान करता है, उसके या तो हाथ काट दिये जाते है अथवा पैर काट दिये जाते हैं या सिर काट दिया जाता है, अथवा उसे शूली पर चढा देते हैं या एक ही प्रहार से कुचलकर प्राणरहित कर दिया जाता है–मार दिया जाता है।

(२) जो गाथापति परिषद् का अपराध करता है, उसे घास से अथवा पेड के पत्तो से अथवा पलाल–पुआल से लपेटकर अग्नि मे झोक दिया जाता है।

(३) जो ब्राह्मण परिषद् का अपराध करता है, उसे अनिष्ट, रोषपूर्ण, अप्रिय या अमनोज्ञ शब्दो से उपालंभ देकर अग्नि में तपी हुई लोहे की कुडिका का चिह्न अथवा कुत्ते के चिह्न से लाछित कर दिया जाता है अथवा निर्वासित कर दिया जाता है, अर्थात् देश से निकल जाने की आज्ञा दी जाती है।

(४) जो ऋषि परिषद् का अपमान–अपराध करता है, उसे न अति अनिष्ट यावत् न अति कठोर शब्दों द्वारा उपालंभ दिया जाता है।"

केशीकुमार श्रमण–"हे प्रदेशी ! तुम इस प्रकार की दडनीति को जानते हुए भी मेरे प्रति विपरीत, परितापजनक, प्रतिकूल, विरुद्ध, सर्वथा विपरीत व्यवहार कर रहे हो ?"

FOUR TYPES OF ASSEMBLY AND PUNISHMENT

261. At these remarks of king Pradeshi, Keshi Kumar Shraman said—

"Do you know of how many types are the assemblies ?"

Pradeshi replies—"Yes Sir ! I know that the assemblies are of four types—(1) Assembly of Kshatriya (brave), (2) Assembly of rich

businessmen, (3) Assembly of brahmins, and (4) Assembly of saints (Rishis)."

Keshi Kumar Shraman then asked—"Do you also know what punishment is pressible for each of the four examples ?"

Pradeshi replied—"Yes, I know. (1) In case a member of assembly of Kshatriya, commits any crime or insults any one, his hands are cut, his feet are chopped or head is removed or he is hanged on the scaffold or he is run over and made lifeless. In other words he is killed.

(2) In case a member of the assembly of rich businessmen (Gathapati) commits any crime, he is wrapped in dry grass, in tree leaves or in hay and pushed in burning fire.

(3) In case a member of assembly of brahmins commits any crime, he is insulted with undesirable, unpalatable harsh (language) words. Thereafter a hot iron mark or the dog mark is printed on his body or he is exiled. In other words he is expelled from the state.

(4) In case a member of the assembly of saints (Rishis) commits any crime, he is not addressed with very undesirable words nor very harsh language is used against him to point out his guilt to him.

Keshi Kumar Shraman then said—"O Pradeshi ! You, knowing fully well such a code of punishment are behaving with me in a different, haughty, undesirable and totally opposite way (than the prescribed one)."

२६२. तए णं पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी–

एवं खलु अहं देवाणुप्पियएहिं पढमिल्लुएणं चेव वागरणेण संलत्ते, तए णं ममं इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव संकप्पे समुपज्जित्था–जहा जहा णं एयस्स पुरिसस्स वामं वामेणं जाव विवच्चासं विवच्चासेणं वट्टिस्सामि तहा तहा णं अहं नाणं च नाणोवलंभं च करणं च करणोवलंभं च दंसणं च दंसणोवलंभं च जीवं च जीवोवलंभं च उवलभिस्सामि, तं एएणं अहं कारणेणं देवाणुप्पियाणं वामं वामेणं जाव विवच्चासं विवच्चासेणं वट्टिए।

२६२. तब प्रदेशी राजा ने केशीकुमार श्रमण से अपनी मनोभावना व्यक्त करते हुए कहा–

"भदन्त ! बात यह है कि मेरा आप देवानुप्रिय से जब सबसे प्रथम वार्त्तालाप हुआ तभी मेरे मन में इस प्रकार का विचार/संकल्प उत्पन्न हुआ कि मै इस पुरुष के साथ जितना-जितना और जैसे-जैसे विपरीत यावत् प्रतिकूल व्यवहार करूँगा, उतना-उतना और वैसे-वैसे मै अधिक-अधिक तत्त्व को जानूँगा, ज्ञान प्राप्त करूँगा, चारित्र को, चारित्र लाभ को, तत्त्वार्थ श्रद्धारूप दर्शन-सम्यक्त्व को, सम्यक्त्व लाभ को, जीव को, जीव के स्वरूप को समझ सकूँगा। इसी कारण आप देवानुप्रिय के प्रति मैने (जानबूझकर उद्देश्यपूर्वक) विपरीत यावत् अत्यन्त विरुद्ध व्यवहार किया है।"

262. Then kıng Pradeshi, expressing hıs inner feelings said—

"Sir ! The fact is that when my dıscussion with you started for the first time, it was in my mind that I shall know reality from you to the extent I behave ın an indiscreet and ındifferent manner. I shall gain knowledge, I shall learn about rıght conduct, I shall learn right faith, I shall understand the reality about Jiva (soul) ın that fashion. So with this aım in my mınd I intentionally behaved with you in an entirely undesirable and opposite manner (than the desired one).

विवेचन-केशीकुमार श्रमण ने राजा प्रदेशी के समक्ष चार प्रकार की परिषद् का वर्णन करके उसे मुनि द्वारा कहे गये कठोर वचनो पर नाराज नही होने का सकेत किया है। टीका मे व अन्य ग्रन्थो मे चार प्रकार की परिषद् का अधिक वर्णन नही मिलता और न ही यह विश्लेषण कि इससे केशीकुमार श्रमण किस दडनीति की ओर सकेत करना चाहते है। फिर भी हम यह अनुमान कर सकते है कि राजा स्वयं क्षत्रिय परिषद् से सम्बन्धित है और केशीकुमार श्रमण ऋषि परिषद् है। क्षत्रिय परिषद् का सदस्य यदि कोई अपराध करता है तो उसका दड बहुत कठोर होता है। जबकि ऋषि परिषद् के अपराधी को सामान्य वचनो से ही उपालभ दिया जाता है। क्षत्रिय राजा ने ऋषि का अपमान किया है। तो दडनीति के अनुसार तो उसका बहुत ही कठोर दंड होना चाहिए। जबकि ऋषि यदि किसी का अपमान भी कर देता है तो उसे सामान्य शिष्ट वचन ही कहे जाते है। यहाँ राजा ने मुनि को जड, मूढ, अज्ञानी, अपण्डित आदि अत्यन्त तिरस्कारपूर्ण शब्द कहे है, तथा बिना अभिवादन किये ही उनकी धर्मसभा मे आकर प्रश्न पूछे है। मुनि ने तो उसे 'कर-चोर वणिक्' और 'अल्पज्ञ मूर्ख कठियारे' की उपमा दी है। इस दृष्टि से राजा का अपराध अधिक भारी है, उसकी तुलना मे मुनि ने कुछ भी कठोर या अप्रिय वचन नहीं कहे। इस नीति को समझकर मुनि के अप्रिय शब्दो से राजा को नाराज नही होना चाहिए। लगता है इस उदाहरण द्वारा केशीकुमार श्रमण यही कहना चाहते है।

Elaboration—Keshı Kumar Shraman by referring to four types of assemblıes has pointed out to kıng Pradeshı that he should not be angry at the harsh words of a saınt. In the commentary and in other religious

books, the description of four types of assemblies is not available nor any clarification as to which code of punishment was referred to by Keshi Kumar Shraman. Still it can be understood that king Pradeshi belongs to assembly of Kshatriyas (warriors) and Keshi Kumar Shraman belongs to the assembly of saints. In case a member of assembly of Kshatriyas commits any crime, the punishment is very severe. But when a member of assembly of saints commits any crime he is insulted in just ordinary language. Kshatriya king (king Pradeshi) has insulted the saints. So according to the code of punishment, be deserves a very severe punishment. On the other hand, a saint even if he insults any one, ordinary proper language has to be used for him Here the king called the saint a fool, a dunce, illiterate, uneducated and used other extremely insulting words. Further he started asking question in the religious assembly without proper gratitude. The saint compared him with a trader avoiding taxes, a person having little knowledge and a foolish wood-cutter Thus the guilt of the king is very great as compared to that of the saint who did not use any harsh or impalatable words-Knowing the respective code of punishment, the king should not have been angry at the non-affectionate words of the saint. It appears that by this example Keshi Kumar Shraman wanted to bring home to the king this reality.

चार प्रकार के व्यवहारी

२६३. (क) तए णं केसी कुमारसमणे पएसी रायं एवं वयासी–

जाणासि णं तुमं पएसी ! कइ ववहारगा पण्णत्ता ?

हंता जाणामि। चत्तारि ववहारगा पण्णत्ता–१. देइ नामेगे णो सण्णवेइ। २. सन्नवेइ नामेगे नो देइ। ३. एगे देइ वि सन्नवेइ वि। ४. एगे णो देइ णो सण्णवेइ।

२६३. (क) प्रदेशी राजा की भावना सुनकर केशीकुमार श्रमण ने कहा–

"प्रदेशी ! जानते हो तुम कि व्यवहारकर्त्ता कितने प्रकार के होते हैं ?"

प्रदेशी–"हाँ, भदन्त ! जानता हूँ कि व्यवहार करने वालों के चार प्रकार हैं–(१) कोई किसी को दान देता है, किन्तु उसके साथ प्रीतिजनक वाणी नहीं बोलता। (२) कोई संतोषप्रद बातें तो करता है, किन्तु देता नहीं है। (३) कोई देता भी है और लेने वाले के साथ सन्तोषप्रद मधुर वार्त्तालाप भी करता है। (४) कोई देता भी कुछ नहीं और न संतोषप्रद बात ही करता है।"

FOUR TYPES OF DEALERS

263. (a) After listening to the feelıngs expressed by king Pradeshi, Keshi Kumar Shraman said—

"Do you know how many types are of the dealers ? O Pradeshi !"

Pradeshı replied—"Yes Sir ! I know that the dealers are of four types—(1) Firstly the one who gives in charity but does not speak sweet words with it. (2) Secondly the one who satisfies others with his words but does not give anythıng (3) Thırdly the one who gives in charıty and also speaks palatable words (4) Fourthly one who neither gives any thing nor speaks palatable words."

(ख) जाणासि णं तुमं पएसी ! एएसिं चउण्हं पुरिसाणं के ववहारी के अव्ववहारी ?

हंता जाणामि।

(१) तत्थ णं जे से पुरिसे देइ णो सण्णवेइ, से णं पुरिसे ववहारी।

(२) तत्थ णं जे से पुरिसे णो देइ सण्णवेइ, से णं पुरिसे ववहारी।

(३) तत्थ णं जे से पुरिसे देइ वि सन्नवेइ वि से पुरिसे ववहारी।

(४) तत्थ णं जे से पुरिसे णो देइ णो सन्नवेइ से णं अव्ववहारी।

एवामेव तुमं पि ववहारी, णो चेव णं तुमं पएसी अव्ववहारी।

(ख) केशीकुमार श्रमण–''प्रदेशी ! तुम जानते हो कि इन चार प्रकार के व्यक्तियो मे से कौन व्यवहारकुशल है और कौन व्यवहारशून्य है ?''

प्रदेशी–''हाँ, भदन्त ! जानता हूँ।

(१) इनमे से जो पुरुष देता है, किन्तु प्रीतिजनक मधुर सभाषण नही करता, वह व्यवहारी है।

(२) जो पुरुष देता नही किन्तु सम्यक् सभाषण बातचीत से सतोष उत्पन्न करता है, धीरज बँधाता है, वह व्यवहारी है।

(३) जो पुरुष देता भी है और शिष्ट, मधुर वचन भी कहता है, वह व्यवहारी है।

(४) किन्तु जो न देता है और न मधुर वाणी बोलता है, वह अव्यवहारी–व्यवहारशून्य है।''

केशीकुमार श्रमण–''उसी प्रकार हे प्रदेशी ! (मै मानता हूँ) तुम भी व्यवहारी हो, अव्यवहारी नहीं हो। अर्थात् तुमने मेरे साथ यद्यपि शिष्ट जनोचित मधुर वाग्–व्यवहार नहीं


देता भी

चित्र परिचय-१६

Illustration No. 16

चार प्रकार के व्यवहारी

केशीकुमार श्रमण कहते है राजन् ! ससार मे चार प्रकार के व्यवहारी होते है

(१) जो देता है, किन्तु लेने वालो के साथ प्रीतिजनक मधुर व्यवहार नही करता।

(२) जो देता कुछ नही, परन्तु मधुर प्रीतिजनक बोली से सबको प्रसन्न कर देता है।

(३) जो देता भी है और मीठा बोलकर सबको प्रसन्न रखता है।

(४) जो देता भी नही और व्यवहार मे भी बहुत रूखा रहता है।

राजन् ! इनमे से तुम किस प्रकार के व्यवहारी हो ?''

सूत्र २६३, पृष्ठ ३६९-३७०

FOUR KINDS OF ASSOCIATES

Keshi Kumar Shraman states—"O King ! There are four kinds of acquaintances or associates in this world —

(1) One who gives but does not behave affectionately and sweetly with the recipient

(2) One who does not give anything but makes people happy with his sweet and affectionate words

(3) One who gives as well as makes people happy with his sweet and affectionate words

(4) One who does not give and at the same time behaves rudely as well

O King ! Which of these kinds you conform to ?"

—Sutra 263, pp 369-370

किया, फिर भी मेरे उपदेशों के प्रति भक्ति और सम्मान प्रदर्शित करने के कारण तुम व्यवहारी हो।''

(b) Keshi Kumar Shraman said—"O Pradeshi ! Do you know not of the said four types who are considered expert in their dealing and who is totally ignorant of the code of a dealer."

Pradeshi replied—"Yes Sir, I know.

(1) The person who gives but does not speak language, worthy of satisfaction to others is a (tolerable) dealer.

(2) The person who does not give anything but satisfies others with his word (talk) is also a (tolerable) deader.

(3) The person who gives and also speaks sweet words is a (good) dealer.

(4) But the person who neither gives nor speaks sweet words is not a good dealer—he is devoid of the code of a dealer."

Keshi Kumar Shraman said—"O Pradeshi ! On the same principles you are also a (tolerable) dealer and not a person devoid of the conduct or code of a dealer In other words although you did not have a proper and sweet behaviour with me, yet you showed devotion and respect for my words. So you are a (tolerable) dealer."

२६४. (क) तए णं पएसी राया केसिकुमारसमणं एवं वयासी–

तुज्झे णं भंते ! इय छेया दक्खा जाव उवएसलद्धा, समत्था णं भंते ! ममं करयलंसि वा आमलयं जीवं सरीराओ अभिनिवट्टित्ताणं उवदंसित्तए ?

तेणं कालेणं तेणं समएणं पएसिस्स रण्णो अदूरसामंते वाउयाए संवुत्ते, तणवणस्सइकाए एयइ वेयइ चलइ फंदइ घट्टइ उदीरइ, तं तं भावं परिणमइ।

तए णं केसी कुमारसमणे पएसिरायं एवं वयासी–

पाससि णं तुमं पएसी राया ! एयं तणवणस्सइं एयंतं जाव तं तं भावं परिणमंतं ?

हंता पासामि।

जाणासि णं तुमं पएसी ! एयं तणवणस्सइकायं किं देवो चालेइ, असुरो वा चालेइ, णागो वा, किन्नरो वा चालेइ, किंपुरिसो वा चालेइ, महोरगो वा चालेइ, गंधव्वो वा चालेइ ?

हंता जाणामि–णो देवो चालेइ जाव णो गंधव्वो चालेइ, वाउयाए चालेइ।

पाससि णं तुमं पएसी ! एतस्स वाउकायस्स सरूविस्स सकामस्स सरागस्स समोहस्स सवेयस्स सलेसस्स ससरीरस्स रूवं ?

णो तिणट्ठे (समट्ठे)।

२६४. **(क)** इसके पश्चात् प्रदेशी राजा ने कहा–

"हे भदन्त ! आप अवसर को जानने में निपुण हैं, कार्यकुशल हैं। आपने गुरु से शिक्षा प्राप्त की है। तो क्या आप मुझे हथेली मे स्थित आँवले की तरह शरीर से बाहर जीव को निकालकर दिखा सकते है ?"

प्रदेशी राजा ने जब यह कहा ही था कि उसी समय तेज हवा चलने से प्रदेशी राजा के निकट ही तृण–घास, वृक्ष आदि वनस्पतियाँ हिलने–डुलने लगीं, काँपने लगी, फरकने लगीं, परस्पर टकराने लगी, अनेक विभिन्न रूपो में परिणत होने लगीं।

यह देखकर केशीकुमार श्रमण ने प्रदेशी से पूछा–

"हे प्रदेशी ! तुम इन तृणादि वनस्पतियों को हिलते–डुलते, काँपते–टकराते देख रहे हो ?"

प्रदेशी–"हाँ, भदन्त ! देख रहा हूँ।"

केशीकुमार श्रमण–"तो प्रदेशी ! क्या तुम यह भी जानते हो कि इन तृण–वनस्पतियो को कोई देव हिला रहा है अथवा असुर हिला रहा है अथवा कोई नाग, किन्नर, किपुरुष, महोरग अथवा गधर्व हिला रहा है ?"

प्रदेशी–"हाँ, भदन्त ! जानता हूँ। इनको न तो कोई देव हिला–डुला रहा है, यावत् न गधर्व हिला रहा है। ये वायु से हिल–डुल रही है।"

केशीकुमार श्रमण–"हे प्रदेशी ! क्या तुम उस मूर्त्त (रूपवान), काम, राग, मोह, वेद, लेश्या और शरीरधारी वायु के रूप को देख सकते हो ?"

प्रदेशी–"भदन्त ! मैं उसे नही देख पाता हूँ।"

264. (a) Thereafter, king Pradeshi said—

"Sir ! You are expert in judging the occasion, you are intelligent in performing your duties. You have received good education from your master. Can you show me soul (taking it out from the body) like an amla-fruit placed on the palm on the hand ?"

When king Pradeshi had asked this question, just then sharp wind started blowing and as a result of it, the grass, the trees and the growing vegetation started moving, shivering, fluttering, striking against each other and turning into different shapes.

Seeing this Keshi Kumar Shraman asked—

"O Pradeshi ! Do you see the grass, vegetarian and suchlike moving, shivering and striking against each other."

Pradeshi replied—"Yes Sir ! I see so."

Keshi Kumar Shraman asked—"Then O Pradeshi ! Do you also know whether a god, a naag, a kinnar, a kimpurush, a mahorag or a gandharv god is moving them ?"

Pradeshi replied—"Sir ! I know. Neither any god, a naag, a kinnar, a kimpurush, a mahorag nor any gandharv is moving them. They are moving because of the wind."

Keshi Kumar Shraman asked—"O Pradeshi ! The wind has shape. It has attachment, it has likes, it has feelings, it has physical body. Can you see its shape ?"

King Pradeshi replied—"I cannot see it."

(ख) जइ णं तुमं पएसी राया ! एयस्स वाउकायस्स सरूविस्स जाव ससरीरस्स रूवं न पाससि तं कहं णं पएसी ! तव करयलंसि वा आमलगं जीवं उवदंसिस्सामि ?

एवं खलु पएसी ! दसट्ठाणाइं छउमत्थे मणुस्से सव्वभावेणं न जाणइ न पासइ, तं जहा–१. धम्मत्थिकायं, २. अधम्मत्थिकायं, ३. आगासत्थिकायं, ४. जीवं असरीरबद्धं, ५. परमाणुपोग्गलं, ६. सद्दं, ७. गंधं, ८. वायं, ९. अयं जिणे भविस्सइ वा णो भविस्सइ, १०. अयं सव्वदुक्खाणं अंतं करेस्सइ वा नो वा।

एताणि चेव उप्पन्ननाणदंसणधरे अरहा जिणे केवली सव्वभावेणं जाणइ पासइ तं जहा–धम्मत्थिकायं जाव नो वा करिस्सइ, तं सद्दहाहि णं तुमं पएसी ! जहा–अन्नो जीवो तं चेव।

(ख) केशीकुमार श्रमण ने कहा–"राजन् ! जब तुम इस रूपधारी (मूर्त्त) यावत् सशरीरी वायु के रूप को भी नहीं देख सकते तो हे प्रदेशी ! इन्द्रियातीत ऐसे अमूर्त्त जीव को हाथ मे रखे आँवले की तरह कैसे देख सकते हो ?

क्योंकि छद्मस्थ (अल्पज्ञ) मनुष्य इन दस वस्तुओं को उनके सर्व भावों-पर्यायों सहित जानते-देखते नहीं हैं। यथा (उनके नाम इस प्रकार है)-(१) धर्मास्तिकाय, (२) अधर्मास्तिकाय, (३) आकाशास्तिकाय, (४) अशरीरी (शरीररहित) जीव, (५) परमाणु पुद्‌गल, (६) शब्द, (७) गध, (८) वायु, (९) यह जीव भविष्य मे जिन होगा अथवा नहीं होगा, और (१०) यह समस्त दु:खो का अन्त करेगा या नहीं करेगा।

किन्तु ज्ञान-दर्शन के धारक (केवलज्ञानी, केवलदर्शी, सर्वज्ञ, सर्वदर्शी), अर्हन्त, जिन, केवली इन दस बातों को उनकी समस्त पर्यायों सहित जानते-देखते है, यथा-धर्मास्तिकाय यावत् सर्वदु:खों का अन्त करेगा या नहीं करेगा। इसलिए प्रदेशी ! तुम यह श्रद्धा करो कि जीव अन्य है और शरीर अन्य है। जीव और शरीर एक नही है। किन्तु छद्‌मस्थ उसे नहीं देख पाता।''

(b) Keshi Kumar Shraman said—"O King ! The wind has shape upto a physical body and still you cannot see it, then how can you like an amla-fruit place on the palm hand, the soul which is beyond senses and non-physical

It is because a person who does not have perfect knowledge cannot see ten substances completely and all of their modes (forms) They are as under—(1) Dharmastikaya—The substance that passively assists in motion, (2) Adharmastikaya—The substance that passively assists in taking rest, (3) Akashastikaya—The space, (4) Ashareeri Jiva—Soul without the gross body, (5) Parmanu pudgal—The atom that cannot be further divided, (6) Shabd—The sound molecules, (7) Gandh—The molecules of fragrance, (8) Vaayu—The wind, the air, (9) Whether this Jiva (soul) shall become Jin—possessor of perfect knowledge in future or not, and (10) Whether this soul (Jiva) will completely finish all the karmas or not

The omniscient Arhant, who possesses perfect knowledge and perfect perception know all these things and all their modes. So king Pradeshi ! You should believe that soul is different from the body and that they are not the same entity. But one who is not having perfect perception cannot see it."

विवेचन-इस सूत्र मे वायुकायिक जीवों के उल्लेख द्वारा ससारी जीवों का स्वरूप बताया है कि सभी संसारी जीव सूक्ष्म और बादर (स्थूल) इन दो प्रकारो मे से किसी न किसी एक प्रकार वाले होते हैं। सूक्ष्म

नामकर्म के उदय से प्राप्त शरीर इन्द्रियों से दिखाई नही देता, वह ज्ञान द्वारा ही जाना जाता है, तथा बादर नामकर्म के उदय से शरीर में ऐसा स्थूल परिणाम उत्पन्न होता है कि जिससे वे इन्द्रियग्राह्य हो सकते है। सूक्ष्म और बादर नामकर्म का उदय तिर्यंच गति के जीवो मे होता है और वायुकायिक जीव एकेन्द्रिय तिर्यंच गति वाले होते हैं। उनके एक स्पर्शनेन्द्रिय, कृष्ण, नील, कापोत, लेश्या, नपुंसकवेद और औदारिक, वैक्रिय, तैजस्, कार्मण शरीर होते हैं।

दस सूक्ष्म अज्ञेय वस्तुओ मे शब्द, गंध और वायु भी है। आज का विज्ञान अत्यन्त सूक्ष्म उपकरणो व यत्रो के सहारे शब्द, गध व वायु की तरगो व प्रकम्पनो का विश्लेषण तो करता है, परन्तु अपनी भौतिक आँखो से देखने का उदाहरण अब तक सुना नही है।

Elaboration—In this aphorism, by the illustration air-bodied Jiva (soul), the structure of mundane souls has been described. All the worldly (mundane) souls are of two types—gross and subtle. A Jiva which had collected subtle name-karma (is born as subtle Jiva and as such) cannot be seen by the senses That Jiva can be known only through Jnan (perfect knowledge). A Jiva that had collected gross name-karma is born with such a body that can be seen by senses Gross and subtle name-karma fruitify only in Tiryanch (sub-human) state of Jiva (souls). The air-bodied souls are, one-sensed Jiva having Tiryanch (sub-human) state of existence. They have only one sense—the sense of touch. They have Krishan (black), Neel (blue) or Kapot (grey) thought colours (Leshya), they have Napunsakved (sex inclination for both male and female). They have gross, fluid, taijas (electric) and karmic body

The ten subtle substances that can be known (with sense-organs) include sound, smell and air With the help of extremely subtle (fine) instruments, modern science analyses the awareness of sound, smell (fragrance) and air and fire movements in them. But so far, no example has come to our notice that it could be seen with naked eyes.

क्या हाथी और कुंथु का जीव समान है ?

२६५. (क) तए णं से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी–

से नूणं भंते ! हत्थिस्स कुंथुस्स य समे चेव जीवे ?

हंता पएसी ! हत्थिस्स य कुंथुस्स य समे चेव जीवे।

से णूणं भंते ! हत्थीउ कुंथू अप्पकम्मतराए चेव अप्पकिरियतराए चेव अप्पासवतराए चेव एवं आहार–नीहार–उस्सास–नीसास–इड्ढीए महज्जुइ अप्पतराए चेव, एवं च कुंथुओ हत्ती महाकम्मतराए चेव महाकिरिय. जाव ?

हंता पएसी ! हत्तीओ कुंथू अप्पकम्मतराए चेव कुंथुओ वा हत्थी महाकम्मतराए चेव तं चेव।

कम्हा णं भंते ! हत्थिस्स य कुंथुस्स य समे चेव जीवे ?

२६५. (क) इसके पश्चात् प्रदेशी राजा ने प्रश्न किया-

"भते ! क्या हाथी और कुथु का जीव एक समान है ?"

केशीकुमार श्रमण-"हाँ, प्रदेशी ! हाथी और कुंथु का जीव एक समान है, दोनों के आत्म-प्रदेश समान परिमाण वाले है, न्यूनाधिक प्रदेश परिमाण वाले नहीं हैं।"

प्रदेशी-"भदन्त ! क्या हाथी से कुथु अल्प कर्म (आयुष्य) वाला है, अल्प क्रिया और अल्प आस्रव वाला है ? और इसी प्रकार कुंथु का आहार, निहार, श्वासोच्छ्वास, शारीरिक बल, द्युति आदि भी अल्प है और कुंथु से हाथी अधिक कर्म वाला, अधिक क्रिया वाला यावत् अधिक द्युति-सम्पन्न है ?"

केशीकुमार श्रमण-"हॉ प्रदेशी ! ऐसा ही है-हाथी से कुथु अल्प आयुष्य कर्म वाला, अल्प क्रिया वाला और कुंथु से हाथी महाकर्म वाला है।"

प्रदेशी-"तो फिर भदन्त ! हाथी और कुंथु का जीव समान परिमाण वाला कैसे हो सकता है ?"

ARE THE SOULS OF ELEPHANT AND KUNTHU (THREE-SENSED BEING) SIMILAR ?

265. (a) Thereafter king Pradeshi asked—

"Are the souls of elephant and Kunthu—three-sensed animals similar to each other."

Keshi Kumar Shraman replied—"Yes, Pradeshi ! The souls of elephant and Kunthu are similar, the souls-atoms (pradesh) of both the souls are equal—neither more nor less."

Pradeshi asked—"Sir ! Are the karmas of Kunthu less than elephant ? Are the activities and inflow of karmic matter in case of Kunthu are less than that of an elephant ? Is the first intake, the waste, the breathing, physical strength and brightness are also less of Kunthu than elephant ?"

Keshi Kumar Shraman said—"Yes, Pradeshi ! It is so. Kunthu has less age-forming karma and it has less activity as compared to

elephant ? An elephant has more age-forming karma and more activity than the Kunthu (three-sensed living-being)."

King Pradeshi asked—"Sir ! How then Kunthu (ant) and elephant have souls similar to each other."

दीपक का दृष्टान्त

(ख) पएसी ! जहा णामए कूडागारसाला सिया जाव गंभीरा, अह णं केइ पुरिसे जोइं व दीवं व गहाय तं कूडागारसालं अंतो अणुपविसइ तीसे कूडागारसालाए सव्वओ समंता घणनिचियनिरंतराणि णिच्छिड्डाइं दुवारवयणाइं पिहेति, तीसे कूडागारसालाए बहुमज्झदेसभाए तं पईवं पलीवेज्जा, तए णं से पईवे तं कूडागारसालं अंतो ओभासइ उज्जोवेइ तवति पभासेइ, णो चेव णं बाहिं।

अह णं पुरिसे तं पईवं इड्डरएणं पिहेज्जा, तए णं से पईवे तं इड्डरयं अंतो ओभासेइ, णो चेव णं इड्डरगस्स बाहिं, णो चेव णं कूडागारसालाए बाहिं, एवं गोकिलिंजेणं, पच्छिपिंडएणं, गंडमाणियाए, आढतेणं, अद्धाढतेणं, पत्थएणं, अद्धपत्थएणं, कुलवेणं, अद्धकुलवेणं, चाउब्भाइयाए, अट्ठभाइयाए, सोलसियाए, बत्तीसियाए, चउसट्ठियाए, दीवचंपएणं तए णं से पदीवे दीवचंपगस्स अंतो ओभासति, नो चेव णं दीवचंपगस्स बाहिं, नो चेव णं चउसट्ठियाए बाहिं, णो चेव णं कूडागारसालं, णो चेव णं कूडागारसालाए बाहिं।

एवामेव पएसी ! जीवे वि जं जारिसयं पुव्वकम्मनिबद्धं बोंदिं णिव्वत्तेइ तं असंखेज्जेहिं जीवपदेसेहि सचित्तं करेइ खुड्डियं वा महालियं वा, तं सद्दहाहि णं तुम पएसी ! जहा–अण्णो जीवो तं चेव णं।

(ख) केशीकुमार श्रमण–''हे प्रदेशी ! हाथी और कुंथु के जीव को समान परिमाण वाला ऐसे समझा जा सकता है–जैसे कोई एक विशाल कूटाकारशाला हो और कोई एक पुरुष अग्नि और दीपक साथ लेकर उस कूटाकारशाला में प्रवेश करे तथा उसके ठीक मध्य भाग में खडा हो जाए। तत्पश्चात् उस कूटाकारशाला के सभी द्वारों के किवाडों को इस प्रकार सटाकर अच्छी तरह बंद कर दे कि उनमें किंचिन्मात्र भी साँध–छिद्र नहीं रहे। फिर उस कूटाकारशाला के बीचोंबीच उस दीपक को जलाये तो जलाने पर वह दीपक उस कूटाकारशाला के भीतर वाले भाग को ही प्रकाशित, उद्योतित, तापित और प्रभासित करता है, किन्तु बाहरी भाग को प्रकाशित नहीं करता है।

(कल्पना करो) अब यदि वही पुरुष उस दीपक को धातु के एक विशाल पिटारे से ढक दे तो वह दीपक कूटाकारशाला की तरह उस पिटारे के भीतरी भाग को ही प्रकाशित करेगा किन्तु पिटारे के बाहरी भाग को प्रकाशित नही करेगा। इसी तरह गोकिलिज (गाय को घास रखने का पात्र-डलिया), पच्छिकापिटक (पिटारी), गडमाणिका (अनाज मापने का बर्तन), आढक (चार सेर धान्य मापने का पात्र), अर्धाढक, प्रस्थक, अर्धप्रस्थक, कुलव, अर्धकुलव, चतुर्भागिका, अष्टभागिका, षोडशिका, द्वात्रिंशतिका, चतुष्षष्टिका (इन सबके अर्थ अनुयोगद्वारसूत्र में देखें) अथवा दीपचम्पक (दीपक का ढाकना) से ढके तो वह दीपक उस ढक्कन के भीतरी भाग को ही प्रकाशित करेगा, ढक्कन के बाहरी भाग को नहीं। न चतुष्षष्टिका के बाहरी भाग को, न कूटाकारशाला को, न कूटाकारशाला के बाहरी भाग को प्रकाशित करेगा।

हे प्रदेशी ! इसी प्रकार पूर्वभव में उपार्जित कर्म के निमित्त से जीव को क्षुद्र-छोटे अथवा महत्-बडे शरीर की प्राप्ति होती है, उसी शरीर के अनुसार आत्म-प्रदेशो को सकुचित और विस्तृत करने का स्वभाव आत्मा का है। इस कारण वह उस शरीर को अपने असख्यात आत्म-प्रदेशों से व्याप्त करता है। अतएव प्रदेशी ! तुम यह श्रद्धा करो-इस बात पर विश्वास करो कि जीव अन्य है और शरीर अन्य है, जीव शरीर नहीं और शरीर जीव नही है।''

EXAMPLE OF LAMP

(b) Keshi Kumar Shraman said—"O Pradeshi ! The soul of elephant and that of ant can be understood of same size as under—Imagine a large temple (house) at the summit of a hill. A person enters it with a lamp and fire to ignite it. He then stands exactly at the centre of that house. Thereafter he closes all the doors of that house in such a way that there is no gap (hole) in between. He then lights the lamp. Then the light of the lamp brightens, shines and lights up only the inner part of the house and the outer part does not get lighted.

Imagine that the same person now covers the lighted lamp with a big basket. Then like the house, the lamp sheds light and brightens only the space inside the basket and not the space outside. Similarly if he covers the lamp with basket used for feeding the cows, a bamboo box, a vessel used for measuring corn, a pot used to measure four seers of food grains, two seers of food grains, one seer of food grains, half seer of food grains, a pot equal to


और चींटी में आत्मा समान है
कूटाकारशाला में
दीपक
पिटारे से ढँका दीपक
आत्मा

चित्र परिचय-१७	Illustration No. 17

हाथी और चींटी में आत्मा समान है

राजा प्रदेशी ने शका की–"आप कहते है, सबमे आत्मा समान है, किन्तु हाथी और चीटी मे आत्मा समान कैसे सम्भव है ?"

केशीकुमार श्रमण ने उदाहरण दिया

"(१) जैसे किसी कूटाकारशाला के मध्य म दीपक जलाने पर उस दीपक का प्रकाश शाला के पूरे भाग को प्रकाशित कर देता है।

(२) उस दीपक को यदि धातु के पिटारे से ढँक दे तो वह दीपक केवल पिटारे के भीतरी भाग को ही प्रकाशित करेगा न ? अर्थात् दीपक का प्रकाश सीमित हो जाता है।

(३) उसी प्रकार शरीर के आकार के कारण आत्म प्रदेशो का सकोच और विस्तार होता है -यह आत्मा का स्वभाव है।"

सूत्र २६५, पृष्ठ ३७५ ३७९

SOULS OF ELEPHANT AND ANT ARE SAME

King Pradeshi expressed his doubt—"You say that soul is similar in all beings but how is it possible that souls of an elephant and an ant are similar ?"

Keshi Kumar Shraman explained with an example—

"(1) Imagine a lamp is lit in a secret room Its glow spreads all around the room

(2) Now cover that lamp with a metal basket Isn't the glow of the lamp now limited only to the inner part of the basket ? In other words the light of the lamp gets confined

(3) In the same way the space-points of soul shrink and expand according to the shape and size of the body, this is the basic nature of soul "

—Sutra 265, pp 375 379

measure of grains contained in two hands flatly joined, half of that, one-fourth of that, one-eighth, one-sixteenth, one-thirty twoeth, one sixty fourth of that (chausasthiye) [for meaning of words see Anuyogdvar Sutra] as cover of the lamp. Then that lamp shall lighten only the inner space of the cover and not the outer space. It shall not light up the outside space other than one-sixty fourth, nor the outer space of the house.

O Pradeshi ! Thus due to the karmas accumulated in the present life-span, the Jiva (soul) gets small **(kshudra)** or large **(mehat)** body. It is the nature of the soul to spread or contract the soul-atoms according to the size of the body. So it spreads unlimited soul-atoms So Pradeshi ! You should trust it, you should believe that soul and body are different. Soul is not body and body is not soul "

परम्परागत मान्यता का निराकरण

२६६. तए णं पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी–

एवं खलु भंते ! मम अज्जगस्स एस सन्ना जाव समोसरणे जहा–तज्जीवो तं सरीरं, नो अन्नो जीवो अन्नं सरीरं। तयाणंतरं च णं ममं पिउणो वि एस सण्णा, तयाणंतरं मम वि एसा सण्णा जाव समोसरणं, तं नो खलु अहं बहुपुरिसपरंपरागयं कुलनिस्सियं दिट्ठिं छंडेस्सामि।

२६६. प्रदेशी राजा ने केशीकुमार श्रमण से कहा–

''भदन्त ! आपने बताया सो ठीक, किन्तु मेरे पितामह की यही धारणा–मान्यता व बुद्धि थी, सिद्धान्त था कि जो जीव है वही शरीर है, जो शरीर है वही जीव है। जीव शरीर से भिन्न नही और शरीर जीव से भिन्न नही है। पितामह के बाद मेरे पिता की भी ऐसी ही संज्ञा यावत् ऐसा ही सिद्धान्त था और उनके बाद मेरी भी यही मान्यता है। तो फिर अनेक पुरुषो (पीढियों) एव कुल–परपरा से चली आ रही अपनी मान्यता को कैसे छोड दूँ ?''

DISCARDING TRADITIONAL BELIEFS

266. King Pradeshi told Keshi Kumar Shraman—

"Blessed Sir ! Whatever you have stated may be correct, but my grandfather had this belief, this understanding this principle that a soul is a body and a body is a soul and that souls and bodies are not

different entities. Later same was the belief of my father, thereafter I have also the same faith. So how should I leave the traditional faith having been followed since many generations ?"

लोह वणिक् का दृष्टान्त

२६७. (क) तए णं केसी कुमारसमणे पएसिरायं एवं वयासी–

मा णं तुमं पएसी ! पच्छाणुताविए भवेज्जासि, जहा व से पुरिसे अयहारए।

के णं भंते ! से अयहारए ?

पएसी ! से जहाणामए केई पुरिसा अत्थत्थी, अत्थगवेसी, अत्थलुद्धगा, अत्थकंखिया, अत्थपिवासिया अत्थगवेसणयाए विउलं पणियभंडमायाए सुबहुं भत्तपाणपत्थयणं गहाय एगं महं अकामियं छिन्नावायं दीहमद्धं अडविं अणुपविट्ठा।

२६७. (क) प्रदेशी राजा की बात सुनकर केशीकुमार श्रमण ने उत्तर दिया–

"प्रदेशी ! तुम उस अयोहारक (लोहे के भार को ढोने वाले लोह वणिक्) की तरह पश्चात्ताप करने वाले मत होना। (अर्थात् जैसे वह लोह वणिक् पछताया उसी तरह तुम्हे भी अपनी कुल परम्परागत अन्ध-श्रद्धा के कारण पछताना नही पडे।)"

प्रदेशी ने पूछा–"भदन्त ! वह अयोहारक कौन था और उसे क्यो पछताना पडा ?"

केशीकुमार श्रमण बोले–"प्रदेशी ! कुछ धन के अभिलाषी, धन की गवेषणा करने वाले, धन के लोभी, धन की कांक्षा और धन की लिप्सा वाले पुरुष धनोपार्जन करने के लिए विपुल परिमाण मे बिक्री करने योग्य पदार्थों और खाने-पीने के लिए पर्याप्त पाथेय (भाता) साथ में लेकर एक ऐसी निर्जन, हिंसक प्राणियों से व्याप्त बहुत बडी अटवी (वन) में जा पहुँचे जिस अटवी मे पार होने के लिए रास्ता पाना भी कठिन था।"

EXAMPLE OF DEALER IN IRON

267. (a) After hearing king Pradeshi, Keshi Kumar Shraman replied—

"O Pradeshi ! You do not become repentant like that dealer in iron who carried the iron load. In other words just as that dealer repented, you may also not have to repent because of blind faith resulting from family tradition."

Pradeshi asked—"Sir ! Who was that dealer and what caused him to repent ?"

Keshi Kumar Shraman said—"Pradeshi ! Some persons desirous of wealth, seekers of wealth, greedy, curious and attached to wealth, in order to earn money; entered a wild forest where there were no men and it was dense with wild animals. They had with them things worthy of sale in sufficient quantity and food for their use during their journey. It was very difficult to find the way in the jungle.

(ख) तए णं ते पुरिसा तीसे अकामियाए अडवीए कंचि देसं अणुप्पत्ता समाणा एगमहं अयागरं पासंति, अएणं सव्वओ समंता आइण्णं विच्छिण्णं सच्छडं उवच्छडं फुडं गाढं पासंति हट्ठतुट्ठ जाव–हियया अन्नमन्नं सद्दावेंति एवं वयासी–एस णं देवाणुप्पिया ! अयभंडे इट्ठे कंते जाव मणामे, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अम्हं अयभारए बंधित्तए ति कट्टु अन्नमन्नस्स एयमट्ठं पडिसुणेंति अयभारं बंधंति, अहाणुपुव्वीए संपत्थिया।

(ख) जब वे लोग उस अटवी मे कुछ आगे बढे तो किसी स्थान पर उन्होने इधर-उधर लोह से भरी लम्बी-चौडी और गहरी एक लोहे की खान देखी। वहाँ लोहा खूब बिखरा पडा था। उस खान को देखकर हर्षित होकर उन्होंने आपस में एक-दूसरे को कहा-''देवानुप्रियो ! यह लोहा हमारे लिए अच्छा है, लाभकारी है। अत· हमें इस लोहे की गठरी बाँध लेनी चाहिए।'' इस प्रकार विचार करके उन्होने लोहे का भारा बाँध लिया और अटवी मे आगे चल दिये।

(b) When they went ahead in the forest, they found at some place in the jungle, a large and deep mine of iron ore. Iron was scattered all around. They felt happy and talked among themselves—"O the blessed ! This iron is good for us. It is beneficial to us. So we should be it up in a bundle." They then tied iron in a bundle and went ahead (carrying the iron-load).

(ग) तए णं ते पुरिसा अकामियाए जाव अडवीए किंचि देसं अणुप्पत्ता समाणा एगं महं तउआगरं पासंति, तउएणं आइण्णं तं चेव जाव सद्दावेत्ता एवं वयासी–एस णं देवाणुप्पिया ! तउयभंडे जाव मणामे, अप्पेणं चेव तउएणं सुबहुं अए लब्भति, तं सेयं खलु देवाणुप्पिया ! अयभारए छड्डेत्ता तउयभारए बंधित्तए त्ति कट्टु अन्नमन्नस्स अंतिए एयमट्ठं पडिसुणेंति, अयभारं छड्डेंति तउयभार बंधंति।

तत्थ णं एगे पुरिसे णो संचाएइ अयभारं छड्डेत्तए तउयभारं बंधित्ता।

(ग) अटवी में आगे चलते-चलते वे लोग एक स्थान पर पहुँचे, वहाँ उन्होंने एक विशाल त्रपु-सीसे की खान देखी, तब एक-दूसरे को बुलाकर कहा-"हे देवानुप्रियो ! हमें इस सीसे का संग्रह करना लाभदायक होगा। बहुत से लोहे को छोडकर हमें थोडा सीसा ले लेना अधिक लाभदायक है।" आपस में एक-दूसरे ने इस विचार को स्वीकार किया और लोहे को छोडकर सीसे के पोटले बाँध लिये।

किन्तु उनमे से एक व्यक्ति लोहे को छोडकर सीसे का भारा बाँधने के लिए तैयार नहीं हुआ।

(c) When they went ahead in the forest, they found a mine of tin. They then called each other and said—"O the blessed ! The collection of tin shall be more beneficial to us. We should discard the iron-load and collect some tin." Having decided in this manner, they discarded the iron and tied the bundles of tin."

But one of them did not agree to discard the iron-load and collect tin.

(घ) तए णं ते पुरिसा तं पुरिसं एवं वयासी—एस णं देवाणुप्पिया ! तउयभंडे जाव सुबहुं अए लब्भति, तं छड्डेहि णं देवाणुप्पिया ! अयभारगं, तउयभारगं बंधाहि।

तए णं ते पुरिसे एवं वयासी—दूराह मे देवाणुप्पिया ! अए, चिराहडे मे देवाणुप्पिया ! अए, अइगाढबंधणबद्धे मे देवाणुप्पिया ! अए, असिढिलबंधणबद्धे देवाणुप्पिया ! अए, धणियबंधणबद्धे देवाणुप्पिया ! अए, णो संचाएमि अयभारगं छड्डेत्ता तउयभारगं बंधित्तए।

(घ) तब दूसरे साथियो ने अपने उस साथी से कहा-"देवानुप्रिय ! हमे लोहे की अपेक्षा इस सीसे का सग्रह करना अधिक अच्छा है, इस थोडे से सीसे से बहुत-सा लोहा प्राप्त किया जा सकता है। अतएव देवानुप्रिय ! तुम इस लोहे को छोडकर सीसे का भारा बाँध लो।"

तब उस व्यक्ति ने कहा-"देवानुप्रियो ! मै इस लोहे के भारे को बहुत दूर से लादे चला आ रहा हूँ। इस लोहे को बहुत समय से लादे हुए हूँ। मैने इस लोहे को बहुत ही कसकर बाँधा है। मैने इस लोहे को मजबूत बधन से बाँधा है। मैंने इस लोहे को अत्यधिक प्रगाढ़ बंधन से बाँध रखा है। इसलिए मै इस लोहे को छोडकर सीसे के भार को नहीं बाँध सकता।"

(d) Then his other companions advised him—"O the blessed ! It is more beneficial to collect tin instead of iron. From a small

quantity of tin, a large quantity of iron can be got in exchange. So you should discard the iron and collect tin."

Then that person replied—"O the blessed ! I am carrying this iron-load from a great distance since long. I have tied the iron tightly, with very strong knots and with great efforts. So I cannot discard it in order to collect tin in its place."

(ङ) तए णं ते पुरिसा तं पुरिसं जाहे णो संचायंति बहूहिं आघवणाहि य पन्नवणाहि य आघवित्तए वा पण्णवित्तए वा तया अहाणुपुव्वीए संपत्थिया, एवं तंबागरं रुप्पागरं सुवण्णागरं रयणागरं वइरागरं।

तए णं ते पुरिसा जेणेव सया जणवया, जेणेव साइं साइं नगराइं, तेणेव उवागच्छन्ति वयरविक्कणणं करेंति, सुबहुदासीदास गोमहिस गवेलगं गिण्हंति, अट्ठतलमूसियवडंसगे कारावेंति, ण्हाया कयबलिकम्मा उप्पिं पासायवरगया फुट्टमाणेहिं मुइंगमत्थएहिं बत्तीसइबद्धएहिं नाडएहिं वरतरुणी-संपउत्तेहिं उवणच्चिज्जमाणा उवलालिज्जमाणा इट्ठे सद्द-फरिस-जाव विहरंति।

(ङ) तब दूसरे साथियो ने उस व्यक्ति को अनुकूल-प्रतिकूल सभी तरह से समझाया, लाभ-हानि बताने वाले वचनों द्वारा समझाया। लेकिन जब वे उस पुरुष को समझाने-बुझाने मे समर्थ नही हुए तो अनुक्रम से आगे-आगे चलते गये। वहाँ-वहाँ पहुँचकर उन्होंने अनुक्रम मे ताँबे की, चाँदी की, सोने की, रत्नों की और हीरो की खाने देखीं। इनको जैसे-जैसे बहुमूल्य वस्तुएँ मिलती गईं, वैसे-वैसे पहले-पहले के अल्प मूल्य वाले ताँबे आदि को छोडकर अधिक-अधिक मूल्य वाली वस्तुओ को बाँधते गये। (सभी स्थानों पर उन्होंने अपने उस लोहे वाले दुराग्रही साथी को समझाया किन्तु उसके दुराग्रह को छुडाने मे सफल नहीं हुए।)

अटवी को पार करके वे सभी व्यक्ति जहाँ अपना जनपद-देश था, जहाँ अपने-अपने नगर थे, वहाँ आये। वहाँ आकर उन्होने हीरों को बेचा। उससे बहुत धन-सम्पत्ति प्राप्त हुई। उससे अनेक दास, दासी, गाय, भैंस और भेडो आदि को खरीदा। बडे-बडे आठ-आठ मजिल के ऊँचे भवन बनवाये। अब वे वहाँ पर स्नान, बलिकर्म आदि करके उन प्रासादो के ऊपरी भागों में बैठकर संगीत आदि सुनते; तरुणियो द्वारा की जा रही नृत्य-गानयुक्त बत्तीस प्रकार की नाट्य लीलाओं को देखते, मनोज्ञ शब्द, स्पर्श, गंध मूलक मनुष्य-सम्बन्धी कामभोगों को भोगते हुए सुखपूर्वक रहने लगे।

(e) Then the other companions tried hard to bring him round. They explained the benefits of the proposal and loss in not agreeing to it. But when they did not succeed in their efforts, they went ahead. Thereafter on the way, they found copper mine, silver mine, gold mine, mine of gems and the mine of diamonds in that very order. Whenever they found a mine of higher value substance, than the one they were carrying, they discarded their load and carried the more beneficial one. (At all such places they tried to bring round their companion to accept their advice but he did not agree.)

After crossing the forest, they came to their country and then to their town. They sold the diamonds. They got a big amount in exchange. They bought many servants, cows, buffaloes, sheep and other. They got built eight storeyed buildings. Then after their bath and other suchlike, they used to sit at the top floors of their palatial buildings and enjoy music and thirty two types of dances coupled with music performed by the damsels. They were enjoying sensual pleasures fully satisfying their all the five senses namely pleasant words, pleasant sights, pleasant touch, pleasant smell.

(च) तए णं ते पुरिसे अयभारेण जेणेव सए नगरे तेणेव उवागच्छइ, अयभारेणं गहाय अयविक्किणणं करेति, तंसि अप्पमोल्लंसि निहियंसि झीणपरिव्वए, ते पुरिसे उप्पिं पासायवरगए जाव विहरमाणे पासति, पासित्ता एवं वयासी—अहो ! णं अहं अधन्नो अपुन्नो अकयत्थो अकयलक्खणो हिरि–सिरि–वज्जिए हीणपुण्णचाउद्दसे दुरंतपंतलक्खणे। जइ णं अहं मित्ताण वा णाईण वा नियगाण वा सुणेंतओ तो णं अहं पि एवं चेव उप्पिं पासायवरगए जाव विहरंतो।

से तेणट्ठेणं पएसी, एवं वुच्चइ—मा तुमं पएसी ! पच्छाणुताविए भविज्जासि, जहा व से पुरिसे अयभारिए।

(च) वह लोहवाहक पुरुष भी अपना लोहभार लेकर नगर मे आया। वहाँ आकर उस लोहे को बेचा; किन्तु अल्प मूल्य वाला होने से उसे थोड़ा–सा धन मिला। किसी समय (नगर में फिरते हुए) जब उस पुरुष ने अपने साथियों को श्रेष्ठ प्रासादों के ऊपर रहते हुए यावत् भोग–विलास में समय बिताते हुए देखा। तब इस प्रकार सोचने–विचारने लगा–'अरे ! मैं अधन्य, पुण्यहीन (भाग्यहीन), अकृतार्थ, शुभ लक्षणों से रहित, श्री–ह्री (धन और प्रभाव)


लौह
लौह

चित्र परिचय-१८ | **Illustration No. 18**

लौह-वणिक् दुराग्रही

केशीकुमार श्रमण ने दृष्टान्त देते हुए कहा–

'(१) चार वणिक् धन-प्राप्ति के लिए निकले। मार्ग मे उन्हे लोहे की खान मिली तो चारो ने लोहे की पोटलियाँ बाँध ली।

(२) आगे चलने पर ताँब, चाँदी, सोना आदि की खाने मिली तो तीन ने लोहा छोडकर ताँबा, ताँबा छोडकर चाँदी, चाँदी छोडकर सोने की गठरियाँ बाँध ली। किन्तु चौथा अपनी पुरानी वस्तु के मोह पर ही अडा रहा।

(३) जब हीरो की खान मिली तो तीनो ने तो सोना छोडकर हीरे की गठरिया बाँध ली, किन्तु चौथा अपनी जिद्द पर अडा लोहे की पोटली ही ढोता रहा।

(४) नगर मे जाकर तीनो ने अपना माल बेचा, खूब धन कमा लिया और वैभव विलासपूर्ण जीवन जीने लगे। चौथा लौह वणिक् तो लोहा बेचकर फेरी वाला ही बना रहा। जब उसने उन तीनो का वैभव देखा तो वह अपने अडियल स्वभाव पर पछताने लगा।'

सूत्र २६७ पृष्ठ ३८० ३८५

ADAMANT IRON-MERCHANT

Giving an example Keshi Kumar Shraman stated—

"(1) Four merchants set out for business On the way they found an iron ore mine and they all collected iron ore in their bags

(2) On their journey ahead, one after another, they found copper, silver and gold mines Three of the merchants progressively exchanged iron ore for copper ore, copper ore for silver ore and silver ore for gold ore but the fourth one stuck to his fondness for his old possession of iron ore

(3) When the group found a diamond mine the first three exchanged their gold ore with diamonds but the fourth one was adamant on his decision of carrying his load of iron

(4) Reaching a city the first three merchants sold their merchandise, earned a lot of wealth and lived in grandeur and comfort The fourth one sold his iron and with his meager earning became a poor vendor When he saw the grandeur of his three companions he repented for his mulish nature "

—Sutra 267, pp 380-385

से वर्जित हूँ। हीनपुण्य चातुर्दशिक (कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को जन्मा हुआ), दुरंत-प्रान्त (अशुभ) लक्षण वाला कुलक्षणी हूँ। यदि उन मित्रों, ज्ञातिजनो और अपने हितैषियों की बात मान लेता तो आज मैं भी इसी तरह श्रेष्ठ प्रासादों में रहता हुआ सुखपूर्वक अपना समय व्यतीत करता।'

हे प्रदेशी ! इसी कारण मैंने यह कहा है कि यदि तुम अपना दुराग्रह नही छोडोगे तो उस लोहभार को ढोने वाले दुराग्रही की तरह तुम्हें भी अन्त में पछताना पडेगा।''

(f) Their companion also came to the town with the iron-load. He also sold his iron and got a little amount in exchange Once while moving in the town, he found his companions residing in palatial buildings and enjoying all the comforts of life and sensual pleasures. He thought to himself—'I am poor, I am unlucky, I am devoid of auspicious sign, I am without the blessings of prosperity and influence, I am devoid of religious merit. I appear to have been born on the fourteenth day of dark fortnight, I possess disgusting signs. In case I had agreed to the advice of my friends, my companions, my well-wishers, I also would have lived in suchlike palatial buildings enjoying the pleasure of life.'

O Pradeshi ! In their context I had mentioned that if you do not discard you such born attitude, you shall also have to repent in the end like that person who carried iron-load."

प्रदेशी द्वारा श्रावकधर्म-ग्रहण

२६८. एत्थ णं से पएसी राया संबुद्धे केसिकुमारसमणं वंदइ जाव एवं वयासी-

णो खुल भंते ! अहं पच्छाणुताविए भविस्सामि जहा व से पुरिसे अयभारिए, तं इच्छामि णं देवाणुप्पियाणं अंतिए केवलिपन्नत्तं धम्मं निसामित्तए।

अहासुहं देवाणुप्पिया ! मा पडिबंधं करेह।

धम्मकहा जहा चित्तस्स। तहेव गिहिधम्मं पडिवज्जइ जेणेव सेयविया नगरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

२६८. इस प्रकार केशीकुमार श्रमण द्वारा समझाये जाने पर सम्यक् तत्त्व का बोध प्राप्त करके प्रदेशी राजा ने केशीकुमार श्रमण को वंदना की एव निवेदन किया-

"भदन्त ! मैं वैसा कुछ नहीं करूँगा जिससे उस लोहभारवाहक पुरुष की तरह मुझे पश्चात्ताप करना पड़े। अतः मैं आप देवानुप्रिय से केवलि-प्ररूपित धर्म सुनना चाहता हूँ।"

केशीकुमार श्रमण ने कहा-"देवानुप्रिय ! जैसे तुम्हें सुख उपजे वैसा करो, परन्तु शुभ कार्य में विलम्ब मत करो।"

प्रदेशी की जिज्ञासा-वृत्ति देखकर केशीकुमार श्रमण ने जिस प्रकार चित्त सारथी को धर्मोपदेश देकर श्रावकधर्म समझाया था उसी प्रकार राजा प्रदेशी को भी धर्मकथा सुनाकर गृहस्थधर्म (श्रावकधर्म) का विस्तार से विवेचन किया। राजा गृहस्थधर्म स्वीकार करके सेयविया नगरी की ओर चलने को तत्पर हुआ।

ACCEPTANCE OF VOWS OF A HOUSEHOLDER BY PRADESHI

268. Thus at the advice of Keshi Kumar Shraman and after gaining spiritual knowledge king Pradeshi bowed to him in respect and requested—

"Sir ! I shall not do such an act that I may have to repent in the end like that carrier of iron-load. So I want to listen from you the philosophical thought as propounded by Kewali (the perfect souls)."

Keshi Kumar Shraman replied—"O the blessed ! Do what gives you pleasure, but do not delay the good deed."

Finding the inward curiosity of king Pradeshi to listen about religion, he gave him religious discourse in the same manner as he had earlier given to Chitta Saarthi. He explained in detail the vows meants for a householder. King Pradeshi then accepted the vows of the householder and got ready to return to Seyaviya town.

आचार्य के प्रति कर्त्तव्य-बोध

२६९. तए णं केसी कुमारसमणे पएसिं रायं एवं वयासी-

जाणासि तुमं पएसी ! कइ आयरिया पन्नत्ता ?

हंता जाणामि, तओ आयरिआ पण्णत्ता, तं जहा-१. कलायरिए, २. सिप्पायरिए, ३. धम्मायरिए।

जाणासि णं तुमं पएसी ! तेसिं तिण्हं आयरियाणं कस्स का विणयपडिवत्ती पउंजियव्वा ?

हंता जाणामि, कलायरियस्स सिप्पायरिस्स उवलेवणं संमज्जणं वा करेज्जा, पुरओ पुप्फाणि वा आणवेज्जा, मज्जावेज्जा, मंडावेज्जा, भोयाविज्जा वा विउलं जीवितारिहं पीइदाणं दलएज्जा, पुत्ताणुपत्तियं वित्तिं कप्पेज्जा।

जत्थेव धम्मायरियं पासिज्जा तत्थेव वंदेज्जा णमंसेज्जा सक्कारेज्जा सम्माणेज्जा, कल्लाणं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासेज्जा, फासुएसणिज्जेणं असण–पाण–खाइम–साइमेणं पडिलाभेज्जा, पाडिहारिएणं पीढ–फलग–सिज्जा–संथारएणं उवनिमंतेज्जा।

एवं च ताव तुमं पएसी ! एवं जाणासि तहावि णं तुमं ममं वामं वामेणं जाव वट्टित्ता ममं एयमट्ठं अखामित्ता जेणेव सेयविया नगरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए ?

२६९. तब केशीकुमार श्रमण ने कहा–

''प्रदेशी ! जानते हो कितने प्रकार के आचार्य होते है ?''

प्रदेशी–''हाँ, भदन्त ! जानता हूँ, तीन प्रकार के आचार्य होते है–(१) कलाचार्य, (२) शिल्पाचार्य, और (३) धर्माचार्य।

केशीकुमार श्रमण–''प्रदेशी ! तुम जानते हो कि इन तीन आचार्यों में से किसकी कैसी विनय–प्रतिपत्ति करनी चाहिए ? (किसके साथ कैसा आदरपूर्ण व्यवहार करना चाहिए ?)''

प्रदेशी–''हाँ, भदन्त ! जानता हूँ। (शिष्य को) कलाचार्य और शिल्पाचार्य के शरीर पर चन्दनादि का लेप और तेल आदि का मर्दन करना चाहिए, उन्हे स्नान कराना चाहिए तथा उनके सामने पुष्प आदि भेट रूप मे रखना चाहिए, उनके कपडों आदि को सुरभिगन्ध से सुगन्धित करना चाहिए, आभूषणों आदि से उन्हें अलंकृत करना चाहिए, आदरपूर्वक भोजन कराना चाहिए और आजीविका के योग्य विपुल प्रीतिदान (धन आदि) देना चाहिए एव उनके लिए ऐसी आजीविका की व्यवस्था करनी चाहिए कि उनके पुत्र–पौत्रादि परम्परा भी जिसका लाभ ले सके।

धर्माचार्य के जहाँ भी दर्शन हो, वहीं उनको वन्दना–नमस्कार करना चाहिए, उनका सत्कार–सम्मान करना चाहिए और उन्हें कल्याणरूप, मगलरूप, देवरूप एव ज्ञानरूप मानकर उनकी पर्युपासना करनी चाहिए। अशन, पान, खाद्य, स्वाद्य भोजन–पान से उन्हे प्रतिलाभित करना चाहिए। पडिहारी पीठ, फलक, शय्या, संस्तारक आदि ग्रहण करने के लिए उनसे प्रार्थना करनी चाहिए।''

केशीकुमार श्रमण–''प्रदेशी ! (आश्चर्य है) इस प्रकार की विनय–प्रतिपत्ति (शिष्टाचार) जानते हुए भी तुम अभी तक मेरे प्रति जो प्रतिकूल व्यवहार एवं प्रवृत्ति करते आये हो, उसके लिए क्षमा माँगे बिना ही सेयविया नगरी की ओर चलने के लिए उद्यत हो रहे हो ?''

POINTING OUT DUTIES TOWARDS THE ACHARYA

269. Then Keshi Kumar Shraman asked—

"O Pradeshi ! Do you know how many classifications are of Acharyas ?"

Pradeshi replied—"Reverend Sir ! I know that Acharyas are of three types—(1) Acharya of Art, (2) Acharya of Sculpture, and (3) Acharya of Religion."

Keshi Kumar Shraman then asked—"Do you know how the respect, the benediction is to be expressed toward the said three types ?"

Pradeshi replied—"Yes Sir ! I know The body of Acharya of art and Acharya of sculpture should be pasted with sandalwood paste and massaged with oil. He should be given a bath and then flowers and suchlike should be offered to them. Their dress should be made fragrant with incense. They should be offered food respectfully. They should be given sufficient material (wealth, money) for their livelihood. Such an arrangement should be made for their livelihood, that their sons, grandsons and further generation may also reap its benefits.

Whenever one sees Acharya of religion, he should bow to him in respect, he should honour him. Accepting him as a symbol of welfare, auspicious and godlike and epitome of knowledge, he should serve him. He should offer him food, liquids, sweets and fragrant material. He should also request him to accept seat, board, bed, straw bedding."

Keshi Kumar Shraman then said—"O Pradeshi ! (It is strange that) fully knowing the honour to be shown toward Acharya of religion, you have been dealing with me, so far in a different rude and insolent manner. You are getting ready to go back to Seyaviya town without seeking pardon for such an insolent behaviour ?"

२७०. तए णं से पएसी राया केसिं कुमारसमणं एवं वयासी–

एवं खलु भंते ! मम एयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था–एवं खलु अहं देवाणुप्पियाणं वामं वामेणं जाव वट्टिए, तं सेयं खलु मे कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए

फुल्लुप्पलकमलकोमलुम्मिलियम्मि अहापंडुरे पभाए रत्तासोग-किंसुयसुयमुह-गुंजद्धरागसरिसे कमलागरनलिणिसंडबोहए उट्ठियम्मि सूरे सहस्सरस्सिम्मि दिणयरे तेयसा जलंते अंतेउरपरियालसद्धिं संपरिवुडस्स देवाणुप्पिए वंदित्तए नमंसित्तए एतमट्ठं भुज्जो भुज्जो सम्मं विणएणं खामित्तए-त्ति कट्टु जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव दिसिं पडिगए।

तए णं से पएसी राया कल्लं पाउप्पभायाए रयणीए जाव तेयसा जलंते हट्ठतुट्ठ जाव हियए जहेव कूणिए तहेव निग्गच्छइ अंतेउरपरियालसद्धिं संपरिवुडे पंचविहेणं अभिगमेणं वंदइ नमंसइ एयमट्ठं भुज्जो भुज्जो सम्मं विणएणं खामेइ।

२७०. केशीकुमार श्रमण के इस सकेत को सुनकर, समझकर प्रदेशी राजा ने निवेदन किया-

"हे भदन्त ! आपका कथन योग्य है, किन्तु मेरा इस प्रकार का आन्तरिक विचार-सकल्प और भावना है कि अभी तक आप देवानुप्रिय के प्रति मैने जो प्रतिकूल, अप्रिय और विपरीत व्यवहार किया है, उसके लिए आने वाले कल, रात बीत जाने पर, जब उत्पल और कमल आदि विकसित हो जायेगे, प्रभातकालीन श्वेत-लाल प्रभा बिखरेगी। रक्त अशोक, पलाशपुष्प, तोते की चोंच और गुजाफल के आधे भाग जैसे लाल (अरुण आभा लिए) सरोवर मे स्थित कमलिनी को विकसित करने वाला तेजयुक्त जाज्वल्यमान सहस्र-रश्मि दिनकर (सूर्य) का प्रकाश होगा तब मै अपने अन्त:पुर-परिवार सहित आप देवानुप्रिय की वन्दना-नमस्कार करने और अवमानना रूप अपने अपराध की बारम्बार विनयपूर्वक क्षमापना के लिए सेवा में उपस्थित होऊँगा।" ऐसा निवेदन कर वह प्रदेशी राजा जिस ओर से आया था उसी ओर लौट गया। अपनी नगरी को चला गया।

दूसरे दिन रात्रि बीतने पर, प्रभात हो जाने पर जाज्वल्यमान तेज सहित दिनकर के उदित होने पर प्रदेशी राजा हृष्ट-तुष्ट विकसित हृदय होता हुआ कोणिक राजा की तरह (समारोहपूर्वक) दर्शन करने निकला। उसने अन्तःपुर-परिवार आदि के साथ पाँच प्रकार के अभिगमपूर्वक वन्दन-नमस्कार किया और यथाविधि विनयपूर्वक अपने प्रतिकूल आचरण के लिए बारम्बार क्षमा-याचना की।

270. Listening to this direction of Keshi Kumar Shraman and properly understanding it, king Pradeshi requested—

"Reverend Sir ! Whatever you have said is true, but my inner feeling and thought is that whatever opposite, undesirable,

condemnible behaviour I had adopted towards you so far, for that I should on the following day early in the morning when utpal and lotus bloom, when sunshine of the rising sun appears, when there shall be brightness of the sun spreading thousands of its rays causing blooming of lotus flowers in the lake (making it red with aura) that appear red like crimson Ashok, Palash flowers beak of a parrot and the middle portion of gunja flowers, I should come to you with my entire family in order to bow to you, honour you and to humbly seek pardon from you for my great sin of insulting you." Saying so, king Pradeshi went in the direction from which he had come. He went to his town.

After the night passed on the following day, when the sun brightened, in a very joyous mood king Pradeshi came out like king Kaunik to have the darshan (of Keshi Kumar Shraman). He and the members of his family, observing five types of restrains, bowed to Keshi Kumar Shraman, honoured him and humbly sought pardon for his rude and undesirable behaviour again and again in the prescribed manner.

विवेचन–इस सूत्र मे प्रदेशी राजा के केशीकुमार श्रमण की धर्मदेशना सुनने के लिए परिवार व सेना सहित जाने का उल्लेख है। इसका विस्तृत वर्णन जानने के लिए कोणिक राजा के भगवान महावीर की धर्मसभा मे जानने का वर्णन पढने की सूचना है। औपपातिकसूत्र मे कोणिक राजा की दर्शन–यात्रा का बहुत ही विस्तृत रोचक वर्णन है। इसका सार यह है–

चम्पानगरी मे भगवान महावीर के आगमन का सवाद सुनकर कोणिक राजा अत्यन्त हर्षित होता है। चम्पानगरी को दुल्हन की तरह सजाने–सँवारने का आदेश देता है और सेनानायक को दर्शन–यात्रा मे जाने के लिए सेना, हाथी आदि तैयार करने की आज्ञा देता है। स्वय स्नान आदि करके परिवार सहित तैयार होकर पट्टहस्ती पर आरूढ होता है, रानियाँ आदि परिवार सुसज्जित रथो में बैठता है।

इस यात्रा मे सबसे आगे अष्ट मगल स्थापित करके रखे जाते है। इनके पीछे मगल–कलश, झारियाँ, छत्र, चँवर, ध्वजा चलती है। सुसज्जित एक सौ आठ घोडो पर सुशिक्षित घुडसवार, उनके पीछे एक सौ आठ विशालकाय हाथी, फिर छत्रयुक्त एक सौ आठ रथ, हाथो मे अनेक प्रकार के शस्त्र धारण किये हजारो पैदल सैनिक। इस प्रकार चतुरगिनी सेना के साथ उनके पीछे अभिषेक हस्ती पर कोणिक राजा आरूढ होता है। कोणिक के हाथी के आगे घुड़सवार, दोनो बाजुओं में हाथियो पर सुसज्जित सैनिक और पीछे अनेक सैकडों रथ चल रहे है। उनके पीछे मत्री, नगर–रक्षक, राज्य–अधिकारी, श्रेष्ठी, सार्थवाह तथा नगरजन चलते है। पटह–मृदंग, भेरी आदि वाद्य बजाते हुए वादक। इस प्रकार हजारों लोगो के साथ अत्यन्त उल्लास–उत्साहपूर्वक कोणिक राजा चम्पानगरी के मध्य मे होकर भगवान महावीर की वन्दना करने पूर्णभद्र चैत्य की ओर जाता है।

यद्यपि कोणिक का वैभव बहुत विशाल था। परन्तु प्रदेशी राजा भी अपने विशाल वैभव व सेना, परिवार के साथ उसी प्रकार हजारो नागरिकों को साथ लेकर केशीकुमार श्रमण की वन्दना करने मृगवन उद्यान में आता है।

पाँच अभिगमों के नाम पहले बताये जा चुके हैं, वे इस प्रकार है–

(१) सचित्त द्रव्यो (पुष्प, पान आदि) का त्याग।

(२) अचित्त द्रव्यो (वस्त्र, आभूषण आदि) पास में रखना/व्यवस्थित करना।

(३) एक शाटिका (दुपट्टा) का उत्तरासग करना।

(४) गुरु पर दृष्टि पडते ही दोनो हाथ जोडना।

(५) मन को गुरु पर एकाग्र करना।

Elaboration—In this aphorism, there is a mention of the departure of king Pradeshi with his family and the army to listen the spiritual discourse of Keshi Kumar Shraman. For detailed study, it is mentioned that one should see the detailed description of king Kaunik going to Bhagavan Mahavir to listen the spiritual discourse. In Aup-patik Sutra, there is a detailed interesting account of the journey of king Kaunik to have darshan of Bhagavan Mahavir. In brief it is as under—

King Kaunik felt very happy to learn about the arrival of Bhagavan Mahavir in Champa city. He ordered that Champa should be decorated like a bride He asked the army chief to prepare army, elephants and others for going to Mahavir in a convoy. He took his bath and got ready with members of his family. He sat on the royal elephant and the queens and family members sat in chariots.

In this journey, the eight auspicious symbols are kept ahead of all. Thereafter there are auspicious pitchers, the water pots, the umbrella, the chawari, the flags in respective order. Well trained horsemen are on 108 properly decorated horses, followed by 108 elephants, 108 chariots with umbrellas and thousands soldiers on foot fully armed. Thus with four army wings going ahead, king Kaunik was on the elephant of coronation. Horsemen were ahead of king Kaunik, armed soldiers riding the elephants were on his two sides and behind him were moving hundreds of chariots. Thereafter were the ministers, city guards, government officials, noblemen, traders and citizens. Musicians were beating the drum, playing the flute and other musical instruments. Thus thousands of people in a procession and in a fit of extreme joy were passing through Champa city to Purnabhadra temple for paying their respects to Bhagavan Mahavir along with king Kaunik.

Although prosperity of king Kaunik was very great, king Pradeshi also goes with his wealth, army, family and thousands of residents (of Seyaviya) to Mrigavan garden to bow to Keshi Kumar Shraman and to honour him

The names of five abhigam (restraints, rules) have already been mentioned. They are as under—

(1) To discard living substance (flower, betel leaf).

(2) To keep non-living things with them properly (clothes, ornaments and suchlike)

(3) To cover upper part of the body with a cloth (Uttarasan)

(4) To fold the hands immediately on seeing the Master

(5) To concentrate the mind on the Master.

२७१. तए णं केसी कुमारसमणे पएसिस्स रण्णो सूरियकंतप्पमुहाणं देवीणं तीसे य महति महालियाए महच्चपरिसाए जाव धम्मं परिकहेइ।

तए णं से पएसी राया धम्मं सोच्चा निसम्म उट्ठाए उट्ठेति, केसिकुमारसमणं वंदइ नमंसइ जेणेव सेयविया नगरी तेणेव पहारेत्थ गमणाए।

२७१. धर्मसभा मे अपने-अपने स्थान पर बैठ जाने के पश्चात् केशीकुमार श्रमण ने प्रदेशी राजा, सूर्यकान्ता आदि रानियो और उस अति विशाल परिषद् को धर्मकथा सुनाई।

धर्मदेशना सुनकर प्रदेशी राजा अपने आसन से उठा एव केशीकुमार श्रमण को वदन-नमस्कार किया। वदन-नमस्कार करके सेयविया नगरी की ओर चलने के लिए उद्यत हुआ।

271. Keshi Kumar Shraman gave a religious discourse to king Pradeshi, queen Suryakanta, other queens and the large gathering after they had properly taken their seats in the religious assembly.

After listening the religious discourse king Pradeshi got up from his seat, and bowed and honoured Keshi Kumar Shraman. Thereafter, he got ready to go back to Seyaviya town.

केशीकुमार श्रमण का उद्बोधन

२७२. (क) तए णं केसी कुमारसमणे पएसिरायं एवं वयासी—

मा णं तुमं पएसी ! पुव्विं रमणिज्जे भवित्ता पच्छा अरमणिज्जे भवज्जासि, जहा से वणसंडे इ वा, णट्टसाला इ वा इक्खुवाडए इ वा, खलवाडए इ वा।

कहं णं भंते !

२७२. **(क)** प्रदेशी राजा को सेयविया नगरी की ओर चलने के लिए उद्यत देखकर केशीकुमार श्रमण ने प्रदेशी राजा को संबोधित कर कहा–

"राजन् ! जिस प्रकार वनखण्ड, नाट्यशाला, इक्षुवाड (गन्ने का खेत) अथवा खलवाड (खलिहान) पूर्व में रमणीय होकर पश्चात् अरमणीय (अशोभनीय) हो जाते है, उस प्रकार तुम पहले रमणीय (लोकप्रिय) होकर बाद मे अरमणीय मत हो जाना।"

प्रदेशी ने पूछा–"भदन्त ! वनखड आदि पूर्व मे रमणीय (मनोरम, सुन्दर) होकर बाद मे अरमणीय कैसे हो जाते है ? आपका क्या अभिप्राय है ?

WARNING OF KESHI KUMAR SHRAMAN

272. (a) Finding that king Pradeshi is getting ready to go back to Seyaviya town, Keshi Kumar Shraman told him—

"O King ! A forest-region, a theatre, a sugarcane field or a thrashing place looks bright initially but later on to gives a despiring (lonely) look. You are loveable (liked by the people popular) now Be cautious that you may not become unpopular later."

Pradeshi asked—"Reverend Sir ! Forest-region and others are beautiful and pleasant in the beginning but later on how do they become ugly ? What is your message with this example ?"

(ख) वणसंडे पत्तिए पुष्फिए फलिए हरियगरेरिज्जमाणे सिरीए अतीव अतीव उवसोभेमाणे चिट्ठइ, तया णं वणसंडे रमणिज्जे भवति। जया णं वणसंडे नो पत्तिए, नो पुप्फिए, नो फलिए, नो हरियगरेरिज्जमाणे, नो सिरीए अईव उवसोभेमाणे चिट्ठइ तया णं जुन्ने झडे परिसडिय पंडुपत्ते सुक्करुक्खे इव मिलायमाणे चिट्ठइ तया णं वणे नो रमणिज्जे भवति।

(ख) केशीकुमार श्रमण ने कहा–"प्रदेशी ! वनखड (उद्यान) जब तक हरे-भरे पत्तो, पुष्पों, फलों से सम्पन्न और सुहावनी सघन छाया एवं हरियाली से युक्त होता है तब तक अपनी शोभा से सुशोभित होता हुआ रमणीय लगता है। उसे देखकर सबका मन प्रसन्न होता है। लेकिन वही वनखड जब पत्तों, फूलों, फलो और हरियाली से रहित हो जाता है तब हरा-भरा, देदीप्यमान न होकर कुरूप, भयावना दिखने लगता है। सूखे वृक्षों की छाल-पत्ते

आदि के जीर्ण-शीर्ण हो जाने, झर जाने, सड जाने, पीले और म्लान हो जाने से उसकी शोभा समाप्त हो जाती है और वह रमणीय नहीं रहता है।

(b) Keshi Kumar Shraman said—"Pradeshi ! The forest-region, the garden looks grand and pleasant when it is full of green leaves, blooming flowers, fruit and thick shade, when it is full of greenery. But when it is without leaves, flowers, fruit and green vegetation then it is not longer green or shining. It looks ugly and dreadful. Its grandeur comes to an end when the bark of the dry trees and their leaves become yellow, rotten, ugly and fall down. It no longer looks pleasant and worth enjoying.

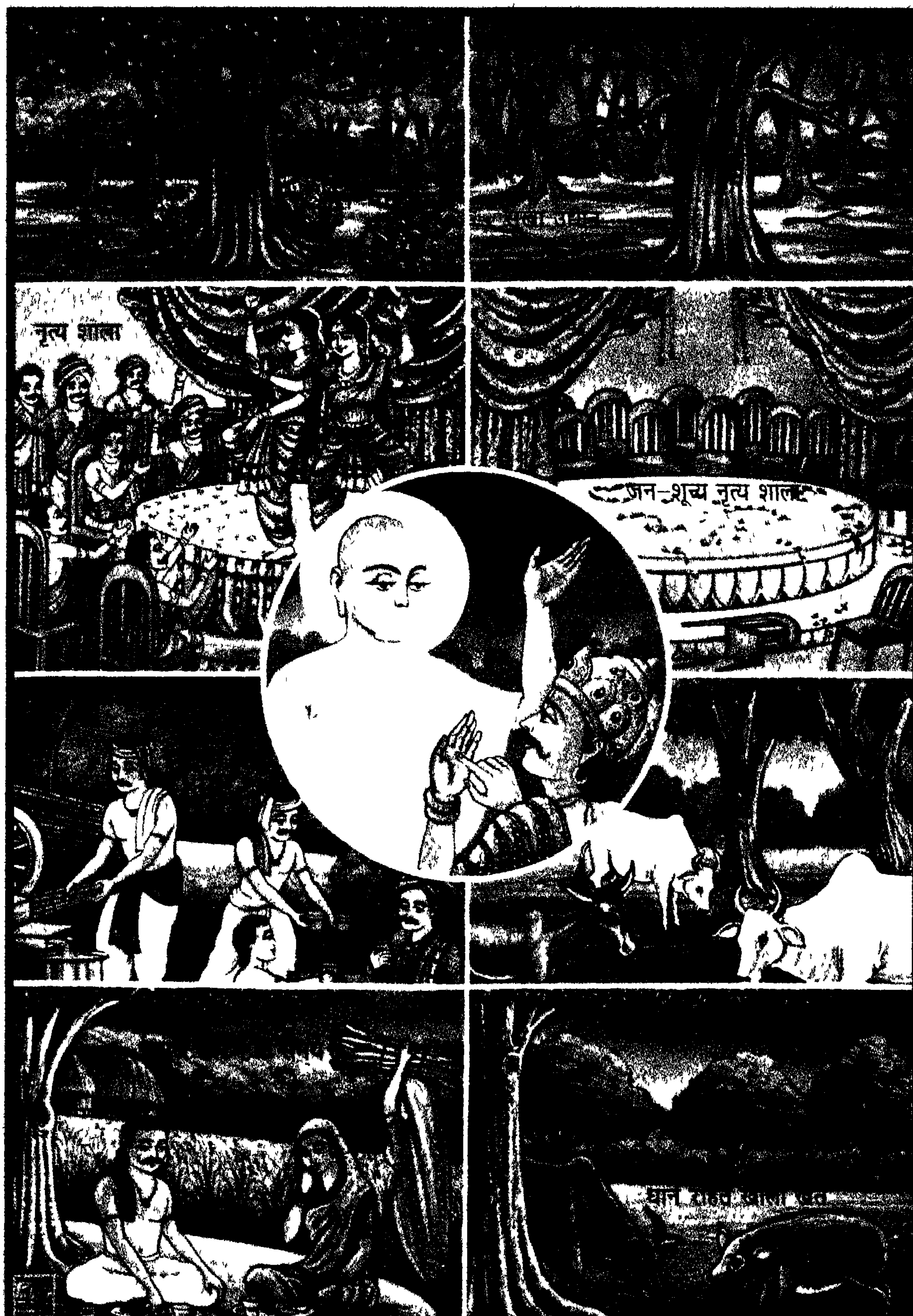
(ग) जया णं णट्टसाला वि गिज्जइ वाइज्जइ नच्चिज्जइ हसिज्जइ रमिज्जइ तया णं णट्टसाला रमणिज्जा भवइ, जया णं नट्टसाला णो गिज्जइ जाव णो रमिज्जइ तया णं णट्टसाला अरमणिज्जा भवति।

(ग) इसी प्रकार नाट्यशाला में भी जब तक गीत गाये जा रहे है, बाजे बजते रहते है, नृत्य होते रहते हैं, लोगों के हास्य की ध्वनियाँ व्याप्त रहती हैं और विविध प्रकार की क्रीडाये होती रहती हैं तब तक नृत्यशाला रमणीय-सुहावनी लगती है। किन्तु जब उसी नृत्यशाला में गीत नही गाये जा रहे हों, क्रीडायें नहीं हो रही हों, जनशून्य हो गई हो, तब वही नृत्यशाला असुहावनी और डरावनी लगती है।

(c) Similarly when the songs are being sung, the music is being played, dances are being performed, the bubbles of laughter are spreading all over and various types of games and sports are in progress, that dramatic hall looks pleasant and worthy of enjoyment. But when there is no longer any music, there are no sports and it is without spectators, then the theatre (the dancing hall) presents an ugly look. It appears dreadful.

(घ) जया णं इक्खुवाडे छिज्जइ भिज्जइ सिज्जइ पिज्जइ दिज्जइ तया णं इक्खुवाडे रमणिज्जे भवइ, जया णं इक्खुवाडे णो छिज्जइ जाव तया इक्खुवाडे अरमणिज्जे भवइ।

(घ) जब तक इक्षुवाड-(ईख के खेत) में ईख कटती हों, टूटती हों, पेरी जाती हों, आते-जाते लोग उसका रस पीते हों, कोई इक्षु लेते-देते हों, तब तक वह इक्षुवाड बहुत सुहावना और रमणीय लगता है। किन्तु जब उसी इक्षुवाड में ईख न कटती हों, लोगों का आवागमन नहीं होता हो, तब वही मन को अरमणीय-अप्रिय, अनिष्टकर लगने लगता है।


नृत्य शाला
जन-शून्य नृत्य शाला

चित्र परिचय-१९

Illustration No. 19

रमणीय-अरमणीय

दृश्य १—उद्यान का उदाहरण

प्रश्नोत्तर करके प्रदेशी राजा सेयविया नगरी की तरफ जाने लगा तो केशीकुमार श्रमण ने कहा- "राजन् ! जिस प्रकार हरा-भरा फल-फूल छायायुक्त उद्यान देखकर पक्षी आदि का मन प्रसन्न होता है, किन्तु सूख जाने पर वही उद्यान भयावना, सुनसान, अरमणीय दीखने लगता है।"

दृश्य २—नृत्यशाला का उदाहरण

"जिस प्रकार नृत्यशाला मे सगीत, नृत्य, हास्य के वातावरण से वहाँ का दृश्य सुहावना, मनोहारी लगता है किन्तु वही नृत्यशाला जनशून्य हो जाने पर असुहावनी, डरावनी लगती है।'

दृश्य ३—इक्षु खेत का उदाहरण

"जिस प्रकार खेत मे ईख कटती हो, पेरी जाती हो, आते जाते लोग रस पीते हो, इक्षु खाते हो तब वहाँ का दृश्य रमणीय लगता है, किन्तु खेत कट जाने के बाद तो वहाँ केवल पशु चरते दिखाई देते है, तब वह बडा अप्रिय लगता है।

दृश्य ४—खलिहान का उदाहरण

"खेत मे फसल कटने के समय जगह जगह धान की ढेरियाँ लगी रहती है लोगो का आवागमन बना रहता है, वह खेत बहुत ही रमणीय प्रतीत होता है, किन्तु जब धान उठा लिया जाता है तब वही खेत खाली सुनसान से दीखते है।

उसी प्रकार तुम अपनी वर्तमान रमणीयता खोकर अरमणीय मत हो जाना। *सूत्र २७२ पृष्ठ ३९२-३९५*

ATTRACTION AND REPULSION

SCENE1—EXAMPLE OF A GARDEN

After the dialogue, when king Pradeshi was leaving for Seyaviya city, Keshi Kumar Shraman said—"O King ! Birds and other things are happy to look at a lush green garden loaded with fruits and flowers and having plenty of shade But when the same garden becomes dry and barren it looks oppressive, forlorn and repulsive "

SCENE 2—EXAMPLE OF AN AUDITORIUM

"An auditorium looks pleasant and attractive with an atmosphere enriched by music and dance But when abandoned by people the same dance hall appears to be fearsome and unpleasant "

SCENE 3—EXAMPLE OF A SUGAR-CANE FARM

"A sugar-cane farm lush with its crop looks attractive during the activities of harvesting extracting juice and visitors chewing sugar-cane and drinking juice However, it looks repulsive after the harvesting is complete and only cattle graze there "

SCENE 4—EXAMPLE OF A BARN

"During the harvesting season there are heaps of grain all around a barn People continue to frequent the barn and the farm appears very attractive However, once the stock of grains is moved the farm and barn look empty and desolate

Keeping this in view ensure that you do not loose your present attraction and turn repulsive "

—Sutra 272, pp 392 395

(d) When the sugarcane crop is being harvested, it is being crushed, the passers by enjoy its juice, the people are exchanging sugarcane, the sugarcane field looks very beautiful and pleasant. But when the crop is not being harvested, the people are not passing by that side, then it is no longer pleasant, enjoyable and auspicious.

(ङ) जया णं खलवाडे उच्छुब्भइ उडुइज्जइ मलइज्जइ मुणिज्जइ खज्जइ पिज्जइ दिज्जइ तया णं खलवाडे रमणिज्जे भवति जया णं खलवाडे नो उच्छुब्भइ जाव अरमणिज्जे भवति।

से तेणट्ठेणं पएसी ! एवं वुच्चइ मा णं तुमे पएसी ! पुव्विं रमणिज्जे भवित्ता पच्छा अरमणिज्जे भविज्जासि जहा वणसंडे इ वा।

(ङ) जब तक खेत के खलवाड–(खलिहान) मे धान्य के ढेर लगे रहते है, धान की उडावनी होती रहती है, धान्य का मर्दन (दाँय) होता रहता है, तिल आदि पेरे जाते हैं, लोग एक साथ मिलकर खाते-पीते, एक-दूसरे को देते-लेते हैं, तब तक वह रमणीय प्रतीत होता है। लेकिन जब धान्य के ढेर आदि नहीं रहते, किसी का आवागमन नही रहता, सूना खेत-खलिहान अरमणीय दिखने लगता है।

इसीलिए मैने यह कहा है कि हे प्रदेशी ! इन वनखंड, नाट्यशाला आदि की भाँति तुम भी पहले रमणीय होकर बाद में अरमणीय मत हो जाना।''

(e) When there are heaps of harvested crop in the field, the crop is being threshed, the til crop is being crushed, the people eat jointly and give similarly to others also, it looks very charming. But when there are no longer heaps of corn, nobody comes to that side. The barren field on threshing ground looks unpleasant.

O Pradeshi, due to these facts, I had cautioned you that like the already mentioned forest-region, the dancing hall and others you, who look grand and loveable now may not become unpleasant later."

विवेचन–प्रस्तुत सूत्र मे आया यह वाक्य–'**मा णं तुमं पएसी ! पुव्विं रमणिज्जे भवित्ता पच्छा अरमणिज्जे भवज्जासि**' बहुत ही अर्थपूर्ण है। टीकाकार आचार्य ने इसका आशय स्पष्ट करते हुए लिखा है–केशीकुमार श्रमण प्रदेशी राजा से यह कहना चाहते हैं कि राजन् ! जब तुम धर्मानुगामी नहीं थे, तब दूसरे लोगों को दान देते थे, बहुत लोगो का भरण-पोषण करते थे, तो दान देने की और लोक-सग्रह की यह प्रथा अब भी चालू रखना, बन्द मत कर देना। अर्थात् पूर्व में जैसे रमणीय-दानी थे उसी तरह अब भी रमणीय-दानी बने रहना किन्तु अरमणीय न होना। यदि अरमणीय हो जाओगे–संकुचित दृष्टि वाले हो

जाओगे तो इससे निर्ग्रन्थ प्रवचन की अपकीर्ति फैलेगी, धर्म का अपवाद होगा और हमे अन्तराय कर्म का बंध होगा।

क्योकि मनुष्य का यह स्वभाव जैसा बन गया है कि उसे जब कुछ नही करना होता है, तो अपनी कजूसी, आलसीपन और अक्षमता को छिपाने के लिए धर्म का व धर्मगुरुओ के उपदेश का बहाना लेने लगता है। जब किसी की सहायता करने का मन नही होता है तब कहता है–सब अपने–अपने कर्मों का फल भोगेंगे। मै क्या कर सकता हूँ। अथवा अपनी अज्ञता व अकर्मण्यता को छिपाने के लिए कहता है– **''आखिर तो जो होनहार है वही होगा। कोई किसी को बचा नहीं सकता, आदि।''**

लगता है केशीकुमार श्रमण भी इसी प्रकार की आशका को दूर करने के लिए राजा प्रदेशी से कहते है–''तुम अब व्रतधारी श्रावक बन गये हो, तो सर्व सामान्य जनता की भलाई, दान, सेवा आदि लोकोपकार के कामो से विरक्त मत हो जाना। आत्मध्यान के बहाने पुण्य कार्यों की उपेक्षा मत करना।'' यह एक बहुत गम्भीर और उद्देश्यपूर्ण सकेत है। प्रदेशी जैसा चतुर, नीतिज्ञ राजा इस संकेत को समझ जाता है।

Elaboration—In the present aphorism, the sentence, **'Maa nam tumam Payesi ! Puvvim ramanijje bhavitta pachha aramanijje bhavajjaasi'** is very important The commentator Acharya, clarifying the underlying idea has mentioned—Keshi Kumar Shraman wants to convey to king Pradeshi—"O king ! When you were not religious, you were giving in charity You were looking after many people. You maintain that practice of giving in charity and looking after the needy people Please do not stop this practice Just as you were earlier famous for charity and looking after public needs (Lok Sangrah), you continue it. Don't by shy in these matters In case you become unpopular in these matters, you hesitate in such affairs, it will bring bad name to the word of the detached (Nirgranth Pravachan). The religion shall be defamed and I shall collect obstructive karma.

It has become the habit of the man that when he does not want to do, he, in order to cover up his miserly nature, his lethargy and his poor capacity, he makes the pretext of religion and religious teachers. When he does not want to help anyone, he says that everyone reaps the fruit of his Karma and therefore what he can do. In other words in order to conceal his lack of true knowledge and nature of not doing (not helping) says—"Whatever is in fate, it is going to happen accordingly and that nobody can save anyone from it "

It appear that Keshi Kumar Shraman also in order to remove such doubt (fear) tells king Pradeshi—"You have now become a Shravak observing the vows of a householder. You do not withdraw yourself from

the project of welfare of the common man, the charity, the service and assistance to the public. Do not ignore works of goodwill on the pretext of self-meditation." It is a very important and mind-searching direction. King Pradeshi is intelligent and knows moral and ethical values. He understands this direction.

राजा प्रदेशी का आश्वासन

२७३. तए णं पएसी केसिं कुमारसमणं एवं वयासी–

णो खलु भंते ! अहं पुव्विं रमणिज्जे भवित्ता पच्छा अरमणिज्जे भविस्सामि, जहा वणसंडे इ वा जाव खलवाडे इ वा।

अहं णं सेयवियानगरीपमुक्खाइं सतगामसहस्साइं चत्तारि भागे करिस्सामि, एगं भागं बलवाहणस्स दलइस्सामि, एगं भागं कुट्ठागारे छुभिस्सामि, एगं भागं अंतेउरस्स दलइस्सामि, एगेणं भागेणं महतिमहलयं कूडागारसालं करिस्सामि, तत्थ णं बहूहिं पुरिसेहिं दिन्नभइभत्तवेयणेहिं विउलं असणं–पाणं–खाइमं–साइमं उवक्खडावेत्ता बहूणं समण–माहण–भिक्खुयाणं–पंथियपहियाणं परिभाएमाणे बहूहिं सीलव्वय–गुणवय–वेरमण–पच्चक्खाणपोसहोववासस्स जाव विहरिस्सामि त्ति कट्टु जामेव दिसिं पाउब्भूए तामेव तिसिं पडिगए।

२७३. तब प्रदेशी राजा ने केशीकुमार श्रमण से इस प्रकार निवेदन किया–

"भदन्त ! आप द्वारा दिये गये वनखड आदि के उदाहरणो से मै समझ गया हूँ कि पहले रमणीय होकर बाद में अरमणीय नही बनूँगा।

मैने यह विचार किया है कि अपनी सेयविया नगरी आदि सात हजार ग्रामो के चार विभाग करूँगा। उनमे से एक भाग राज्य की सुव्यवस्था और सरक्षण के लिए बल (सेना) और वाहन के लिए दूँगा, एक भाग प्रजा के पालन हेतु भण्डार में अन्न आदि के संग्रहण हेतु रखूँगा, एक भाग अंतःपुर (परिवार) के निर्वाह और रक्षा के लिए दूँगा और शेष एक भाग से एक विशाल कूटाकारशाला (सुरक्षित भण्डार–घर) बनवाऊँगा और फिर बहुत से पुरुषों को भोजन, वेतन और दैनिक मजदूरी पर नियुक्त कर प्रतिदिन विपुल मात्रा मे अशन, पान, खादिम, स्वादिम रूप चारो प्रकार का आहार बनवाकर अनेक श्रमणो, माहनो, भिक्षुओं, यात्रियों और पथिकों को देते हुए एवं शीलव्रत, गुणव्रत, विरमण, प्रत्याख्यान, पौषधोपवास आदि यावत् (तप द्वारा आत्मा को भावित करते हुए) अपना जीवन–यापन करूँगा।" ऐसा कहकर वह प्रदेशी राजा अपने नगर की तरफ चला गया।

ASSURANCE OF KING PRADESHI

273. Then king Pradeshi requested—

"Sir ! I have understood from the examples of forest-region and others mentioned by you that I should not become unpopular later, after being popular and loveable earlier.

I have decided that I shall make four divisions of (income from) seven thousand villages of my kingdom. I shall give the responsibility of one part to the army and the transport, one part shall be for collection and storage of food grains for the people, one part shall be for the family and internal security, and with the remaining one part I shall get constructed a huge well-secured store. I shall appoint many persons on food packets, on monthly salary and on daily wages. I shall get prepared foods, liquid, sweets and fragrant substance in large quantity and shall spend my life offering the said four types of Aahar (articles of consumption) to Shramans, Maahans, mendicants, travellers and passess-by and following my vows—substantive vows (Sheel Vrat) and qualitative vows (Guna Vrat), restraints, austerities and Paushadhopavas (remaining for 24 hours at one place observing religious practices without taking any food or water)." After saying so, king Pradeshi left for his town.

राजा प्रदेशी द्वारा कृत राज्य-व्यवस्था

२७४. तए णं से पएसी राया कल्लं जाव तेयसा जलंते सेयवियापामोक्खाइं सत्त गामसहस्साइं चत्तारि भाए करेइ। एगं भागं बलवाहणस्स दलइ जाव कूडागारसालं करेइ, तत्थ णं बहूहिं पुरिसेहिं जाव उवक्खडावेत्ता बहूणं समण जाव परिभाएमाणे विहरइ।

२७४. तत्पश्चात् प्रदेशी राजा ने अगले दिन प्रातःकाल तेजयुक्त सूर्य के प्रकाशित होने पर सेयविया नगरी आदि सात हजार ग्रामों के चार भाग किये अर्थात् उन ग्रामों से होने वाली आय के चार विभाग कर दिये। उनमें से एक भाग बल-वाहनों को दिया यावत् उपरोक्त कथन के अनुसार कूटाकारशाला का निर्माण कराया। वहाँ बहुत से वैतनिक पुरुषों को नियुक्त कर भोजन बनवाकर बहुत से आने-जाने वाले श्रमणों, ब्राह्मणों, पथिकों को दान देते हुए अपना समय धर्मध्यान में बिताने लगा।

274. Thereafter, king Pradeshi, on the following day in the morning, after sunrise made four divisions of the income of seven thousand villages of his state including that of his capital Seyaviya. He handed over (earmarked) one part to the army and transport and as above said got a big store constructed. He appointed many person there on salary (in cash or in kind). He got prepared food in large quantity and started distributing it to Shramans, brahmins and travellers in charity. He started spending his remaining time in religious study and meditation.

२७५. तए णं से पएसी राया समणोवासए जाए अभिगयजीवाजीवे. विहरइ।

जप्पभिइं च णं पएसी राया समणोवासए जाए तप्पभिइं च णं रज्जं च, रट्ठं च, बलं च, वाहणं च, कोट्ठागारं च, पुरं च, अंतेउरं च, जणवयं च, अणआढायमाणे यावि विहरइ।

२७५. प्रदेशी राजा अब श्रमणोपासक हो गया और जीव-अजीव आदि तत्त्वो का ज्ञाता होकर धार्मिक आचार-विचारपूर्वक जीवन व्यतीत करने लगा।

जब से वह प्रदेशी राजा श्रमणोपासक हुआ तब से राज्य, राष्ट्र, बल, वाहन, कोठार, पुर, अन्तःपुर और जनपद के प्रति अनुराग व आसक्ति से रहित होकर उदासीनभावपूर्वक रहने लगा।

275. Now king Pradeshi became a Shramanopasak. He gained knowledge of soul and matter, the distinction between the two. He started spending his life according to religious code of conduct.

Since the time king Pradeshi became a Shramanopasak, he became non-attached and observed a state of equanimity towards administrative matters, the state, the army, the transport, the treasure, the palace (the home affairs) and the people.

सूर्यकान्ता रानी का षड्यंत्र

२७६. (क) तए णं तीसे सूरियकंताए देवीए इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—जप्पभिइं च णं पएसी राया समणोवासए जाए तप्पभिइं च णं रज्जं च रट्ठं च जाव अंतेउरं च ममं जणवयं च अणाढायमाणे विहरइ। तं सेयं खलु मे पएसिं रायं

केणवि सत्थप्पओएण वा अग्गिप्पओएण वा मंतप्पओगेण वा विसप्पओगेण वा उद्दवेत्ता सूरियकंतं कुमारं रज्जे ठवित्ता सयमेव रज्जसिरिं कारेमाणीए पालेमाणीए विहरित्तए त्ति कट्टु।

एवं संपेहेइ, संपेहित्ता सूरियकंतं कुमारं सद्दावेइ, सद्दावित्ता एवं वयासी–

२७६. **(क)** [राजा प्रदेशी को राज्य, परिवार और अपनी रानी आदि के प्रति उदासीन अनुरागरहित देखकर] सूर्यकान्ता रानी के मन में यह विचार उत्पन्न हुआ कि 'जब से राजा प्रदेशी श्रमणोपासक हुआ है, उसी दिन से राज्य, राष्ट्र यावत् अन्तःपुर (रानी, पुत्र, परिवार आदि) जनपद और मुझसे विमुख हो गया है, विरक्त रहने लगा है। अतः मुझे यही उचित है कि अब किसी शस्त्र-प्रयोग, अग्नि-प्रयोग, मत्र-प्रयोग अथवा विष-प्रयोग द्वारा प्रदेशी राजा को मारकर सूर्यकान्तकुमार को राज्य पर आसीन करके अर्थात् राजा बनाकर स्वयं राज्यलक्ष्मी का भोग करती हुई, प्रजा का पालन करती हुई आनन्दपूर्वक रहूँ।' ऐसा उसने विचार किया।

विचार करके सूर्यकान्तकुमार को बुलाया और बुलाकर अपनी मनोभावना बताई–

CONSPIRACY OF QUEEN SURYAKANTA

276. (a) [Finding that king Pradeshi is non-attached towards administrative matters, the family, the queen and others] Queen Suryakana thought of a plan. She thought—'Since the time king Pradeshi has become a Shramanopasak, he has started ignoring the state, the administration and the family—the queen, the son, the people and me (queen Suryakanta). It is therefore, proper for me to kill him with a weapon, with fire, with some ominous mantra or with poison and to declare her son Suryakant as the king. Then she shall be able to enjoy regal pleasures and lead an ecstatic happy life properly looking after the people.'

After thinking in this manner, she called her son Suryakant and disclosed her plan to him—

(ख) जप्पभिइं च णं पएसी राया समणोवासए जाये तप्पभिइं च णं रज्जं च जाव अंतेउरं च णं जणवयं च माणुस्सए य कामभोगे अणाढायमाणए विहरइ, तं सेयं खलु तव पुत्ता ! पएसिं रायं केणइ सत्थप्पओगेण वा जाव उद्दवित्ता सयमेव रज्जसिरिं कारेमाणे पालेमाणे विहरित्तए।

तए णं सूरियकंते कुमारे सूरियकंताए देवीए एवं वुत्ते समाणे सूरियकंताए देवीए एयमट्ठं णो आढाइ नो परियाणाइ, तुसिणीए संचिट्ठइ।

(ख) "हे पुत्र ! जब से प्रदेशी राजा ने श्रमणोपासकधर्म स्वीकार कर लिया है, तभी से राज्य यावत् अन्तःपुर, जनपद और मनुष्य-जीवन सम्बन्धी कामभोगों की ओर से उदासीन और विरक्त रहने लगे हैं। इसलिए पुत्र ! तुम्हें यही श्रेयस्कर है कि शस्त्र-प्रयोग आदि किसी न किसी उपाय से प्रदेशी राजा को मारकर स्वय राज्यलक्ष्मी का भोग करो एवं प्रजा का पालन करते हुए अपना जीवन बिताओ।"

सूर्यकान्ता देवी के इस विचार को सुनकर सूर्यकान्तकुमार ने उसका बिलकुल आदर नही किया, उस पर ध्यान नहीं दिया किन्तु शान्त और मौन ही रहा।

(b) She said—"O Son ! Since the time king Pradeshi has become a Shramanopasak and accepted vows (of householder), he is indifferent and non-attached towards the affairs of the state upto family and the people He is ignoring even sensual pleasures and enjoyments. So, O Son ! It is in your benefit that you kill king Pradeshi with some weapon or any other thing and enjoy kingship yourself looking after the people "

Hearing these thoughts from his mother Suryakanta, he did not pay any attention to it. He did not support it and remained silent.

(ग) तए णं तीसे सूरिकंताए देवीए इमेयारूवे अज्झत्थिए जाव समुप्पज्जित्था—मा णं सूरियकंते कुमारे पएसिस्स रन्नो इमं रहस्सभेयं करिस्सइ त्ति कट्टु पएसिस्स रण्णो छिद्दाणि य मम्माणि य रहस्साणि य विवराणि य अंतराणि य पडिजागरमाणी पडिजागरमाणी विहरइ।

(ग) तब सूर्यकान्ता रानी के हृदय में इस प्रकार का और विकल्प (आशका) उत्पन्न हुआ कि 'कहीं ऐसा न हो कि सूर्यकान्तकुमार प्रदेशी राजा के सामने मेरे इस गुप्त रहस्य को प्रकट कर दे।' ऐसा सोचकर सूर्यकान्ता रानी प्रदेशी राजा को मारने के लिए उसके दोष (असावधानी) रूप छिद्रों को, आन्तरिक मर्मों को, रहस्यों (व्यक्तिगत आचार-विचार) को, एकान्त निर्जन स्थानों को और घात करने के लिए अनुकूल अवसर रूप अन्तरो को जानने की ताक में रहने लगी।

(c) Then queen Suryakanta thought to herself as a doubt arose in her mind that 'Suryakant may not disclose her secret plan to

king Pradeshi.' With these intentions, queen Suryakanta started noticing carefully the mistakes of king Pradeshi, his careless activity any of his secrets, his solitary places (of stay) and the opportunity in order to kill him.

२७७. तए णं सूरियकंता देवी अन्नया कयाइ पएसिस्स रण्णो अंतरं जाणइ, असणं जाव खाइमं सव्वं वत्थ-गंध-मल्लालंकारं विसप्पजोगं पउंजइ।

पएसिस्स रण्णो ण्हायस्स जाव पायच्छित्तस्स सुहासणवरगयस्स तं विससंजुत्तं असणं वत्थं जाव अलंकारं निसिरेइ, घातइ।

तए णं तस्स पएसिस्स रण्णो तं विससंजुत्तं असणं आहारेमाणस्स सरीरगंमि वेयणा पाउब्भूया उज्जला विपुला पगाढा कक्कसा कडुया फरुसा निट्ठुरा चंडा तिव्वा दुक्खा दुग्गा दुरहियासा पित्तजरपरिगयसरीरे दाहवक्कंतिया वि विहरइ।

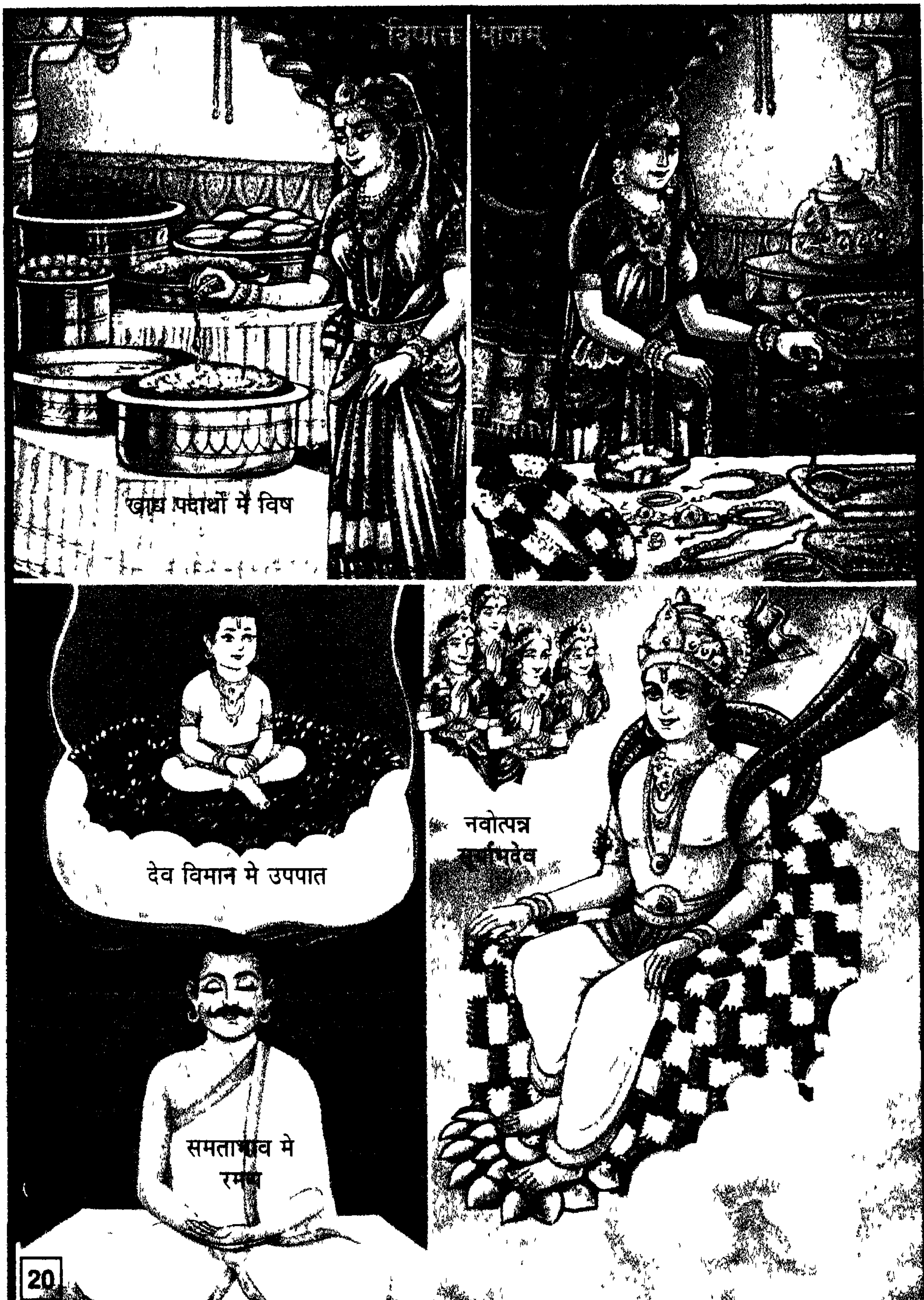
२७७. किसी एक दिन योजना के अनुकूल अवसर मिलने पर सूर्यकान्ता रानी ने प्रदेशी राजा को मारने के लिए अशन, पान आदि भोजन मे तथा शरीर पर धारण करने योग्य सभी वस्त्रों में, सूँघने योग्य सुगधित वस्तुओ मे, पुष्पमालाओं और आभूषणो मे विष डालकर उन्हें जहरीला कर दिया।

जब वह प्रदेशी राजा स्नान यावत् मंगल प्रायश्चित्त करके भोजन करने के लिए श्रेष्ठ आसन पर बैठा तब वह विष मिश्रित घातक अशन आदि रूप आहार परोसा तथा विषमय वस्त्र पहनने को दिये तथा विषमय अलकार पहनने को दिये जिनसे उसने अपने को अलंकृत कर लिया।

वह विष मिश्रित आहार खाने से प्रदेशी राजा के शरीर मे तत्काल उत्कट, भयकर, प्रचुर, प्रगाढ (गहरी भीतर तक), कर्कश (सहने में कठिन), कटुक, परुष-निष्ठुर, रौद्र, दुःखद, विकट और दुस्सह वेदना उत्पन्न हुई। विषम पित्तज्वर से सारे शरीर में जलन और तीव्र दाह उत्पन्न हो गई।

277. One day, according to her plans, finding suitable occasion, queen Suryakanta added poison in food and liquids in order to kill king Pradeshi. She further poisoned all the clothes, the articles meant for his fragrance, the flower garlands and the ornaments meant for his use.

When king Pradeshi, after taking his bath and wearing auspicious symbols took his royal seat, she served him the poisoned


खाद्य पदार्थों में विष
देव विमान मे उपपात
नवोत्पन्न

चित्र परिचय-२०

Illustration No. 20

विषाक्त भोजन

दुष्ट वृत्ति धारण किये रानी सूर्यकान्ता ने सोचा-'मेरे षड्यंत्र का भडा फूटे इससे पहले ही विषयुक्त भोजन देकर राजा को खत्म कर देना चाहिए।' यह सोचकर उसने पारणे हेतु राजा के लिए बने भोजन मे तीव्र जहर मिला दिया। राजा के वस्त्र, आभूषण, मुकुट एव फूल माला मे भी तीव्र जहरीला पदार्थ मिला दिया। अनजान राजा ने जैसे ही भोजन ग्रहण किया उसके शरीर मे तीव्र वेदना और दाह उत्पन्न हो गया। उसने समझ लिया- मुझे भोजन मे जहर दिया गया है, किन्तु फिर भी किसी पर द्वेष नही किया, शरीर की ममता से मुक्त रहकर समभावो मे रमण करते हुए परम शान्तिपूर्वक शरीर त्यागकर वह सौधर्म देवलोक की पुष्प-शय्या मे उत्पन्न हुआ। वहाँ सूर्याभदेव बना। देव-देवियो ने नवोत्पन्न देव का अभिनन्दन किया।

-सूत्र २७७ २७८, पृष्ठ ४०२-४०५

POISONOUS FOOD

With evil intent queen Suryakanta thought—'Lest my conspiracy gets exposed, I should kill the king by feeding him poisonous food, With these thoughts she mixed a deadly poison in the food cooked for the king's breakfast As soon as the ignorant king ate the food he suffered acute pain and burning sensation He understood that he has been poisoned In spite of this he had no feeling of aversion for anyone He abandoned all attachment for his body and dwelt in equanimous thoughts He abandoned his earthly body in extreme peace and reincarnated as Suryabh Dev in the flower bed in the Saudharm heaven The gods and goddesses greeted the newborn god

—Sutras 277-278, pp 402-405

food and gave him the poisoned clothes to wear and poisoned ornaments to put on. King Pradeshi wore those clothes and ornaments.

Due to poisoned food, at once there appeared deep, unbearable, extreme, frightening, harsh, ferocious, cruel, increasing pain. Due to severe bilious fever, he felt burning and heat-producing sensation throughout in his body.

राजा प्रदेशी का संलेखनामरण

२७८. तए णं से पएसी राया सूरियकंताए देवीए अत्ताणं संपलद्धं जाणित्ता सूरियकंताए देवीए मणसावि अप्पदुस्समाणे जेणेव पोसहसाला तेणेव उवागच्छइ, पोसहसालं पमज्जइ, उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेइ, दब्भसंथारगं संथरेइ, दब्भसंथारगं दुरूहइ, पुरत्थाभिमुहे संपलियंकनिसन्ने करयलपरिग्गहियं सिरसावत्तं अंजलिं मत्थए त्ति कट्टु एवं वयासी–

नमोऽत्थु णं अरहंताणं जाव संपत्ताणं। नमोऽत्थु णं केसिस्स कुमारसमणस्स मम धम्मोवदेसगस्स धम्मायरियस्स, वंदामि णं भगवंतं तत्थ गयं इह गए, पासउ मे भगवं तत्थ गए इह गयं ति कट्टु वंदइ नमंसइ।

पुव्विं पि णं मए केसिस्स कुमारसमणस्स अंतिए थूलपाणाइवाए पच्चक्खाए जाव परिग्गहे, तं इयाणिं पि णं तस्सेव भगवतो अंतिए सव्वं पाणाइवायं पच्चक्खामि जाव परिग्गहं, सव्वं कोहं जाव मिच्छादंसणसल्लं, अकरणिज्जं जोयं पच्चक्खामि, सव्वं असणं चउव्विहं पि आहारं जावज्जीवाए पच्चक्खामि।

जं पि य मे सरीरं इट्ठं जाव फुसंतु त्ति एयं पि य णं चरिमेहिं ऊसासनिस्सासेहिं वोसिरामि।

त्ति कट्टु आलोइयपडिक्कंते समाहिपत्ते कालमासे कालं किच्चा सोहम्मे कप्पे सूरियाभे विमाणे उववायसभाए जाव वण्णओ।

२७८. प्रदेशी राजा ने सूर्यकान्ता देवी के इस उत्पात–(षड्यंत्र, धोखे) को तुरन्त जान लिया। किन्तु फिर भी रानी के प्रति मन में लेशमात्र भी द्वेष–रोष नहीं आया। (अपनी मृत्यु निकट जानकर) अत्यन्त शान्तभाव से जहाँ पौषधशाला थी, वहाँ आया। आकर पौषधशाला की प्रमार्जना की। उच्चार–प्रस्रवण भूमि का प्रतिलेखन किया। फिर दर्भ का संथारा बिछाया

और उस पर आसीन हुआ। आसीन होकर पूर्व दिशा की ओर मुख करके पर्यंकासन (पद्मासन) से बैठा, फिर दोनों हाथ जोड आवर्त्तपूर्वक मस्तक पर अंजलि करके इस प्रकार बोला–

''अरिहंतों यावत् सिद्धगति को प्राप्त भगवन्तों को नमस्कार हो। मेरे धर्माचार्य और धर्मोपदेशक केशीकुमार श्रमण को नमस्कार हो। यहाँ रहा हुआ मैं वहाँ विराजमान भगवान की वन्दना करता हूँ। वहाँ पर विराजमान वे भगवान यहाँ रहकर वन्दना करते हुए मुझे देखें।

पहले भी मैने केशीकुमार श्रमण के समक्ष स्थूल प्राणातिपात यावत् स्थूल परिग्रह का प्रत्याख्यान किया है। अब इस समय भी मैं उन्हीं भगवन्तों की साक्षी से (यावज्जीवन के लिए) सम्पूर्ण प्राणातिपात यावत् समस्त परिग्रह, क्रोध यावत् मिथ्यादर्शनशल्य रूप अठारह पापस्थानो का प्रत्याख्यान करता हूँ। समस्त अकरणीय पाप कार्यों एव (अशुभ) मन-वचन-काय योग का प्रत्याख्यान करता हूँ और जीवन-पर्यंत के लिए सभी अशन, पान आदि चारो प्रकार के आहार का भी त्याग करता हूँ।

यद्यपि आज तक मुझे यह शरीर प्रिय रहा है, मैंने यह ध्यान रखा है कि इसमें कोई रोग आदि उत्पन्न न हों परन्तु अब अन्तिम श्वासोच्छ्वास (मृत्यु) तक के लिए इस शरीर का भी परित्याग करता हूँ।''

इस प्रकार के निश्चय के साथ पुनः आलोचना और प्रतिक्रमण करके समाधिपूर्वक स्थित हुआ। कुछ समय पश्चात् मरण प्राप्त होने पर काल करके सौधर्मकल्प के सूर्याभ विमान की उपपात सभा में सूर्याभदेव के रूप में उत्पन्न हुआ। इत्यादि पूर्व में किया गया समस्त वर्णन यहाँ जानना चाहिए। सूर्याभदेव का यह पूर्वभव भगवान महावीर ने गौतम स्वामी को बताया।

SAMLEKHANA AND DEATH OF KING PRADESHI

278. King Pradeshı soon understood the foul play of queen Suryakanta But even then he did not have in his mind even the slightest anger towards her. (Knowing that his death is very near) he came to the Paushadhshala (place for observing Paushadh and fastıng) in an extremely quiet manner. He cleaned it carefully. He also properly inspected the place for call of nature. He then spread the straw bedding and sat on it facing east with legs crossed. He then folded his hands, placed them near the forehead and then moved them in a circle and said—

"I bow to Arihantas upto all those who have reached (the Siddha state) the liberated state. I bow to Keshi Kumar Shraman my master and guide in dharma staying here, I bow to the perfect souls existing in zone of liberated souls. Let the Bhagavan from there see me bowing to him from here.

Earlier also I have taken the vow of discarding gross violence upto gross attachment from Keshi Kumar Shraman. Now again, remembering and feeling presence of him, I take vow of restraining from all violence (hurting the life-force of any person) upto all attachment, the eighteen sins namely anger upto wrong belief throughout my life. I restrain myself from all worthless acts in the category of sin and evil mind, word and deed for my entire life-period. I also discard all the four types of food from now onwards till my death.

Although I have loved my body uptil today, I have taken proper care to ensure that it does not get any disease, but from today I discard attachment of my body till my last breath."

After deciding in this manner, he again made full and voluntary confession (Aalochana) and self-analysis and repentance for faults (Pratikraman) and then adopted a state of equanimity. After some time he died and then he was re-born as Suryabh Dev in Upapat Sabha (chamber of birth) of Suryabh Viman in Saudharma kalp (the name of first heaven). The entire description earlier mentioned (of Suryabh Viman) may be considered here. The earlier life of Suryabh Dev was thus narrated by Bhagavan Mahavir to Gautam Swami.

(3) दृढ़प्रतिज्ञकुमार
(3) DRIDH PRATIJNA KUMAR

सूर्याभदेव का भावी जन्म

२७९. (क) तए णं से सूरियाभे देवे अहुणोववन्नए चेव समाणे पंचविहाए पज्जत्तीए पज्जत्तिभावं गच्छति, तं.–१. आहारपज्जत्तीए, २. सरीरपज्जत्तीए, ३. इंदियपज्जत्तीए, ४. आण–पाणपज्जत्तीए, ५. भास–मणपज्जत्तीए।

तं एवं खलु भो ! सूरियाभेणं देवेणं दिव्वा देविड्ढी दिव्वा देवजुती दिव्वे देवाणुभावे लद्धे पत्ते अभिसमन्नागए।

सूरियाभस्स णं भंते ! देवस्स केवतियं कालं ठिती पण्णत्ता ?

गोयमा ! चत्तारि पलिओवमाइं ठिइ पण्णत्ता।

२७९. **(क)** (सूर्याभ विमान की उपपात सभा में) तत्काल उत्पन्न हुआ वह सूर्याभदेव पाँच पर्याप्तियो से पूर्ण हुआ। वे पर्याप्तियाँ इस प्रकार हैं–(१) आहारपर्याप्ति, (२) शरीरपर्याप्ति, (३) इन्द्रियपर्याप्ति, (४) श्वासोच्छ्वासपर्याप्ति, (५) भाषा-मन पर्याप्ति। (पर्याप्ति के विषय मे विशेष वर्णन सूत्र १८६ के विवेचन में देखें।)

"हे गौतम ! इस प्रकार उस सूर्याभदेव ने यह दिव्य देवऋद्धि, दिव्य देवद्युति और दिव्य देवानुभाव–देवप्रभाव उपार्जित किया है, प्राप्त किया है और अधिगत–स्वाधीन किया है।"

गौतम ने पूछा–"भदन्त ! उस सूर्याभदेव की आयुष्य स्थिति कितने काल की है ?"

भगवान ने उत्तर दिया–"गौतम ! उसकी आयुष्य स्थिति चार पल्योपम की है।"

THE NEXT LIFE OF SURYABH DEV

279. (a) The newly born Suryabh Dev completed five Paryapties (completion of energies). They are as under—(1) Aahar Paryapti (completion of initial stage), (2) Shareer Paryapti (completion of body), (3) Indriya Paryapti (development of sense-organs), (4) Shvasochhvas Paryapti (development of inhaling and exhaling of breath), (5) Bhasha-Manah Paryapti (development of skill of speaking and of mind). (For detailed description see aphorism 186.)

"O Gautam ! Thus Suryabh Dev got unique celestial wealth, unique godly brightness and unique heavenly influence."

Gautam asked—"Bhagavan ! What is the total life-span of Suryabh Dev ?"

Bhagavan Mahavir replied—"Gautam ! His life-span is four palyopam."

(ख) से णं सूरियाभे देवे ताओ लोगाओ आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं अणंतरं चयं चइत्ता कहिं गमिहिति कहिं उववज्जिहिति ?

गोयमा ! महाविदेहे वासे जाणि इमाणि कुलाणि भवंति, तं.—अड्ढाइं दित्ताइं विउलाइं विच्छिण्णविपुलभवण—सयणासण—जाण—वाहणाइं बहुधण बहुजातरूव—रययाइं आओग—पओगसंपउत्ताइं विच्छड्डियपइरभत्तपाणाइं बहुदासी—दास—गो—महिस—गवेलगप्पभूयाइं बहुजणस्स अपरिभूयाइं, तत्थ अन्नयरेसु कुलेसु पुत्तत्ताए पच्चाइस्सइ।

(ख) गौतम—"भगवन् ! आयुष्य और भवस्थिति पूर्ण होने एवं स्थिति क्षय होने के पश्चात् वह सूर्याभदेव उस देवलोक से च्यवन करके कहाँ जायेगा, कहाँ उत्पन्न होगा ?"

भगवान—"गौतम ! महाविदेह क्षेत्र मे जो कुल आढ्य—धन—धान्य से समृद्ध है, दीप्त—प्रभावशाली हैं, विपुल—बडे कुटुम्ब वाले भरे-पूरे परिवार वाले हैं, बहुत से भवनों, शय्याओं, आसनों और यानवाहनों के स्वामी हैं, बहुत से धन, सोने—चाँदी के अधिपति हैं, अर्थोपार्जन के व्यापार—व्यवसाय में लगे हुए हैं एव जिनके यहाँ से दीन—अनाथ जनों को प्रचुर मात्रा में भोजन—पान प्राप्त है, जिनके पास सेवा करने के लिए बहुत से दास—दासी रहते हैं, गाय, भैस, भेड आदि अनेक प्रकार का विपुल पशुधन है और जिनका बहुत से लोगों द्वारा भी पराभव—तिरस्कार नहीं किया जा सकता ऐसे समर्थ है। उन प्रसिद्ध सम्पन्न कुलों में से किसी एक कुल में वह पुत्ररूप में उत्पन्न होगा।"

(b) Gautam asked—"Reverend Sir ! After completing his life-span and godly state, where shall that Suryabh Dev be re-born ?"

Bhagavan replied—"Gautam ! In Mahavidheh area there are many families which are prosperous **(Aadhya)**, influential **(Deepta)**, large—having many members, many buildings, many beds, many seats and many vehicles. They own great wealth, gold and silver. They are engaged in trade and business. They have many servants both male and female. The poor and orphans get

foods and liquids in sufficient quantity from them (for consumption). They have many types of milch cattle including cows, buffaloes, sheep and others. Many people even collectively are not in a position to ignore them. In one of such famous and prosperous families, the soul of Suryabh Dev shall be re-born as a son."

माता–पिता द्वारा जन्मादि संस्कार

२८०. (क) तए णं तंसि दारगंसि गब्भगयंसि चेव समाणंसि अम्मापिऊणं धम्मे दढा पइण्णा भविस्सइ।

तए णं तस्स दारयस्स नवण्हं मासाणं बहुपडिपुन्नाणं अद्धट्ठमाणं राइंदियाणं वितिक्कंताणं सुकुमालपाणिपायं अहीण–पडिपुण्ण–पंचिंदियसरीरं लक्खणवंजणगुणोववेयं माणुम्माण–पमाणपडिपुन्नसुजायसव्वंगसुदरंगं ससिसोमाकारं कंतं पियदंसणं सुरूवं दारयं पयाहिसि।

२८०. (क) वहाँ पर उस दारक (बालक) के गर्भ मे आने पर माता–पिता की धर्म में दृढ प्रतिज्ञा–(श्रद्धा) होगी।

गर्भ के नौ मास और साढे सात रात–दिन पूर्ण होने पर दारक की माता सुकुमार हाथ–पैर वाले, शुभ लक्षणो एव परिपूर्ण पाँच इन्द्रियों और शरीर वाले, सामुद्रिक शास्त्र में बताये गये शारीरिक शुभ लक्षणो (कमल, मत्स्य, स्वस्तिक आदि के चिन्ह) तिल, मेष आदि व्यंजनों; उदारता, धीरता आदि गुणो से युक्त, माप, तोल (वजन) और नाप (ऊँचाई) मे बराबर, सुजात, सर्वांग सुन्दर, चन्द्रमा के समान सौम्य आकार वाले, कमनीय, प्रियदर्शन एव सुरूपवान् पुत्र को जन्म देगी।

CEREMONY AT THE BIRTH BY PARENTS

280. (a) When that child shall enter the womb of his mother, the parents will develop strong faith in the religion.

After completion of nine months seven and a half days, the mother shall give birth to a son. He shall be having soft hand and feet, auspicious signs, complete five sense-organs, proper structure, good signs as mentioned in astrology, auspicious marks on his body like those of til, lotus, fish, swastik and others. He shall be broad-minded, courageous and suchlike good qualities. He shall have proper structure, weight and height. All the parts of his body shall

be in proper proportion and beautiful. His face shall be like the moon. He shall be good-looking loveable and handsome.

(ख) तए णं तस्स दारयस्स अम्मापियरो पढमे दिवसे ठितिवडियं करेहिंति. ततियदिवसे चंदसूर–दंसणिगं करिस्संति, छट्ठे दिवसे जागरियं जागरिस्संति, एक्कारसमे दिवसे वीइक्कंते संपत्ते बारसाहे दिवसे णिव्वित्ते असुइजायकम्मकरणे चोक्खे संमज्जिओवलित्ते विउलं असण–पाण–खाइम–साइमं उवक्खडावेस्संति, मित्त–णाइ–णियग–सयण–संबंधिपरिजणं आमंतेत्ता तओ पच्छा ण्हाया कायबलिकम्मा जाव अलंकिया भोयणमंडवंसि सुहासणवरगया ते मित्तणाइ–जाव परिजणेण सद्धिं विउलं असणं आसाएमाणा विसाएमाणा परिभुंजेमाणा परिभाएमाणा एवं चेव णं विहरिस्संति। जिमियभुत्तुत्तरागया वि य णं समाणा आयंता चोक्खा परमसुइभूया तं मित्तणाइ–जाव परिजणं विउलेणं वत्थगंध–मल्लालंकारेणं सक्कारेस्संति सम्माणिस्संति तस्सेव मित्त–जाव–परिजणस्स पुरतो एवं वइस्संति–

(ख) तब उस दारक के माता-पिता प्रथम दिवस स्थितिपतिता-(कुल-परंपरागत विधि क्रियाओ से पुत्र का जन्मोत्सव) करेगे। तीसरे दिन चन्द्र और सूर्य-दर्शन करेगे। छठे दिन रात्रि-जागरण करेगे। ग्यारह दिन बीतने के बाद बारहवें दिन जातकर्म सम्बन्धी अशुचि की निवृत्ति के लिए घर झाड-बुहार और लीप-पोतकर शुद्ध करेंगे। घर की शुद्धि करने के बाद अशन, पान, खाद्य, स्वाद्य रूप विपुल भोजन-सामग्री बनवायेंगे और मित्रजनो, ज्ञातिजनों, निजजनो, स्वजन-सम्बन्धियों एव दास-दासी आदि परिजनों, परिचितो को आमन्त्रित करेगे। इसके बाद स्नान, बलिकर्म, कपाल पर कुंकु, तिलक, काली बिंदी आदि रूप कौतुक-मगल-प्रायश्चित्त करके आभूषणों से शरीर को अलकृत करेगे। भोजनमंडप में श्रेष्ठ आसनो पर सुखपूर्वक बैठकर मित्रों यावत् परिजनों के साथ विपुल अशनादि रूप भोजन का आस्वादन करेंगे, उसका परिभोग करेंगे, एक-दूसरे को मनुहार करके परोसेंगे और भोजन करने के पश्चात् आचमन-कुल्ला आदि करके स्वच्छ, परम शुचिभूत होकर उन मित्रों, ज्ञातिजनों यावत् परिजनो का वस्त्र, गध (सुगंधित द्रव्य), माला, अलकारो आदि से सत्कार-सम्मान करेंगे और फिर उन्ही मित्रो यावत् परिजनों के समक्ष इस प्रकार कहेगे-

(b) On the first day, his parents shall celebrate his birth according to the customary method prevailing in their families. On the third day, they will show him the sun and the moon. On the sixth day, they will remain awake throughout the night (in celebration). After the eleventh day, they will make the house clean

with broom and plaster it with cow-dung so as to remove impurity caused by child-birth. Thereafter they shall get prepared food, liquids, sweets, fragrant material in large quantity. They shall then invite friends, relatives, members of their brotherhood, distant relations, servants, employees and acquaintances. Thereafter they shall take bath, decorate themselves with auspicious symbols, forehead mark and ornaments. They shall then take their meals in the dining hall in the company of friends, relations including all the invitees. They shall offer items of consumption to each other. After taking the food and cleaning the mouth and becoming spotless, they shall give clothes, fragrant, substances, garlands, decorations to the friends, relatives and the invitees as a taken of respect. Thereafter, they shall address them as under—

(ग) जम्हा णं देवाणुप्पिया ! इमंसि दारगंसि गब्भगयंसि चेव समाणंसि धम्मे दढा पइण्णा जाया, तं होउ णं अम्हं एयस्स दारयस्स दढपइण्णे णामेणं। तए णं तस्स दढपइण्णस्स दारगस्स अम्मापियरो नामधेज्जं करिस्संति–दढपइण्णो य दढपइण्णो य।

तए णं तस्स अम्मापियरो आणुपुव्वेणं ठितिवडियं च चंदसूरियदरिसणं च धम्मजागरियं च नामधिज्जकरणं च पजेमणगं च पडिवद्धावणगं च पचंकमणगं च कन्नवेहणं च संवच्छरपडिलेहणगं च चूलोवणयं च अन्नाणि य बहूणि गब्भाहाण–जम्मणाइयाइं महया इड्डीसक्कारसमुदएणं करिस्संति।

(ग) देवानुप्रियो ! जब से यह दारक माता की कुक्षि मे गर्भरूप से आया था तभी से हमारी धर्म मे दृढ श्रद्धा, प्रतिज्ञा हुई है, धर्म के प्रति प्रीति और रुचि बढी है, इसलिए हमारे इस बालक का नाम 'दृढप्रतिज्ञ' हो। इस तरह उस दारक के माता-पिता **'दृढ़प्रतिज्ञ'** नामकरण करेंगे।

इस प्रकार से उसके माता-पिता अनुक्रम से (१) स्थितिपतिता, (२) चन्द्र-सूर्यदर्शन, (३) धर्म-जागरण, (४) नामकरण, (५) अन्नप्राशन (अन्न चटाना), (६) प्रतिवर्धापन (आशीर्वाद समारोह), (७) प्रचंक्रमण (पैरो चलना-डग भरना और शब्दोच्चारण करना), (८) कर्णवेधन (कान छेदना), (९) संवत्सर प्रतिलेख (प्रथम वर्ष का जन्मोत्सव-पहला जन्म-दिन), और (१०) चूलोपनयन (मुंडनोत्सव-झडूला उतारना) आदि। अन्य दूसरे भी बहुत से गर्भाधान, जन्म आदि से सम्बन्धित उत्सव अति भव्य समारोह के साथ करेंगे।

(c) O, the blessed ! Since the time this Jiva came in the womb of his mother, we have developed strong faith in religion. Our interest in it has increased, our love for it has developed. So we wish to call him as 'Dridh Pratijna'. Thus he shall be baptised as 'Dridh Pratijna'.

Thus his parents in the respective order shall hold the following celebration—(1) Sthiti-patita—The very child-birth, (2) Showing of moon and the sun, (3) Keeping awake throughout singing in devotion, (4) Baptising ceremony (Naamkaran), (5) Tasting of food (by the child), (6) Blessing ceremony, (7) Crowing of the child—taking steps and uttering words, (8) Piercing the ear, (9) First birthday (when he is of one year), (10) Shaving of head. Many other celebrations connected with child-birth shall also be performed.

दृढ़प्रतिज्ञ का लालन–पालन

२८१. तए णं दढपइण्णे दारगे पंचधाईपरिक्खित्ते–१. खीरधाईए, २. मंडणधाईए, ३. मज्जणधाईए, ४. अंकधाईए, ५. कीलावणधाईए अन्नाहि बहूहिं खुज्जाहिं, चिलाइयाहिं, वामणियाहिं, वडभियाहिं, बब्बराहिं बउसियाहिं, जोण्हियाहिं, पण्णवियाहिं, ईसिणियाहिं, वारुणियाहिं, लासियाहिं, लाउसियाहिं, दमिलीहिं, सिंहलीहिं, पुलिंदीहिं, आरबीहिं, पक्कणीहिं, बहलीहिं, मुरंडीहिं, सबरीहिं, पारसीहिं, णाणादेसी–विदेस–परिमंडियाहिं इंगिय–चिंतिय–पत्थिय–वियाणाहिं सदेसणेवत्थ–गहियवेसाहिं निउणकुसलाहिं विणीयाहिं चेडिया–चक्कवाल–तरुणिवंदपरियालपरिवुडे वरिसधरकंचुइ–महयरवंदपरिक्खित्ते हत्थाओ हत्थं साहरिज्जमाणे उवनचिज्जमाणे अंकाओ अंकं परिभुज्जमाणे उवगिज्जेमाणे उवलालिज्जमाणे उवगूहिज्जमाणे अवतासिज्जमाणे परियंदिज्जमाणे परिचुंबिज्जमाणे रम्मेसु मणिकोट्टिमतलेसु परंगमाणे गिरिकंदर–मल्लीणे विव चंपगवरपायवे णिव्वाघायंसि सुहंसुहेण परिवड्डिस्सइ।

२८१. उसके बाद वह 'दृढप्रतिज्ञ' बालक पाँच धायों के संरक्षण मे बढने लगेगा। जैसे–(१) **क्षीरधात्री**–दूध पिलाने वाली धाय, (२) **मंजनधात्री**–वस्त्राभूषण पहनाने वाली धाय, (३) **मज्जनधात्री**–स्नान कराने वाली धाय, (४) **अंकधात्री**–गोद में लेने वाली धाय, और (५) **क्रीड़ापनधात्री**–खेल खिलाने वाली धाय–इन पाँच धायमाताओं के अतिरिक्त अन्य अनेक दासियाँ उसका पालन–पोषण करने के लिए होंगी। जैसे–इंगित–(मुख आदि की चेष्टा को

समझने मे चतुर), **चिंतित**–(मानसिक विचार को पहचानने में), प्रार्थित **(अभिलषित)** को जानने में कुशल और दक्ष होगी। वे अपने–अपने देश के वेश को पहनने वाली, निपुण, कुशल–प्रवीण एवं प्रशिक्षित होंगी। उनमे कोई कुब्जा (कुबड़ी) होगी, कोई चिलातिका (चिलात–किरात नामक देश में उत्पन्न), वामनी (चीन), वडभी (बड़े पेट वाली), बर्बरी (बर्बर देश की), बकुश देश की, योनक (यवन) देश की, पल्हविका (पल्हव देश की), ईसिनिका, वारुणिका (वरुण देश की), लासिका (तिब्बत देश की), लाकुसिका (लकुस देश की), द्रावड़ी (द्रविड देश की), सिंहली (सिहल देश, लका की), पुलिदी (पुलिद देश की), आरबी (अरब देश की), पक्कणी (पक्कण देश की), बहली (बहल देश की), मुरण्डी (मुरंड देश की), शबरी (शबर देश की), पारसी (पारस देश की)। इस प्रकार अनेक देश–विदेशों की तरुण दासियाँ उसकी देखभाल करने के लिए रहेंगी तथा अनेक वर्षधरों (नपुसक बनाये हुए पुरुषों), कचुकियो और महत्तरकों (अन्त पुर के कार्य की चिन्ता रखने वालों) के समुदाय से वह दारक हर समय घिरा रहेगा। सेवा परिचर्या करने वाले उसे हाथो ही हाथों मे लेते दुलराते रहेंगे। एक गोद से दूसरी गोद मे लेते हुए, गा–गाकर बहलाते हुए, क्रीडा आदि के द्वारा लालन–पालन मनोरंजन करते हुए लाड किया करेंगे। लोरियाँ सुनाते रहेगे। स्नेह से चुम्बन लेते और रमणीय मणिजटित प्रागण मे चलाते रहेंगे। इस प्रकार वह दारग व्याघातरहित गिरि–गुफा में स्थित श्रेष्ठ चम्पक वृक्ष के समान सुरक्षित सुखपूर्वक दिनोदिन परिवर्धित होगा–बढेगा।

BRINGING UP OF DRIDH PRATIJNA

281. Thereafter child Dridh Pratijna, shall start growing in the charge of five nurses, namely—(1) nurse for providing milk **(Ksheer Dhatri)**, (2) nurse for dressing him up **(Majjan Dhatri)**, (3) nurse for giving him bath **(Snan Dhatri)**, (4) nurse for nursing him in her lap **(Ank Dhatri)**, and (5) nurse for playing with him **(Kreera Dhatri)**. In addition to the above five nurses, many maid-servants shall look after him. For instance, those trained in understanding facial expression of the child **(Ingit)**, those expert in knowing his mental attitude **(Chintit)** and those dext in knowing the inner desire **(Abhilashit)** of the child. They shall dress themselves in the usual dress of their country to which they belonged. They shall be intelligent and well trained. Some of them shall be of Kubja, some of Kirat, some dwarf of China, some with swollen belly (Vadabhi), some of Barbar, some of Bakush, some of Yonak, some of Palhavika, some of Eesinika, some of Varunika, some of Lasika, some of

Lakush, some of Dravidian area, some of Ceylon, some of Pulind, some of Arabian countries, some of Pakkan, some of Behal, some of Murand, some of Shabar, some of Persia. Thus young maids of many countries shall look after him. Further that child shall remain surrounded by many eunuchs and those looking after the domestic affairs of the palace. The servants male and female shall be handling him with care while passing from one attendant to the other in their hands, while shifting him from one lap to the other. They shall sing nursery songs, play childlike games, keeping him happy and enjoying such things. They shall narrate music that could help him in coming to sleep. They shall kiss him with affection and move him in beautiful gem-studded courtyard. Thus that baby state shall develop in a well-guarded enjoyable environment with the passage of time like a grand Champak tree in the cave of hill away from the ferocity of dreadful winds.

दृढ़प्रतिज्ञ का कला-शिक्षण

२८२. (क) तए णं तं दढपइण्णं दारगं अम्मापियरो सातिरेगअट्ठवासजायगं जाणित्ता सोभणंसि तिहि-करण-णक्खत्त-मुहुत्तंसि ण्हायं कयबलिकम्मं कयकोउय-मंगलपायच्छित्तं सव्वालंकारविभूसियं करेत्ता महया इड्ढीसक्कारसमुदएणं कलायरियस्स उवणेहिंति।

तए णं से कलायरिए तं दढपइण्णं दारगं लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ सउणरुयपज्जवसाणाओ बावत्तरिं कलाओ सुत्तओ अत्थओ य गंथओ य करणओ य सेहावेहि य पसिक्खावेहि य।

२८२. (क) दृढप्रतिज्ञ बालक जब कुछ अधिक आठ वर्ष का हो जायेगा तब कला-शिक्षण के लिए माता-पिता शुभ तिथि, करण (लग्न), नक्षत्र और मुहूर्त्त में स्नान, बलिकर्म, कौतुक-मगल-प्रायश्चित्त कराके और अलंकारो से विभूषित कर ऋद्धि-वैभव, सत्कार, समारोहपूर्वक कलाचार्य के पास ले जायेंगे।

तब कलाचार्य उस दृढप्रतिज्ञ बालक को गणित जिनमे मुख्य रहता है ऐसी लेख (लिपि) आदि शकुनिरुत (पक्षियों की बोली) तक की बहत्तर कलाओ को सूत्र से, अर्थ से (विस्तार से व्याख्या करके), ग्रन्थ के अनुसार सूत्र और अर्थ के अनुसार तथा करण-प्रयोग से अभ्यास करायेंगे।

EARLY EDUCATION OF DRIDH PRATIJNA

282. (a) When the child Dridh Pratijna shall be a little more than eight years of age, his parents on an auspicious day at an auspicious time shall decorate him with auspicious signs and ornaments, and bring him before an expert teacher exhibiting their respect for the teacher, in a gathering.

Then the teacher shall teach mathematics to Dridh Pratijna. He shall teach him the written scripts, the language of birds and seventy two arts of men in verses, their meaning and according to the relevant elaboration. He shall also help him in practising them.

(ख) तं जहा–लेहं गणियं रूवं नट्टं गीयं वाइयं सरगयं पुक्खरगयं समतालं जूयं जणवयं पासगं अट्ठावयं पारेकव्वं दगमट्टियं अन्नविहिं पाणविहिं वत्थविहिं विलेवणविहिं सयणविहिं। (२०)

अज्जं पहेलियं मागहियं णिद्दाइयं गाहं गीइयं सिलोगं। (२७)

हिरण्णजुत्तिं सुवण्णजुत्तिं आभरणविहिं तरुणीपडिकम्मं इत्थिलक्खणं पुरिसलक्खणं हयलक्खणं गयलक्खणं कुक्कुडलक्खणं छत्तलक्खणं चक्कलक्खणं दंडलक्खणं असिलक्खणं मणिलक्खणं कागणिलक्खणं। (४२)

वत्थुविज्जं णगरमाणं खंधवारं माणवारं पडिचारं वूहं चक्कवूहं गरुलवूहं सगडवूहं जुद्धं नियुद्धं जुद्धजुद्धं अट्ठिजुद्धं मुट्ठिजुद्धं बाहुजुद्धं लयाजुद्धं ईसत्थं छरुप्पवायं धणुवेयं। (६१)

हिरण्णपागं सुवण्णपागं मणिपागं धाउपागं सुत्तखेड्डं वट्टखेड्डं णालियाखेड्डं। (६८)

पत्तच्छेज्जं कडगच्छेज्जं सज्जीवनिज्जीवं सउणरुयं (७२) इति।

(ख) उन बहत्तर कलाओ के नाम इस प्रकार है–

(१) लेखन, (२) गणित, (३) रूप सजाने की कला, (४) नाट्य (अभिनय) अथवा नृत्य करने की कला, (५) संगीत, (६) वाद्य बजाना, (७) स्वर जानना, (८) वाद्य सुधारना अथवा ढोल आदि बजाने की कला, (९) संगीत में गीत और वाद्यों के सुर-ताल की समानता को जानने की कला, (१०) द्यूत-जुआ खेलना, (११) लोगों के साथ वार्त्तालाप और वाद-विवाद करना, (१२) पासों से खेलना, (१३) चौपड़ खेलना, (१४) तत्काल काव्य-कविता की रचना करना, (१५) जल और मिट्टी को मिलाकर वस्तु निर्माण करना अथवा जल और मिट्टी के गुणों की परीक्षा करना, (१६) अन्न उत्पन्न करने अथवा भोजन

बनाने की कला, (१७) नया पानी उत्पन्न करना अथवा औषधि आदि के संयोग-संस्कार से पानी को शुद्ध करना, स्वादिष्ट पेय पदार्थ बनाना, (१८) नवीन वस्त्र बनाना, वस्त्रों को रंगना, सींना और पहनना, (१९) विलेपन विधि-शरीर पर लेप करने की विधि, (२०) शय्या बनाना और शयन करने की विधि जानना।

(२१) मात्रिक छन्द बनाना और पहचानना, (२२) पहेलियाँ बनाना और बुझाना, (२३) मागधिक-मागधी भाषा में गाथा (काव्य) आदि बनाना, (२४) निद्रायिका-नींद में सुलाने की कला, (२५) प्राकृत भाषा में गाथा (काव्य) आदि बनाना, (२६) गीति-छंद बनाना, (२७) श्लोक (संस्कृत भाषा में छंद) बनाना।

(२८) हिरण्ययुक्ति-चाँदी बनाना और चाँदी शुद्ध करना, (२९) स्वर्णयुक्ति-स्वर्ण बनाना और स्वर्ण शुद्ध करना, (३०) आभूषण-अलंकार बनाना, (३१) तरुणी प्रतिकर्म-स्त्रियों का शृंगार-प्रसाधन करना, (३२) स्त्रियो के शुभाशुभ लक्षणों को जानना, (३३) पुरुष के लक्षण जानना, (३४) अश्व के लक्षण जानना, (३५) हाथी के लक्षण जानना, (३६) मुर्गों के लक्षण जानना, (३७) छत्र-लक्षण जानना, (३८) चक्र-लक्षण जानना, (३९) दंड-लक्षण जानना, (४०) असि-(तलवार) लक्षण जानना, (४१) मणि-लक्षण जानना, (४२) काकणी-(रत्न-विशेष) लक्षण जानना।

(४३) वास्तुविद्या-गृह, गृहभूमि के गुण-दोषो को जानना, (४४) नया नगर बसाने आदि की कला, (४५) स्कन्धावार-सेना के पडाव की रचना करने की कला, (४६) मापने-नापने-तोलने के साधनो को जानना, (४७) प्रतिचार-शत्रु सेना के सामने अपनी सेना को चलाना, (४८) व्यूह-युद्ध मे शत्रु सेना के समक्ष अपनी सेना का मोर्चा बनाना, (४९) चक्रव्यूह-चक्र के आकार की मोर्चाबन्दी करना, (५०) गरुडव्यूह-गरुड के आकार की व्यूह रचना करना, (५१) शकटव्यूह रचना, गाडी के आकार की युद्ध रचना, (५२) सामान्य युद्ध करना, (५३) नियुद्ध-मल्लयुद्ध करने की कला, कुश्ती लडना, (५४) युद्ध-युद्ध-शत्रु सेना की स्थिति को जानकर युद्ध-विधि को बदलने की कला अथवा घमासान युद्ध करना, (५५) अट्ठि (यष्टि-लाठी या अस्थि-हड्डी) से युद्ध करना, (५६) मुष्ठियुद्ध करना, (५७) बाहुयुद्ध करना, (५८) लतायुद्ध करना, (५९) इष्वस्त्र-शस्त्र-बाण बनाने की कला अथवा नागबाण आदि विशिष्ट बाणों के प्रक्षेपण की विधि, (६०) तलवार चलाने की कला, (६१) धनुर्वेद-धनुष-बाण सम्बन्धी कौशल।

(६२) चाँदी का पाक बनाना (औषधि के रूप में), (६३) सोने का पाक बनाना, (६४) मणियों के निर्माण की कला अथवा मणियों की भस्म आदि औषधि बनाना,

(६५) धातुपाक–औषधि के लिए स्वर्ण आदि धातुओं की भस्म बनाना, (६६) सूत्रखेल–रस्सी पर खेल–तमाशे, क्रीडा करने की कला, (६७) वृत्तखेल–गोल–गोल घूमने की क्रीडा विशेष, (६८) नालिकाखेल–द्यूत–जुआ विशेष।

(६९) पत्र को छेदने की कला, (७०) पर्वतीय भूमि छेदने की कला, (७१) मूर्च्छित को होश में लाने और अमूर्च्छित को मृततुल्य करने की कला, (७२) काक, घूक आदि पक्षियो की बोली और उससे अच्छे–बुरे शकुन का ज्ञान करना। ये बहत्तर कलाएँ हैं।

(b) The names of the seventy two arts are as under—

(1) The art of writing, (2) The art of counting, (3) The art of beautification, (4) The art of dancing, (5) The art of singing, (6) The art of playing upon musical instruments, (7) The art of tuning, (8) The art of setting right musical instruments and beating drum, (9) The art of knowing harmony in the song and the tuning of instruments, (10) The art of gambling, (11) The art of discussion with the people and bringing home the view point, (12) The art of playing with dice, (13) The art of playing chess board, (14) The art of composing poems at the spot, (15) The art of making things with earth and water or the art of testing qualities of earth and water, (16) The art of agriculture and of cooking, (17) The art of purifying water, the art of preparing tasty syrups, (18) The art of preparing new cloth, dyeing the cloth, sewing the cloth and of wearing clothes, (19) The art of applying paste on the body, (20) The art of preparing the cot and of sleeping on it.

(21) The art of making mantras or incantations, (22) The art of preparing quiz and offering them for solution, (23) The art of making poems or verses in Magadhi language, (24) The art of making one to sleep, (25) The art of making poems in Prakrit language, (26) The art of making verses, (27) The art of making verses in Sanskrit.

(28) The art of making silver and that of purifying silver, (29) The art of preparing gold and that of purifying it, (30) The art of making ornaments, (31) The art of beauty parlour for young ladies, (32) The art of knowing good and bad omens of women, (33) The art of knowing nature of man, (34) The art of knowing

characteristics of a horse, (35) The art of knowing characteristics of an elephant, (36) The art of knowing characteristics of cocks, (37) The art of knowing characteristics of umbrella, (38) The art of knowing qualities of the wheel, the chakra, (39) The art of wielding a stick, (40) The art of knowing qualities of a sword, (41) The art of knowing qualities of gems, (42) The art of knowing qualities of precious stones.

(43) Architecture, the art of knowing good and bad qualities of the land, (44) The art of laying of new township, (45) The art of laying of temporary camping ground for army, (46) The art of knowing weights and measures, (47) The art of organising the army in front of the enemy, (48) The art of preparing army for the battle-field, (49) The art of arranging army in the shape of a wheel, (50) The art of arranging army in the shape of Garuda, (51) The art of arranging army like a chariot, (52) The art of ordinary battle, (53) The art of wrestling, (54) The art of changing style in the battle-field in the light of the position of army of the enemy or the art of arranging fierce battle, (55) The art of fighting with sticks or bones, (56) The art of fighting with fist or boxing, (57) The art of fighting with arms, (58) The art of fighting with creepers, (59) The art of making arrows, (60) The art of wielding a sword, (61) The expertise in bow and arrow.

(62) The art of melting silver, (63) The art of melting gold, (64) The art of making gems or making medicines with gems, (65) The art of making powder of silver and gold for preparing medicines, (66) The art of presenting athletic skill on rope, (67) The art of moving in circular motion, (68) The art of special type of gambling.

(69) The art of piercing a leaf, (70) The art of piercing hilly land, (71) The art of helping an unconscious person to revive his consciousness and the art of making a normal person almost like a dead one, (72) The art of knowing the language of crows, ghook and other birds and then to analyse them to find good and bad omens. Above mentioned are the seventy two arts.

२८३. तए णं से कलायरिए तं दढपइण्णं दारगं लेहाइयाओ गणियप्पहाणाओ सउणरुयपज्ञवसाणाओ बावत्तरिं कलाओ सुत्तओ य अत्थओ य गंथओ य करणओ य सिक्खावेत्ता सेहावेत्ता अम्मापिऊणं उवणेहिंति।

तए णं तस्स दढपइण्णस्स दारगस्स अम्मापियरो तं कलायरियं विउलेणं असण–पाण–खाइम–साइमेणं वत्थगंधमल्लालंकारेणं सक्कारिस्संति सम्माणिस्संति विउलं जीवियारिहं पीतिदाणं दलइस्संति दलइत्ता पडिविसज्जेहिंति।

२८३. कलाचार्य उस दृढ़प्रतिज्ञ बालक को गणित प्रधान, लेखन (लिपि) से लेकर शकुनिरुत पर्यन्त बहत्तर कलाओं को सूत्र (मूल पाठ) से, अर्थ (व्याख्या) से, ग्रन्थ एव प्रयोग से सिखलाकर, अभ्यास कराकर उस बालक को माता–पिता के पास ले जायेंगे।

तब उस दृढप्रतिज्ञ बालक के माता–पिता विपुल अशन, पान, खाद्य, स्वाद्य रूप चतुर्विध आहार, वस्त्र, गंध, माला और अलकारो से कलाचार्य का सत्कार, सम्मान करेगे और फिर जीविका के योग्य पूरे जीवनभर के लिए विपुल प्रीतिदान (भेंट) देंगे। जीविका के योग्य विपुल प्रीतिदान भेंट देकर विदा करेंगे।

HONOUR OF THE TEACHER OF ARTS

283. The teacher of arts shall teach Dridh Pratijna mathematics, language, the scripts, the reading of omens and all such seventy two arts of men. He shall teach him in this context the aphorisms, their meanings, its commentaries, their application. When he shall find that Dridh Pratijna has become expert in all the arts, he shall bring him to his parents.

Then the parents of Dridh Pratijna shall honour the teacher by offering him sufficient food-stuff, liquids, sweets and fragrant substances for consumption, clothes, garlands and ornaments. They shall further give him number of gifts that shall be sufficient for his entire remaining life-span. They shall see him off after all such offerings showing their respect for him.

दृढ़प्रतिज्ञ की भोगसमर्थता

२८४. तए णं से दढपइण्णे दारए उम्मुक्कबालभावे विण्णायपरिणयमित्ते जोव्वणगमणुपत्ते बावत्तरिकलापंडिए णवंगसुत्तपडिबोहए अट्ठारसविहदेसिप्पगार–

भासाविसारए गीयरई गंधव्वणट्टकुसले सिंगारागारचारुवेसे संगयगय–हसिय–भणिय–चिट्ठिय–विलास–निउणजुत्तोवयारकुसले हयजोही गयजोही रहजोही बाहुजोही बाहुप्पमद्दी अलंभोगसमत्थे साहस्सीए वियालचारी यावि भविस्सइ।

२८४. इसके बाद वह दृढ़प्रतिज्ञ बालक बालभाव (बचपन) से मुक्त हो विज्ञान (विशेष ज्ञान–परिपक्व ज्ञान) युक्त, युवावस्था को प्राप्त होगा। बहत्तर कलाओं में पण्डित होगा, बाल्यावस्था के कारण मनुष्य के जो नौ अंग–दो कान, दो नेत्र, दो नासिका, जिह्वा, त्वचा और मन सुप्त अर्थात् अव्यक्त चेतना वाले रहते हैं, वे जागृत हो जायेंगे। अठारह प्रकार की देशी भाषाओं मे कुशल हो जायेगा, वह गीत का अनुरागी, गीत और नृत्य में कुशल हो जायेगा। अपने सुन्दर वेश से शृंगार का आगार–जैसा प्रतीत होगा। उसकी चाल, हास्य, भाषण, शारीरिक और नेत्रों की चेष्टाएँ आदि सभी संगत–सामान्य शिष्ट जनोचित होंगी। पारस्परिक आलाप–संलाप एवं व्यवहार में निपुण–कुशल होगा। अश्वयुद्ध, गजयुद्ध, रथयुद्ध, बाहुयुद्ध करने एवं अपनी भुजाओं से विपक्षी का मान–मर्दन करने में सक्षम एवं भोग भोगने की सामर्थ्य से सम्पन्न हो जायेगा तथा साहसी ऐसा हो जायेगा कि विकालचारी (मध्य रात्रि मे इधर–उधर जाने–आने में भी) भयभीत नहीं होगा।

PHYSICAL CAPABILITY OF DRIDH PRATIJNA

284. Thereafter, Dridh Pratijna after crossing the childhood shall reach the stage of youth well equipped with knowledge relevant to that stage. He shall be expert in seventy two arts relating to man. In childhood, the nine parts of the body namely—two ears, two eyes, two nostrils, the tongue, the skin and the mind are comparatively inactive but now (in youth) they shall become fully active. He shall be expert in eighteen native languages of the land. He shall start liking music and shall become expert in singing and dancing. In his beautiful dress he shall look like a treasure of beauty. His gait, smile, talk, physical activities, pointing of eyes and suchlike shall be in accordance with the ideal standard. He shall be expert in friendly relationship and day to day dealings. He shall be capable of successfully participating in horse-fight, elephant-fight, chariot-fight, hand-fight and in subduing the ego of his opponents with his arms. He shall be also capable to enjoy the sensual pleasures. He shall be so much courageous that he shall not entertain any fear even in going anywhere at mid-night.

विवेचन–इन बहत्तर प्रकार की कलाओं के वर्णन से प्राचीनकाल की शिक्षा पद्धति की एक झलक मिलती है। इस शिक्षण में छात्र का सर्वांगीण विकास किया जाता था।

कुछ कलाएँ उसका शारीरिक विकास, शक्ति और सामर्थ्य को बढ़ाने वाली हैं, कुछ उसकी बुद्धि का बहुमुखी विकास करने वाली हैं और कुछ कलाएँ उसके भीतर कला की सुरुचि, साहित्य रुचि, संगीत प्रेम, नृत्य रुचि जगाती है और कुछ कलाएँ मात्र मनोरंजन की भी हैं। कुछ कलाएँ उसे आजीविका के योग्य विविध निर्माण कार्य का शिक्षण–प्रशिक्षण देने वाली हैं। इस प्रकार इन कलाओं के माध्यम से छात्र का शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक विकास करके उसके चारित्रिक गुणों को भी दीप्त किया जाता है और उसे आजीविका उपार्जन में स्वावलम्बी और समाज के साथ घुल–मिलकर जीने योग्य बनाती हैं। कुल मिलाकर ये कलाएँ एक सुसस्कारी जीवन का निर्माण करने वाली हैं।

यद्यपि कलाओ के विषय में प्रत्येक देश के साहित्य में विचार किया गया है, तथापि हम अपने देश की ही मुख्य धर्म परम्पराओ के साहित्य को देखे तो सर्वत्र विस्तार के साथ कलाओ का विवरण उपलब्ध है। वैदिक–परम्परा के रामायण, महाभारत, शुक्रनीति, वाक्यपदीय आदि ग्रन्थों में; बौद्ध–परम्परा के ललितविस्तरा मे और जैन–परम्परा के समवायांगसूत्र, जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति, ज्ञातासूत्र, औपपातिकसूत्र, कल्पसूत्र और इनकी व्याख्याओ मे इनका वर्णन किया गया है। किन्तु संख्या और नामों में अन्तर है। कही कलाओं की सख्या चौंसठ बताई है तो क्षेमेन्द्र के कलाविलास ग्रन्थ में सौ से अधिक कलाओं का वर्णन किया है। बौद्ध–साहित्य में इनकी संख्या छियासी कही है। जैन–साहित्य मे प्राय. पुरुष योग्य बहत्तर और महिलाओ के लिए चौसठ कलाओं का उल्लेख मिलता है। जिसकी पुष्टि जनसाधारण मे प्रचलित इस दोहे से हो जाती है–

"कला बहत्तर पुरुष की, तामें दो सरदार।
एक जीव की जीविका, एक जीव उद्धार॥"

जीवन धारण करने के लिए मानव को जैसे रोटी, कपड़ा और मकान जरूरी है, उसी प्रकार जीवन की सुरक्षा के लिए शारीरिक स्वास्थ्य व बल, मानसिक शुद्धि और विकास, तथा आजीविका के साधनो की व्यवस्था, ये भी आवश्यक है। पूर्व सूत्र मे उल्लिखित बहत्तर कलाओं के नामो मे ध्यान देने योग्य यह है कि उनके चयन मे दीर्घदृष्टि से काम लिया गया है। उनमे जीवन की सुरक्षा के तीनो अगों के साधनों का समावेश करने के साथ लोक-व्यवहारो के निर्वाह करने की क्षमता और प्राकृतिक पदार्थों को अपने लिए उपयोगी बनाने और उनका समीचीन उपयोग करने की योग्यता अर्जित करने का लक्ष्य भी रखा गया है।

विद्वत्ता के लिए तथा व्यापार की समृद्धि एव व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाने के लिए जैसे आज अनेक देशों की बोलियों और भाषाओ को जानना आवश्यक है, उसी तरह प्राचीनकाल में भी कलाओं के अध्ययन के साथ प्रत्येक व्यक्ति और विशेषकर समृद्ध परिवारों में जन्मे व्यक्तियों और देश–विदेश मे व्यापार के निमित्त जाने वालों के लिए अनेक भाषाओं का ज्ञाता होना अनिवार्य था। दृढप्रतिज्ञ बालक के पालन–पोषण के समय भिन्न–भिन्न देशों की दासियों का सम्पर्क उसे अनायास ही बहुभाषाविज्ञ और उन देशों की कला–संस्कृति, रीति–रिवाज का ज्ञाता बना देता है। सम्पन्न कुलों मे उस समय ऐसा प्रचलन था।

यद्यपि यहाँ की तरह अन्य आगम-पाठों में भी 'अट्ठारसविहदेसिप्पगारभासाविसारए' पद आता है। किन्तु वे अठारह भाषाएँ कौन-सी थीं, इसका उल्लेख मूल पाठों में कहीं भी देखने में नहीं आया है। इस स्थिति में यही माना जा सकता है कि उस समय बहुमान्य प्रचलित बोलियों को एक-एक भाषा माना जाता हो और उनको बोलने-समझने में निष्णात होने का बोध कराने के लिए ही 'अठारह भाषाविशारद' पद ग्रहण किया गया हो। आज संसार के किसी भी एक विश्वविद्यालय में इतना सर्वांगीण शिक्षण, व्यावहारिक ज्ञान देने के साधन और सुविधाएँ शायद ही उपलब्ध हों, जितनी उन प्राचीन गुरुकुलों में थी। गुरुकुल के आचार्य स्वयं त्यागी और विद्या-निष्णात होते थे।

इसके साथ कलाचार्य (शिक्षक) का सम्मान करने की परम्परा भी आदर्श रही है। शिक्षक को किसी के सामने हाथ फैलाने की जरूरत नहीं पड़ती थी। वह स्वाभिमानपूर्वक और निश्चिन्त होकर छात्रों को कला-शिक्षण दे सकता था।

Elaboration—One gets a glimpse of the type of education in ancient times in the description of seventy two arts. This type of education provided all-round development of the student.

Some of these arts help in development of physical strength, capacity and the structure, some are going to improve his intellect and all-round mental development and some awaken in him interest in art, literature, music and dance. Some of them are only for self-entertainment, some of the arts educate him in various professions suited for earning the livelihood. Thus by teaching these arts, the physical, mental and intellectual development of the student is aimed at resulting in bringing out the good qualities of his character. They make him self-dependent in earning the livelihood and in living in harmony with the society. In brief, all these arts build a civilised man.

Although the prevalent arts are mentioned in the literature of every country, still even if we study the literature relating to main religious traditions of our country, we find everywhere a detailed description of the prevalent arts. They have been described in Ramayana, Mahabharat, Shukraneeti, Vakyapadiya and suchlike scriptures of Vedic tradition; Lalit-vistara of the Buddhist tradition; Samvayang Sutra, Jambu Dveep Prajnapti, Jnata Sutra, Aup-patik Sutra, Kalp Sutra and their commentaries in Jain tradition. Of course there is some difference in the number and names of the arts. At same place number of arts mentioned is sixty four but in Kala-vilas treatise of Kshemendra their number is more than hundred. In Buddhist literature their number is eighty six. In Jain literature generally seventy two arts for men and sixty four for women have been mentioned. This statement is supported by the prevalent verse (in Hindi) that means as under—

There are seventy two arts meant for men and two of them are most important—one is meant to provide livelihood and the other his spiritual development.

Just as a man needs food, clothing and shelter to lead a normal life, to enjoy proper health, mental equilibrium and development, proper means and environment for livelihood are also equally important for security in life. When we look at the names of the seventy two arts carefully in previous aphorisms, we find a great experience and far-sightedness in their selection. It is evident that all the three necessities of human life, the proper soul behaviour, the capability of making proper use of natural resources and their skilful use has been aimed at

During the modern age, it is very essential to know the language and scripts of many countries in order to make oneself effective in the expertise and for prosperity in trade and commerce. Similarly in the medieval period, it was essential for every one and in particular for those born in prosperous families and those going abroad for trade to know many languages in addition to the knowledge of arts The maids belonging to different countries engaged in bringing up Dridh Pratijna during his infancy, automatically shall make him capable of understanding many languages and also well educated in art, culture, customs and traditions of those countries. This was the prevalent practice in well-to-do families of that period.

Just as in this Sutra, there is mentioned in other Agam also that **'Attharas-vih-desippagar-bhasa-visaraye'** (which means that they had expert knowledge of eighteen languages) but in the original text it is nowhere mentioned which were the eighteen languages referred to. In view of it, it can be presumed that prevalent different spoken dialects were considered as languages. The expert in eighteen languages thus refers to expertise in speaking and understanding them. In the modern period there are hardly elaborate arrangements and facilities in any university of the world for all round education and training in complete soul behaviour as compared to the facilities available in gurukuls (educational institutions) of those times. The head of the gurukul was himself selfless person expert in field of education.

The tradition of honouring the teacher was also an ideal one. The teacher never had to resort to request for anything from anyone. He could impart education to his students in a respectful manner commanding their respect and was free from all worries.

२८५. तए णं तं दढपइण्णं दारगं अम्मापियरो उम्मुक्कबालभावं जाव वियालचारिं च वियाणित्ता विउलेहिं अन्नभोगेहि य पाणभोगेहि य लेणभोगेहि य वत्थभोगेहि य सयणभोगेहि य उवनिमंतिहिंति।

२८५. तब उस दृढ़प्रतिज्ञ बालक को, बाल्यावस्था से मुक्त, निर्भयतापूर्वक विचरने में समर्थ हुआ जानकर माता-पिता विपुल अन्नभोगों, पानभोगों (खाने-पीने), प्रासादभोगों, वस्त्रभोगों और शय्याभोगों-गृहस्थ जीवन के भोगों को भोगने के लिए आमंत्रित करेंगे। (अर्थात् माता-पिता उसे भोगसमर्थ जानकर कहेंगे कि हे चिरंजीव ! तुम युवा हो गये हो अतः अब कामभोगों की इस विपुल सामग्री का भोग करो।)

285. Then finding that Dridh Pratijna is no longer in his childhood and that he is capable of moving freely and independently in the world, his parents shall invite him to enjoy the household life, the tasty food, drinks, palatial residence, the decent clothes, bedding and suchlike. In other words his parents will tell him that he has reached his youth and so he should enjoy sensual pleasures.

दृढ़प्रतिज्ञ की अनासक्ति

२८६. (क) तए णं दढपइण्णे दारए तेहिं विउलेहिं अन्नभोएहिं जाव सयणभोगेहिं णो सज्जिहिति, णो गिज्झिहिति, णो मुच्छिहिति, णो अज्झोववज्जिहिति, से जहा णामए पउमुप्पले ति वा पउमे इ वा जाव सयसहस्सपत्तेति वा पंके जाते जले संवुड्ढे णोवलिप्पइ पंकरएणं नोवलिप्पइ जलरएणं, एवामेव दढपइण्णे वि दारए कामेहिं जाते भोगेहिं संवड्ढिए णोवलिप्पिहिति. मित्तणाइणियगसयण संबंधिपरिजणेणं।

२८६. (क) तब वह दृढ़प्रतिज्ञ दारक उन विपुल अन्नरूप (भोजन सामग्री) भोग्य पदार्थों यावत् शयनरूप भोग्य पदार्थों (सुख साधनों) में आसक्त नहीं होगा, गृद्ध नहीं होगा, मूर्च्छित नहीं होगा और अनुरक्त नहीं होगा। अर्थात् उनके प्रति आकर्षित नहीं होगा। जैसे कि नीलकमल, पद्मकमल (सूर्यविकासी कमल) यावत् शतपत्र या सहस्रपत्र कमल कीचड़ में उत्पन्न होते हैं और जल में बढ़ते हैं, फिर भी कीचड़ और जल-कणों से लिप्त नहीं होते हैं, निर्लेप रहते हैं। इसी प्रकार वह दृढ़प्रतिज्ञ दारक भी कामों में उत्पन्न हुआ, भोगों के बीच लालन-पालन किये जाने पर भी उन कामभोगों में एवं मित्रों, ज्ञातिजनों, निजी-स्वजन-सम्बन्धियों और परिजनों में अनुरक्त नहीं होगा।

NON-ATTACHMENT OF DRIDH PRATIJNA

286. (a) Then Dridh Pratijna shall not get attached to the various types of food, buildings and other sensual enjoyments. He shall not be engrossed in them. He shall not deeply associate himself with them. He shall not get intoxicated with them. In other words he shall not get attracted towards them. Just as Neel Kamal, red lotus upto hundred petalled lotus and thousand petalled lotus germinate and grow in mud but do not get attached to mud and water drops and remain away from them, unaffected by them, similarly Dridh Pratijna although born in an atmosphere of sensual pleasures and enjoyment, brought up in such a grand sensitive environment shall not get attached to sensual pleasures, friends, relatives, family members and neighbours.

(ख) से णं तथारूवाणं थेराणं अंतिए केवलं बोहिं बुज्झिहिति, मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइस्सति, से णं अणगारे भविस्सइ ईरियासमिए जाव सुहुयहुयासयणो इव तेयसा जलंते।

(ख) किन्तु वह तथारूप स्थविरो (ज्ञानी, सयमी, श्रमणों) से केवलबोधि-सम्यग्ज्ञान अथवा सम्यक्त्व का लाभ प्राप्त करेगा एवं मुण्डित होकर, गृह त्यागकर अनगार-प्रव्रज्या अगीकार करेगा। अनगार होकर ईर्यासमिति आदि से युक्त अनगारधर्म का पालन करते हुए **सुहुत**-(अच्छी तरह से होम की गई) **हुताशन**-(अग्नि) की तरह अपने तपस्तेज से चमकेगा, दीप्तमान होगा।

(b) He shall, however, receive right knowledge and right perception from monks of the order having developed intellect (and following restraints of the order). He shall leave the household, get his head clean shaved and adopt monkhood. Thereafter he shall strictly observe proper care in walking speaking and others and thus following the code of the religious order for the saints, he shall shine like a well-sacrificed, well lit fire with the aura of his knowledge, his austerities and his conduct.

केवलज्ञान और निर्वाण

(ग) तस्स णं भगवतो अणुत्तरेणं णाणेणं एवं दंसणेणं चरित्तेणं आलएणं विहारेणं अज्जवेणं मद्दवेणं लाघवेणं खंतीए गुत्तीए मुत्तीए अणुत्तरेणं सव्वसंजम-

सुचरियतवफलणिव्वाणमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स अणंते अणुत्तरे कसिणे पडिपुण्णे निरावरणे णिव्वाघाए केवलवरनाणदंसणे समुप्पज्जिहिति।

(ग) इसके साथ ही वह अनुत्तर सर्वश्रेष्ठ ऐसे तपोमार्ग में आत्मा को रमायेगा, जिससे ज्ञान, दर्शन, चारित्र, अप्रतिबद्ध विहार, आर्जव, मार्दव, लाघव, क्षमा, गुप्ति, मुक्ति (निर्लोभता) सर्व संयम एवं निर्वाण की प्राप्ति रूप महाफल मिलता है। अन्त में वह भगवान (दृढप्रतिज्ञ) अनन्त, अनुत्तर, सकल, परिपूर्ण, निरावरण, निर्व्याघात, अप्रतिहत, सर्वोत्कृष्ट केवलज्ञान और केवलदर्शन को प्राप्त करेगा।

PERFECT KNOWLEDGE AND SALVATION

(c) Simultaneously he shall engage himself in austerities of the highest order that result in exquisite knowledge, perception, conduct, unrestricted movement, straight forwardness, humility, renunciation, forgiveness, proper control, non-attachment, complete restraint and salvation. In the end Dridh Pratijna shall attain infinite, unique, complete, perfect unclouded, unrestricted, indiminishable knowledge (Keval jnan) and perception (Keval darshan).

(घ) तए णं भगवं अरहा जिणे केवली भविस्सइ सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स परियायं जाणहिति तं.—आगतिं गतिं ठितिं चवणं उववायं तक्कं कडं मणोमाणसियं खइयं भुत्तं पडिसेवियं आवीकम्मं रहोकम्मं अरहा अरहस्सभागी तं तं मणवयकायजोगे वट्टमाणाणं सव्वलोए सव्वजीवाणं सव्वभावे जाणमाणे पासमाणे विहरिस्सइ।

(घ) तब वे दृढ़प्रतिज्ञ भगवान अर्हत्, जिन, केवली हो जायेगे। जिसमें देव, मनुष्य तथा असुर आदि रहते हैं ऐसे लोक की समस्त पर्यायो को वे जानेगे। अर्थात् वे प्राणिमात्र की आगति—एक गति से दूसरी गति में आगमन को, गति—वर्तमान गति को छोड़कर अन्य गति मे गमन को, स्थिति, च्यवन, उपपात (देव या नारक जीवो की उत्पत्ति—जन्म), तर्क (विचार), क्रिया, मनोभावों, क्षयप्राप्त (भोगे जा चुके), प्रतिसेवित (भोग—परिभोग की वस्तुओं), आविष्कर्म (प्रकट कार्यों), रहःकर्म (एकान्त में किये गुप्त कार्यों) आदि, प्रगट और गुप्त रूप से होने वाले मन, वचन और काययोग में विद्यमान लोकवर्ती सभी जीवों के सर्वभावों को जानते—देखते हुए विचरण करेंगे।

(d) Then Dridh Pratijna shall become omniscient. He shall know all the modes of the universe where gods, men, demon-gods and

suchlike reside. In other words he shall know **Aagati**—the earlier state from which soul has taken re-birth, **Gati**—the later state which this Jiva shall attain after completing the present life-span, the duration, the descending (from **heaven**—the godly state), the birth of angelic beings and hellish beings. He shall also know the thoughts, activities, the thought process, the activities already performed, the things of enjoyment available, the activities performed in public and also those performed secretly by the living-beings He shall also see and know the thought activities of all types that the embodied souls engage in.

(ङ) तए णं दढपइन्ने केवली एयारूवेणं विहारेणं विहरमाणे बहूइं वासाइं केवलिपरियागं पाउणित्ता अप्पणो आउसेसं आभोएत्ता बहूइं भत्ताइं पच्चक्खाइस्सइ, बहूइं भत्ताइं अणसणाए छेइस्सइ।

जस्सट्ठाए कीरइ णग्गभावे केसलोच-बंभचेरवासे अण्हाणगं अदंतवणं अणुवहाणगं भूमिसेज्जाओ फलहसेज्जाओ परघरपवेसो लद्धावलद्धाइं माणावमाणाइं परेसिं हीलणाओ निंदणाओ खिंसणाओ तज्जणाओ ताडणाओ गरहणाओ उच्चावया विरूवरूवा बावीसं परीसहोवसग्गा गामकंटगा अहियासिज्जंति। तमट्ठं आराहेइ, चरिमेहिं उस्सासनिस्सासेहिं सिज्झिहिति मुच्चिहिति परिनिव्वाहिति सव्वदुक्खाणमंतं करेहिति।

(ङ) तत्पश्चात् वे दृढप्रतिज्ञ केवली इस प्रकार विहारचर्या से विचरण करते हुए और अनेक वर्षों तक केवलि-पर्याय का पालन कर, अपने आयु के अन्त को जानकर अनेक भक्तों-अनेक दिनों के भोजनों का प्रत्याख्यान व त्याग करेगे और अनशन द्वारा बहुत से भोजनो का छेदन करेगे अर्थात् बहुत समय तक आहार-पान का त्यागकर शरीर त्याग करेगे।

जिस साध्य की सिद्धि के लिए नग्नभाव (मुनित्व), केशलोच, ब्रह्मचर्य-धारण, स्नान का त्याग, दतधावन का त्याग, पादुकाओं का त्याग, भूमि पर शयन करना, काष्ठासन पर सोना, भिक्षार्थ परगृह-प्रवेश, लाभ-अलाभ में सम रहना, मान-अपमान सहना, दूसरों के द्वारा की जाने वाली हीलना (तिरस्कार), निन्दा, खिंसना (अवर्णवाद), तर्जना (धमकी), ताड़ना, गर्हा (घृणा) एवं अनुकूल-प्रतिकूल अनेक प्रकार के बाईस परीषह, उपसर्ग तथा लोकापवाद (गाली-गलौज) आदि सहन किये जाते हैं, उस परम साध्य-मोक्ष की साधना करके वे

दृढ़प्रतिज्ञ जिन चरम श्वासोच्छ्वास में सिद्ध हो जायेंगे, मुक्त हो जायेंगे, सकल कर्ममल का क्षय और समस्त दुःखों का अन्त करेंगे।

(e) Thereafter omniscient Dridh Pratijna shall move about for many years in the state of perfect knowledge. Later, knowing that his life-span is going to be completed he shall observe complete fast for many days, he shall leave taking of food, water, sweets and others completely and thus shall leave the physical body.

The nakedness (sainthood), shaving of head by plucking the hair, celibacy, restraining from taking bath, non-cleaning of teeth, non-wearing of foot-pads, sleeping on floor, sleeping on wooden platform, going to houses in search of food according to their restraints, remaining ın state of equanimity in both the states namely when something is got and when nothing is got during wandering in search of food and others, bearing with honour and dishonour, bearing with ill-words, bearing with threats, hurting, disgraces and suchlike twenty two tribulations, equally undergoing crackle afflicted by gods and others, bearing with abuses from the public which is undergone wıth the specific purpose of attaning liberation Dridh Pratijna by his unique austerities, shall attain liberation and with the last life-breath at the completion of the human life-span he shall attain salvation. He shall completely end up all the chain of his karma and thus all the troubles of the world.

उपसंहार

२८७. सेवं भंते ! सेवं भंते ! त्ति भगवं गोयमे समणं भगवं महावीरं वंदइ नमंसइ, वंदित्ता नमंसित्ता संजमेणं तवसा अप्पाणं भावेमाणे विहरति।

२८७. (इस प्रकार से भगवान महावीर के श्रीमुख से सूर्याभदेव के अतीत, अनागत और वर्तमान जीवन-प्रसंगों को सुनने के पश्चात् गौतम स्वामी ने हार्दिक उल्लास के साथ कहा-)

"भगवन् ! जैसा आपने प्रतिपादन किया है वह ऐसा ही है, हे भगवन् ! वह इसी प्रकार है, जैसा आप फरमाते हैं।" इस प्रकार कहकर भगवान गौतम ने श्रमण भगवान महावीर को वंदन-नमस्कार किया। वंदन-नमस्कार करके संयम एवं तप में आत्मा को रमाते हुए विचरने लगे।

CONCLUSION

287. (After listening about this part, the present and the future of Suryabh Dev from Bhagavan Mahavir, Gautam Swami said in a state of happiness and satisfaction—)

"Reverend Sir ! It is exactly so as you have narrated. It is going to happen as you have mentioned." Saying so, he bowed to the Lord and then again started his life-activities observing restraints and austerities.

२८८. णमो जिणाणं जियभयाणं। णमो सुयदेवयाए भगवतीए। णमो पण्णत्तीए भगवईए। णमो भगवओ अरहओ पासस्स। पस्से सुपस्से पस्सवणा णमो।

● रायपसेणइयं समत्तं ●

२८८. भयो के विजेता भगवान को नमस्कार हो। भगवती श्रुत देवता को नमस्कार हो। प्रज्ञप्ति भगवती को नमस्कार हो। अर्हत् भगवान पार्श्वनाथ को नमस्कार हो। प्रदेशी राजा के प्रश्नों के सुप्रदर्शक–समाधान देने वाले (केशीकुमार श्रमण) को नमस्कार हो।

● राजप्रश्नीयसूत्र समाप्त ●

288. Salutation to the Lord who has sabdued all fears. Salutation to the goddess of learning. Salutation to godden expert in commentaries. Salutation to omniscient Bhagavan Parshvanath. Salutation to Keshi Kumar Shraman who properly replied to the queries raised by king Pradeshi.

● RAI-PASENIYA (RAJ-PRASHNIYA) SUTRA CONCLUDED ●

आगमों का अनध्यायकाल

(स्व. आचार्यप्रवर श्री आत्माराम जी महाराज द्वारा सम्पादित नन्दीसूत्र से उद्धृत)

स्वाध्याय के लिए आगमों में जो समय बताया गया है, उसी समय शास्त्रो का स्वाध्याय करना चाहिए। अनध्यायकाल मे स्वाध्याय वर्जित है।

मनुस्मृति आदि स्मृतियों मे भी अनध्यायकाल का विस्तारपूर्वक वर्णन किया गया है। वैदिक लोग भी वेद के अनध्यायों का उल्लेख करते है। इसी प्रकार अन्य आर्ष ग्रन्थो का भी अनध्याय माना जाता है। जैनागम भी सर्वज्ञोक्त, देवाधिष्ठित तथा स्वर-विद्या संयुक्त होने के कारण, इनका भी आगमो मे अनध्यायकाल वर्णित किया गया है। जैसे-

दसविहे अंतलिक्खिए असज्झाए पण्णत्ते, तं जहा—उक्कावाते, दिसिदाघे, गज्जिते, विज्जुते, निग्घाते, जुवते, जक्खालित्ते, धूमिता, महिता, रयउग्घाते।

दसविहे ओरालिए असज्झाए, तं जहा—अट्ठी, मंसं, सोणिते, असुतिसामंते, सुसाणसामंते, चंदोवराते, सूरोवराते, पडणे, रायवुग्गहे, उवस्सयस्स अंतो ओरालिए सरीरगे। *—स्थानांगसूत्र, स्थान १०*

नो कप्पति निग्गंथाण वा, निग्गंथीण वा चउहिं महापाडिवएहिं सज्झायं करित्तए, तं जहा—आसाढपाडिवए, इंदमहपाडिवए, कत्तिअपाडिवाए सुगिम्हपाडिवए।

नो कप्पइ निग्गंथाण वा निग्गंथीण वा, चउहिं संझाहिं सज्झायं करेत्तए, तं जहा—पढिमाते, पच्छिमाते, मज्झण्हे, अड्ढरत्ते।

कप्पइ निग्गंथाणं वा निग्गंथीण वा, चाउक्कालं सज्झायं करेत्तए, तं जहा—पुव्वण्हे अवरण्हे, पओसे, पच्चूसे।

—स्थानांगसूत्र, स्थान ४, उद्देशक २

स्थानागसूत्र के अनुसार, दस आकाश से सम्बन्धित, दस औदारिक शरीर से सम्बन्धित, चार महाप्रतिपदा, चार महाप्रतिपदा की पूर्णिमा और चार सन्ध्या।

इस प्रकार बत्तीस अनध्यायकाल माने गए हैं, जिनका सक्षेप मे निम्न प्रकार से वर्णन है। जैसे-

आकाश सम्बन्धी दस अनध्याय

१. उल्कापात—तारापतन—यदि महत् तारापतन हुआ है तो एक प्रहर पर्यन्त शास्त्र-स्वाध्याय नही करना चाहिए।

२. दिग्दाह—जब तक दिशा रक्तवर्ण की हो अर्थात् ऐसा मालूम पडे कि दिशा मे आग-सी लगी है, तब भी स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

३. गर्जित—बादलों के गर्जन पर एक प्रहर पर्यन्त स्वाध्याय न करे।

४. विद्युत्—बिजली चमकने पर एक प्रहर पर्यन्त स्वाध्याय न करे।

किन्तु गर्जन और विद्युत् का अस्वाध्याय चातुर्मास मे नही मानना चाहिए। क्योंकि वह गर्जन और विद्युत् प्राय ऋतु-स्वभाव से ही होता है। अत आर्द्रा से स्वाति नक्षत्र पर्यन्त अनध्याय नही माना जाता।

५. **निर्घात**—बिना बादल के आकाश मे व्यन्तरादिकृत घोर गर्जना होने पर या बादलों सहित आकाश मे कडकने पर दो प्रहर तक अस्वाध्यायकाल है।

६. **यूपक**—शुक्ल पक्ष मे प्रतिपदा, द्वितीया, तृतीया को सन्ध्या की प्रभा और चन्द्रप्रभा के मिलने को यूपक कहा जाता है। इन दिनो प्रहर रात्रि पर्यन्त स्वाध्याय नही करना चाहिए।

७. **यक्षादीप्त**—कभी किसी दिशा में बिजली चमकने जैसा, थोडे-थोडे समय पीछे जो प्रकाश होता है वह यक्षादीप्त कहलाता है। अत· आकाश मे जब तक यक्षाकार दीखता रहे तब तक स्वाध्याय नहीं करना चाहिए।

८. **धूमिका-कृष्ण**—कार्तिक से लेकर माघ मास तक का समय मेघो का गर्भमास होता है। इसमे धूम्र वर्ण की सूक्ष्म जलरूप धुध पडती है। वह धूमिका-कृष्ण कहलाती है। जब तक वह धुंध पडती रहे, तब तक स्वाध्याय नही करना चाहिए।

९. **मिहिकाश्वेत**—शीतकाल में श्वेत वर्ण की सूक्ष्म जलरूप धुध मिहिका कहलाती है। जब तक यह गिरती रहे, तब तक अस्वाध्यायकाल है।

१०. **रज-उद्‌घात**—वायु के कारण आकाश मे चारो ओर धूल छा जाती है। जब तक यह धूल फैली रहती है, स्वाध्याय नही करना चाहिए।

उपरोक्त दस कारण आकाश सम्बन्धी अस्वाध्याय के है।

औदारिक शरीर सम्बन्धी दस अनध्याय

११-१३. **हड्डी, माँस और रुधिर**—पचेन्द्रिय, तिर्यंच की हड्डी, माँस और रुधिर यदि सामने दिखाई दे, तो जब तक वहाँ से यह वस्तुएँ उठाई न जाएँ, तब तक अस्वाध्याय है। वृत्तिकार आसपास के ६० हाथ तक इन वस्तुओ के होने पर अस्वाध्याय मानते है।

इसी प्रकार मनुष्य सम्बन्धी अस्थि, माँस और रुधिर का भी अनध्याय माना जाता है। विशेषता इतनी है कि इनका अस्वाध्याय सौ हाथ तक तथा एक दिन-रात का होता है। स्त्री के मासिक धर्म का अस्वाध्याय तीन दिन तक तथा बालक एवं बालिका के जन्म का अस्वाध्याय क्रमश सात एव आठ दिन पर्यन्त का माना जाता है।

१४. **अशुचि**—मल-मूत्र सामने दिखाई देने तक अस्वाध्याय है।

१५. **श्मशान**—श्मशान भूमि के चारो ओर सौ-सौ हाथ पर्यन्त अस्वाध्याय माना जाता है।

१६. **चन्द्रग्रहण**—चन्द्रग्रहण होने पर जघन्य आठ, मध्यम बारह और उत्कृष्ट सोलह प्रहर पर्यन्त स्वाध्याय नही करना चाहिए।

१७. **सूर्यग्रहण**—सूर्यग्रहण होने पर भी क्रमश आठ, बारह और सोलह प्रहर पर्यन्त अस्वाध्यायकाल माना गया है।

१८. पतन—किसी बडे मान्य राजा अथवा राष्ट्र-पुरुष का निधन होने पर जब तक उसका दाह-सस्कार न हो, तब तक स्वाध्याय नही करना चाहिए अथवा जब तक दूसरा अधिकारी सत्तारूढ़ न हो, तब तक शनैः-शनैः स्वाध्याय करना चाहिए।

१९. राजव्युद्ग्रह—समीपस्थ राजाओ में परस्पर युद्ध होने पर जब तक शान्ति न हो जाए, तब तक और उसके पश्चात् भी एक दिन-रात्रि स्वाध्याय नहीं करे।

२०. औदारिक शरीर—उपाश्रय के भीतर पचेन्द्रिय जीव का वध हो जाने पर जब तक कलेवर पडा रहे, तब तक तथा १०० हाथ तक यदि निर्जीव कलेवर पडा हो तो स्वाध्याय नही करना चाहिए।

अस्वाध्याय के उपरोक्त १० कारण औदारिक शरीर सम्बन्धी कहे गये है।

२१-२८. चार महोत्सव और चार महाप्रतिपदा—आषाढ-पूर्णिमा, आश्विन-पूर्णिमा, कार्तिक-पूर्णिमा और चैत्र-पूर्णिमा ये चार महोत्सव है। इन पूर्णिमाओ के पश्चात् आने वाली प्रतिपदा को महाप्रतिपदा कहते है। इनमे स्वाध्याय करने का निषेध है।

२९-३२. प्रातः, सायं, मध्याह्न और अर्ध-रात्रि—प्रात सूर्य उगने से एक घडी पहले तथा एक घडी पीछे। सूर्यास्त होने से एक घडी पहले तथा एक घडी पीछे। मध्याह्न अर्थात् दोपहर में एक घडी पहले और एक घडी पीछे एव अर्ध-रात्रि मे भी एक घडी पहले तथा एक घडी पीछे स्वाध्याय नही करना चाहिए।

इस प्रकार अस्वाध्यायकाल टालकर दिन-रात्रि मे चार काल का स्वाध्याय करना चाहिए।

APPROPRIATE TIME FOR STUDY OF SCRIPTURES

Holy books should be studied only at a time as prescribed in the scriptures There are times when this study is prohibited.

In scriptures like Manusmriti etc. also the prohibited time has been described Vedic people also mention about this period in the Vedas Other Aryan holy books also agree to this particular period Jain scriptures too, as they have been associated with the omnipresent and established by the *devas*, are prohibited to be studied in that particular period, e.g.,

As per the above scripture study, prohibited periods are ten relating to symptoms in the sky, ten relating to the physcial body, four relating to first day of the fortnight, four relating to full moon of the fortnight, four relating to waned moon of the fortnight.

Thus, 32 periods are forbidden which are briefly described below ·

RELATING TO SYMPTOMS IN THE SKY

1. If an important star has fallen, then the study is forbidden for three hours
2. If there is red colour in the sky then the study shouldn't be done.
3. No study for 6 hours after thunder of clouds
4. For three hours after lightening, study is not allowed.

5. If there is thunder without clouds in the sky or if there is crackling with presence of clouds, then study is forbidden for 6 hours.

6 The evening time of 1st, 2nd and 3rd day of the fortnight when the moon waxes, is forbidden for the study.

7. Till the time when the after glow of lightening is visible in any direction, study should not be done

8. From October to January, there is fog. Till the time there is fog, study is forbidden.

9 During winters, there is five fog of white colour Till the time there is fog, that is forbidden time.

10 Due to air movement, if there is a dust in the air, then the study is not allowed.

RELATING TO THE PHYSICAL BODY

11-13. Till bone, flesh or blood of any five sensed being is visible, study is not to be done.

Similarly, human bone, flesh and blood is also considered ominous for study Their presence forbids study for 3 days

14. Presence of stool and urine prohibits study

15. 66 6 ft. around a funeral place is unfit for study

16 Study is prohibited during lunar eclipse

17 Study is prohibited during solar eclipse

18 Till the funeral of a big king or national leader after his death, study is prohibited

19 Till the time when peace prevails after a fight between two neighbouring kings, study is forbidden for 24 hours

20 **Physical Body**—In case a five-sensed animal dies or is killed in the *upashraya* (the place where monks/nuns are staying), scriptures should not be studied till the dead body is there. If the dead body is lying at a distance upto 100 *hath*, then also the scriptures cannot be studied

The above mentioned ten taboos relate to physcial body.

21-28. **Four auspicious days and four *phatipadas* (the days prolongs the auspicious day)**—Fifteenth days of the bright fortnight (i e the days of full moon) in Ashadh (June), Ashvin (September), Kartik (October) and Chaitra (March) are known as *Mahotsava* (Auspicious days). The day immediately followings are *mahapratipada*. Scriptures should not be studied in these eight day.

29-32. Scriptures should not be studied for 24 minutes immediately preceding and immediately following the sunrise, the noon, the sunset and midnight. ●●